पाखण्ड खंडनी

रोगी हिन्दू समाज के ये डाक्टरः- प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

MAY 22, 2016 2 COMMENTS

रोगी हिन्दू समाज के ये डाक्टरः–

एक बार महाराष्ट्र सभा के आदेश पर मैं धूले गाँव गया। प्रातः समय समाचार पत्र वक्रेता एक युवक से आर्य समाज मन्दिर का अता-पता पूछा। उसने कहा, ''वह कौनसे भगवान् का मन्दिर है?'' मैंने उसे कहा-''तू अपने नगर के भगवानों की सूची दिखा। मैं देखकर बताऊँगा क आर्यों का भगवान् उसमें है या नहीं?'' यह हिन्दू समाज के रोगग्रस्त होने का एक प्रमाण है। जब रोगी स्वयं को रोगी ही न माने या रोग को रोग ही न समझे तो ठीक नहीं हो सकते। हिन्दू समाज की रक्षा का भार आज झोला छाप डाक्टरों के ऊपर है। वे बड़बोले तो हैं, परन्तु रोगी के रोग को जानते हुए भी उसका उपचार करना नहीं चाहते। घृ णत जाति बन्धन तोड़ने का आन्दोलन इन लोगों ने कभी छेड़ा? हिन्दू कृषक सैकड़ों व सहस्रों आत्महत्यायें क्यों कर रहे हैं? कभी सोचा इन्होंने क हिन्दू समाज में ही इतनी आत्महत्यायें क्यों हो रही हैं? बलात्कार की घटनाओं की शकार भी हिन्दू दे वयाँ! अपराधी भी हिन्दू! पढ़-सुनकर रोना आता है। कभी एक नेता जी ने कहा था क रेप इण्डिया में होते हैं, भारत में नहीं। इसका क्या अर्थ? कहाँ रेप की घटनायें नहीं हुई? योग -योग का शोर मचाने वालें के कुंभ स्नान को देखा क्या? प्रवचन, व्यायान, ज्ञान, ध्यान, योग, भक्ति भजन क्या था? बस डुबकी लगाने की होड़। म.प्र. में एक मन्दिर में मदिरा का प्रसाद दिया जाता है। शवजी की बूटी की महिमा एक योगी बाबा बता रहे थे। बिहार में अगला मुय मन्त्री कस जाति का होगा? लव जिहाद का शोर मचाने वालों ने कभी जाति पाँति को चुनौती माना? गुजरात में कुरान का नाम लेकर गोमाँस के दोष के वज्ञापन लगाये गये। कथन तो ठीक था, परन्तु वचन कुरान का नहीं था। आर्य समाज के वद्वानों से सुन तो लया, प्रमाण का अता-पता न कया। मुसलमान चल्लाये। कर्मफल को, गीता को मानने वाले संकट मोचन मन्दिरों, ज्योति षयों से दुःख निवारण करवाते, स्नान से पाप क्षमा करवाते? कहाँ गई गीता? हिन्दू समाज के झोला छाप डाक्टर रोगों पर चुप्पी साधे बैठे हैं। घर वा पसी का क्या बना? कोई पं. देव प्रकाश, पं. शान्ति स्वरूप, पं. मेघाति थ, सत्यदेव, वीरेन्द्र घर वा पस लाये क्या? आर्य समाज के नाम से ही बिदकने वाले ये डाक्टर समाज को क्या बचायेंगे? प्रमाण, सामग्री मुझसे माँगते हैं और मेरे आर्य समाज का नाम तक लेना नहीं चाहते।

'राम के मत्र महावीर हनुमान का आदर्श व अनुकरणीय जीवन'

MAY 7, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

'राम के मत्र महावीर हनुमान का आदर्श व अनुकरणीय जीवन'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज आर्य धर्म व संस्कृति के महान आदर्श आजन्म ब्रह्मचारी महावीर हनुमान जी की जयन्ती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के साथ महावीर हनुमान जी का नाम भी इतिहास में अमर है व रहेगा। उनके समान ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्वामी-भक्त, अपने स्वामी के कार्यों को प्राणपण से पूरा करने वाला व सभी कार्यों को सफल करने वाला, आर्य धर्म व संस्कृति का उनके समान वद्वान व आचरणीय पुरुष वश्व इतिहास में अन्यतम है। वीर हनुमान जी ने श्रेष्ठतम वैदिक धर्म व संस्कृति का वरण कर उसका हर पल व हर क्षण पालन कया। वह आजीवन ब्रह्मचारी रहे। रामायण एक प्राचीन ग्रन्थ होने के कारण उसमें अन्य ग्रन्थों की भांति बड़ी मात्रा में प्रक्षेप हुए हैं। कुछ प्रक्षेप उनके ब्रह्मचर्य जीवन को दू षत भी करते हैं जब क हमारा अनुमान व निश्चय है क उन्होंने जीवन भर कठोर व असम्भव ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन कया था। वैदिक धर्म व संस्कृति की यह वशेषता रही है क इसमें महाभारतकाल से पूर्व काल में बड़ी संख्या में आदर्श राजा, वेदों के पारदर्शी व तलस्पर्शी गूढ वद्वान, ऋ ष, मुनि, योगी, दर्शन-तत्ववेत्ता, आदर्श गृहस्थी, देश-धर्म-संस्कृति को गौरव प्रदान करने वाले स्त्री व पुरुष उत्पन्न हुए हैं जिनमें वीर हनुमान जी का स्थान बहुत ऊंचा एवं गौरवपूर्ण है।

हनुमान जी वानरराज राजा सुग्रीव के वद्वान मन्त्री थे। वानरराज बाली व सुग्रीव भाईयों के परस्पर ववाद में धर्मात्मा सुग्रीव को राजच्युत कर राजधानी से निकाल दिया गया था। वह वनों में अकेले वचरण करते थे। वहां उनका साथ यदि कसी ने दिया तो वीर हनुमान जी ने दिया था। धर्म पर आरूढ़ हनुमान जी ने सत्य व धर्म का साथ दिया व राजसुखों का त्याग कर वनों के कठोर जीवन को चुना। राम वनवास के बाद जब रावण ने महारानी सीता जी का हरण कया तो इस घटना के बाद श्री रामचन्द्र जी की भेंट पदच्युत राजा सुग्रीव के मंत्री हनुमान से होती है। राम व हनुमान जी में परस्पर संस्कृत में संवाद होता है। रामचन्द्र जी हनुमान की संस्कृत के ज्ञान व भाषा पर अ धकार व व्यवहार करने की योग्यता से प्रभा वत होते हैं और अपने भ्राता लक्ष्मण को कहते हैं क यह हनुमान वेदों का जानकार व वद्वान है। इसने जो बाते कहीं हैं, उसमें उसने व्याकरण संबंधी कोई साधारण सी भी भूल व त्रुटि नहीं की। इस घटना से हनुमान जी की बौद् धक क्षमता व राजनैतिक कुशलता आदि का ज्ञान होता है। हनुमान जी की प्रशंसा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं अपने श्रीमुख से वाल्मी क रामायण में की है।

हनुमान जी का मुख्य कार्य महारानी सीता की खोज व राम रावण युद्ध में रामचन्द्र जी की सहायता व उनकी वजय में मुख्य सहायक होना भी है। उन्होंने हजारों वर्ष पूर्व लंका पहुंचने के लए समुद्र को तैर कर पार कया था, ऐसा अनुमान होता है। साहित्यकार व क व कई बार तैरने को भी भावना की उच्च उड़ान में घटनाओं को अलंकारिक रूप देकर उसे लाघंना कह सकते हैं। यह उनका वीरता का अपूर्व व महानतम उदाहरण है। वह लंका पहुंचे और माता सीता से मले और उन्हें पुनः रामचन्द्र जी के दर्शन व उनसे मलने के लए आश्वस्त कया। उन्होंने लंका में अपने बल का परिचय भी दिया जिससे यह वदित हो जाये क राम अ वजेय

हैं और लंका का बुरा समय निकट है। हनुमान जी रावण के दरबार में भी पहुंचे और वहां रामचन्द्र जी का सन्देश सुनाने के बाद अपनी वीरता व पराक्रम के उदाहरण प्रस्तुत कये। लंका के सेनापति, सैनिक व रावण के परिवार के लोग चाह कर भी उनको बन्दी बना कर दण्डित नहीं कर पाये और वह सकुशल लंका से बाहर आकर, माता सीता से मलकर रामचन्द्र जी के पास सकुशल पहुंच गये और उन्हें माता सीता के लंका में जी वत होने का समाचार दिया। यह कतना बड़ा कार्य हनुमान ने कया था, यह रामचन्द्र जी ही भली भांति जानते थे। इस कार्य ने रामचन्द्र जी को उनका एक प्रकार से कृतज्ञ बना दिया था। इसके बाद राम-रावण युद्ध होने पर भी समुद्र पर पुल निर्माण और लक्ष्मण जी के युद्ध में घायल व मूच्छित होने पर उनके लए वहां से हिमालय पर्वत जाकर संजीवनी बूटी लाना हनुमान जी जैसे वीर व वचारशील मनीषी का ही काम था। बताया जाता है क वह उड़कर हिमालय पर्वत पर पहुंचे थे। ऐसा होना सम्भव नहीं दीखता। यह सम्भव है क उन्होंने अवश्य कसी वमान की सहायता ली होगी अन्यथा वह हिमालय शायद न पहुंच पाते। मनुष्य का बिना कसी वमान आदि साधन के उड़कर जाना असम्भव है। साधारण भाषा में आज भी वमान में यात्रा करने वाला व्यक्ति कहता है मैं एयर से अमुक स्थान पर गया था। इसी प्रकार वमान के लए उड़ कर जाने जैसे शब्दों का प्रयोग रामायण में कया गया है। आज ज्ञान व वज्ञान उन्नति के शखर पर हैं परन्तु आज भी संसार के 7 अरब मनुष्यों में से कसी को उड़ने की वद्या व कला का ज्ञान नहीं है। अतः यही स्वीकार करना पड़ता है व स्वीकार करना चाहिये क हनुमान जी कसी छोटे स्वचा लत वमान से हिमालय पर आये और संजीवनी आदि इच्छित औष धयां लेकर वा पस लंका पहुंच गये थे। यह भी वर्णन कर दें क प्राचीन साहित्य में इस बात का उल्लेख हुआ है क उन दिनों निर्धन व्यक्तियों के पास भी अपने अपने वमान हुआ करते थे। सृष्टि के आरम्भ काल में भी लोग वमान से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे और उन्हें जहां जो स्थान अच्छा लगता था, वह वहीं जाकर अपने परिवारों व इष्ट मत्रों सहित बस जाते थे। इसी प्रकार से सारा संसार यूरोप व अरब आदि के देश बसे हैं। यह तथ्य है क आदि सृष्टि भारत के तिब्बत में हुई थी। सृष्टि के आदि काल में नेपाल, तिब्बत व चीन आदि देश नहीं थे। तब सारा ही आर्यावर्त्त था।

माता सीता के प्रति हनुमान जी का माता-पुत्र की भांति अनुराग व प्रेम था। वश्व इतिहास में यह माता-पुत्र का संबंध भी वशेष महत्व रखता है। आज संसार के सभी देश व उनके नागरिक हनुमान जी के चरित्र की इस वशेषता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। ''पर दारेषु मात्रेषु'' अर्थात् अन्य सभी स्त्रियां माता के समान होती हैं। यह भावना वैदिक संस्कृति की देन है। यह वैदिक धर्म व संस्कृति का गौरव भी है। आदर्श को अच्छा मानने वालों को इसी स्थान पर आना होगा अर्थात् वैदिक धर्म व संस्कृति को अंगीकार करना होगा।

हमारे पौरा णक भाई हनुमान जी को वानर शब्द के कारण बन्दर समझते हैं जो क उ चत नहीं है। हनुमान जी हमारे जैसे ही मनुष्य थे तथा वनों में रहने के कारण वानर कहलाते थे। आजकल भारत में इसका एक प्रदेश नागालैण्ड है जिसके निवासी नागा कहलाते हैं। देश व वश्व में कोई उनकी सांप के समान आकृति नहीं बनाता। इसी प्रकार इंग्लिश, चीनी, जर्मनी, फ्रांसीसी आदि नागरिक हैं। यह सब हमारे जैसे ही हैं और हम उनके जैसे। इसी प्रकार से

हनुमान व सुग्रीव आदि सभी वानर हमारे समान ही मनुष्य थे। उनमें से कसी की पूंछ नहीं थी। उनकी पूंछ मानना व चत्रों में चत्रित करना बुद् ध का मजाक व दिवा लयापन है। वैदिक धर्मी मननशील व सत्यासत्य के ववेकी लोगों को कहते हैं। अतः वानर हनुमान जी बिना पूछ वाले राम, लक्ष्मण व अन्य मनुष्यों के समान ही मनुष्य थे, यह ववेकपूर्ण एवं नि र्ववाद है। इस पर वचार करना चाहिये और इसी वचार व मान्यता का सभी पौरा णक भाईयों को अनुसरण भी करना चाहिये। हनुमान जी की पूंछ मानने वाले हमारे भाई इक्कीसवीं सदी में दूसरों का मजाक न बने और अपने महापुरुषों का अपमान न करायें, यह हमारी उनसे वनम्र प्रार्थना है। इसी के साथ इस सं क्षप्त लेख को वराम देते हैं और भारतीयों व वश्व के आदर्श हनुमान जी को स्मरण कर उनसे प्रेरणा ग्रहण कर उनके पथ का अनुसरण करने का प्रयास करने का व्रत लेते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

(ख) श्री कृष्ण जी का जन्म खीरे से, जिसमें पीछे खीरे की बेल भी जुड़ी होती है, क्यों कया जाता है?

APRIL 26, 2016 LEAVE A COMMENT

(ख) श्री कृष्ण जी का जन्म खीरे से, जिसमें पीछे खीरे की बेल भी जुड़ी होती है, क्यों कया जाता है?

आशा है, आप मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर मुझे सन्तुष्ट करेंगे। जन्म करने वाले मेरी जिज्ञासा का समाधान नहीं कर सके।

– आशा आर्या**, 14,** मोहन मे कन्स रोड**,** डालीगंज**,** लखनऊ**-226020,** उ.प्र

(ख) कृष्ण को खीरे की बेल से पैदा करवाना भी इनके अज्ञान का द्योतक है। कभी भी मनुष्य या अन्य प्राणी कसी बेल से उत्पन्न नहीं होते, न ही हो सकते। मनुष्यादि सदा माता- पता के संयोग से पैदा होते हैं (आदि सृष्टि की रचना को छोड़कर)। सृष्टि वरुद्ध पैदा करने की लीला पुराणों में भरी पड़ी है और ये लोग वेद को छोड़ पुराणों को अ धक स्वीकारते हैं।

भागवत पुराण में सृष्टि रचना- वष्णु की ना भ से कमल, कमल से ब्रह्मा और ब्रह्मा के दाहिने पैर के अँगुठे से स्वायमभुव, और बायें अँगूठे से शतरूपा रानी। ललाट से रूद्र और मरी च आदि दश पुत्र, उनसे दश प्रजापति। दक्ष की तेरह लड़ कयों का ववाह कश्यप से। उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव, अदिति से आदित्य, वनिता से पक्षी, कद्रू से सर्प, सरमा

से कुत्ते-स्याल आदि और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊँट, गधा, भैंसा, घासफूस और बबूल आदि वृक्ष काँटे सहित उत्पन्न हुए। ये बिना सर-पैर की बातें इनके सबसे अ धक प्रच लत भागवत पुराण की हैं। मनुष्य से इन्होंने गधे, घोड़े पैदा करवा दिये, काँटों वाले वृक्ष पैदा करवा दिये तो खीरे की बेल से कृष्ण जी को पैदा करवा देना इनके लए कौन-सी बड़ी बात है।

ऐसा ही देवी भगवत का गपोड़ा है- जब देवी की इच्छा हुई क संसार बनाना है, तब उसने अपना हाथ घिसा। उससे हाथ में छाला हुआ। उसमें से ब्रह्मा की उत्प त्त हुई। उससे देवी ने कहा क तू मुझसे ववाह कर। ब्रह्मा ने कहा क तू मेरी माता लगती है, मैं तुझसे ववाह नहीं कर सकता। ऐसा सुन माता को क्रोध चढ़ा और लड़के को भस्म कर दिया और फर हाथ घिस कर उसी प्रकार दूसरा लड़का उत्पन्न कया, उसका नाम वष्णु रखा। उससे भी उसी प्रकार कहा। उसने भी न माना तो उसको भी भस्म कर दिया। पुनः इसी प्रकार तीसरे लड़के को उत्पन्न कया और उसका नाम महादेव रखा और उससे कहा क तू मुझसे ववाह कर। महादेव बोला क मैं तुझसे ववाह नहीं कर सकता, तू दूसरा स्त्री का शरीर धारण कर। वैसा ही देवी ने कया। तब महादेव ने कहा क ये दो ठिकाने राख-सी क्या पड़ी है? देवी ने कहा- ये तेरे भाई हैं, इन्होंने मेरी आज्ञा नहीं मानी, इस लए भस्म कर दिये। महादेव ने कहा क मैं अकेला क्या करूँगा, इनको जी वत कर दे और दो स्त्री उत्पन्न और कर, तीनों का ववाह तीनों से होगा। ऐसा ही देवी ने कया। फर तीनों का तीनों के साथ ववाह हुआ। ये पोप लीला पुराण की है, इन पुराणवादियों के देवता हाथ से रगड़े हुए छाले से पैदा हुए हैं, कहीं वष्णु की ना भ से कमल और उससे ब्रह्मा तो खीरे की बेल से कृष्ण को पैदा ये कर दें तो कौन-सी बड़ी बात है!!! तात्पर्य है, जो आपने पूछा है, वह सब इन मथ्यावादी, पुराणवादियों की लीला है, इसमें तथ्य कुछ भी नहीं है।

– ऋ ष उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

श्री कृष्ण को भगवान मानने वाले उनका जन्म क्यों करते हैं, अन्य कसी देवी-देवता का जन्म क्यों नहीं करते?

APRIL 25, 2016 2 COMMENTS

जिज्ञासा– ऋ ष उद्यान के सभी वद्वानों को मेरा सादर नमस्ते। ईश्वर आप सबको लबी आयु प्रदान करे। आप अपने जैसे वद्वानों को तैयार करें, ता क जिज्ञासा-समाधान की शृंखला निरन्तर चलती रहे। मेरी जिज्ञासा है-

(क) श्री कृष्ण को भगवान मानने वाले उनका जन्म क्यों करते हैं, अन्य कसी देवी-देवता का जन्म क्यों नहीं करते?

– आशा आर्या, **14,** मोहन मे कन्स रोड, डालीगंज, लखनऊ-**226020,** उ.प्र.

समाधान– (क) वैदिक शुद्ध ज्ञान के अभाव में आज वश्वभर में पाखण्ड, अन्ध वश्वास का बोलबाला है। इसकी चपेट से वही बच सकता है, जो मह र्ष दयानन्द के दिखाये वशुद्ध

वैदिक ज्ञान को अपना लेता है। केवल भारत में ही पाखण्ड, अन्ध वश्वास नहीं है, अ पतु जो देश अपने को वक सत व श क्षत मानते हैं, उनके वहाँ भी यह सब आडमबर है। इस पाखण्ड में प्रायः सृष्टि वरुद्ध कपोल कल्पनाएँ ही होती हैं, जो क मानव के उत्थान में बाधक ही बनती हैं। ईसाई लोगों की सृष्टि वरुद्ध मान्यता- ''ईश्वर ने भू म की धूल से आदम को बनाया और नथुनों में जीवन का श्वास फूँका और आदम जीवता प्राण हुआ और परमेश्वर ईश्वर ने 'अदन' में पूर्व की ओर एक 'बारी' लगाई और उस आदम को, जिसे उसने बनाया था, उसमें रखा।। और बारी (बाड़ी=रहने का स्थान) के मध्य में जीवन का पेड़ और भले-बुरे के ज्ञान का पेड़ भू म में उगाया।। तौ.उ.पर्व 2. आ.7-9 इस बिना सर-पैर की बात को ईसाई लोग मानते हैं।

और भी दे खए- परमेश्वर ईश्वर ने आदम को बड़ी नींद में डाला और वह सो गया। तब उसने उसकी पस लयों में से एक पसली निकाली और उसकी सन्ति मांस भर दिया (पसली के स्थान पर मांस भर दिया) और परमेश्वर ईश्वर ने आदम की उस पसली से एक नारी बनाई और उसे आदम के पास लाया। (तौ.उ.प. 2/आ 21-22) यहाँ भी पसली से स्त्री की उत्प त्त सृष्टि वरुद्ध कथन है। मह र्ष दयानन्द ने इस पर समीक्षा की है- ''जो ईश्वर ने आदम को धूली से बनाया, तो उसकी स्त्री को धूली से क्यों नहीं बनाया? और जो नारी को हड्डी से बनाया, तो आदम को हड्डी से क्यों नहीं बनाया? और जैसे नर से निकलने से नारी नाम हुआ, तो नारी से नर नाम भी होना चाहिए.....।

देखो वद्वान् लोगो! ईश्वर की कैसी 'पदार्थ वद्या' अर्थात् ' फलासफी' चलती है? जो आदम की एक पसली निकालकर नारी बनाई, तो सब मनुष्यों की एक पसली कम क्यों नहीं होती? और स्त्री के शरीर में एक पसली होनी चाहिए, क्यों क वह एक पसली से बनी हुई है। क्या जिस सामग्री से जगत् बनाया, उस सामग्री से स्त्री का शरीर नहीं बन सकता था? इस लए यह बाइबल का सृष्टिक्रम सृष्टि वद्या वरुद्ध है।''

ऐसी ही सृष्टि वद्या वरुद्ध बातों को मुस्लिम मानते हैं, इनकी पुस्तकें भी व्यर्थ के चमत्कारों से भरी हुई हैं।

जैसे अन्य मतमतान्तरों में अ वद्या के कारण पाखण्ड है, ऐसा ही पाखण्ड पुराणों को मानने वालों में है। कृष्ण के जन्म की जो आप पूछ रही हैं क उनका ही जन्म क्यों करते-कराते हैं, यह इन जन्म कराने-करने वालों की बाल बुद् ध का द्योतक है, क्यों क श्री कृष्ण जी का जन्म तो लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय उन्होंने मानव कल्याण का कार्य कया था, समाज से देशद्रोही तत्त्वों को दूर कर समाज और देश को संगठित कया था। आज प्रति वर्ष इन पाखण्डों को मानने वालों की कृष्ण जी के जन्म कराने वाली बात ऐसी ही समझें, जैसे गुड्डे-गुड् डयों का खेल।

आपने पूछा- अन्य देवी-देवता का जन्म क्यों नहीं करवाते तो इस पर हमारा वचार है क करवाने को तो ये अन्य का भी करवा सकते हैं, फर भी कृष्ण जन्म कराने में इनको गप्फा अ धक मलता है। कृष्ण जन्म के समय बधाइयों के नाम पर जनता को खूब लूटा जाता है, जिस प्रकार रामलीला करते हुए सीता ववाह कन्यादान के नाम पर लोगों को ठगते हैं। यह सब स्वार्थ के वशीभूत हो कर कया जाता है, जो क अवैदिक है।

धर्मसारथी श्री कृष्ण

APRIL 22, 2016 LEAVE A COMMENT

धर्मसारथी श्री कृष्ण

– ववेकानन्द सरस्वती

जब धर्मवादी धर्मधुरन्धरों से भरी सभा में उन्हीं के समक्ष कसी सामान्य अबला नारी की नहीं, अ पतु राजमहिषी पटरानी सबला का अट्टहासपूर्वक घोर अपमान हो, तब वहाँ धर्म का कुछ भी अंश अव शष्ट रह गया हो, इसकी कल्पना भी बुद् ध शून्यता की पराकाष्ठा है। कसी भी प्रकार से चाहे वह छल-बल-कल से हो या अन्य कसी निम्नतर उपाय से अपने स्वजन के वनाश की षड्यन्त्र की कल्पना हो, उस परिस्थिति में जहाँ भीष्म द्रोणाचार्य जैसे सर्वमान्य लोकपूज्य व्यक्ति भी उसके वरुद्ध में कुछ कहने का या कराने का साहस न कर सकते हों और अपने सममुख ही धर्म को तार-तार होते हुए देख ही नहीं रहे हों, अ पतु उस दुष्कर्म में सहयोगी भी बने हों, तब भला धर्म की या न्याय की रक्षा करने का बीड़ा उठाने का कौन साहस कर सकता है और जो व्यक्ति यह साहस कर सकता है, वह सामान्य नहीं हो सकता। योगेश्वर श्रीकृष्ण उन्हीं असामान्य लोगों में से थे। उन्होंने अपनी सारी प्रतिष्ठा को तिलाञ्ज ल देकर धर्मरक्षा का प्रण कया। उन्होंने कहा क-

परित्राणाय साधूनां, धर्मसंस्थापनार्थाय सभवा म युगे युगे।

और इस प्रतिज्ञा का पालन कया धा र्मकों की रक्षा के माध्यम से उन्होंने वेद धर्म की रक्षा की। सभा में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था, जो कुछ कह सके या कर सके। ऐसी वषम परिस्थिति में उन्होंने अपने अग्रज श्री बलराम जी की उपेक्षा कर दाय भाग में से 'सूच्यग्रं नैव दास्या म' की घोषणा करनेवाले तथा उनके समर्थकों को दण्डित धर्म की आधार भू म को दृढ़ करने का निश्चय कया। सम्भवतः अन्य कोई सामान्य व्यक्ति होता तो इसको पारिवारिक कलह कहकर अपने को बचाने का मार्ग प्रशस्त कर लेता, कन्तु श्रीकृष्ण इसको कायरता ही नहीं, अ पतु घोर अधर्म समझते थे। यदि कसी समर्थ व्यक्ति के सममुख धर्म एवं न्याय का हनन हो रहा हो और धर्म की रक्षा के लए वह समर्थ व्यक्ति कुछ नहीं कर पा रहा हो, तो सचमुच वह अधा र्मक ही नहीं महापापी भी होता है। योगेश्वर श्री कृष्ण इस प्रकार धर्म अवमानना नहीं देख सकते थे, इस लए धर्मरक्षार्थ उन्होंने धर्म का सारथी बनना सहर्ष स्वीकार कया। सामान्य दृष्टि से लोग यही वचारते हैं क भारत युद्ध में श्रीकृष्ण ने अर्जुन का सारथी बनकर उसके रथ को हाँका था, स्थूल दृष्टि से भी यही दृष्टिगोचर होता है, कन्तु वास्तव में तो अर्जुन के नहीं, पाण्डवों के नहीं,अ पतु धर्म के सारथी बने थे। जिन अधा र्मक कुकृत्यों का आश्रय कौरव लेकर चल रहे थे, यदि वे कुकृत्य पाण्डवों में भी दृष्टिगोचर होते तो श्रीकृष्ण कभी भी उनका साथ न देते। कौरवों के पक्ष में युद्ध के समय में जिस कर्ण पर दुर्योधन को सर्वा धक वजय का वश्वास था, वह कर्ण स्वयं पूजा पाठ करते हुए तथा दान करते हुए भी महान् अधा र्मक था, क्यों क उसने कौरवों के द्वारा कये जाते हुए अधा र्मक कुकृत्यों का समर्थन ही नहीं, अ पतु कौरवों को प्रोत्साहित भी कया था। जब भारत युद्ध के सत्रहवें दिन कर्ण और अर्जुन का निर्णायक द्वन्द्व युद्ध होने लगा तो कसी वकट परिस्थिति में पड़कर स्वयं कर्ण ने धर्म की गाथा गाते हुए अर्जुन से कहा- अर्जुन! तुम धर्मयोद्धा हो, धर्मयुद्ध करने में तुमहारी प्र सद् ध है, अतः कुछ क्षण रुको। श्रीकृष्ण कर्ण के द्वारा धर्म की बात सुनकर हँसे बिना नहीं रह सके और उन्होंने फटकारते हुए, धक्कारते हुए, कर्ण से कहा- कर्ण, तुमहारे जैसे अधा र्मक निकृष्ट व्यक्ति को जब मृत्यु सामने उपस्थित हो

जाती है तो धर्म स्मरण आता है। जो-जो अधर्म तुमने कये या तुमहारे प्रोत्साहित करने पर कौरवों ने कये, उस समय कभी भी तुमहें धर्म का स्मरण नहीं हुआ। उन्होंने पापमय अधा र्मक उन कार्यों का भी स्मरण कराया जिनको कर्ण ने कया था और स्मरण कराते हुए कहा क-

यदा सभायां राजानामनक्षज्ञं यु धष्ठिरम्।
अजैषीच्छकुनिर्ज्ञानात् क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
वनवासे व्यतीते च कर्ण वर्षे त्रयोदशे।
न प्रयच्छ स यद् राज्यं क्व ते धर्मस्तदा गतः ।।
यद् भीमसेन सर्पैश्च वषयुक्तैश्च भोजनैः।
आचरत् त्वन्मते राजा क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
यद् वारणावते पार्थान् सुप्ताञ्जतुगृहे तदा।
आदीपयस्वं राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
यदा रजस्वलां कृष्णां दुःशासनवशे स्थिताम्।
सभायां प्राहसः कर्ण क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
यदनार्यैः पुरा कृष्णां क्लिश्यमानामनागसम्।
उपप्रेक्ष स राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
 वनष्टाः पाण्डवाः कृष्णो शाश्वतं नरकं गताः।
पतिमन्यं वृणीष्वेति वदंस्त्वं गजगा मनीम्।।
उपप्रेक्ष स राधेय क्व ते धर्मस्तदा गतः।
राज्यलुधः पुनः कर्ण समाव्यथ स पाण्डवान्।
यदा शकुनिमा श्रत्य क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
यदा भमन्युं बहवो युद्धे जघ्नुर्महारथाः।
परिवार्य रणे बालं क्व ते धर्मस्तदा गतः।।
(महा.. कर्णपर्व अध्याय-91)

अर्थात् 'कर्ण! जब कौरव सभा में जुए के खेल का ज्ञान न रखने वाले राजा यु धष्ठिर को शकुनि ने जान-बूझकर छलपूर्वक हराया था, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'कर्ण! वनवास का तेरहवाँ वर्ष बीत जाने पर जब तुमने पाण्डवों का राज्य उन्हें वापस नहीं दिया था, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'जब राजा दुर्योधन ने तुमहारी ही सलाह लेकर भीमसेन को जहर मलाया हुआ अन्न खलाया और उन्हें सर्पों से डँसवाया, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'राधानन्दन! उन दिनों वारणावत नगर में लाक्षा भवन के भीतर सोये हुये कुन्तीकुमारों को जब तुमने जलाने का प्रयत्न कराया था, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'कर्ण! भरी सभा में दुःशासन के वश में पडी हुई रजस्वला द्रौपदी को लक्ष्य करके जब तुमने उपहास कया था, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'राधानन्दन! पहले नीच कौरवों द्वारा क्लेश पाती हुई निरपराध द्रौपदी को जब तुम निकट से देख रहे थे, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

(याद है न, तुमने द्रौपदी से कहा था) 'कृष्ण-पाण्डव नष्ट हो गये हैं, सदा के लये नरक में पड़ गये। अब तू कसी दूसरे पति का वरण कर ले। जब तुम ऐसी बातें करते हुए गजगा मनी द्रौपदी को निकट से आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'कर्ण! फर राज्य के लोभ में पड़कर तुमने शकुनि की सलाह के अनुसार जब पाण्डवों को दोबारा जुए के लये बुलवाया, उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

'जब युद्ध में तुम बहुत-से महार थयों ने मलकर बालक अ भमन्यु को चारों ओर से घेरकर मार डाला था,उस समय तुमहारा धर्म कहाँ चला गया था?'

व्यास जी ने कहा है- 'यतो धर्मस्ततो जयः।' जहाँ धर्म है, वही वजय होती है। श्रीकृष्ण ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने धर्म के आधार पर सत्य का पालन कया। उनकी सत्यनिष्ठा का प्रमाण उत्तरा के मृतकल्प पुत्र को पुनः प्राणदान के समय की हुई शपथ से प्रतीत होता है-

नोक्तपूर्व मया मथ्या स्वैरेष्व प कदाचन।
न च युद्धात् परावृत्तस्तथा संजीवतामयम्।।
यथा मे दयितो धर्मो ब्राह्मणश्च वश्ेाषतः।
अ भमन्योः सुतो जातो मृतो जीवत्वयं तथा।।
यथा सत्यं च धर्मश्च मयि नित्यं प्रतिष्ठितौ।
तथा मृत शशुरयं जीवताद भमन्युजः।।
यथा कंसश्च केशी च धर्मेण निहितौ मया।
तेन सत्येन बालोऽयं पुनः संजीवतामयम्।।
(महा.. आश्वमे धक पर्व अध्याय-70)

अर्थात् 'मैनें खेल-कूद में भी कभी मथ्या भाषण नहीं कया है और युद्ध में पीठ नहीं दिखायी है। इस शक्ति के प्रभाव से अ भमन्यु का यही बालक जी वत हो जाये।'

'यदि धर्म और ब्राह्मण मुझे वशेष प्रय हों तो अ भमन्यु का यह पुत्र जो पैदा होते ही मर गया था, फर जी वत हो जाये।'

'यदि मुझमें सत्य और धर्म की निरन्तर स्थिति बनी रहती हो, तो अ भमन्यु का यह मरा हुआ बालक जी उठे।'

'मैनें कंस और केशी का धर्म के अनुसार वध कया है, इस सत्य के प्रभाव से यह बालक फर जी वत हो जाये।'

वेद एवं नीतिकारों ने कहा भी है-

सत्येनोत्त भता भू मः सूर्येणोत्त भता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दि व सोमो अ ध श्रतः।।
(ऋग्.. 10/85/1)

न हि सत्यात् परो धर्मः ।
न हि असत्यात् पातकं महत्।।

श्रीकृष्ण उस सत्य धर्म की रक्षा के लए दूत बने, सारथी बने, सेवक बने, मत्र बने, सब कुछ बने, कन्तु लक्ष्य एक ही था- धर्म की रक्षा, इस लए वे यथार्थ में पार्थ के सारथी नहीं, अ पतु धर्म के सारथी बने।

– प्रभात आश्रम, मेरठ

अथर्ववेद मे यथार्थ स्वर्ग का वर्णन'

APRIL 18, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

'अथर्ववेद मे यथार्थ स्वर्ग का वर्णन'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

अथर्ववेद के मन्त्र 6/120/3 में यथार्थ स्वर्ग का वर्णन हुआ है। लोगों ने पुराणों के आधार पर मथ्या स्वर्ग की कल्पना कर रखी है और उसी को मानते हैं। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है क पुराण व र्णत स्वर्ग संसार व ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। हम एकमात्र यथार्थ वैदिक स्वर्ग पर पहले आर्यजगत के एक महान संन्यासी स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी का सं क्षप्त वेदव्याख्यान दे रहे हैं। इसके बाद वेदमन्त्र व उसके पदों वा शब्दों का अर्थ भी प्रस्तुत है।

यथार्थ स्वर्ग का व्याख्यान

स्वर्ग कसी देश वशेष (स्थान वशेष) या लोक वशेष का नाम नहीं है, वरन् उस अवस्था को स्वर्ग कहते हैं, जिस अवस्था मे मनुष्य को शारीरिक, आत्मिक, पारिवारिक आदि सब प्रकार के सुख प्राप्त हैं, जिस अवस्था में मनुष्य को कोई शारीरिक क्लेश, मान सक पीड़ा नहीं सताती, माता– पता तथा सन्तान का सुख प्राप्त हो, शरीर सुन्दर तथा सुडौल हो, कोई त्रुटि न हो, इसकी प्राप्ति का साधन सद् वचार तथा उत्तम सदाचार है। दूसरे शब्दों में रोग, दुःख, अंग–भंग, कुरूप शरीर आदि पापों का फल है। संक्षेप में 'सुख वशेष भोग तथा उसकी सामग्री' का नाम स्वर्ग है। (यह स्वर्ग मनुष्य के अपने भीतर, अपने निवास, परिवार, समाज व देश में ही होता है व माना जा सकता है। वाल्मीकी रामायण में भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम लक्ष्मण जी से कहते हैं क 'जननी जन्मभू मश्च स्वर्गाद प गरीयसी।' पूरे श्लोक का भाव है क मैं जानता हूं क लंका सोने की है परन्तु फर भी मुझे यह अच्छी नहीं लगती। क्यों क अपनी माता और मातृभू म स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। यह इस लए क जो सुख वशेष अपनी माता और अपनी जन्म व देश भू म में मनुष्य को प्राप्त होता व हो सकता है, वह अन्यत्र नहीं मल सकता। –लेखक)

अथर्ववेद का मन्त्र संख्या **6/120/3**

यात्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति वहाय रोगं तन्वः स्वायाः।

अश्लोणा अंगैरह्रुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पतरौ च पुत्रान्।।

मन्त्र का पद वा शब्दार्थ

यत्र=जिस अवस्था में सुहार्दः=उत्तम हृदयवाले अपने तन्वः=शरीर के रोगम्=रोग को वहाय=छोड़कर, अर्थात् पूर्णतया नीरोग होकर अंगैः अश्लोणाः=अंग-भंगरहित, अर्थात् पूर्णांगवयवयुक्त शरीरवाले तथा अह्रुताः=शरीर, आत्मा तथा मन की कुटिलता से वरहित हुए मदन्ति=सुखी रहते हैं तत्र स्वर्गे=उस स्वर्ग में हम पतरौ=माता- पता च=और पुत्रान्=पुत्रों-सन्तान को पश्येम=देखें, अर्थात् हमारे माता- पता तथा सन्तान सदा सुखी रहे।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

मनु का वरोध क्यों? डॉ. सुरेन्द्र कुमार

APRIL 7, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

मनु का वरोध क्यों?

लेखक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

'मनुस्मृति-भाष्यकार एवं प्रक्षेपानुसन्धानकर्ता'

आचार्य (संस्कृत, व्याकरण, साहित्य दर्शन)

एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), पी-एच.डी.

आजकल हवा में एक शब्द उछाल दिया गया है-'मनुवाद', कन्तु इसमा अर्थ नहीं बताया गया है| इसका प्रयोग भी उतना ही अस्पष्ट और लचीला है, जितना राजनीतिक शब्दों का| मनुस्मृति के निष्कर्ष के अनुसार मनुवाद का सही अर्थ है-'गुण-कर्म-योग्यता के श्रेष्ठ मूल्यों के महत्त्व पर आधारित वचारधारा', और तब, 'अगुण-अकर्म-अयोग्यता के अश्रेष्ठ मूल्यों पर आधारित वचारधारा' को कहा जायेगा-गैर मनुवाद|

अंग्रेज-आलोचकों से लेकर आजतक के मनु वरोधी भारतीय लेखकों ने मनु और मनुस्मृति का जो चत्र प्रस्तुत कया है, वह एकांगी, वकृत, भयावह और पूर्वाग्रहयुक्त हैं | उन्होंने सुन्दर पक्ष की सर्वथा उपेक्षा करके असुन्दर पक्ष को ही उजागर कया है| इससे न केवल मनु की छ व को आघात पहूंचता है, अ पतु भारतीय धर्म, संस्कृति-सभ्यता, साहित्य, इतिहास, वशेषतः

धर्मशास्त्रों का वकृत चत्र प्रस्तुत होता है, उससे देश- वदेश में उनके प्रति भ्रान्त धारणाएं बनती हैं| धर्मशास्त्रों का वृथा अपमान होता है| हमारे गौरव का हस होता हैं|

इस लेख के उद्‌देश्य हैं-मनु और मनुस्मृति की वास्त वकता का ज्ञान कराना, सही मूल्यांकन करना, इस सम्बन्धी भ्रान्तियों को दूर करना और सत्य को सत्य स्वीकार करने के लए सहमत करना| इस बात से इंकार नहीं कया जा सकता क जन्मना जाति-व्यवस्था से हमारे समाज और राष्ट्र का हस एवं पतन हुआ है, और भ वष्य के लए भी यह घातक है| कन्तु, इस एक परवर्ती त्रुटि के कारण समस्त गौरवमय अतीत को कलं कत करना और उसे नष्ट-भ्रष्ट करने का कथन करना भी अज्ञता, अदूरद र्शता, दुर्भावना और दुर्लक्ष्यपूर्ण है| यह आर्य (हिन्दू) धर्म, संस्कृति-सभ्यता और अस्तित्व की जडों में कुठाराघात के समान है|

संसार की सभी व्यवस्थाएं शतप्रतिशत खरी और सर्वमान्य नहीं होती| परवर्ती जातिव्यवस्था की तरह आज की व्यवस्था भी पूर्ण नहीं है| यदि कोई त्रुटि आ जाये तो उसका परिमार्जन कया जा सकता हैं| हमारे पूर्वज ऋ ष-मुनियों ने इसके लए एक उदार मूलमन्त्र बहुत पहले से दे रखा है-

‘‘यानि अस्माकं सुचरितानि, तानि त्वया उपास्यानि, नो इतरा ण|’’

(तैतिरीय उप.१.११.२)

अर्थात्-हमारे जो उत्तम आचरण हैं, उन्हीं का अनुसरण करना, अन्य का नहीं |

इसका पालन करके हम अनुत्तम का परित्याग कर उत्तम को बनाये रख सकते हैं| उत्तम ही सत्य है, शव है| उसका परित्याग करना मूर्खता हैं| आशा है, पाठक इसे पढकर मनु-सम्बन्धी भ्रान्तियों से बच सकेंगे, और मनुस्मृति के मौ लक मन्तव्यों से अवगत हो सकेंगे तथा उसे ग्रहण करने के लए उद्‌यत होंगे |

निवेदक: डॉ. सुरेन्द्रकुमार

मनु का वरोध क्यों?

अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजी-शासन के हितों से जुडे और ईसाईयत में दी क्षत कुछ पाश्चात्य लेखकों ने पहले-पहल, भारतीयों के मन में प्रत्येक उस वस्तु और व्यक्ति के प्रति योजनाबद्‌ध रुप से वरोधी संस्कार भरने का और उनकी आस्था भंग करने का षड्‌यन्त्र कया, जिनका परम्परागत रुप से भारत की अस्मिता, गरिमा और महिमा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा था |इस प्रकार नींव पडी भारतीयता- वरोध परम्परा की| अंग्रेजी शासन के प्रभाव, ‘फूट डालो और राज करो’ की कूट राजनीति और मैकाले द्‌वारा प्रवर्तित कूट शक्षानीति के सहारे वे कुछ भारतीयों को अपने रंग में रंगने में सफल हो गये |उन्होंने इस परम्परा को निभाया और आगे बढाया|

इसी परम्परा में उभरे कुछ वे लोग और वर्ग जिन्होंने सर्वप्रथम समाजव्यवस्थापक, आदि व धनिर्माता मह ष मनु और उनके आदि वधानशास्त्र मनुस्मृति को अपनी निंदात्मक आलोचनाओं का केन्द्र बनाया| आज स्थिति यह है क अंग्रेजी परम्परा में लखी आलोचनाओं और सुनी-सुनायी बातों के आधार पर मनु एवं मनुस्मृति का वरोध करना कुछ सामाजिक वर्गों का एक लक्ष्म बन बया है, तो अंग्रेजीदां लोगों की परिपाटी और कुछ राजनीतिक दलों का चुनाव जीतने का मुद्दा |हमारे राजनीतिक लोगों की बात सबसे निराली है| अभी पछले वर्षों में कुछ लोग पार्टी वभाजन होते ही एक ही रात में 'मनुपुत्र' से 'गैरमनुपुत्र' बन गये और सार्वजनिक मंचों से लगे मनु, मनुस्मृति और मनुपुत्रों को कोसने |एक राजनीतिक दल ने सत्ता प्राप्त करने के लए 'मनुवाद' जैसे नये मुद्दे का आ वष्कार कर डाला |कुछ वर्ष पूर्व जयपुर स्थित उच्च न्यायालय के परिसर में जब आदि व धप्रणेता होने के कारण मनु की प्रतिमा स्था पत की गयी, तो कुछ लोगों को उस जड प्रतिमा को ही ववाद का वषय बना डाला, जो आज एक प्रकरण के रुप में उसी न्यायालय में वचाराधीन है| जब क वास्त वकता यह थी क प्रतिमा- वरोध को कुछ लोग अपनी राजनीतिक पहचान बनाने का सुअवसर समझकर उसका अ धका धक लाभ उठाने की ताक में थे|

आश्चर्य तो तब होता है जब हम ऐसे लोगों को मनुस्मृति का वरोध करते हुए पाते हैं, जिन्होंने मनुस्मृति के पढने की बात तो दूर, उसकी आकृति तक देखी नहीं होती |एक दिन मुझे एक उच्चतर डग्रीधारी ऐसे व्यक्ति मले जो तुलसीदास की चौपाई ''ढोल, गंवार, शूद्र पशु नारी, ये सब ताडन के अ धकारी'' को मनु का श्लोक कहकर मनु की आलोचना करने लगे | इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है क मनु का वरोध करनेवालों में मनु और मनुस्मृति के वषय में सामान्य ज्ञान का कतना अभाव हैं |

सामान्य व्यक्तियों की बात छोड दीजिये, डॉ. अम्बेडकर जैसा व्यापक अध्येता भी मनु- वरोध के प्रवाह में इतना बहक गया है क उन्हें प्रत्येक शूद्र- वरोध मनु वहित नजर आता हैं| शंकराचार्य द्वारा ल खत शूद्र वरोधी वचनों को भी उन्होंने मनुस्मृति-प्रोक्त कहकर मनु के खाते में जोड दिया हैं | साधारण लेखकों में मनु के नाम पर जो अराजकता पायी जाती हैं, उसका ववरण लम्बा है| ये सब बातें इं गत करती हैं क मनुस्मृति को गम्भीरता से पढा नहीं जाता |

ऐसा देखरे में आया है क मनु एवं मनुस्मृति का वरोध करनेवालों में प्रमुखतः तीन प्रकार के व्यक्ति हैं |एक तो वे, जिन्होंने मनु को पूर्वाग्रहग्रस्त अंग्रेजी अलोचनाओं और उस परम्परा के माध्यम से पढा है, और जो प्राचीन भारतीय साहित्य में कालक्रम से हुए परिवर्तनों-प्रक्षेपों से परि चत नहीं हैं| दूसरे वे, जिन्होंने मनुस्मृति के मौ लक और प्र क्षप्त, दोनों पक्षों को चन्तन-मनन पूर्वक नहीं पढा हैं| तीसरे वे, जिन्होंने कन्हीं भ्रान्तियों, पूर्वाग्रहों और निंहित स्वार्थो के कारण मनु के वरोध को अपना लक्ष्य बना लया हैं | कन्तु वास्त वकता यह है क मह ष मनु का व्यक्तित्व और कृतित्व निंदा और वरोध करने का पात्र नहीं हैं| वे भारत और भारतीयता के लए गर्व और गौरव के वषय हैं |

भारत में मनु की प्रतिष्ठा

मह ष मनु ही पहले वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने संसार को एक व्यवस्थित,नियमबध्द,नैतिक एवं आदर्श मानवीय जीवन जीने की पध्दति सखायी है| वे मानवों के आदि पुरुष हैं, आदि

धर्मशास्त्रकार, आदि व धप्रणेता, आदि व धदाता (लॉ गवर), आदि समाज और राजनीति व्यवस्थापक, आदि राज र्ष हैं |मनु ही वह प्रथम धर्मगुरु हैं, जिन्होंने यज्ञपरम्परा का प्रवर्तन कया |उनके द्वारा र चत धर्मशास्त्र, जिसको क आज मनुस्मृति के नाम से जाना जाता है, सबसे प्राचीन स्मृतिग्रन्थ है| अपने साहित्य और इतिहास को उठाकर देख लीजिए, वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक एक सुदीर्घ परम्परा उन शास्त्रकारों, साहित्यकारों,लेखकों,क वयों और राजाओं की मलती हैं, जिन्होंने मुक्तकण्ठ से मनु की प्रशंसा की है |वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणग्रन्थों में मनु के वचनों को ''औषध के समान हितकारी और गुणकारी'' कहा है| मह र्ष वाल्मी क रामायण में मनु को एक प्रामा णक धर्मशास्त्रज्ञ के रुप में उध्दृत करते हैं और हिन्दुओं में भगवान् के रुप में पूज्य राम अपने आचरण को शास्त्रसम्मत सध्द करने के लए उसके समर्थन में मनु के श्लोकों को उध्दृत करते हैं| महाभारत में अनेक स्थलों पर मनु का सर्वोच्च धर्मशास्त्र और न्यायशास्त्री के रुप में उल्लेख करते हुए उनके धर्मशास्त्र को परीक्षा सध्द घो षत कया हैं| अनेक पुराणों में मनु को आदि राज र्ष, शास्त्रकार आदि वशेषणों से वभू षत करके उन्हें लोक हितकारी व्यक्तितत्व के रुप में व र्णत कया हैं |निरुक्त में आचार्य यास्क ने मनु के मत को उध्दृत करके 'पुत्र-पुत्री के समान दायभाग' के वषय में प्रामा णक माना है| कौटिल्य अर्थशास्त्र में चाणक्य ने मनु के मत को प्रमाण रुप में उध्दृत कया हैं |स्मृतिकार बृहस्पति मनु की स्मृति को सबसे प्रामा णक स्मृति मानकर उसके वरुध्द स्मृतियों को अमान्य घो षत करते हैं |बौध्द क व अश्वघोष ने अपनी कृति 'वज्रकोपनिषद्' में मनु के वचनों को प्रमाणरुप में उध्दृत कया है| याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृति पर ही आधारित हैं| सभी धर्मसूत्रों और स्मृतियों में मनु के वचनों को समर्थन में प्रस्तुत कया है| वलभी के राजा धारसेन के ५७१ ईस्वी के शलालेख में मनुधर्म को प्रामा णक घो षत कया हैं| बादशाह शाहजहां के लेखक पुत्र दारा शकोह ने मनु को वह प्रथम मानव कहा है, जिसे यहूदी, ईसाई,मुसलमान आदम कहकर पुकारते हैं| गुरु गो वन्द संह ने 'दशम ग्रन्थ' में मनु का मुक्तकण्ठ से गुणगान कया हैं|

आर्य समाज के प्रवर्तक मह र्ष दयानन्द ने वेदों के बाद मनुस्मृति को ही धर्म में प्रमाण माना है| श्री. अर वन्द ने मनु को अर्धदेव के रुप में सम्मान दिया है| श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ.राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरु आदि राष्ट्रनेताओं ने मनु को आदि 'लॉ गवर' के रुप में उल्लि खत कया है| अनेक कानून वदों जस्टिस डी.एन.मुल्ला, एन.राघवाचार्य आदि ने स्वर चत हिन्दु लॉ सम्बन्धी ग्रन्थों में मनु के वधानों को 'अथारिटी' घो षत कया हैं| मनु की इन्हीं वशेषताओं के आधार पर, लोकसभा में भारत का सं वधान प्रस्तुत करते समय जनता और पं.नेहरु ने तथा जयपुर में डॉ.अम्बेडकर की प्रतिभा का अनावरण करते समय तत्कालीन राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने डॉ. अम्बेडकर को 'आधुनिक मनु' की संज्ञा से गौरवान्वित कया था|

वदेशों में मह र्ष मनु की प्रतिष्ठा

मनु की प्रतिष्ठा, गरिमा और महिमा का प्रभाव एवं प्रसार वदेशों में भी भारत से कम नहीं रहा हैं| ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मन से प्रका शत 'इन्साइक्लोपी डया' में मनु को मानवजाति का आदि पुरुष, आदि धर्मशास्त्रकार, आदि व धप्रणेता, आदि न्यायशास्त्री और आदि समाजव्यवस्थापक व र्णत कया हैं| मनु के मन्तव्यों का समर्थन करते हुए अपनी पुस्तकों में मैक्समूलर, ए.ए.मैकडानल,ए.बी.कीथ,पी. थामस,लुईसरेनो आदि पाश्चात्य लेखकों ने मनुस्मृति

को धर्मशास्त्र के साथ-साथ एक 'लॉ बुक' भी माना है और उसके वधानों को सार्वभौम, सार्वजनिक तथा सबके लए कल्याणकारी बताया है| भारतीय सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन जज सर व लयम जोन्स ने तो भारतीय ववादों के निर्णय में मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखकर संस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढकर उसका सम्पादन भी कया| जर्मन के प्र सध्द दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहां तक कहा क ''मनुस्मृति बाइबल से उत्तम ग्रन्थ है'' बल्कि ''उससे बाइबल की तुलना करना ही पाप है|'' अमेरिका से प्रका शत 'इन्साइक्लोपी डया आफ दि सोशल साइं सज', 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इं डया', कीथर चत 'हिस्ट्री आफ संस्कृत लटरेचर', भारतरत्न पी.बी. काणे र चत 'धर्मशास्त्र का इतिहास' डॉ. सत्यकेतु र चत 'द क्षण-पूर्वी और द क्षण ए शया में भारतीय संस्कृति' आदि पुस्तकों में वदेशों में मनुस्मृति के प्रभाव और प्रसार का जो ववरण दिया गया है, उसे पढकर प्रत्येक भारतीय अपने अतीत पर गर्व कर सकता हैं|

बा लद्वीप, बर्मा, फलीपीन, थाइलैंड, चम्पा(द क्षणी वयतनाम),कम्बो डया, इन्डोने शया,मले शया,श्रीलंका,नेपाल आदि देशों से प्राप्त शलालेखों और उनके प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है क वहां प्रमुखतः मनु के धर्मशास्त्र पर आधारित-कर्मानुसारी वर्णव्यवस्था रही हैं| मनु के वधानों को सर्वोच्य महत्त्व दिया जाता था और उन्हीं के अनुसार न्याय होता था| शलालेखों में मनुस्मृति के अनेक श्लोक उत्कीर्ण पाये गये हैं| राजा लोग स्वयं को मनु का अनुयायी अथवा मनुमार्गगामी कहने में गर्व अनुभव करते थे और मनु की उपा ध धारण करके स्वयं को गौरवान्वित मानते थे| चम्पा (द क्षणी वयतनाम) में प्राप्त एक अ भलेख के अनुसार राजा जयइन्द्रवर्मदेव मनुमार्ग का अनुसरण करनेवाला था| कम्बो डया के राजा उदयवीर वर्मा के 'सदोक काकथोम' से प्राप्त अ भलेख में 'मानवनीतिसार' ग्रन्थ का उल्लेख है, जो मनुस्मृति पर आधारीत था | 'प्रसत कोमपन' से प्राप्त राजा यशोवर्मा के अ भलेख में मनुस्मृति का २.१३६ श्लोक उध्दृत मलता है| राजा जयवर्मा के अ भलेख में मनुसंहिता के वशेषज्ञ एक मन्त्री का उल्लेख है| बा लद्वीप में आज भी मनु-व्यवस्था है| उक्त देशों की आचारसंहिताएं/सं वधान मनुस्मृति पर ही आधारित थे और बहुत कुछ अब भी है| फलीपीन के निवासी मानते हैं क उनकी आचार संहिता के निर्माण के निर्माण में मनु और लाओत्से की स्मृति का प्रमुख योगदान है, इस कारण वहां की वधानसभा के द्वारपर इन दोनों की मूर्तियां स्था पत की गयीं|

हम मनु का कतना ही वरोध कर लें और चाहे कतनी ही निन्दा करलें, मनु का हम से जो सम्बन्ध बन चुका है, वह जब तक इतिहास और यह समाज रहेगा, तब तक मट नहीं सकता | आदिवंश प्रवर्तक होने के कारण मनु को न कभी त्यागा जा सकता है, न भुलाया जा सकता हैं|

भारतीय साहित्य और समाज मनु को अपना आदि-पुरुष मानता हैं| सभी मनुष्य मनु की सन्तान हैं| इसी कारण आदमी के वाचक जितने भी नाम हैं, वे 'मनु' शब्द से बने हैं, जैसे- मनुष्य,मनुज,मानव,मानुष आदि| इसी लए निरुक्तकार ने इनकी व्युत्प त्त करते हुए कहा हैं-

''मनोः अपत्यम्, मनुष्यः'' (३.४)

अर्थात्–'मनु की सन्तान होने से हमें मनुष्य कहा जाता है|' ब्राह्मणग्रन्थों में भी ''मानव्यः प्रजाः'' कहकर इसी तथ्य को प्रस्तुत कया गया है| यूरोपीय वद्वानों ने भाषा वज्ञान के

आधार पर राह सध्द कर दिया है क कभी युरोप, ईरान और भारतीय उपमहाद्वीप निवासी एक ही परिवार के सदस्य थे| इन सबकी भाषाओं में मनुष्यवाचक जो शब्द प्रच लत हैं, वे मनुमूलक शुरों के अपभ्रंश हैं | जैसे, ग्रीक और लैटिन में माइनोस, जर्मनी में मन्न,स्पेनिश में मन्नाःअंग्रेजी तथा उसकी बो लयों में मैन,मेनिस,मनुस,मनेस,मनीस आदिः ईरानी-फारसी में नूह (मनुस् के स् को ह होकर और म का लोप होकर) कहा जाता हैं| इन देशों के ऐतिहा सक उल्लेखों से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है| ईरानवासी आज भी स्वयं को आर्यवंशी मानते हैं और अपना मूल उद्रम आर्यो के 'सप्त सन्धु' देश से मानते हैं| कम्बो डया के निवासी स्वयं को मनु की सन्तान कहते हैं| थाईलैंड के निवासी स्वयं को सूर्यवंशी राम के वंशज मानते हैं| राम और कृष्ण दोनों हो मनु की वंशपरम्परा में आते हैं |इस ववरण को पढकर हम कह सकते हैं क अतीत मएक धर्मशास्त्रकार और व धदाता (लॉ गवर) के रुप में मह र्ष मनु को जो प्रतिष्ठा और महत्त्व मला है, वह कसी अन्य को नहीं मला|

मनु और मनुस्मृति पर आक्षेप

आइये, अब मनु और मनुस्मृति पर लगाये जानेवाले आक्षेपों पर वचार करें| मुख्यरुप से उन्हें तीन वर्गों में बांटा जा सकता है-

(क) मनु ने जन्म पर आधारित जाति-पांति व्यवस्था का निर्माण कया|

(ख) उस व्यवस्था में मनु ने शूद्रों अर्थात् द लतों के लए पक्षपातपूर्ण एवं

अमानवीय वधान कये हैं, जब क सवर्णों, वशेषतः ब्राह्मणों को

वशेषा धकार प्रदान कये हैं| इस प्रकार मनु शूद्र वरोधी थे|

(ग) मनु स्त्री वरोधी थे| उन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के समान अ धकार नहीं दिये| मनु ने स्त्रियों की निन्दा की हैं |

इन तीनों आक्षेपों के समाधान के लए बाह्य प्रमाणों और मतों की अपेक्षा अन्तःसाक्ष्य अ धक प्रामा णक रहेंगे, अतः यहां मनुस्मृति के अन्तःसाक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कये जाते हैं-

(क) मनु की वर्णव्यवस्था का वास्त वक स्वरुप

१. मनु की वर्णव्यवस्था गुण-कर्म-योग्यता पर आधारित और वेदमूलक-मनुस्मृति में व र्णत गुण-कर्म-योग्यता पर आधारित वेदमूलक हैं| यह मूलतः तीन वेदों (ऋग् १०.९०.११-१२;यजु. ३१.१०-११;अथर्व. १९.६.५-६) में पायी जाती हैं| मनु वेदों को धर्म में परम प्रमाण मानते हैं, अतः उन्होंने वर्णव्यवस्था को धर्ममूलक व्यवस्था मानकर उसे वेदों से ग्रहण करके अपने शासन में क्रयान्वित कया तथा धर्मशास्त्र के द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित कया|

२. वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था में अन्तर और परस्पर वरोध-मनु की वैदिक वर्णव्यवस्था गुण-कर्म-योग्यता पर आधारित हैं,जन्म पर आधारित नहीं| यह समझ लेना आवश्यक है क वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था परस्पर वरोधी व्यवस्थाएं हैं| एक की उपस्थिति में दूसरी नहीं टिक सकती| इनके अन्तर्निहित अर्थभेद को समझकर इनके मौ लक अन्तर को आसानी से समझा जा सकता हैं| वर्णव्यवस्था में वर्ण प्रमुख हैं और जातिव्यवस्था में जाति अर्थात् 'जन्म' प्रमुख हैं| जिन्होंने इनका समानार्थ में प्रयोग कया है उन्होंने स्वयं को और पाठकों को भ्रान्त कर दिया| 'वर्ण' शब्द 'वृत्र्-वरणे' धातु से बना है, जिसका अर्थ है-'जिसको वरण कया जाये' वह समुदाय| निरुक्त में आचार्य यास्क ने इसके अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट कया हैं-

''वर्णः वृणोतेः'' (२.१४) = वरण करने से 'वर्ण' कहलाता है|

जब क जाति का अर्थ है-जन्म |इस अर्थ में जाति शब्द का प्रयोग मनुस्मृति में हुआ हैं-

''जाति-अन्धब धरौ'' (१.२०१) = जन्म से अन्धे-बहरे |

''जातिं स्मरति पौ र्वकीम्'' (४.१४८) = पूर्वजन्म को स्मरण करता है|

''द् वजातिः'' (१०.४) = द् वज,क्यों क उसके दो जन्म होते हैं|

''एकजातिः'' (१०.४) = शूद्र,क्यों क उसका वद्याजन्म नहीं होता|

एक जन्म ही होता हैं |

वैदिक वर्णव्यवस्था में समाज को ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र,इन चार समुदायों में व्यवस्थित कया गया हैं| जब तक गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर व्यक्ति इन समुदायों का वरण करते रहे, तब तक वह वर्णव्यवस्था कहलायी |जब जन्म से ब्राह्मण, शूद्र आदि माने जान लगे तो वह जातिव्यवस्था बन गयी |वर्ण शब्द का धातु-प्रत्यमूलक अर्थ ही यह संकेत देता है क जब यह व्यवस्था बनी तब यह गुण-कर्म-योग्यता के अनुसार वरण की जाती थी, जन्म से नहीं थी|

३. वर्णों में जातियों का उल्लेख नहीं-मनु की कर्मणा वर्णव्यवस्था का साधक एक बहुत बडा प्रमाण यह है क मनु ने केवल चार वर्णों का उल्लेख कया है, कन्हीं जातियों अथवा गोत्रों का परिगणन नहीं कया है| इससे दो तथ्य स्पष्ट होते हैं |एक-मनु के समय जन्मना कोई जाति नहीं थी |दो-जन्म अथवा गोत्र का वर्णव्यवस्था में कोई महत्त्व नहीं था और न उसके आधार पर वर्ण की प्राप्ति होती थी |यदि मनु के समय जातियां होतीं और जन्म के आधार पर वर्ण का निर्धारण होता तो वे उन जातियों का परिगणन अवश्य करते और बतलाते क अमुक जातियां या गोत्र ब्राह्मण हैं और अमुक शूद्र| मनु, जन्माधारित महत्ताभाव को कतना उपेक्षणीय समझते हैं, इसका ज्ञान उस श्लोक से होता है जहां भोजनार्थ कुल-गोत्र का कथन करनेवाले को उन्होंने 'वान्ताशी = वमन करके खानेवाला' जैसे निन्दित वशेषण से अ भहित

कया है (३.१०९)|और आदरन्चडप्पन के मानदण्डों में कुल-गोत्र जाति का उल्लेख ही नहीं है, केवल गुण-कर्मो का हैं|

४. मनु को जातिव्यवस्थापक मानने से मनुस्मृति-रचना व्यर्थ-यदि हम मनु को जन्मना वर्णव्यवस्था का प्रतिपादक मान लेते हैं तो इससे मनुस्मृतिरचना का उद्देश्य ही व्यर्थ हो जायेगा, क्यों क मनुस्मृति में पृथक्-पृथक् वर्णों के लए पृथक् कर्मों का वधान कया गया हैं| यदि कोई व्यक्ति जन्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र कहलाने लगता है, तो वह वहित कर्म करे या न करे, वह उसी वर्ण में रहेगा |उसके लए कर्मों का वधान निरर्थक हैं| मनु ने जो पृथक् कर्मों का निर्धारण कया है, वही यह सध्द करता है क वे कर्म के अनुसार वर्णव्यवस्था को मानते हैं, जन्म से नहीं |

५. वर्णव्यवस्था में वर्णपरिवर्तन का वधान-वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था में एक बहुत बडा अन्तर यह है क वर्णव्यवस्था में वर्णपरिवर्तन हो सकता है और व्यक्ति को वर्णपरिवर्तन की स्वतन्त्रता होती है, जब क जातिव्यवस्था में जहां जन्म हो गया, जीवनपर्यन्त वही जाति रहती है| मनु की व्यवस्था वर्णव्यवस्था थी, जिसमें व्यक्ति को वर्ण परिवर्तन की स्वतन्त्रता थी |इस वषय मेंमनुस्मृति का एक महत्त्वपूर्ण श्लोक प्रमाणरुप में उध्दृत कया जाता है जो सभी सन्देहों को दूर कर देता है-

शूद्रो ब्राह्मणताम् एति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् |

क्षत्रियात् जातमेवं तु वद्याद् वैश्यात्तथैव च ॥

(अ.१०, श्लोक ६५)

अर्थात् –‘गुण,कर्म,योग्यता के आधार पर ब्राह्मण,शूद्र बन जाता है और शूद्र ब्राह्मण| इसी प्रकार क्षत्रियों और वैश्यों में भी वर्णपरिवर्तन हो जाता हैं |’

६. निर्धारित कर्मों के त्याग से वर्णपरिवर्तन-मनुस्मृति में दर्जनों ऐसे श्लोक हैं, जिनमें निर्धारित कर्मों के त्याग से और निकृष्ट कर्मों के कारण द् वजों को शूद्र कोटि में परिग णत करने का वधान कया है (द्रष्टव्य २| ३७,४०,१०३,१६८;४ |२४५ आदि श्लोक)| और शूद्रों को श्रेष्ठ कर्मों से उच्चवर्ण की प्राप्ति का वधान है (९.३३५)|

७. महाभारत काल तक वर्णव्यवस्था का प्रचलन-उक्त प्रमाणों और युि क्तयों से यह बात स्पष्ट हो जाती है क मनु द्वारा वहित वर्णव्यवस्था में सभी व्यक्तियों को गुण-कर्मानुसार

वर्ण में दी क्षत होने के समान अवसर प्राप्त थे |ऋग्वेद से लेकर महाभारत (गीता) पर्यन्त यह कर्माधारित वर्णव्यवस्था चलती रही है |गीता में स्पष्ट शुरों में कहा गया है-

''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण-कर्म- वभागशः'' (४ |१३)

अर्थात्-गुण-कर्म- वभाग के अनुसार चातुर्वर्ण्यव्यवस्था का निर्माण कया गया है| जन्म के अनुसार नहीं|

८. वर्ण परिवर्तन के ऐतिहा सक उदाहरण-भारतीय इतिहास में, सैंकडों ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं, जो कर्म पर आधारित वर्णव्यवस्था की पुष्टि करते हैं, जो यह सध्द करते हैं क कसी भी वर्ण को जन्म के आग्रह से नहीं जोडा गया |जैसे-(१) दासी का पुत्र 'कवष ऐलूष' और 'शूद्रापुत्र' 'वत्स' मन्त्रद्रष्टा होने के कारण दोनों ऋग्वेद के ऋ ष कहलाये |(२) क्षत्रिय कुल में उत्पन्न राजा वश्वा मत्र ब्रह्म र्ष बने |(३) अज्ञात कुल के सत्यकाम जाबाल ब्रह्मवादी ऋ ष बने| (४) चंडाल के घर में उत्पन्न 'मातंग' एक ऋ ष कहलाये |(५) (कुछ कथाओं के अनुसार) निम्न कुल में उत्पन्न वाल्मी क, मह र्ष वाल्मी क की पदवी को प्राप्त कर गये |(६) दासीपुत्र वदुर राजा धृतराष्ट के महामन्त्री बने और महात्मा कहलाये |(७) दशरथ पुत्र श्री राम और यदु कुल में उत्पन्न श्रीकृष्ण 'भगवान' माने गये |वे ब्राह्मणों के भी पूज्य बने, जब क उनका कुल क्षत्रिय था |इसके वपरीत कर्मों के ही कारण, (८) पुलस्त्य ऋ ष का वंशज लंका धपति रावण 'राक्षस' कहलाया| (९) राम के पूर्वज रघु का 'प्रवृध्द' नामक पुत्र नीच कर्मों के कारण क्षत्रियों से बहिष्कृत होकर 'राक्षस' बना |(१०) राजा त्रिशंकु चंडालभाव को प्राप्त हुआ |(११) वश्वा मत्र के कई पुत्र शूद्र कहलाये |

९. जातियों के वर्णपरिवर्तन-व्यक्तिगत उदाहरणों के अतिरिक्त, इतिहास में पूरी जातियों का अथवा जाति के पर्याप्त भाग का वर्णपरिवर्तन भी मलता है| महाभारत और मनुस्मृति में कुछ पाठभेद के साथ पाये जानेवाले श्लोकों से ज्ञात होता हैं क निम्न जातियाँ पहले क्षत्रिय थीं कन्तु अपने क्षत्रिय कर्तव्यों के त्याग के कारण और ब्राह्मणों द्वारा बताये प्रायश्चित्त न करने के कारण वे शूद्रकोटि में परिग णत हो गयीं-

शनकैस्तु क्रयालोपादिमा क्षत्रियजातयः |

वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥

पौण्ड्रकाश्चौड्द्र वडाः काम्बोजाः यवनाः शकाः |

पारदाः पह्वाश्चीनाः कराताः दरदाः खशाः ॥ (१०.४३-४४)

अर्थात्-अपने निर्धारित कर्तव्यों का त्याग कर देने के कारण और फर ब्राह्मणों द्वारा बताये प्रायश्चित्तों को न करने के कारण धीरे-धीरे ये क्षत्रिय जातियां शूद्र कहलायीं-पौण्ड्रक, औड्र, द्र वड, कम्बोज,यवन,शक,पारद,पह्लव,चीन, करात, दरद,खश॥ महाभारत अनु.३५.१७-१८ में इनके अतिरिक्त मे कल,लाट,कान्व शरा, शौण्डिक,दार्व,चौर,शबर,बर्बर जातियों का भी उल्लेख हैं|

बाद तक भी वर्णपरिवर्तन के उदाहरण इतिहास में मलते हैं| जे. वलसन और एच.एल.रोज के अनुसार राजपूताना, सन्ध और गुजरात के पोखरना या पुष्करण ब्राह्मण, और उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिला के आमताडा के पाठक और महावर राजपूत वर्णपरिवर्तन से निम्न जाति से ऊंची जाति के बने (दे खए हिन्दी वश्वकोश भाग४)|

१०. चारों वर्णों में पाये जानेवाले समान गोत्रों का रहस्य-ब्राह्मणों, क्षत्रिय जातियों, वैश्य और द लत जातियों में समान रुप से पाये जाने वाले गोत्र, ऐतिहा सक वंश परम्परा के पुष्ट प्रमाण हैं, जो यह सध्द करते हैं क वे सभी एक ही मूल परिवारों के वंशज हैं | पहले वर्णव्यवस्था में जिसने गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर जिस वर्ण का चयन कया, वे उस वर्ण के कहलाने लगे | बाद में व भन्न कारणों के आधार पर उनका ऊंचा-नीचा वर्णपरिवर्तन होता रहा| कसी क्षेत्र में वही ब्राह्मण वर्ण में रह गया तो कहीं क्षत्रिय, तो कहीं शूद्र कहलाया| कालक्रमानुसार जन्म के आधार, पर उनकी जाति रुढ हो गयी|

११. वर्णव्यवस्था के आधारभूत तत्त्व-मनुस्मृति में व र्णत वर्णव्यवस्था के आधारभूत तत्त्व हैं-गुण,कर्म-योग्यता | मनु व्यिक्त अथवा वर्ण को महत्त्व और आदर-सम्मान नहीं देते अ पतु उक्त गुणों को देते हैं | जहॉं इनका आ धक्य है, उस व्यक्ति और वर्ण का महत्त्व, आदर-सम्मान अ धक है, न्यून होने पर न्यून हैं| आज तक संसार की कोई भी सभ्य व्यवस्था इन तत्त्वों को न नकार पायी है और न नकारेगी| इनको नकारने का अर्थ है-अन्याय, असन्तोष,आक्रोश,अव्यवस्था और अराजकता| मुहावरों की भाषा में इसी स्थिती को कहते हैं 'घोडे-गधे को एक समझना' या 'सभी को एक लाठी से हांकना|' इसका परिणाम होता है, कोई भी समाज या राष्ट्र न वकास कर सकता है, न उन्नति; न समृध्द हो सकता है, न सम्पन्न; न सुखी हो सकता है, न संतुष्ट; न शान्त रह सकता है, न अनुशा सत; न व्यवस्थित रह सकता है, न अखण्डित | ऐसी व्यवस्था अ धक समय तक जी वत नहीं रह सकती| वर्तमान में निश्चित सर्वसमानता का दावा करने वाली साम्यवादी व्यवस्था भी इन तत्त्वों से स्वयं को पृथक् नहीं रख सकी| उसमें भी गुण-कर्म-योग्यता के अनुसार पद और सामाजिक स्तर हैं| उन्हीं के अनुरुप वेतन, सु वधा और सम्मान में अन्तर हैं|

हमारी आजकल की प्रशासनिक और व्यावसायिक व्यवस्था की तुलना करके दे खए, मनु की बात आसानी से समझ आ जायेगी और ज्ञात होगा क मनु की और आज की इन व्यवस्थाओं में मूलभूत समानता है| सरकार की प्रशासन व्यवस्था में चार वर्ग हैं- १. प्रथम श्रेणी राजपत्रित अ धकारी, २. द् वतीय श्रेणी राजपत्रित अ धकारी, ३-४ तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी | इनमें प्रथम दो वर्ग अ धकारी हैं, दूसरे कर्मचारी | यह वभाजन गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर है और इसी आधार पर इनका महत्त्व, सम्मान एवं अ धकार हैं | इन पदों के लए योग्यताओं का प्रमाणीकरण पहले भी शक्षासंस्थान (गुरुकुल,आश्रम,आचार्य) करते थे और आज भी शक्षासंस्थान (वद्यालय, वश्व वद्यालय आदि) ही करते हैं | शक्षा का कोई

प्रमाणपत्र नहीं होने से, अल्प श क्षत या अ श क्षत व्यक्ति सेवा और शारीरिक श्रम के कार्य ही करता है और वह अन्तिम कर्मचारी श्रेणी में आता है| पहले भी जो गुरु के पास जाकर वद्या प्राप्त नहीं करता था, वह इसी स्तर के कार्य करता था और उसकी संज्ञा 'शूद्र' थी |शूद्र के अर्थ हैं-'निम्न स्थितिवाला' 'आदेशवाहक' आदि |नौकर, चाकर, सेवक, प्रेष्य, सर्वेंट, अर्दली, निम्न श्रेणी कर्मचारी, आदि संज्ञाओं में कतनी अर्थसमानता है आप स्वयं देख लीजिये |व्यवसायों के निर्धारण में भी बहुत अन्तर नहीं हैं | शक्षासंस्थानों से डाक्टर, वकील, अध्यापक, आदि की डग्री प्राप्त करके ही व्यवसाय की अनुमति है, उसके बिना नहीं |सबके नियम-कर्तव्य निर्धारित हैं| उनकी पालना न करनेवाले को व्यवसाय और पद से हटा दिया जाता हैं |

१२. शूद्रों को वर्ण परिवर्तन के व्यावहारिक अवसर-जो लोग अपने आपको 'शूद्र' समझते हैं और अभी तक कसी कारण से स्वयं को 'शूद्रकोटि' में मानकर मानवीय अ धकारों से वं चत रखा हुआ है, मनु को धर्मगुरु माननेवाला और मनु के सध्दान्तों तथा व्यवस्थाओं पर चलनेवाला 'आर्यसमाज' योग्यतानुसार कसी भी वर्ण में दी क्षत होने का उनका आव्हान करता है और उन्हें व्यावहारिक अवसर देता हैं| जब आज का सं वधान नहीं बना था, उससे बहुत पहले मह र्ष दयानन्द ने मनुस्मृति के आदेशों के परिप्रेक्ष्य में छूत-अछूत, ऊंच-नीच, जाति-पांति, नारी-शुद्रों को न पढाना, बाल- ववाह, अनमेल- ववाह, बहु- ववाह, सती प्रथा, शोषण आदि को सामाजिक बुराइयाँ घो षत करके उनके वरुध्द संघर्ष कया था |नारियों के लए गुरुकुल और वद्यालय खोले |अपनी शक्षा संस्थाओं में शूद्रों को प्रवेश दिया, परिणामास्वरुप वहाँ श क्षत सैंकडों-द लत संस्कृत एवं वेद-शास्त्रों के वद्वान् स्नातक बन चुके हैं| द लत जाति के लोग क्यों भूलते हैं क उनकी 'अस्पृश्य' बन गये थे, कन्तु उन्होंने संघर्ष को नहीं छोडा| इन घटनाओं से अन भंज्ञ द लत-लेखक आर्यसमाज को भी रंगीन चश्मे से देखते हैं| क्या उनकी यह अकृतज्ञता नहीं है?

१३. व्यवस्था का सही मूल्यांकन-मनुका समय अति प्राचीन है| यद्य प उन्होंने मनुस्मृति में जो आदर्श जीवनमुल्य, मर्यादाएं और धर्म का स्वरुप प्रस्तुत कया है, वह सार्वभौम एवं सार्वका लक है, कन्तु जो देश-काल-परिस्थितियों पर आधारित व्यवस्थाएं हैं, वे तदनुसार परिवर्तनीय हैं |मनु ने अपने समय जिस सामाजिक व्यवस्था को ग्रहण कया वह उस समय की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था थी| यही कारण है वह व्यवस्था अत्यन्त व्यापक प्रभाववाली रही और हजारों वर्षों तक वह प्रच लत होती आयी है| इस कालचक्र में कुछ व्यवस्थाएं अपने मूल स्वरुप को खोकर वकृत हो गयीं |समयानुसार अनेक सामाजिक व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन हुआ| कन्तु इसका अ भप्राय यह नहीं है क प्राचीनता हमारे लए पूर्णतः अग्राह्य और अपमान की वस्तु बन गयी| यदि हमारी यही सोच उभरती है तो प्राचीन गौरव से जुडी प्रत्येक वस्तु जैसे-महापुरुष, वीर पुरुष, क व, लेखक, नगर, तीर्थ, भवन, साहित्य, इतिहास सभी कुछ निन्दा की चपेट में आ जायेगा| कसी भी व्यवस्था, वस्तु, व्यक्ति का मूल्यांकन तत्कालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ही कया जाना चाहिए, वही सही मूल्यांकन माना जा सकता है|

मह र्ष मनु और डॉ.अम्बेडकर

१४. भारतीय लेखकों में मनु के वरोध की परम्परा के प्रमुख संवाहक और प्रेरणास्त्रोत डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे| यद्य प जन्मना जाति-पांति, ऊंच-नीच, छूत-अछूत जैसी कुप्रथाओं के कारण अपने जीवन में उन्होंने जिन उपेक्षाओं, असमानताओं, यातनाओं और अन्यायों को भोगा

था, उस स्थिति में कोई भी स्वा भमानी श क्षित वही करता, जो उन्होंने कया; कन्तु मनु और मनुस्मृति को गम्भीरता एवं पूर्णता से समझे बिना, पूर्वाग्रहों के कारण, उन्होंने मनु के वषय में जो व्यवहार कया, वह भी सर्वथा अनु चत एवं अन्यायपूर्ण था | एक कानून वद् होने के नाते उन पर इस अनौ चत्य की जिम्मेदारी अ धक आती है| उन्होंने सं वधान में प्रावधान कया है क 'अनु चत निर्णय से निरपराध को दण्ड नहीं मलना चाहिए, चाहे अपराधी मुक्त हो जाये|' कन्तु उन्होंने अपने जीवन में इसका पालन नही कया| परवर्ती समाज द्वारा बनायी गयी जन्माधारित सामाजिक व्यवस्थाओं को मनु पर थोंपकर अनावश्यक रुप से उन्हें दोषी घो षत करते रहे और उनके वरुध्द निंदा अ भयान चलाते रहे, आर्य (हिन्दु) समाज में प्रतिष्ठित एक मह र्ष के लए बेहद कटु वचनों का प्रयोग करते रहे| हालां क तत्कालीन बहुत से व्यक्ती उनका ध्यान बार-बार इस तथ्य की ओर आक र्षत करते रहे क मनु के वषय में अभी उनकी कुछ भ्रान्तियाँ और पूर्वाग्रह हैं, वे उन्हें दूर कर लें, कन्तु वे पूर्वाग्रहों पर अडे रहे| उसके कई कारण थे| जो कुछ तब वे मनु के वषय में लख चुके थे, शायद उसको छोडना नहीं चाहते थे, और उन्हीं के शब्दों में ''उन पर मनु का भूत सवार था और उनमें इतनी शक्ति नहीं थी क वे उसे उतार सकें|'' सत्य है, उस भूत को वे जीवन-पर्यन्त नहीं उतार सके और जीवन के उपरान्त उसे अपने अनुगा मयों पर छोड गये| ले कन क्या 'भूत सवार होना' सामान्य स्थिति, संतु लत वचार, ववेकपूर्ण सही समीक्षा का परिचायक माना जा सकता है?

यह भी उनके जीवन की वास्त वकता है क डॉ.अम्बेडकर संस्कृत के ज्ञाता नहीं थे| जैसा क उन्होंने स्वयं स्वीकार कया है, उन्होंने मनुसम्बन्धी समस्त अध्ययन- वश्लेषण अंग्रेजी भाषा में लखी आलोचनाओं के माध्यम से ग्रहण कया है, अतः वे मौ लक-प्र क्षप्त आदि पहलुओं, श्लोकों के प्रसंगों आदि पर वचार नहीं कर सके| जो अंग्रेजी समालोचनाओं में पढा, वही धारणाएं बन गयीं| डॉ.अम्बेडकर के समय तक मनुस्मृति के प्रक्षेपों पर कोई शोधकार्य भी नहीं हुआ था, अतः उन्हें मौ लक और प्र क्षप्त श्लोकों में भेद करने का कोई स्त्रोत नहीं मला | यदि उक्त कारण न होते तो शायद वे मनु और मनुस्मृति का इतना अ वचारित वरोध नहीं करते|

१५. डॉ. अम्बेडकर के, मनु की वैदिक वर्णव्यवस्था वषयक, आधारभूत मन्तव्यों को यहां प्रस्तुत करके उन पर चर्चा करना इस लए आवश्यक प्रतीत होता है क उससे उनकी समीक्षा के साथ-साथ इस लेख को एक नया प्रमाण मलेगा | वे लखते हैं-

ह्न ''एक बात मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ क मनु ने जाति के वधान का निर्माण नहीं कया और न वह ऐसा कर सकता था| जातिप्रथा मनु से पूर्व वद्यमान थी|'' (भारत में जातिप्रथा पृ० २९)

ह्न ''यह नि र्ववाद है क वेदों में चातुर्वर्ण्य के सध्दान्त की रचना की है, जिसे पुरुषसूक्त के नाम से जाना जाता हैं |'' (हिन्दुत्व का दर्शन पृ० १२२)

ह्न ''कदा चत् मनु जाति के निर्माण के लए जिम्मेदार न हो परन्तु मनु ने वर्ण की प वत्रता का उपदेश कया है| वर्ण जाति की जननी है और इस अर्थ में, मनु जाति व्यवस्था का लेखक न भी हो, परंतु उसका पूर्वज होने का उस पर निश्चित ही आरोप लगाया जा सकता है|'' (हिन्दुत्व का दर्शन पृ० ४२)

ह्न ''मैं मानता हूँ क स्वामी दयानन्द व कुछ अन्य लोगों ने वर्ण के वैदिक सध्दान्त की जो व्याख्या की है, वह बुध्दिमत्तापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है| मैं यह व्याख्या नहीं मानता क जन्म कसी व्यक्ति का समाज में स्थान निश्चित करने का निर्धारक तत्व हो| वह केवल योग्यता को मान्यता देती है|'' (जातिप्रथा उन्मूलन, पृ० ११९)

ह्न ''वेद में वर्ण की धारणा का सारांश यह है क व्यक्ति वह पेशा अपनाए, जो उसकी स्वाभा वक योग्यता के लए उपयुक्त हो|'' (वही पृ० ११९)

ह्न ''जाति का आधारभूत सध्दान्त वर्ण के आधारभूत सध्दान्त से मूल रुप से भन्न है, न केवल मूलरुप से भन्न है, बल्कि मूल रुप से परस्पर वरोधी है| पहला सध्दान्त (वर्ण) गुण पर आधारित है|'' (वही पृ० ८१)

१६. प्रस्तुत उध्दरणों में डॉ.अम्बेडकर स्पष्ट शब्दों में स्वीकार कया है क वर्णव्यवस्था की रचना वेदों से हुई| मनु इसके निर्माता नहीं, केवल पोषक हैं| वेदों की वर्णव्यवस्था गुण-कर्म-योग्यता पर आधारित है, जो बुध्दिमत्तापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है| वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था परस्पर वरोधी हैं| मनु जाति व्यवस्था के निर्माता भी नहीं हैं| इस प्रकार मनु वर्णव्यवस्था और जातिव्यवस्था के निर्माता के आरोप से मुक्त हो जाते हैं| वर्णव्यवस्था के पोषक होने के कारण उन पर यह भी आरोप नहीं बनता क उन्होंने जन्मना जातिवाद का पोषण कया | यदि वर्णव्यवस्था बुध्दिमत्तापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है, तो व्यवस्था का पोषण करके उन्होंने उत्तम कार्य ही कया है, अपराध नहीं कया| मनु वैदिक धर्मावलम्बी होने से वेदों को परम प्रमाण मानते हैं| अपने धर्मग्रन्थों के आदेशों का पालन करते हुए उन्होंने उसकी अच्छी व्यवस्थाओं का प्रचार-प्रसार कया तो यह कोई दोष नहीं| सभी धर्मावलम्बी ऐसा करते हैं| बौध्द बनने के बाद डॉ.अम्बेडकर ने भी बौध्द वचारों का प्रचार-प्रसार कया है| यदि उनका यह कार्य उ चत है, तो मनु का भी उ चत है| इतनी स्वीकारोक्तियाँ होने के उपरान्त भी, आश्चर्य है क डॉ.अम्बेडकर मनु को स्थान-स्थान पर जातिवाद का जिम्मेदार ठहरा कर उनकी निन्दा करते हैं| परवर्ती सामाजिक व्यवस्थाओं को मनु पर थोंपकर उन्हें कटु वचन कहना कहाँ का न्याय हैं?

सं वधान में चवालीस वर्षों में अस्सी के लगभग संशोधन कये जा चुके हैं, जिनमें कुछ सं वधान की मूल भावना के प्रतिकुल हैं, जैसे-अंग्रेजी की अव ध बढाना,मुसलमानों में गुजाराभत्ता की शर्त हटाना आदि, क्या इन परवर्ती संशोधनों का, और भावी संशोधनों का जिम्मेदार डॉ.अम्बेडकर को ठहराया जा सकता है? यदि नहीं, तो हजारों वर्ष परवर्ती वकृत व्यवस्थाओं के लए मनु को जिम्मेदार कैसे ठहराया जा सकता हैं?

१७. डॉ.अम्बेडकर का मानना है क वर्णव्यवस्था जातिव्यवस्था की जननी है, क्यों क वर्णव्यवस्था का मनु ने पोषण कया था, इस लए मनु दोष के पात्र हैं| कतना अटपटा और लचीला तर्क है यह! ठीक जातिवाद जैसा| जैसे- कसी ने श्राध्द नहीं कया तो वह पछली छह पीढियों के पूर्वजों सहित नरक में जायेगा, क्यों क वे उसके जनक और पोषक हैं| कसी ने श्राध्द कया तो उसकी पछली छह-पीढियाँ तर जायेंगी, क्यों क वे उसकी 'जनक' हैं| ऐसे ही, जातिव्यवस्था दोषपूर्ण है, अतः उसकी पूर्वव्यवस्था और उनके पोषक मनु भी दोषी हैं| आश्चर्य तो यह है क कानूनवेत्ता एक कानूनदाता के लए ऐसे आरोपों का प्रयोग कर रहा हैं| सं वधान में तो डॉ.अम्बेडकर ने ऐसा कानून नहीं बनाया क कसी अपराधी को दण्ड देने के साथ-साथ

उसके माता- पता, दादा आदि को भी अपराधी घो षत कर दिया जाये, इस लए क वे उसके जनक हैं | वगत को अपराधी घो षत करके उन्हें दण्डित और नष्ट-भ्रष्ट करने के इस सध्दान्त को यदि कुछ राष्ट्रीय मामलों के लए भी सं वधान में भी लागू कर देते तो इससे उन राष्ट्रवादियों को सन्तोष होता, जिनकी यह वचारधारा रही है क देश स्वतंत्र होने के बाद उन लोगों को अपराधी घो षत करके दण्डित कया जाना चाहिए, जिन्होंने वगत में राष्ट्रदोह और स्वतन्त्रता द्रोह कया था, जिन्होंने वदेशी शासकों का सहयोग कया, गुप्तचरी की, देशभक्तों को फांसी दिलवायी | वे लोग मुरब्बे, पद पैसे पाकर तब भी सम्पन्न-सुखी थे, आज भी हैं और स्वतन्त्रतासेनानी दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं| शायद ही ऐसी छूट कसी व्यवस्था-परिवर्तन ने दी हो| यदि वैसा होता तो गद्दारों को सबक मलता और भावी राष्ट्रीय एकता-अखण्डता और स्वतन्त्रता के हित में होता|

१८. वर्ण को जाति का जनक मानकर मनु को इस तरह दोषी ठहराया जा रहा हैं, जैसे मनु पहले ही जानते थे क भ वष्य में वर्ण से जाति का जन्म होगा, और इस आशा में वे जान बुझकर वर्ण का पोषण कर रहे थे| डॉ.अम्बेडकर ने वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था का पोषण कया है| क्या वे जानते थे क इससे भ वष्य में कौन सी व्यवस्था का जन्म होगा? बिल्कुल नहीं| इसी प्रकार मनु को भी नहीं पता था क वर्णव्यवस्था का भ वष्य में क्या रुप होगा|

१९. डॉ.अम्बेडकर वर्तमान जाति-पांति रहित सं वधान के निर्माता एवं पोषक हैं| दुर्भाग्य से, सैकडों वर्षों के बाद यदि यह जातिवादी रुप ले जाये तो क्या डॉ. अम्बेडकर उस के जनक होने के जिम्मेदार बनेंगे? सभी कहेंगे-नहीं, वे तो जातिवाद के वरोधी हैं, उन्हें जनक क्यों कहा जाये| इसी प्रकार जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था की वरोधी व्यवस्था है| मनु को अपनी वर्णव्यवस्था की वरोधी जातिव्यवस्था का जनक कैसे कहा जा सकता है? इस प्रकार उन पर जातिव्यवस्था का जनक होने का आरोप सरासर गलत हैं| सच यह है क बाद के समाज ने मनु की वर्णव्यवस्था को वकृत कर दिया और उसे जातिव्यवस्था में बदल दिया, अतः वही समाज इसका जनक भी है, दोषी भी|

२०. जो यह कहा गया है क 'अकेला मनु न तो जातिव्यवस्था को बना सकता था और न लागू कर सकता था|' यह तो स्वयं ही डॉ.अम्बेडकर ने मान लया क इन दोनों बातों के लए मनु जिम्मेदार नहीं है| इसका अर्थ यह निकला क पहले से ही समाज में वर्णव्यवस्था प्रच लत थी और समाज ने उसे स्वयं स्वीकृत कया हुआ था| वह लोगों के दिल-दिमाग में रची-बसी व्यवस्था थी, लोगों द्वारा उत्तम मानी हुई व्यवस्था थी और सर्वस्वीकृत थी| मनु द्वारा थोपी नहीं गयी थी| समाज द्वारा स्वीकृत व्यवस्था थी, उसमें मनु का क्या दोष? आपने जनता द्वारा स्वीकृत वर्तमान व्यवस्था का पोषण कया हैं, मनु ने समाज द्वारा स्वीकृत अपने समय की वर्ण व्यवस्था का पोषण कया था | इसमें दोष या दोषी होने का अवसर ही कहॉं हैं?

२१. संसार की सभी व्यवस्थाएं शतप्रतिशत मान्य और खरी नहीं होती| अतः कुछ क मयों के आधार पर परवर्ती जातिव्यवस्था (हिन्दु व्यवस्था) की निन्दा और अपमान करना कदा प उ चत नहीं माना जा सकता | आज की संवैधानिक व्यवस्था, जिसका न्याय, समानता आदि का दावा है, क्या सम्पूर्ण हैं? अभी ही वह न जाने कतने ववादों से घिरी हैं| सामायिक आवश्यकता के आधार पर आरक्षण का प्रावधान कया गया है, फर भी आज उस पर उग्र

वाद है| आज के सैकडों वर्ष पश्चात् जब ये परिस्थितियाँ वस्मृत हो जायेंगी, तब जो इस व्यवस्था का इतिहास लखा जायेगा, शायद वह आर क्षत जातियों के लए भी वैसा ही लखा जायेगा, जो ब्राह्मणों के सन्दर्भ में आज प्राचीन धर्मशास्त्रों का लखा जा रहा हैं |

वर्तमान संवैधानिक व्यवस्थाओं में, उच्चतम अ धकारी से लेकर निम्नतम कर्मचारी तक के लए परीक्षाओं-उपा धयों के अनुसार नियुक्ति का प्रावधान हैं| कुछ स्थान मनोनयन से भरे जाते हैं| थोडे से वर्षों में ही स्थिति यहां तक पहुँच गयी है क प्रशासनिक पदों के मनोनयन में, सत्ता में बैठे नेताओं, अ धकारियों के सम्बन्धी या सफारिशी ही अ धकांशतः लये जाते हैं, योग्यता का पैमाना भुला दिया गया है| साक्षात्कार योग्यता की जांच के लए आयोजित होते हैं, कन्तु वहाँ भी हजारों नौकरियाँ सफारिश और पैसें के आधार पर दी जा रही हैं| न्यायालयों द्वारा रद्द अनेक चयनसू चयां इसकी सत्या पत प्रमाण हैं| राजनीतिक क्षेत्र के पदों के मनोनयन में योग्यता नाम की कोई वस्तु दिखायी नहीं पडती | वहाँ अपने-परायें का नग्न रुप हैं| कल्पना कीजिए, जिसकी क संभावनाएं प्रबल दिखायी पड रही हैं, सैंकडो वर्ष बाद ये व्यवस्थाएं और अ धक वकृत होकर यदि जन्माधारित रुप ले गयीं तो क्या उसकी जिम्मेदारी डॉ.अम्बेडकर और उनकी सं वधान-सभा की मानी जायेगी? क्या उन द्वारा प्रदत्त व्यवस्था उस भावी वकृत व्यवस्था की जननी मानी जानी चाहिए? यदि नहीं, तो मनु को भी जाति-व्यवस्था का जनक और जिम्मेदार नहीं कहा जा सकता|

२२. इनसे भी अ धक अ वचारित और खतरनाक बात जो डॉ.अम्बेडकर ने कही है, वह है- ''यदि आप जातिप्रथा में दरार डालना चाहते हैं तो इसके लए आपको हर हालत में वेदों और शास्त्रों में डायनामाइट लगाना होगा|'' (जातिप्रथा उन्मूलन पृ.९९)| एक ओर वे मानते हैं क वेदों में जातिव्यवस्था न होकर वर्ण व्यवस्था हैं और वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म पर आधारित होने से बुध्दिमत्तापूर्ण है, घृणास्पद नहीं, फर भी वेदों में डायनामाइट लगाने की अनु चत और उत्तेजक बात कहते हैं | कतना परस्पर वरोधी वक्तव्य है उनका!
वेद,धर्मशास्त्र,रामायण,महाभारत,पुराण, गीता सभी को नष्ट-भ्रष्ट करने और उनसे नाता तोडने की बात कही है उन्होंने! धर्मजिज्ञासा, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, आचार-व्यवहार, जीवनमूल्य सभी के आश्रय और प्रेरणा स्त्रोत होते हैं धर्मशास्त्र | उनको नष्ट करने का अ भप्राय है आर्य (हिन्दु) संस्कृति-सभ्यता, धर्म, सब कुछ को नष्ट करना | क्या डॉ.अम्बेडकर यही चाहते थे? यदि डॉ.अम्बेडकर हिन्दू धर्म में रहकर पी डत थे और उन्हें वह छोडना था, तो वे उसे छोडकर केवल 'मनुष्य' के नाते भी रह सकते थे, कन्तु धर्म के आश्रय के बिना वे नहीं रह सके | उन्होंने बौध्द धर्म का आश्रय लया और बौध्द धर्मशास्त्रों को प्रमाण माना जब क हिन्दुओं को वे धर्म और धर्मशास्त्रों का त्याग करने को कहते हैं| यहां मैं महात्मा गांधी द्वारा उस समय दिये गये उत्तर को उध्दृत करना चाहूंगा-'जैसे कोई कुरान को अस्वीकार कर मुसलमान नहीं हो सकता, बाइबल को अस्वीकार कर ईसाई नहीं हो सकता, वैसे ही वेदों-शास्त्रों को अस्वीकार कर कोई हिन्दू कैसे हो सकता है?' डॉ.अम्बेडकर की यह सोच ठीक वैसी ही है जैसे कसी के हाथ-पैर में फोडा हो जाये तो उसका आप्रेशन कर उसको निकाल देने के बजाय उस आदमी को जान से ही मार दिया जाये |

२३. वेदों में जाति व्यवस्था का नामोनिशान तक नहीं है| फर भी डॉ.अम्बेडकर ने वेदों की अकारण आलोचना की, उनको नष्ट करने की बात कही, उनके महत्त्व को अंगीकार नहीं कया| बौध्द होकर भी उन्होंने ऐसा ही कया है| उन्होंने बौध्द-शास्त्रों की और अपने गुरु की अवज्ञा

की है, क्यों क बौध्द शास्त्रों में महात्मा बुध्द ने वेदों और वेदज्ञों की प्रशंसा करते हुए धर्म में वेदों के महत्त्व को प्रतिपादित कया है| कुछ प्रमाण दे खए-

(अ) '' वद्वा च वेदेहि समेच्च धम्मम् |

न उच्चावचं गच्छति भूरिपत्रवो |'' (सुत्तनिपात २९२)

अर्थात्-महात्मा बुध्द कहते हैं-'जो वद्वान् वेदों से धर्म का ज्ञान प्राप्त करता है, वह कभी वच लत नहीं होता|'

(आ) '' वद्वा च सो वेदगू नरो इध, भवाभवे संगं इमं वसज्जा |

सो वीतवण्हो अनिघो निरासो, अतारि सो जाति जरांति ब्रूमीति ॥

(सुत्तनिपात १०६०)

अर्थात्-'वेद को जाननेवाला वद्वान् इस संसार में जन्म और मृत्यु की आसक्ति का त्याग करके और इच्छा, तृष्णा तथा पाप से रहित होकर जन्म-मृत्यु से छूट जाता है|' अन्य श्लोक द्रष्टव्य हैं-३२२,४५८,५०३,८४६,१०५९आदि|

२४. डॉ.अम्बेडकर की मनु- वरोध परम्परा में डॉ.भदन्त आनन्द कौसल्यायन द्वारा 'राष्ट्रीय कर्तव्य' के नाम से कया गया मनुस्मृति-' वरोध' केवल वरोध के लए ही है, जो अत्यन्त सतही है| उसमें न तर्क है, न सम्यक् वश्लेषण | अपव्याख्या और अपप्रस्तुति का आश्रय लेकर अच्छे को भी बुरा सध्द करने का प्रयास है| उन्हें जहां इस बात पर आक्रोश है क मनु ने नारियों की निन्दा की है, तो इस बात पर भी दुःख है क उन्हें ''पूजार्ह = सम्मानयोग्य'' क्यों कहा गया! इसी को कहते है ' चत भी मेरी पट भी मेरी|' उनकी स्थिति वरोधाभासी है | महात्मा गांधी के प्रशंसक हैं, कन्तु उनके निष्कर्षों को नहीं मानते | बौध्द हैं, कन्तु बौध्द साहित्य में व र्णत वेद-वेदज्ञ आदि के महत्त्व को स्वीकार नहीं करते| स्वयं को गर्व से अवैदिक=अहिन्दू घो षत करते रहे, कन्तु हिन्दुओं के शास्त्रों के तथाक थत उध्दार में और हिन्दुओं में पूज्य महापुरुषों मनु, राम आदि की निन्दा-आलोचना में लगे रहे|

२५. मनुस्मृति- वरोधी सभी लेखकों में कुछ एकांगी और पूर्वाग्रहयुक्त बातें समानरुप से पायी जाती हैं | उन्होंने कर्मणा वर्णव्यवस्था को सध्द करनेवाले आप त्तरहित श्लोकों, जिनमें स्त्री-शूद्रों के लए हितकर और सद्भावपूर्ण बाते हैं, जिन्हें क पूर्वापर प्रसंग से सम्बध्द होने के कारण मौ लक माना जाता है, को उध्दृत ही नहीं कया| केवळ आप त्तपूर्ण श्लोकों, जिन्हें क प्र क्षप्त माना जाता है, को उध्दृत करके निन्दा-आलोचना की है| उन्होंने इस शंका का समाधान नहीं कया है क एक ही पुस्तक में, एक ही प्रसंग में स्पष्टतः परस्पर वरोधी कथन क्यों पाये जाते हैं? और आपने दो कथनों में से केवल आप त्तपूर्ण कथन को ही क्यों ग्रहण कया? दूसरों की उपेक्षा क्यों की? यदि वे लेखक इस प्रश्न पर चर्चा करते तो उनकी आप त्तयों का उत्तर उन्हें स्वयं मल जाता | न आक्रोश में आने का अवसर आता, न वरोध का, अ पतु बहुत-सी भ्रान्तियों से बच जाते|

(ख) मनुस्मृति में शूद्रों की स्थिति

आइये, अब वचार करते हैं मनुस्मृति के सबसे अ धक च र्चत और ववादास्पद शूद्र सम्बन्धी वषय पर| मनुस्मृति के अन्तःसाक्ष्यों पर दृष्टिपात करने पर हमें कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत तथ्य उपलब्ध होते हैं जो शूद्रों के वषय में मनु की भावनाओं का संकेत देते हैं| वे इस प्रकार हैं-

१. द लतों- पछडों को शूद्र नहीं कहा-आजकल की द लत, पछडी और जनजाति कही जानेवाली जातियों को मनुस्मृति में कहीं 'शूद्र' नहीं कहा गया हैं| मनु की वर्णव्यवस्था है, अतः सभी व्यक्तियों के वर्णों का निश्चय गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर कया गया है, जाति के आधार पर नहीं |यही कारण है क शूद्र वर्ण में कसी जाति की गणना करके यह नहीं कहा है क अमुक-अमुक जातियॉं 'शूद्र' हैं| परवर्ती समाज और व्यवस्थाकारों ने समय-समय पर शूद्र संज्ञा देकर कुछ वर्णों को शूद्रवर्ग में सम्मि लत कर दिया| कुछ लोग भ्रान्तिवश इसकी जिम्मेदारी मनु पर थोंप रहे हैं| वकृत व्यवस्थाओं का दोषी तो है परवर्ती समाज, कन्तु उसका दण्ड मनु को दिया जा रहा है| न्याय की मांग करनेवाले द लत प्रतिनि धयों का यह कैसा न्याय है?

२. मनुकृत शूद्रों की परिभाषा वर्तमान शूद्रों पर लागू नहीं होती| मनु द्वारा दी गयी शूद्र की परिभाषा भी आज की द लत और पछडी जातियों पर लागू नहीं होती| मनुकृत शूद्र की परिभाषा है–जिनका ब्रह्मजन्म = वद्याजन्म रुप दूसरा जन्म होता है, वे 'द् वजाति' ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं |जिसका ब्रह्मजन्म नहीं होता वह 'एकजाति' रहनेवाला शूद्र है| अर्थात् जो बालक निर्धारित समय पर गुरु के पास जाकर संस्कारपूर्वक वेदाध्ययन वेदाध्ययन, वद्याध्ययन और अपने वर्ण की शक्षा-दीक्षा प्राप्त करता है, वह उसका ' वद्याजन्म' नामक दूसरा जन्म है, जिसे शास्त्रों में 'ब्रह्मजन्म' कहा गया है| जो जानबूझकर, मन्दबुध्दि होने के कारण अथवा अयोग्य होने के कारण ' वद्याध्ययन' और उच्च तीन द् वज वर्णों में से कसी भी वर्ण की शक्षा-दीक्षा नहीं प्राप्त करता, वह अ श क्षत व्यक्ति 'एकजाति=एक जन्मवाला' अर्थात शूद्र कहलाता हैं| इसके अतिरिक्त उच्च वर्णों में दी क्षत होकर जो निर्धारित कर्मों को नहीं करता, वह भी शूद्र हो जाता है (मनु० २.१२६,१६९,१७०,१७२; १०.४ आदि) इस वषयक एक-दो प्रमाण द्रष्टव्य हैं-

(अ) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः, त्रयो वर्णाः द् वजातयः |

चतुर्थः एकजातिस्तु, शूद्रः नास्ति तु पंचमः ॥ (मनु० १०.४)

अर्थात्-ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,इन तीन वर्णों को द् वजाति कहते हैं, क्यों क इनका दूसरा वद्याजन्म होता है| चौथा वर्ण एकजाति=केवल माता- पता से ही जन्म प्राप्त करनेवाला और वद्याजन्म न प्राप्त करनेवाला, शूद्र है |इन चारों वर्णों के अतिरिक्त कोई वर्ण नहीं है|

(आ) शूद्रेण हि सपस्तावद् यावद् वेदे न जायते |(२.१७२)

अर्थात्-जब तक व्यक्ति का ब्रह्मजन्म = वेदाध्ययन रुप जन्म नहीं होता, तब तक वह शूद्र के समान ही होता है|

(इ) न वे त्त अ भवादस्य.. .. यथा शूद्रस्तथैव सः |(२.१२६)

अर्थात्-जो अ भवादन व ध का ज्ञान नहीं रखता, वह शूद्र ही है|

(ई) ''प्रत्यवायेन शूद्रताम्'' (४.२४५)

अर्थात्-ब्राह्मण, हीन लोगों के संग और आचरण से शूद्र हो जाता है|

बाद तक भी शूद्र की यही परिभाषा रही है-

(उ) जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद् द् वज उच्यते |(स्कन्दपुराण)

अर्थात्-प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, उपनयन संस्कार में दी क्षत होकर ही द् वज बनता हैं|

मनु की यह व्यवस्था अब भी बा लद्वीप में प्रच लत हैं| वहाॅं 'द् वजाति' और 'एकजाति' संज्ञाओं का ही प्रयोग होता है| शूद्र को अस्पृश्य नहीं माना जाता|

३. शूद्र अस्पृश्य नहीं-अनेक श्लोकों से ज्ञात होता है क शूद्रों के एति मनुं की मानवीय सद्भावना थी और वे उन्हें अस्पृश्य, निन्दित अथवा घृ णत नहीं मानते थे |मनु ने शूद्रों के लए उत्तम, उत्कृष्ट, शु च जैसे वशेषणों का प्रयोग कया है, ऐसा वशेष्य व्यक्ति कभी अस्पृश्य या घृ णत नहीं माना जा सकता (९.३३५) |शूद्रों को द् वजाति वर्णों के घरों में पाचन, सेवा आदि श्रमकार्य करने का निर्देश दिया है (१.९१;९.३३४-३३५)| कसी द् वज के यहां यदि कोई शूद्र अति थरुप में आ जाये तो उसे भोजन कराने का आदेश है (३.११२)| व्दिजों को आदेश है क अपने भृत्यों को, जो क शूद्र होते थे, पहले भोजन कराने के बाद, भोजन करें (३.११६)| क्या आज के वर्णरहित सभ्य समाज में भृत्यों को पहले भोजन कराया जाता है? और उनका इतना ध्यान रखा जाता है? कतना मानवीय, सम्मान और कृपापूर्ण दृष्टिकोण था मनु का|

वैदिक वर्णव्यवस्था में परमात्मापुरुष अथवा ब्रह्मा के मुख,बाहु,जंघा, पैर से क्रमशः ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र की आलंकारिक उत्प त्त बतलायी है(१.३१)| इससे तीन निष्कर्ष निकलते हैं| एक, चारों वर्णों के व्यक्ति परमात्मा की एक जैसी सन्तानें हैं| दूसरा, एक जैसी सन्तानों में कोई अस्पृश्य और घृ णत नहीं होता| तीसरा, एक ही शरीर का अंग 'पैर' अस्पृश्य या घृ णत नहीं होता है| ऐसे श्लोकों के रहते कोई तटस्थ व्यक्ति क्या यह कह सकता है क मनु शूद्रों को अस्पृश्य और घृ णत मानते थे?

४. शूद्र को सम्मान व्यवस्था में छूट-मनु ने सम्मान के वषय में शूद्रों को वशेष छूट दी हैं| मनु वहित सम्मान-व्यवस्था में प्रथम तीन वर्णों में अ धक गुणों के आधार पर अ धक सम्मान देने का कथन है जिनमें वद्यावान् सबसे अ धक सम्मान्य है (२.१११,११२,१३०)| कन्तु शूद्र के प्रति अ धक सद्भाव प्रद र्शत करते हुए उन्होंने वशेष वधान कया है क

द् वज वर्ण के व्यक्ति वृध्द शूद्र को पहले सम्मान दें, जब क शूद्र अ श क्षत होता है| यह सम्मान पहले तीन वर्णों में कसी को नहीं दिया गया हैं-

''मानार्हः शूद्रो ऽ प दशमीं गतः'' (२.१३७)

अर्थात्-वृध्द शूद्र को सभी द् वज पहले सम्मान दें| शेष तीन वर्णों में अ धक गुणी पहले सम्मान का पात्र है|

५. शूद्र को धर्मपालन की स्वतन्त्रता-''न धर्मात् प्रतिषेधनम्'' (१०.१२६) अर्थात्-'शूद्रों को धा र्मक कार्य करने का निषेध नहीं है' यह कहकर मनु ने शूद्र को धर्मपालन की स्वतन्त्रता दी है| इस तथ्य का ज्ञान उस श्लोक से भी होता है जिसमें मनु ने कहा है क 'शूद्र से भी उत्तम धर्म को ग्रहण कर लेना चाहिए' (२.२१३) | वेदों में शूद्रों को स्पष्टतः यज्ञ आदि करने और वेदशास्त्र पढने का अ धकार दिया हैं–

(अ) यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः |

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥ २६.२)

अर्थात्-मैंने इस कल्याणकारिणी वेद वाणी का उपदेश सभी मनुष्यों-ब्राह्मण,क्षत्रिय,शूद्र,वैश्य,स्वा श्रत स्त्री-भृत्य आदि और अतिशूद्र आदि के लए कया है|

(आ) य ज्ञयासः पश्चजनाः मम होत्रं जुषध्वम् | (ऋग्० १०.५३.४)

पश्चजनाः = चत्वारो वर्णाः, निषादः पश्चमः | (निरुक्त ३.८)

अर्थात्-'यज्ञ करने के पात्र पांच प्रकार के मनुष्य अग्निहोत्र कया करें|' चार वर्ण और पांचवां निषाद, ये पश्चजन कहलाते हैं|

मनु की प्रतिज्ञा है क उनकी मनुस्मृति वेदानुकूल है, अतः वेदाधारित होने के कारण मनु की भी वही मान्यताएं हैं| यही कारण है क उपनयन प्रसंग में कहीं भी शूद्र के उपनयन का निषेध नहीं कया है, क्यों क शूद्र तो तब कहाता है, जब कोई उपनयन नहीं कराता |

६. दण्डव्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड-पाठकवृन्द! आइये, अब मनु वहित दण्डव्यवस्था पर दृष्टिपात करते हैं| यह कहना नितान्त अनु चत है क मनु ने शूद्रों के लए कठोर दण्डों का वधान कया है और ब्राह्मणों को वशेषा धकार एवं वशेष सु वधाएं प्रदान की हैं| मनु की दण्डव्यवस्था के मानदण्ड हैं-गुण-दोष, और आधारभूत तत्व हैं-बौध्दिक स्तर, सामाजिक स्तर, पद, अपराध का प्रभाव | मनु की दण्डव्यवस्था है, जो मनोवैज्ञानिक है| यदि मनु वर्णों में गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर उच्च वर्णों को अ धक सम्मान और सामाजिक स्तर प्रदान करते हैं तो अपराध करने पर उतना ही अ धक दण्ड भी देते हैं| इस प्रकार मनु की यथायोग्य दण्ड व्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड है, और ब्राह्मण को सबसे अ धक; राजा को यथायोग्य

दण्ड व्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड है, और ब्राह्मण को सबसे अ धक; राजा को उससे भी अ धक| मनु की यह सर्वसामान्य दण्डव्यवस्था है, जो सभी दण्डस्थानों पर लागू होती हैं-

अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति कल्विषम्

षोडशैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत् क्षत्रियस्य च ॥

ब्राह्मणस्य चतुःषष्टिः पूर्णं वाऽ प शतं भवेत्|

द् वगुणा वा चतुःषष्टिः, तद्दोषगुण वध्दि सः ॥

अर्थात्- कसी चोरी आदि के अपराध में शूद्र को आठ गुणा दण्ड दिया जाता है तो वैश्य को सोलहगुणा, क्षत्रिय को बत्तीसगुणा, ब्राह्मण को चौंसठगुणा, अ पतु उसे सौगुणा अथवा एक सौ अठ्ठाईसगुणा दण्ड करना चाहिए क्यो कं उत्तरोत्तर वर्ण के व्यक्ति अपराध के गुण-दोषों और उनके परिणामों, प्रभावों आदि को भलीभांति समझनेवाले हैं|

इसके साथ ही मनु ने राजा को आदेश दिया है क उक्त दण्ड से कसी को छूट नहीं दी जानी हैं, चाहे वह आचार्य, पुरोहित और राजा के पता-माता ही क्यों न हों| राजा दण्ड दिये बिना मत्र को भी न छोडे और कोई समृध्द व्यक्ति शारीरिक अपराधदण्ड के बदले में वशाल धनरा श देकर छूटना चाहे तो उसे भी न छोडे (८.३३५, ३४७)

दे खए, मनु की दण्डव्यवस्था कतनी मनोवैज्ञानिक, न्यायपूर्ण, व्यावहारिक और श्रेष्ठप्रभावी है| इसकी तुलना आज की दण्डव्यवस्था से करके दे खए, दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जायेगा | आज की दण्डव्यवस्था का नारा हैं-'कानून की दृष्टि में सब समान हैं|' पहला वरोध यही हुआ क पदस्तर और सामाजिक स्तर के अनुसार सम्मान व्यवस्था तो पृथक्-पृथक् हैं और दण्ड एक जैसा| दूसरा, यथायोग्य दण्ड नहीं| इसे यों सम झए क खेत चर जाने पर मेमने को भी एक डण्डा लगेगा, भैंसे, हाथी को भी| इसका प्रभाव क्या होगा? बेचारा मेमना डण्डे के प्रहार से म मयाने लगेगा, भैंसे में कुछ हलचल होगी, हाथी को अनुभूति ही नहीं होगी| क्या यह वास्तव में समान दण्ड हुआ? समान दण्ड तो वह हैं, जो लोकव्यवहार में प्रच लत हैं | भैंसे को लाठी से, हाथी को अंकुश से और शेर को हण्टर से वश में कया जाता हैं| दूसरा उदाहरण लीजिए- एक अत्यन्त गरीब एक हजार के दण्ड को कर्ज लेकर चुका पायेगा, मध्यमवर्गीय थोडा कष्ट अनुभव करके और समृध्द-सम्पन्न जूती की नोक पर रख कर देगा | इसी अमनोवैज्ञानिक दण्डव्यवस्था का परिणाम है क दण्ड की पतली रस्सी में आज गरीब तो फंस जाते हैं, धन-पद-सत्ता-सम्पन्न शक्तिशाली लोग उस रस्सी को तुडा कर निकल भागते हैं| आंकडे इकठ्ठे करके देख लीजिए, स्वतन्त्रता के बाद कतने गरीबों को सजा हुई है, और कतने धन-पद-सत्ता-सम्पन्न लोगों को| आ र्थक अपराधों में समृध्द लोग अर्थदण्ड भरते रहते हैं, अपराध करते रहते हैं | मनु की यथायोग्य दण्ड-व्यवस्था में ऐसा असन्तुलन नहीं है|

मनु की दण्डव्यवस्था अपराध की प्रकृति पर निर्भर है| वे गम्भीर अपराध में यदि कठोर दण्ड का वधान करते हैं तो चारों वर्णों को ही, और यदि सामान्य अपराध में सामान्य दण्ड का वधान करते हैं, तो वह भी चारों वर्णों के लए सामान्य होता हैं| शूद्रों के लए जो कठोर दण्डों

का वधान मलता है वह प्र क्षप्त श्लोकों में है| उक्त दण्डनीति के वरुध्द जो श्लोक मलते हैं, वे मनुर चत नहीं हैं|

७. शूद्र दास नहीं है-शूद्र से दासता कराने अथवा जी वका न देने का कथन मनु के निर्देशों के वरुध्द है| मनु ने सेवकों, भृत्यों का वेतन, स्थान और पद के अनुसार नियत करने का आदेश राजा को दिया है और यह सुनिश्चित कया है क उनका वेतन अनावश्यक रुप से न काटा जाये (७१२५-१२६-;८.२१६) |

८. शूद्र सवर्ण हैं-वर्तमान मनुस्मृति को उठाकर देख लीजिए, उनकी ऐसी कतनी ही व्यवस्थाएं हैं, जिन्हें परवर्ती समाज ने अपने ढंग से बदल लया है| मनु ने शूद्र सहित चारों वर्णों को सवर्ण माना है, चारों से भन्न को असवर्ण (१०.४,४५), कन्तु परवर्ती समाज शूद्र को असवर्ण कहने लग गया| मनु ने शल्प, कारीगरी आदि के कार्य करनेवालें लोगों को वैश्य वर्ण के अन्तर्गत माना है (३.६४;९.३२९;१०.९९;१०.१२०), कन्तु परवर्ती समाज ने उन्हें भी शूद्रकोटि में ला खडा कर दिया| दूसरी ओर, मनु ने कृ ष, पशुपालन को वैश्यों का कार्य माना है (१.९०), कन्तु सदियों से ब्राहमण और क्षत्रिय भी कृ ष-पशुपालन कर रहा हैं, उन्हें वैश्य घो षत नहीं कया| इनको मनु की व्यवस्था कैसे माना जा सकता हैं?

इस प्रकार मनु की व्यवस्थाएं न्यायपूर्ण हैं| उन्होंने न शूद्र और न कसी अन्य वर्ण के साथ अन्याय या पक्षपात कया है|

(ग) मनुस्मृति में नारियों की स्थिति

मनुस्मृति के अन्तःसाक्ष्य कहते हैं क मनु की जो स्त्री- वरोधी छ व प्रस्तुत की जा रही है, वह निराधार एवं तथ्यों के वपरीत है| मनु ने मनुस्मृति में स्त्रियों से सम्बन्धित जो व्यवस्थाएं दी हैं वे उनके सम्मान, सुरक्षा, समानता, सद्भाव और न्याय की भावना से प्रेरित हैं| कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं-

१. नारियों को सर्वोच्य महत्त्व-मह र्ष मनु संसार के वह प्रथम महापुरुष हैं, जिन्होंने नारी के वषय में सर्वप्रथम ऐसा सर्वोच्च आदर्श उद्घोष दिया है, जो नारी की गरिमा, महिमा और सम्मान को असाधारण ऊंचाई प्रदान करता है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः|

यत्रैताः तु न पूज्यन्ते सर्वाः तत्राफलाः क्रयाः॥ (३.५६)

इसमा सही अर्थ है-'जिस परिवार में नारियों का आदर-सम्मान होता है, वहां देवता=दिव्य गुण,कर्म,स्वभाव,सन्तान,दिव्य लाभ आदि प्राप्त होते हैं और जहां इनका आदर-सम्मान नहीं होता, वहां उनकी सब क्रयाएं निष्फल हो जाती हैं|'

स्त्रियों के प्रति प्रयुक्त सम्मानजनक एवं सुन्दर वशेषणों से बढकर, नारियों के प्रति मनु की भावना का बोध करानेवाले प्रमाण और कोई नहीं हो सकते| वे कहते हैं क नारियां घर का

भाग्योदय करनेवाली, आदर के योग्य, घर की ज्योति, गृहशोभा, गृहलक्ष्मी, गृहसंचा लका एवं गृहस्वा मनी, घर का स्वर्ग, संसारयात्रा की आधार हैं (९.११,२६,२८;५.१५०)| कल्याण चाहनेवाले परिवारजनों को स्त्रियों का आदर-सत्कार करना चाहिये, अनादर से शोकग्रस्त रहनेवाली स्त्रियों के कारण घर और कुल नष्ट हो जाते हैं| स्त्री की प्रसन्नता में ही कुल की वास्त वक प्रसन्नता है (३.५५-६२)| इस लए वे गृहस्थों को उपदेश देते हैं क परस्पर संतुष्ट रहें एक दूसरे के वपरीत आचरण न करें और ऐसा कोई कार्य न करें जिससे एक-दुसरे से वयुक्त होने की स्थिति आ जाये (९.१०१-१०२)| मनु की भावनाओं को व्यक्त करने के लए एक श्लोक ही पर्याप्त है-

प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हाः गृहदीप्तयः|

स्त्रियः श्रयश्च गेहेषु न वशेषो ऽस्ति कश्चन ॥ १.२६)

अर्थात्-सन्तान उत्प त्त के लए घर का भाग्योदय करनेवाली, आदर-सम्मान के योग्य, गृहज्योति होती हैं स्त्रियां| शोभा-लक्ष्मी और स्त्री में कोई अन्तर नहीं है, वे घर की प्रत्यक्ष शोभा हैं|

२. पुत्र-पुत्री एक समान-मनुमत से अन भज्ञ पाठकों को यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा क मनु ही सबसे पहले वह सं वधान निर्माता हैं| जिन्होंने पु-पुत्री की समानता को घो षत करके उसे वैधानिक रुप दिया है-

''पुत्रेण दुहिता समा'' (मनु० ९.१३०)

अर्थात्-पुत्री पुत्र के समान होती है| वह आत्मारुप है, अतः वह पैतृकसम्प त्त की अ धकारिणी है|

३. पुत्र-पुत्री को पैतृक सम्प त्त में समान अ धकार-मनु ने पैतृक सम्प त्त में पुत्र-पुत्री को समान अ धकारी माना है| उनका यह मत मनुस्मृति के ९.१३०, १९२ में व र्णत है| इसे निरुक्त में इस प्रकार उध्दृत कया गया हैं-

अ वशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः |

मथुनानां वसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥ (३.१.४)

अर्थात्-सृष्टि के प्रारम्भ में स्वायम्भुव मनु ने यह वधान कया है क दायभाग = पैतृक सम्प त्त में पुत्र-पुत्री का समान अ धकार होता है| मातृधन में केवल कन्याओं का अ धकार वहित करके मनु ने परिवार में कन्याओं के महत्त्व में अ भवृध्दि की है (९.१३१)|

४. स्त्रियों के धन की सुरक्षा के वशेष निर्देश-स्त्रियों को अबला समझकर कोई भी, चाहे वह बन्धु-बान्धव ही क्यों न हों, यदि स्त्रियों के धन पर कब्जा कर लें, तो उन्हें चोर सदृश दण्ड से दण्डित करने का आदेश मनु ने दिया है (९.२१२;३.५२;८.२;८.२९)|

५. नारियों के प्रति कये अपराधों में कठोर दण्ड-स्त्रियों की सुरक्षा के दृष्टिगत नारियों की हत्या और उनका अपहरण करनेवालों के लए मृत्युदण्ड का वधान करके तथा बलात्कारियों के लए यातनापूर्ण दण्ड देने के बाद देश निकाला का आदेश देकर मनु ने नारियों की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने का यत्न कया है(८.३२३;९.२३२;८.३५२)| नारियों के जीवन में आनेवाली प्रत्येक छोटी-बडी कठिनाई का ध्यान रखते हुए मनु ने उनके निराकरण हेतु स्पष्ट निर्देश दिये हैं| पुरुषों को निर्देश है क वे माता, पत्नी और पुत्री के साथ झगडा न करें (४.१८०), इन पर मथ्या दोषारोपण करनेवालों, इनको निर्दोष होते हुए त्यागनेवालों, पत्नी के प्रति वैवाहिक दायित्व न निभानेवालों के लए दण्ड का वधान है(८.२७५,३८९;९.४)|

६. वैवाहिक स्वतन्त्रता एवं अ धकार- ववाह के वषय में मनु के आदर्श वचार हैं| मनु ने कन्याओं को योग्य पति का स्वयं वरण करने का निर्देश देकर स्वयम्वर ववाह का अ धकार एवं उसकी स्वतन्त्रता दी हैं (९०९०-९१)| वधवा को पुन र्ववाह का भी अ धकार दिया है, साथ ही सन्तानप्राप्ति के लए नियोग की भी छूट है (९.१७६,९.५६-६३)| उन्होंने ववाह को कन्याओं के आदर-स्नेह का प्रतीक बताया है, अतः ववाह में कसी भी प्रकार के लेन-देन को अनु चत बताते हुए बल देकर उसका निषेध कया है(३.५१-५४)| स्त्रियों के सुखी-जीवन की कामना से उनका सुझाव है क जीवनपर्यन्त अ ववाहित रहना श्रेयस्कर है, कन्तु गुणहीन,दुष्ट पुरुष से ववाह नहीं करना चाहिए(९.८९)|

७. सहभा गता तथा धर्मानुष्ठान में अपरिहार्यता- वश्व के सभी धर्मों में से केवल वैदिक धर्म में और सभी देशों में से भारतवर्ष में स्त्रियों को पुरुष के कार्यों में जो सहभा गता प्राप्त है वह अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मलती| यहां का कोई भी धा र्मक, सामाजिक या पारिवारिक आयोजन-अनुष्ठान स्त्री को साथ लए बिना सम्पन्न नहीं होता| यही मनु की मान्यता है| इस लए धर्मानुष्ठान के प्रबन्ध का दायित्व स्त्री को सौंपा है और उसकी सहभा गता से ही प्रत्येक अनुष्ठान करने का निर्देश दिया है(९.११,२८,९६)| वैदिक काल में स्त्रियों को वेदाध्ययन, यज्ञोपवीत, यज्ञ आदि के सभी अ धकार प्राप्त थे| वे ब्रह्मा के पद को सुशो भत करती थीं| उच्च शक्षा प्राप्त करके मन्त्रद्रष्टी ऋ षकाएं बनती थी | वेदों को धर्म में परम प्रमाण माननेवाले ऋ ष मनु वेदानुसार स्त्रियों के सभी धा र्मक अ धकारों तथा उच्च शक्षा के समर्थक हैं| तभी उन्होंने स्त्रियों के अनुष्ठान मन्त्रपूर्वक करने और धर्मकार्यों का अनुष्ठान स्त्रियों के अधीन घो षत कया है(२.४;३.२८)|

८. स्त्रियों को प्राथ मकता-'लेडीज फस्ट' की सभ्यता के प्रशंसकों को यह पढकर और अ धक प्रसन्नता होनी चाहिए क मनु ने सभी को यह निर्देश दिया है क 'स्त्रियों के लए पहले रास्ता छोड दें| नव ववाहिताओं,कुमारियों,रो गणी, ग र्भणी,वृध्दा आदि स्त्रियों को पहले भोजन करा के फर पति-पत,नी को साथ भोजन करने का कथन है(२.१३८;३.११४,११६)| मनु के ये सब वधान स्त्रियों के प्रति सम्मान और स्नेह के द्योतक हैं|'

९) स्त्रियों की अमर्यादित स्वतन्त्रता के पक्षघर नहीं-यहां प्रसंगवश यह स्पष्ट कर देना उपयोगी रहेगा क मनु गुणों के प्रशंसक हैं और अवगुणों के निन्दक| गु णयों को सम्मानदाता हैं, अवगु णयों को दण्डदाता| यदि उन्होंने गुणवती स्त्रियों को पर्याप्त सम्मान दिया है, तो अवगुणवती स्त्रियों की निन्दा की है और दण्ड का वधान कया है| मनु की एक वशेषता और है, वह यह क वे नारी की असुर क्षत तथा अमर्यादित स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं हैं और न

उन बातों का समर्थन करते हैं जो परिणाम में अहितकर हैं| इसी लए उन्होंने स्त्रियों को चेतावनी देते हुए सचेत कया है क वे स्वयं को पता, पति, पुत्र आदि की सुरक्षा से अलग न करें, क्यों क एकाकी रहने से दो कुलों की निन्दा होने की आशंका रहती है(५.१४९;९.५-६)| इसका अर्थ यह कदा प नहीं है क मनु स्त्रियों की स्वतन्त्रता के वरोधी हैं| इसका निहितार्थ यह है क नारी की सर्वप्रथमं सामाजिक आवश्यकता है-सुरक्षा की| वह सुरक्षा उसे, चाहे शासन-कानून प्रदान करे अथवा कोई पुरुष या स्वयं का सामर्थ्य| भोगवादी आपरा धक प्रवृ त्तयां उसके स्वयं के सामर्थ्य को सफल नहीं होने देती| उदाहरणों से पता चलता है क शस्त्रधारिणी डाकू स्त्रियों तक को भी पुरुष-सुरक्षा की आवश्यकता रही है| मनु के उक्त कथन को आज की राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देखना सही नहीं है| आज देश में एक शासन है और कानून उसका रक्षक है| फर भी हजारों नारियां अपराधों की शकार होकर जीवन की बर्बादी की राह पर चलने को ववश हैं| प्रतिदिन बलात्कार, नारी-हत्या जैसे जधन्य अपराधों की हजारों घटनाएं होती रहती हैं| जब राजतन्त्र में उथल-पुथल होती रहती है, कानून श थल पड जाते हैं, जब क्या परिणाम होगा, उस स्थितिमें मनु के वचनों के महत्त्व को आंककर देखना चाहिये| तब यह मानना पडेगा क वे शतप्रतिशत सही हैं|

उपर्युक्त वश्लेषण से हमें यह स्पष्ट होता है क मनुस्मृति की व्यवस्थाएं स्त्री-शूद्र वरोधी नहीं हैं, वे न्यायपूर्ण और पक्षपातरहित हैं| मनु ने कुछ भी ऐसा नहीं कहा जो निन्दा अथवा आप त्त के योग्य हो|

मनुस्मृति में प्रक्षेप

अब प्रश्न उठता है, क ठीक है, मनुस्मृति में उत्तम वधानों के श्लोक हैं, कन्तु मनु- वरोधी लेखकों द्वारा प्रस्तुत श्लोक भी तो मनुस्मृति के ही हैं, जो सर्वथा आप त्त योग्य हैं| इस प्रकार बडी उलझनभरी स्थिती ज्ञात होती हैं मनुस्मृति की| उसमें एक ही साथ न्यायपूर्ण श्रेष्ठ वधान भी हैं और अन्यायपूर्ण निन्द्य वधान भी! ले कन क्या मौ लक रुप से यह स्थिति संभव मानी जा सकती है? जब एक प्रबुध्द सामान्य लेखक की रचना में भी इस प्रकार के परस्पर वरोध नहीं मलते तो एक धर्मवेत्ता, व धवेत्ता ॠ ष के धर्म और व धशास्त्र में ऐसे वरोध कैसे हो गये? इसका सीधा-स्पष्ट और नि र्ववाद उत्तर है क जो न्यायपूर्ण,श्रेष्ठ और गुण-कर्म-योग्यता पर आधारित वधान हैं, वे मनु के मौ लक श्लोक हैं, जो इनके वरुध्द अन्याय और पक्षपातपूर्ण हैं, वे प्र क्षप्त हैं अर्थात् समय-समय पर बाद के लोगों ने रचकर मनुस्मृति में मला दिये हैं| इस उत्तर की पुष्टि मनुस्मृति पर आधारित मादडण्डों से ही हो जातीं है| मौ लक श्लोक पूर्वापर प्रसंगों से, वषयों से जुडे हुए हैं और गुण-कर्म-योग्यता के सध्दान्त पर आधारित गम्भीर शैली में हैं, जब क प्र क्षप्त श्लोक प्रसंग और वषय वरुध्द तथा भन्न शैली के हैं| इन आधारों के अनुसार अब हम कह सकते हैं क इस लेख में उध्दत श्लोक मौ लक हैं और इनकी भावना के वपरीत श्लोक प्र क्षप्त हैं, जिन्हें क मनु- वरोधी लेखकों ने वरोध का आधार बनाया हैं| संक्षेप में, प्रस्तुत वषय के मौ लक और प्र क्षप्त श्लोक इस प्रकार हैं-

१. मनु की व्यवस्था 'वैदिक वर्णव्यवस्था' है (डॉ.अम्बेडकर ने भी इसे स्वीकार कया हैं), अतः गुण-कर्म-योग्यता के सध्दान्त पर आधारित जो श्लोक हैं, वे मौ लक हैं| इनके वरुध्द जन्मना जाति वधायक और जन्म के आधार पर पक्षपात का वधान करनेवाले श्लोक प्र क्षप्त हैं|

मनु के समय जातियाँ नहीं बनी थीं| यही कारण है क मनु ने वर्णों में जातियों की गणना नहीं दर्शायी हैं| इस शैली और सध्दांन्त के आधार पर वर्णसंस्कारों से सम्बन्धित श्लोक भी प्र क्षप्त हैं|

२. इस लेख में उध्दृत मनु की यथायोग्य दण्डव्यवस्था, जो क उनका 'जनरल कानून' है, मौ लक है; इसके वरुध्द पक्षपातपूर्ण कठोर दण्डव्यवस्था वधायक श्लोक प्र क्षप्त हैं|

३. इस लेख में उध्दृत शूद्र की परिभाषा, शूद्रों के प्रति सद्‌भाव, शूद्रों के धर्मपालन, वर्णपरिवर्तन आदि के वधायक श्लोक मौ लक हैं; उनके वपरीत जन्मना शूद्रनिर्धारक, स्पृश्यापृश्य, ऊंच-नीच, अ धकारों के शोषण आदि के वधायक श्लोक प्र क्षप्त हैं|

४. इस लेख में उध्दृत नारियों के सम्मान, स्वतन्त्रता, समानता, शक्षा वधायक श्लोक मौ लक हैं, इसके वपरीत प्र क्षप्त हैं|

इन श्लोकों की मौ लकता और प्र क्षप्तता को यदि पाठक, और अ धक गम्भीरता तथा वस्तार से जानना चाहें, तो वे 'आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४५५-खारी बावली, दिल्ली' से प्रका शत मनुस्मृति (सम्पूर्ण) का अध्ययन कर सकते हैं| इसमें कृतित्व पर आधारित सर्वसामान्य मानदण्डों के आधार पर मौ लक और प्र क्षप्त श्लोकों को पृथक् दर्शा कर उन पर युक्ति-प्रमाण सहित समीक्षा दी गयी है| मनुस्मृति की मौ लक वषयवस्तु की जानकारी देने, प्र क्षप्त श्लोकों को कारणपूर्वक समझाने और मनुस्मृति सम्बन्धी भ्रान्तियों के निराकरण के दृष्टिकोण से यह संस्करण पर्याप्त उपयोगी सध्द होगा| प्र क्षप्तों पर यह नवीनतम शोधकार्य हैं|

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है क प्र क्षप्त श्लोक अब ववाद नहीं रह गये हैं, अ पतु एक निर्णय के रुप में मान्य हो गये हैं क अ धकांश प्राचीन संस्कृत साहित्य में समय-समय पर प्रक्षेप होते रहे हैं| महाभारत के उल्लेख के अनुसार, दस हजार श्लोकों का काव्य बढते-बढते एक लाख श्लोकों का संग्रह बन गया| एक हजार वर्ष पुरानी हस्त ल खत रामायण से जो नेपाल के अ भलेखागार में सुर क्षत है, आज की रामायण में सैंकडों श्लोक अ धक पाये जाते हैं| यही स्थिति मनुस्मृति की है, अ पतु इसमें अ धक परिवर्तन-परिवर्धन-प्रक्षेप हुए हैं| कारण, इसका मनुष्य के दैनिक आचार-व्यवहार से अ धक सम्बन्ध था, अतः स्वार्थवश उतनी ही अ धक छेडछाड की गयी| मनुस्मृति में हुए प्रक्षेपों के वषय में सभी वर्गों के वद्‌वान् एकमत हैं| इसकी टीकाएं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं| बाद-बाद की टीका में अ धक श्लोक पाये जाते हैं| मेधाति थ (९ वीं शताब्दी) की तुलना में कुल्लूकभट्‌ट (१२ वीं शताब्दी) की टीका में एक सौ सत्तर श्लोक अ धक हैं| वे तब तक धुल- मल नहीं पाये थे, अतः बृहत् कोष्ठक में दिये गये हैं| अन्य टीकाओं में भी श्लोक संख्या में अन्तर हैं|

अंग्रेज शोधकर्ता वूलर, जे, जौली, कीथ, मैकडानल और इन्साइक्लोपी डया (अमेरिका) के लेखक भी इस बात को स्वीकार करते हैं क मनुस्मृति में प्रक्षेप होते रहे हैं|

आर्यसमाज के प्रवर्तक मह र्ष दयानन्द ने प्रक्षेप रहित मनुस्मृति को प्रमाण माना है| उन्होंने कुछ प्र क्षप्त श्लोकों को छांटा हैं और छांटने की प्रेरणा दी हैं|

महात्मा गांधी ने अपनी 'वर्ण व्यवस्था' नामक पुस्तक में स्वीकार कया है क मनुस्मृति में पायी जानेवाली आप त्तजनक बातें बाद में की गयी मलावटें हैं| डॉ.राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि राष्ट्रनेता एवं वद्वान भी यही मानते हैं|

अतः आवश्यकता इस बात की है क मनु एवं मनुस्मृति को मौ लक रुप में समझा जाये और प्र क्षप्त श्लोकों के आधार पर कये जाने वरोध का परित्याग कया जाये |मनु एवं मनुस्मृति गर्व करने योग्य हैं, निन्दा करने योग्य नहीं| भ्रान्तिवश हमें अपनी अमूल्य एवं महत्वपूर्ण धरोहर को निहित स्वार्थमयी राजनीति में घसीटकर उसका तिरस्कार नहीं करना चाहिये|

हत्यारा मनुष्य था फ़रिश्ता नहीं :- प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

MARCH 25, 2016 LEAVE A COMMENT

हत्यारा मनुष्य था फ़रिश्ता नहीं :- प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

१. मर्ज़ा तथा मर्जाई पण्डित जी के हत्यारे को खुदा का भेजा फ़रिश्ता बताते व लखते चले आ रहे हैं .
 कतना भी झूठ गढ़ते जाओ , सच्चाई सौ पर्दे फाड़ कर बाहर आ जाती है . मर्जा ने स्वयं स्वीकार कया है . वह उसे एक शख्स (मनुष्य) लखता है . उसने पण्डित लेखराम के पेट में तीखी छुरी मारी . छुरी मार कर वह मनुष्य लुप्त हो गया पकड़ा नहीं गया

२. वह हत्यारा मनुष्य बहुत समय पण्डित लेखराम के साथ रहा . यहाँ बार बार उसे मनुष्य लखा गया है . फ़रिश्ता नहीं . झूठ की पोल अपने आप खुल गयी
– दृष्टव्य – तजकरा पृष्ठ – २३९ प्रथम संस्करण

हत्यारा मनुष्य ही था :- मर्जा पुनः लखता है " मैं उस मकान की ओर चला जा रहा हूँ . मेने एक व्यक्ति को आते हुए देखा जो क एक सख सरीखा प्रतीत होता था " कुछ ऐसा दिखाई देता था जिस प्रकार मेने लेखराम के समय एक मनुष्य को स्वप्न में देखता था .
– दृष्टव्य – तजकरा पृष्ठ – ४४० प्रथम संस्करण

यहाँ फ़रिश्ते को सख, अका लया, सरीखा आदि तथा डरावना बताकर सीखो को तिरस्कृत कया साथ ही वह भी बता दिया की कादियानी अल्लाह के फ़रिश्ते शांति दूत नहीं क्रूर डरावने व हत्यारे होते हैं . झूठ की फर पोल खुल गयी .

अल्लाह का फ़ारसी पद्य पढ़िए :-

 मर्जा ने अपने एक लम्बी फ़ारसी क वता में पण्डित जी को हत्या की धमकी दते हुए अल्लाह मयां र चत निम्न पद्य दिया है :-

अला अय दुश्मने नादानों बेराह

बतरस अज तेगे बुर्राने मुहम्मद

– दृष्टव्य – हकीकत उल वही पृष्ठ – २८८ तृतीय संस्करण

अर्थात अय मुर्ख भटके हुए शत्रु तू मुहम्मद की तेज काटने वाले तलवार से डर

प्रबुद्ध, सत्यान्वेषी और निष्पक्ष पाठक ध्यान दें की अल्लाह ने तलवार से काटने की धमकी दी थी परन्तु मर्जा ने स्वयं स्वीकार कया है की पण्डित लेखराम जी की हत्या तीखी छुरी से की गयी . मर्ज़ा झूठा नहीं सच्चा होगा परन्तु मर्ज़ा का कादियानी अलाल्ह जनाब मर्ज़ा की साक्षी से झूठा सद्ध हो गया . इसमें हमारा क्या दोष

न छुरी , न तलवार प्रत्युत नेजा (भाला)

मर्ज़ा लखता है " एक बार मेने इसी लेखराम के बारे में देखा क एक नेजा (भाला) हा ई . उसका फल बड़ा चमकता है और लेखराम का सर पड़ा हुआ है उसे नेजे से परो दिया है और खा है की फर यह कादियां में न आवेगा . उन दिनों लेखराम कादियां में था और उसकी हत्या से एक मॉस पहले की घटना है

– दृष्टव्य – तजकरा पृष्ठ – २८७ प्रथम संस्करण

यह इलहाम एक शुद्ध झूठ सद्ध हुआ . पण्डित लेखराम जी का सर कभी भाले पर परोया गया हो इसकी पुष्टि आज तक कसी ने नहीं की . मर्ज़ा ने स्वयं पण्डित जी के देह त्याग के समय का उनका चत्र छापा है मर्जा के उपरोक्त कथन की पोल वह चत्र तथा मर्जाई लेखकों के सैकड़ों लेख खोल रहे हैं

अपने ब लदान से पूर्व पण्डित जी ने कादियां पर तीसरी बार चढाई की मर्ज़ा को पण्डित जी का सामना करने की हिम्मत न हो सकी . मर्जा को सपने में भी पण्डित लेखराम का भय सतताता था उनकी मन स्ति थ का ज्वलंत प्रमाण उनका यह इलहामी कथन है :

झूठ ही झूठ :- मर्जा का यह कथन भी तो एक शुध्ध झूठ है की पण्डित जी अपनी हत्या से एक मॉस पूर्व कादियां पधारे थे . यह घटना जनवरी की मास की है जब पण्डित जी भागोवाल आये थे . स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तथा इस वनीत ने अपने ग्रंथो में भागोवाल की घटना दी है . न जाने झूठ बोलने में मर्जा को क्या स्वाद आता है .

तत्कालीन पत्रों में भी यही प्रमा णत होता है की पूज्य पण्डित जी १७-१८ जनवरी को भागोवाल पधारे सो कादियां `१९-२० जनवरी को आये होंगे . उनका ब लदान ६ मार्च को हुआ . वचारशील पाठक आप निर्णय कर लें की यह डेढ़ मास पहले की घटना है अथवा एक मास पहले की . अल्पज्ञ जेव तो वस्मृति का शकार हो सकता है . क्या सर्वज्ञ अल्लाह को भी वस्मृति रोग सताता है ?

अल्लाह का डा कया कादियानी नबी :-

मर्जा ने मौल वयों का, पादरियों का , सखों का , हिन्दुओं का सबका अपमान कया . सबके लए अपशब्दों का प्रयोग कया तभी तो "खालसा " अखबार के सम्पादक सरदार राजेन्द्र संह जी ने मर्जा की पुस्तक को " ग लयों की लुगात " (अपशब्दों का शब्दकोष) लखा है . दुःख तो इस बात का है की मर्ज़ा बात बार पर अल्लाह का निरादर व अवमूल्यन करने से नहीं चूका . मर्जा ने लखा है मेने एक डरावने व्यक्ति को देखा . इसको भी फ़रिश्ता ही बताया है – " उसने मुझसे पूछा क लेखराम कहाँ है ? और एक और व्यक्ति का नाम लया की वह कहा है ?

– दृष्टव्य – तजकरा पृष्ठ – २२५ प्रथम संस्करण

पाठकवृन्द ! क्या यह सर्वज्ञ अल्लाह का घोर अपमान नहीं की वह कादियां फ़रिश्ते को भेजकर अपने पोस्टमैन मर्ज़ा गुलाम अहमद से पण्डित लेखराम तथा एक दूसरे व्यक्ति (स्वामी श्रद्धानन्द) का अता पता पूछता है . खुदा के पास फरिश्तों की क्या कमी पड़ गयी है ? खुदा तो मर्ज़ा पर पूरा पूरा निर्भर हो गया . उसकी सर्वज्ञता पर मर्जा ने प्रश्न चन्ह लगा दिया .

एक और झूठ गढ़ा गया : – ऐसा लगता है क कादियां में नबी ने झूठ गढ़ने की फैक्ट्री लगा दी . यह फैक्ट्री ने झूठ गढ़ गढ़ कर सप्लाई करती थी पाठक पीछे नबी के भन्न भन्न प्रमाणों से यह पढ चुके हैं क पण्डित जी की हत्या :
१. छुरी से की गयी

२. हत्या तलवार से की गए

३. हाथ भाले से की गयी

नबी के पुत्र और दूसरे खलीफा बशीर महमूद यह लखते हैं :-

४. घातक ने पण्डित जी पर खंजर से वर कया
दे खये – "दावतुल अमीर " लेखक मर्जा महमूद पृष्ठ – २२०

अब पाठक इन चरों कथनों के मलान कर देख लें की इनमें सच कतना है और झूठ कतना . म्यू हस्पताल के सर्जन डॉ. पेरी को प्रमाण मानते ही प्रत्येक बुद्‌धमानi यह कहेगा क बाप बेटे के कथनों में ७५ % झूठ है .

'होली और उसके पूर्व महाभारतकालीन स्वरुप पर वचार'

MARCH 25, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

'होली और उसके पूर्व महाभारतकालीन स्वरुप पर वचार'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

भारत और भारत से इतर देशों में जहां भारतीय मूल के लोग रहते हैं, प्रत्येक वर्ष फाल्गुन माह की पू र्णमा के दिन रंगों का पर्व होली हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाता है। होली के अगले दिन लोग नाना रंगों को एक दूसरे के चेहरे पर लगाते हैं, मठाई व पकवानों का वतरण आदि करते हैं और कुछ हुड़दंग भी करते हैं। क्या होली का प्राचीन स्वरुप भी वर्तमान जैसा था? इससे कुछ भन्न था वा यह वर्तमान स्वरूप पूर्व की वकृति वा रूपान्तर है?

 वचार करने पर ज्ञात होता है क भारत की धर्म व संस्कृति 1.96 अरब पुरानी है। महाभारत काल, आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व, तक वैदिक संस्कृति अपने मूल स्वरूप में देश देशान्तर में वद्यमान रही। इसका प्रमाण है क भारत में वेदों के साक्षात ज्ञानी, ऋ ष, मुनि व योगी महाभारत काल तक बहुतायत में रहे हैं। दूसरा प्रमाण यह है क न भारत में और न हि वश्व के कसी अन्य देश में आज से पांच हजार वर्ष पूर्व की कसी अन्य धर्म, संस्कृति का कोई प्रमाण मलता है। महाभारत ग्रन्थ में ऐसे अनेक प्रमाण है क प्राचीन काल में भारत के लोग वश्व वा यूरोप के प्रायः सभी देशों में आते जाते थे। मनुस्मृति ग्रन्थ सृष्टि के आदि में रचा गया जिसमें वर्णन है क यह आर्यावर्त्त देश ही संसार का अग्रजन्मा देश है। संसार के सभी देशों के लोग यहां वद्यार्जन करने आते थे और अपने योग्य चरित्र आदि की शक्षा लेते थे। यहां से वेदों आदि व सभी वद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर अपने देश में उसका प्रचार व उपयोग करते कराते थे।

वेद मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लए ईश्वरोपासना सहित पंचमहायज्ञों का वधान करते हैं। इन पंच महायज्ञों में मनुष्यों के अनेक व अ धकांश कर्तव्य आ जाते हैं। वैदिक धर्म व संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना को मानने वाली संस्कृति है। यहां सभी लोग सृष्टि के आदि काल से 'सर्वे भवन्तु सु खनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्रा ण पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।' की प्रार्थना करते आ रहे हैं। अतः आज जैसी होली महाभारतकाल तक भारत व वश्व में कहीं होने की कोई सम्भावना नहीं है। अनुमान है क वर्तमान जैसी होली का प्रचलन मध्यकाल में पुराणों की रचना से कुछ समय पूर्व व रचना होने से प्रच लत हुआ। प्राचीन काल में तो प्रत्येक माह पूर्णमास पर बड़े-बड़े यज्ञों का प्रचलन होने का अनुमान होता है। वृहत यज्ञों के उस प्राचीन स्वरूप का अनुसरण ही मध्यकाल से प्रच लत होकर वर्तमान काल तक फाल्गुन की पू र्णमा के दिन रात्रि को होली जलाकर कया जा रहा है। यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध, प वत्र, सुगन्धित व स्वास्थ्यवर्धक होता है। यज्ञ से बादल बनते हैं, समय पर आवश्यकतानुसार वर्षा होती है, अतिवृष्टि वा अनावृष्टि नहीं होती, शुद्ध, प वत्र व स्वास्थ्यवर्धक अन्न उत्पन्न होता है व यज्ञ में देवपूजा, संगतिकरण व दान करने से ऐसे अनेक लाभों सहित हमारे अन्दर पाप की प्रवृ त्त का भी शमन होता है। इसके साथ अद्दष्ट धर्म लाभ भी होता है जिससे हमारा वर्तमान, भ वष्य, परजन्म सुधरता है व अच्छे कर्मों के सग्रंह से मोक्ष की प्राप्ति की ओर जीवात्मा प्रवृत्त होता है।

फाल्गुन की पू र्णमा को मनाये जाने का एक कारण यह भी है क भारत में सृष्टि के आदि काल से प्रच लत चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाण आदि बारह हिन्दी महीने जो चैत्र से आरम्भ होकर फाल्गुन की पू र्णमा को समाप्त होते हैं, उनमें फाल्गुन पू र्णमा वर्ष का अन्तिम दिन होता है। आज हिन्दी के बारह महीनों का अन्तिम महिना फाल्गुन का अन्तिम दिन है। एक प्रकार से वर्ष का अन्त हो रहा है। कल से चैत्र का महीना आरम्भ होगा। यह वर्ष का पहला महीना होता है। अतः वर्ष के अन्त पर वृहत्त यज्ञ का आयोजन कर उसे वदाई दी जाती थी और हो सकता है क नये वर्ष के प्रथम महीने चैत्र के प्रथम दिन को नये वर्ष के रूप में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाता रहा हो। इसका इतना अ भप्राय हो सकता है क यदि कसी का कसी के प्रति कोई द्वेष भाव होता रहा होगा तो इस दिन उसे छोड़ने का संकल्प लया जाता होगा व ऐसे लोग परस्पर मलकर आपस में प्रेम व मैत्री पूर्ण संबंध पुनः स्था पत करने की प्रतिज्ञा करते होंगे। उसी का कुछ वकृत रूप आज एक दूसरे पर रंग लगाकर, गले मलकर, स्वादिष्ट पदार्थों का परस्पर वतरण करके व रंग डालकर मनाने की परम्परा मध्यकाल व उसके बाद से चल पड़ी है। ऐसा देखा जाता है क इस दिन लोग हुड़दंग करते हैं, कुछ नशा करके गलत उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं तथा कहीं कहीं परस्पर लड़ाई झगड़े आदि भी हो जाते हैं। वर्तमान का समय शक्षा व आधुनिकता का युग है अतः सभी को सभ्यता का अच्छा उदाहरण इस दिन प्रस्तुत करना चाहिये।

यह भी वचारणीय है क होली से पूर्व शीत के महीने होते हैं। शीत ऋतु वृद्ध लोगों के लए तो कष्टकर होती ही है परन्तु साथ हि युवा व बच्चों सहित निर्धन लोगों के लए भी अति कष्टदायक होती है। अतः ऋतु परिवर्तन से शीत की निवृ त्त व सबके लए सुखद ऋतु वसन्त के होने पर सबका ह र्षत व प्रसन्न होना स्वाभा वक ही है। देश के कृषक लोग भी इस अवसर पर प्रसन्नता व सुख का अनुभव करते हैं क्यों क उनकी गेहूं व अन्य फसलें पक कर तैयार होती हैं। सारा वातावरण नये नये फूलों की सुगन्ध से सुवा सत होता है। सभी वृक्ष अपने पुराने पत्ते-प त्तयों का त्याग कर नये हरे पत्ते धारण करते हैं जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र धारण करता है। इससे सारा वातावरण व उसका परिदृश्य मनमोहक व लुभावना बन जाता है। ऐसे में सामान्य मनुष्य का मन कुछ आमोद प्रमोद की बातों में लगना स्वाभा वक होता है जिसकी अ भव्यक्ति होली के चैत्र कृष्ण प्रथमा के पर्व से होती है। इतना ही निवेदन है क मनुष्य को जोश के साथ होश भी रखना चाहिये। कहीं कसी के द्वारा इस पर्व पर कोई अमर्यादित बात व कार्य नहीं होना चाहिये। वैदिक साहित्य का अध्ययन कर हमें लगता है क सभी परिवारों में पू र्णमा व अगले दिन प्रथमा को अनिवार्य रूप से अग्निहोत्र व हवन का प्रचलन होना चाहिये जिसमें कसान अपनी नई फसल वा गेहूं की बा लयों की आहुतियां भी दे सकते हैं जिससे यह पर्व मनाना सार्थक होता है। इस प्रकार यज्ञ पूर्वक होली को मनाना होली का मुख्य प्रतीक बनना चाहिये। इससे लाभ ही लाभ होगा। समाज, पर्यावरण व देश सभी उन्नत होंगे और ईश्वर प्रदत्त प्राचीन वैदिक धर्म व संस्कृति उन्नति को प्राप्त होगी।

होली के दिन प्रायः सभी घरों में स्वादिष्ट भोजन व नाना प्रकार के पकवान बनते हैं और लोग परस्पर अपने पड़ सयों व मत्रों में इसका वतरण व सेवन आदि करते हैं। यह अच्छी

प्रथा है। लेख को वराम देने से पूर्व इतना और निवेदन है क इस दिन सभी समर्थ व सम्पन्न लोगों को समाज क निर्धन व साधनहीन लोगों तक अपनी ओर से उनके उपयोग की कुछ वस्तुयें वतरित करने का प्रयास करना चाहिये और उनको आगे बढ़ाने का कुछ सहयोग कया जा सके तो इसका वचार करना चाहिए। आज होली के दिन हमने कुछ क्षण जो चन्तन कया है, उसे आपको सादर भेंट करते हैं और सभी बन्धुओं व मत्रों को हमारी होली के पर्व की बहुत बहुत शुभकामनायें हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

माता भगवती का इतिहास में स्थानः- प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

MARCH 20, 2016 LEAVE A COMMENT

माता भगवती का इतिहास में स्थानः–

 कसी ने यह रिसर्च आर्यसमाज पर थोप दी क ''हो शयारपुर की लड़की भगवती……''। पता लगने पर प्रश्नकर्ता का उत्तर देते हुए इस वनीत ने परोपकारी में लखा क माता भगवती लड़की नहीं, बड़ी आयु की थी। उसे सब माई भगवती या माता भगवती कहा व लखा करते थे। मेरा लेख छपते ही मेरे कृपालु नई-नई रिसर्च व नये-नये प्रश्नों के साथ इस सेवक व परोपकारी को लताड़ने लग गये। कुछ पत्रों के कृपालु सपादकों ने मेरा उपहास-सा उड़ाने वाले लेख छापे। मैं ऐसे पत्रों का आभारी हूँ। सपादकों को धन्यवाद!

पूज्य पं. हीरानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, नारी शक्षण के एक जनक दीवान बद्रीदास जी, भूमण्डल प्रचारक मेहता जै मनी जी, महाशय चरञ्जीलाल जी प्रेम के मुख से माता भगवती के बारे में जो कुछ सुना, वही तथ्य रखे। दीवान जी, मेहता जी व महाशय जी माता भगवती के क्षेत्र के प्रमुख आर्य कर्णधार रहे। मैंने हरियाणा के समीप जालंधर में शक्षा पाई। जहाँ इतिहास के बारे कोई समस्या हो, कुछ पूछना हो तो देश भर से नित्य पाँच-सात प्रश्न मुझसे पूछे जाते हैं। बड़े खेद की बात है क हठ व दुराग्रह से अकारण मेरे प्रत्येक कथन को जिहादी जोश से चुनौती दी गई। चलो! इनका धन्यवाद! 'इतिहास प्रदूषण' पुस्तक में यदि प्रदूषण के सप्रमाण दिये गये तथ्यों को कोई झुठला पाता तो मैं मान लेता।

 वषय से हटकर वतण्डा कया जा रहा है। माता भगवती लड़की नहीं थी। बड़ी आयु की बाल वधवा थी। वषय तो यह था। एक भद्रपुरुष ने बाल वधवा होने को ववाद का मुद्दा बना लया। संक्षेप से कुछ जानकारी मूल स्रोतों के प्रमाण से देता हूँ। उन स्रोतों को इस टोली ने देखा, न पढ़ा और न इनकी वहाँ पहुँच है-

1. माता भगवती का चत्र मैं दिखा सकता हूँ। वह एक बड़ी आयु की देवी स्पष्ट दिख रही है। लड़की नहीं।
2. वह तब 38-39 वर्ष की थी, जब उसने ऋ ष-दर्शन कये। तब 38 वर्ष की स्त्रियाँ दादी बन जाती थीं। श्री इन्द्रजीत जी ने अपने लेख में माई जी के जन्म का वर्ष दे दिया है।
3. मेरे पास माई जी के निधन के समय लखा गया महात्मा मुंशीराम जी का लेख है। इससे बड़ा क्या प्रमाण कसी के पास है?
4. महात्मा जी ने पत्र-व्यवहार में माई जी के लए 'श्रीमती' शब्द का प्रयोग कया है। पुराने पत्रों के समाचारों में कई बार उसके लए श्रीमती शब्द का प्रयोग हुआ है। जो भी चाहे मेरे पास आकर देख ले।
5. माई जी के निधन पर पंजाब सभा ने 'माई भगवती वधवा सहायक नि ध' की स्थापना की। देश भर के आर्यों ने उसमें आहुति दी। इससे बड़ा उसके बाल वधवा होने का क्या प्रमाण हो सकता है। उसके पीहर की, भाई की, माता की, जन्म की, कुल की, चर्चा की जाती है, पर उसकी सन्तान की, सास, ससुर व पति की, ससुराल के नगर, ग्राम की कोई चर्चा? 'श्रीमती' शब्द के प्रयोग को कोई झुठला कर दिखाये? 'माता' शब्द का प्रयोग भाई जी के प्राप्त एकमेव साक्षात्कार की दूसरी पंक्ति में स्पष्ट मलता है। यही इन्हें नहीं दिखाई देता। 'लड़की' मानने की रिसर्च तो छूटी, अब बाल वधवा नहीं थी, इस रट पर इनका महामण्डल आगे क्या कहता है, पता नहीं।
6. महात्मा मुंशीराम जी के सपादकीय (श्रद्धाञ्ज ल) के प्रथम पैरा में लखा है क माई जी ने अपने पीहर में-माता- पता के घर हरियाणा में प्राण त्यागे। बाल वधवा नहीं थी, तो पतिकुल में अन्तिम श्वास क्यों न लया? माता भगवती के भाई राय चूनीलाल की चर्चा तो पत्रों में मलती है, पर पति कुल की कोई चर्चा नहीं। अब पाठक माई जी पर ल खत मेरी पुस्तिका (उनके जीवन चरित्र) की प्रतीक्षा करें। मुझे और कुछ नहीं कहना। फर निवेदन करता हूँ क माई जी के जीवन काल में मेहता जै मनि, दीवान बद्रीदास जी, ला. सलामतराय की दो आबा, पंजाब में घर-घर में धूम मची रहती थी। मैंने इन सबके जी भरकर दर्शन कये। मेरे अतिरिक्त और कोई पंजाब में इनको जानने वाला नहीं। पं. ओम्प्रकाश जी वर्मा ने भी इन सबको निकट से देखा।

7. यम-यमी का वैदिक स्वरूप - शवदेव आर्य

8. MARCH 20, 2016 LEAVE A COMMENT
9. प्रत्येक मनुष्य समाज को एक नई दिशा व दशा देने की पूर्णरूपेण योग्यता रखता है।अब दिशा व दशा कैसे हो, यह दिशा व दशा दिखाने वाले पर आ श्रत है, वह अपने ज्ञान के आलोक से मार्गप्रशस्त करता है अथवा ज्ञान के आलोक के अभाव में सत्य मार्ग से हटा कर असत्य मार्ग का अनुसरण कराता है।
10. ऋग्वेद के दशम मण्डल का दशवांें सूक्त यम-यमी सूक्त है। इसी सूक्त के मन्त्र कुछ वृध्दि सहित तथा कुछ परिवर्तनपरक अथर्ववेद (18/1/1-16) में दृष्टिपथ होते हैं, अब वचारणीय है क- यम-यमी क्या है? अर्थात् यम-यमी कसको कहा । इस प्रश्न का उदय उस समय हुआ जब आचार्य सायणादि भाष्यकारों ने यम-यमी को भाई-बहन के रूप में प्रस्तुत कया गया है। भाई-बहन का इतना अश्लीलता परक अर्थ करके पाश्चात्य वद्वानों तथा पाखण्डियों को वेदों पर आक्षेप करने का अवसर प्राप्त करा दिया। इस अश्लील परक अर्थ को कोई भी सभ्य समाज का नागरिक कदा प स्वीकार नहीं कर सकता है।

11. प्रो. मैक्समूलर के मत में यम-यमी कोई मानवीय सृष्टि के पुरुष न थे कन्तु दिन का नाम यम और रात्री का नाम यमी है इन्हीं दोनों से ववाह वषयक वार्तालाप है। इस कल्पना में दोष यह है क जब यम और यमी दोनों दिन और रात हुए तो दोनों ही भन्न- भन्न कालों में होते हैं। इससे यहाॅं इनको रात्री तथा दिन रूप देना सर्वथा वरु(है।
12. अनेक भारतीय लेखकों ने भी इन मन्त्रों के व्याख्यान को अलंकार बनाकर यम-यमी को दिन-रात सद्ध कया है, इनके मत में भी कथा सर्वथा निरर्थक ही प्रतीत होती है, क्यों क न कभी दिन-रात को ववाह की इच्छा हुई और न कोई इनके ववाह के निषेध से अपूर्वभाव ही उत्पन्न होता है। आर्य समाज के उच्चकोटि के वद्वानों को भी इस वषय में भन्न- भन्न मत हैं।
13. आचार्य यास्क जी ने 'यमी' का निर्वचन लंभेद मात्र से 'यम' से माना है। 'यमो यच्छतीत सतः' अर्थात् यम को यम इस लए कहा जाता है, क्यों क यह प्रा णयों को नियन्त्रित करता है। पं. चन्द्रम ण जी के अनुसार 'यम' प्राण को कहते हैं, क्यों क यह जीवन प्रदान करता है। (निरु.चन्द्रम णभाष्य-10/12) निरुक्त भाष्यकर्ता स्कन्दस्वामी जी ने यम-यमी को आदित्य और रात्रि मानकर (10/10/8) मन्त्र की व्याख्या की है। स्वामी ब्रह्ममुनि यम-यमी को पति-पत्नी, दिन-रात्री और वायु- वद्युत् का बोधक मानते हैं। पं. भगवद्दत्त जी ने यम को अग्नि, आदित्य, वायु, मध्यम तमोभाग तथा यमी से पृ थवी और माध्य मका वाक् अर्थ ग्रहण कये हैं।
14. चन्द्रम ण वद्यालप्रार जी ने अपने निरुक्त परि शष्ट में सम्पूर्ण यम-यमी सूक्त की व्याख्या की है, जो भाई-बहन परक है, कन्तु सहोदर भाई बहन न दिखा कर सगोत्र दिखाने का प्रयास कया है।
15. कन्तु व भन्नतत्व वद्निष्णातों के भाव को शायद मैं ऋ षवर देव दयानन्द के वचारों से जोड़ने में असमर्थ हो रहा हूॅं, अतः मैं ऋ षवर के पथ का अनुसरण करता हूॅं ऋ ष को समझने का प्रयास करता हूॅं यद्य प ऋ षवर ने इस सूक्त का भाष्य नहीं कया है, पुनर प सत्यार्थ-प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास के नियोग प्रकरण में इसी सूक्त के मन्त्र को प्रस्तुत कया है। ऋ षवर की उन पंक्तियों को प्रमाण रूप से यहाॅं उद्धृत करना अनिवार्य ही नहीं अ पतु प्रसांिक भी होता है।
16. *''जब पति सन्तानोत्प त में असमर्थ होवे तब अपनी स्त्री को आज्ञा देवे क हे सुभगे! सौभाग्य की इच्छा कर क्यों क अब मुझसे सन्तानोत्प त न हो सकेगी।''* (चतुर्थसमुल्लास, सत्यार्थ-प्रकाश)
17. ऋ षवर की इन पक्तियों से स्पष्ट प्रतीत होता है क इस सूक्त में पति-पत्नि का संवाद है न क भाई-बहन का। हम स्वामी दयानन्द क इन पक्तियों को इस लए और भी प्रमाण रूप में स्वीकार करेंगे क्यों क दयानन्द जी एक मन्त्रद्रष्टा ऋ ष थे। जिनके समान वेदों का भाष्य, मन्त्रों का यथार्थ स्वरूप कसी अन्य का प्रतीत नहीं होता।
18. अब हम व्याकरण क दृष्टि से यम-यमी शब्द को जानने का यत्न करते हैं। मह र्ष पा णनि के व्याकरण के अनुसार 'पुंयोगादाख्याम्'(अष्टा.-4/1/48) इस सूक्त से यमी शब्द में ङीष् प्रत्यय हुआ है। इससे ही पत्नी का भाव द्योतित होता है। यदि यम-यमी का अर्थ भाई-बहन लया जाता तब यम-यमा ऐसा प्रयोग होना चाहिए था, जब क ऐसा प्रयोग नहीं है। जैसे हम लोकव्यवहार में देखते हैं क आचार्य की स्त्री आचार्याणी, इन्द्र की स्त्री इन्द्राणी आदि प्र सध्द है न क आचार्याणी से आचार्य की

बहन अथवा इन्द्राणी से इन्द्र की बहन स्वीकार की जाती है। ऐसे ही यमी शब्द से पत्नी और यम शब्द से पति स्वीकार करना चाहिए। अर्थात् यम की स्त्री यमी ही होगी।

19. सायण के यम-यमी संवाद भाई-बहन का संवाद कदा प नहीं हो सकता। ये तो सायण ने अपनी इच्छानुसार ही कल्पित अर्थ को जन्म दे दिया है। जिसको हम आज भी स्वीकार करते चले आ रहे हैं। इस अर्थ के कारण पाश्चात्य वद्वानों के आक्षेप तथा वध र्मयों के ववाद सदैव हम सबके समक्ष उपस्थित होते रहे हैं। आर्य वद्वान् जो सायण आदि से प्रभा वत हुए हैं। वे भी वैसा ही अर्थ कर गए। भाई-बहन का ऐसा पशु तुल्य व्यवहार वैदिक कदा प नहीं हो सकता। मानव समाज में शष्टाचार और सभ्यतापूर्वक सम्बन्धों की परम आवश्यकता है। ऋ षवर देव दयानन्द ने जो तिरोहित वेद ज्ञान की ज्योति को पुनर्जी वत कया है। उसके प्रकाश में जो पथभ्रष्ट हो रहे हैं, वे निश्चित ही अंधकार से सं लप्त हैं।
20. इस सूक्त के ग्यारहवें मन्त्र में भ्राता तथा स्वसा नाम दिये गये हैं। जिसको पढ़ने से कोई भी जन पूर्वापर प्रसंग को समझ सकता है। इस पूर्वापर प्रकरण को देखकर मन्त्रार्थ पर वचार- वमर्श करें तो स्वतः ही भ्रान्ति का निवारण हो जाएगा।
21. आ घा तो गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजा म।
22. उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्य मच्छस्व सुभगे पतिं मत्।। (10/10/10)
23. इस मन्त्र के माध्यम से सन्तति उत्प त्त में असमर्थ पति अपनी पत्नी को कहता है क हे सौभाग्यशा लनी! तू अन्य वीर्यवान् पुरुष के बाहु का सहारा ले और इस प्रकार सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ मुझ पति से अतिरिक्त पति की इच्छा कर।
24. इस मन्त्र के भाव से यथार्थ स्पष्ट हो जाता है क इन मन्त्रों में पति-पन्ति परक अर्थ का ही ज्ञान करना चाहिए। क्यों क इससे अगले ही मन्त्र-
25. कं भ्रातासद्यदनायं भवाति कमुस्वसा कमुस्वसा यन्न्रृनटी तिर्निगच्छात्।
26. काममूता बह्वे तद्रपा म मे तन्वं सं पपृग्धि॥ (**10/10/11)**
27. इन मन्त्र की व्याख्या में पत्नी पति की भर्त्सना करती हुयी कहती है क- क्या अब मै तुम्हारी पत्नी न होकर बहन हो गई हूँ। क्या तुम मेरे पति न होकर भाई हो, जो मैं अन्यत्र चली जाऊँ।
28. इससे अगले मन्त्र अर्थात् 12 वें मन्त्र में यम के उत्तर से सम्पूर्ण सूक्त की यर्थाथता समझी जा सकती है। मन्त्र इस प्रकार है –
29. न वा उ ते तन्वा सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।
30. अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत्।। (10/10/12)
31. इस मन्त्र में पति कहता है क – जब मैं असमर्थ हो तुझे दूसरे पति से नियोग की आज्ञा दे दी तो तू मेरी बहन समान हुयी और मैं तेरा भाई समान। अतः मैं तूझे आदेश देता हूँ क तू मुझ से अन्य श्रेष्ठ पुरुष का समागम कर।
32. जो सायण आदि ने भाई-बहन परक अर्थ कया है, शायद वह इस मन्त्र भाव को न समझ कर कया होगा।
33. इस सूक्त में अलंकारिक वर्णन कया गया है। यह सर्वथा ज्ञात रहे क यम-यमी मानुषी सृष्टि के स्त्री या पुरुष नहीं हैं, यहाँ नियोग प्रकरण को समझाने के लए यम-यमी को पति-पत्नी का रूप दिया गया है।

34. यह सम्पूर्ण कृत नियोग पध्दति का है। सामान्य स्थिति के लए यह पध्दति नहीं है। नियोग के समस्त नियम-उपनियम व अ धकार स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ सम्मुल्लास को देखें।
35. पूर्वापर मन्त्रार्थ की संगति से स्पष्ट हो जाता है क भ्राता तथा स्वसा इन दोनों शब्दों का वहॉं पर क्या भाव है और सम्पूर्ण सूक्त की संगति पति-पत्नी परक मन्त्रार्थ ही सत्य ही प्रतीत होता है अन्यार्थ तो बस लोगों की कल्पनामात्र ही प्रतीत होती है।
36. - शवदेव आर्य
37. गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)
38. मो.-08810005096
39. shivdevaryagurukul@gmail.com

40. अवतारवाद पर उपाध्यायजी का मौ लक तर्कः

41. MARCH 9, 2016 7 COMMENTS
42. अवतारवाद पर उपाध्यायजी का मौ लक तर्कः–
43. परोपकारी में मान्य सत्यजित् जी तथा श्रीमान् सोमदेव जी समय-समय पर शंका समाधान करते हुए बहुत पठनीय प्रमाण व ठोस युक्तियाँ देते रहे हैं। मान्य श्री सोमदेव जी तथा अन्य वैदिक वद्वानों से निवेदन कया था क भ वष्य में अपने पुराने पूजनीय वचारकों, दार्शनिकों का नाम ले लेकर उनके मौ लक चन्तन व अनूठे तर्कों का आर्य जनता को लाभ पहुँचायें। इससे अपने पूर्वजों से नई पीढ़ियों को प्रबल प्रेरणा प्राप्त होगी। आज अवतारवाद वषयक पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का एक सरल परन्तु अनूठा तर्क दिया जाता है।
44. कसी वस्तु में जब परिवर्तन होता है, तो वह पहले से या तो उन्नत होती है, बढ़िया बन जाती है और या फर उसमें ह्रास होता है। वह पहले से घटिया हो जाती है। इसके नित्य प्रति हमें नये-नये उदाहरण मलते हैं। शशु से बालक, बालक से जवान और जवानी से बुढ़ापा-सब इस नियम के उदाहरण हैं। घर का सामान टूटता-फूटता है, मरमत होती है, तो दोनों प्रकार के उदाहरण मल जाते हैं।
45. परमात्मा जब अवतार लेता है, तो अवतार धारण करके वह प्रभु पहले से बढ़िया बन जाता है, अथवा कुछ बिगड़ जाता है। दोनों स्थितियाँ तो हो नहीं सकतीं। पहले की स्थिति रह नहीं सकती। कुछ भी हो, प्रत्येक स्थिति में वह प्रभु पूर्ण परमानन्द तो नहीं कहा जा सकता। प्रभु अखण्ड एक रस तो न रहा। यह तर्क इस लेखक ने आज से 61 वर्ष पूर्व पढ़ा था। कभी कोई अवतारवादी इसके सामने नहीं टिक पाया।
46. कोई 45 वर्ष पूर्व केरल के कोचीन नगर में इस सेवक को व्यायान देना था। केरल के स्वामी दर्शनानन्द जी तब युवा अवस्था में थे। वह श्रोता के रूप में व्यायान सुन रहे थे। अवतारवाद को लेकर तब एक तर्क यह दिया क राम, कृष्ण आदि सभी अवतार भारत में ही आये हैं। जर्मनी, इरान, जापान, मस्र, सीरिया व अरब आदि देशों में आज तक कोई अवतार नहीं आया। जब-जब धर्म की हानि होती है और पाप बढ़ता है, भगवान् अवतार लेते हैं। अवतारवाद के इतिहास से तो यह प्रमा णत होता है क भारत ऋ ष भू म-पुण्य भू म न होकर पाप भू म है। क्या यह कोई गौरव की बात है? जापान पर दो परमाणु बम गराये गये। लाखों जन क्षण भर में मर गये। भगवान् ने वहाँ अवतार लया क्या? भारत का वभाजन हुआ। लाखों जन मारे गये। कोई अवतार

प्रकट हुआ? यह तर्क सुनकर पीछे बैठे स्वामी श्री दर्शनानन्द जी फड़क उठे। वह दृश्य आज भी आँखों के सामने आ जाता है।

47. माई भगवती जीः प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

48. MARCH 7, 2016 LEAVE A COMMENT

49. माई भगवती जीः– ऋ ष के पत्र-व्यवहार में माई भगवती जी का भी उल्लेख है। ऋ ष मशन के प्रति उनकी सेवाओं व उनके जीवन के बारे में अब पंजाब में ही कोई कुछ नहीं जानता, शेष देश का क्या कहें? पूज्य मीमांसक जी की पादटिप्पणी की चर्चा तक ही हम सी मत रह गये हैं। पंजाब में ववाह के अवसर पर वर को कन्या पक्ष की कन्यायें स्वागत के समय सठनियाँ (गन्दी-गन्दी गा लयाँ) दिया करती थीं। वर भी आगे तुकबन्दी में वैसा ही उत्तर दिया करता था। आर्य समाज ने यह कुरीति दूर कर दी। इसका श्रेय माता भगवती जी की रचनाओं को भी प्राप्त है। मैंने माताजी के ऐसे गीतों का दुर्लभ संग्रह श्री प्रभाकर जी को सुर क्षत करने के लये भेंट कया था।
50. मैं नये सरे से मह र्ष से भेंट की घटना से लेकर माताजी के निधन तक के अंकों को देखकर फर वस्तार से लखूँगा। जिन्होंने माई जी को 'लड़की' समझ रखा है, वे मीमांसक जी की एक टिप्पणी पढ़कर मेरे लेख पर कुछ लखने से बचें तो ठीक है। कुछ जानते हैं तो प्रश्न पूछ लें। पहली बात यह जानिये क माई भगवती लड़की नहीं थी। 'प्रकाश' में प्रका शत उनके साक्षात्कार की दूसरी पंक्ति में साक्षात्कार लेने वालों ने उन्हें 'माता' लखा है। आवश्यकता पड़ी तो नई सामग्री के साथ साक्षात्कार फर से स्कैन करवाकर दे दूँगा। श्रीमती व माता शदों के प्रयोग से सद्ध है क उनका कभी ववाह अवश्य हुआ था।
51. महात्मा मुंशीराम जी ने उनके नाम के साथ 'श्रीमती' शद का प्रयोग कया है। इस समय मेरे सामने माई जी वषयक एक लोक प्रय पत्र के दस अंकों में छपे समाचार हैं। इनमें कसी में उन्हें 'लड़की' नहीं लखा। क्या जानकारी मली है- यह क्रमशः बतायेंगे। ऋ ष के ब लदान पर लाहौर की ऐतिहा सक सभा में (जिसमें ला. हंसराज ने डी.ए.वी.स्कूल के लए सेवायें अ र्पत कीं) माई जी का भी भाषण हुआ था। बाद में माई जी लाहौर, अमृतसर की समाजों से उदास निराश हो गईं। उनका रोष यह था क डी.ए.वी. के लए दान माँगने की लहर चली तो इन नगरों के आर्यों ने स्त्री शक्षा से हाथींच लया। माता भगवती 15 वधवा दे वयों को पढ़ा लखाकर उपदे शका बनाना चाहती थी, परन्तु पूरा सहयोग न मलने से कुछ न हो सका।
52. माई जी ने जालंधर, लाहौर, गुजराँवाला, गुजरात, रावल पण्डी से लेकर पेशावर तक अपने प्रचार की धूम मचा दी थी। आर्य जन उनको श्रद्धा से सुनते थे। उनके भाई श्री राय चूनीलाल का उन्हें सदा सहयोग रहा। 'राय चूनीलाल' लखने पर कसी को चौंकना नहीं चाहिये। जो कुछ लखा गया है, सब प्रामा णक है। माई जी संन्या सन नहीं थीं। उनके चत्र को देखकर यह्रम दूर हो सकता है। वह हरियाना ग्राम की थीं, न क हो शयारपुर की। पंजाबी हिन्दी में उनके गीत तब सारे पंजाब में गाये जाते थे। सामाजिक कुरीतियों के निवारण में माई जी के गीतों का बड़ा योगदान माना जायेगा। मैंने ऋ ष पर पत्थर मारने वाले पं. हीरानन्द जी के मुख से भी माई जी के गीत सुने थे। उनके जन्म ग्राम, उनकी माता, उनके भाई की चर्चा पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मलती है, परन्तु पति व पतिकुल के बारे में कुछ नहीं मलता। हमने उन्हीं के क्षेत्र के

स्त्री शक्षा के एक जनक दीवान बद्रीदास जी, महाशय चरञ्जीलाल जी आदि से यही सुना था क वे बाल वधवा थीं।

53. पाखण्ड खण्डिनी पताका, सद्धर्म प्रचार और मह र्ष दयानन्द

54. FEBRUARY 29, 2016 LEAVE A COMMENT

55. ओ३म्

56. 'पाखण्ड खण्डिनी पताका, सद्धर्म प्रचार और मह र्ष दयानन्द'

57. –मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

58. कसी भी वषय में सत्य का निर्धारण करने पर सत्य वह होता है जो तर्क व युक्ति के आधार पर सद्ध हो। दो संख्याओं 2 व 3 का योग 5 होता है। तर्क व युक्ति से यही उत्तर सत्य सद्ध होता है। अतः 2 व 3 का योग 4 या 6 अथवा अन्य कुछ कहा जाये तो वह असत्य की कोटि में आता है। धा र्मक मान्यताओं व सद्धान्तों की दृष्टि से भी एक वषय में सत्य मान्यता व सद्धान्त केवल एक ही होता है। इसका प्रथम ज्ञान परमात्मा ने स्वयं ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा आदि ऋ षयों को कराया था। आज भी सम्पूर्ण वेद अपने मूल स्वरूप सहित संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में भाष्यों के रूप में उपलब्ध है। इनके द्वारा सत्य धर्म, मत, मान्यताओं व सद्धान्तों का निर्धारण कया जा सकता है। धर्म का सम्बन्ध ईश्वर व आत्मा के ज्ञान व मनुष्य द्वारा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना से भी जुड़ा हुआ है। अतः ईश्वर, जीव व उपासना से जुड़ी सभी मान्यतायें व सद्धान्त जो परस्पर वरोधी व युक्ति प्रमाणों के वरुद्ध हैं, सत्य नहीं कहे जा सकते। सत्य की वस्मृति से ही अज्ञान उत्पन्न होता है जो समय के साथ बढ़ता रहता है। महाभारत युद्ध के बाद वेदों के वलुप्त हो जाने व अल्प ज्ञानी लोगों द्वारा वेदों के अर्थ न समझने के कारण भारत व वश्व के सभी देशों में अज्ञान व पाखण्ड में वृद् ध होती रही।

59.

60. मह र्ष दयानन्द ने सत्य ज्ञान की खोज की। उन्होंने भारत के सभी ज्ञानी गुरूओं से धर्म, योग व उपासना आदि का ज्ञान प्राप्त कया। उन्होंने संस्कृत का व्याकरण व अन्य सभी आर्ष व अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ कर उनका मन्थन कर अपने वद्यागुरु स्वामी वरजानन्द सरस्वती की कृपा से सत्य व असत्य के भेद व अन्तर को जाना था। इसके साथ उन्होंने गुरू की प्रेरणा व आज्ञा तथा स्वयं के ववेक से समस्त मानवता के हित व कल्याण के लए पाखण्ड व असत्य मान्यताओं व सद्धान्तों का खण्डन कर सत्य वैदिक मान्यताओं की स्थापना का संकल्प कया था जिसका उन्होंने अपनी अन्तिम श्वांस तक पालन कया। स्वामी जी ने सन् 1863 तक गुरु वरजानन्द की मथुरा स्थित कुटिया वा गुरुकुल में अध्ययन कर इसके बाद सत्य धर्म वैदिक मत का प्रचार आरम्भ कया था। आगरा व ग्वा लयर आदि अनेक स्थानों पर प्रचार करते हुए वह सन् 1867 के हरिद्वार के कुम्भ मेले में धर्म प्रचार करने के उद्देश्य से आये थे। इसका कारण था क कुम्भ के मेले में हिन्दू स्त्री-पुरुष और साधु लाखों की संख्या में इकट्ठे होते हैं। यह लोग समझते हैं क कुम्भ के मेले पर गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं और मनुष्य को दुःखों व जन्म-मरण से मुक्ति मल जाती है। हरिद्वार में उन्होंने देखा क साधु और पण्डे धर्म का उपदेश देकर लोगों को सीधे रास्ते पर लाने के स्थान पर उन्हें पाखण्ड की शक्षा देकर लूट रह हैं। उन्होंने पाया

क संसार सत्य धर्म पर चलने के स्थान पर अज्ञान के गहरे गड्ढे में गर रहा है। जिसे हर की पैड़ी कहा जाता है, वह हर की पैड़ी न होकर हाड़ की पैड़ी बन रही है। गंगा में डुबकी लगाने से सब पाप दूर हो जाते है, इस मथ्या वश्वास से लोग बिना सोचे वचारे अन्धाधुन्ध गंगा नदी में डुब कयां लगा रहे थे।

61.

62. हरिद्वार में इन दृश्यों को देखकर स्वामी दयानन्द जी को गहरी चोट लगी। उन्होंने पाया क इन कृत्यों से लोग दुःखों से छूटने के स्थान पर दुःखों के सागर में डूब रहे हैं। अतः उन्होंने साधुओं और पण्डों के इस पाखण्ड की पोल खोलने का निर्णय लया। इसके बाद एक दिन यात्रियों ने देखा क हरिद्वार से ऋ षकेश को जाने वाली सड़क पर वहां एक स्थान पर स्वामी दयानन्द ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका गाड़ दी है। वह वहां गरज-गरज कर उपदेश दे रहे हैं। वह अपने उपदेशों में साधुओं और पण्डों की करतूतें दिखला कर झूठे गंगा-महात्म्य की धज्जियां उड़ा रह हैं। स्वामी दयानन्द की इस गरजना से मेले में भारी हलचल मच गई। आज तक लोगों ने कसी संन्यासी को श्राद्ध, मूर्ति-पूजा, अवतार और गंगा-स्नान से मुक्ति मलने का खण्डन करते हुए तथा पुराणों को झूठा कहते नहीं सुना था। सहस्त्रों की संख्या में लोग उनका क्रान्तिकारी उपदेश सुनने आने लगे। स्वामीजी सबसे यही कहते थे क हर की पैड़ी पर नहाने से पाप नहीं धुलते। वेद की शक्षा पर चलो। अच्छे काम करो। इसी से सुख और मोक्ष मलेगा। धर्म ग्रन्थों का पढ़ना-सुनना और सच्चे धर्मात्माओं की संगति ही सच्चा तीर्थ होती है।

63.

64. आने को तो स्वामी दयानन्द जी के सत्संग व प्रवचन में सहस्त्रों लोग उपदेश सुनने आते थे परन्तु वे केवल सुनकर चले जाते, उन पर उनके उपदेशों का प्रभाव दिखाई नहीं देता था। यह देख कर स्वामीजी को गहरी निराशा हुई। उन्होंने वचार कया क मेरे तप व त्याग में कहीं कुछ कमी है जिस कारण से उनकी बात का लोगों पर असर नहीं हो रहा है। बस उन्होंने निर्णय कया क वह अब आगे प्रचार न कर मौन रहकर तपस्या करेंगे। उन्होंने अपने सब वस्त्र उतार कर फेंक दिये। महाभाष्य की एक कापी, सोने की एक मुहर और मलमल का एक थान अपने गुरूदेव स्वामी वरजानन्द जी के लए मथुरा भजवा दिया। श्री कैलासपर्वत नाम के एक साधु ने स्वामी से पूछा क महाराज आप यह क्या कर रहे हैं? स्वामी जी ने उन्हें उत्तर दिया क जब तक अपनी आवश्यकताओं को कम से कम न कया जाये, पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होती और कार्य में सफलता भी नहीं हो सकती। कैलास पर्वत को उन्होंने कहा क वह सत्य वैदिक धर्म के वरोधी सभी असत्य मत, पन्थों व सम्प्रदायों का खण्डन कर सत्य को स्था पत करना चाहते हैं। इसके लए वह सांसारिक आवश्यकताओं और सुख-दुःख से ऊपर उठना चाहते हैं। इसके बाद स्वामीजी ने पुस्तकें आदि छोड़कर अपने सारे शरीर पर राख रमा ली। अपने तन पर केवल एक कौपीन रख कर मौन रहने का व्रत ले लया। जो वेदों का वद्वान शेर की तरह कसी समय लाखों के समूह में गरजता था, जिसकी गरज को सुनकर झूठे मतों और पंथों के दिल दहल जाते थे, वह अब मौन रहकर अपनी कुटी में बैठ गया। बातचीत करना पूरी तरह से बन्द हो गया। इस स्थिति में उनके मन में जो तूफान उठ रहा होगा, उसका अनुमान कया जा सकता है। अतः यह स्थिति अ धक दिन नहीं चली। उन्होंने तो यह पाठ पढ़ा हुआ था क मौन रहने से अच्छा सत्य बोलना होता है। ऐसा व्यक्ति कब तक चुप रह सकता था? कुछ

दिन बाद एक घटना घटी। एक व्यक्ति उनके तम्बू के बाहर खड़ा होकर पुराणों की प्रशंसा करने लगा। उसने वेदों को पुराणों से हेय बताया। इस असत्य वचन को सुनकर स्वामी जी से रहा न गया और वह अपना मौन व्रत तोड़कर बाहर निकले और उस व्यक्ति के असत्य वाक्यों का खण्डन आरम्भ कर दिया। हो सकता है क उस व्यक्ति ने यह कार्य ईश्वर की प्रेरणा से स्वामी जी का मौन व्रत भंग करने के लए कया हो? जो भी रहा हो, यह अच्छा ही हुआ और अब स्वामीजी पूरे बल से वेद प्रचार करने लगे।

65.

66. अब स्वामी दयानन्द नगर-नगर और स्थान-स्थान में घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे। चारों वेदों का अध्ययन कर उन्होंने जाना था क वेदों में कहीं मूर्तिपूजा का वधान व समर्थन नहीं है। उन्होंने मूर्तिपूजा और अन्य अवैदिक अन्ध वश्वासों व पाखण्डों का खण्डन करना आरम्भ कर दिया। बहुत से लोग उनके साथ शास्त्रार्थ करने आते परन्तु हार खाकर चले जाते। कर्णवास में पं. हीरावल्लभ नाम के एक बहुत बड़े वद्वान पण्डित थे। वह नौ और पण्डितों को अपने साथ लेकर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने आये। आते हुए साथ में एक पाषाण मूर्ति भी उठा लाये और प्रतिज्ञा की क जब तक दयानन्द से इसकी पूजा न करा लूंगा, वापस न जाऊंगा। कोई एक सप्ताह तक प्रतिदिन ना-नौ घंटे तक शास्त्रार्थ हुआ करता था। दोनों ओर से संस्कृत बोली जाती थी और वाद प्रतिवाद होता था। अन्तिम दिन पण्डित जी उठे और ऊंचे स्वर से बोले–स्वामी दयानन्द जी महाराज जो कुछ कहते हैं, वह सब सत्य है। इतना कहकर उन्होंने अपनी मूर्तियां उठाई और गंगा में फेंक दीं। उनको देखकर बाकी पण्डितों और नगर-निवा सयों ने भी अपनी-अपनी मूर्तियां घर से लाकर गंगा की भेंट कर दीं। हीरावल्लभजी ने मूर्तियों की जगह संहासन पर वेदों को प्रतिष्ठत कर दिया। इस कर्णवास के शास्त्रार्थ की सर्वत्र बड़ी धूम मची। बहुत से ठाकुर लोग स्वामी जी महाराज के पास आकर उपदेश लेने लगे। स्वामी जी ने उन्हें यज्ञोपवीत-जनेऊ देकर गायत्री मन्त्र को गुरु-मन्त्र के रूप में दिया। गंगा के कनारे भ्रमण करते हुए स्वामी दयानन्द ने इस प्रकार गायत्री के उपदेश से सहस्त्रों स्त्री-पुरुषों को धर्म का अमृत पलाकर उनका कल्याण कया।

67.

68. मह र्ष दयानन्द ने देश से अज्ञान, अन्ध वश्वास, कुरीतियां, परतन्त्रता, गोहत्या दूर करने, गोरक्षा का महत्व स्था पत करने, हिन्दी को अपनाने, वदेशी भाषाओं के अंधाधुन प्रयोग न करने सहित सामाजिक वषमा दूर करने, समाज सुधार व मानव जाति के हित के अनेकानेक कार्य कये और इनके लए अपना एक-एक पल व एक-एक श्वांस व्यतीत कया। उनके जैसा महापुरूष इतिहास के पृष्ठों पर दूसरा देखने को नहीं मलता जिसने देश व मानवता के हित के लए अपना सर्वस्व त्याग कया हो। उनका ब लदान तो महत्व पूर्ण है ही परन्तु हमें लगता है क उनका कार्य उनके ब लदान से भी अ धक महत्वूपर्ण है। उनके कार्य का कं चत परिचय देना ही आज के इस लेख का उद्देश्य है। आज के इस लेख में हमने मह र्ष दयानन्द भक्त श्री सन्तराम जी के ऋ ष जीवन से सहायता ली है। उनका आभार व्यक्त करते हैं। आशा है क पाठक इस लेख को पसन्द करेंगे।

69. –मनमोहन कुमार आर्य

70. पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

71. देहरादून-**248001**

72. फोनः**09412985121**

73. क्या यम-नियम का पालन करने वाले व धा र्मक सेवा कार्य में लगे हुए व्यक्ति को मुक्ति मलेगी?: आचार्य सोमदेव जी

74. FEBRUARY 23, 2016 LEAVE A COMMENT

75. जिज्ञासा-

76. क्या यम-नियम का पालन करने वाले व धा र्मक सेवा कार्य में लगे हुए व्यक्ति को मुक्ति मलेगी?

77. समाधान:-

78. मुक्ति के लए मनुष्य यम-नियम का पालन करते हुए धा र्मक कार्य करे, इससे उसके अच्छे संस्कार बनेंगे। मुक्ति के लए रास्ता तो खुलेगा, कन्तु केवल इतने मात्र से मुक्ति नहीं होगी। मुक्ति के लए मह र्ष ने कहा है, ''प वत्र कर्म, प वत्रोपासना और प वत्र ज्ञान ही से मुक्ति.......''। स.प्र. 9

79. यहाँ प्रमाण देने का तात्पर्य यह है क केवल यम-नियम अनुष्ठान और धा र्मक सेवाकार्य से मुक्ति नहीं होगी। इसका यह अर्थ कदा प नहीं है क धा र्मक सेवा कार्य आदि मुक्ति में बाधक हैं।

80. यम-नियम के अनुष्ठान और धा र्मक सेवा कार्य से व्यक्ति के अन्तःकरण में श्रेष्ठ संस्कार पड़ते हैं, जिससे व्यक्ति का उपासना में मन लगता है और उससे ज्ञान ग्रहण करने की योग्यता बढ़ती है। जैसा जिसका जितना शुद्ध ज्ञान होगा, वह वैसा उतना अपने अ वद्या के संस्कारों को नष्ट करेगा। जब पूर्ण रूप से अ वद्या के संस्कार नष्ट हो जाते हैं, तब मुक्ति की अवस्था आती है। मुक्ति न तो कर्म से होती और न ही उपासना से, मुक्ति तो ज्ञान से ही सभव है। मह र्ष क पल ने अपने शास्त्र में लखा- ''ज्ञानात् मुक्तिः।।'' जीवात्मा की मुक्ति ज्ञान से होती है। ''बन्धो वपर्ययात्।।'' अज्ञान से बन्धन होता है। ''नियतकारणत्वान्न समुच्चय वकल्पौ '' मुक्ति प्राप्ति में ज्ञान की नियतकारणता है, अनिवार्य कारणता है, अर्थात् मुक्ति प्राप्ति में ज्ञान ही निश्चित कारण है। इस लए न तो ज्ञानके साथ अन्य साधन मलकर मुक्ति देते हैं और न ही ऐसा है क ज्ञान से भी मुक्ति हो सकती है अथवा शुद्ध कर्म व उपासना से भी। मुक्ति के लए तो केवल ज्ञान ही साधन बनता है, अन्य नहीं।

81. इसका कोई यह अर्थ न निकाले क कर्म और उपासना की कोई महत्ता ही नहीं है, क्यों क मुक्ति के लए तो ज्ञान की ही आवश्यकता है। कर्म और उपासना का अपना महत्त्व है। शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना के करने से व्यक्ति के अन्दर सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। इस सात्विक स्थिति में ही व्यक्ति शुद्ध ज्ञान को ग्रहण करता चला जाता है। शुद्ध ज्ञान के होने पर अ वद्या के संस्कार ढीले होने लगते हैं। धीरे-धीरे शुद्ध ज्ञान से साधक अपने अ वद्यादि क्लेशों को पूर्ण रूप से नष्ट कर देता है। जब अ वद्यादि क्लेश पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं, तब साधकको मुक्ति सभव हो जाती है।

82. इस लए केवल यम-नियम का पालन करने अथवा धा र्मक सेवा कार्य करने से मुक्ति मल जायेगी-ऐसा नहीं है। यम-नियम का पालन और धा र्मक सेवा कार्य का अपना एक फल है और वह अच्छा ही फल होगा, कन्तु इनका फल मुक्ति नहीं है। ये सब करते हुए योगायास करें और ज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो जायें।

आवागमन पर पं. लेखराम जी के अनूठे तर्कः: राजेन्द्र जिज्ञासु

FEBRUARY 23, 2016 LEAVE A COMMENT

आवागमन पर पं. लेखराम जी के अनूठे तर्कः- अमरोहा से प्रका शत होने वाले साप्ताहिक आर्य सामाजिक -पत्र का एक अंक नजीबाबाद गुरुकुल में एक आर्य बन्धु ने दिखाया। उसमें पुनर्जन्म पर एक लेख का शीर्षक पढ़कर ऐसा लगा क मेरे कसी प्रेमी ने मेरे पुनर्जन्म वषयक (परोपकारी में छपे) तर्कों पर कुछ प्रश्न उठाये होंगे, परन्तु बात इससे उलटी ही निकली। वचारशील लेखक ने परोपकारी में दिये गये मेरे वचारों व तर्कों को उजागर करते हुए जोरदार लेख दिया। उस आर्य भाई को व सपादक जी को धन्यवाद!

उस लेख को पढ़ने से पूर्व ही मेरे मन में 'तड़प-झड़प' में पं. लेखराम जी का पुनर्जन्म वषयक मौ लक चन्तन व प्रबल युक्तियाँ देने का निश्चय था। हमारे मान्य आचार्य सत्यजित् जी तथा आदरणीय आचार्य सोमदेव जी पाठकों का शंका-समाधान करते हुए बड़े सुन्दर प्रमाण व तर्क देते रहते हैं। उनका परिश्रम वन्दनीय है। उनसे भी वनती की है क हमें अपने पुराने दार्शनिक वद्वानों यथा- पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त जी, पूज्य दर्शनानन्द जी, श्रद्धेय देहलवी जी के तर्क उनका नामोल्लेख करके देने चाहिये।

पं. लेखराम जी का पुनर्जन्म वषयक ग्रन्थ पढ़कर अनेक सुपठित हिन्दू युवक, जो ईसाइयों, मुसलमानों व ब्राह्म समाजियों के घातक प्रचार से भ्र मत तथा धर्मच्युत हो रहे थे, निष्ठावान् आर्य बन गये। कस- कसका नाम यहाँ दूँ? डी.ए.वी. के पूर्व प्राचार्य बशी रामरत्न, महात्मा वष्णुदास जी लताला वाले (स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्य बनाने वाले) ला. देवीचन्द जी एम. ए. इत्यादि सब पं. लेखराम जी को पढ़-सुनकर आर्य समाज से जुड़े।

1. **1**. पं. लेखराम जी का तर्क है क पुराने भवन ढहते जाते हैं, नये-नये भवनों का निर्माण होता रहता है। सब नये-नये भवन इसी धरती पर वद्यमान पहले के ईंट, पत्थर, मट्टी व गारे से ही बनाये जाते हैं। नई सामग्री कहीं से नहीं आती।
2. **2**. सब नदियाँ जो बह रही हैं, उनका जल कहाँ से आता है? सब जानते हैं, यह वही जल है, जो पहले सागर में गया था। वर्षा का जल, नदियों का जल कहीं परलोक से, अभाव से तो आता नहीं।
3. **3**. जितने पेड़, पौधे, वृक्ष उग रहे हैं, फल-फूल रहे हैं, ये सब धरती पर वद्यमान पहले की सामग्री से ही उपजते व फूलते-फलते हैं। अभाव से भाव यहाँ भी नहीं होता और न ही परलोक से इनके बीज आदि आते हैं।
4. **4**. सब प्रा णयों के शरीर धरती पर वद्यमान सामग्री से (अन्न, जल आदि) से नि र्मत व वक सत होते हैं। कहीं से नई-नई सामग्री नहीं आती। जब लाखों-करोड़ों शरीर उसी सामग्री

से बनते हैं, जिससे पहले के शरीर बनते रहे हैं, इससे स्पष्ट है क इस धरा पर नये-नये जीव भी उत्पन्न नहीं होते। जीवात्मायें भी वही हैं, जो इससे पूर्व कसी शरीर का परित्याग कर चुकी हैं। जैसे प्रकृति अनादि है, नई पैदा नहीं होती है, इसी प्रकार परमात्मा नये-नये जीव गढ़-गढ़ कर इस धरती पर नहीं भेजता। जैसे प्रकृति नई-नई नहीं पैदा होती, वैसे ही जीवात्मा भी वही-वही आते-जाते रहते हैं।

Logic's on rebirth by Pandit lekrham Ji

वेद में पशु हत्या निषेध, पशु रक्षा का वधान और मांसाहार

FEBRUARY 20, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

'वेद में पशु हत्या निषेध, पशु रक्षा का वधान और मांसाहार'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

अनेक अज्ञानी व स्वार्थी लोग बिना प्रमाणों के प्राचीन आर्यों पर मांसाहार का मथ्या आरोप लगाते हैं। वह स्वयं मांसाहार करते हैं अतः समझते हैं क इस आरोप को लगाकार उनका मांसाहार करना उ चत ठहरा दिया जायेगा और कम से कम वेदों के मानने वाले आर्य तो उनका वरोध नहीं कर सकेंगे। ईश्वर ने ही मनुष्यों सहित सभी प्रा णयों व वनस्पति जगत को भी बनाया है। यदि ईश्वर के लए मनुष्यों को पशुओं के मांस का आहार कराना ही अ भप्रेत होता तो फर वह नाना प्रकार की खाद्यान्न की श्रेणी में परिग णत वनस्पतियां, अन्न, साग व सब्जियों को शायद उत्पन्न ही न करता और पशुओं की संख्या को इतना बढ़ा देता क मनुष्य केवल मांसाहार कर ही अपना जीवन व्यतीत करते। ईश्वर को ऐसा अभीष्ट नहीं था अतः उन्होंने कसी वशेष प्रयोजन के लए पशुओं को बनाया और मनुयों के आहार के लए पृथक से नाना प्रकार की वनस्पतियों एवं शाकाहार के अन्तर्गत आने वाले अनेकानेक अन्न, फल, साग-सब्जियां और गोदुग्ध आदि पदार्थों को बनाया है। हमें नहीं लगता क संसार में कोई मांसाहारी ऐसा हो सकता है जो केवल मांस ही खाता हो तथा अन्न, फल, गोदुग्ध आदि पदार्थों का सेवन न करता हो। इस उदाहरण से अन्न, फल व गोदुग्धादि पदार्थ तो मनुष्यों का भोजन सद्ध होते हैं परन्तु मांस मनुष्य का भोजन सद्ध नहीं होता।

पशुओं व मनुष्यों मांस क्यों नहीं खाना चाहिये? इस लए नहीं खाना चाहिये क्यों क मांस हिंसा से प्राप्त होता है और निर्दोष प्रा णयों की हिंसा करना मनुष्य के स्वभाव के वरुद्ध है। मनुष्य के स्वभाव में ईश्वर ने दया, करूणा, प्रेम, स्नेह, ममता, संवेदना, सहिष्णुता आदि अनेक गुणों को उत्पन्न कया है व स्वभाव इसमें सनातन से हैं। मांसाहार करने से इन मानवीय गुणों का न्यूना धक हनन होता है, अतः मांसाहार वर्जित व त्याज्य है। मांसाहार का आरम्भ कसी पशु को प्राप्त करना, कसी छुरे व तलवार आदि से उसका वध करना, उसके शरीर के एक-एक अंग प्रत्यंग को काटना, उसे रसोईघर में तेल, घृत, मसालों आदि में भूनना व उसका

गेहूं आदि की रोटी, चावल व दही आदि मलाकर सेवन करना होता है। स्वाभा वक है क इतने पदार्थों के संयोग से जो पदार्थ बनेगा उसका अपना स्वाद होगा। कईयों को वह प्रय हो सकता है और बहुतों को अ प्रय। हमने देखा है क पहली बार जो व्यक्ति जाने व अनजाने मांसाहार करता है उसका शरीर उसको स्वीकार नहीं करता और वह उसे उगल देता है या उल्टी कर देता है। यह प्रकृति का वा ईश्वर का सन्देश होता है क यह पदार्थ खाने योग्य नहीं है। बहुत से लोग मांसाहारियों की संगति में रहते हैं जिससे उन्हें यह दोष लग जाता है। ईश्वर एक, दो, तीन बार तो उसको उलटी आदि कराकर रोकता है परन्तु जब वह नहीं मानता तो ईश्वर भी उसे अपराधी मानकर उसका जीवन पूरा होने की प्रतीक्षा करता है जिससे उसे मृत्यु होने के बाद उसके अगले पुनर्जन्म में इन अमानवीय कार्यों के अनुरूप दण्ड दे सके। हमें लगता है क बहुत से मनुष्य पुनर्जन्म पाकर पशु बनते होंगे जिनका मांस दूसरे मनुष्य व पशु आदि खाते होंगे। अतः मांसाहार का सर्वथा त्याग ही मनुष्य को सुखी, स्वस्थ, दीर्घायु बनाता है। शाकाहारी मनुष्यों में मांसाहारी मनुष्यों की तुलना में बल, शारीरिक सामर्थ्य, बौद् धक व आत्मिक क्षमता, साहस, निर्भयता, सेवा, परोपकार व धर्म-कर्म की भावना अ धक होती है जिसे प्रमाणों व उदाहरणों से सद् ध कया जा सकता है।

वेद संसार के सभी मनुष्यों का आदि ग्रन्थ है जिसमें धर्म व कर्म अर्थात् कर्तव्य, अकर्तव्य का व ध व निषेधात्मक ज्ञान है। वदे शयों ने अपने मांसाहार का दोष छिपाने वा अपनी बौद् धक अक्षमता के कारण यह आरोप लगाया क सृष्टि की आदि में हमारे पूर्वज आर्य व ऋ षगण पत्थरों के ह थयार बनाकर पशुवध कर मांसाहार कया करते हैं। यह बात सर्वथा अनु चत व मथ्या है। सृष्टि के आदि काल में हमारे व समस्त मानवजाति के पूर्वज फल, कन्द, मूल व गोदुग्धादि का आहार व भोजन कया करते थे। चारों वेदों के एक मन्त्र में भी मांसाहार करने का संकेत नहीं है अ पतु पशुओं की रक्षा करने का वधान है जो स्पष्ट रूप से घोषणा करता है क यजमान के पशु गाय, घोड़ा, बकरी, भेड़ आदि अवध्य=हत्या न करने व न मारने योग्य है जिनकी आर्यों व सभी मनुष्यों को अपने सुख व कल्याण के लए रक्षा करनी है। इसका एक ठोस प्रमाण यह है क हिरण सहित जितने भी शाकाहारी पशु हैं यह जंगल में शेर आदि हिंसक पशुओं को देख कर भाग जाते हैं। इन्हें ईश्वर ने गन्ध के आधार पर यह समझ प्रदान की हुई है क कौन सा प्राणी हिंसक है और कौन अहिंसक, कौन इनका घातक है और कौन इनका रक्षक। इन शाकाहारी पशुओं के सम्मुख जब भी कोई हिंसक पशु, शेर, चीता आदि आते हैं तो यह दूर से ही उनके आने व होने की गन्ध को भांप कर भाग खड़े होते हैं परन्तु मनुष्य को देखकर यह दूर भागने के स्थान पर उसके पास आकर उससे अपना प्रेम प्रद र्शत करते हैं। इससे सद् ध होता है क मनुष्य शाकाहारी प्राणी है, मांसाहारी नहीं है तथा इसी कारण पशु मनुष्यों से डरते नहीं, दूर भागते नहीं व उसके समीप प्रसन्नता से आते हैं। अतः मनुष्यों द्वारा भोजन के लए पशुओं की हत्या करना उसके ईश्वर व प्रकृति प्रदत्त स्वभाव व गुण के वरुद् ध होने से सर्वथा निन्दनीय है।

वेदों ने पशुओं की रक्षा व मांसाहार वषयक क्या वचार हैं, इसका संक्षेप में अवलोकन करते हैं। यजुर्वेद के 40/7 मन्त्र 'यस्मिनित्सर्वाणी भूतान्यात्मैवाभूद् वजानतः। तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।।' में कहा गया है क जो व्यक्ति सम्पूर्ण प्रा णयों को केवल अपने जैसी

आत्माओं के रूप में ही देखता है (स्त्री, पुरुष, बच्चे, गौ, हरिण, मोर, चीते तथा सांप आदि के रूप में नहीं) उसे उनको देखने पर मोह अथवा शोक (ग्लानि वा घृणा) नहीं होता, क्यों क उन सब प्रा णयों के साथ वह एकत्व (समानता तथा साम्यता) का अनुभव करता है। इस मन्त्र में यह सन्देह दिया गया है शोक व मोह से बचने के लए मनुष्य को सभी प्रा णयों को अपनी आत्मा के समान व रूप में ही देखना चाहिये। इससे वह शोक व मोह से बच सकते हैं। आर्यजगत के वद्वान श्री पं. सत्यानन्द शास्त्री अपनी प्र सद्ध पुस्तक 'क्या प्राचीन आर्य–लोग मांसाहारी थे?' में लखते हैं क जो लोग आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म तथा एकत्व (समानता=साम्यता) के सद्धान्तों में वश्वास रखते थे (जैसा क आर्यों को समझा जाता है), वे अपने क्ष णक स्वाद की तृप्ति अथवा भूखे पेट की पूर्ति के लये उन पशुओं को कैसे मार सकते थे जिनमें उन्हें अपने ही पूर्वजन्मों के प्रयजनों की आत्माओं के दर्शन होते थे? वास्तव में ऐसा कभी नहीं हो सकता। यजुर्वेद मन्त्र 36/18 में कहा गया है क ' मत्रस्य मा चक्षुषा सर्वा ण भूतानि समीक्षन्ताम्। मत्रस्याहं चक्षुषा सर्वा ण भूतानि समीक्षे।' इस मन्त्र का अ भप्राय है क मुझे सब प्राणी अपना मत्र समझें तथा मैं भी उनसे अपने मत्रों जैसा व्यवहार करूं। हे परमात्मा ! कुछ ऐसी व ध मलाओं क हम सब प्राणी एक दूसरे से सच्चे मत्रों जैसा व्यवहार करें। प्राचीन आर्य लोग 'प्राणीमात्र के लये अथाह मैत्री' के उपर्युक्त वैदिक सद्धान्त में न केवल आस्था ही रखते थे, अ पतु इसे ईश्वर प्रदत्त धर्म का अंग जानकर अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न भी करते थे। उन आर्यों के सम्बन्ध में यह धारणा रखना क वे अपनी जैह्विक लालसा की क्ष णक तृप्ति के लये उन प्रा णयों का, जिन्हें वे मत्रतुल्य प्रय जानते थे, वध करते थे, अनर्गल नहीं तो और क्या है।

प्राणीमात्र के लये अथाह मैत्री के इस वैदिक सद्धान्त का पारिणााम यह निकला क समाज में दोपायों (मनुष्यों) और चैपायों की हिंसा पूर्ण रूपेण नि षद्ध कर दी गई। यजुर्वेद मानव के प्रति अहिंसाभाव का कठोर आदेश देते हुए कहता है क '...... मा हिंसीः पुरुषम् ...' (यजुर्वेद 16/3) अर्थात् पुरुष कसी भी प्राणी की हिंसा न करे। यजुर्वेद पशुओं के मारे जाने पर कठोर प्रतिबन्ध लगाता है। वह कहता है क 'मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः' (यजुर्वेद मन्त्र 12/32) तथा 'इमं मा हिंसीद् वपाद पशुम् ...' (यजुर्वेद 13/47)। इसी प्रकार यजुर्वेद में गोवध का निषेध कया गया है क्यों क मानव जाति के लये गौ शक्तिवर्द्धक घी प्रदान करती है। '... गां मा हिंसीरदितिं वराजम्' (यजुर्वेद 13/43 एवं '..... घृतं दुहानार्मादति जनाय .... मा हिंसीः'। (यजुर्वेद 13/49)। इसी प्रकार से अश्व, बकरी व भेड़ आदि पशुओं का वध न करने के प्रति भी वेद में अनेक आज्ञायें उपलब्ध हैं। इससे सद्ध हो जाता है क समस्त वैदिक साहित्य के प्रतिनि ध वेद पशुओं की हिंसा के सर्वथा वरोधी हैं, मांसाहार का तो प्रश्न ही नहीं होता। आर्य वद्वानों ने वेदों में पशुहत्या व मांसाहार पर अनेक ग्रन्थ लखकर शास्त्रीय उदाहरण, युक्ति, तर्क आदि देकर वेदों में इनका वधान होने का प्रतिवाद कया है। आर्य संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने भी स्वास्थ्य के शत्रु अण्डे व मांस पुस्तक लखकर इन पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के हानिकारक सद्ध कया है। एक वश्व प्र सद्ध साहित्यकार बर्नाडशा के जीवन की एक घटना का उललेख कर हम इस लेख को वराम देंगे। बर्नाडशा को डाक्टरों ने मांस-सेवन की सम्मति दी थी जिसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था–"My situation is a solemn one. Life is offered to me on condition of eating beef steaks. But death is better than cannibalism. My will contains directions for my funeral, which will be followed not by mourning coaches, but by oxen, sheep, flocks of poultry and a small travelling aquarium of live fish, all wearing white scarfs in honour of the man who perished rather than eat his

fellow creatures. It will be with the exception of Noah's ark, the most remarkable thing of the kind seen." अर्थात् ''मेरी स्थिति गम्भीर है। मुझे कहा जाता है क गो-मांस खाओ तुम जी वत रहोगे। इस राक्षसपन की अपेक्षा मृत्यु अ धक उत्तम है। मैंने अपनी वसीयत लख दी है। मेरी मृत्यु पर मेरी अरथी के साथ वलाप करती गा ड़यों की आवश्यकता नहीं है। मेरे साथ बैल, भेड़ें, मुर्गे और जी वत मछ लयों का एक चलता- फरता घर होगा। इन सभी पशु और प क्षयों के गले में सफेद दुपट्टे होंगे, उस मनुष्य के सम्मान में जिसने अपने साथी प्रा णयों को खाने की अपेक्षा मरना उत्तम समझा। हजरत नूह की नौका को छोड़कर यह दृश्य सबसे अ धक उत्तम और महत्वपूर्ण होगा।"

लेख की समाप्ती पर निवेदन है क वेदों व प्रमा णक वैदिक साहित्य में मांसाहार का वधान नहीं है। यदि कहीं ऐसी प्रतीती होती है तो यह इंटरप्रीटेशन व मलावट के कारण हो सकती है। मानवीय आधार पर भी पशु हत्या और मांसाहार दू षत व पाप कर्म है। इसका करना इस जीवन को कुछ समय के लए स्वादयुक्त बना सकता है परन्तु मृत्यु के बाद के जन्मों में मांसाहारी मनुष्य को पशु बनाकर इस अपकार का बदला ईश्वर के द्वारा अवश्य चुकाया जायेगा। कोई इससे बच नहीं सकेगा। ईश्वर कसी की दलील भी नहीं सुनता क्यों क वह मनुष्य के मन व आत्मा के वचारों व उसकी सभी क्रयाओं का साक्षी होने के साथ कसी बात व घटना को भूलने की प्रवृ त्त से रहित है। अतः सभी मनुष्य को मांसाहार के घृ णत कार्य से स्वयं को दूर रखना चाहिये। यदि नहीं रख सकते तो ईश्वर की दण्ड व्यवस्था की प्रतीक्षा करें और जैसी करनी वैसी भरनी के सद्धान्त के अनुसार अपने कर्मों का भोग करें।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

ईश्वर का अवतार होना सत्य वैदिक सद्धान्तों के वरुद्ध है।

FEBRUARY 14, 2016 5 COMMENTS

ओ३म्

'ईश्वर का अवतार होना सत्य वैदिक सद्धान्तों के वरुद्ध है।'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महाभारत काल के बाद भारत में ज्ञान का लोप होने से अन्धकार फैला। ऐसे ही समय में वेद व वैदिक साहित्य से अनेक प्रसंगों में अज्ञान व कल्पनाओं का मश्रण कर संस्कृत व काव्य

रचने में प्रवीण वद्वानों ने पुराणों आदि ग्रन्थों की रचना की। ऐसे ही समय में, देश, काल व परिस्थितियों व बौद्ध-जैन मत के प्रभाव के कारण, ईश्वर के अवतार की भी कल्पना की गई जो आज भी प्रच लत है। अवतार सृष्टि की रचना व पालन करने वाले अजन्मा, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईश्वर के मनुष्य जन्म लेने को कहा जाता है। महाभारत काल के बाद जिन लोगों ने ईश्वर के अवतार लेने की कल्पना की है, वह ईश्वर को पूर्णतया जानते ही नहीं थे और न हि वह पूर्णतः निष्कपट व स्वार्थहीन थे, ऐसा आभास मलता है। यदि वह वेदों को जानते होते तो उन्हें ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान अवश्य होता और वह अवतारवाद की अज्ञानपूर्ण व मथ्या कल्पना न करते। अवतार पर चर्चा करने से पूर्व ईश्वर के वैदिक व यथार्थ स्चरूप को जानना आवश्यक है। ईश्वर सत्य, चत्त व आनन्दस्वरूप, अनादि, अजन्मा, शरीर-नस-नाड़ी-बन्धन-से-रहित, नित्य, अनन्त, अमर, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय और सृष्टि का रचयिता है। हर कार्य का कारण होता है। ईश्वर का यदि अवतार मानेंगे तो उसका स्वीकार्य कारण भी बताना ही होगा। अवतारवाद मानने वालों के पास ऐसा कोई ठोस कारण नहीं है जिससे ईश्वर के अवतार लेने का प्रयोजन सद्ध हो सके। अवतारवाद के पोषक कहते हैं क दुष्टों का दमन व हनन करने के लए ईश्वर मनुष्य का जन्म लेता है। यह कथन हास्यापद ही लगता है। यह इस लए क जो ईश्वर अपनी अनन्त सामथ्र्य से निराकार रूप से इस सृष्टि व जड़-जंगम जगत का निर्माण करता है, क्या वह अपने द्वारा उत्पन्न रावण व कंस जैसे क्षुद्र प्रा णयों को अपने अनन्त बल व शक्ति से धराशायी व नष्ट नहीं कर सकता? यदि श्री रामचन्द्र जी का जन्म रावण को मारने के लए ही हुआ था तो वह युवावस्था में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न होकर सीधे रावण के पास जाकर उसका वध कर देते और वहां के सभी धा र्मक लोगों को उपदेश देते क मैंने रावण को इसके दुष्ट स्वभाव के कारण मारा है क्यों क मैं स्वयं भी सर्वव्यापक रूप से ऐसा नहीं कर सकता था और न हि संसार का कोई मनुष्य ऐसा कर सकता था। ईश्वर या रामचन्द्र जी ने ऐसा नहीं कया और न रामायण के रचयिता वाल्मी क जी ने ऐसा लखा है, अतः यह मान्यता वाल्मी क, ईश्वर व रामचन्द्रजी की नहीं है। देश काल व परिस्थितियों के अनुसार ही यह सब कार्य हुए हैं जैसे क आजकल वश्व धरातल पर यत्र तत्र हो रहे हैं। श्री रामचन्द्र जी एक राज परिवार में जन्में होने से एक राजा था। वैदिक राजा का दायित्व होता है क वह वेद धर्म के अनुयायियों, ऋ ष, मुनियों व वद्वानों की आतं कयों व दुष्टों से रक्षा करे। श्री रामचन्द्र जी ने वैदिक राजा होने का अपना कर्तव्य निभाया। रावण क्यों क अपने बुरे कार्यों को करता रहा, उसने छोड़ा नहीं, अतः परिस्थितियों के अनुसार ही उसका वध हुआ। यह सारा वर्णन वाल्मी क रामायण में उपलब्ध है। वाल्मी क जी श्री रामचन्द्र जी को अवतार नहीं मानते थे। यह मान्यता तो वगत दो से ढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व ही प्रच लत हुई है। यही स्थिति महाभारत में श्री कृष्ण जी की है। एक सर्वव्यापक व निराकार सत्ता जो असंख्य जीवों को मनष्यादि जन्म देती है और उनका नियमन करती है, अब भी कर रही है, वह कसी एक जीवात्माधारी मनुष्य को मारने के लए यदि स्वयं मनुष्य का जन्म लेती है, यह वजय नहीं पराजय है व युक्ति-तर्क से सद्ध नहीं होती। यदि श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर मान भी लें तो सर्वशक्तिमान होने के कारण उन्हें न तो सुग्रीव, न हनुमान, न अंगद न अन्य महावीरों की आवश्यकता पड़ती। भारत व वश्व में केवल रावण और कंस दो ही कूरर शासक नहीं हुए अ पतु इन, इनके जैसे व इनसे भी अ धक क्रूर अमानुष शासक हुए हैं। परन्तु अवतार केवल दो ही महापुरूषों को माना जाता है। इससे भी अवतारवाद का सद्धान्त अप्रमा णक सद्ध होता है। क्या महाभारतकाल के बाद औरंगजेब व उससे पूर्व व पश्चात के मानवीयता के

शत्रुओं के हनन के लए ईश्वर के अवतार की आवश्यकता नहीं थी? यदि थी तो ईश्वर का अवतार क्यों नहीं हुआ? ऐसे अमानुषों को ईश्वर ने अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से ही उनकी जीवन ज्योति को बुझा दिया, यह सर्वज्ञात व सद्ध है। अतः अतवारवाद प्रमाणों के अभाव में सत्य सद्ध नहीं होता।

हमारे देश में और वह भी केवल हिन्दुओं में ही अवातारवाद का सद्धान्त पाया जाता है जिसका प्राचीन साहित्य वेद व वैदिक साहित्य में कहीं कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। हमें भी अपने पौरा णक परिवारों में बाल्यकाल से ही बताया गया क मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी और योगेश्वर श्री कृष्ण जी ईश्वर थे। बचपन में जो बताया जाता है उस पर स्वतः वश्वास हो जाता है। युवावस्था में हम वेद व वैदिक साहित्य के सम्पर्क में आये और हमने मह र्ष दयानन्द के वचारों को पढ़ा, समझा व जाना तथा अनेक वद्वानों के उपदेश व ग्रन्थों को पढ़ा तो इस वषयक पूर्व का हमारा वश्वास अन्ध वश्वास सद्ध हुआ। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वदेशी है अतः वह सकुड़ कर एक अत्यन्त सी मत आकर का एकदेशी पदार्थ नहीं बन सकता। यदि बनेगा तो वह ईश्वर नहीं जीवात्मा ही होगा। मह र्ष दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में ईश्वर वषयक प्रश्न करते हुए बताया है क ईश्वर सर्वशक्तिमान है तो क्या वह दूसरा ईश्वर बना सकता है? क्या वह स्वयं को नष्ट कर सकता? इसका उत्तर देते हुए मह र्ष दयानन्द जी कहते हैं क सर्वशक्तिमान का अर्थ यह है क वह अपने सभी कार्य अपने-आप, अकेले, बिना कसी अन्य की सहायता आदि के कर सकता है परन्तु वह सत्य व सत्य नियमों के वरुद्ध न कोई कार्य करता है और न कर सकता है। ईश्वर न तो दूसरा ईश्वर ही बना सकता है और न स्वयं को नष्ट ही कर सकता है। इसी प्रकार से वह सदैव ही अपने सत्यस्वरूप सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजन्मा, नित्य, अनुत्पन्न, अ वनाशी, अमर, अजर आदि स्वरूप में वद्यमान रहता है। अवतार लेना उसके स्वरूप, स्वभाव व सामर्थ्य में नहीं है और न सम्भव है। अतः वह कभी अवतार नहीं लेता। यदि ऐसा होता तो महाभारत काल के बाद उत्पन्न अल्प व स्वार्थ बुद् ध वालों से कहीं अ धक वद्वान, ज्ञानी, ईश्वर के साक्षात्कर्ता ऋ ष व योगी महाभारत व उससे पूर्व काल र चत अपने वैदिक साहित्य में अवतारवाद का वर्णन अवश्य करते। लगभग साढ़े दस हजार मन्त्रों वाले चार वेदों में भी इसका कहीं न कहीं उल्लेख अवश्य होता। और नहीं तो ईश्वर साक्षात्कार करने के ज्ञान के लए रचे गये योगदर्शन जिसमें ईश्वर प्राप्ति वषयक सभी साधनों का युक्ति व तर्कसंगत सत्यज्ञान प्रस्तुत कया गया है, ईश्वर के अवतार का भी अवश्य उल्लेख कया जाता। क्यों क यह मथ्या ज्ञान है, इसी कारण न वेद, न उपनिषद और न दर्शन आदि प्राचीन वैदिक ग्रन्थों और न हि ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाले योगदर्शन के प्रणेता मह र्ष पतंज ल ने इसका उल्लेख कया। वैदिक ज्ञान, युक्ति व तर्क के आधार पर केवल यही कहा जा सकता है क मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व योगेश्वर श्री कृष्ण जी आदि जो ऐतिहासक युगपुरूष हुए हैं वह ईश्वर के अवतार न होकर अपने समय के महापुरूष, युगपुरूष, महामानव, महात्मा, दिव्य व श्रेष्ठ पुरूष थे। गीता में स्वयं योगेश्वर कृष्ण जी कहते हैं क 'जातस्य हि धुरवो मृत्यु धुरवं जन्म मृत्यस्य च' अर्थात् जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु और जिसकी मृत्यु होती है उसका जन्म निश्चित होता है। इस आधार पर जन्म लेना व मृत्यु को प्राप्त होना और फर जन्म लेना यह कार्य केवल जीवात्मा का होता है परमात्मा का नहीं। श्री कृष्ण जी का माता देवकी व पता श्री वसुदेव जी से जन्म हुआ, भगवान (ऐश्वर्यवान) श्री रामचन्द्र जी का भी

माता कौशल्या और पता दशरथ से जन्म हुआ था और इनकी मनुष्यों की ही तरह एक सौ व एक सौ पचास वर्ष की आयु में मृत्यु होने से यह सृष्टि को रचने व चलाने वाले परमात्मा न होकर एक श्रेष्ठ व परमश्रेष्ठ जीवात्मा ही सद्ध होते हैं। ऐसे ही अन्य अवतार माने जाने वाले ऐतिहासक महापुरूषों व दे वयों के बारे में कहा जा सकता है।

वैदिक सनातन धर्मी भाग्यशाली हैं क इन्हें सृष्टि संवत् का ज्ञान है। इस समय यह सृष्टिसंवत एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ सोलह वर्ष चल रहा है। लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत से पूर्व का हमारा इतिहास व इतर वैदिक साहित्य अनेक कारणों से सुर क्षत नहीं रखा जा सका। इस काल में श्री राम व श्री कृष्ण जी के समान सहस्रों महान दिव्य वभूतियों ने जन्म लया होगा जिनके शुभ कर्मों को जानकर उनकी पूजा व अनुसरण कया जा सकता था परन्तु उन पर रामायण व महाभारत समान ग्रन्थ वलुप्त होने के कारण ऐसा नहीं कर पा रहे हैं। सौभाग्य से हमें श्री राम व श्री कृष्ण जी, मह र्ष दयानन्द आदि के सत्य इतिहास वाल्मी क रामायण, मह र्ष वेदव्यास कृत महाभारत व इतर ग्रन्थों से उपलब्ध होते हैं। अपनी ववेक बुद् ध से इन ग्रन्थों में मथ्या प्रक्षेपों को छोड़कर हम इन महापुरूषों के सत्य इतिहास को जानकर इनके अनुसार आचरण कर व वैदिक ग्रन्थों के प्रमाणों के अनुसार कर्मकाण्ड व योगयुक्त जीवन व्यतीत कर अपने मानव जीवन को सफल सद्ध कर सकते हैं। ऐसा करके ही हमारा जीवन श्रेष्ठ बनेगा व सफल होगा, देश भी संगठित सशक्त हो सकता है और वश्व का कल्याण भी इससे हो सकता है।

ईश्वर ईश्वर है जिसका कभी जन्म वा अवतार नहीं होता। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु और पुनर्जन्म अवश्य होता है और वह मनुष्य वा जीवात्मा ही होता है। श्री राम व श्री कृष्ण सहित मह र्ष दयानन्द हमारे आदर्श महापुरूष हैं। वैदिक शक्षाओं सहित इन महापुरूषों के जीवनों की सत्य शक्षाओं का आचरण व अनुकरण कर ही हम अपने जीवन को सही अर्थों में उन्नत व सफल कर सकते हैं। सत्य का आचरण व मथ्या का त्याग ही मनुष्य जीवन की उन्नति का कारण हुआ करता है, इसके वपरीत आचरण मनुष्य की इस जन्म व परजन्म में अवनति ही करता है, यह सुनश्चित वैदिक सद्धान्त है। हम आशा करते हैं क इस लेख से पाठकों पर ईश्वर व महापुरूषों वा महान आत्माओं का भेद स्पष्ट हो सकेगा।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

पं. दीनदयाल जी को कहना पड़ाः- प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

JANUARY 30, 2016 LEAVE A COMMENT

पं. दीनदयाल जी को कहना पड़ाः-

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक त्यागी, तपस्वी व सरल नेता थे। उन जैसा राजनेता अब कसी दल में नहीं दिखता। वह जनसंघ के मन्त्री के रूप में जगन्नाथपुरी गये। वहाँ के मन्दिर में दर्शन करने पहुँचे तो पुजारियों ने चप्पे-चप्पे पर यहाँ पैसे चढ़ाओ, यहाँ भेंट धरो, इसका यह फल और बड़ा पुण्य मलेगा आदि कहना शुरू कया। जब दीनदयाल जी से बाहर आने पर पत्रकारों ने मन्दिर की इस यात्रा व भव्यता के बारे में प्रश्न पूछे तो आपका उत्तर था, ''जब मैं मन्दिर में प्र वष्ट हुआ तब पक्का सनातन धर्मी था, अब बाहर निकलने पर मैं कट्टर आर्यसमाजी हूँ।'' उनका यह वक्तव्य तब पत्रों में छपा था, जिसे उनके नाम लेवा अब छिपा चुके हैं, पचा चुके हैं। हिन्दू समाज के महारोगों की औष ध केवल दीनदयाल जी की यह स्वस्थ सोच है। दुर्भाग्य से हिन्दू अपने रोगों को रोग ही नहीं मानता।

अंध वश्वास पर चुप्पी क्यों?-राजेन्द्र जिज्ञासु

JANUARY 26, 2016 LEAVE A COMMENT

अंध वश्वास पर चुप्पी क्यों?ः-

मन्त्रिमण्डल ने 15 सतबर 1948 को हैदराबाद में पु लस कार्यवाही का निर्णय लया था। सरदार पटेल ने 13 को सेना को अपना कार्य करने का आदेश दिया। उस समय का अंग्रेज सेनापति 15 को ही सेना भेजने पर अड़ा रहा। जब सरदार अपने निश्चय पर अ डग रहे तो गोरे सेनापति ने हिन्दुओं के अंध वश्वास का मजाईल चलाकर सरदार का मनोबल गराने की चाल चली। उसने कहा, ''13 का अंक अशुभ होता है।'' लौह पुरुष पटेल बोले, ''तुहारे लए होगा। मेरे लए नहीं। मैं गुजराती हूँ। गुजरात में 13 का अंक शुभ माना जाता है''। सेना ने उसी दिन हैदराबाद को चारों ओर से घेरकर अपना कार्य आरभ कर दिया। यह घटना सरदार के रियासती वभाग के स चव श्री मेनन ने अपने ग्रन्थ में दी है।

अब प्रातः से सायं तक टी.वी. पर कई बाबे, कई तिलकधारी ज्योतिषी, काले कुत्ते व शुभ अंकों वाले अंध वश्वास परोसते रहते हैं। हिन्दू-हिन्दू की रट लगाने वाले नेता, प्रवक्ता, साक्षी महाराज की बयान मण्डली हिन्दुओं के अंध वश्वासों पर चुप्पी साधे रहते हैं। सब दलों के नेता तन्त्र-मन्त्र में वश्वास करते हैं। ये अंध वश्वास देश को डुबोने वाले हैं।

'ईश्वर का ध्यान व उपासना तथा मूर्तिपूजा' - मनमोहन कुमार आर्य

JANUARY 26, 2016 1 COMMENT

ईश्वर व मनुष्य में क्या अन्तर है? यह प्रश्न आपको अनुपयुक्त सा लग सकता है परन्तु प्रश्न तो प्रश्न है। हम इसका उत्तर देने का प्रयास करते हैं। ईश्वर वह है जो जीवात्माओं के सुख व दुःखों के भोग के लए सत्व, रज व तम गुण से युक्त सूक्ष्म जड़ प्रकृति के द्वारा इस दृश्यमान सृष्टि को बनाता है। ईश्वर ने यह सृष्टि अल्पज्ञ, एकदेशी, चेतन जीवात्माओं के लए बनाई है। उसका अपना क्या कोई प्रयोजन इस सृष्टि को इस सृष्टि के बनाने व चलाने में दृष्टिगोचर नहीं होता। एक और प्रश्न लेते हैं क जीवात्मा क्या है? इसका उत्तर बनाने में है? वैदिक साहित्य सहित युक्ति व तर्क द्वारा वचार करने पर ईश्वर का अपना निजी कोई प्रयोजन है जीवात्मा एक ज्ञान ग्रहण करने व कर्म करने वाली अल्पज्ञ, सूक्ष्म, एकदेशी व ससीम चेतन सत्ता का नाम है। इस जीवात्मा के सुख व मुक्ति के लए ही ईश्वर ने अपने ज्ञान व बल की पराकाष्ठा, सर्वज्ञता व सर्वशक्तिमत्ता, से इस सृष्टि को बनाया है जिससे सभी जीवात्मायें अपने अपने पूर्वजन्मों के शुभाशुभ कर्मों के फलों का भोग कर सके। हमने वैदिक व अन्य मतों के सद्धान्तों को जानने व समझने का प्रयास कया है। अनेक दशकों के अध्ययन व युक्ति व तर्क के आधार पर मह र्ष दयानन्द द्वारा प्रचारित वैदिक साहित्य से पुष्ट यह उत्तर सत्य व अकाट्य सद्धान्त है। इन्हीं सद्धान्तों पर वैदिक वचारधारा आधारित हैं।

जीवात्मा के स्वरुप का वचार करने पर यह एक सूक्ष्म, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ चेतन पदार्थ वदित होता है जो ज्ञान व कर्म की सामथ्र्य से युक्त अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, मनुष्यादि योनियों में जन्म लेकर शुभाशुभ कर्म करने वाला व उनके फलों को भोगने वाला हैं। जीवात्मा में यह सामर्थ्य नहीं है क वह अपनी इच्छा से कसी योनि में बिना ईश्वर की सहायता व कृपा के स्वयं जन्म ले सके। जीवात्मा के दो जीवनों के बीच एक मृत्यु अवश्य आती है। मृत्यु होने के बाद व जन्म लेने से पूर्व यह प्रायः सुषुप्ति अवस्था अर्थात् निद्रा जैसी निष्क्रिय अवस्था में रहता है। यदि ईश्वर इसको इसके कर्मानुसार जन्म न दे तो इसका अस्तित्व होकर भी यह अनुपयोगी वा निष्क्रिय ही रहेगा। ईश्वर द्वारा जन्म मल जाने पर यह मनुष्यादि योनियों में कर्मों को करता भी है व पूर्वकृत प्रारब्ध व क्रयमाण कर्मों के फलों को भोगता हुआ सुख दुःख पाता है और इसका अस्तित्व सार्थक बन जाता है। जीव की सार्थकता ईश्वर से जन्म मलने व इसके पाप-पुण्यरूपी फलों का भोग सुख दुःख रूप में मलने से ही होती है।

ईश्वर का स्वरुप कैसा है? इसका उत्तर है क ईश्वर सत्य, चत्त व आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्दस्वरूप है। इसके प्रमुख गुणों इसका निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, नि र्वकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, प वत्र और सृष्टिकर्ता होना सम्मि लत है। ईश्वर के यह कुछ गुण भी ईश्वर का स्वरुप प्रका शत करते है। आनन्द की पराकाष्ठा ईश्वर का निजी स्वरुप व गुण है जो उसमें सदा-सर्वदा से है और रहेगा, अतः उसे कसी भौतिक पदार्थ व जीवों से कसी वस्तु, स्तुति-प्रार्थना-उपासना आदि की अपेक्षा नहीं है। ईश्वर अपने बिना कसी निजी प्रयोजन के जीवों के कल्याणार्थ इस वशाल ब्रह्माण्ड वा सृष्टि को बनाता है और जीवों के पूर्व जन्मों के

कर्मानुसार उन्हें भन्न भन्न प्राणी योनियों में जन्म देता है जिससे वह अपने अपने कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल भोग सकें।

जीवात्मा और ईश्वर का स्वरुप वदित हो जाने पर अब हमें अर्थात् जीवात्मा को अपनी उन्नति व सुखों की वृद् ध के लए अपना कर्तव्य निर्धारित करना है। वह क्या-क्या कार्य करें जिससे उनके सभी दुःखों का पराभव और सद्गुणों व सुखों की अ भवृद् ध हो? इसका एक सरल उत्तर तो यह है क उसे सदैव ईश्वर के प्रति आभारी व कृतज्ञ होना चाहिये और मनुष्य जन्म देने के लए उसकी प्रशंसा, स्तुति, धन्यवाद, आभार व कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिये। इन कार्यों को करने का नाम ही स्तुति–प्रार्थना–उपासना वा ईश्वर की पूजा है। जो व्यक्ति भलीप्रकार से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि के द्वारा उसका आभार व धन्यवाद कर कृतज्ञ होता है वह कर्तव्यापालक और जो नहीं करता वह अ ववेकी, मूर्ख, भ्रष्ट, अज्ञानी, स्वार्थी, अहंकारी व कृतघ्न होता व कहलाता है। ईश्वर की स्तुति आदि को कर्तव्य समझ लेने के बाद अन्य कर्तव्यों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। दूसरा प्रमुख कर्तव्य है क हम मनुष्यों व अन्य सभी प्रा णयों को शुद्ध वायु, शुद्ध जल, शुद्ध अन्न व शुद्ध व स्वच्छ पृ थवी वा पर्यावरण की आवश्यकता है। यदि वायु व जल सहित हमारा पर्यावरण शुद्ध, स्वच्छ व प वत्र नहीं होगा तो हमारे सुखों में बाधा आयेगी और हमारा जीवन अनेक रोगों से ग्रस्त होकर दुःखी हो जायेगा जिससे हम ईश्वर की उपासना व यज्ञ आदि सहित जीवन के अन्य निजी कार्यों का सम्पादन भी न कर पाने के कारण अधोगति व अवनति को प्राप्त होंगे। ईश्वर ने वेदों के द्वारा अग्निहोत्र करने की आज्ञा भी प्रदान की है जिसको जानकर हमारे ऋ षयों ने अग्निहोत्र से अश्वमेध यज्ञ पर्यन्त यज्ञों का वधान कया है। इसके अतिरिक्त गोपालन, अन्य उपयोगी पशुओं का पालन, कृ ष जिससे शुद्ध, प वत्र व बल-शक्ति से युक्त अन्न व फल आदि प्राप्त हो सकें आदि कार्यों को करना भी हमारा कर्तव्य सद्ध होता है। मनुष्य को अज्ञानयुक्त कर्मों का त्याग कर वद्यायुक्त कर्मों को ही करना चाहिये। उसे वद्या व वज्ञान को उन्नत कर अपने उपयोग की सभी वस्तुओं का निर्माण कर सुख को सम्पादित करना चाहिये। मध्यकाल की दृष्टि से आधुनिक समय में इस दिशा में कुछ उन्नति अवश्य हुई है परन्तु लक्ष्य प्राप्ति से संसार की समग्र मनुष्य जाति अभी कोसों दूर है।

हमने ईश्वरोपासना सहित मनुष्य के कुछ प्रमुख कर्तव्यों की सं क्षप्त चर्चा की है। ईश्वर की कृपाओं के प्रति उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर उसका धन्यवाद करना ही ईश्वरोपासना है। हम देख रहे हैं क मध्यकाल में ईश्वर उपासना का रूप वकृत होकर मूर्तिपूजा का प्रचलन हो गया और निराकार ईश्वर के ध्यान, चन्तन तथा वैदिक प्रार्थनाओं से उसकी स्तुति आदि का स्थान मूर्तिपूजा ने ले लया। मूर्तिपूजा वस्तुतः है क्या? मूर्तिपूजा निराकार ईश्वर को साकार मानने की एक मथ्या कल्पना है। ईश्वर का स्वरूप अर्थात् निराकार व सर्वव्यापक आदि होना तो कभी बदलता नहीं, वह अपने मूल स्वरूप में ही सदा सर्वदा वद्यमान रहता है, परन्तु मनुष्यों ने मध्यकाल में अपने अज्ञान के कारण ईश्वर की स्थानापन्न मूर्तिपूजा का प्रचलन कया। मूर्तिपूजा में हम देखते हैं क पाषाण, धातु व काष्ठ की मूर्तियां भन्न- भन्न मनुष्य, महापुरुषों व पशुओं की आकृतियों की बनाई जाती हैं। उनमें से कुछ को भवन व मन्दिर बना कर उसमें रखा जाता है। कुछ वेद व अन्य ग्रन्थों के मन्त्रों का पाठ कर उसमें

प्राण-प्रतिष्ठा का नाम दे दिया जाता है। यह सब कर्मकाण्ड कर दिया जाता है और मूर्ति के आगे हाथ जोड़ कर खड़े होने या मनुष्य र चत कुछ पद्यों व गीतों को गाकर या फर मूर्ति के आगे कुछ धूप व अगरबत्ती जला कर उसे घुमान व हिलाने-डुलाने को ही मूर्तिपूजा कहा जाता है। मूर्तिपूजा करने वाले कभी यह वचार नहीं करते क उनके इस कृत्य से सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर प्रसन्न व सन्तुष्ट होता है या नहीं? कहीं असन्तुष्ट व अप्रसन्न तो नहीं होता, यह वचार ही मुर्तिपूजा करने वाले नहीं करते। हमारे प्राचीन ऋ ष व वद्वान जिसमें मह र्ष दयानन्द सरस्वती भी सम्मि लत हैं, इस मूर्तिपूजा से कसी प्रकार का लाभ नहीं मानते, अ पतु इससे मूर्तिपूजा करने वालों को अनेक प्रकार की हानि ही होती है। ऐसा स्वामी दयानन्द का मत था जो क अनेक प्रमाणों से पुष्ट है। मूर्तिपूजा पाषाण, धातु व काष्ठ से बनी हुई प्रतिमाओं की ही की जाती है जो क जड़, भाव व संवेदनाशून्य हैं। जड़ पदार्थों में कसी भी प्रकार से सुख व दुःखी व प्रसन्न होना नहीं घटता। वह तो अपनी रक्षा तक भी नहीं कर सकती। जहां तक प्राण-प्रतिष्ठा की बात है, ऐसा करना व यह मानता क मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है, मानवीय बुद् ध का एक अज्ञानमूलक हास्यापद पहलू है। यही कारण है क यवनों ने हमारे देश में सोमनाथ मन्दिर सहित सहस्रों मन्दिरों व मूर्तियों को भ्रष्ट कया परन्तु कोई मूर्ति अपनी रक्षा नहीं कर सकी। हमारी पराधीनता का एक प्रमुख कारण भी मूर्तिपूजा व मूर्तियों से कन्हीं शुभ परिणामों की अपेक्षायें ही था जो क कभी पूरी नहीं हुइं। अतः यदि ईश्वर की पूजा करनी है तो वह केवल वेदाध्ययन, वेदानुकूल शास्त्रों का अध्ययन, सत्यार्थप्रकाश व आर्या भ वनय आदि के अध्ययन सहित मुख्यतः योगदर्शन के अध्ययन व उसके अनुसार ईश्वर के ध्यान व समा ध के अभ्यास व प्रयत्नों से ही की जा सकती है।

मह र्ष दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद एक बात स्पष्ट होती है क मूर्तिपूजा से मनुष्य जीवन की उन्नति नहीं अ पतु अवनति ही होती है। मूर्तिपूजा से हमारे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष भी प्राप्त होने के स्थान पर हम उनसे दूर हो जाते हैं। अतः हमारे सभी मूर्तिपूजा करने वाले बन्धुओं को निष्पक्ष भाव से मह र्ष पतंज ल कृत योगदर्शन का अध्ययन करना चाहिये और उनके द्वारा निर्दिष्ट यम, नियमों का पालन, आसन व प्राणायाम का सेवन तथा प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समा ध का अभ्यास कर ईश्वर का साक्षात करने का प्रयास करना चाहिये। यही वस्तुत व यथार्थतः ईश्वर की पूजा है। मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है, पाठक इस पर वचार करें। कहीं ऐसा न हो क उपासना व पूजा सम्बन्धी कसी अपने गलत निर्णय के कारण हमें इस जन्म व जन्मान्तरों में भारी हानि उठानी पड़े। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में यह भी ध्यातव्य है क माता– पता–आचार्य– वद्वान आदि हमारे मूर्तिमान देव हैं। इनका आदर, सेवा-सत्कार व सहायता सदा करनी चाहिये, यही यथार्थ मूर्तिपूजा का वैदिक स्वरूप है। फ लत ज्योतिष भी मनुष्य की अवनति का कारण बनता है। अतः इससे भी सभी को बचना चाहिये। फ लत ज्योतिष लेख का वषय न होने के कारण इस पर वस्तार से वचार नहीं कर रहे हैं। हम आशा करते हैं क ईश्वर का ध्यान व उपासना सहित मूर्तिपूजा पर प्रस्तुत इस लेख में वचारों से पाठक लाभान्वित होंगे। यह लेख सबके कल्याण की भावना से मह र्ष दयानन्द के वचारों से प्रभा वत होकर प्रस्तुत कया है। शास्त्रों में यह बताया गया है क जो परिणाम में लाभदायक बातें होती है वह आरम्भ में वष के समान दिखाई देती हैं परन्तु ववेकशील लोग

इस सत्य को जानने के कारण परिणाम में इष्ट सद् ध दिलाने वाली बातों का ही आचरण करते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196 चुक्खूवाला-2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

'वैदिक धर्म और आंग्ल नववर्ष २०१६' -मनमोहन कुमार आर्य

DECEMBER 31, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

वर्तमान समय में हमने व हमारे देश ने आंग्ल संवत्सर व वर्ष को अपनाया हुआ है। इस आंग्ल वर्ष का आरम्भ 2015 वर्ष पूर्व ईसा मसीह के जन्म वर्ष व उसके एक वर्ष बाद हुआ था। अनेक लोगों को कई बार इस वषय में भ्रान्ति हो जाती है क यह आंग्ल संवत्सर ही सृष्टि में मनुष्यों की उत्प त्त व उनके आरम्भ का काल है। अतः इस लेख द्वारा हम निराकरण करना चाहते हैं क अंग्रेजी काल गणना दिन, महीने व वर्ष की गणना के आरम्भ होने से पूर्व भी यह संसार चला आ रहा था और उन दिनों भारत में धर्म, संस्कृति व सभ्यता सारे संसार में सर्वा धक उन्नत थी और इसी देश से ऋ ष व वद्वान वदेशों में जाकर वेद और वैदिक संस्कृति का प्रचार करते थे। अब से 5,200 वर्ष हुए महाभारत युद्ध के कारण संसार के अन्य देशों में वेदों के प्रचार व प्रसार का कार्य बन्द हो जाने और साथ ही भारत में भी अध्ययन व अध्यापन का संगठित समु चत प्रबन्ध न होने के कारण भारत व अन्य देशों में वद्या व ज्ञान की दृष्टि से अन्धकार छा गया। इस अ वद्यान्धकार के कारण ही भारत में बौद्ध व जैन मतों के आ वर्भाव सहित वश्व के अन्य देशों में पारसी, ईसाई व मुस्लिम मतों का आ वर्भाव हुआ।

1 जनवरी सन् 0001 का आरम्भ वर्ष ईसा मसीह के अनुयायियों द्वारा प्रच लत ईसा संवत है। इससे पूर्व वहां कोई संवत् प्रच लत था या नही, ज्ञात नही है। हमें लगता है क इससे पहले वहां संवत् काल गणना कसी अन्य प्रकार से की जाती रही होगी। उसी से उन्होंने सप्ताह के 7 दिनों के नाम, महीनों के नाम आदि लये और उन्हें प्रच लत कया। अंग्रेजी संवत् अस्तित्व में आने से पूर्व भारत में संवत्सर की गणना लगभग 1.960853 अरब वर्षों से होती आ रही थी। भारत में सप्ताह के 7 दिन, बारह महीने, कृष्ण व शुक्ल पक्ष, अमावस्या व पू र्णमा आदि प्रच लत थे। नये वर्ष का आरम्भ यहां चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता था व अब भी यह परम्परा अबाध रूप से जारी है जिसे भारत के ब्राह्मण कुलों में जन्में वद्वान व आर्य लोग मानते चले

आ रहे हैं। ऐसा लगता भी है और यह प्रायः निश्चित है क भारत से से ही 7 दिनों का सप्ताह, इनके नाम, लगभग 30 दिन का महीना, वर्ष में बारह व उनके नाम आदि कुछ उच्चारण भेद सहित देश देशान्तर में प्रच लत थे। उन्हीं को अपना कर वर्तमान में प्रच लत आंग्ल वर्ष व काल गणना को अपनाया गया है। हमारे सोमवार को उन्होंने मूनडे (चन्द्र-सोम वार) व र ववार को सनडे (सूर्य वार) बना दिया। यह हिन्दी शब्दों का एक प्रकार से अंग्रेजी रूपान्तर ही है।

अंग्रेजी संवत्सर की यह कमी है क इससे सृष्टि काल का ज्ञान नहीं होता जब क भारत का सृष्टि संवत् सृष्टि के आरम्भ से आज तक सुर क्षत चला आ रहा है। वज्ञान के आधार पर भी सृष्टि की आयु 1.96 अरब लगभग सही सद्ध होती है। क्या हमारे यूरोप के वदेशी बन्धुओं को आर्यों व वैदिकों के इस पुष्ट सृष्टि सम्वत् को नहीं अपनाना चाहिये था? इसे उन्होंने पक्षपात व कुण्ठा के कारण नहीं अपनाया। उनमें यह भी भावना थी क उन्हें अपने मत ईसाई मत का प्रचार व लोगों का धर्मान्तरण करना था, इस लए उन्होंने भारतीय ज्ञान व वज्ञान की जानबूझकर उपेक्षा की और इसके साथ ही अपने मथ्या वश्वासों को दूसरों पर थोपने का प्रयास भी कया। यदि मह र्ष दयानन्द जी का प्रादुर्भाव न हुआ होता तो उनके द्वारा फैलाये गये सभी भ्रम वश्व में प्रच लत हो जाते परन्तु मह र्ष दयानन्द ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ से वैदिक काल के अनेक सत्य रहस्यों को खोज लया और उनका डण्डिम घोष कर भारत व यूरोप के वद्वानों को हतप्रभ कर दिया।

भारतीय नव वर्ष चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। यही दिवस नव वर्ष के लए सर्वथा उपयुक्त व सर्वस्वीकार्य है। यह ऐसा समय होता है जब शीत का प्रभाव समाप्त हो गया होता है। ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं का आरम्भ इसके कुछ समय बाद होता है। इस नव वर्ष के अवसर पर पतझड़ व शीत ऋतु समाप्त होकर ऋतु अत्यन्त सुहावनी होती है। वृक्ष नये पत्तों को धारण कये हरे-भरे होते हैं तथा प्रायः सभी प्रकार के फूल व फल वृक्षों में लगे होते हैं, सर्वत्र फूलों की सुगन्ध से वातावरण सुगन्धित व लुभावना होता है जिसे प्रकृति का श्रृंगार कहा जा सकता है। ऐसी अनेक वशेषताओं से युक्त यह समय ही नव वर्ष के उपयुक्त होता है। हमें लगता है क वदेशी वद्वानों के पक्षपात के कारण हम अनेक सत्य मान्यतओं को वश्वस्तर पर मनवा व अपना नहीं सकें। आज तो सर्वत्र पूर्वाग्रह व पक्षपात दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सर्वत्र सभी क्षेत्रों में प्रायः रूढ़िवादित छाई हुई है। अब कसी पुरानी कम महत्व की परम्परा को छोड़ कर उसमें सुधार व परिवर्तन कर उसे वश्व स्तर पर आरम्भ करना कठिन व असम्भव ही है।

वैदिक सन्ध्या व यज्ञ दो ऐसे महत्ता से युक्त मनुष्यों के दैनिक आवश्यक कर्तव्य हैं जिनका आचरण व व्यवहार करने से मनुष्यों को अनेकानेक लाभ होते हैं। मह र्ष दयानन्द जी ने बताया है क सन्ध्या में ईश्वर का ध्यान सहित उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना की जाती है। शुद्ध शाकाहारी भोजन और वचारों की शुद्धता-प वत्रता पर ध्यान दिया जाता है। सुखासन में लगभग 1 घंटा बैठकर ईश्वर की ध्यान पद्धति द्वारा स्तुति की जाती है। स्तुति

का अर्थ है ईश्वर के गुणों का ध्यान व उल्लेख करना। इससे ईश्वर से प्रेम व प्रीति होती है। प्रेम व प्रीति से मत्रता होती है और इससे वरिष्ठ मत्र से कनिष्ठ मत्र को स्तुति के अनुसार लाभ प्राप्त होता है। स्तुति से अहंकार का नाश भी होता है। स्तुति करने से मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव सुधरते हैं और वह ईश्वर के कुछ-कुछ व अ धकाश समान हो जाते हैं। हमारे सभी ऋ ष व मुनि ईश्वर के गुण-कर्म व स्वभाव के अनुरूप गुणों वाले ही होते थे। स्तुति को जानने समझने व करने के लए वेदों व वैदिक साहित्य का ज्ञान व अध्ययन भी आवश्यक है। बिना इसके ईश्वर की भलीप्रकार सारग र्भत व पूर्णता से युक्त स्तुति नहीं हो सकती। इसी प्रकार से ईश्वर से प्रार्थना का भी महत्व है। इससे भी स्तुति के समान सभी लाभ प्राप्त होते हैं और इच्छित वस्तु की ईश्वर से प्राप्ति होती है। प्रार्थना अहंकार नाश में सर्वा धक लाभप्रद होती है। अहंकारशून्य मनुष्य ही समाज, देश व वश्व का कल्याण कर सकता है। अहंकारयुक्त मनुष्य तो अपनी ही हानि करता है, उससे दूसरों को कसी प्रकार के लाभ का तो प्रश्न ही नहीं होता। उपासना भी स्तुति व प्रार्थना को सफल करने में सहायक व अनिवार्य है। मह र्ष दयानन्द इसका यह फल बताते हैं क ईश्वर की स्तुति करने से उससे प्रीति, उस के गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निर भमानता, उत्साह और सहाय का मलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना उद्देश्य पूरे होते हैं। स्तुति, प्रार्थना, उपासना वा समा धयोग से अ वद्यादि मल नष्ट होते हैं। जिस मनुष्य ने आत्मस्थ होकर परमात्मा में चत्त को लगाया है उसको जो परमात्मा के योग अर्थात् सान्निध्य वा समीपता का सुख होता है, वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्यों क उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने अर्थात् उपासना करने से सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामीरूप से प्रत्यक्ष करने के लये जो-जो काम करना होता है वह वह सब को करना चाहिये। मह र्ष दयानन्द एक सद्ध व सफल योगी थे। इनके ये शब्द स्वानुभूत हैं। इसके शंका व संदेह का कोई कारण नहीं। यदि मनुष्य जन्म में ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप को जानकर उसकी योग व ध से उपासना नहीं की और ईश्वर का साक्षात्कर करने का प्रयत्न नहीं कया, तो मनुष्य कतनी ही भौतिक उन्नति कर लें, उपासना व समा ध सुख की तुलना में वह अपार भौतिक सुख हेय व निम्नतर हैं। अतः हमें वदेशी मान्यताओं को गुण-दोष के आधार पर मानने के साथ अपने पूर्वजों, ऋ ष-मह र्षयों की वरासत को भी, सम्भालना है वह उसे भावी पीढ़ियों को सौंपना है। इस कार्य के लए हमारे आदर्श राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य आदि हैं। उनका अध्ययन व अनुकरण कर हमें अपने जीवन को सफल करना चाहिये। यही महापुरूष वश्व-वरणीय भी हैं। यज्ञ के बारे में इतना ही कहना पर्याप्त होगा क इससे वायुमण्डल व पर्यावरण शुद्ध बनता है। जीवन में सुख व आरोग्य की वृद् ध व प्राप्ति होती है। यज्ञ से हम ही नहीं अ पतु यज्ञ स्थान से दूर-दूर तक के सभी प्राणी लाभान्वित व सुखी होते हैं। यज्ञ-अग्निहोत्र-हवन एक शुभ कर्म है और इसे ऋ षयों द्वारा श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ न केवल हमारे वर्तमान जीवन में अ पतु भावी जन्मों में भी जीवात्माओं को लाभ पहुंचाता है और इसके कर्त्ता को अगले जन्म में उन्नत मनुष्य योनि मलने की गारण्टी देता है।

महात्मा ईसा मसीह बीसी 1 में पैदा हुए। उन्हीं के नाम से ईसा सम्वत् आरम्भ हुआ। 27 से 33 वर्ष का उनका जीवन होने का अनुमान है। उन्होंने जो धा र्मक वचार दिये उससे उनके

देश व निकटवर्ती स्थानों पर सामाजिक परिवर्तन एवं सुधार हुए। इन सुधारों से ही उन्नति करते हुए वह आज की स्थिति में पहुंचे हैं। उनके अनुयायियों ने धर्म के अतिरिक्त अन्य जिन मान्यताओं को तर्क व युक्ति के आधार पर स्वीकार कया, वही उनकी प्रगति का आधार बना। उनकी उन्नति के प्रभाव ने ही उनके काल सम्वत् को वश्व स्तर पर स्वीकार कराने में अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाई। भारत में भी सम्प्रति यही संवत् प्रच लत हो गया है। यत्र-तत्र कुछ प्राचीन वैदिक व सनातन धर्म के वचारों के लोग सृष्टि संवत् व वक्रमी संवत् का प्रयोग भी करते हैं जो जारी रहना चाहिये जिससे आने वाली पीढ़ियां उसे जानकर उससे लाभ ले सकें। नये आंग्ल वर्ष के दिन सभी मनुष्य एक दूसरे को नये वर्ष की शुभकामनायें देते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। शुभकामनायें तो हमें सभी को पूरे वर्ष देनी चाहिये। हमारे यहां संस्कृत का एक श्लोक खूब गाया व बोला जाता है। यह श्लोक 'सर्वे भवन्तु सु खनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्रा ण पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।' हमें लगता है क सबके प्रति शुभकामना करने का यह श्लोक सर्वा धक भाव व अर्थ प्रधान वाक्य, कथन व पद्य है। पाठकों के लए इसका पद्यानुवाद भी प्रस्तुत है। पहला पद्यानुवाद हैः 'सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान्। सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब व ध हो कल्याण।।' दूसरा पद्यानुवादः 'हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी, सब हों नीरोग भगवन् ! धन–धान्य के भण्डारी। सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के प थक हों, दु खया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।' एक अन्य तीसरा पद्यानुवाद है 'सुखी बसे संसार सब, दु खया रहे न कोय, यह अ भलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय।।' इस श्लोक के प्रतिदिन उच्चारण सहित गायत्री मन्त्र व ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना के **8** मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करने से भी अनेक लाभ प्राप्त कये जा सकते हैं।

निष्कर्ष में हम यह कहना चाहते हैं क हमें समाज में रहना है अतः जो हमारे निकट हो रहा है हम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। हमें जो भी नये वर्ष की शुभकामना देता है, उसे स्वीकार करें और उसे भी अपनी शुभकामनायें दें। उनसे यह अनुरोध करें क वह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के भारतीय नव वर्ष को भी इसी प्रकार से सोत्साह मनायें और अपने सभी मत्रों को इसी प्रकार से शुभकामनायें दें। आज आंग्ल वर्ष 2015 के अंतिम दिन ३१ दिसम्बर को हमने कुछ समय चन्तन कया, उसे लेखबद्ध कर प्रस्तुत कर रहे हैं। इस अवसर पर हम सभी बन्धुओं को नये आंग्ल वर्ष 2016 की शुभकामनायें देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास पर आप त्तयाँ और उनका उत्तर – राजेन्द्र जिज्ञासु

DECEMBER 29, 2015 1 COMMENT

सत्यार्थ प्रकाश प्रकरण पर अदुल गनी व खलील खान ने जो आक्षेप कया है, उसका ववरण निम्न प्रकार है। पहली बात तो यह आक्षेप ही गलत है, क्यों क ऋ ष दयानन्द कुरान पढ़ना या अरबी भाषा जानते ही नहीं थे।

शाह रफी अहमद देहलवी के उर्दू अनुवाद का जो अन्य मौल वयों ने देवनागरी या हिन्दी में अनुवाद कया है, स्वामी जी ने उसी को ही ज्यों का त्यों लया है। अनुभू मका में साफ लखा है, यदि कोई कहे क यह अर्थ ठीक नहीं है, तो उसको उ चत है क मौलवी साहिबों के तर्जुमों का पहले खण्डन करे, पश्चात् इस वषय पर लखे, क्यों क यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लए है। दो लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लास का सुरा तहरीम 66 आयत 1 से 5 पर ऋ ष ने दो कस्सा या कहानी है लखा।

आक्षेपकर्ता ने यह कहानी कुरान में नहीं है, ऐसा लखा तथा कहा- जब यह कहानी नहीं है कुरान में फर दयानन्द ने क्यों लखा? अतः दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगना चाहिये। वरोध यही है।

इसका उत्तर है क कुरान की आयतों के उतरने का कारण है जिसे शानेनुजूल कहा जाता है, अर्थात् कस बिना पर यह आयत उतरी? या कस आधार पर यह आयत उतरी ? वजह क्या थी? इसे शानेनुजूल कहा जाता है।

तो सुरा तहरीम का शाने नुजूल के सभी अनुवाद कर्त्ताओं ने कुरान के फुटनोट में लखा है, वह अनुवाद उर्दू, हिन्दी व अंग्रेजी सब में है, और वस्तार में बुखारी शरीफ हदीस, व शाही मुस्लिम हदीस में प्रत्येक सुरा का शानेनुजूल लखा है।

अतः इन आयतों में स्वामी जी ने दो कहानी है लखा है, परन्तु कहानी को स्वामी जी ने उद्धृत नहीं कया, मैं उन दोनों क हानी को लखता हूँ उमूल मोमेनीन (मुसलमानों की मातायें) अर्थात् हजरत मुहमद सःआःवःसः की सभी बीबीयाँ, सभी मुसलमानों की मातायें हैं, वधवा होने पर भी वह कसी से निकाह नहीं कर सकतीं, और न कोई मुसलमान उनसे निकाह कर सकता, क्यों क माँ जो ठहरीं। हजरत जैनब नामी बीवी के पास हजरत साहब शहद पीने को जाया करते थे। हुजूर की सबसे कम सन पत्नी हजरत आयशा ने एक और पत्नी हजरत हफसा दोनों ने परामर्श कर पति हजरत मुहमद साहब से कहा क दहन मुबारक से मगाफीर की बू आती है, चुनान्चे आपने क्या खाया?

जवाब में हुजूर ने कहा- अगर शहद पीने से बू आती है, तो आइन्दा मैं शहद का इस्तेमाल नहीं करूँगा। पहली कहानी यह है, और आयत का शानेनुजूल यह है। (मैंने कसम खाली है, तुम कसी से मत कहना)

दूसरी कहानी है क हजरत साहब ने एक काम को न करने की कसम खा लया तो अल्लाह ने यह आयत उतारी- ऐ नबी क्यों हराम करते हो उस चीज को? जिसे अल्लाह ने हलाल कया है तुहारे लए, अपनी बी वओं के खुशनुदियों के लए (प्रसन्न के लए)। हजरत हफसा के घर गए, वह मईके गई भी तो हुजूर ने मारिया, कनीज, के साथ एखतलात कया, हफसा ने दोनों को कमरे में देख लया- हुजूर ने कसम खाली थी न करने को। तफसीर हक्कानी – पृ.125

एक बार हजरत साहब ने एक पत्नी हफसा से कहा, दूसरों से कहने को मना कया पर हजरत हफसा ने हजरत आयशा नामी पत्नी से कह दी । जिस पर अल्लाह ने पत्नियों को डाँट लगाते हुए कहा क नबी अगर तुम लोगों को तलाक दें, तो उनकी पत्नियों की कमी नहीं, जिसे कुरान में अल्लाह ने कहा।

असा रबुहू इन तल्लाका 'कुन्ना अई' युब दिलाहू अजवाजन खैरम मन कुन्ना मुस लमातिम मु मनातिन, कानेतातिन, तायेनातिन, सायेहातिन, सईये बातिय वा अबकरा। तहरीम – आ. 5

इन दो कहानी का ऋ ष दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख कया है, जो कुरान तथा हदीस में आयत का शानेनुजूल ही इस प्रकार है।

कुरान का अंग्रेजी अनुवादक पक्यल व एन.जे. दाऊद, हिन्दी अनुवाद नवल कशोर ने भी लखा है तथा उर्दू अनुवादकों ने भी लखा है। अवश्य यह लखना मैं युक्ति-युक्त समझता हूँ उर्दू अनुवादक ने लखा यह कस्सा पादरियों ने अपने मन से मला दिया है।

वचारणीय बात है क ऋ ष दयानन्द ने इसी आयत की समीक्षा में लखा है, अल्लाह क्या ठहरा मुहमद साहब के घर व बाहर का इन्तेजाम करने वाले मुलाजिम ठहरा?

जरा सोचे तो सही क कुरान का अल्लाह समग्र मानव मात्र का होने हेतु मानव मात्र के लए उपदेश होना था कुरान का उपदेश।

कन्तु मानव मात्र का उपदेश तो क्या है, नबी के पति-पत्नी का घरेलू वार्तालाप ही अल्लाह का उपदेश है। समग्र कुरान में इस प्रकार अनेक घटनाएँ हैं। यहाँ तक क नबी पत्नी बदचलन है या नहीं हैं, कुरान में अल्लाह गवाही दे रहे हैं। सुरा नूर-24 आयत 6 पर देखें।

बल्लजीना यरमूना अजवाजहुम व लम या कुल्लाहुम शुहदाऊ इल्ला अन फुसुहुम फ शहादतो अहादेहिम अरबयो शहादतिम बिल्ला हे इन्नाहू लन्स्सादेकीन।

अब समीक्षा में ऋ ष दयानन्द जी ने अपना वचार ही तो अ भव्यक्त कया है, न क कुरान में यह क्यों लखा है, यह पूछा?

अपने वचार अ भव्यक्त करने की छूट भारतीय सं वधान में सबको है, और मानव बुद् ध परख होने हेतु कसी चीज को मानने के लए बुद् ध का प्रयोग तो करना ही चाहिये। दयानन्द तो दोषी तब होते, जब अपनी मनमानी बातों को कुरान की आयतों के साथ मलाते? उन्होंने तो मात्र कुरान की बातों को सामने रखा।

आक्षेप कर्ता ने सुरा कदर जो संया 97 है आयत 1 से 4 को लखा है, तथा सत्यार्थ प्रकाश पर आक्षेप कया है, कुरान में क्या कहा वह प्रथम प्रस्तुत करता हूँ।

तहकीक नाजिल कया हमने कुरान को बीच रात कदर के, और क्या जाने तू के क्या है रात कदर की, रात कदर की बेहतर है, हजार महिने से, उतरते हैं फरिश्ते और रूह पाक अपने परवार दिगार के हुक्म से, हजार चीजों को लेकर अपने वास्ते, सलामती है वह तुलुय हो फजर। आक्षेप कर्ता को चाहिये था, दयानन्द को गभीरता से पढ़कर कुरान में सभी प्रश्नों को जानने का प्रयत्न करना, क्यों क दयानन्द ने जो प्रश्न कया है, कुरान से उसका जवाब कुरान वदों के पास नहीं है।

कुरान में कई जगह कहा गया क कुरान को बरकत वाली रात में उतारा, यहाँ तक क उल्लहा ने कसम खाकर कहा। एक रात में कुरान को उतारा, कन्तु पूरी कुरान की आयतों को दो भागों में बाँटा गया, मक्की व मदनी में, अर्थात् प्रत्येक सुरा के प्रथम में लखा है क यह सुरा मक्का में और यह मदीना में उतारी गई आदि। दयानन्द का कहना सही है क समग्र कुरान एक ही बार में उतरी? या कालान्तर में? क्यों क इसका वरोध कुरान से ही होता है।

जो प वत्र आत्मा हजरत जिब्राइल को उतरना इस आयत में माना गया जो ऋ ष ने वह प वत्र आत्मा कौन है लखा, अल्लाह तक पहुँचने में जिब्राइल को पचास हजार साल लगते हैं, तो कुरान को उतरने में कतने वर्ष लगे?

सत्यार्थ प्रकाश पर आक्षेप कर्ताओं ने सुरा बकर-संया 2 आयत 25 से 37 तक का उल्लेख कया है।

सुरा बकर आयत 25 में लखा- बशारत हैं उनके लए जो नेक अमल करेंगे, अल्लाह उनको जन्नत में दा खल करायेंगे, जिसके नीचे नहरे हैं, तरह-तरह के मेवे खाने को मलेंगे, मेवे (फल) देखने में एक जैसा होगा पर स्वाद अलग-अलग है। खलाने वाला कहेगा- अरे इसे खाकर देखें इसका स्वाद ही अलग है और वहाँ हुर गलमों, प वत्र शराब तथा परिन्दों का गोश्त का कबाब भी खाने को मलेगा, यह प्रमाण पूरी कुरान में अनेक बार आया है। यहाँ तक क हम उमर औरतें, दिल बहलाने वाली औरतें, बड़ी-बड़ी आँख वाली जैसे मोती का अण्डा, रेशम का कपड़ा पहनकर जिससे तन दिखाई दे सोने के कंगन पहन कर सामान परिवेशन करेंगी- बहुत जगह कुरान में लखा है।

ऋ ष दयानन्द जी ने मात्र जानकारी लेनी चाही क दुनिया में स्त्री, पुरुष जन्म लेते व मरते हैं, पर जन्नत में रहने वाली सुन्दर स्त्रियाँ अगर सदाकाल वहाँ रहती हैं? तो क्या वह एक जगह रहते -रहते ऊब नहीं जाती होंगी? जब तक कयामत की रात नहीं आवेगी, तब तक उन बिचारियों के दिन कैसे कटते होंगे?

मेरे वचारों से सत्यार्थ प्रकाश में दर्शाये गए इन्हीं प्रश्नों को तीस हजारी कोर्ट से न पूछ कर उस्मानगनी व खलील खान को चाहिये था- डॉ. मुति मुकररम से ही पूछते। अब मुति साहब ने इन लोगों को जवाब देने के बजाय सुझाव दे डाला- कोर्ट में जा कर पूछो क दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यह क्यों लखा?

कन्तु दयानन्द ने जो कुछाी लखा है, वह कुरान में पहले से ही मौजूद है। अगर कुरान में यह बात न होती तो ऋ ष दयानन्द यह न पूछते क उन सुन्दरी स्त्रियों का एक जगह रहने में मन में घबराहट होती या नहीं? जवाब तो कुरान वचारकों को देना चाहिये। सुरा बकर- आयत 31 से 37 में सत्यार्थ प्रकाश पर जो आरोप है, वह भी निराधार है। अल्लाह ने आदम को सभी चीजों का नाम बता दिया, और फरिश्तों से पूछा क अगर तुम सच बोलने वाले हो, तो उन चीजों का नाम बताओ। पर वह तो सच बोलने वाले ही थे, तो कहा हम तो उतना ही जानते हैं जितना तू ने हमें सखाया।

इतने में अल्लाह ने आदम से पूछा, तो वह सभी नाम बता दिया। फर अल्लाह ने कहा- हम बता नहीं रहे थे तुहें? जाव इन्हें सजदा करो।

सत्यार्थ प्रकाश में लखा- ऐसे फरिश्तों को धोखा दे कर अपनी बड़ाई करनााुदा का काम हो सकता है?

इसमें दयानन्द की क्या गलती? अल्लाह ने कुरान में कहा, व अल्ला मा आदमल असमा आ कुल्लाहा सुमा अराजा हुम अललमल इकते।

दयानन्द का कहना है क जिस फरिश्ते ने आसमानों, और जमीनों में अल्लाह की इतनी इबादत की, अल्लाह ने जिसे आबिद, जाबिद, शा कर, सालेह, खाशेय आदि नामों की उपा ध दी, और चीजों का नाम नहीं बताया, अब उसी की लाई गई मट्टी से आदम को बनाकर सभी नाम बताना? क्या यह अल्लाह का धोखा नहीं?

क्या यह अल्लाह का पक्षपात नहीं? मात्र दयानन्द ही क्यों, कोईाी बुद् ध परख मानव इसे दगा ही मानेगा। क्या यह अल्लाह का काम हो सकता है?

अवश्य कुरान में इसकी चर्चा और भी कई जगहों पर हैं, जैसा संया 7 अयराफ में 12 से 19 तक लखा है, और यहाँ तो उस फरिश्ते ने अल्लाह के सामने अंगुली नचा कर कहा, काला फबिमा अगवई तनी ला अकयूदन्नालहुम सरातकल मुस्ताकीम-गुमराह कया तू ने मुझको, मैं भी उसे गुमराह करूँगा जो तेरे सीधे रास्ते पर होगा उसे आगे से पीछे से, दाँई और बाँई से उसे गुमराह करूँगा।

अब देखें अल्लाह ने उस शैतान को रोक नहीं पाया, और कहा- जो मेरे रास्ते पर होगा उसे तू गुमराह नहीं कर पायगा। शैतान ने कहा- मैं उसे ही गुमराह करूँगा जो तेरे रास्ते पर होगा, और आदम को गुमराह कर दिखाया।

यह सभी बातें कुरान में ही मौजूद है क अल्लाह अगर शैतान के पास निरुत्तर हो और कोई मानव अपनी अकल पर ताला डाल कर सत्य बचन महाराज कहे तो इसमें ऋ ष दयानन्द की क्या गलती है?

सुरा-2 आयत 37 पर जो आक्षेप है वह देखें, अल्लाह ने कहा- आदम तुम अपने जोरू के साथ वाहिश्त में रहो जहाँ मर्जी, जो मर्जी खाब पर नाजिदीक न जाव उस दरत के गुनहगार हो

जावगे, और निकाल दिये जावगे यहाँ से- व कुलना या आदमुस्कुन अनता व जाब जुकल जन्नाता आदि

अब ऋ ष दयानन्द ने जो लखा- दे खये, खुदा की अल्पज्ञता! अभी तो स्वर्ग में रहने को दिया और फर उसे कहा निकलो, क्या खुदा नहीं जानता था क आदम मेरा आदेश का उल्लंघन कर उसी फल को खायेगा, जिसे मैंने मना कया? स्वामी जी ने आगे लखा क जिस वृक्ष के फल को आदम को खाने से मना कया, आ खर अल्लाह ने उसे बनाया कसके लए था? यह सभी प्रश्न तो दयानन्द का है, पर उल्टा दयानन्द के अनुयाइयों से पूछा जा रहा है क दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में क्यों लखा? यहाँ तो उल्टी गंगा बह रही है।

जहाँ तक अल्लाह की अल्पज्ञता की बात है, वह तो कुरान से ही सद्ध हो रही है, अल्लाह को पता नहीं था क शैतान आदम को बहका देगा तथा शैतान हमारे हुकम का ताबेदार नहीं रहेगा आदि। दूसरी बात है क अल्लाह ने आदम को बताया क शैतान तुहारा खुला दुश्मन है, उसके बहकावे में मत आना।

और इधर शैतान को वर दे दिया कयामत के दिन तक जिन्दा रहने का, हर मानव के नस, नाड़ी तक पहुँचने का, व सीधे रास्ते पर चलने वालों को गुमराह (पथभ्रष्ट) करने का, अल्लाह ने ही मुहल्लत दी। ऋ ष दयानन्द को इसी लए लखना पड़ा- यह काम अल्लाह का नहीं, और न ही यह उसकी ग्रन्थ की हो सकती है।

यहाँ अल्लाह ने चोर को चोरी करने व गृहस्थ को सतर्क रहने वाली बात की है। इसका प्रमाण भी कुरान के दो स्थानों पर मौजूद है, जैसा-सुरा इमरान आयत 54 तथा अनफाल-आ030- व मकारू व मकाराल्लाहू बल्लाहू खैरुल मारेकीन।

अर्थ- मकर करते हैं वह, और मकर करता हूँ मैं, और मैं अच्छा मकर करने वाला हूँ। ध्यान देने योग्य बात है क मकर का अर्थ है धोखा और अल्लाह से अच्छा धोखा करने वाला कोई नहीं, जो अल्लाह खुद कर रहे हैं अपनी कलाम में, अब अल्लाह व अल्लाह की कलाम की दशा क्या होगी? ऋ ष दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में यही तो जानकारी इस्लाम के शक्षा वदों से लेना चाह रहे हैं। अब प्रश्नों का जवाब देने के बजाय कोई कहे क सत्यार्थ प्रकाश में क्यों लखा,उसका तो ईश्वर ही मा लक है। एक बात और भी जानने की है, ऊपर लख आया हूँ शानेनुजूल को, क आयत उतारने का कारण क्या है। इसका मतलब भी यह निकला- अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, जो ऋ ष ने अन भज्ञ लखा है। अगर कारण नहीं होता, तो अल्लाह आयत नहीं उतरते। कारण हो सकता है, यह ज्ञान कारण से पहले अल्लाह को नहीं था।

कुरान में ही अल्लाह ने कहा- ला तकर बुस्सलाता व अनतुम सुकाराआ। अर्थ- न पढ़ो नमाज जब क तुम शराब की नशे में हो।

अर्थात् शराब पीकर नमाज नही पढ़नी चाहिये।

अब इसका शाने नुजूल देखें, एक सहाबी (मुहमद साहब का साथी) शराब पीकर नमाज पढ़ा रहे थे, नशे की दशा में कुरान की आयतों को पढ़ने का क्रम भंग कया, तो दूसरे ने हजरत से शकायत की, तो अल्लाह ने यह आयात जिब्राइल के माध्यम से उतारी।

यह आयत उतरते ही सभी अरबवासी जो घर-घर शराब बनाते थे, सब ने शराब बहादी नालाओं में शराब बहने लगा, आदि।

इससे यह पता चला क शराब पीने से नशा होता है, यह ज्ञान अल्लाह को नहीं था वरना शराब तो प्रथम से ही हराम होना था? अगर वह सहाबी कुरान पढ़ने का क्रम नशा में भंग न करते, तो अल्लाह को यह आयत उतारना ही नहीं पड़ता।

ऋ ष दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यही तर्क पूर्ण बातें की हैं, अगर कोई अक्ल में दखल न दे, या अक्ल में ताला डालना चाहे तो ऋ ष दयानन्द की क्या गलती है? दयानन्द ने साफ कहा है क हठ और दुराग्रह को छोड़ मानव मात्र का भलाई जिससे हो, सत्य के खातिर काम करना चाहिये, मानव बुद् ध परख होने हेतु प्रत्येक कार्य को बुद् ध से करना चाहिये, क्यों क इसी का ही नाम मानवता है। सुरा 2 आयत 87 को अगर ध्यान से पढ़ते तो शायद आक्षेप न कर पाते, क्यों क सत्यार्थ प्रकाश में ऋ ष दयानन्द ने कुरान में कही गई बातों को ज्ञान वरुद्ध तथा सृष्टि नियम वरुद्ध सद्ध कया है। हजरत मूसा को अल्लाह ने अगर कताब दी, उसमें क्या कमी थी जो पुनः ईसा को अलग कताब देनी पड़ी? उससे पहले दाऊद को भी कताब दी थी, उसमें कौन-सी बातों को अल्लाह कहना भूल गये थे, जो अन्तिम में कुरान के रूप में हजरत मुहमद को अल्लाह ने दिया?

अल्लाह का ज्ञान पूर्ण है अथवा अधूरा? क्यों क परमात्मा का ज्ञान पूर्ण होना आवश्यक है और सार्वका लक, सार्वदे शक, सार्वभौ मक होना चाहिये। कुरान इसमें खरा नहीं उतरता। हजरत मूसा ने मौजिजा दिखाया और नबिओं ने भी मौजिजा दिखाया, मौजिजा का अर्थ है चमत्कार। अगर चमत्कार तब होते थे, तो अब क्यों नहीं?

अगर चमत्कार से हजरत मरियम कुँवारी अवस्था में हजरत ईसा को जन्म देना मान लया जाय, तो क्या सृष्टि नियम वरुद्ध नहीं होगा? कोई मे डकल साइंस का जानने वाला इसे सही ठहरा सकता है? इसे अल्लाह ने सुरा अबिया-आयत-88 में क्या कहा, देखें- वल्लाति अहसनत फरजहा फनाफखना फीहा मर रूहिना वज अलनाहा वबनहा

– क अल्लाह ने मरियम के शर्मगाह (गुप्तइन्द्रियों) में फूँक मार दिया और मरियम गर्भवती हो गई।

कोई भी बुद् धमान इस बात को ईश्वरीय ज्ञान तथा ईश्वरीय कार्य कैसे मान सकते हैं? ऋ ष दयानन्द ने लखा है, भोले-भाले लोगों को बहकाया गया है।

अगर ऋ ष दयानन्द अपने कार्यकाल में इस पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को न लखते, तो आर्य जाति को बचने का रास्ता बन्द था। सारा भारत कुरान का मानने वाला बन जाता, या बलात् बना दिया जाता। दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है इस पुस्तक को लखने का।

गुरुदत्त वद्यार्थी ने कहा- अगर सारी सप त्त बेचकर भी सत्यार्थ प्रकाश खरीदना पढ़े तो भी इसका मूल्य कम है। मैं इसे अवश्य खरीदता।

– वेद सदन**,** अबोहर**,** पंजाब-**152116**

“आर्य भारत में बाहर से आये” : यह मान्यता देशद्रोह है : डॉ धर्मवीर

DECEMBER 28, 2015 2 COMMENTS

लोकसभा में सं वधान दिवस के प्रसंग में बहस करते हुए मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा- आर्यों ने भारत पर आक्रमण करके हम लोगों को द लत और शो षत बनाया। हम आपके अत्याचारों को पछले पाँच हजार वर्षों से सह रहे हैं। हम आपका मुकाबला करते रहेंगे। खडगे ने भाजपा को बाहर से आकर इस देश पर राज्य करने वाली पार्टी बताया। इस बात की गभीरता को आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई नहीं समझ सकता। संसद सदस्य स्वामी सुमेधानन्द बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने खडगे के वक्तव्य का ल खत में वरोध कया और कार्यवाही से निकलवा दिया। हमें खडगे को भी धन्यवाद देना चाहिए, जिन्होंने इस देशद्रोही वचार की गभीरता को संसद में अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रका शत कया।

बहुत वर्ष पूर्व भी एंग्लो इण्डियन राज्यसभा सदस्य ने इस प्रकार का प्रश्न उठाया था, परन्तु उस समय कसी ने इस वचार की घातकता को समझा नहीं था। उस समय मान्य सदस्य ने सदन में कहा था- भारतीयों को अंग्रेजी भाषा से द्वेष नहीं करना चाहिए, क्यों क संस्कृत भी भारतीयों के लये वदेशी भाषा है। यह भारत में बाहर से आये आर्यों की भाषा है। जब इस देश के लोग संस्कृत से प्रेम करते हैं, तो फर वदेशी भाषा के नाम पर अंग्रेजी से द्वेष क्यों करते हैं? आर्यों का भारत में बाहर से आकर बसने का वचार अंग्रेजों के मस्तिष्क की उपज है। भारत पर आक्रमण मुसलमानों ने भी कया और देश को पराधीनाी कया था। उन्होंने यहाँ की सयता, संस्कृति को बलपूर्वक नष्ट करने का प्रयत्न कया। अंग्रेजों ने इस देश को दास बनाया और यहाँ की सयता, संस्कृति को बुद् धपूर्वक नष्ट करने की योजना बनाकर कार्य कया। मल्लिकार्जुन खडगे इस षड्यन्त्र के शकार बने हैं।

अंग्रेज आज भी इस देश को खण्डित करने के प्रयासों में लगे हैं। प्रमुख रूप से इस्लाम और ईसाइयों के माध्यम से धर्म परिवर्तन द्वारा तथा दूसरे रूप से माओवादी हिंसा फैलाकर देश में अराजकता उत्पन्न करने के प्रयासों द्वारा व्यापार व आधुनिकता के नाम पर समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के नाश करने के उपायों द्वारा तथा भारत में आर्य- द्र वड़ संघर्ष के काल्पनिक सद्धान्त का उपयोग कर पाश्चात्य योरोप अमेरिका की शक्तियाँ चर्च एवं व्यापार द्वारा हिंसा, असन्तोष फैलाकर फर से ईसाइस्तान, इस्ला मस्तान, द्र वड़स्तान तथा माओवाद के नाम से नक्स लयों के राज्य के रूप में इस देश के वभाजन का प्रयास अपनी पूरी शक्ति से करने में लगे हुए हैं। अन्य प्रयासों की चर्चा का प्रसंग यहाँ नहीं है। जहाँ तक खडगे का प्रश्न है, इसे तो स्वतन्त्रता के साथ ही समाप्त कया जाना चाहिए था, परन्तु गत साठ वर्ष के शासन ने खडगे की पार्टी का ही समर्थन कया, जो भारतीय परपराओं का, संस्कृति का और भाषा का नाश करने को ही देश की प्रगति का मूल मन्त्र समझती थी। इनकी दृष्टि में अंग्रेज और अंग्रेजी ही प्रगति के पर्याय हैं। परिणामस्वरूप हमारे शासन में आदिवासी जैसे शदों का प्रयोग कया जाता है। आदिवासी शद का प्रयोग करना अपने आपको बाहर से आया स्वीकार करना। इन शदों के अर्थों को हमने आज तक समझा नहीं, इसी

कारण अपनी रक्षा में इस मथ्या मान्यता को स्थान दिया हुआ है। हमारे बच्चे आज भी यही पढ़ते हैं क इस देश में आर्य बाहर से आये और यहाँ के मूल निवासी द्र वड़ लोगों को पराजित कर द क्षण में भगा दिया और अपना शासन स्था पत कया। इस मथ्या मान्यता को इतना प्रचारित कया गया क भारतीय संसद में कांग्रेस के नेता खडगे इस मान्यता के प्रवक्ता बन खड़े होने में अपना गौरव समझने लगे, अपने आपको द्र वड़ मूल और आर्य से भन्न अनार्य मनाने लगे।

आज हमारे लये एक अवसर आया है, जिसका लाभ उठाकर हमें अपनी शक्षा से इस मान्यता को बहिष्कृत कर देना चाहिए तथा प्रशासन शदावली से आदिवासी जैसे शदों का प्रयोग नि षद्ध कर देना चाहिए। खडगे यदि आर्यों से भन्न होते तो उनका नाम मल्लिकार्जुन नहीं होता। यदि खडगे भाजपा को वदेशी मानते हैं, तो वे श्रीमती सोनिया गाँधी को क्या कहेंगे, जिसके वे सेनापति बने हुए हैं? खडगे जी इस देश के नागरिक हैं, अपने देश से निश्चय ही प्रेम होगा, तो उन्हें इस आर्य-अनार्य सद्धान्त और षड्यन्त्र को समझना चाहिए।

प्रथम बात कसी के लये भी जानने की यह है क आर्य-अनार्य शद जातिवाचक नहीं, गुणवाचक हैं, क्यों क कृण्वन्तो वश्वमार्यम् कहते हुए वेद कहता है- सपूर्ण रूप से आर्य बनो और सब को आर्य बनाओ। जब सबको आर्य बनाया जायेगा, तब खडगे जी अनार्य कैसे रह पायेंगे? आर्य-अनार्य शद अच्छे और बुरे के अर्थ में हैं। मनु कहते हैं- इस देश में आर्य और दस्यु अर्थात् अनार्य रहते हैं, क्या खडगे जी अपने को चोर, डाकू कहलाना पसन्द करेंगे? क्या चोर, डाकू, लूटेरों की कोई जाति होती है? क्या इनके लये सं वधान, कानून, पु लस, होती है? फर ऐसी निरर्थक वचारधारा के लये खडगे जी अपने को उनका प्रतिनि ध कैसे कह सकते हैं? भारतीय संस्कृति, साहित्य, परपरा से आर्य वे हैं, जो लोग श्रेष्ठ परपरा के धनी हैं। वेद और वैदिक धर्म स्वीकार करते हैं, वे सभी आर्य है। कोई भी आर्य बन सकता है, कसी को आर्य कह सकते हैं। हमारी आर्य परपरा में एक पत्नी अपने पति को आर्य-पुत्र कहकर पुकारती है। पाश्चात्य लोगों ने आर्य-अनार्य सद्धान्त की कपोल कल्पना की, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज में वभाजन उत्पन्न करना था। आर्य-अनार्य का वचार, आर्य भारत में बाहर से आये हैं- यह सद्धान्त वद्वानों, वैज्ञानिकों की दृष्टि में खण्डित हो चुका है, परन्तु योरोप-अमेरिकी पक्ष इसका पूरा उपयोग इस देश को बांट ने में करने में लगा हुआ है। इस षड्यन्त्र को सबसे पहले ऋ ष दयानन्द ने समझा था और उन्होंने अपने ग्रन्थों में इस सद्धान्त का स्पष्ट रूप से खण्डन कया था। ऋ ष दयानन्द ने लखा- आर्यों का बाहर से भारत में आने का, भारतीय साहित्य के कसी भी ग्रन्थ में उल्लेख नहीं मलता। यदि आर्य बाहर से आकर भारत में बसे होते तो इतने बड़े ऐतिहा सक सन्दर्भ का उल्लेख उनके साहित्य में न हो, यह असभव है। कसी देश से आकर बसने की घटना उस समाज में निरन्तर स्मरण की जाती है। आज कोई पा कस्तान से उजड़कर आया, कोई आक्रमणकारी के रूप में आया, दोनों का इतिहास मलता है। समाज में कथायें मलती हैं, परपरायें मलती हैं, पुराने रीति-रिवाज, जीवन शैली के अंश मलते हैं, क्या आर्यों की कोई परपरा कसी तथाक थत मध्य ए शया या कसी अन्य देश में मलती है? क्या आर्यों की भाषा मौ लक रूप से कसी दूसरे देश में बोली जाती है या इतिहास में पाई जाती है? इतना ही नहीं, इतनी बड़ी जाति का संक्रमण एक दिन में तो नहीं हो सकता, उसके उस स्थान से चलकर यहाँ तक पहुँचने के मार्ग में उनके चहन, अवशेष तो मलने चाहिए। यदि बाहर से चलकर भारत को आर्यों ने जीता था, तो क्या बीच के देश उन्होंने बिना

जीते ही छोड़ दिये थे? यदि जीते थे तो आज वहाँ उनका अस्तित्व क्यों नहीं है, वहाँ उनका राज्य क्यों नहीं है? आर्यों के इतिहास, संस्कृति के अवशेष वहाँ क्यों नहीं पाये जाते?

ऋ ष दयानन्द कहते हैं- भारतवर्ष में सबसे पहले आकर निवास करने वाले आर्य ही हैं। शास्त्रों की, ऋ ष दयानन्द की मान्यता है क जब इस पृथ्वी का निर्माण हुआ, सपूर्ण जलमय संसार में से पृथ्वी का जो भाग सबसे पहले जल से बाहर निकला, वह तिबत था तथा सबसे ऊँचा होने के कारण उसी भाग पर मनुष्यों की सृष्टि सबसे पहले हुई। जो मनुष्य वहाँ से उतरकर सबसे पहले भारत आये और जिन्होंने इस देश को बसाया, वे ही लोग आर्य कहलाये। शेष संसार में यहीं से लोगों का जाना हुआ है। बाहर से इस देश में आने की बात मनगढ़न्त, मथ्या और षड्यन्त्रपूर्ण है। वश्व साहित्य में आर्यों का बाहर भारत में आना लखा नहीं मलता, हाँ वश्व के अनेक ग्रन्थों में जिनका पुराना इतिहास मलता है, उनमें उनके पूर्वजों का भारत से आकर वहाँ निवास करना लखा मलता है। ईरान के इतिहास और धर्म ग्रन्थ जिन्द अवेस्ता में उनके पूर्वजों का भारत से जाकर ईरान में वास करने का उल्लेख मलता है। जब कोई देश जाति कसी पर वजय प्राप्त करती है तो वह अपने उल्लास और हर्ष को प्रका शत करने के लये अनेक प्रकार के आयोजन करती है, उसे स्थायी बनाने के लये इतिहास लखती है। शलालेख, ताम्र लेख, स्तूप, स्तभ, भवन, स्मारक बनाये जाते हैं, परन्तु पूरे भारत में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मलता, कोई चह्न भी नहीं मलता। इससे पता लगता है क यह एक कपोल-कल्पना है, जो एक षड्यन्त्र के माध्यम से की गई है। इसके वपरीत ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति आदि प्राचीन ग्रन्थों में आर्यों के तिबत से भारत में आने, अनेक युद्ध जीतने आदि का ववरण मलता है, परन्तु मध्य ए शया या कसी अन्य देश से भारत में आकर बसने का, यहाँ के मूल निवा सयों को निकाल कर उनका राज्य छीनने का कोई उल्लेख प्राचीन भारतीय शास्त्रों, साहित्य या इतिहास के ग्रन्थों में नहीं मलता, अतः आर्यों द्वारा द्र वड़ों पर आक्रमण की कल्पना मथ्या षड्यन्त्र मात्र है।

जिन्हें हम द्र वड़, द लत, शूद्र मान रहे हैं, वे कस अर्थ में आर्यों से भन्न हैं? भारतीय हिन्दू समाज के सवर्ण-असवर्ण दोनों ही अंग हैं। दोनों के गोत्र एक से हैं, परपरायें, खान-पान, वस्त्र, आभूषण, पहनावा- सभी कुछ एक जैसा है। सभी के देवी-देवता, धर्मग्रन्थ, उपास्य, उपासना पद्धति- सब एक जैसे हैं। सभी राम, हनुमान, शव, गणेश आदि की पूजा-उपासना करते हैं। व्रत, उपवास, संस्कार सी कुछ पूरे समाज का एक दूसरे से मलता है। सपन्नता-निर्धनता के आधार पर सभी में परस्पर स्वामी-सेवक सबन्ध पाया जाता है, अतः समग्र रूप में समाज एक है। यदि कोई अन्तर है तो वद्या या अ वद्या का, सपन्नता या निर्धनता का, अन्याय या न्याय का अन्तर और परिणाम देखने में आता है। यह सभी समाजों में स्वाभा वक रूप से देखा जा सकता है। इसका मूल कारण भारतीय समाज का जन्मना जाति स्वीकार करने का दुष्परिणाम है। यह अज्ञान, अ वद्या, पाखण्ड, शोषण, सवर्ण-असवर्ण, जन्मना जाति, ऊँच-नीच, छुआछूत के परिणामस्वरूप, जिसका पाश्चात्य लोग लाभ उठाकर समाज में वरोध और द्वेष उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। अंग्रेजों ने पं. भगवद्दत्त के पास भी अपना सन्देश वाहक भेजा था- वे अपनी पुस्तकों में लख दें क जाट लोग इस देश में बाहर से आर्य के रूप में आये हैं, परन्तु पण्डित जी ने दृढ़ता से इसका निषेध कर दिया। जहाँ आर्य वद्वानों ने निषेध कया, वहीं पर धन व प्रतिष्ठा के लोभी लोगों ने अंग्रेजों की इच्छानुसार लेखन भी कया।

इस षड्यन्त्र को ऋ ष दयानन्द ने समझा था और इसका सप्रमाण प्रतिकार भी कया था। सामान्य रूप से आर्यावर्त्त की सीमा मनु के श्लोक 'आसमुद्रात्' से निष्पादित करते हैं, वन्ध्याचल से सतपुडा की ओर हिमालय के मध्य आर्यावर्त की सीमा पढ़ते हैं, परन्तु इसी श्लोक के अर्थ ऋ ष दयानन्द पूर्व-पश्चिम पर्वत शृंखला के मध्य रामेश्वरम् पर्यन्त स्वामी जी आर्यावर्त की सीमा का उल्लेख करते हैं। यहाँ एक घटना का उल्लेख प्रमाण रूप में ठीक होगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने पं. लेखराम की जीवनी लखते हुए एक घटना लखी है क सरस्वती हृषद्वती नदियाँ आर्यावर्त की सीमा बनाती है और पं. लेखराम का ग्राम सरस्वती के दूसरी ओर पड़ता था, तो पण्डित लेखराम कहा करते थे- मेरे गाँव की इस ओर की नदी सरस्वती नहीं है, मेरे गाँव के बाद बहने वाली नदी सरस्वती है, जिससे उनका गाँव भी आर्यावर्त में आ जाता था। सचमुच में भारत में रहने वाले आर्य का गाँव आर्यावर्त से बाहर हो तो अच्छा तो नहीं लगेगा। इसी तर्क को लेकर मैंने एक बार अपने पता जी से कह दिया- आपका गाँव आर्यावर्त में नहीं आता, एक क्षण वे स्तध हुए और अगले ही क्षण बोले- तू नहीं जानता, मेरा गाँव आर्यावर्त में है क्यों क जो संकल्प पाठ उत्तर भारत के गाँव-नगर में कया जाता है, वही मेरे गाँव मेंाी आदि काली से हो रहा है- आर्यावर्ते जबू द्वीपे भरत खण्डे- सचमुच में उनका प्रमाण अकाट्य था।

ऋ ष दयानन्द ने वे दोत्प त्त प्रकरण, वे दोत्प त्त काल के निर्धारण में भारतीय समाज में श्रेष्ठकर्म करने के समय पढ़े जाने वाले संकल्प का उल्लेख कया है, उसमें जब –आर्यावर्ते जबू द्वीपे भरत खण्डे- शदों का पाठ करते हैं, तो सद्ध है इस देश में आने वाले पहले लोग आर्य ही हैं और उन्होंने ही इस देश का नाम आर्यावर्त रखा। इस देश के बदले गये बाद के नामों की चर्चा तो मलती है, परन्तु आर्यावर्त या ब्रह्मवर्त से पहले के कसी भी नाम की चर्चा वश्व इतिहास में नहीं मलती, अतः यह कहना क भारत में आर्य बाहर से आये- यह पाखण्डपूर्ण कथन है। भारत में आर्य बाहर से आये- यह कहना वदतो व्याघात अर्थात् परस्पर वरोधी है, क्यों क इस देश का भारत नामकरण भी आर्यों का है, फर भारत में आर्यों का बाहर से आना कैसे बनेगा।

खडगे ने लोकसभा में आर्यों के बाहर से आने की जो बात कही, उसका कारण है, आजकल कया जाने वाला दुष्प्रचार। भारत जातिगत आधार पर जो आरक्षण कया गया है, इसको आधार बनाकर इस आन्दोलन को इस देश में चलाया जा रहा है। इसके लये अमेरिका, योरोप का ईसाई समुदाय बड़ी मात्रा में धन उपलध कराता है। इस कार्य को करने वाले संगठन भारत में बामसेफ और मूल निवासी परिषद् है। पाश्चात्य लोगों ने ऑस्ट्रे लया, अमेरिका, योरोप के अनेक वश्व वद्यालयों में इस मूलनिवासी लोगों के इतिहास के अनुसन्धान के लए अनेक शोधपीठ भी स्था पत कये हैं, जिनमें डी.एन.ए तक मूल निवा सयों का आर्यों से पृथक् होने की बात कही गई है। ये संगठन ज्योतिबा फूले और डॉ. अबेड़कर के नाम से लोगों को हिन्दू समाज से अलग करने का प्रयास करते हैं। द लत प्रकाशन के नाम से प्रका शत दो सौ से भी अ धक पुस्तकों में यही समझाने का प्रयास कया है क स्वतन्त्रता संग्राम का द लतों से कुछ लेना-देना नहीं है, द लतों का उद्धार अंग्रेजों ने कया है। डॉ. अबेडकर ने ही उनके लये कार्य कया है, समाज में सवर्ण कहलाने वाले लोगों ने उनका शोषण कया है। अंग्रेज शासन उनके लये अच्छा था, स्वतन्त्रता संग्राम तो सवर्णों की अपने अ धकारों की लड़ाई थी, चाहे रानी झाँसी की लड़ाई हो या महाराणा प्रताप व शवाजी की। इनके साहित्य में ऋ ष दयानन्द या स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज या कसी अन्य संस्था द्वारा कये समाज

सुधार की चर्चा नहीं मलती। इनके साहित्य में ऋ ष दयानन्द को ब्राह्मण और सवर्णों का पक्षधर कहकर निन्दा की गई।

वर्तमान में इस कार्य को करने वाले दो संगठन हैं- एक बामसेफ और दूसरा है- मूल निवासी परिषद्। ये निरन्तर द लत जातियों में भारत वरोधी, सवर्ण और असवर्ण के मध्य पृथकतावादी प्रवृ त बढ़ाने का कार्य करते हैं। इसके लये इनका सैंकड़ों की संया में साहित्य प्रका शत कर वतरित कया जाता है। इसी प्रकार की फल्में बनाकर दिखाई जाती हैं। प्रतिवर्ष देश के व भन्न भागों में इनके अ धवेशन होते हैं, जिनमें द लत समाज के लोगों को भाग लेने के लये प्रेरित कया जाता है। सवर्ण या भन्न वचार के लोगों को ये लोग अपने कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति नहीं देते। पुस्तक मेलों में द लत प्रकाशनों की दुकानों पर बिकने वाले साहित्य से इस बात को समझा जा सकता है।

इस कार्य को करने वाली संस्था बामसेफ, जिसका पूरा नाम ऑल इण्डियन बैकवर्ड एंड माइनॉरिटीज एप्लाइज फैडरेशन है, जिसका निर्माण बहुजन समाजवादी पार्टी के संस्थापक कांशीराम और डी.के. खापडे ने अमरीकी सहायता से 1973 में कया था। इसका उद्‍देश्य आरक्षण का लाभ उठाकर भारतीय समाज में सवर्ण-असवर्ण की खाई को गहरी करना और समाज में वघटन के बीज बोना था। सामाजिक लोगों को अभी तक इसका वशेष परिचय नहीं है। जो परि चत भी हैं, वे इनके कार्य को वशेष महत्त्व नहीं देते, परन्तु खडगे ने संसद में बता दिया, यह वचार समाज में तेजी से घर कर रहा है। समाज और सरकार को इसका निराकरण करने के लये स क्रय होना होगा।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं क एक आर्य के अतिरिक्त अपने देश के लये इतने सुन्दर शदों का प्रयोग कोई कर सकता है, जैसा राम ने कया था। राम ने कहा- जननी जन्मभू मश्च स्वर्गाद प गरीयसी। इतना ही नहीं, आर्यों ने अपने भारतवर्ष को देवताओं के लये भी ईर्ष्या का कारण बताया-

गायन्ति देवाः कल गतकानि

धन्यास्तु ते भारत भू मभागे

स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते

भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।

– धर्मवीर

परमेश्वर ही सच्चा गणेश है – इन्द्रजित् देव

DECEMBER 27, 2015 3 COMMENTS

परमेश्वर ही सच्चा गणेश है

– इन्द्रजित् देव

''आर्य वन्दना'' के जनवरी अंक में गणेश की महिमा वषयक एक लेख प्रका शत हुआ है जो पूरी तरह से पौरा णकता से भरपूर है। लेखक महोदय के अनुसार गणेश की पूजा के पीछे यह धारणा कार्य करती है क इससे सभी सुख, सौभाग्य तथा समृद् ध की प्राप्ति होती है तथा जीवन में सभी बाधाओं एवं वघ्नों से मुक्ति मलती है। लेखक ने यह भी लखा है क पार्वती ने अपने शरीर पर इतना उबटन लगा राा था क जिससे एक मनुष्य का पुतला बन सके। पार्वती ने फर उसमें प्राण फूँके और उसे अपना पुत्र बनाया। यह भी लेख में लखा है क शव ने कहा जो संसार का चक्कर लगाकर प्रथम आएगा, वही प्रथम पूजनीय होगा तथा सभी देवता तेजी से दौड़े परन्तु गणेश नामक शव का पुत्र न दौड़ सका क्यों क उसका शरीर भारी था। गणेश ने अपने माता- पता का ही चक्कर लगाया एवं उन्हें प्रणाम करके बैठ गये, अतः गणेश प्रथम पूज्य बन गया इत्यादि।

पूरा लेख अवैज्ञानिक, तर्कहीन व प्रमाणहीन है। लेखक महोदय इसे ''कल्याण'' या कसी अन्य पौरा णका पत्रिका में छपा लेते तो उनकी उपरोक्त बातों का कोई वरोध न करता, परन्तु एक वैदिक पत्रिका में यह प्रका शत हुआ है, अतः इसे पढ़कर हमें आश्चर्य व दुःख हुआ है। इसके उत्तर में कुछ बातों को तर्क व वज्ञान के आधार पर लखना वाञ्छनीय है, ता क आर्य समाजियों को तो सत्य का ज्ञान हो सके तथा वे भ्रम में न रहें।

हमारे कुछ प्रश्न लेखक से हैंः– यदि स्त्री के शरीर पर उबटन लगा लेने से पुत्र का शरीर बन सकता है तो ईश्वर ने पुरुष को क्यों उत्पन्न कया? पार्वती हो या कोई अन्य स्त्री, उसके शरीर में गर्भाशय की स्थापना ही क्यों की? वेदानुसार ववाह का मुय उद्देश्य उत्तम सन्तान उत्पन्न करना है। यदि पार्वती बिना पति के पुत्र को उत्पन्न करने की कला जानती थी तो उसने शव से ववाह ही क्यों कया? क्या शव में कोई कमी थी। उबटन से पुत्र-प्राप्ति की वद्या का उल्लेख कस वेद या कस आयुवैदिक अथवा एलोपै थक ग्रन्थ में है? उबटन लगाकर सोने से व्यक्ति के शरीर से वह झड़ या उतर जाना चाहिये परन्तु पार्वती ने उतरने नहीं दिया, तभी तो उबटन से पुत्र बना लया व फूँक मारकर उसे चेतन गणेश बना दिया। लेखक को चाहिए क इस ईलाज का बांझ स्त्रियों में प्रचार करें ता क वे भी अपने शरीर पर उबटन लगा लया करें व जब चाहें, वे अपने उबटन से पुत्र का पुतला बनाकर व उस पुतले में प्राण फूँक कर सन्तानवती बन जाया करें। वे पति तथा वैद्य-डॉक्टर की सहायता लेने की आवश्यकता से मुक्त हो जाया करेंगी। प्राण फूँकने से पुत्र में आत्मा आती है तो मृत पुत्र की कसी भी माता को आज तक पुत्र- वयोग का दुःख क्यों भोगना पड़ता रहा है? पुत्र की मृत्यु होने पर पुत्र का शरीर तो घर में पड़ा होता है। पार्वती की तरह पुत्र की माता उस मृत देह में फूँ क मार कर पुत्र को जी वत कर लया करें। यह फार्मूला बताने के लए हम लेखक के बहुत धन्यवादी रहेंगे।

पार्वती ने अपने उबटन से उत्पन्न कए गणेश को घर के बाहर बैठा दिया, ता क वे निश्चित होकर स्नान कर सकें व कोई भी व्यक्ति भीतर प्रवेश न कर सके, परन्तु शवजी स्वयं को न रोक सके व पुत्र गणेश व पता शव के मध्य युद्ध छिड़ गया। परिणामतः पुत्र का सर काटकर शव जी भीतर प्रवेश कर गए। पार्वती ने हाहाकार मचाया तो शव ने एक ह थनी का सर जोड़कर पुत्र को पुनः जी वत कर दिया। हमारी इच्छा वद्वान लेखक से यह जानने की है जिस शवजी को पौरा णक व लेखक स्वयं ईश्वर मानते हैं, उसके घर में इतनी अ धक गरीबी क्यों थी क वह अपने घर में दरवाजा बन्द करके स्नान करने योग्य एक बाथरूम भी

नहीं बनवा सका? जब इतनी निर्धनता थी ही तो वह ईश्वर कैसे कहला सकता है, क्यों क ईश्वर का अर्थ ऐश्वर्यशाली होता है। लेखक को यह भी बताना होगा क जब शवजी की पत्नी घर के भीतर स्नान कर रही थी तथा उनके पुत्र गणेश ने उन्हें भीतर जाने से रोका तो वे रुके क्यों नहीं? भीतर जाने का उनका उतावलापन उनके संयम की पोल खोलता है। इतना उतावलापन उनमें था क भीतर जाने से रोकने वाले अपने पुत्र का सर भी काटना उन्हें अधर्म प्रतीत नहीं हुआ। कसी का सर जब कटेगा तो उसके शरीर से उसके प्राण व उसकी आत्मा निकल जाएगी, यह एक दृढ़ वैज्ञानिक नियम है। तत्पश्चात् कोई भी पता, माता, राजा, वैज्ञानिक या गुरु तो क्या, स्वयं ईश्वर भी पुनः प्राण तथा आत्मा को उसी शरीर में प्रवेश नहीं करा सकता।

लेखक के अनुसार जब पार्वती ने अपने पति के समक्ष पुत्र वयोग का दुखड़ा रोया, शव ने एक ह थनी का सर सरहीन पुत्र के सर पर फट करके जी वत कर दिया। हमारा प्रश्न उपरोक्त लेख के लेखक से यह है कस कपनी के फैवीकोल या कीलों से गणेश का सर पुनः फट कया? आज परस्पर लड़ाई के अनेक मामलों में एक दूसरे के सर काटे जा रहे हैं। लेखक की मान्यता वाले जिसी कसी ग्रन्थ में सरहीन धड़ से कसी अन्य प्राणी का सर जोड़ने की सफल व ध का उल्लेख है, उस ग्रन्थ की पृष्ठ संया सहित नाम व लेखक का नाम बताने की कृपा करें ता क आज जहाँ कहीं परस्पर लड़ाई में सर कटते हैं, मैं वहाँ सर जोड़ने में कुछ सहायता कर सकूँ।

हमारा अगला प्रश्न यह है क शव जी में ह थनी का सर अपने मृत पुत्र के धड़ से जोड़कर पुनर्जी वत करने की योग्यता व क्षमता थी तो उन्होंने अपने पुत्र का पहला सर ही क्यों नहीं जोड़ दिया? ह थनी की मृत्यु कर के अपने पुत्र को पुनर्जी वत करना क थत ईश्वर शव की शोभा बढ़ाने वाला कार्य है क्या? कोई भी मनुष्य जिसका धड़ तो मनुष्य का हो परन्तु सर ह थनी का हो, क्या सूखपूर्वक सो सकेगा?

उपरोक्त लेख के अनुसार एक बार देवों में यह ववाद हो गया क उन सबमें कस देवता की पूजा सर्वप्रथम होनी चाहिए? शव ने उन्हें संसार का चक्कर लगाकर आने को कहा। जो दौड़ में सबसे पहले लौटेगा, वही देवता प्रथम पूज्य होगा। गणेश का शरीर भारी था। वह न दौड़ सका। उसने माता- पता का चक्कर लगाया और प्रणाम करके बैठ गया। अतः प्रथम पूज्य माने गए। हमारा निवेदन यह है क प्रथम पूज्य देव का निर्णय करने का लाईसैंस (=अ धकार) शवजी को कसने दिया? उसका निर्णय मान्य क्यों होना चाहिए? वे देव क्यों कर माने जा सकते हैं, जब परस्पर उनमें होड़ मची हुई थी क मेरा पूजन सर्वप्रथम होना चाहिए? लोकैषणा रहित व्यक्ति देवता होता है जब क लोकैषणायुक्त (=प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा करने वाला) व्यक्ति मनुष्य कहलाता है, देवता तो कदा प मान्य हो ही नहीं सकता। यहाँ हम आचार्य यास्क द्वारा निरुक्त 7/11 में व र्णत देवों का वर्णन करना उ चत समझते हैं- देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थाने भवतीति वा। इसके अनुसार निम्न ल खत कुछ मूर्तिमान व कुछ अमूर्तिमान देव ये होते हैंः-

1. दान देने वाले= मनुष्य, वद्वान् व परमेश्वर।
2. दीपन, प्रकाश करने वाले= सूर्योदि लोक, सब मूर्तिमान द्रव्यों का प्रकाश करने वाले।

3. द्योतन करने वाले= सत्योपदेश करने से भी देव अर्थात् माता, पता , आचार्य व अति थ तथा पालन, वद्या व सत्योपदेशादि करने वाले।
4. द्युस्थान वाले देव= सूर्य की करण, प्राण तथा सूर्यादि लोको का भी जो प्रकाश करने हारा है, वह परमेश्वर देवों का भी देव है।
5. अन्य देव= इन्द्रियाँ, मन। ये शदादि वषयों तथा सत्यासत्य का प्रकाश करते हैं। वेद मन्त्र भी देव हैं।

मह षे दयानन्द सरस्वती ''सत्यार्थप्रकाश'' के सप्तम समुल्लास में इस वषय में लखते हैं- ''देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहते हैं, जैसी क पृ थवी।..........जो त्रयस्त्रिशनिशता'' इत्यादि वेदों में प्रमाण हैं, इसकी व्याया 'शतपथ' में की है क-तैंतीस देव अर्थात् पृ थवी, जल, अग्नि, वायु,आकाश, चन्द्रमा,सूर्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से ये आठ वसु हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान, सामान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और जीवात्मा, ये ग्यारह रुद्र इस लए कहाते हैं क जब शरीर को छोड़ते हैं, तब रोदन कराने वाले होते हैं। संवत्सर के बारह महीने बारह आदित्य इस लए कहाते हैं क ये सब की आयु को लेते जाते हैं। बिजली का नाम इन्द्र इस हेतु है क वह परम ऐश्वर्य का हेतु है। यज्ञ को प्रजापति कहने का कारण यह है क जिससे वायु, वृष्टि, जल, औषधी की शुद् ध, वद्वानों का सत्कार और नाना प्रकार की शल्प वद्या से प्रजा का पालन होता है। ये तैंतीस पदार्थ पूर्वोक्त गुणों के योग से देव कहाते हैं।

लेखक सत्यपाल भटनागर जी से अनुरोध है क उपरोक्त ववरण व व्याया को ध्यान से पढ़ने का कष्ट करें व पाठकों को स्पष्ट करें क कौन-से वे देव थे जिनमें अपनी पूजा प्रथमतः कराने की थी? वास्त वकता यह है क उपरोक्त देवों से अतिरिक्त काल्पनिक देवों की धारणा लेखक के मस्तिष्क में है। उसे त्याग दें व केवल उपरोक्त वास्त वक देवों की मान्यता स्था पत करें।

लेखक जी! पुत्र को अपने माता- पता का आदर व यथो चत सेवा करनी ही चाहिए, यह नि र्ववाद है, परन्तु गणेश की तरह माता- पता की परिक्रमा कर लेना न तो कसी प्रकार की सेवा है तथा न ही इस कार्य में तनिक भी आदर करने का भाव है। गणेश के मन मेंाी अपनी पूजा सर्वप्रथम कराने की ही इच्छा थी जिसे शास्त्रीय भाषा में लोकैषणा कहते हैं। हम लेखक महोदय को स्मरण दिलाना चाहते हैं क इतिहास में माता- पता का आदर व उ चत सेवा करने वाले कई सुपुत्रों के प्रमाण उपलध हैं। श्रवण कुमार तथा मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र इत्यादि के कार्यों को ध्यान में रखकर सो चए व पाठकों को बताइए क माता- पता के शरीरों की परिक्रमा करने वाले गणेश में सुपुत्र के गुण थे अथवा श्रवण कुमार में? रामचन्द्र जी ने तो राजभवन के सुख-सु वधाओं का परित्याग करके 14 वर्षों तक वनों में रहकर अपने पता की प्रतिष्ठा तथा सौतेली माँ की इच्छा की रक्षा की थी। गणेश के जीवन में सेवा की एकाी घटना जब उपलध नहीं होती तो उसका पूजन सर्वप्रथम करने-कराने में औ चत्य क्या है? सर्वप्रथम पूजन करने-कराने की कसी व्यक्ति की यदि इच्छा है तो श्रवण कुमार अथवा रामचन्द्र जी की। वैसे आज न गणेश संसार में है,न ही श्रवण कुमार कहीं दिखते हैं तथा न ही रामचन्द्र जी कहीं मलते हैं। उनकी पूजा कैसे करोगे- कराओगे? केवल चत्रों, मूर्तियों या थाली में जल रही धूप अगरबत्ती को मत्था टेकने का नाम पूजा करना नहीं है। पूजा का अर्थ मह षे दयानन्द सरस्वती जी ने ''आर्योद्देश्यरत्नमाला'' में इस प्रकार लखा है- ''जो ज्ञानादि

गुण वाले को यथायोग्य सत्कार करना है, उसको 'पूजा' कहते हैं।'' आज जो कुछ हो रहा है, वह पूजा न होकर अपूजा है, क्यों क मह ष दयानन्द सरस्वती ने ''आर्योद्देश्यरत्नमाला'' में यह भी लखा है- ''जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ और जो सत्कार के योग्य नहीं है। उसका जो सत्कार करना है, वह ''अपूजा'' है।'' थोड़ी देर के लए हम बहस के लए मानते हैं क गणेश ने अपने माता- पता की परिक्रमा की थी, इस लए सर्वप्रथम उसी की पूजा करनी चाहिए तो प्रश्न उत्पन्न होगा क जिस गणेश ने वह कार्य कया था, वह ही आज कहाँ नहीं है। पत्थर की बनी मूर्ति या कागज में दिख रहा गणेश वास्त वक गणेश नहीं है। आप पत्थर या कागज की पूजा कराते हैं जो जड़ पदार्थ हैं, ज्ञानरहित, क्रया रहित हैं। इनका सत्कार हो नहीं सकता, अतः इस क थत गणेश से जो कुछ करते हो, वह अपूजा है व इससे कुछ लाभ नहीं होता, हानि अवश्य होती है।

गणेश का पूजन करना है तो पहले गणेश शद का अर्थ समझना चाहिए। 'गण संयाने' इस धातु से गण शद सद्ध होता है। उसके आगे ईश शद लगाने से गणेश शद सद्ध होता है। 'गणानां समूहानां जगतामीशः स गणेशः' अर्थ= सब गणों नाम संघातों का अर्थात् सब जगतों का ईश स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है।

-सत्यार्थप्रकाश, प्रथम समुल्लास

परमेश्वर के अनेक गुणवाचक, कर्मवाचक, सबन्धवाचक नाम हैं। इनमें शव, गणेश, ब्रह्मा, वष्णु, इन्द्र तथा सरस्वती आदि नाम भी हैं। वेद क्यों क सृष्टि के प्रथम दिन ईश्वर ने दिए थे, उस दिन इन नामों के शरीरधारी मनुष्य कोई न थे। सामाजिक व्यवहार के लए मनुष्यों के नाम रखना आवश्यक होता है, अतः वेदों में प्रयुक्त शदों को अपने व अपनी सन्तान के नाम करण हेतु प्रयोग करना पड़ा था। आज भी ऐसा ही होता है। वेद में यदि गणेश व शवादि की पूजा का आदेश है तो वह सदैव रहने वाले अशरीरी गणेश से ही अ भप्रेत है, न क बाद में शरीरधारी हुए कसी गणेश नामक व्यक्ति से। परमेश्वर से बड़ा वघ्नहारी कौन होगा? वस्तार से इस वषय को समझने हेतु ''सत्यार्थप्रकाश'' का प्रथम समुल्लास पढ़ना चाहिए। ' शवपुराण' व अन्य सभी पुराणों को मह ष दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास ''संस्कार व धः'' के वेदारभ संस्कार तथा ''ऋग्वेदादि भाष्य भू मका'' के ग्रंथ प्रामान्याप्रमाण्य वषय के अन्तर्गत पठन-पाठन हेतु त्याज्य ग्रंथों में रखा है। फर लेखक ने आर्य समाजी होते हुए ग्रहण क्यों कया?

-चूना भट्ठियाँ, सटी सेंटर के निकट, यमुनानगर, हरि.

महात्मा हंसराज के तीन कथनः : राजेन्द्र जिज्ञासु

DECEMBER 23, 2015 LEAVE A COMMENT

महात्मा हंसराज के तीन कथनः– महात्मा हंसराज के व्यायानों व लेखों में मुझे तीन अनमोल मोती मले। आपने कहा क एक बार ला. सांईदास ऋ ष का ऐश्वरवाद, उसकी ही उपासना पर व्यायान सुनकर भीड़ के साथ जब बाहर निकले तो एक ब्रह्म समाजी नेता ने भाषण सुनकर कहा क मेरा तो अब तक सारा ही जीवन निरर्थक गया। मैंने जड़पूजा-मूर्तिपूजा का ऐसा खण्डन कभी नहीं कया, जैसा आज निर्भीक स्वामी दयानन्द ने कया है। वहाँ महात्मा जी ने

इस ब्रह्म समाजी नेता का नाम नहीं दिया। मेरा मत है क यह ला. काशीराम जी प्रधान पंजाब ब्रह्मसमाज हो सकते हैं। वह मह ष की निडरता, वद्वत्ता व अटल ईश्वर वश्वास की बहुत प्रशंसा कया करते थे।

दूसरा कथन जो मुझे प्रेरणाप्रद लगता है, वह यह है क महात्मा जी हजरत मुहमद की एक हदीस सुनाकर आर्यों के खरेपन की पहचान बताया करते थे। कसी ने मुहमद जी से पूछा क आपकी सबसे प्यारी बीवी कौन है? प्रश्नकर्त्ता समझता था क पैगबर को हजरत आयशा (जो सबसे छोटी थी) से अत्य धक प्रेम है सो यह उसी का नाम लेंगे, परन्तु रसूल अल्लाह ने हजरत खदीजा का नाम लया और कहा क वह उस समय मुझ पर ईमान लाई, जब मुझे कोई नहीं जानता मानता था।

यह हदीस सुनाकर महात्मा जी कहा करते थे- धर्मप्रचार- ऋ ष के मशन के लए कौन कष्ट झेलता व समय देता है? जो ऋ ष मशन का दीवाना है, वही महात्मा जी की दृष्टि में बड़ा व आदरणीय है।

महात्मा जी का तीसरा प्रय कथन मेरे लये यह है क हम यह चाहते हैं क मेरा तो पाँवाी गीला न हो, परन्तु देश जाति का बेड़ा पार हो जाये।

आओ! हम सब सोचें क हम भी क्या इसी श्रेणी में तो नहीं आते। वैदिक धर्म पर जब वार हो तो उत्तर दूसरे दें। वेद पर, ऋ ष पर प्रहार हो या अंध वश्वासों से लड़ना हो- मर्तिपूजकों से, ईसाइयों से, मुसलमानों से, रजनीश आदि नास्तिकों,ोगवादियों व गुरुडम वाले तिलक कण्ठीधारी बाबाओं से, जातिवादी तत्त्वों पर लखने बोलने के लए कोई और आगे आये, परन्तु मैं अपने पद से चपका रहूँ। कतने वर्षों तक आप प्रधान व मन्त्री रहे- यह कोई इतिहास नहीं। इतिहास दुःख कष्ट झेलने को कहते हैं। कभी कसी से टक्कर ली? कभी कोई अ भयोग चला? भारत सरकार ने निजाम की जीवनी दिल्ली से छापी। उसको महिमा मण्डित कया, फर श्रद्धाराम की आड़ में ऋ ष की निन्दा की। आपके मुख पर टेप लगी है। आप कुछ बोलने का साहस ही न कर पाये। उत्तर में दो पक्तियाँ तो लख देते। भारत सरकार को एक रोष भरा पत्र तो लख सकते थे। संघर्ष करना जिनके बस की बात नहीं, जो घर में ही कलह जगाने के लए बेचैन रहते हैं, उनकी करनी व कथनी से इतिहास नहीं बन सकता। ऐसे लोग रिपोर्ट का पेट तो भर सकते हैं, परन्तु इतिहास ऐसे लोगों को कूड़ेदान में फेंक देता है। इतिहास पं. लेखराम, श्याम भाई, भक्त फूल संह, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण संह व पं. रु चराम ही रच सकते हैं। इतिहास निर्माता तो स्वामी चदानन्द अनुभवानन्द जी थे, जिन्हें पद प्रे मयों ने बिसार दिया है।

ब्रह्मकुमारियों के षड़यंत्र से सावधान – स्वामी पूर्णानन्द

DECEMBER 19, 2015 39 COMMENTS

ब्रह्मकुमारियों के षड़यंत्र से सावधान

– स्वामी पूर्णानन्द

लगभग 58 वर्ष पहले स्वामी पूर्णानन्दजी द्वारा लखा गया यह आलेख आज भी हमें सावधान करता है।

-सपादक

सब हिन्दू धर्मावलबी सज्जनों की सेवा में निवेदन कया जाता है क लगभग 2 वर्ष से मेरठ में ब्रह्माकुमारियों का एक गुप्त आंदोलन चल रहा है जो हिन्दू धर्म और हमारी संस्कृति के मौ लक सद्धान्तों को जड़-मूल से उखाड़ कर फैंकने में प्रयत्नशील है, आर्य समाज इसको आशंका की दृष्टि से देखता है। दैवयोग से दिनांक 11.12.56 को हमें ब्रह्माकुमारियों की ओर से उनके एक उत्सव में स म लत होने का निमंत्रण मला और साथ ही हमें यह आश्वासन भी मला क ब्रह्माकुमारियों के उपदेश के पश्चात् आप लोगों को शंका-समाधान के लये समय दिया जायेगा।

हम सांय 6 बजे शर्मा स्मारक में पहुँच गये, जहाँ उनका उत्सव हो रहा था। हमने 2 घंटे तक उनके व्यायानों को सुना और व्यायान की समाप्ति पर शंका-समाधान के लये समय माँगा, परन्तु उन्होंने उत्तर देना स्वीकार न कया और टाल दिया क हमारा नियम बहस करने का नहीं। उनके इस व्यवहार से हमें निश्चय हो गया क यह केवल एक षड़यत्र है, जिसके द्वारा हिन्दू दे वयों को अपने पाखण्ड के जाल में फँसाना है, इस लये हम हिन्दू भाई-बहनों को सावधान करते हैं क वह इनके भुलावे में न आवें।

पोल खोलने हेतु उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं-

20 वर्ष पूर्व संध के एक व्यक्ति लेखराज नेएक कीर्तन मण्डली बनाई, जिसमें केवल स्त्रियाँ ही जाती थी। वह कीर्तन मण्डली लेखराज के घर पर ही लगती थी। रात्रिभर कीर्तन और रासलीला होती थी। अपने पाखण्ड पर पर्दा डालने के लये इस मण्डली का नाम 'ओ3म् मण्डली' रखा गया। जब लेखराज के पास पर्याप्त संया में कुँआरी कन्याएँ और ववाहिता स्त्रियाँ आने-जाने लगीं तो उसने कहना प्रारभ कया क भगवान चतुर्भुज वष्णु ने मेरे अंदर प्रवेश कया है, मैं गोपीवल्लभ भगवान कृष्ण हूँ। इस महाघोर क लकाल में पाप बहुत बढ़ रहे हैं, उनको मटाने के लये मेरे शरीर में भगवान का अवतरण हुआ है। अपने पास आने वाली कन्याओं और स्त्रियों को कहा क तुम पूर्व जन्म की गो पयाँ हो, उनमें से एक को राधा बतलाया।

स्त्रियों को कहा क तुहारे सबंधी (भाई, पति, माता, पता इत्यादि) तुहारे वकारी सबंधी हैं, वे तुहारे वास्त वक सबंधी नहीं, वे तो तुहारे शत्रु हैं। वे कंस और जरासंध हैं जो तुहें गृहस्थ रूपी जेल में रखना चाहते हैं। तुहारा नित्य सबंध तुहें मेरे पास आने से रोकें तो मत मानों। लेखराज के इस प्रचार का यहा प्रभाव हुआ क बहुत सारी कुँआरी कन्याओं और स्त्रियों ने अपने सबं धयों की मार्यादाओं के अंदर रहने से इंकार कर दिया। इससे संध की हिन्दू जनता कुलबुला उठी।

उन कन्याओं के वारिसों ने लेखराज के ऊपर मुकदमा चलाया, जिसके फलस्वरूप न्यायालय ने लेखराज को अपराधी ठहरा कर जेल भेज दिया और सरकार ने ओ3म् मण्डली पर प्रतिबंध लगा दिया। जेल से छूटने के पश्चात् लेखराज कराँची से भागकर भारत में आ गया और

माउंटआबू पर अपना अड्डा बनाकर उसी मण्डली का नाम बदल कर राजस्व अश्वमेघ अ वनाशी ज्ञानयज्ञ रखा।

इस मण्डली में इस समय 55 स्त्रियाँ और 68 कन्याएँ हैं जो अपने माता- पता और भाई-बंधुओं को छोड़कर अपने घरों से भाग आई हैं। इन्होंने 14 बड़े-बड़े नगरों में अपने केन्द्र खोले हुए हैं। एक-एक केन्द्र में कई-कई स्त्रियाँ रहती हैं। हिन्दुओं को धोखें में डालने के लये इन स्त्रियों का नाम ब्रह्माकुमारियाँ रखा हुआ है। वे लोगों के घरों में जाती हैं और नौजवान स्त्रियों को सजबाग दिखा कर अपने काबू में कर लेती हैं।

शुरू-शुरू में भगवान कृष्ण आदि हिन्दू देवताओं का नाम लेकर और श्रीमद्भगवद्गीता की बातें सुना कर उन पर यह प्रभाव डालती हैं क हम भी हिन्दू ही हैं और हम तुम लोगों को सहज योग सखाती हैं। परंतु आहिस्ता-आहिस्ता जब स्त्रियाँ इनके जाल में फँस जाती हैं तो हिन्दू धर्म और उसके धा र्मक ग्रंथों-यथा वेद, उपनिषद्, गीता, महाभारत, रामायण, स्मृतियाँ, पुराण, इतिहास और दर्शन शास्त्रों की निंदा करने लगती हैं। वे हिन्दुओं की भक्ति, पूजा-पाठ, जप-तप, यम-नियम, संध्या और गायत्री को झूठा बतलाती हैं और कहती हैं क लेखराज का ध्यान करने से ही इस लोक और परलोक की सद् ध हो सकती है और यह क लेखराज ही परम पता परमात्मा त्रिमूर्ति भगवान शव हैं।

उनकी पुस्तकों के कुछ उदाहरण पाठकों की जानकारी के लये नीचे दिये जाते हैंः-

1. **1**. 'घोरकलहयुग वनाश' नाम की पुस्तक के पृष्ठ-12 पर लखा है क ''बुतपरस्त हिन्दू कहलाने वाली कौम व्या भचारी भक्तिमार्ग में फंस कर इतनी बुतपरस्त बन गई है क अपने शास्त्रों में अपने देवताओं के अनेक मनोमय चत्र बनाकर उन्हें कलं कत कया है। वे अपने शास्त्रों में लखते हैं क ब्रह्मा अपनी बेटी सरस्वती पर मोहित हुआ, शव मोहनी के ऊपर मोहित होकर उसके पीछे पड़ा।''
2. **2**. इसी पुस्तक के पृष्ठ – 13 पर लखा है- ''वास्तव में परमात्मा का अवतार एक ही है, जो कल्प-कल्प के संगम पर एक ही बार भारतवर्ष में साधारण स्वरूप में बूढे तन (लेखराज के बूढे शरीर) में गुरु ब्रह्मा नाम से प्रत्यक्ष होता है, न क अनेक रूपों से अनेक बार, जैसा क मूढमति हिन्दू लोग शास्त्रों में दिखाते हैं।''
3. **3**. फर उसी पृष्ठ पर लखा है- ''हिन्दू लोगों के बड़े-बड़े गुरु, वद्वान, आचार्य, पण्डित इत्यादि इतना भी नहीं जानते क गीता में जो महावाक्य नूधे हैं, वे कसके हैं और भागवत में कसका चरित्र गाया गया है। वे समझते हैं क गीता श्रीकृष्ण ने उच्चरण की है और भागवत मेंाी श्री कृष्ण का जीवन चरित्र नूधा हुआ है, जिस कारण 'कृष्णम् वंदे जगत् गुरूम्' गाते हैं, यह इनकी बड़ीाारी भूल है।''.........श्रोमणी भगवद्गीता से हम सद्ध कर सकते हैं क गीता में श्रीकृष्ण के महावाक्य नहीं हैं, बल्कि परमात्मा त्रिमूर्ति गुरु ब्रह्मा (लेखराज) के महावाक्य हैं।
4. **4**. ''रामायण भी श्रीरामचन्द्र का जीवन-चरित्र सद्ध नहीं करती।.... वास्तव में रामायण तो एक नावल (उपन्यास) है, जिसमें तो एक सौ एक प्रतिशत मनोमय गपशप डाला गया है।''-उसी पुस्तक का पृष्ठ-14
5. **5**. फर उसी पुस्तक के पृष्ठ-16 पर लखा है-'' पता श्री परमात्मा गुरु ब्रह्मा की कल्प पहले वाली गाई गीता में महावाक्य है क भक्तिमार्ग के अनेक प्रयत्न जैसे क वेद

अध्ययन,यज्ञ, जप, तप, तीर्थ, व्रत, नियम, दान, पुण्य,संध्या, गायत्री, मूर्तिपूजा, प्रार्थना इत्यादि करने से मैं नहीं मलता।''

6. **6**. 'ब्रह्माकुमारियों की संस्था का परिचय' नाम की पुस्तक में लखा है- ''भागवत प्र सद्ध गो पयाँ श्री ब्रह्मा की हैं न क श्रीकृष्ण की।''-पृष्ठ 4
7. **7**. श्रीकृष्ण को योगीराज अथवा जगत्गुरु अथवा जगत्पिता नहीं कहा जा सकता…श्री कृष्ण सृष्टि को ज्ञान नहीं देते।''-पृष्ठ-6
8. **8**. 'घोर कलहयुग वनाश' में लखते हैं -''हर एक नर-नारी अपने से पूछे क मैं अपने परम पता निराकार परमात्मा और साकार ईश्वर पता गुरु ब्रह्मा और मातेश्वरी श्री सरस्वती आदम और बीवी (हव्वा) के नाम, रूप निवास-स्थान और अवतार धारण करने के समय को जानता हूँ।''-पृष्ठ – 1
9. **9**. उसी में लखा है -''जो साकार वश्व पता आदिदेव त्रिमूर्ति गुरु ब्रह्मा, दैवी पता इब्राहिम, बुद्ध और क्राइस्ट हैं जो हर एक कल्प-कल्प अपने-अपने समय पर अपने-अपने वारिसों सहित अपना-अपना देवी-देवता इस्लामी, बौद्ध और क्रश्चियन घराना स्थापन करने अर्थ नि मत बने हुए हैं।''- पृष्ठ -2

पाठक इस थोड़े से लेख से समझ सकते हैं क हिन्दुओं को अपने स्वधर्म से भ्रष्ट करने के लये ब्रह्माकुमारियों का यह कतना भयंकर षड़यंत्र रचा हुआ है, इस लये हिन्दुमात्र से सानुरोध निवेदन है क आगामी वनाश को दृष्टि में रखकर भेड़ों की खाल में ढकी हुई इन भे ड़नों को अपने घरों में आने से सर्वथा रोक दें और अपने स्त्री-बच्चों को इनकी काली करतूतों से परि चत करा देवें। इनके वशेष परिचय के लये शीघ्र ही और साहित्य आपकी सेवा में प्रस्तुत कया जायेगा।

संकलन – डॉ. वीरोत्तम तोमर,

सौजन्य से-आर्य शखा स्मारिका, नवबर-**2014** मेरठ शहर

वैदिक पशुबन्ध इष्टि (यज्ञ) का वैज्ञानिक ववेचन (एक सं क्षप्त नोट) – डॉ. पुष्पा गुप्ता

DECEMBER 16, 2015 7 COMMENTS

श्री आर.बी.एल. गुप्ता बैंक में अ धकारी रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी डॉ. पुष्पा गुप्ता अजमेर के राजकीय महा वद्यालय संस्कृत वभाग की अध्यक्ष रहीं हैं। उन्हीं की प्रेरणा और सहयोग से आपकी वैदिक साहित्य में रु च हुई, आपने पूरा समय और परिश्रम वैदिक साहित्य के अध्ययन में लगा दिया, परिणामस्वरूप आज वैदिक साहित्य के सबन्ध में आप अ धकारपूर्वक अपने वचार रखते हैं।

आपकी इच्छा रहती है क वैज्ञानिकों और वज्ञान में रु च रखने वालों से इस वषय में वार्तालाप हो। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस वर्ष वेदगोष्ठी में एक सत्र वेद और

वज्ञान के सबन्ध में रखा है। इस सत्र में वज्ञान में रु च रखने वालों के साथ गुप्त जी अपने वचारों को बाँटेंगे। आशा है परोपकारी के पाठकों के लए यह प्रयास प्रेरणादायी होगा।

-सपादक

वैदिक पशुबन्ध इष्टि को लेकर भारतीय समाज में अनेक मथ्या भ्रांतियां उत्पन्न हो गई है।

''वैदिक यज्ञों में पशुओं की ब ल दी जाती थी'' यह सर्वथा मथ्या भाषण प्रचारित हो रहा हैं।

सर्वप्रथम इस बात को समझना आवश्यक है- ये सृष्टि में होने वाले यज्ञ हैं जो महाप्रलय/प्रलय की अवस्था में प्रजापति द्वारा प्रारभ कये गये थे। महाप्रलय की वैज्ञानिक स्थिति क्या होगी? नासदीय सूक्त उस स्थिति को बता रहा है परन्तु हमारी वैज्ञानिक दृष्टि न होने से हम उस स्थिति की ठीक से कल्पना नहीं कर पा रहे हैं। स लल अवस्था का अर्थ है- जिसमें सब कुछ लीन हो गया था अर्थात् भौतिक सृष्टि बिल्कुल नष्ट हो गई थी तथा सब कुछ आग्नेय स्थिति में था – करोड़ों डग्री के तापमान पर केवल ऊर्जा ही ऊर्जा (Heat Energy)थी। सब कुछ ऊर्जा द्वारा ही व्याप्त था इससे इसे आपः अवस्था भी कहा गया। स लल तथा आपः का अर्थ जल ले लया जाता है जो क पूर्णतया मथ्या अर्थ है।

आ धभौतिक सृष्टि के प्रारंभ करने का मूल सद्धांत है करोड़ों डग्री के तापमान में व्याप्त ऊर्जा को संहित कर(Condensation Process) व भन्न प्रकार की तरंगों एवं मूल भौतिक कणों में परिवर्तित करना तथा परमाणुओं का निर्माण करना। इतने अ धक तापमान पर क्या कोई पशु – अश्व, ऋषभ, गौ आदि हो सकते हैं?

पशु क्या है? शतपथ ब्राह्मण 6.2.1.2-4 के अनुसार अग्नि ने 5 पशुओं – पुरुष, अश्व, गौ, अ व, अज को देखा। यत् पश्यति तस्मात् पशवः। प्रजापति ने इन 5 पशुओं को अग्नि में देखा आश्चर्य है क ब्राह्मण वचनों पर ध्यान दिये बिना हमने पशुओं का अर्थ आज के लौ कक प्रच लत शदों के आधार पर करके कतना बड़ा अनर्थ कर दिया है?

पशुबन्ध का अर्थ होगा- पशु का बन्धन- पशु को बांधना(Bonding of Animal) – आश्चर्य है क पशु बन्ध को – पशुवध कहके बहुत ही सरल हास्यास्पद अर्थ कर दिया गया- पशु का वध करना (Killing of Animal)यही अर्थ वैदिक पशु बन्ध यज्ञ के यथार्थ अर्थ को न समझने के कारण भ्रांतियां पैदा कर रहा है। कुछ ब्राह्मणों / वद्वानों ने – पशुबन्ध के स्थान पर पशुवध करके वेदों के वास्त वक अर्थ का अनर्थ ही कर दिया ।

पचति क्रया का अर्थ कर दिया पशु को पकाना परंतु यह तात्पर्य यहाँ नहीं हैं। पचति का अर्थ पचाना कसको? करोड़ों डग्री की ऊर्जा को संहित करना। अश्व का अर्थ अश्नुते अर्थात् व्याप्त करना। पुरुष – जो पुर में शयन करता है। अर्थात् जो भी भौतिक कण या तरंग का निर्माण होगा उसका केन्द्रीय बिन्दु। गौ गति का प्रतीक है। अ व रक्षा करने के अर्थ में है। अज अजन्मा((Heat Energy)है। प्रजापति ने इन 5 पशुओं को अर्थात् 5 गुण धर्मों को अग्नि में देखा।

श मता से अ भप्राय है शमन करने वाला। त्वष्टा रूप अग्नि ही श मता है जो पशुओं को तराश करके एक निश्चित रूप (आकृति) में लाता है – अत्य धक ताप की ऊर्जा का शमन करते हुए, काट-छाँट कर एक निश्चित प्रकार की प्रकाश तरंग को बनाना। ब्राह्मण वचन है- पशु अग्नि है , पशु छंद है। छंद अर्थात् तरंग(ङ्खड्डक्द्ग)। वैज्ञानिक दृष्टि से एक निश्चित प्रकाश तरंग को 5 गुणों से जाना जाता है –

(1) तरंग दैर्घ्य (Wave Length) (2) तरंग का वस्थापन (Amplitude) (3) आवृ त्त (Frequency) (4) काल (Time Period) (5) वेग (Velocity) ये 5 अवयव (गुणधर्म)ही एक तरंग का निर्धारण करते हैं। पशु बन्ध प्र क्रया में कुल 11 पशुओं का उल्लेख पशु एकाद शनी के रूप में मलता है। अर्थात् सृष्टि करते समय प्रजापति ने 11 प्रकार की तरंगों का निर्माण कया था।

श मता द्वारा वशसन करने का अर्थ – पशु को मारना नहीं है अ पतु अग्नि को संहित एवं श मत करते हुए – पशु रूप (छंदरूप) तरंग को निश्चित आकृति प्रदान करना है।

पशु का संज्ञपन करना – सं ज्ञपन- सयक् रूप से पशु को पहचान लेना अर्थात् जिस प्रकार की आकृति प्रजापति पशु की चाहता था, वह आकृति बन गयी है।

पशु बन्ध प्र क्रया में आप्री सूक्त का पाठ कया जाता है। अर्थात् प्रजापति की ''रिरिचान् इव आत्मा'' को आप्यातित करना। अन्त में स्वाहकृत आहुति दी जाती है। स्वाहकृत प्रतिष्ठा है। स्वाहकृत का तात्पर्य है क – ''सु आहुतं ह वः जुहोति''। तात्पर्य यह है क प्रजापति जिस प्रकार की तरंग (पशु) का निर्माण करना चाहता था वह कार्य पूरा हो गया।

पशु बन्ध में चार प्रकार की आहुतियाँ दी जाती हैं – (1) वपा आहुति (2) आज्य आहुति (3) अग्नया आहुति (4) सोम आहुति। वपा रेतः रूप है। आज्य देवों का प्रय धाम हैं। पशु आज्य हैं। रेतः आज्य है। अनेक ब्राह्मण वचन स्पष्ट बताते हैं क आज्य का, घृत का, ह व के जो प्रच लत अर्थ है, वह वैदिक अर्थ नहीं हो सकता । आज्य, घृत, ह व, पयः, मधु आदि जितने भी शद वेदों में प्रयुक्त हैं – जिनकी अग्नि में आहुति दी जाती है – ये व भन्न प्रकार के अत्य धक लघु मात्रा में अग्नि को संहित एवं श मत कर बनाये गये भौतिक कण ((Quantas, Photones) हैं जो दशपूर्णमास, चार्तुमास्य यज्ञ प्र क्रयाओं में नि र्मत कये गये थे।

अग्नि एवं सोम – उष्णता एवं शीत के प्रतीक हैं। करोड़ों डग्री तापमान पर जब ऊर्जा संहित हुई तो जो स्थान ऊष्मा के संहित होने से खाली हो गया वह स्थान सोमात्मक अर्थात् उस तापमान की तुलना में काफी ठण्डा हो गया। एक उदाहरण – दस करोड़ डग्री तापमान पर, एक लाख घन मीटर ऊर्जा (Heat Energy) को यदि संहित करके – एक घन मीटर में इकट्ठा कर दिया जाये तो 99 हजार घन मीटर आकाश रिक्त हो जायेगा – सोमात्मक हो जायेगा तथा संहित ऊर्जा को और आगे संहित करेगा तथा शम् करेगा अर्थात् तापमान क ो कम करेगा।

इससे यह स्पष्ट है क पशु बन्ध यज्ञ द्वारा प्रजापति ने 11 प्रकार के पशुओं अर्थात् तरंगों का निर्माण कया था। पशु को मारना या पशु की ब ल देना यह एकदम मथ्या है तथा वैदिक अर्थ के सर्वथा प्रतिकूल है।

– **176** आदर्श नगर**,** अजमेर

जाओ, अपनी माँ से पूछकर आओः प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

DECEMBER 15, 2015 1 COMMENT

जाओ, अपनी माँ से पूछकर आओ

देश- वभाजन से बहुत पहले की बात है, देहली में आर्यसमाज

का पौरा णकों से एक ऐतिहा सक शास्त्रार्थ हुआ। वषय था-

'अस्पृश्यता धर्म वरुद्ध है-अमानवीय कर्म है।'

पौरा णकों का पक्ष स्पष्ट ही है। वे छूतछात के पक्ष पोषक थे।

आर्यसमाज की ओर से पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी ने वैदिक

पक्ष रखा। पौरा णकों की ओर से माधवाचार्यजी ने छूआछात के

पक्ष में जो कुछ वह कह सकते थे, कहा।

माधवाचार्यजी ने शास्त्रार्थ करते हुए एक व चत्र अ भनय

करते हुए अपने लंग पर लड्डू रखकर कहा, आर्यसमाज छूआछात

को नहीं मानता तो इस अछूत (लंग) पर रखे इस लड्डू

को उठाकर खाइए।

इस पर ता र्कक शरोम ण पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी ने

कहा, ''चाहे तुम इस अछूत पर लड्डू रखो और चाहे इस ब्राह्मण

(मुख की ओर संकेत करते हुए कहा) पर, मैं लड्डू नहीं खाऊँगा,

परन्तु एक बात बताएँ। जाकर अपनी माँ से पूछकर आओ क तुम

इसी अछूत (लंग) से जन्मे हो अथवा इस ब्राह्मण (मुख)

से?''

पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी की इस मौ लक युक्ति को सुनकर

श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो गये। आर्यसमाज का जय-जयकार हुआ। पोंगा

पं थयों को लुकने-छिपने को स्थान नहीं मल रहा था। इस शास्त्रार्थ

के प्रत्यक्षदर्शी श्री ओमप्रकाश जी कपड़ेवाले मन्त्री, आर्यसमाज नया

बाँस, दिल्ली ने यह संस्मरण हमें सुनाया। अन्धकार-निवारण के

 लए आर्यों को क्या क्या सुनना पड़ा।

पुराणों के अग्राह्य वधानों पर स्वामी दयानन्द व स्वामी वेदानन्द के उपदेश’ -मनमोहन कुमार आर्य

DECEMBER 15, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

मनुष्य का जीवन सत्य व असत्य को जानकर सत्य का पालन व आचरण करने तथा असत्य का त्याग करने का नाम है। परमात्मा ने मनुष्यों को वेदों का ज्ञान व बुद् ध सत्यासत्य के निर्णयार्थ वा ववेक के लए ही दी है जिसका सभी को सदुपयोग करना चाहिये। जो नहीं करता वह मनुष्य संज्ञक कहलाने का अ धकारी नहीं है। सच्चे साधु, महात्मा, ऋ ष व मह र्ष सदा से अल्प बुद् ध व अ ववेकी लोगों को अपने ज्ञान व अनुभवों से लाभान्वित करते चले आ रहे हैं। मह र्ष दयानन्द व उनके शष्य स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने भी इस परम्परा का निर्वाह कया है। आज इस लेख में स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी का उपदेश प्रस्तुत है। वह कहते हैं क ‘‘शैवों को पूर्ण निष्ठावान् शैव बनने के लए अनेक व्रतोपवास करने पड़ते हैं। शैवों को ही क्यों , वैष्णव आदि सम्प्रदायों में भी व्रतोपवास का माहात्मय बहुत अ धक है। सच पूछो तो इन मतों के आचार्यों ने ऐसी व्यवस्था बांध दी है क वर्ष के (365) दिनों से भी अ धक उपवास के दिन हैं। एकादशी का दिन तो सभी सम्प्रदायवालों (शैव, वैष्णव व अन्य) को उपवास के लए इष्ट है। हां, कभी-कभी स्मार्तो (शैवों) तथा वैष्णवों की एकादशी का दिन एक नहीं होता। एक की दशमी तथा दूसरे की एकादशी, अर्थात् एक की एकादशी तो दूसरे की द्वादशी ति थ होती है। भाव यह है क कस दिन एकादशी का व्रत होना चाहिए, इस वषय में भी यह साम्प्रदायिक परस्पर झगड़ा करते हैं। उसका स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थरत्न सत्यार्थप्रकाश में इस प्रकार चत्र खींचा है-‘देखो ! शवपुराण में त्रयोदशी, सोमवार, आदित्यपुराण में र व, चन्द्रखण्ड में सोमग्रहवाले मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु, केतु के, वैष्णव एकादशी, वामन की द्वादशी, नृ संह वा अनन्त की चतुर्दशी, चन्द्रमा की पूर्णमासी, दिक्पालों की दशमी, दुर्गा की नवमी, वसुओं की अष्ठमी, मुनियों की सप्तमी, कार्तिक स्वामी की षष्ठी, नाग की पंचमी, गणेश की चतुर्थी, गौरी की तृतीया, अश्विनीकुमार की द् वतीया, आद्या देवी की प्रतिपदा, और पतरों की अमावस्या, पुराणरीति से ये दिन उपवास करने के हैं। और सर्वत्र यही लखा है क जो मनुष्य इन वार और ति थयों में अन्नपान ग्रहण करेगा, वह नरकगामी होगा। अब पोप और पोप जी के चेलों को चाहिए क वे कसी वार अथवा कसी ति थ में भोजन न करें, क्यों क जो भोजन व पान कया तो नरकगामी

होंगे। अब निर्णय- सन्धु, धर्म सन्धु, व्रतार्क आदि ग्रन्थ जो क प्रमादी लोगों के बनाये हैं उन्हीं में एक व्रत की ऐसी दुर्दशा की है क जैसे एकादशी की शैव दशमी वद्धा, कोई द्वादशी में एकादशी व्रत करते हैं अर्थात् क्या बड़ी व चत्र पोपलीला है क भूखे मरने में भी वाद– ववाद ही करते हैं। जिसने एकादशी का व्रत चलाया है उसमें उसका स्वार्थपन ही है और दया कुछ भी नहीं। वे कहते हैं-एकादश्यामन्ने पापानि वसन्ति अर्थात् जितने पाप हैं वे सब एकादशी के दिन अन्न में बसते हैं। इन पोप जी से पूछना चाहिए क कसके पाप बसते हैं, तेरे व तेरे पता आदि के? जो सब के सब पाप एकादशी में जा बसें तो एकादशी के दिन कसी को दुःख न रहना चाहिए। ऐसा तो नहीं होता, कन्तु उलटा क्षुधा आदि से दुःख होता है। दुःख पाप का फल है। इससे भूखे मरना पाप है। इसका बड़ा महात्म्य बतलाया है, जिसकी कथा बांच के बहुत ठगे जाते हैं। उसमें एक गाथा है क–

‘‘ब्रह्मलोक में एक वेश्या थी। उसने कुछ अपराध कया। उसको शाप हुआ क वह पृथवी पर गरे। उसने बहुत स्तुति की क मैं स्वर्ग में क्योंकर आ सकूंगी? उसको कहा क जब कभी एकादशी के व्रत का फल तुझे कोई देगा तभी तू स्वर्ग में आ जाएगी। वह वमान सहित कसी नगर में गर पड़ी। वहां के राजा ने उससे पूछा क तू कौन है? तब उसने सब वृत्तान्त सुनाया और कहा क जो कोई मुझको एकादशी का फल अर्पण करे तो मैं फर भी स्वर्ग को जा सकती हूं। राजा ने नगर में खोज कराई। कोई भी एकादशी का व्रत करनेवाला न मला। कन्तु एक दिन कसी शूद्र स्त्री-पुरुष में लड़ाई हुई थी। क्रोध से स्त्री दिन-रात भूखी रही थी। दैवयोग से उस दिन एकादशी थी। उस स्त्री ने कहा क मैंने एकादशी जानकर तो नहीं की, अकस्मात् उस दिन भूखी रह गई थी ऐसा (उसने) राजा के सपाहियों से कहा। तब तो वे उसको राजा के सामने ले आये। उससे राजा ने कहा क तू इस वमान को छू। उस स्त्री ने वमान को छुआ, उसके छूने से उसी समय वमान ऊपर को उड़ गया। यह बिना जाने एकादशी के व्रत का फल है। जो जान (कर के एकादशी का व्रत करे तो उसके) फल का क्या पारावार है।

”वाह रे आंख के अन्धे लोगो ! जो यह बात सच्ची हो तो हम एक पान की बीड़ी जो स्वर्ग में नहीं होती, वहां भेजना चाहते हैं। सब एकादशीवाले अपना फल हमें दे दो। जो एक पान का बीड़ा ऊपर को चला जाएगा तो पुनः लाखों–करोड़ों पान वहां भेजेंगे और हम भी एकादशी कया करेंगे और जो ऐसा न होगा तो तुम लोगों को इस भूखे मरनेरुप आपत्काल से बचावेंगे। (पुराणों में) इन चैबीस एकाद शयों का नाम पृथक्-पृथक् रखा है। कसी का धनदा, कसी का कामदा, कसी का पुत्रदा, कसी का निर्जला। बहुत-से दरिद्र, बहुत-से कामी और बहुत-से निर्वंशी (अर्थात् बिना सन्तान वाले) लोग एकादशी करके बूढे हो गये और मर भी गये परन्तु धन, कामना और पुत्र प्राप्त न हुआ। और ज्येष्ठ महीने के शुक्लपक्ष में जिसमें यदि एक घड़ी भर जल न पावे तो मनुष्य व्याकुल हो जाता है और व्रत करनेवालों को महादुःख प्राप्त होता है। वशेष-बंगाल में सब वधवा स्त्रियों की एकादशी के दिन बड़ी दुर्दशा होती है। इस निर्दयी कसाई (व्रतों का वधान करने वाले) को लखते समय कुछ भी मन में दया न आई। नहीं तो निर्जला का नाम सजला और पौष महीने के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम निर्जला रख देता तो भी कुछ अच्छा होता। परन्तु इस पोप को दया से क्या काम?‘ कोई जीवे या मरे, पोपजी का पेट पूरा भरो।’

 कसी गर्भवती वा नव ववाहित स्त्री, लड़के व युवा पुरुषों को तो कभी उपवास न करना चाहिए, परन्तु कसी को करना भी हो तो जिस दिन अजीर्ण हो, क्षुधा न लगे उस दिन शर्करावत् शर्बत व दूध पीकर रहना चाहिए। जो भूख में नहीं खाते और बिना भूख के भोजन करते हैं, वे तीनों रोग-सागर में गोते खा दुःख पाते हैं। इन प्रमादियों (पुराणों में व्रतों के वधायकों) के कहने- लखने का प्रमाण कोई भी न करे।" (सत्याथप्रकाश एकादश समुल्लास)

व्रत की निस्सारता दिखलानेवाला यह सन्दर्भ स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी ने 'ऋ ष बोध कथा' में प्रसंगानुसार उद्धृत कया है। पुराणों में जहां व्रतों के बारे में इस प्रकार की स्वास्थ्य के लए हानिकर का अनावश्यक कष्टदायक अनैतिहा सक मथ्या व कल्पित कथायें व र्णत हैं वहीं उसकी अन्य सभी मान्यतायें भी ववेकशील पाठकों के लए वचारणीय हैं। कसी बात को बिना सत्यासत्य का वचार कये स्वीकार कर लेना बुद् ध का अपमान है। पुराणों की तरह अन्य मतों में भी अव्यवहारिक व अनुपयोगी नाना प्रकार के वधान हैं। सभी मतों के ववकेशील लोगों को उनका आचरण करने के पहले अनेक बार उनके औचीत्य पर वचार करना चाहिये। हम आशा करते हैं क पाठक पुराणों के उपर्युक्त वधानों को सत्यासत्य व गुणावगुण की कसौटी पर कर कर सत्य को ग्रहण कर उसका अपने जीवन में व्यवहार करेंगे।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196 चुक्खूवाला-2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

'संसार के सभी मनुष्यों के पूर्वज एक थे व वैदिक धर्मानुयायी थे' -मनमोहन कुमार आर्य

DECEMBER 15, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

सृष्टि का यह अनिवार्य नियम है क इसमें मनुष्य की उत्प त्त वा जन्म माता- पताओं से ही होता है। माता- पता के बिना शशु रूप में मनुष्य का जन्म असम्भव है। अतः इससे यह सद्ध होता है मनुष्य के माता- पता अवश्य होते हैं। इस सद्धान्त के आधार पर मनुष्य के पूर्वज सृष्टि के आरम्भ काल से ही होते चले आ रहे हैं। आज हमें यह ज्ञात नहीं है क तीन चार पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज कौन-कौन थे, परन्तु यह सुनिश्चित है क वह अवश्य थे। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं सृष्टि से आरम्भ पूर्वजों की श्रृंखला कभी टूटी नहीं है। भ वष्य में भी जो मनुष्य होंगे उनके माता- पता अवश्य होंगे और आजकल के कोई न कोई मनुष्य ही उनके पूर्वज होंगे। इस सद्धान्त को सम्मुख रखकर जब हम मत-मतान्तरों के इतिहास पर

वचार करते हैं तो आज संसार के प्रमुख मतों सख, इस्लाम, ईसाई, अद्वैतमत, बौद्ध, जैन, यहूदी व पारसी मत पर वचार करते हैं तो हमें लगता है क इन-इन मतों की स्थापना से पूर्व इन मतों के पूर्वज कदा प इन मतों की मान्यताओं व सद्धान्तों को मानने वाले लोग नहीं थे। उनका मत इनसे कुछ भन्न अवश्य था जिस कारण इन मतों की स्थापना होकर यह अस्तित्व में आये हैं।

अब हम न मतों के पूर्वजों के भी पूर्वजों पर जब वचार करते हैं तो यह क्रम सृष्टि के आरम्भ पर जाकर समाप्त होता है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने सृष्टि की रचना पूर्ण होने व इस पृ थवी का वातावरण मनुष्यों के अनुकूल व अनुरूप स्थिति में आने पर ही ईश्वर ने मनुष्यों को उत्पन्न कया था। तर्क, युक्ति व ऊहा से ज्ञात होता है क यह सृष्टि ईश्वर ने अमैथुनी अर्थात् बिना माता- पता के की थी। सभी मनुष्य युवावस्था में उत्पन्न कये गये थे क्यों क यदि शशु रूप में होते तो उनके पालन करने के लए माता- पता की आवश्यकता होती और यदि वृद्धावस्था में ईश्वर इन्हें उत्पन्न करता तो फर संसार का क्रम अवरुद्ध हो जाता। अतः यह सर्वमान्य सद्धान्त है क सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा की गई दैवीय सृष्टि अमैथुनी थी और उन मनुष्यों का माता- पता व आचार्य ईश्वर ही था। इससे यह निष्कर्ष सामने आते हैं क ईश्वर ने अत्यन्त सूक्ष्म प्रकृति के परमाणुओं से इस ब्रह्माण्ड व सृष्टि की रचना की, उसके बाद जंगम अर्थात् प्रा ण-जगत पशु-पक्षी-कीट-पतंग-थलचर-जलचर सभी को उत्पन्न कया और ईश्वर की इस क्रम की अन्तिम रचना मनुष्यों की उत्प त्त थी। सृष्टि की रचना से ईश्वर ज्ञानवान वा सर्वज्ञ सद्ध होता है। अतः उसके द्वारा मनुष्यों को ज्ञान मलता सम्भव कोटि में आता है। अतः सृष्टि के आदि काल में सभी मनुष्यों का माता- पता सहित वद्या का दान देने वाला आचार्य भी ईश्वर ही होता है। इसी बात को योगदर्शन के ऋ ष पतंज ल ने भी स्वीकार कया है। ईश्वर ने सृष्टि की आदि में मनुष्यों को कस प्रकार का ज्ञान दिया था? इस पर वचार करने और शास्त्रों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है क यह ज्ञान 'वेद' था अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार यह ज्ञान क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य व अं गरा नाम के चार ऋ षयों को दिया गया था जिन्होंने इसका अन्य सभी मनुष्यों, स्त्री व पुरुषों में प्रचार कया। यह परम्परा 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार एक सौ पन्द्रह वर्ष पूर्व सृष्टि के आदि काल से आरम्भ होकर लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत काल तक वद्यमान रही। इसको वस्तार से जानने के लए सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभू मका एवं इतर वैदिक साहित्य का अध्ययन कया जाना अपे क्षत है।

हमारे बहुत से बन्धु यह भी प्रश्न कर सकते हैं क जब संसार के सभी मनुष्यों का आदि स्थान प्राचीन आर्यावत्र्त व भारत का तिब्बत स्थान था और उनकी भाषा एक संस्कृत थी तो फर संसार की अलग–अलग भाषायें क्यों हैं? इसका कारण वचार करने पर भन्न- भन्न देशों की भौगो लक स्थिति, वहां के शब्दोच्चारण में भेद, काल की दूरी, परस्पर के संबंधों में देश व काल की दूरी की श थलता आदि अनेक कारण हैं। हम यह भी देखते हैं क उत्तराखण्ड व निकटवर्ती राज्यों के ही गढ़वाल, कुमायु, जौनसार, सहारनपुर, पंजाब, हरियाणा व हिमाचल में भन्न भन्न प्रकार की बो लयां बोली जाती हैं। हमारे अपने एक देश भारत में ही एक सौ से अ धक बो लयां व

भाषायें बोली जाती हैं। हमारे परिवार का ही यदि कोई व्यक्ति वदेश चला जाता है, वहां रहता है, एक दो पीढ़ियां वहां उत्पन्न होती हैं, वह जब अपने परिवार सहित भारत आते हैं तो वह सहज रूप से अपने माता- पता व भारत में अपने परिवार की भाषा बोलने में असहज होते हैं। हमने देहरादून के रैफल होम में वदेशी बन्धुओं को यहां के स्थानीय बच्चों के साथ सम्पर्क अर्थात् बातचीत करते हुए देखा है। वदेशी यद्य प अपने देश की भाषा बोलते हैं परन्तु फर भी बच्चे उसे ध्यान से सुनते हैं और कसी रोचक प्रसंग के आने पर दोनों ही खला खला कर हंस भी पड़ते हैं। हमें लगता है क जब आत्मा से कोई बात कही जाती है तो उस भाषा से इतर भाषी लोग जानने की इच्छा से उस बोलने वाले वक्ता के कुछ व अ धक आशय व अ भप्राय को अपनी क्षमतानुसार समझ जाते हैं। अतः मनुष्यों के दूर-दूर देशों में जाकर बसने, वहां की भौगो लक स्थिति व नई पीढ़ियों के उच्चारण आदि में कुछ भेद होने तथा संगति के कारण भाषायें बनती बिगड़ती रहती हैं। भाषा के आधार पर यह नहीं कह सकते क हमारे आदि व प्राचीन पूर्वज एक नहीं थे।

इस सम्बन्ध में यह वचार करना भी आवश्यक है क सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों की उत्प त्त कसी एक ही स्थान पर की व एक से अ धक स्थानों पर की? उपलब्ध प्रमाण, तर्क व युक्ति से यह एक स्थान पर हुई ही सद्ध होती है। प्राचीन शास्त्रों के प्रमाणों से यह स्थान तिब्बत सद्ध होता है। मह र्ष दयानन्द ने भी अपने जीवनकाल (1825-1883) में देश भर में उपलब्ध प्रायः समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कया था जिसका निष्कर्ष था क मनुष्यों की उत्प त्त 1,96,08,53,115 (यह गणना वर्तमान समय 13 दिसम्बर, 2015 की है) हुई थी। इस प्रमाण का वरोधी कोई पुष्ट प्रमाण न होने के कारण संसार के सभी लोगों के लए यही मान्यता स्वीकार करने योग्य है। तिब्बत में बड़ी संख्या में स्त्री व पुरुषों की उत्प त्त होने व ऋ षयों को चार वेदों का ज्ञान मलने, उन ऋ षयों द्वारा उस ज्ञान का ब्रह्मा आदि ऋ षयों व सभी मनुष्यों में प्रचार करने से सृष्टि का क्रम वगत 1 अरब 96 करोड़ वर्षों में निरन्तर आगे बढ़ता रहा है। आरम्भ के कुछ काल व कुछ पीढ़ियों तक लोग तिब्बत में रहे। उनमें से कुछ जिजी वषा व परस्पर के अच्छे-बुरे संबंधों के कारण समय-समय पर नये स्थानों की खोज कर वहां जाकर बसते रहे। इसी प्रकार से यह सारा संसार बसा व आबाद हुआ है। आवश्यकता आ वष्कार की जननी होती है। मनुष्यों का परस्पर स्वभाव भी भन्न- भन्न होता है। बहुत से यायावर प्रकृति के भी होते हैं जो नय-नये स्थानों पर आने व जाने की रू च वाले होते हैं। मह र्ष दयानन्द ने भी कसी शास्त्र व ग्रन्थ के आधार पर पूना में सन् 1874 में दिये अपने प्रवचनों में यह बताया था क अति प्राचीन काल में आदि मनुष्य आर्यों ने वमानों का निर्माण कर लया था। वह वमान में अपने कुछ मत्रों के साथ देश-देशान्तरों में भ्रमण कया करते थे। उनकों जहां कोई स्थान पसन्द आ जाता तो अपने परिवार व इष्ट- मत्रों को वहां ले जाकर बसा देते थे। उनके अनुसार इस प्रकार से ही संसार बसा है। युक्तियों से भी यही सद्ध होता है। यह सद्धान्त व मान्यता पूर्णतया तर्क पर आधारित है। अकाट्य तर्क ही सत्य होता है, अतः इस मान्यता के सत्य होने में कसी सन्देह का कोई कारण नहीं है।

इस लेख के माध्यम से हमारा यह निवेदन है क इस तथ्य को सभी मत-मतान्तरों के वर्तमान आचार्यों व उनके अनुयायियों को जानना व समझना चाहिये। यह जानकर क संसार

के हम सभी लोगों के पूर्वज वैदिक धर्मी आर्य थे हमें परस्पर एक दूसरे से प्रेम व मत्रता पूर्वक एक परिवार की ही तरह व्यवहार करना चाहिये। वैदिक संस्कृति के पूर्वजों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारा वश्व एक परिवार है, कहकर भी इसी तथ्य को प्रस्तुत कया है। क्या वर्तमान समय में प्रच लत सभी मत-मतान्तरों कंवा धर्म व धर्मों के आचार्य इस तथ्य को स्वीकार कर परस्पर भ गनी-बन्धु, मत्र व एक परिवार जैसा व्यवहार करने पर वचार करेंगे और इसकी शक्षा अपने अपने मत के अनुयायियों को देंगे जिससे वश्व से सर्वत्र अशान्ति व दुःख दूर होकर सुख व शान्ति का वातावरण बन कर सभी के जीवन परस्पर हितकारी व कल्याणीकारी हो सकें।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

ईश्वरीय ज्ञान: प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

DECEMBER 13, 2015 1 COMMENT

अपनी मृत्यु से पूर्व स्वामी रुद्रानन्द जी ने 'आर्यवीर' साप्ताहिक

में एक लेख दिया। उर्दू के उस लेख में कई मधुर संस्मरण थे।

स्वामीजी ने उसमें एक बड़ी रोचक घटना इस प्रकार से दी।

आर्यसमाज का मुसलमानों से एक शास्त्रार्थ हुआ। वषय था ईश्वरीय

ज्ञान। आर्यसमाज की ओर से ता र्कक शरोम ण पण्डित श्री रामचन्द्रजी

देहलवी बोले। मुसलमान मौलवी ने बार-बार यह युक्ति दी क

सैकड़ों लोगों को क़ुरआन कण्ठस्थ है, अतः यही ईश्वरीय ज्ञान है।

पण्डितजी ने कहा क कोई पुस्तक कण्ठस्थ हो जाने से ही ईश्वरीय

ज्ञान नहीं हो जाती। पंजाबी का काव्य हीर-वारसशाह व सनेमा के

गीत भी तो कई लोग कण्ठाग्र कर लेते हैं। मौलवीजी फर ज़ी यही

रट लगाते रहे क क़ुरआन के सैकड़ों हा फ़ज़ हैं, यह क़ुरआन के

ईश्वरीय ज्ञान होने का प्रमाण है।

श्री स्वामी रुद्रानन्दजी से रहा न गया। आप बीच में ही बोल पड़े कसी को क़ुरआन कण्ठस्थ नहीं है। लाओ मेरे सामने, कस को सारा क़ुरआन कण्ठस्थ है।

इस पर सभा में से एक मुसलमान उठा और ऊँचे स्वर में कहा-''मैं क़ुरआन का हा फ़ज़ हूँ।''

स्वामी रुद्रानन्दजी ने गर्जकर कहा-''सुनाओ अमुक आयत।''

वह बेचारा भूल गया। इस पर एक और उठा और कहा-''मैं यह आयत सुनाता हूँ।'' स्वामीजी ने उसे कुछ और प्रकरण सुनाने को कहा वह भी भूल गया। सब हा फ़ज़ स्वामी रुद्रानन्दजी के सज़्मुख अपना कमाल दिखाने में वफल हुए। क़ुरआन के ईश्वरीय ज्ञान होने की यह युक्ति सर्वथा बेकार गई।

प्रभु का इकलौता पुत्र न रहा: प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

DECEMBER 12, 2015 5 COMMENTS

प्रभु का इकलौता पुत्र न रहा

पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यप्रकाशजी पूर्वी अफ्रीका की वेद-प्रचार यात्रा पर गये। एक दिन एक पादरी ने आकर कुछ धर्मवार्ता आरज़्भ की। स्वामीजी ने कहा क जो बातें आपमें और हममें एक हैं उनका निर्णय करके उनको अपनाएँ और जो आपको अथवा हमें मान्य न हों, उनको छोड़ दें। इसी में मानवजाति का हित है। पादरी ने कहा ठीक है।

स्वामी जी ने कहा-‘‘हमारा सद्धान्त यह है क ईश्वर एक

है।’’

पादरी महोदय ने कहा-‘‘हम भी इससे सहमत हैं।’’ तब

स्वामीजी ने कहा-‘‘इसे कागज़ पर लख लो।’’

फर स्वामीजी ने कहा-‘‘मैं, आप व हम सब लोग उसी

एक ईश्वर की सन्तान हैं। वह हमारा पता है।’’

श्री पादरीजी बोले, ‘‘ठीक है।’’

श्री स्वामीजी ने कहा-‘‘इसे भी कागज़ पर लख दो।’’

श्री पादरीजी ने लख दिया। फर स्वामीजी ने कहा-जब हम

एक प्रभु की सन्तानें हैं तो नोट करो, उसका कोई इकलौता पुत्र नहीं

है, यह एक मथ्या कल्पना है। पादरी महाशय चुप हो गये।

इतिहास प्रदूषण – प्राक्कथन : प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

DECEMBER 6, 2015 4 COMMENTS

आर्य समाज के इतिहास में मलावट की दुखद कहानी

इस वनीत ने इस पुस्तक को कालक्रम से नहीं लखा। न ही

निरन्तर बैठ कर लखा। जब-जब समय मला जो बात लेखक के

ध्यान में आई अथवा लाई गई, उसे स्मृति के आधार पर लखता

चला गया। इन पंक्तियों के लेखक ने आर्यसमाज से ऐसे संस्कार

वचार पाये क अप्रामा णक कथन व लेखन इसे बहुत अखरता है।

बहुत छोटी आयु में पं0 लेखराम जी, आचार्य रामदेव जी, पं0

रामचन्द्र जी देहलवी, पं0 शान्तिप्रकाश जी, पं0 लोकनाथ जी

आदि द्वारा दिये जाने वाले प्रमाणों व उद्धरणों की सत्यता की चर्चा

अपने ग्राम के आर्यों से सुन-सुन कर लेखक ने इस गुण को अपने

में पैदा करने की ठान ली।

भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमनि जी, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी

और स्वामी वेदानन्द जी महाराज को जब पहले पहल सुना तो उन्हें

बहुत सहज भाव से वभन्न ग्रन्थों को उद्धृत करते सुना। उनकी

स्मरण शक्ति की सब प्रशंसा कया करते थे। उनको बहुत कुछ

कण्ठाग्र था। उनके द्वारा दिये गये प्रमाणों, तथ्यों तथा अवतरणों

(Quotations) में आश्चर्यजनक शुद्धता ने इन पंक्तियों के लेखक

पर गहरी व अ मट छाप छोड़ी। पुराने आर्य वद्वानों की यह वशेषता

आर्यसमाज की पहचान बन गई। अप्रमा णक कथन को आर्य नेता,

 वद्वान् व संन्यासी तत्काल चुनौती दे देते थे।

इतिहास केसरी पं0 निरञ्जजनदेव जी अपने आरं भक   काल

का एक संस्मरण सुनाया करते थे। देश- वभाजन के कुछ समय

पश्चात् आर्यसमाज रोपड़ (पंजाब) के उत्सव पर पं0 निरञ्जनदेव

जी ने व्याख्यान देते हुए दृष्टान्त रूप में एक रोचक घटना सुनाई।

दृष्टान्त तो अच्छा था, परन्तु यह घटना घटी ही नहीं थी। यह तो एक

गढ़ी गई कहानी थी। पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने अपने

 शष्य का व्याख्यान बड़े ध्यान से सुना।

बाद में पण्डित जी से पूछा-''यह घटना कहाँ से सुनी? क्या

कहीं से पढ़ी है?''

पं0 निरञ्जनदेव ने झट से कसी मा सक के अंक का पूरा अता

पता तथा पृष्ठ संख्या बताकर गुरु जी से कहा-''मैंने उस पत्रिका

में छपे लेख में इसे पढ़ा था।''

 शष्य से प्रमाण का पूरा अता-पता सुनकर महाराज बड़े प्रसन्न

हुए और कहा-''प्रेरणा देने के लए यह दृष्टान्त है तो अच्छा, परन्तु यह घटना सत्य नहीं है। ऐसी घटना घटी ही नहीं।''

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री महाशय कृष्ण जी नये-नये युवकों से भूल हो जाने पर उन्हें ऐसे ही सजग कया करते थे।

अंजाने में भूल हो जाना और बात है, परन्तु जानबूझ कर और स्वप्रयोजन से इतिहास प्रदू षत करने के लए चतुराई से मनगढ़न्त कहानियाँ, बढ़ा-चढ़ाकर, घटाकर हदीसें गढ़ना यह देश, धर्म व समाज के लए घातक नीति है।

आर्यसमाज के आरम्भिक काल में ऋ ष दयानन्द जी के सुधार के कार्यों से प्रभा वत होकर कई बड़े-बड़े व्यक्ति आर्यसमाज में आए। वे ऋ ष के धा र्मक तथा दार्शनिक सद्धान्तों में आस्था वश्वास नहीं रखते थे। इन्होंने अपने परिवारों में, अपने व्यवहार, आचार में वैदिक धर्म का प्रवेश ही न होने दिया। इन बड़े लोगों को न समझने से आर्यसमाज की बहुत क्षति हुई। इनमें से कई प्र सद् ध पाकर समाज को छोड़ भी गये। इतिहास-प्रदूषण का यह भी एक कारण बना।

मेहता राधा कशन द्वारा ल खत आर्यसमाज का इतिहास (उर्दू) में क्या इतिहास था? लाला लाजपतराय जी ने अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक में कुछ संस्थाओं व पी ड़तों की सहायता पर तो लखा है, परन्तु पं0 लेखराम जी, वीर तुलसीराम, महात्मा नारायण स्वामी आदि हुतात्माओं, महात्माओं का नाम तक नहीं दिया। इसे आप क्या कहेंगे?

कुछ वर्षों से पुराने वद्वानों और महार थयों के उठ जाने से

वक्ता लेखक जो जी में आता है लख देते हैं और जो मन में आता

है बोल देते हैं। कोई रोकने-टोकने वाला रहा नहीं। इस आपाधापी

व मनमानी को देखकर मन दुखी होता है। सम्पूर्ण आर्य जगत् से

आर्यजन मनगढ़न्त हदीसों को पढ़कर लेखक को प्रश्न पूछते रहते हैं।

इतिहास की यह तोड़-मरोड़ एक सांस्कृतिक आक्रमण

है। बहुत ध्यान से इस पर वचारा तो पता चला क सन् 1978 से

ऋ ष दयानन्द जी की जीवनी की आड़ लेकर डॉ0 भवानीलाल जी

ने आर्यसमाज के इतिहास को प्रदू षत करने का अ भयान छेड़ रखा

है। 'आर्यसन्देश' साप्ताहिक दिल्ली में एक लेख देकर स्वयं को

धरती तल पर आर्यसमाज का सबसे बड़ा इतिहासकार घो षत

करके जो जी में आता है लखते चले जा रहे हैं।

आस्ट्रे लया के डॉ0 जे0 जार्डन्स ने अंग्रेज़ी में लखी अपनी

पुस्तक में कोलकाता की आर्य सन्मार्ग संद र्शनी सभा की चर्चा

करते हुए मह र्ष के बारे दो भ्रामक, निराधार व आप त्तजनक बातें

लखी हैं। श्रीमान् जी ने आज तक इन पर दो पंक्तियाँ नहीं लखीं।

डॉ0 जार्डन्स ने ऋ ष को उद्देश्य से भटका हुआ भी लखा है।

डॉ0 महावीर जी मीमांसक ने इस आक्षेप का अवश्य उत्तर दिया है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी पर एक मौलाना ने एक लाञ्छन लगाया

था। वह तो स्वामी जी पर अपनी पुस्तक में डॉ0 जार्डन्स महोदय ने

दिया, परन्तु उसका उत्तर नहीं दिया। न हम जैसों से पूछा। डॉ0

भारतीय जी स्वप्रयोजन से, डॉ0 जार्डन्स का अपने 'नवजागरण के

पुरोधा' में चत्र देते हैं। उत्तर ऐसे आक्षेपों का आज तक नहीं दिया।

 कसी वार प्रहार का कभी सामना कया? वरो धयों के

आपत्ज़िजनक लेखों पर मौन साधने की आपकी नीति रही है।

आर्यसमाज में भी 'योगी का आत्म चरित' के प्रतिवाद के लए

दीनबन्धु, आदित्यपाल संह जी व सच्चिदानन्द जी पर तो लेख पर

लेख दिये, परन्तु इन सबको आशीर्वाद देने वाले महात्मा आनन्द

स्वामी जी से उनकी इस महाभयंकर भूल पर कुछ कहने व लखने

का साहस ही न बटोर सके। अपना हानि लाभ देखकर ही आप

 लखते चले आये हैं।

आर्यसमाज के ब लदानी संन्या सयों, वद्वानों, लेखकों

तथा शास्त्रार्थ महार थयों ने ऋ ष को समझा, उनके सद्धान्तों

को समझा, उनके जीवन से प्रेरणा पाकर ऋ ष के मशन की

रक्षा, वैदिक धर्म के प्रचार के लए अपने शीश कटवाये,

प्राण दिये और लहू की धार देकर एक स्व र्णम इतिहास बनाया।

मत-पन्थों से ऋ ष की वचारधारा का लोहा मनवाया। ऐसे

गु णयों, मुनियों, प्राणवीरों को नीचा दिखाते हुए भारतीय जी

ने लखा है-''मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ क उस महामानव

के जीवन एवं कृतित्व तथा उसके वैचारिक अवदान का

वस्तुनिष्ठ, तलस्पर्शी तथा मा र्मक, साथ ही भावना प्रवण

 वश्लेषण जैसा आर्यसमाजेतर अध्येताओं ने कया है, वैसा

वे लोग नहीं कर सके हैं, जो दयानन्द के दृढ़ अनुयायी होने

का दावा करते हैं, अथवा जो उनकी वचारधारा से अपनी

प्रतिबद्धता की कसमें खाते नहीं थकते।''1

श्रीमान् जी रौमाँ रौलाँ, दीनबन्धु सी0एफ़0 एण्ड्रयूज़ को ऋ ष

की वचारधारा का मा र्मक वश्लेषण करने के लए अपूर्व बताते हैं। इसी प्रकार भारतीय लेखकों में देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, श्री अर वन्द घोष तथा साधु टी0एल0 वास्वानी जैसी योग्यता व क्षमता इस प्रमाणपत्र प्रदाता को कसी भी आर्यसमाजी लेखक में दिखाई नहीं दी।1 जिनके नाम श्रीमान् ने लये हैं उन्होंने आर्यसमाज को कौनसा ज्ञानी, ब लदानी और सम र्पत सेवक दिया? कोई गुरुदत्त , कोई लेखराम या कोई गंगाप्रसाद, अर वन्द जी आदि ने दिया क्या ? इन्हें क्या पता क श्री वास्वानी तो पं0 चमूपति जी की लेखन शैली, वद्वत्ता व ऋ ष-भक्ति पर मुग्ध थे।

कुँवर सुखलाल जी ने कभी लखा था-

सब मज़ाहब में ऐसी मची खलबली,

गोया महशर का आलम बपा कर गया।

तर्क के तीर बर्साय इस ज़ोर से,

होश पाखण्डियों के हवा कर गया॥

फर लखा-

नमस्ते लब पै आते ही मुख़ा लफ़ चौंक पड़ते थे।

समाजी नाम से पाखण्डियों के होश उड़ते थे॥

वरो धयों, वध र्मयों पर ऋ ष की वचारधारा की धाक कन्होंने बिठाई? मत पन्थों में खलबली मचाने वाले कौन थे? ऋ ष की सजीली ओ3म् पताका पहराने वाले कौन थे? ऋ ष के सद्धान्तों व मन्तव्यों को समझकर ऋ ष मशन पर जानें वारने वाले, सर्वस्व लुटाने वाले तथा दुःख-कष्ट झेलने वाले कौन थे?

सब जानकार पाठक कहेंगे क यह पं0 लेखराम का वंश था।

जो स्वामी दर्शनानन्द जी से लेकर पं0 नरेन्द्र और पं0 शान्तिप्रकाश जी तक इस मशन के लए तिल-तिल जले व जिये। क्या ऋ ष को समझे बिना उसकी राह पर शीश चढ़ाने वाले, यातनाएँ सहने वाले स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी वेदानन्द, पं0 रामचन्द्र देहलवी, पं0 गंगाप्रसाद सब मूर्ख थे जो बिना सोचे समझे ऋ ष मशन पर जवानियाँ वार गये?

अर वन्द घोष महान् थे, परन्तु अन्त तक काली माता के ही पूजक रहे। वास्वानी जी बहुत अच्छे अंग्रेज़ी लेखक थे, परन्तु अपने मीरा स्कूल के बच्चों को उनकी परीक्षा के समय उनका पैन छू कर आशीर्वाद देते थे। बच्चों में पैन स्पर्श करवाने के लए होड़ लग जाती थी। क्या वास्वानी जी ने कसी को वैदिक धर्मी बनाया? जब जब वरो धयों ने मह र्ष दयानन्द जी के निर्मल-जीवन पर कोई आक्षेप कया, कोई आपज़्जिनक पुस्तक लखी तो उज़्र कसने दिया? ऋ ष के नाम लेवा उत्तर देने के लए आगे आये अथवा रोमा रोलाँ, श्री अर वन्द व वास्वानी महात्मा ने जान जो ख़म में डालकर उत्तर दिया? अन्ध वश्वासों का, पाखण्ड-खण्डन का और वैदिक धर्म के मण्डन का कठिन कार्य शीश तली पर धर कर स्वामी दर्शनानन्द, पं0 गणपति शर्मा, स्वामी नित्यानन्द, पं0 धर्म भक्षु, पं0 चमूपति, लक्ष्मण जी, पं0 लोकनाथ, पं0 नरेन्द्र, पं0 गंगाप्रसाद उपाध्याय करते रहे अथवा उन लोगों ने कया जिनका नाम लेकर डॉ0 भारतीय 'कसमें खाने' की ऊटपटांग बात बनाकर आर्य महापुरुषों को लताड़ लगा रहे हैं।

हम श्रीमान् की करनी कथनी को देखते रहे। ऋ ष जीवनी का

सर्वज्ञ बनकर प्राणवीर पं0 लेखराम तथा सब आर्यों को नीचा

दिखाने का कुकर्म करने वाले इस देवता ने महाराणा सज्जन संह

जी, केवल कृष्ण जी आदि पर तो दो-दो पृष्ठ लख कर अपनी

नीतिमज़ा दिखा दी और अंग्रेज़ भज़्त प्रताप संह पर 47 पृष्ठ लखकर

अपने को धन्य-धन्य माना। 'अवध री वयु' में प्रताप संह ने अपनी

जीवनी छपवाई उसमें ऋ ष का नाम तक नहीं। राधा कशन

ल खत प्रताप संह की जीवनी जोधपुर राजपरिवार ने छापी

है। इस पुस्तक में भी ऋ ष के जोधपुर आगमन पर कुछ नहीं।

फर भी उसके शकार के, गोरा भज़्ति के चत्र व प्रसंग न देकर

प्रताप संह का गुणगान करके राजपरिवार को तो रिझा ही लया।

<u>नन्ही वेश्या को चरित्र की पावनता का प्रमाण पत्र देकर इतिहास</u>

<u>को प्रदू षत करने की रही सही कमी पूरी कर दी।</u>

सत्य का गला घोंटना इनका स्वभाव है। हम सर्वज्ञ नहीं हैं।

अल्पज्ञ जीव से भूल तो हो ही जाती है, परन्तु हम जानबूझ कर भूल

करना पाप मानते हैं। देश व जाति को भ्र मत करना तो और भी पाप

है। हम अपनी प्रत्येक भूल से जो भी अनजाने से हो जाये, सुधार के

लए व खेद प्रकट करने के लए हर घड़ी तत्पर हैं।

इतिहास प्रदूषण अ भयान के हीरो श्री भवानीलाल जी को

पता चला क यति मण्डल इस लेखक से आर्य संन्या सयों पर एक

ग्रन्थ लखवा रहा है। तब आप बिन बुलाये पहली व अन्तिम बार

यति मण्डल की बैठक में पहुँच गये और कहा, मैंने आर्यसमाज के

साधुओं पर एक पुस्तक लखी है, यति मण्डल इसे छपवा दे। इस

पर स्वामी सर्वानन्द जी बोले, ''यह कार्य तो जिज्ञासु जी को सौंपा

जा चुका है, वे लखेंगे। इस पर भवानीलाल जी बोले, ''जिज्ञासु

जी तो लखेंगे, मैंने तो पुस्तक लख रखी है।'' स्वामी सर्वानन्द जी

यह दुस्साहस देखकर दंग रह गये। स्वामी जी ने आचार्य नन्द कशोर

जी से इनके बारे जो बात की, वह यहाँ क्या लखें। तब स्वामी

ओमानन्द जी ने भी इन्हें कुछ सुनाईं। प्रश्न यह है क इनका वह

महज़्वपूर्ण इतिहास ग्रन्थ फर कहाँ छिप गया? वह अब तक छपा

क्यों नहीं? जिज्ञासु ने तो एक के बाद दूसरे और दूसरे के पश्चात्

तीसरे चौथे संन्यासी पर नये-नये ग्रन्थ दे दिये।

गंगानगर आर्यसमाज ने इस लेखक का सज़्मान रखा। हमने

स्वीकृति देकर भी सम्मान लेना अस्वीकार कर दिया। समाज वालों

ने यहां आकर सस्नेह दबाव डाला।

''यह प्रेम बड़ा दृढ घाती है''

हमें स्वीकृति देनी पड़ी। सम्मान वाले दिन श्रीमान् ने श्री

अशोक सहगल जी प्रधान को घर से सन्देश भेजा, ''मैं जिज्ञासु जी

के साहित्य पर बोलूँगा, मुझे बुलवाओ।'' उन्होंने कहा, ''आ जाओ।

रिक्शा का कराया दे दिया जायेगा।'' समाज ने मेरे वषय में (मेरे

रोकने पर भी) एक स्मारिका निकाली। उसमें भारतीय जी ने लेख

दिया क 'गंगा ज्ञान सागर' जो चार भागों में छपा है निरुद्देश्य (At Random) है। इनकी उत्तम प वत्र सोच पर क व की ये पंज़्तियाँ

याद आ गईं-

ख़ुदा मुझको ऐसी ख़ुदाई न दे।

क अपने सवा कुछ दिखाई न दे॥

देश की आध दर्जन प्रादे शक भाषाओं में इस ग्रन्थमाला का

अनुवाद मेरी अनुमति से कसी न कसी रूप में छपता चला आ रहा है। आर्य वद्वानों ने, समाजों ने इनके उपर्युज़्त फ़तवे की धज्जियाँ उड़ा कर रख दी हैं। मैंने अनुवाद छपवाने वालों से कसी पारिश्र मक की कोई माँग ही नहीं की।

हिण्डौन में पुरोधा के वमोचन के लए यह ट0न0चतुर्वेदी जी को लेकर गये। या तो चतुर्वेदी जी बोले या यह स्वयं अपने ग्रन्थ पर बोले। डॉ0 श्री कुशलदेव जी तथा यह लेखक भी वहीं उपस्थित थे। ऋ ष जीवन पर कुछ जानने वालों में हमारी भी गनती है। भारतीय जी को अपनी रिसर्च की पोल खुलने का भय था। अपराध बोध इन्हें कंपा रहा था। इन्हें हम दोनों को बोलने के लए कहने की हिज़्मत ही न पड़ी। इनको डर था क इनके इतिहास प्रदूषण का कच्चा चट्ठा न खुल जाये। उस कार्यक्रम का संयोजन अपने आप हाथ में ले लया। हृदय की संकीर्णता व सोच की तुच्छता को सबने देख लया। हम आने लगे तो कुशलदेव जी ने अपने ग्रन्थ के वमोचन के लए हमें रोक लया। यह अपना कार्यक्रम करके फर नहीं रुके। गंगानगर व हिण्डौन की घटना दिये बिना इतिहास प्रदूषण अ भयान का इतिहास अधूरा ही रहता।

सत्य की रक्षा के लए, इतिहास-प्रदूषण को रोकने के लए, पं**0** लेखराम वैदिक मशन के लए यह पुस्तक लखी है। मशन के कर्मठ युवा कर्णधारों के स्नेह सौजन्य के लए हम हृदय से आभार मानते हैं। हम जानते हैं क जहाँ कुछ महानुभाव आर्यसमाज के इतिहास को वकृत व प्रदू षत करने वालों के अपकार की पोल खुलने पर हमें जी भर कर कोसेंगे, वहाँ पर सत्यनिष्ठ, इतिहास प्रेमी

और ऋ ष भज़्त आर्यजन हमारे साहस व प्रयास के लए हमारी

सेवाओं व तथ्यों की ठीक-ठीक जानकारी देने के लए धन्यवाद भी

अवश्य देंगे। कुछ शुभ चन्तक यह भी कहेंगे क आपको इतिहास

प्रदू षत करने वालों के वकृत इतिहास का खण्डन करने से ज़्या

 मला? इससे क्या लाभ? देखो तो! युग कैसा है-

सच्च कहना हमाकत है और झूठ ख़ुरदमन्दी

इक बाग़ में इक कुमरी गाती यह तराना थी

वोह और ज़माना था, यह और ज़माना है

ऐसा कहने वालों की बात भी अपने स्थान पर ठीक है। सत्य

 लखना बोलना आज मूर्खता है और असत्य लखना ख़रदरमंदी

(बुद् धमज़ा) है। एक वाटिका में एक को कला ठीक ही तो गा रही

थी क यह और युग है। पहले और युग था। हमारा कसी से

व्यज़्तिगत झगड़ा नहीं। हमने जो कुछ लखा है ऋ ष मशन की

रक्षा के लए लखा है।

आर्यजाति का एक सेवक

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

स्वामी श्रद्धानन्द ब लदान पर्व वेद सदन, गली नं0 6

संवत् 2071 व0 नई सूरज नगरी, अबोहर-152116

देश को गुमराह करने की को शश न करें! - शवदेव आर्य

NOVEMBER 30, 2015 LEAVE A COMMENT

आज समाज में सर्वत्र नये-नये ववादों को जन्म मलता जा रहा है। देखा जाये तो जो-जो वाद आज प्रचारित व प्रसारित हो रहे हैं, वह सत्यता में वाद नहीं है, वह तो सामान्य ही रूप

हैं कन्तु कुछ तथाक थत राजनीतिज्ञों ने अपने स्वार्थी भावों को जागृत कर समस्त भारतवर्ष को घिनौनी चादर से व्याप्त करने का अकरणीय कदम आगे बढ़ाया है।

संसार में प्रायः हम सत्यता को देख नहीं पाते जिसको हम सत्य स्वीकार करते हैं, उसके पीछे का दृश्य कुछ भन्न ही होता है। हमारे नेत्रों पर अज्ञानता का ऐसा उपनेत्र लगा हुआ होता है क हम जिस भी सत्य वस्तु को देखना चाहे वह असत्यमय ही दिखायी देती है।

अभी हाल में ही असहिष्णुता नये अवतार में अवतरित हो रही है। इसके सम्पूर्ण परिदृश्य को देखने से पहले जान लें क असहिष्णुता क्या है? उसको सही स्वीकार करें अथवा गलत? क्या एक देश को अपने देश की सीमाओं को सुर क्षत रखना चाहिए अथवा नहीं? क्या एक देश को अपने देश की सीमाओं को सुर क्षत करने के लए सहिष्णु नहीं होना चाहिए? यदि हम सहिष्णु हो सकते हैं तो देश के सीमाबल की क्या आवश्यकता है? सब कुछ समाप्त कर देना चाहिए, सभी सैनिकों को आदेश दे देना चाहिए क वे अपने-अपने घरों में जाकर आराम करें, क्यों क हम सहिष्णु हैं।

सहिष्णुता का सीधा-सा अर्थ है क 'सहनं शीलं यस्य सः सहिष्णुः, तस्य भावः सहिष्णुता' अर्थात् सहन करने का शील जिसका हो उसे सहिष्णुता कहते हैं।

आज जो हम लोगों को असहिष्णु होने का पाठ पढ़ाया जा रहा है वह कुछ यूं है क जबसे मोदी सरकार देश को उन्नति की राह पर ले जा रही है, वहाॅं वपक्षीदलों के पास वरोध करने का अथवा गलतियाॅं निकालने का कोई और रास्ता ही नहीं है। जब रास्ता न दिखा तब यूॅं कहना उ चत समझा – वर्तमान सरकार हिन्दू समाज की पक्षधर है, और हिन्दूओं के कारण मुस्लिम व अल्पसंख्यकों का देश में रहना मुश्किल हो रहा है। इस मुश्किल को असहिष्णुता का नाम दे रहें हैं। वर्तमान सरकार का प्रत्येक कदम प्रत्येक भारतवासी के लए सम र्पत है न क कसी हिन्दू-मुस्लिम के लए ।

बस इसको राजनीतिक मुद्दा बनाया जा रहा है। इसके सवाय और कुछ नहीं है। इसमें दोष मी डया का भी है क वह इस दृश्य को बार-बार दिखा कर जनता को भ्र मत कर रही है।

भारतवर्ष की आर्य संस्कृति वशाल उदार हृदयता वाली है, जिसने सभी धर्मों-वर्णों-सम्प्रदायों अथवा समुदायों के साथ ही व भन्न मतों के लोगों को स्वयं में समाहित कया। कन्तु बहुत आश्चर्य की बात है इस महान् संस्कृति को समस्त देशवा सयों के प्रति सहिष्णु होने का पाठ पढ़ाया जा रहा है।

यह कैसा वरोधाभास है क पछले कुछ काल से यहाँ के युवाओं की पहली पसन्द ऐसे तीनों फल्मीकलाकार हैं, जो अल्पसंख्यक है और अल्पसंख्यक होने के साथ-साथ मुसलमान भी हैं। सलमान खान, आ मर खान और शाहरुख खान ये तीनों ऐसे अ भनेता हैं, जिन्होंने अपने अ भनय से सम्पूर्ण भारतवर्ष के युवाओं को आक र्षत कया है। १२५ करोड़ की आबादी से व्याप्त देश के लोगों ने देवानन्द, राजकपूर, राजकुमार आदि अ भनेताओं का स्थान पर इन त्रिखानों को सहृदयता पूर्वक स्वीकार कया। यह ध्यातव्य है क १२५ करोड़ की आबादी में हिन्दू बहुसंख्यक हैं। हम केवल मात्र वा चकरूपेण समानता को स्वीकार नहीं करते अ पतु मनसा-वाचा-कर्मणा होकर व्यवहार में व्यवहृत होते हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या आज की

ये त्रिमूर्तियां वश्वपटल पर अपने आप को स्था पत कर पातीं? क्या आ मर खान ये बता सकते हैं क उनके चाहने वाले कतने हिन्दू तथा कतने मुसलमान हैं? कन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है क आज कुछ अ भनेताओं, लेखकों, साहित्यकारों आदि को पछले कुछ महीनों से देश में असहिष्णुता नजर आ रही है। दुःखों की अपार सीमा तो तब जा कर और बढ़ गयी जब 'सत्यमेव जयते' जैसे कार्यक्रम को चलाने वाले अ भनेता ने देश में असहिष्णुता का दृश्य है, ऐसा कहा। भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता की परिचायिका है। आज आ मर खान ने जो ख्याति पायी है उसमें भारतवर्ष की सहिष्णुता का ही योगदान है। भारत की जनसंख्या में ७९.८ प्रतिशत ;१०१ करोड़द्ध हिन्दू निवास करते हैं, शायद आ मर को ज्ञात होना चाहिए क इतना बड़ा अ भनेता बनाने में इनका भी कोई न कोई हाथ रहा होगा और आज वही अ भनेता देश के खुले मंच से देश की निन्दा कर रहा है। आ मर ने दो शादियाॅं की, वो भी दोनों हिन्दू स्त्रियों से पर फर भी कसी ने कुछ नहीं कहा कन्तु आज उन्हें डर लग रहा है।

मुझे वो शब्द याद आ रहे हैं जब आ मर ने 'सत्यमेव जयते' में कहा था क 'ये बदमाश लोग देश को अपमानित कर रहे हैं। देश बड़ी-बड़ी इमारतों से नहीं बनता बल्कि इसमें रहने वाले सभ्य नागरिकों से बनता है' पर आज देश उसी आवाज को अपनी आवाज बनाकर पूछना चाहता हूॅं क-क्या यही सब कहकर देश का नाम रोशन करना चाहते हो? क्या स्वयं देश के जिम्मेदार नागरिक नहीं बनना चाहते? देश का अन्न खाकर देश को गलत बताते हुए शर्म नहीं आती? कल तक जो देश आ मर खान के लए अतुल्य भारत हुआ करता था वह आज असहनशील कैसे लग रहा है?

शायद मुझे ऐसा प्रतीत होता है क अ भनय में कुछ कलाकार अपना सब कुछ भूलकर कलाकृति में ही डूब जाते हैं, जो वर्तमान दशा के स्व र्णम कदमों को देखना ही भूल जाते हैं। उन्हें वर्तमान तथा बीते हुये पलों में कोई अन्तर नहीं दिखायी देता।

भारतवर्ष की सैकड़ों साल पुरानी सहिष्णुता की परम्परा को निशाना बनाया जा रहा है। असहिष्णुतावादियों ने ध्यान दिया होगा क हमारे बुध्दिजी वयों का एक समुह दादरी हिंसा पर तो घ.डयाली आंसू बहाता है, ले कन देश के अन्य राज्यों में हो रही साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं पर वे चुप्पी साध लेते हैं। पश्चिम बंगाल, केरल और असम जैसे राज्यों में नित्य हिन्दुओं पर अत्याचार कए जाते हैं ले कन इन पर समाज के तथाक थत बुध्दिजीवी कुछ भी बोलना पसन्द नहीं करते। क्या असहिष्णुतावादियों को कश्मीर घाटी से वस्था पत हो गए पण्डितों के दर्द की चीख नहीं सुनायी देती? क्या कभी उनके दर्द को जानने की को शश की? लगभग साढ़े तीन लाख कश्मीरी पण्डितों को अपने अस्तित्व को बचाने के लए कश्मीर को छोड़ना पडा। वहाँ पर इस्ला मक चरमपंथी कत्लेआम कर रहे हैं, पर तब भी असहिष्णुतावादी अ भनेताओं, साहित्यकारों ने कुछ भी नहीं बोला? जब १९८४ में सक्ख दंगे हुए तब कसी ने क्यों पुरस्कार नहीं लौटाये? जब २००३ में कश्मीर के नादीमार्ग जिले के पुलवामा गाँव में ११ पुरुषों, ११ स्त्रियों तथा २ बच्चों को सामने खड़ाकरके गोली से उडा दिया गया, तब कसी को क्यों असहिष्णुता नजर नहीं आयी? देश का आवाम जानना चाहता है जब २००८ में २६/११ का दर्दनाक दृश्य सबके सामने नजर आया तब क्यों कसी ने सरकार पर अंगुली नहीं उठायी? कहाँ सो रहे थे? तब क्यों अपने पुरस्कार नहीं लौटाये?

आज जब भारत को दिशा देने वाला सही शासक मला है, जो देश को प्रत्येक क्षेत्र में आगे ले जाना चाहता है तब ये लेखक, साहित्यकार, अ भनेता आदि असहिष्णुतावादी सरकारी सम्मान वापस करने का नाटक कर रहे हैं। ये लोग सम्मान को वापस करने और देश को छोड़ने की बातें करते हैं वे सब छद्म हैं। ये कहीं देश को छोड़कर जाने वाले नहीं, ले कन राजनीतिक स्वार्थ से चलाये जा रहे अ भयान को दृढ़ कर रहे हैं। इस अ भयान के द्वारा सरकार को उसके सही पथ से पथभ्रष्ट कया जा रहा है।

कलम बेंचू साहित्यचोरों के साहित्य से यदि उनका स्वयं का हित सध्द हो जाता है तो देश सहिष्णु है अन्यथा असहिष्णु। यह कैसा न्याय है? कैसा सत्य है?

देश में असहिष्णुता-असहिष्णुता कह कर लोगों को डराने की को शश की जा रही है। इस डर के कारण बहुत-सी घटनाएॅं सामने आ रहीं हैं। २८ नवम्बर के दैनिक जागरण के तथ्यों से पुष्ट एक घटना में आ मर खान के बयान से पी डत होकर एक पति-पत्नि ने आपस में झगड़ा कया गया और पत्नी ने आत्महत्या भी कर ली।

प्रबुध्द पाठकगणों!

देश में असुरक्षा का माहौल है या इसे बनाया जा रहा है, ये तो आप देख ही रहे हैं। बार-बार लोगों को असुर क्षत होने का एहसास कराया जा रहा है, कन्तु सत्य यह है क देश में शान्ति और सुरक्षा स्था पत है।

मह र्ष दयानन्द सरस्वती जी ने कहा था क ' चत्र की नहीं चरित्र की पूजा करो।' हे युवाओं! फल्मों को देखकर इन देशद्रोही नपुंसक अ भनेताओं को चरित्रवान् समझने की भूल न करो। भगत संह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि चरित्रनायकों को अपना अ भनेता स्वीकार करो अन्यथा असहिष्णुता के भवर में फस कर हम अपने पूर्वजों के रक्त को लजित कर बैठेंगे। सावधान रहें, सतर्क रहें। भारत की आन-बान-शान को ठेस न पहूॅंचे।

'इतिहास प्रदूषण' पर आक्षेप: प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

NOVEMBER 23, 2015 LEAVE A COMMENT

ः- एक लबे समय से आर्य समाज में इतिहास प्रदूषण के महारोग और आन्दोलन को गभीरता से जाना, समझा फर इस नाम से एक पुस्तक लखी। एक-एक बात का प्रमाण दिया। अपनी प्रत्येक पुस्तक के प्राक्कथन में यह लखना इस लेखक का स्वभाव बन गया है क यदि जाने, अनजाने से, अल्पज्ञता से, स्मृति दोष से पुस्तक में कोई भूल रह गई हो तो गु णयों के सुझाने पर अगले संस्करण में दूर कर दी जावेगी। परोपकारी में कई बार स्मृति दोष से कसी लेख में पाई गई भूल पर निसंकोच खेद प्रकट कया। यह पता ही था क इस पुस्तक पर खरी-खरी लखने पर भी कुछ कृपालु कोसेंगे, खीजेंगे। उनका तिल मलाना स्वभा वक ही है। कुछ लोगों ने नर्िाय होकर स्वप्रयोजन से आर्य समाज के इतिहास को प्रदू षत कया है।

दर्शाई गई कसी भूल, गड़बड़, मलावट, बनावट व गड़बड़ को तो कोई झुठला नहीं सका। लेखक की दो भूलों को खूब उछाला जा रहा है। सोच-सोच कर हमारे परम कृपालु भावेश मेरजा जी ने एक प्रश्न भी पूछा है सेवा का एक अवसर देने पर अपने बहुत प्यारे भावेश जी का हृदय से आभार मानना हमारा कर्तव्य बनता है।

यह चूक आपने पकड़ी है क देवेन्द्र बाबू के ग्रन्थ में भी एक स्थान पर प्रताप संह ने ऋ ष से पूछा क यदि आपको अली मरदान ने वष दिया हो तो…………………

दूसरी चूक यह बताई गई क भारतीय जी ने अपने ग्रन्थ में एक स्थान पर नन्हीं को वेश्या लखा है। मेरा यह लखना क उन्होंने कहीं भी उसे वेश्या नहीं लखा ठीक नहीं।

मेरा निवेदन है क ये दोनों भूलें असावधानी से हो गई। इसका खेद है। दुःख है। भूल स्वीकार है। प्राक्कथन में दिये आश्वासन को पूरा कया जाता है। क्या भावेश जीाी नैतिक साहस का परिचय दे कर पुस्तक में दर्शाई गई आपके महानायक की एक-एक भूल को स्वीकार कर इस पाप पर कुछ रक्तरोदन करेंगे? इतिहास प्रदूषण का दूसराााग भी अब छपेगा। उसमें महानायक जी के कुछ पत्र पढ़कर हमें कोसने वाले चौंक जायेंगे। बस प्रतीक्षा तो करनी पड़ेगी ।

प्रताप संह ने ऋ ष से वष दिये जाने की बात कब की? यह तो बता देते। वह जोधपुर की राज परपरा के अनुसार वष दिये जाने के 27 दिन के पश्चात् ऋ ष से मलने आया। तब ऋ ष क्या होश में थे? मूर्छा का उल्लेख बार-बार मलता है। प्रताप संह ने केवल ऋ ष का हालचाल ही पूछा था। वष की कतई कोई चर्चा नहीं हुई। वह बस पूछताछ करके चला गया। ऋ ष का पता पूछने जोधपुर तो राजपरिवार आया नहीं। ये सारी जानकारी देवेन्द्र बाबू व भारतीय जी ने पं. लेखराम जी के ग्रन्थ से ली है। वही सबका स्रोत है। वष की बात तो जोड़ी गई है। यह गढ़न्त है। पं. लेखराम जी ने एक – एक दिन की घटना तत्कालीन 'आर्य समाचार' मा सक मेरठ का नाम लेकर अपने ग्रन्थ में दी है। 'आर्य समाचार' का वह ऐतिहा सक अंक आज धरती तल पर केवल जिज्ञासु के पास है। उसके पृष्ठ 213 पर प्रताप संह के दर्शनार्थ जाने का उल्लेख है। कोई बात हुई ही नहीं। हदीस गढ़ने वाला कोई भी हो, है यह हदीस। तब ठा. भोपाल संह व जेठमल तो वहीं थे। कसी ने कभी यह गढ़न्त न सुनाई । शेष चर्चा फर करेंगे। जिसमें हिमत हो इसका प्रतिवाद करे।

एक नया प्रश्ि्नः- भावेश जी इस समय अकारण आवेश में हैं। वह पूछते हैं यह कहाँ लखा है क माई भगवती लड़की नहीं बाल वधवा थी? श्रीमान् जी उत्तर द क्षण के आर्य व अन-आर्य समाजी तो छोटी-छोटी घटनायें इस सेवक से पूछते रहते हैं और आप पंजाब में कभी घर-घर में च र्चत माई जी के बारे में इस साहित्यिक कुली से ''कहाँ लखा है?'' यह पूछते हैं।

महोदय हमने माई जी के साथ वर्षों कार्य करने वाले मेहता जै मनि जी (आर्य समाज के त्र.हृ.रू.), दीवान श्री बद्रीदास, ला. सलामतराय जी, महामुनि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाशय कृष्ण जी, पूज्य 'प्रेम' जी के मुख से सुना। महोदय माई जी का एक साक्षात्कार लया गया था। उसकी स्कैनिंग करके छपवा दी। 'प्रकाश' में छपे उस साक्षात्कार में माई जी को साक्षात्कार लेने वाला 'माता भगवती' लखता है। उनका कभी फोटो छपा देखा उस पर भी 'माई भगवती' शीर्षक था। पंजाब में माई लड़की को कोई नहीं कहता। माई का अर्थ माता या

बूढ़ी ही लया जाता है फर भी कहाँ लखा का हठ है तो थोड़ा आप ही हाथ पैर मारकर देखें। स्वामी श्रद्धानन्द जी के आर भक काल का साहित्य देखें। 'बाल वधवा' शब्द न मले तो फर लेखक की गर्दन धर दबोच लेना। जैसे भारतीय जी ने 'कहाँ लखा है' की रट लगाकर जब हड़क प मचाया था तो हमने ' लखा हुआ' सब कुछ दिखा दिया था- आपकोाी रुष्ट नहीं करेंगे। आप हमारे हैं, हम आपके हैं। आपको भी प्रसन्न कर देंगे।

व चत्र शंका समाधानः प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

NOVEMBER 22, 2015 2 COMMENTS

श्री स्वामी ववेकानन्द जी रोजड़ का शंका समाधान पढ़ सुनकर कुछ स्वाध्याय प्रेमी उनके समाधान परी प्रश्न उठाते हैं। उन पर कुछ टिप्पणी करने को कई कारणों से टाल देना उ चत जाना। वह दर्शनों के पण्डित हैं अतः उन्हीं से उनके समाधान पर प्रश्न पूछने का परामर्श देना ठीक लगा। अब बहुत कहा गया तो उनके दो वचारों पर कुछ निवेदन कया जाता है। पाठक तथा वद्वान् इस पर गभीरता से वचारें।

एक प्रश्न के उत्तर में गऊ को कसाई से बचाने के लए असत्य कतई न बोलने और ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र को आपने न्यारा-न्यारा उपाय करने का उपदेश दिया है। कसी भी अवस्था में असत्य न बोलने का आपका उपदेश है। गुप्तचर वभाग में कार्यरत व्यक्ति देश की रक्षा करने में लगे रहते हैं। वे झूठ बोलकर क्या पाप करते हैं? पं. रु चराम जी ने श्याम भाई का शव क्या सत्य बोल कर प्राप्त कया। वीर भगत संह ने साण्डर्स को मारा तो पु लस ने पं. भगवद्दत्त जी, पं. रामगोपाल जी वैद्य तथा ठाकुर अमर संह से पूछा, वे गोली चलाकर कधर को भागे? तीनों ने कहा, हमने तो कसी को इधर से भागते देखा ही नहीं। क्रान्तिकारी पु लस के हाथ नहीं आए। क्या ये तीन असत्य बोलने के कारण पापी माने जायें?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने शाही कला में जाँच करने वालो को कहा, ''मैं भापडोद की पंचायत में आने वाले कसी भी व्यक्ति का नाम नहीं जानता।'' वे जिसका भी नाम बताते सरकार उसे यातनायें देती। स्वामी जी ने झूठ बोलकर इतिहास बनाया। इसे आप पाप मानेंगे क्या?

रोजड़ में छपे एक बड़े ग्रन्थ में व उत्कृष्ट समाधान में मोक्ष प्राप्ति को ही सर्वोत्तम कर्म बताया गया है। जन्म लेने से दुःख भी भोगना पड़ता है सो जन्म लेना कोई बुद् धमत्ता का कर्म नहीं। इस आाशय के वाक्य इस लेखक ने कई बार पढ़े हैं। मोक्ष का महत्त्व सब जानते हैं परन्तु यह मत भू लए क ऋ ष के पत्र-व्यवहार में ही समा ध का आनन्द छोड़कर लोकोपकार, वेद-प्रचार के लए सम र्पत होने की चर्चा पढ़ लीजिये। ऋ ष दूसरों के बन्धन काटने के लए बार-बार नरजन्म पाने की घोषणा या कामना करते हैं। ध्यान से ऋ ष जीवन का पाठ कीजिये, मनन कीजिये। रोजड़ के कई महात्मा मोक्ष वषयक एकाङ्गी वचार देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने प्राणोत्सर्ग से पूर्व धर्म प्रचार जाति रक्षा के लए फर से नर-जन्म पाने की कामना व्यक्त की थी। क्या यह वेद- वरुद्ध माना जावे?

शंका समाधान करते समय ऋ ष के पत्र-व्यवहार तथा जीवन-चरित्र का भी गाीर ज्ञान होना चाहिये। वेद के सद्धान्तों को, वैदिक दर्शन को समझने के लए इनका भी उतना ही महत्त्व

है जितना अन्य आर्ष ग्रन्थों का है। बुद् ध-भेद पैदा करने से हानि ही होगी। संगति का लगाना बहुत आवश्यक है।

चार्वाक दर्शन एवं वेद: – डॉ. वेद प्रकाश

NOVEMBER 18, 2015 1 COMMENT

(सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास के आलोक में)

– डॉ. वेद प्रकाश

[वर्ष 2013 में ऋ ष – मेले के अवसर पर आयोजित वेद-गोष्ठी में प्रस्तुत एवं पुरस्कृत यह शोध लेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।] -सपादक

सृष्टि के प्रारभ से ही आर्यावर्त में वेद की प्रतिष्ठा रही है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त तथा वैदिक ऋ षयों द्वारा अनुभूत वेद ज्ञान सत्यासत्य के निर्णय का एक मात्र आधार रहा है। भारतीय चन्तन में वैदिक ज्ञान की सर्वोत्कृष्टता इस बात से भी परिल क्षत होती है क आस्तिकता और नास्तिकता का नियामक भले ही लोक में ईश्वर है, परन्तु शास्त्र की दृष्टि से वेद है। अर्थात् जो वेद को मानता है वह आस्तिक है तथा जो वेद को नहीं मानता , वह नास्तिक है। मनु के शदों में 'नास्तिको वेदनिन्दकः'(मनुस्मृति 2.11)। परन्तु धीरे-धीरे भारत में वेद मन्त्रों के मनमाने अर्थ कये जाने लगे तथा वैदिक यज्ञों एवं कर्मकाण्ड में आडबर, हिंसा आदि अमानवीय भावनाओं का प्रभुत्व बढता गया। परिणामस्वरूप वेद वद्या के स्थान पर अ वद्या का प्रसार होने लगा। इसी के परिणामस्वरूप भारत में चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ। ये दर्शन वेद को प्रमाण नहीं मानते हैं, अतः इन्हें भारतीय दार्शनिक परपरा में नास्तिक दर्शन कहा जाता है।

चार्वाक दर्शन के सद्धान्त अन्य दार्शनिक ग्रन्थों यथा ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य, कमलशीलकृत तत्त्वसंग्रहपञ्जिका, ववरणप्रणेयसंग्रह, न्यायमञ्जरी, सर्व सद्धान्तसंग्रह, षड्दर्शनसमुच्चय, तर्करहस्यदी पका, सर्वदर्शनसंग्रह आदि ग्रन्थों में पूर्वपक्ष के रूप में हुआ है। चार्वाक दर्शन का आधार मुय रूप से वेद- वरोध है, जैसा क इनके वेद वषयक सद्धान्तों से वदित होता है-

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भाण्डधूर्तनिशाचराः।

प्रस्तुत शोधपत्र में मह र्ष दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में प्रस्तुत चार्वाक दर्शन के सद्धान्तों को प्रस्तुत कर उनकी दार्शनिक ग्रन्थों के आधार पर प्रामा णकता सद्ध की गयी है। इसके पश्चात् मह र्ष दयानन्द द्वारा चार्वाक दर्शन के सद्धान्तों का खण्डन तथा उनकी वेदानुकूलता प्रस्तुत कर चार्वाक दर्शन के जो सद्धान्त वेदानुकूल है, उनकी समीक्षा मह र्ष दयानन्द द्वारा प्रस्तुत सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास के सन्दर्भ में की गयी है।

मह र्ष दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में चार्वाक दर्शन के निम्न ला ित सद्धान्तों को प्रस्तुत कया गया है-

पुनर्जन्म का सद्धान्त– चार्वाक दर्शन पुनर्जन्म के सद्धान्त को स्वीकार नहीं करता है। मह र्ष दयानन्द ने इस कथन की पुष्टि के लए 12 वें समुल्लास के प्रारभ में बृहस्पति नामक आचार्य का एक प्र सद्ध पद्य प्रस्तुत कया है –

यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः।

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

अर्थात् जब तक जीवन है, सुखपूर्वक जीयें। क्यों क मृत्यु से कुछ भी अगोचर नहीं है। भस्मीभूत होने वाले इस शरीर का पुनः आगमन कहां होगा? अर्थात् मृत्यु के पश्चात् जीव पुनः संसार में नहीं आता है। अतः-

यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पबेत्।

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।**3**

अर्थात् सुखपूर्वक जीने के लए ऋण लेकर भी घी पीना चाहिए।

मह र्ष दयानन्द जीव को अनादि मानते हैं। परलोक के सबन्ध में उनका वचार है क जैसे इस समय सुख दुःख का भोक्ता जीव है, वैसे ही परजन्म में भी होता है।4 वेद में पुनर्जन्म के समर्थन में अनेक मन्त्र प्राप्त होते हैं, जिनका सारांश निम्न प्रकार से है- सत्य के ज्ञाता और अहिंसक उन जीवों ने फर प्राणधारण कया।5 कसने मुझे पुनः वशाल पृ थवी पर जन्म दिया।6 मैं पुनः जन्म लेकर माता- पता के दर्शन करुँ।7 कठोपनिषद् का यह प्र सद्ध वाक्य –

सस्य मव मर्त्यः पच्यते सस्य मवाजायते पुनः।**8** तथा-

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।

स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।।**9**

अर्थात् जिसका जैसा कर्म होता है और शास्त्रादि के श्रवण के द्वारा जिसको जैसा भाव प्राप्त हुआ है, उन्हीं के अनुसार शरीर धारण करने के लए कतने ही जीव अनेक प्रकार की योनियों को प्राप्त हो जाते हैं और अन्य कतने ही स्थावर भाव का अनुसरण करते हैं।

शरीर में चार महाभूतों के योग से चैतन्य-उत्प त – चार्वाक की यह मान्यता है क हमारा शरीर पृ थवी, जल, अग्नि तथा वायु इन चार महाभूतों के संयोग से बना है। चार्वाक चार ही महाभूत स्वीकार करता है।10 वह आकाश को स्वीकार नहीं करता। इस शरीर में इन चार महाभूतों के योग से चैतन्य उत्पन्न होता है। जैसे मादक द्रव्य खाने पीने से मद उत्पन्न होता है, इसी प्रकार जीव शरीर के साथ उत्पन्न होकर शरीर के नाश के साथ ही नष्ट हो जाता है।11 फर कसको पाप-पुण्य का फल होगा? अर्थात् शरीर के नष्ट होने के साथ ही जीवन भी नष्ट हो जाता है। अतः पाप-पुण्य का भोक्ता कौन होगा अर्थात् कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि पृथव्यादि भूत जड़ हैं तथा जड़ पदार्थों से चेतन की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती। मद के समान चेतन की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता, क्योंकि मद चेतन को होता है, जड़ को नहीं। पदार्थ नष्ट अर्थात् अदृष्ट होते हैं परन्तु अभाव किसी का नहीं होता। इसी प्रकार अदृश्य होने पर जीव का भी अभाव नहीं मानना चाहिए। जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उसकी प्रकटता होती है। जब वह शरीर को छोड़ देता है, तब यह शरीर जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है वह जैसा चेतनयुक्त पूर्व में था वैसा नहीं हो सकता।

महर्षि दयानन्द के उपरोक्त विचारों का वेद में समर्थन प्राप्त होता है। जैसा कि चार्वाक मानते हैं कि शरीर के नष्ट होने के साथ ही जीव भी नष्ट हो जाता है। परन्तु वेद कहता है कि – मर्तेष्वग्निरमृतो निधायि।12 अर्थात् मनुष्यों में अमर जीवात्मा विद्यमान है। जहाँ तक जीवात्मा के पाप-पुण्य भोगने की बात है, वहाँ भी चार्वाक का मत वेद विरुद्ध है। वेद के अनुसार – जीवात्मा भोक्ता रूप में सांसारिक विषयों का भोग करता है।13 चार्वाक चार महाभूतों को ही स्वीकार करता है। वह प्रत्यक्ष न होने से आकाश को स्वीकार नहीं करता है। उपनिषद् का वचन है-

सर्वेषां वा एष भूतानामाकाशः परायणम् सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव जायन्ते।14

चैतन्य विशिष्टदेह ही आत्मा – चार्वाकों का सिद्धान्त है कि –

तच्चैतन्य विशिष्टदेह एव आत्मा देहातिरिक्त आत्मनि प्रमाणाभावात्।15

अर्थात् चैतन्य विशिष्टदेह ही आत्मा है, देह से अतिरिक्त आत्मा के विषय में प्रमाण का अभाव होने से। इस शरीर में चारों भूतों के संयोग से जीवात्मा उत्पन्न होकर उन्हीं के वियोग के साथ ही नष्ट हो जाता है। क्योंकि मरने के बाद कोई जीव प्रत्यक्ष नहीं होता।

महर्षि दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं कि जो देह से पृथक् आत्मा न हो तो जिसके संयोग से चेतनता और वियोग से जड़ता होती है, वह देह से पृथक् है। जैसे आँख सबको देखती है पर वह स्वयं को नहीं देख सकती। इसी प्रकार प्रत्यक्ष का करने वाला अपने ऐन्द्रिय का प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। जैसे आँख से सब घट-पटादि पदार्थ देखता है वेसे आँख को अपने ज्ञान से देखता है। जो दृष्टा है वह दृष्टा ही रहता है, दृश्य कभी नहीं होता। कठोपनिषद् से इस तथ्य की पुष्टि होती है –

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।

दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।16

पुरुषार्थ का फल – चार्वाकों के अनुसार सुन्दर स्त्री से आलिङ्गन करना ही पुरुषार्थ का फल है।17

यदि इसे पुरुषार्थ का फल मानते हैं तो इससे क्षणिक सुख और दुःख भी होता है, वह भी पुरुषार्थ का ही फल होगा। जब ऐसा है तो स्वर्ग ही की हानि होने से दुःख भोगना पड़ेगा। जो

कहो क सुख के बढ़ाने और दुःख के घटाने में प्रयत्न करना चाहिए तो मुक्ति सुख की हानि हो जाती है। इस लए वह पुरुषार्थ का फल नहीं।18

परलोक– चार्वाक परलोक की धारणा को व्यर्थ मानते हैं। क्यों क इस लोक के उपस्थित सुख को छोड़कर अनुपस्थित स्वर्ग के सुख की इच्छा कर धूर्त क थत वेदोक्त अग्निहोत्रादि कर्म, उपासना और ज्ञानकाण्ड का अनुष्ठान परलोक के लए करते हैं, वे अज्ञानी हैं। जो परलोक है ही नही, उसकी आशा करना मूर्खता का काम है । क्यों क-

यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष वनिर्गतः।

कस्माद् भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः।।**19**

यदि इस देह से निकल कर जीव कसी अन्य लोक में जाता है तो वह अपने बन्धुओं के स्नेह के कारण पुनः अपने घर में ही क्यों नहीं आ जाता।

इस सन्दर्भ में चार्वाकों की वेद वरुद्धता पुनर्जन्म के निरुपण के समय ही स्पष्ट कर दी गयी है। मह र्ष दयानन्द इस वषयमें कहते हैं क देह से निकल कर जीव स्थानान्तर और शरीरान्तर को प्राप्त होता है और उसको पूर्वजन्म तथा कुटुबादि का ज्ञान कुछ भी नहीं रहता, इस लए वह पुनः कुटुब में नहीं आ सकता।20

अग्निहोत्र**,** वेद**,** त्रिदण्ड**,** भस्मगुण्ठन – चार्वाकों के अनुसार-

अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्।

बुद् धपौरुषहीनानां जी वकेति बृहस्पतिः।।**21**

अग्निहोत्र, वेद, त्रिदण्ड, भस्मगुण्ठन ये सभी बुद् ध एवं पौरुषहीन व्यक्तियों की आजी वका के साधन हैं।

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भाण्डधूर्तनिशाचराः।

जर्फरीतुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम्।।**22**

अर्थात् तीनों वेदों के कर्ता भाण्ड, धूर्त और निशाचर हैं तथा जर्फरी-तुर्फरी इत्यादि पण्डितों के धूर्ततायुक्त वचन हैं।

अश्वस्यात्र हि शश्नन्तु पत्नीग्राह्यं प्रकीर्तितम्।

भण्डैस्तद्वत्परं चैव ग्राह्यजातं प्रकी र्ततम्।।**23**

तथा अश्व के शश्न को यजमान की पत्नी ग्रहण करे।

मांसानां खादनं तद्वन्निशाचरसमीरितम्।।**24**

मांसाहार प्रतिपादन करने वाला वेद राक्षसों का बनाया हुआ है।

मह र्ष दयानन्द के अनुसार अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद् ध द्वारा आरोग्यता का होना, उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सद् ध होती है।25 उपनिषद् का वाक्य है क स्वर्ग की कामना के लए अग्निहोत्र करें –

अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः।**26** तथा –

यथेह क्षु धता बाला मातरं पर्य्युपासते।

एवँ्सर्वा ण भूतान्यग्निहोत्रमुपासते।।**27**

चार्वाकों द्वारा कया गया त्रिदण्ड तथा भस्मधारण का खण्डन ठीक है। क्यों क सपूर्ण वैदिक वाङ्मय में स्तुति, प्रार्थना अथवा उपासना की पद्धति में कहीं भी त्रिदण्ड अथवा भस्मधारण क उल्लेख नहीं है। मह र्ष दयानन्द कहते हैं क जो चार्वाकादि ने वेदादि सत्यशास्त्र देखे, सुने वा पढ़े होते तो वेदों की निन्दा कभी न करते क वेद भांड, धूर्त और निशाचरवत्् पुरुषों ने बनाये हैं, ऐसा वचन कभी न निकालते हाँ। भांड धूर्त निशाचरवत् महीधरादि टीकाकार हुए हैं, उनकी धूर्तता है, वेदों की नहीं।28

जहाँ तक वेदों के निर्माण का प्रश्न है मह र्ष दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभू मका के वेदोत्प त्त वषय में शतपथ ब्राह्मण के याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद को प्रस्तुत कया है –

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्व सतमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ् गरसः।**29**

अर्थात् याज्ञवल्क्य कहते हैं क हे मैत्रेयी! महान् आकाश से भी वृहद् परमेश्वर से ही ऋग्वेदादि वेद्चतुष्टय निःश्वास के समान सहज रूप से निकले हैं, ऐसा मानना चाहिए। जैसे शरीर से उच्छ्वास निकल कर पुनः शरीर में ही प्रवेश कर जाता है, वैसे ही ईश्वर से वेद का प्रादुर्भाव और तिरोभाव होता है, ऐसा मानना चाहिए।**30**

भला! वचारना चाहिए क स्त्री से अश्व के लङ्ग का ग्रहण कराके उससे समागम कराना और यजमान की कन्या से हाँसी ठट्ठा आदि करना सवाय वाममार्गी लोगों से अन्य मनुष्यों का काम नहीं है। बिना इन महापापी वाममा र्गयों के भ्रष्ट, वेदार्थ से वपरीत, अशुद्ध व्यायान कौन करता? और जो माँस खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों की लीला है। वेदों में कहीं माँस का खाना नहीं लखा।**31**

मोक्ष – चार्वाकों के अनुसार देह का नाश होना ही मोक्ष है।32

इस पर मह र्ष दयानन्द कहते हैं क- तो फर गधे, कुत्ते आदि पशुओं और मनुष्यों में क्या अन्तर रहा।33 अर्थात् वैदिक और दार्शनिक ग्रन्थों में मोक्षप्राप्ति के यम-नियमादि मार्ग बतलाये गये हैं, उनकी कोई प्रासङ् गकता न रहेगी।

जगत् स्वाभा वक है – चार्वाकों के अनुसार अग्नि उष्ण है, जल शीत है, तथा वायु स्पर्श में सम है। ऐसा इनको कसने बनाया है? अर्थात् कसी ने भी नहीं। इस लए जगत् के समस्त पदार्थ स्वाभा वक हैं।

अग्निरुष्णो जलं शीतं समस्पर्शस्तथाऽनिलः।

केनेदं चत्रितं तस्मात्स्वभावात्तदव्यवस्थितिः।।34

मह र्ष दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं क बिना चेतन परमेश्वर के निर्माण कये जड़ पदार्थ स्वयं आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मलकर उत्पन्न नहीं हो सकते। इस वास्ते सृष्टि का कर्ता अवश्य होना चाहिए। यदि स्वभाव से ही होते तो द् वतीय सूर्य, चन्द्र, पृ थवी और नक्षत्रादि लोक आपसे आप क्यों नहीं बन जाते हैं।35 इस सन्दर्भ में वेद का कथन है क वह ईश्वर सत् वस्तुओं का कारण तथा अमूर्त वायु आदि का प्रकाशक है।36

वर्ण एवं आश्रम – चार्वाकों के अनुसार न कुछ स्वर्ग है, न अपवर्ग है तथा न ही यह आत्मा दूसरे लोक में जाता है तथा न ही वर्णाश्रम आदि की क्रयाएँ फल देने वाली हैं।

न स्वर्गो नाऽपवर्गो वा नैवात्मा पारलौ ककः।

नैव वर्णाश्रमादीनां क्रयाश्च फलदायिकाः।।37

मह र्ष दयानन्द कहते हैं क स्वर्ग सुख भोग और नरक दुःख भोग का नाम है। जो जीवात्मा न होता तो सुख दुःख का भोक्ता कौन हो सके? जैसे इस समय सुख दुःख का भोक्ता जीव है वैसे परजन्म में भी होता है। क्या सत्यभाषण और परोपकारादि क्रया भी वर्णाश्र मयों की निष्फल होगी? की नहीं।38

सुख दुःख का भोक्ता जीव है, इस तथ्य की पुष्टि उपनिषद् इस प्र सद्ध मन्त्र से हो जाती है –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अ भचाकशीति।।39

यज्ञ में पशुब ल – चार्वाक कहते हैं क ज्योतिष्टोम यज्ञ में मारा हुआ पशु यदि स्वर्ग में जायेगा, ऐसा मानकर यजमान यज्ञ में पशु की हिंसा करता है तो वह अपने पता को मारकर स्वर्ग में क्यों नहीं भेज देता।

पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे ग मष्यति।

स्व पता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते।।40

मह र्ष दयानन्द इसके समाधान में कहते हैं क पशु मार के होम करना वेदादि सत्यशास्त्रों में कहीं नहीं लखा है।41

श्राद्ध एवं तर्पण – चार्वाक कहते हैं क यदि मृतक प्रा णयों का श्राद्ध उन मरे हुए प्रा णयों की तृप्ति का कारण है तो कहीं अन्य स्थान पर जाते हुए व्यक्तियों के लए पाथेय अर्थात् मार्ग के लए भोज्यादि सामग्री आदि की कल्पना व्यर्थ है। स्वर्ग में स्थित व्यक्ति जब दान से तृप्त हो जाते हैं तब प्रासाद के ऊपरि भाग में स्थित व्यक्ति को नीचे से भोजन क्यों नहीं पहुँचाया जा सकता है। अतः ब्राह्मणों के द्वारा अपनी जी वकोपार्जन के लए ही मृतकों के लए ये प्रेत क्रयाएँ बनायी गयी हैं।**42**

इस पर मह ष दयानन्द का मन्तव्य है क मृतकों का श्राद्ध, तर्पण करना कपोलकल्पित है क्यों क यह वेदादि सत्यशास्त्रों के वरुद्ध होने से भागवतादि पुराणवालों का मत है। इस लए इस बात का खण्डन अखण्डनीय है।**43**

नरक – चार्वाकों के अनुसार काँटे आदि के लगने से होने वाले दुःख का नाम नरक है।**44** इस पर मह ष दयानन्द कहते हैं क तो महारोगादि नरक क्यों नहीं।**45** अर्थात् लोक में और भी बड़े-बड़े दुःख दिखायी देते हैं। उन सबको नरक मानना चाहिए।

परमेश्वर – चार्वाकों की मान्यता है क लोक सद्ध राजा ही परमेश्वर है।**46**

इस पर मह ष दयानन्द कहते हैं क राजा को ऐश्वर्यवान् और प्रजापालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ माने तो ठीक है, परन्तु जो अन्यायकारी और पापी राजा हो तो उसको भी परमेश्वर के समान मानते हो तो तुहारे जैसा कोईाी मूर्ख नहीं।**47**

अतः स्पष्ट है क मह ष दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के बारहवें समुल्लास में चार्वाक दर्शन के सपूर्ण सद्धान्तों को स्पष्ट कया गया है तथा साथ ही प्र सद्ध दार्शनिक गन्थ सर्वदर्शन संग्रह के उद्धरणों को प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत कया गया है। मह ष दयानन्द द्वारा चार्वाक दर्शन के सद्धान्तों के सबन्ध में दोनों ही प्रकार के वचार प्राप्त होते हैं। वे चार्वाक दर्शन के कुछ मतों का समर्थन करते हैं तथा कुछ मतों का वरोध भी। परन्तु यहाँ समर्थन अथवा वरोध का एकमात्र कारण चार्वाकों के सद्धान्तों की वेदानुकूलता है। चार्वाकों के जो मत वेदानुकूल हैं, मह ष दयानन्द उनका समर्थन करते हैं तथा जो वेदानुकूल नहीं हैं, उनका वरोध। चार्वाकों के त्रिदण्ड, भस्मगुण्ठन, यज्ञ में पशुब ल तथा श्राद्ध एवं तर्पण वषयक वचारों का मह ष दयानन्द समर्थन नहीं करते हैं। वस्तुतः ये सभी मत वेद वरुद्ध हैं। त्रिदण्ड एवं भस्मगुण्ठन का वधान कसी भी वैदिक यज्ञ अथवा वधान में नहीं है तथा न ही इनकी दैनिक जीवन में कोई उपयो गता दिखायी देती है। जहाँ तक यज्ञ में पशुब ल का प्रश्न है, इसका भी कहीं वेद में समर्थन नहीं मलता। परन्तु कुछ वेद के भाष्यकार ऐसे भी हुए जिन्होंने वेदमन्त्रों से यज्ञ में पशुब ल को सद्ध कया। अतः यह दोष उन तथाक थत वेदभाष्यकारों का है, न क वेद का। यहीं स्थिति श्राद्ध एवं तर्पण के वषय में है। ये दोनों ही जी वत व्यक्तियों के सन्दर्भ में हैं। परन्तु कालान्तर में जनमानस पर पोरा णक प्रभाव के कारण कुछ कर्मकाण्डियों ने इन्हें अपनी जी वका का साधन बना लया। चार्वाकों ने वेदों का अध्ययन तो कया नहीं, अ पतु उन्होंने महीधरादि वेदभाष्यकारों तथा पौरा णकों द्वारा यज्ञादि के नाम से समाज में प्रच लत कये गये पाखण्ड को वेद से जोड़ दिया तथा वेद की निन्दा करने लगे।

इसके अतिरिक्त मह षदयानन्द ने चार्वाक दर्शन के पुनर्जन्म का सद्धान्त, शरीर में चार महाभूतों के योग से चैतन्य-उत्प त्त, चैतन्य व शष्टदेह ही आत्मा, पुरुषार्थ का फल, परलोक, अग्निहोत्र, वेद, मोक्ष, जगत् स्वाभा वक है, वर्ण एवं आश्रम, नरक तथा परमेश्वर वषयक सद्धान्तों का खण्डन कया है। खण्डन का सपूर्ण आधार वेद है, जैसा क प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रत्येक स्थल पर प्रद र्शत कया गया है। अन्त में मह ष दयानन्द के ही शदों में- जो वाममा र्गयों ने मथ्या कपोलकल्पना करके वेदों के नाम से अपना प्रयोजन सद्ध करना अर्थात् यथेष्ट मद्यपान, माँस खाने और परस्त्री गमन करने आदि दुष्ट कामों की प्रवृ त्त होने के अर्थ वेदों को कलङ्क लगाया, इन्हीं बातों को देखकर चार्वाक, बौद्ध तथा जैन लोग वेदों की निन्दा करने लगे और पृथक् एक वेद वरुद्ध अनीश्वरवादी अर्थात् नास्तिक मत चला लया। जो चार्वाकादि वेदों का मूलार्थ वचारते तो झूठी टीकाओं को देखकर सत्य वेदोक्त मत से क्यों हाथ धो बैठते? क्या करे बिचारे ' वनाशकाले वपरीतबुद् धः'। जब नष्ट भ्रष्ट होने का समय आता है तब मनुष्य की उल्टी बुद् ध हो जाती है।**48**

सन्दर्भ –

1. चार्वाकसमीक्षा, पृ. 6
2. सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 2, पंक्ति 17-18
3. वही पृ. 14, पं. 122-123
4. सत्यार्थ प्रकाश पृ. 291 आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली -6,65 वाँसंस्करण, नवबर 2007
5. असुं स ईयुरवृका ऋतज्ञाः। ऋग्वेद 10.15.1

6 को नो मह्या अदितये पुनर्दात्। वही 1.24.1

7 पतरं च दृशेयं मातरं च। वही 1.24.1

8 कठोपनिषद् 1.1.6

9 वही 2.4.7

10 अत्र चत्वारि भूतानि भू मवार्यनलानिलाः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 7, पंक्ति 60

11 तत्र पृ थव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि। तेय एव देहाकारपरिणतेयः कण्वादियो मदशक्तिवच्चैतन्य-मुपजायते। तेषु वनष्टेषु सत्सु स्वयं वनश्यति।

वही पृ. 2-3, पंक्ति 23-25

12 ऋग्वेद 10.45.7

13 अथर्ववेद 10.8.21

14 नृ संहपूर्वता पन्युपनिषद् 3.5

15 सर्वदर्शनसंग्रह पृ.3, पं. 27-28

16 कठोपनिषद् 3.12

17 अङ्गनाद्या लङ्गनादिजन्यं सुखमेव पुरुषार्थः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 3, पं. 29-30

18 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 289

19 सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 14, पं. 124-125

20 सत्यार्थप्रकाश, पृ.291

21 सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 5, पं. 50-51

22 वही पृ. 14, पं. 128-129

23 वही पृ. 15, पं. 130-131

24 वही पृ. 15, पं. 132

25 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 289

26 मैत्रायण्युपनिषद् 6.36

27 छान्दोग्योपनिषद् 5.24.5

28 सत्यार्थप्रकाश पृ. 289

29 श. का. 14, अ. 5 (ब्रा. 4, क. 10)

30 याज्ञवल्क्योऽ भवदति – हे मैत्रेयी! महत आकाशाद प बृहतः परमेश्वरस्यैव सकाशादृग्वेदादिवेदचतुष्टयं (निःश्व सत) निःश्वासवत्सहजतया निःसृतमस्तीति वेद्यम्। यथा शरीराच्छ्वासो निःसृत्य पुनस्तदेव प्र वशति तथैवेश्वराद्वेदानां प्रादुर्भावतिरो-भावौ भवतः इति निश्चयः। ऋग्वेदादिभाष्यभू मका, वेदोत्प त्त वषय 3

31 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 291-292

32 देहोच्छेदो मोक्षः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ.6,पं. 53

33 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 289

34 सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 13,पं. 110-111

35 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 291

36 सतश्च योनिमसतश्च व वः। यजुर्वेद 13.3

37 सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 13, पं. 114-115

38 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 291

39 श्वेताश्वतरोपनिषद् 4.6

40 सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 13, पं. 114-115

41 सत्यार्थप्रकाश पृ. 291

42 मृतानाम प जन्तूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्।

गच्छता मह जन्तूनां व्यर्थ पाथेयकल्पनम्।।

स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानतः।

प्रासादस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते।।

ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मणै र्विहितस्त्विह।

मृतानां प्रेतकार्या ण न त्वन्यद् वद्यते क्व चत्।। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 13-14, पं. 116, 118, 120, 121, 126, 127

43 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 291

44 कण्टकादिजन्यं दुःामेव नरकः। सर्वदर्शनसंग्रह पृ. 6, पं. 52

45 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 289

46 लोक सद्धो राजा परमेश्वरः। वही पृ. 6, पं. 52-53

47 सत्यार्थप्रकाश, पृ. 289

48 वही, पृ. 292

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1 अथर्ववेद, भाष्यकार – क्षेमकरणदास त्रिवेदी, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2007

2 उपनिषद् संग्रह – सं. – पं. जगदीश शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1980

3 ऋग्वेद, भाष्यकार – मह ष दयानन्द सरस्वती, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2005

4 त्रग्वेदादिभाष्यभू मका – मह ष दयानन्द सरस्वती, दिल्ली

5 चार्वाकसमीक्षा – स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती, वश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, हो शयारपुर, 1964

6 सत्यार्थप्रकाश – मह ष दयानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 65 वाँ संस्करण, नवबर 2007

7 सर्वदर्शनसंग्रह – सायण-माधव, प्राच्य वद्या संशोधन मन्दिर, पुना, 1924

8 यजुर्वेद, भाष्यकार – मह ष दयानन्द सरस्वती, आर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2006

– सहायक आचार्य, पंजाब वश्व वद्यालय, वश्वेश्वरानन्द वश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान, हो शयारपुर

श्री डॉ. हेडगेवार की चेतावनीः- प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

NOVEMBER 16, 2015 LEAVE A COMMENT

'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ-तत्त्व और चन्तन' पुस्तक मेरे सामने है। इसके पृष्ठ 19 पर सद्धान्त और व्यवहार के टकराव या दूरी पर डॉ. हेडगेवार जी की चेतावनी संघ को ही रास नहीं आ रही। ''संसार असार है, यह जीवन मायामय है, आदि तात्त्विक बातें केवल पुस्तकों में ही शोभा देती है।'' इस सोच को आप पतन का कारण मानते हैं। जगत् मायामय है, मथ्या है। ववेकानन्द भी तो यही मानते थे। जगत् मथ्या है तो फर जगत्गुरु कसके गुरु हैं?

''मुझे एक भी उदाहरण बतावें जहाँ कहीं कसी मनुष्य के केवल पूजा-पाठ करने से सौ रुपये उसके चरणों पर आ पड़े हों। ऐसा तो कभी नहीं होता।'' यह चन्तन मनन ऋ ष दयानन्द का है। शब्द डॉ. हेडगेवार जी के हैं परन्तु राष्ट्रधर्म ने तो तेलंग स्वामी के चमत्कारों की झड़ी-सी लगा दी थी।

अवतारवादी सोच पतन का एक कारणः– इसी पुस्तक के पृष्ठ 45 से 47 तक पढ़िये। इसका बहुत थोड़ा अंश आज देंगे। वस्तार से फर लखेंगे। डॉ. हेडगेवार जी के घर एक अति थ (सभवतः उनके मामाजी थे) पधारे। उनको पूजा-पाठ करते देखकर आपने एक प्रश्न पूछ लया। वह भड़क उठे और बोले, ''आप रामचन्द्र जी और भगवान् का उपहास करते हैं? भगवान् के गुण कभी मनुष्य में आ सकते हैं? हम लोग गुण ग्रहण करने की दृष्टि से नहीं, अ पतु पुण्य-संचय और मोक्ष-प्राप्ति के लए ग्रन्थ पाठ करते हैं।''

इस पर डॉ. हेडगेवार जी ने यह प्रति क्रया दी, ''जहाँ कहीं भी कोई कर्तव्यशाली या वचारवान् व्यक्ति उत्पन्न हुआ क बस हम उसे अवतारों की श्रेणी में ढ़केल देते हैं, उस पर देवत्व लादने में तनिक भी देर नहीं लगाते।''

संघ को डॉ. हेडगेवार जी का यह वचार भी रास नहीं आया। गुरु गोलवलकर जी ने उनकी भव्य समा ध बनवा दी और फर गुरु जी की भी वैसी ही बनानी पड़ गई। डॉ. हेडगेवार जी ने छत्रपति शवाजी व गुरु रामदास से प्रेरणा लेने को कहा। घिसते-घिसते वे सब घिस गये। सबका स्थान ववेकानन्द जी ने ले लया। गुजरात के पड़ौस में जन्मे शवाजी व गुजरात में

जन्मे ऋ ष दयानन्द को गुजरात से निष्का सत कर दिया गया है। जिस मह ष दयानन्द पर भाव-भरित हृदय से सरदार पटेल ने अन्तिम भाषण दिया, उस पर अवतारवादियों की इस कृपा पर हम ब लहारी।

काव ड़ये दुर्घटना ग्रस्तः– हिन्दुओं के तीर्थ यात्री वर्षभर दुर्घटना ग्रस्त होते रहते हैं। जड़ बुद् ध, पाषण हृदय तथाक थत हिन्दू नेता इनके कारण और निवारण पर सोचते ही नहीं। परोपकारी में हर बार इन दुःखद घटनाओं पर हम रक्तरोदन करते रहते हैं। अभी दूरदर्शन पर बिहार के भोलेभाले काँव ड़यों के मरने का समाचार सुनकर हृदय पर गहरी चोट लगी। रो-रो कर हमारे नयनों में भी नीर नहीं। आर्यसमाज की तो यह अंध वश्वासी हिन्दू समाज सुनता नहीं। राजनेता ही अब तो हिन्दुओं के धा र्मक व्यायाकार बने बैठे हैं। हम कसको अपना रोना सुनावें। बाबा रामदेव ने भी कभी काँव ड़यों को महिमा मण्डित कया था। काँव ड़यों के काल कराल के गाल में वलीन होने पर बाबा रामदेव भी अभी तक तो मौन हैं।

आर्यसमाज के पाखण्ड खण्डन पर अंध वश्वासी खीजते हैं। अब पता लगा क अंध वश्वास के पोषकों की कृपा से हिन्दू मरते रहते हैं। जब प्रत्येक कुरीति हिन्दू संस्कृति के नाम पर महिमा-मण्डित की जायेगी तो वनाश व पतन ही होगा।

भक्ष्य व अभक्ष्य भोजन एवं गोरक्षा पर मह ष दयानन्द के वेदसम्मत, देशहितकारी एवं मनुष्यो चत वचार’ -मनमोहन कुमार आर्य

NOVEMBER 9, 2015 1 COMMENT

मनुष्य मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं, ज्ञानी व अज्ञानी। रोग के अनेक कारणों में से मुख्य कारण भोजन भी होता है। रोगी व्यक्ति डाक्टर के पास पहुंचता है तो कुशल च कत्सक जहां रोगी को रोग निवारण करने वाली ओष धयों के सेवन के बारे में बताता है वहीं वह उसे पथ्य अर्थात् भक्ष्य व अभक्ष्य अर्थात् खाने व न खाने योग्य भोजन के बारे में भी बताता है जिससे रोगी का रोग दूर हो जाता है। मह ष दयानन्द वेद एवं वैदिक साहित्य सहित वैद्यक व च कत्सा शास्त्र आयुर्वेद के भी वद्वान थे। उन्होंने धर्माधर्म व वैद्यक शास्त्रोक्त दृष्टि से भक्ष्य व अभक्ष्य पदार्थों पर अपने वचार सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुत कये हैं। उनके वचार आज भी प्रासं गक एवं अज्ञानियों के लए मार्गदर्शक हैं। अतः उन्हें सबके लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लखते हैं क भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है। एक धर्मशास्त्रोक्त तथा दूसरा वैद्यकशास्त्रोक्त। जैसे धर्मशास्त्र में- ’अभक्ष्या ण द् वजातीनाममेध्यप्रभवा ण च।। मनु.।।’ इसका अर्थ है क द् वज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को मलीन वष्ठा मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुए शाक फल मूल आदि न खाना। इसका तात्पर्य है क शाक, फल व अन्न आदि पदार्थ शुद्ध व प वत्र भू म में ही उत्पन्न होने चाहिये तभी वह भक्ष्य होते हैं। मलीन वष्ठा मूत्रादि से दू षत भू म में उत्पन्न खाद्य पदार्थ भक्ष्य श्रेणी में नहीं आते। मह ष दयानन्द आगे लखते हैं-‘वर्जयेन्मधुमांसं च।। मनु.।।’ अर्थात् जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि। ‘बुद् ध लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।।’ वचन को उद्धृत कर वह कहते

हैं क जो-जो बुद् ध का नाश करने वाले पदार्थ हैं, उन का सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दू षत, अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य, मांसाहारी म्लेच्छ क जिन का शरीर मद्य, मांस के परमाणुओं ही से पूरित है, उनके हाथ का (पकाया व बना) न खावें।

वह आगे लखते हैं क जिस में उपकारक प्रा णयों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से गाय की एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुंचता है वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दे। जैसे कसी गाय से बीस सेर और कसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उस का मध्यभाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अठारह और कोई छः महीने दूध देती है, उस का भी मध्य भाग बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से 24960 (चैबीस सहस्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियां छः बछड़े होते हैं उन में से दो मर जाये तो भी दश रहें। उनमें से पांच बछ.डयों के जन्म भर के दूध को मला कर 124800 (एक लाख चैबीस सहस्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पांच बैल वे जन्म भर में 5000 (पांच सहस्र) मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे तो अढ़ाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न मला कर 374800 (तीन लाख चैहत्तर हजार आठ सौ) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मला के एक गाय की एक पीढ़ी से 475600 (चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ) मनुष्य एक बार में पा लत होते हैं और पीढ़ी परपीढ़ी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है। इस से भन्न बैलगांड़ी सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं तथा गाय दूध से अ धक उपकारक होती है परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंस भी है परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद् धवृद् ध से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गना है और जो कोई अन्य वद्वान होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा।

बकरी के दूध से 25920 (पच्चीस सहस्र नौ सौ बीस) आद मयों का पालन होता है वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं । इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा।

देखो ! जब आर्यो (वेद के मानने वाले श्रेष्ठ मनुष्यों) का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे। क्यों क दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न व रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से वदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्या धकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्यों क नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्। जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल फूल कहां से हों?

मह षे दयानन्द एक काल्पनिक प्रश्न क जो सभी अंहिसक हो जाये तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें क सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरूषार्थ ही व्यर्थ जाय? का उत्तर देते हुए कहते हैं क यह राजपुरुषों का काम है क जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हों उन्हें दण्ड देवें और प्राण भी वयुक्त कर दें। (प्रश्न) फर क्या उन का मांस फेंक दें? (उत्तर) चाहें फेंक दें, चाहें कुत्ते आदि मांसाहारियों को खला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती कन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

जितना हिंसा, चोरी, वश्वासघात, छल व कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है, वह अभक्ष्य और अहिंसा व धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश बुद् ध-बल-पराक्रम-वृद् ध और आयु-वृद् ध होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथो चत समय पर मताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से वरुद्ध वकार करने वाले हैं, जिस-जिस के लए जो-जो पदार्थ वैद्यकशास्त्र में वर्जित कये हैं, उन-उन का सर्वथा त्याग करना और जो-जो जिस के लए वहित है उन-उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

गोकरुणानि ध पुस्तक में पशु हिंसक मनुष्य का काल्पनिक पक्ष प्रस्तुत कर मह षे दयानन्द जी ने लखा है क देखो ! जो शाकाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान् और जो मांस नहीं खाते वह निर्बल होते हैं, इस लए मांस खाना चाहिये। इसका प्रतिवाद करते हुए मह षे दयानन्द पशु रक्षक की ओर से कहते हैं क क्यों ऐसी अल्प समझ की बातें मानकर कुछ भी वचार नहीं करते। देखो, संह मांस खाता और सुअर वा अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता, परन्तु जो संह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गरे तो एक वा दो को मारता और एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब जंगली सुअर वा अरणा भैंसा जिस प्रा ण समुदाय में गरता है, तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और अनेक गोली, बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं गरता, और संह उस से डर के अलग सटक जाता है और वह अरणा भैंसा संह से नहीं डरता।

जिस देश में सवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मलता, वहां आपत्काल अथवा रोगनिवृति के लये क्या मांस खाने में दोष होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए मह षे दयानन्द लखते हैं क यह कहना व्यर्थ है क्यों क जहां मनुष्य रहते हैं, वहां पृ थवी अवश्य होती है। जहां पृ थवी है वहां खेती वा फल-फूल आदि होते हैं और जहां कुछ भी नहीं होता, वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। और जहां ऊसर भू म है, वहां मष्ट जल और फल-आहार आदि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है। आपत्काल में भी मनुष्य अन्य उपायों से अपना निर्वाह कर सकते हैं जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं। बिना मांस के रोगों का निवारण भी ओष धयों से यथावत् होता है, इस लये मांस खाना अच्छा नहीं।

मह र्ष दयानन्द ने मनुस्मृति के आधार पर लखा है क जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अ वरुद्ध मनुस्मृति युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मर कर सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है। यहां बताया गया है क वेद और वेदानुकूल मनुस्मृति के वचनों का पालन करने पर इस लोक में उन्नति होती है और मर कर भी जीवात्मा को सर्वोत्तम सुखों की प्राप्त होती है। हमारे मांसाहारी भाई कभी यह जानने का प्रयास ही नहीं करते क मरने के बाद आत्मा का अस्तित्व रहता है वा नहीं? यदि रहता है तो उसको सुख व दुःख क्यों, कैसे व कस प्रकार से प्राप्त होते हैं व उनका आधार क्या होता है। मह र्ष दयानन्द जी लखते हैं क जो वद्या नहीं पढ़ा है वह जैसा काष्ठ का हाथी, चमड़े का मृग होता है वैसा अ वद्वान मनुष्य जगत् में नाममात्र मनुष्य कहलाता है। इस लए वेदादि वद्या को पढ़, वद्वान्, धर्मात्मा होकर निर्वैरता से सब प्रा णयों के कल्याण का उपदेश करे। और उपदेश में वाणी को मधुर और कोमल बोलें। जो सत्योपदेश से धर्म की वृद् ध और अधर्म का नाश करते हैं वे पुरुष धन्य हैं।

मह र्ष गोकरुणानि ध पुस्तक में उपदेश करते हुए कहते हैं क ध्यान देकर सुनिये क जैसा दुःख-सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिये। और यह भी ध्यान में र खये क वे पशु आदि और उन के स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अ धक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अ धक बढ़ता और न्यून से नष्ट होता जाता है, इसी लये राजा प्रजा से कर लेता है क उन की रक्षा यथावत् करे न क राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश कया जावे। इस लये आज तक जो हुआ सो हुआ आगे आंखे खोल कर सब के हानिकारक कर्मों को न कीजिये और न करने दीजिये। हां हम लोगों का यही काम है क आप लोगों को भलााई और बुराई के कामों को जता देवें, और आप लोगों का यही काम है क पक्षपात छोड़ सब की रक्षा और उन्नति करने में तत्पर रहें। सर्वशक्तिमान जगदीश्वर हम और आप पर पूर्ण कृपा करें क जिस से हम और आप लोग वश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़, सर्वोपकारक कर्मों को कर के सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन मत डालना, कन्तु सुन कर उसके अनुसार आचरण करना। इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना। हे महाराज धराज जगदीश्वर ! जो इन (गाय आदि पशुओं) को कोई न बचावे तो आप इन की रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हुजिये।

लेख को वराम देने से पूर्व हम यह भी उल्लेख करना चाहते हैं क वेद और मह र्ष दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों को एक ही ईश्वर की सन्तान के रूप में मानते हैं। वेद में कसी मत वशेष के मनुष्य के प्रति कोई पूर्वाग्रह व पक्षपात करने का वधान नहीं है जैसा क अन्य मतों में देखा जाता है क सब अपने अपने समुदाय के प्रति ही उन्नति आदि के इच्छुक होते हैं। इसी कारण मह र्ष दयानन्द ने न केवल भारतीय आर्य-हिन्दू-बौद्ध-जैन आदि के हित व लाभ के लए ही वैदिक धर्म का प्रचार कया अ पतु संसार के अन्य मतों के अनुयायियों के प्रति भी अपनी शुभेच्छा का परिचय दिया। वह संसार के सभी लोगों का एक वैदिक सत्य धर्म, एक संस्कृति, एक मत, एक भाषा, एक सुख-दुख, समानता व निष्पक्षता के पक्षधर थे।

उनकी यह व शष्टता ही वैदिक वचारधारा के कारण थी। इसी वचारधारा को अपनाकर ही संसार में सभी ववादों का हल, शान्ति व सुख का वातावरण तैयार हो सकता है।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

गोरक्षा के लये क्या करना चाहिये?

–महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय, भारतरत्न।

'यदि हम गौओं की रक्षा करेंगे तो गौएं भी हमारी रक्षा करेंगी। गांव की आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक घर में तथा घरों के प्रत्येक समूह में एक गोशाला होनी चाहिये। दूध गरीब–अमीर सबको मलना चाहिये। गृहस्थों को पर्याप्त गोचरभू म मलनी चाहिये। गौओं को बिक्री के लये मेलों में भेजना बिलकुद बंद कर देना चाहिये। क्यों क इससे कसाइयों को गायें खरीदने में सु वधा होती है। कसानों की स्थिति के सुधार के लये दिये जाने वाले इन सुझावों तथा अन्य ऐसे सुझावों को कार्यरूप में परिणत करने के लये ग्राम–पंचायतों का निर्माण होना चाहिये।'

फोनः**09412985121**

गो-वध व मांसाहार का वेदों में कही भी नामोनिशान तक नहीं हैः शवदेव आर्य

NOVEMBER 9, 2015 LEAVE A COMMENT

प्रायः लोग बिना कुछ सोचे समझे बात करते हैं क वेदों में गो-वध तथा गो-मांस खाने का वधान है। ऐसे लोगों को ध्यान में रखकर कुछ लखने का यत्न कर रहा हूँ, आज तक जो भी ऐसी मान सकता से घिरे हुऐ लोग हो वे जरुर इसको पढ़ कर समझने का प्रयास करें। क्ष णक स्वार्थ व लाभ के लए वेद व गोमाता का नाम अप वत्र करने की को शश न करें। यदि लेशमात्र भी संदेह है तो इन मन्त्रों को समझों-

प्रजावतीः सुयवसे रुशन्तीः शुध्द अपः सुप्रपाणे पबन्तीः।

मा वस्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु।। **(**अथर्व**.-7.75.1)**

इस मन्त्र का देवता ‘अघ्न्या’ है। जो क वैदिक कोश के अनुसार गाय का मुख्य नाम है। इसका निर्वचन करते हुए लखा है – न हन्तव्या भवति अर्थात् गाय इतना अ धक उपकारी पशु है क इस का वध करना पाप ही नहीं अ पतु महापाप है।

इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार होगा क– हे मनुष्यो! तुम्हारे घरों में प्रजावतीः उत्तम सन्तान वाली, सुयवसे (जौ) के क्षेत्रों मे चरने वाली और शुध्द जलों को पीने वाली गौ हो और इसकी सुरक्षा ऐसी हो क कोई चोर उन्हें चुरा न सके और पापी डाकू आदि गाय को अपने वश में न कर सके । रुद्र परमात्मा की हेति=वज्रशक्ति तुम्हारे चारों तरफ सदा वद्यमान रहे।

यदि नो गां हं स यद्यश्वं यदि पूरुषम्।

तं त्वा सीसेन वध्यामः।। **(अथर्व.-1.16.4)**

अर्थात् राजन्! यदि कोई मनुष्य हमारी गाय, अश्व आदि पशुओं को मारता है, उसे हत्यारे को (सीसेन) कारागार या कठोर दण्ड देकर हमारी रक्षा करो।

पयः पशूनां रसमोषधीनाम्।

बृहस्पतिः स वता मे यच्छतात्।। **(अथर्व.-19.31.5)**

अर्थात् हे सवोत्पदाक परमेश्वर! हम सब को जीवन निर्वाह के लए गाय का दूध और औष धयों का रस भोजन के लए प्रदान करो।

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्र्वेषु या रुचः।

इन्द्राग्नी ता भ सर्वाभी रुचं नो धत्तबृहस्पते।। **(यजु.-13.23)**

इस मन्त्र के माध्यम से कहने का यत्न कया गया है क गो, अश्व आदि प्रा णयों से सदैव प्रीति कया करें।

घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पतेव पुत्रम भरक्षताद् इमान् स्वाहा।। **(यजु.-35.17)**

अर्थात् हे (अम्बे) राजन्! जैसे पता अपने पुत्रों की रक्षा करता है वैसे आप गाय के मधुर और रोगनाशक दूध घृत आदि की व्यवस्था कर हमारी रक्षा करें।

दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽन**………..**जायताम्।**(**यजु.**-22.22)**

इस मन्त्र में राष्ट्रिय प्रार्थना है – हमारे देश में प्रचुर दूध देने वाली गोएॅं भार ढोने में समर्थ तथा कृ ष के योग्य बैल और यानों में सक्षम और शीघ्रगामी घोड़े पैदा हों।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाॅं**2**ऽअस्तु सूर्य्यः।

माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। **(यजु.-13.29)**

गाय से जैसी कल्याणकारी करणें हम सब मनुष्य के लए निकलती हैं, ठीक ऐसी ही कल्याणकारी करणों को प्राप्त करने के लए प्रशं सत कोमलता गुणयुक्त वनस्पतियों से होम करो।

इस मन्त्र से स्पष्ट प्रतीत होता है क गाय के दुग्ध, मूत्र, मल आदि से उस गाय के अन्दर से कल्याणकारी करणें निकलती हैं, जो हम सब के लए अत्यन्त लाभप्रद हैं।

इमं मा हिंसीद् वपादं पशुं सहस्त्राक्षो मेधाय चीयमानः। मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चन्वानस्तन्वो निषीद। मयुं ते शुगृच्छतु यं द् वष्मस्तं ते शुगृच्छतु।। **(यजु.-13.47)**

इस मन्त्र के द्वारा परम पता परमेश्वर मनुष्य को आदेश देता है क सबके उपकार करने हारे गवादि पशुओं को कभी न मारें, कन्तु इनकी अच्छी प्रकार से रक्षा कर और इनसे उपकार लेके सब मनुष्यों को आनन्द देवे।

इमं साहस्त्रं शतधारमुत्सं व्यच्मानं सरिरस्य मध्ये।

घृतं दुहानामदिति जनायाग्ने मा हिंसी परमे व्योमन्।

गवयामारण्यमनु ते दिशा म तेन चन्वानस्तन्वो निषीद।

मवयं ते शुगृच्छतु। यं द् वष्मस्तं ते शुगृच्छतु।। **(यजु.-13.49)**

इस मन्त्र में भी इसी प्रकार की चर्चा प्राप्त होती है। देव दयानन्द जी इस मन्त्र के भावार्थ में लखते हैं क- हे राजपुरुषों! तुम लोगों को चाहिए क जिन बैल आदि पशुओं के प्रभाव से खेती आदि काम, जिन गौ आदि से दूध घी आदि उत्तम पदार्थ होते हैं क जिन के दूध आदि से प्रजा की रक्षा होती है, उनको कभी मत मारो और जो जन इन उपकारक पशुओं को मारें, उनको राजादि न्यायाधीश अत्यन्त दण्ड देवें।

अक्षराजाय कतवं कृतायादिनदर्शं त्रेतायै द्वापराया धकल्पिनमास्कदाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोधातं क्षुधे यो गां वकृन्तन्तं भक्षमाणऽउप तिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्य्यं पाप्मने सैलगम्।। **(यजु.-30.18)**

इस मन्त्र में कहा गया है क जो समाज को चलाने वाले राजादि लोग हैं वे तभी सामर्थ्यशील हैं, जो गाय आदि पशुओं को मारने, काटने वाले मनुष्यों को कठोर से कठोर सजा देता हो कन्तु बड़ा दुर्भाग्य है क हमारे समाज के राजादिगण लोग तो गो हत्या करने वालों को प्रोत्साहित करते, ये बडी दुःखद स्थिति है।

जो समाज को दिशा व दशा प्रदान करने वाले हैं, वे स्वयं ही गो-वध को कराने वाले हैं तथा गो-मांस का भक्षण करते हैं, और इसप्रकार लोगों को भी करने के लए सदैव प्रेरित करते हैं। इससे राजनीति भी करते हैं। अभी कुछ समय पूर्व की घटनाओं से आप सभी सम्यक्तया परि चत ही है।

अपक्रीताः सहीयसीर्वीरुधो या अ भष्टुताः।

त्रायन्तामस्मिन्ग्रामे गामश्वं पुरुषं पशुम्।। (अथर्व.-8.7.11)

इस मन्त्र में कहा गया है क रोगों का शमन करने वाली औष धयों से गौ, घोड़े, मनुष्य व पशुओं की रोग से रक्षा करें।

मधुममूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव। मधुमत्पर्णं मधुमत्पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुह्रतां गोपुरोगवम।। (अथर्व.-8.7.12)

इस मन्त्र में ओष धयों का चत्रण करते हुए 'गो पुरो गवम्'गाय को सर्व प्रथम स्थान पर रखा गया है। इस गाय के दूध व घी के साथ ओष धयों के सेवन से हमारा उत्तम स्वास्थ्य होवे।

गोरक्षा के लए महा र्ष दयानन्द का आन्दोलन:-

वेदों में कहा है – गोस्तु मात्रा न वद्यते।।(यजु.-23.48) अर्थात् गाय इतना अ धक महत्त्वपूर्ण पशु है जिसकी तुलना करना सम्भव ही नहीं है। गाय का दूध अमृत होता है और इसका मूत्र व गोबर भी रोग निवारक और सर्वोत्तम खाद है। कृ ष प्रधान भारत के लए तो इसका महत्त्व अत्य धक हो जाता है। इस लए दयार्द्र दयानन्द की दया 'गोकरुणा-नि ध'में ही उजागर होती है। गायों की नृशंस हत्या को देखकर ऋ ष दयानन्द के जीवन में कतिपय प्रसंग ही ऐसे आते हैं जिन अवसरों पर ऋ ष दयानन्द के अश्रु बहते हुए देखे गये-

देश में बढ़ती हुई गोहत्या देखकर रोये थे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

गोमाता के वध पर प्रतिबन्ध लगाने के लए दो करोड़ भारतवा सयों के हस्ताक्षर कराकर ब्रिटेन की महारानी वक्टोरिया को प्रतिवेदन करते हुए मह र्ष ने कहा था- बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या करना महापाप है, इसको बन्द करने से भारत देश फर समृध्दशाली हो सकता है। गाय हमारे सुखों का स्रोत है, निर्धन का जीवन और धनवान् का सौभाग्य है। भारत देश की खुशहाली के लए यह रीढ़ की हड्डी है।

महारानी वक्टोरिया को भेजा प्रतिवेदन

'' ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है जो सुख के लाभ में प्रसन्न और दुःख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के कये अपने उपकार में स्वयम् आनन्दित होता है वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिये। क्या ऐसा कोई भी वद्वान् भूगोल में था, है या होगा, जो परोपकार रूप धर्म और-परहानि स्वरूप अधर्म के सवाय धर्म और अधर्म की सध्दि कर सके। धन्य वे महाशयजन हैं जो अपने तन,मन और धन से संसार का उपकार सध्द करते हैं। द् वतीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन,मन और धन से जगत् में परहानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं।

सृष्टिक्रम में ठीक ठीक यही निश्चय होता है क परमेश्वर ने जो जो वस्तु बनाया है वह पूर्ण उपकार के लये है, अल्पलाभ से महाहानि करने के अर्थ नहीं। वश्व में दो ही जीवन के मूल हैं- एक अन्न और दूसरा पान। इसी अ भप्राय से आर्यवर शरोम ण राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न कसी को मारने देते थे। अब भी इस गाय,बैल,भैंस आदि को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते हैं, क्यों क अन्न और

पान की बहुताई इन्हीं से होती है। इससे सब का जीवन सुखी हो सकता है। जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इनके मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य कसी कर्म से नहीं। इस का निर्णय 'गोकरुणानि ध' पुस्तक में अच्छे प्रकार से प्रकट कर दिया है, अर्थात् एक गााय के मारने और मरवाने से चार लाख बीस हजार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इस लए हम सब लोग प्रजा की हितै षणी श्रीमती-राजराजेश्वरी क्वीन महारानी वक्टोरिया की न्यायप्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारक गााय आदि पशुओं की हत्या होती है, इसको इनके राज्य में से छुड़वाके अति प्रसन्न होना चाहते है।

यह हम को पूरा वश्वास है क वद्या, धर्म, प्रजाहित प्रय श्रीमती राजराजेश्वरी क्वीन महारानी वक्टोरिया पा र्लयामेण्ट सभा तथा सर्वोपरि प्रधान आर्यावत्रतस्थ श्रीमान् गवर्नर जनरल साहब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह तथा प्रसन्नतापूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करें। दे खए क उक्त गााय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध, घी और कसानों की कतनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्यप्रति अ धक-अ धक होती जाती है। पक्षपात छोड़के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म और पर हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या वद्या का यह फल और सध्दान्त नहीं है क जिस जिस से अ धक उपकार हो, उस उस का पालन वर्धन करना और नाश कभी न करना। परम दयालु, न्यायकारी, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने में हमें ऐकमत्य करें।

हस्ताक्षर. दयानन्द सरस्वती

संसार के राजा, महाराजाओं से वनति करके मह र्ष दयानन्द ने संसार के अ धपति परमेश्वर से भी प्रार्थना की-' हे महाराजा धराज जगदीश्वर! जो इनको कोई न बचावे तो आप उनकी रक्षा करने और हम से करानो में शीघ्र उद्यत हूजिए।'

मह र्ष दयानन्द और गोरक्षा के लाभ

- गाय आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का ही नाश हो जाता है।
- वेदों में परमात्मा की आज्ञा है- क अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि।। यजु. हे पुरुष तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे।
- ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे।
- हे मांसाहारियो! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं।
- हे परमेश्वर! तू क्यों न इन पशुओं पर जो क बिना अपराध मारे जोते हैं, दया नहीं करता । क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है। क्या उनके लये तेरी न्याय सभा बन्द हो गई? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता। क्यों इन मांसाहारियों की आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषें को दूर नहीं करता?
- और इन की रक्षा में अन्न भी महंगा नहीं होता, क्यों क दूध आदि के अ धक होने से दरिद्री को भी खान पान में मलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है। और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने दुर्गन्ध भी न्यून होता है, दुर्गन्ध के

स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुध्दि भी वशेष होती है। उससे रोगों की न्यूनता से हाने से सब को सुख बढ़ता है।

- देखो! तुच्छ लाभ के लये लाखों प्रा णयों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं।
- जितना (लाभ) गाय के दूध और बैलों के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है उतना भैं षयों के दूध और भैसों से नहीं। क्यों क जितने आरोग्य कारक और वृध्दिवर्धक आदि गण्ुा गाय के दूध और बैलों में होते हैं उतने भैंस के दूध और भैंसे के दूध और भैंसे आदि में नहीं हो सकते। (गोकरुणानि ध से)

गाय ही सर्वोत्तम क्यों!

गौ और कृ ष अन्योन्या श्रत हैं। इसी लए मह र्ष ने गोकृष्यादिर क्षणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों है? इसमें निम्न ल खत मुख्य वशेषताएंे हैं-

- गाय का दूध पीला और भैंस का सफेद होता है। इसी लए इसके दूध के वशेषज्ञ कहते हैं क गाय के दूध में सोने का अंश हेता है जो क स्वास्थ्य के लए उत्तम है और रोगनाशक है।
- गाय का दूध बुध्दिवर्धक तथा आरोग्यप्रद है।
- गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जब क भैंस का बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता है।
- गाय के दूध में स्फर्ति होती है। इसी लए गाय के बछडे व बछियांे खूब उछलते कूदते फरते हैं। भैंस के दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।
- गााय के बछड़े को 50 गायों या अ धक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूंेए लेता है। जब क भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।
- गाय का दूध तो सर्वाेत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊळ शक्ति बढ़ाती रहती है कन्तु भैंस की खाद एक दो वर्ष के बाद ही बेकार हो जाती है। और गोमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लया जाता है।
- गोमूत्र उत्तम औष ध है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में पचास से भी अ धक रोगों में इसका उपयोग होता है।
- कृ ष के कार्यों के लए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनीयुग में भी 5 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।
- गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेता है। इसी लए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न रहती है।
- गाय के दूध में सूरज की करणों से भी नीरोगता बढ़ती है। इसी लए वह अ धक स्वास्थ्यप्रद है।
- गाय की अपेक्षा भैंस के बच्चे/भैंसा धूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते।
- गाय की अपेक्षा भैंस के घी में कण अ धक होते हैं। जो क सुपाच्य नहीं होते।
- गाय का घी सुक्ष्मतम ना ड़यों में प्रवेश करके शक्ति देता है। मस्तिष्क व हृदय की सूक्ष्मतम ना ड़यों में पहुंेच कर गोघृत शक्ति प्रदान करता है। आयुर्वेद में गोघृत का ही शारीरिक शोधन में प्रयोग होता है।

- वज्ञानवेत्ताओं के अनुसार भैंस के दूध में लांग चेन फैट की मात्रा अ धक होती है, जो क ना.डयों में जम जाती है। और हृदय के रोग पैदा हो जाते हैं। परन्तु हृदय के रो गयों के लये भी गाय का दूध वशेष उपयोगी होता है।
- गाय का दूध वात नाशक, पत्तशामक और कफनाशक भी है।
- गाय का दही मधुर, रु चकारक, अग्निप्रदीपक, हृद्य, प्रय और पोषक होता है।
- गाय का मक्खन हितकारक, रंग साफ करने वाला, बलवर्धक, अग्नि प्रदीपक और व भन्न रोगों में रसायन व आयुवर्धक माना है।
- गाय का मट्ठा ;छाछद्ध तो लाखों रोगों की एक अचूक दवा है।
- गाय के दूध, मूत्र, गोबर, दही और घी से तैयार कया पंचगव्य तो असाध्य रोगों में अचूक दवा है। जिन रोगों में अन्य औषध्यिां काम नहीं कर पातीं उनमें पंचगव्य की मात्रा देने से आशतीत लाभ मलता है। मान सक उन्माद आदि रोगों में पंचगव्य रामबाण औष ध है।
- ना.डयों में अवरोध होने पर उत्पन्न व भन्न रोगों में गाय का घी, गो-मूत्र और प´चगव्य रोगनाश में परम सहायक होते हैं।

मह र्ष मनु महाराज भी गाय के महत्व से पूर्णरूपेण परि चत थे, जिसके कारण वे लखते हैं क-

नाकृत्वा प्रा णनां हिसा मांसमुत्पद्यते क्व चत्।

न प्रा णवधः स्वग्र्यस्तस्मान्मांसं व वर्जयेत्।। **(मनु॰ 5/48)**

अर्थात् प्रा णयों की हिंसा कये बिना मांस की प्राप्ति नहीं होती और प्र णयों का वध करना सुखदायक नहीं, इस करण मा ंस नहीं खाना चाहिये।

समुत्प त्तं च मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम्।

प्रसमीक्ष्य निवत्र्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात्।। **(मनु॰ 5/49)**

अर्थात् हमें मांस की उत्प त्त में और प्रा णयों की हत्या और बन्धन को देखकर सब प्रकार के मांस भक्षण का त्याग कर देना चाहिये।

अनुमन्ता वश्सिता निहन्ता क्रय वक्रयी।

संस्कर्ता चापहत्र्ता च खादकश्चेति घातकाः।। **(मनु॰ 5/59)**

अर्थात् प्रा णयों की हत्या में आठ व्यक्ति हत्या से होन वाले पापों के भागीदार होते हैं।1.पशुओं को मारने की आज्ञा देने वाला 2. मांस को काटने वाला। 3. पशुओं को मारने वाला। 4. पशु को खरीदने वाला। 5.पशु को बेचने वाला। 6. मांस पकाने वाला। 7. परोसने वाला और मांस को खाने वाला।

वर्जयेन्मधु मांसं च भौमानि कवलानि च। **(मनु॰ 6/94)**

अर्थात् नशा करने वाले मद्य और मांस का परित्याग कर देना चाहिये।

हिंसारतश्च ये नित्यं नेहासौ सुखमेधते।। (मनु॰ 4/170)

अर्थात् जो मनुष्य मांस प्राप्ति के लए प्रतिदिन हिंसारत रहता है वह कभी सुख प्राप्त नहीं करता है।

गो-मांस व मांसाहार की बात करते हैं, उनके तर्कों का खण्डन

- परमेश्वर ने मनुष्यों के दांत मासाहारी पशुओं की तरह बनाये हैं, अतः मनुष्यों को मांस खाना चाहिये। ऐसी बातों का उत्तर मह र्ष ने यह दिया है-यह बात अपने पक्ष में कहते हैं कन्तु इससे उनका पक्ष सध्द नहीं होता। क्यों क मनुष्य पशुओं के तुल्य नहीं है। मनुष्य और पशुजाति भन्न भन्न हैं। मनुष्यों के दो पग और पशुओं के चार, मनुष्य वद्या पढ़कर सत्यासत्य का ववेक कर सकते हैं पशु नहीं। और बन्दर के दांत संह और बिल्ली आदि के समान हैं, कन्तु बन्दर मांस कभी नहीं खाते। बन्दर फलादि खाकर अपना निर्वाह करते हैं, वैसे मनुष्यों को भी करना चाहिये।
- मांसाहारी पशु और मनुष्य बलवान् होते हैं, अतः मांस खाना चाहिये। यह बात भी सत्य नहीं। संह मांस खाता है और अरणा भैंसा नहीं खाता, परन्तु संह अरणा भैंसे से डरता है और संह मनुष्यो पर आक्रमण करे तो एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है। जब क जंगली सुअर या अरणा भैंसा अनेक गो लयों अथवा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं मरता। और प्रत्यक्ष दृष्टांत देखना हो तो पूर्णरूप से शाकाहारी राममूर्ति, चन्दगी राम, गामा पहलवान, दारा संह, सतपाल पहलवान आदि ऐसे उदाहरण हैं, जो मांसाहार करने वाले हैं उनको नाम मात्र काल में ही परास्त कर देते थे। मांसाहार करना बलवर्धक न होकर हानिकारक, अधर्म एवं दुष्टकर्म हैं।
- मांसाहारी व्यक्ति एक यह भी तर्क देते हैं- जो मांसाहार न कया जाये तो संसार में पशु इतने बढ़ जायें क पृ थवी पर भी न समायें। इसी लए पशुओं को खाना उ चत है। परन्तु मह र्ष ने इसका उपहास उड़ाते हुआ लखा है- यह बुध्दि का वपर्यास मांसाहार ही से हुआ होगा? इसके वपरीत मनुष्य का मांस कोई नहीं खाता पुनः वे क्यों नहीं बढ़ गये। वास्तव में एक मनुष्य के पालन के लए अनेक पशुओं की अपेक्षा होती है, अतः ईश्वर ने मनुष्य की अपेक्षा पशुओं को अ धक उत्पन्न कया है।
- कुछ व्यक्ति कहते हैं क पशुओं को मारकर अधर्म तो नहीं होता। जो अधर्म मानता है वह न खाये, हमारे मत में अधर्म नहीं होता। अतः मांसाहार करना अनु चत नहीं हैं। यह बात भी सत्य नहीं, क्यों क धर्म-अधर्म कसी के मानने अथवा न मानने से नहीं होता। पर हानि अथवा हिसंा करना अधर्म और परोपकार करना धर्म होता है। चोरी जारी इस लए अधर्म होता है क इससे दूसरे की हानि होती है। अतः लाखों पशुओं के मारने में अधर्म और उन्हें सुख देने में धर्म क्यों स्वीकार नहीं करना चाहिए।
- कुछ व्यक्ति ऐसा भी कहते हैं क जो पशु काम में आते हैं उन्हें मारना अधर्म है परन्तु जब बूढे हो जायें अथवा स्वयं पर जायें तो उनका मांस खाने में तो दोष नहीं। क्या ऐसा करने से कृतघ्नता रूपी महापाप नहीं होगा। इसी प्रकार जिन गाय, बैल आदि पशुओं से जीवन भी लाभ लया, उनसे अमृत जैसा दूध व अन्न प्राप्त कया, और इधर-उधर आने जाने में भार ढोने का काम लया, क्या उनकी हत्या करने में पाप नहीं होगा और कृतघ्नता तो महापाप है, उससे बचा नहीं होता उनको मारकर खाने में तो कोई हानि नहीं होती। प्रथम तो ईश्वर ने कसी भी पशु को निरर्थक नहीं बनाया है, उससे लाभ होता है या नहीं,

यह हम नहीं जानते हैं। कन्तु हम प्रयास कर उस वृद्ध गाय आदि पशुओं का उपयोग कर सकते हैं, गो-मूत्र, गो-गोबर आदि से। भारतवर्ष में आज भी ऐसी गोशालाएॅं हैं, जिनमें इसप्रकार के कार्य होते हैं, ऐसी गोशालाओं में जा कर हम सबको इससे सबक लेना चाहिए। दूसरी बात यह है क मरने के बाद मांॅस खाने से मांॅसाहारी हिंसक स्वभाव अवश्य हो जायेगा, अतः मांॅसाहार करना सर्वथा अनु चत ही नहीं अ पतु निषेधनीय है।

श्राद्ध और गरुड़ पुराण की वास्त वकता: डॉ धर्मवीर परोपकारिणी सभा

OCTOBER 27, 2015 LEAVE A COMMENT

पुराण और गप्प दोनों शब्द अन्योन्या श्रत हैं। जब गप्पे अ धक हो जायें तो पुराण बन जाता है। पुराण है तो गप्पों की भरमार होनी है। सामान्य रूप से सभी धा र्मक लोग धर्म में चमत्कार बताने के लये गप्पों का आश्रय लेते ही हैं। इसी कारण धर्मग्रन्थों में गप्पों की कमी नहीं मलती। पुराण और जैन ग्रन्थ तो गप्पों में एक से एक बढ़कर हैं। गरुड़ पुराण में भी गप्पों की कमी नहीं है। गरुड़ पुराण में यमलोक के मार्ग का वर्णन करते हुए मार्ग में पड़ने वाली वैतरणी नदी की चौड़ाई शत योजन वस्तीर्ण अर्थात् सौ योजन चौड़ी बताई है, एक योजन में चार कोस होते हैं, एक कोस में दो मील होते हैं। यह नदी कोई पानी की नदी नहीं है, यह नदी पूय शो णत वाहिनी अर्थात् जिसमें खून और पस बहती है। ऐसी कोई नदी संसार में है नहीं परन्तु पुराणकार के नक्शे में तो है। एक आर्यसमाजी को गरुड़ पुराण का परिचय सत्यार्थप्रकाश की निन पंक्तियों से मलता है, जो अन्यों के लए भी उतना ही सटीक है-

प्रश्न- क्या गरुड़ पुराण भी झूठा है?

उत्तर- हाँ, असत्य है।

प्रश्न- फर मरे हुए जीव की क्या गति होती है?

उत्तर- जैसे उनके कर्म हैं।

प्रश्न- जो यमराज राजा, चत्रगुप्त मन्त्री, उसके बड़े भयङ्कर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीरवाले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं, पाप-पुण्य के अनुसार नरक-स्वर्ग में डालते हैं। उसके लये दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि वैतरणी नदी तारने के लये करते हैं। ये सब बात झूठ क्योंकर हो सकती हैं।

उत्तर- ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं। जो इस लोक से भन्न लोकों के जीव वहाँ जाते हैं, उनका धर्मराज, चत्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो यदि यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिये क वहाँ के न्यायाधीश उनका न्याय करें और पर्वत के समान यमगणों के शरीर हों तो दीखते क्यों नहीं? और मरनेवाले जीव को लेने में छोटे द्वार में रुक

जाते। जो कहो क वे सूक्ष्म देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वतवत् शरीर के बड़े-बड़े हाड़ पोपजी वना अपने घर के कहाँ धरेंगे? जब जङ्गल में आगी लगती है तब एकदम पपी लकादि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लये असंय यम के गण आवें तो वहाँ अन्धकार हो जाना चाहिये और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकरें खा जायेंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शखर टूटकर पृ थवी पर गरते हैं, वैसे उनके बड़े-बड़े अवयव गरुड़पुराण के बाँचने-सुनने वालों के आँगन में गर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा घर का द्वार अथवा सड़क रुक जायगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे? श्राद्ध, तर्पण, पण्ड-प्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुँचता, कन्तु मृतकों के प्रतिनि ध पोपजी के घर, उदर और हाथ में पहुँचता है। जो वैतरणी के लये गोदान लेते हैं, वह तो पोपजी के घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुँचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती, पुनः कसकी पूँछ पकड़ कर तरेगा? और हाथ तो यहीं जलाया वा गाड़ दिया गया, पूँछ को कैसे पकड़ेगा? यहाँ एक जाट का दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है-

एक जाट था। उसके घर में बीस सेर दूध देनेवाली गाय थी। दूध बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोपजी के मुख में भी पड़ता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा थ क जब जााट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इस गाय का सङ्कल्प करा लेंगे। दैवयोग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से नीचे उतार सुवाया। बहुत से जाट के सबन्धी उपस्थित थे। उस समय पोपजी पुकारा- ''लो यजमान! इसके हाथ से गोदान कराओ।'' जाट ने दश रुपया निकाल, पता के हाथ में रखकर बोला- ''पढ़ो सङ्कल्प!'' पोपजी बोले- ''वाह! बाप वारवार मरता है? साक्षात् गाय लाओ, वह दूध भी देती हो, बुड्ढी न हो और सब प्रकार उत्तम हो।''

जाट- एक गाय हमारे है, उसके वना हमारे लड़के-बालों का निर्वाह नहीं हो सकता, उसको न दूंगा। लो ये बीस रुपये का सङ्कल्प। तुम दूसरी गाय ले लेना।

पोपजी- वाहजी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अ धक समझते हो? अपने पता को वैतरणी में डुबा, दुःख देना चाहते हो? तुम अच्छे सुपुत्र हुए! तब तो पोपजी की ओर सब कुटुबी हो गये, क्यों क उन सबको पहिले ही से पोपजी ने बहका रक्खा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सबने मलकर हठ से उसी गाय का दान पोपजी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पता मर गया। पोपजी गाय, बछड़ा और दूध दोहने की बटलोही लेकर, घर में जा, गाय-बछड़े को बांध, बटलोही को धर, यजमान के घर आया, श्मशान में ले जा, दाह कया। वहाँ ी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र स पण्डी कराने आदि में भी उसको मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी लूटा, भुक्खड़ों ने भी बहुत-सा माल पेट में भरा। जब सब हो चुका, तब जाट ने जिस- कसी के घर से दूध माँग-मूंग निर्वाह कया। चौदहवें दिन प्रातःकाल पोपजी के घर पहुँचा। देखा तो गाय को दुह, बटलोई भर, पोपजी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाटजी पहुँचे। पोपजी ने कहा आइये बैठिये!

जाटजी- तुम भी इधर आओ।

पोपजी- अच्छा दूध धर आऊँ।

जाटजी- नहीं, दूध की बटलोई इधर लाओ। पोपजी जो, बटलोई सामने धर, बैठे।

जाटजी- तुम बड़े झूठे हो।

पोपजी- क्या झूठ कया?

जाटजी-गाय कस लये ली थी?

पोपजी- तुहारे बाप के वैतरणी तरने के लये।

जाटजी- फर तुमने वैतरणीके कनारे क्यों न पहुँचाई? हम तुहारे भरोसे पर रहे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कतने गोते खाये होंगे?

पोपजी- नहीं-नहीं, वहाँ इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन गई। तुहारे बाप को पार उतार दिया।

जाटजी- वैतरणी नदी यहाँ से कतनी दूर और कधर की ओर है?

पोपजी- अनुमान तीस क्रोड़ कोश दूर है। क्यों क उनञ्चास कोटि योजन पृथवी है और द क्षण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है।

जाटजी- इतनी दूर से तुहारी चट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो क वहाँ पुण्य की गाय बन गई, अमुक के पता को पार उतार दिया, दिखलाओ?

पोपजी- हमारे पास 'गरुड़पुराण' के लेख के वना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।

जाटजी- इस गरुड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

पोपजी- जैसे सब मानते हैं।

जाटजी- यह पुस्तक तुहारे पुरुखाओं ने तुहारी जी वका के लये बनाया है। क्यों क पता को वना अपने पुत्रों के कोई प्रय नहीं। जब मेरा पता मेरे पास चट्ठी-पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी के कनारे गाय पहुँचा दूँगा और उनको पार उतार, पुनः गाय को घर में ले आ, दूध को मैं और मेरे लड़के-बाले पया करेंगे, लाओ! दूध की भरी हुई बटलोई, गाय, बछड़ा लेकर जाटजी अपने घर को चला।

पोपजी- तुम दान देकर लेते हो, तुहारा सत्यनाश हो जायगा।

जाटजी- चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन तक दूध के वना जितना दुःख हमने पाया है, सब कसर निकाल दूँगा। तब पोपजी चुप रहे और जाटजी गाय-बछड़ा ले, अपने घर पहुँचे।

जब ऐसे ही जाटजी के से पुरुष हों तो पोपलीला संसार में न चले।

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 11, पृ. 408-411

इसी प्रकार इक्कीस प्रकार के नरकों का वर्णन कया गया है। गरुड़ पुराण अन्य पुराणों की भांति यज्ञों में पशु हिंसा का भी उल्लेख करता है, वेदोक्त यज्ञ की हिंसा के अतिरिक्त अपने लये पशु मारता है, ऐसा ब्राह्मण वैतरणी नदी में गरता है। गरुड़ पुराण में शूद्र द्वारा वेद पढ़े जाने पर दण्ड वधान है, वेद पढ़ने वाला शूद्र भी वैतरणी नदी में गरता है। गरुड़ पुराण में लखा है जो शूद्र होकर वेद पढ़ता है, जो शूद्र क पला गाय का दूध पीता है, यज्ञोपवीत धरण करता है, ब्राह्मणों से संसर्ग करता है, ऐसा वेद पढ़ने वाला शूद्र वैतरणी नदी में गरता है। गरुड़ पुराण में लखा है- दूसरी नदियाँ स्नान करने से पापी पुरुष को प वत्र करती हैं। यह गंगा नदी दर्शन तथा स्पर्श से, पान करने से, गंगा शब्द के उच्चारण मात्र से हजारों पापी पुरुषों को प वत्र कर देती है। यदि प्राण कण्ठ में आ गये हों फर भी यदि मनुष्य गंगा-गंगा ऐसा उच्चारण करे तो वह वष्णु लोक को प्राप्त होता है। इसी प्रकार गरुड़ पुराण में सती-प्रथा का भी महत्व बताते हुए कहा गया है- यदि पतिव्रता स्त्री पति के साथ परलोक जाने की इच्छा करे, तब वह पति के मरने के बाद स्नानकर, रोली, केसर, अंजन, सुन्दर वस्त्र, आभूषण धारण कर ब्राह्मण व बन्धु वर्ग को यथायोग्य दान करे। गुरुजनों को नमस्कार करे, मन्दिर में देवता के दर्शन करे, पहने हुए आभूषण उतारकर वष्णु को अ र्पत कर दे। श्रीफल लेकर सब मोह छोड़ श्मशान पहुँचे। सूर्य को नमस्कार कर चता की परिक्रमा कर चता को पुष्प शय्या समझकर उस पर बैठकर पति को अपनी गोदी में लटाये। हाथ का श्रीफल स ख को दे अग्नि जलाने का आदेश दे और इस अग्निदाह को गंगा-स्नान समझे। स्त्री गर्भवती हो तो पति के साथ शरीर दाह न करे। पति के साथ चता में जलने वाली स्त्री का शरीर तो जल जाता है परन्तु आत्मा को कुछ भी कष्ट नहीं होता, सती होने पर नारी के पाप वैसे ही दग्ध हो जाते हैं, जैसे अग्नि में धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं। पतिव्रता स्त्री को अग्नि उसी प्रकार नहीं जलाती जैसे सत्य बोलने वाले मनुष्य को अग्नि नहीं जलाती। पुराणकार कहता है- यदि स्त्री पति के साथ दग्ध हो जाती है तो वह फर कभी स्त्री शरीर धारण नहीं करती, अन्यथा हर जन्म में वह स्त्री ही बनती है। सती होने वाली स्त्री अरुन्धती सदृश होकर स्वर्ग लोक में पूजनीय बन जाती है। स्वर्गलोक में चौदह इन्द्र के राज्य करने तक अपने पति के साथ आनन्द मनाती हुई, अप्सराओं के द्वारा स्तुति को प्राप्त होती है। सती होने होने वाली स्त्री माता- पता-पति तीनों कुलों का उद्धार करती है। मनुष्य के शरीर पर साढ़े तीन करोड़ रोम हैं, इतने वर्षों तक सती स्त्री स्वर्ग में रहती है, सूर्य-चन्द्र के रहने तक पतिलोक में निवास करती है। सती स्त्री अपनी इच्छा से पुनः लक्ष्मीवान कुल में जन्म धारण करती है। पुराण गप्पकार अन्त में कहता है- जो स्त्री क्षणमात्र अग्निदाह के दुःख से भयभीत अपने को नहीं जलाती, वह जन्मपर्यन्त वयोग अग्नि में जलती है और दुःखी होती है। अतः स्त्री को उ चत है क पति को रुद्र रूप जानकर उसके साथ अपने शरीर का दाह करे।

गरुड़ पुराण में सोलह अध्याय हैं परन्तु इस पुराण का मन्तव्य नौवें अध्याय से तेरहवें अध्याय में पूर्ण हो जाता है। प्रारभ के अध्यायों में यम मार्ग की चर्चा है। यमालय, वैतरणी का वर्णन है। आगे कस पाप को करने से मनुष्य कौनसी योनि को प्राप्त करता है, बताया गया है। गर्भ के दुःख कस प्रकार के हैं, यह बताकर अपने प्रयोजन को सद्ध करने की भू मका में कहा गया है- मनुष्य पाप करके भी कैसे पाप के दुःखों से बच सकता है, उसके उपाय के रूप में पुत्र-प्राप्ति और पुत्र द्वारा कया श्राद्ध मनुष्य को सभी दुःखों से छुड़ा देता है, यहाँ भू मका के रूप में एक कथा कही गई है, जो राजा एक प्रेत का औध्र्व दैहिक कर्म करके उसे दुःखों से मुक्ति दिला देता है।

मनुष्य मरने लगे तो उसे शैय्या से उतार कर तुलसी दल के पास गोबर से लपे स्थान पर लटा दे। पास में शालीग्राम रखे। इससे निश्चित मुक्ति होती है। तिलदान, दर्भ का स्पर्श, शालीग्राम का जल पलाना, गंगाजल मुख में डालना। जो मनुष्य धर्मात्मा होता है, उसके प्राण शरीर के उपरि छिद्र से निकलते हैं। जो पापी होता है, उसके प्राण देह के निन छिद्रों से निकलते हैं। वष्णुलोक से वमान आकर उस आत्मा को वष्णु लोक ले जाता है।

दसवें अध्याय में मृत्यु के बाद, पुत्र मुण्डन कराये, गंगा की मट्टी का शरीर पर लेप करे, शव को स्नान कराकर चन्दन का लेप करे, नवीन वस्त्र से ढककर पण्डदान करे, परिवार के लोग शव की प्रदिक्षणा कर सर्वप्रथम पुत्र अर्थी को कन्धा देवे। अग्नि की प्रार्थना कर श्मशान में चता बनावे, पण्ड बनाकर चता में रखे, स पण्ड श्राद्ध करे। जो पञ्चक में मरता है, उसकी सद्गति नहीं होती, पञ्चक पांच नक्षत्रों को कहते हैं। इनमें मरने पर पहले नक्षत्रों की पूजा करे, पत्नी सती होना चाहे तो सती हो जाये। शव का दाह कर कपाल क्रया करे। स्त्रियाँ स्नान कर तिलाञ्ज ल देवें। घर आकर स्नानकर गो ग्रास दे, जो भोजन अपने घर न पका हो, उसका पत्तल में भोजन करे। बारह दिन तक मृतक के स्थान पर घृत का दीपक जलाये। चौराहे पर दूध पानी रखे। तीसरे या चौथे दिन श्मशान जाकर अस्थि का चयन करे। दूध का जल छिड़क कर अग्नि को शान्त करे। तीन दिशा में तीन पण्ड दान करे। चता भस्म को इकट्ठा कर उसपर पानी भरा घड़ा रखे, श्मशान में प्रथम गड्ढे में अस्थि-पात्र रखे फर जलाशय में ले जावे, फर यथा व ध गंगा में प्रक्षेप करे। जिसकी अस्थियाँ जितने वर्ष गंगा में रहती हैं, वह उतने वर्ष स्वर्ग लोक में रहता है। संन्या सयों को जल में बहा दे या भू म में गाड़ दे।

ग्यारहवें अध्याय में दशगात्र व ध का वर्णन है। मरे व्यक्ति का पा क्षक, मा सक, फर वा र्षक श्राद्ध करे। दशरात्रि प्रेत के नाम पर दूध, दीप, नैवेद्य, सुपारी, पान, द क्षणा, दूध, पानी आदि देवे, जो प्रेत के नाम से देते हैं, वह प्रेत को प्राप्त हो जाता है। इस में पहले दिन से दसवें दिन तक प्रतिदिन क्या करे, इसका वर्णन है। दसवें दिन सब परिवार वाले मुण्डन कराके स्नान कर ब्राह्मणों को दसों दिन तक मष्टान्न भोजन कराये, गो ग्रास दे कर भोजन करें।

ग्यारहवें दिन वृषोत्सर्ग करे, शय्यादान करे, शय्या में वष्णु की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर दान करें, प्रेत के लये गौ, वस्त्र, वाहन, आभूषण, घर जो भी जितना देने में समर्थ हो, उतना ब्राह्मणों को दान करे। ब्राह्मणों के चरण धोये, लड्डू मष्टान्न आदि देवें। वृषोत्सर्ग करने से मनुष्य सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। इसमें अड़तालीस प्रकार के श्राद्ध बताये गये हैं।

अगले तेरहवें अध्याय में सूतक का वर्णन है। कस दुर्घटना से कस सबन्ध को कतने दिन का सूतक होता है, यह वस्तार से बताया गया है। हर स्थान पर शय्या दान, पददान का वधान है। पददान में छाता, जूता, वस्त्र, अंगूठी, कमण्डल, आसन, पञ्चपात्र, इन सात वस्तुओं का नाम पद है। इसके बाद तेरह ब्राह्मण को भोजन करावें। फर तीर्थ-श्राद्ध, गया-श्राद्ध, पतृ-श्राद्ध करने का वधान है। इस प्रकार श्राद्ध करने से पतर तृप्त और प्रसन्न होते हैं।

गरुड़ पुराण में बहुत सारी बाते प्रसंगवश उद्धृत हैं, उनपरी दृष्टि डालना उ चत होगा। एक लबी सूची दी गई है, क्या-क्या करने से मनुष्य नरक को प्राप्त होते हैं, पूरा चौथा अध्याय ऐसा है, जिसका शीर्षक है- ते वै नरक गा मनः। ब्राह्मण यदि यज्ञ न करे, अखाद्य खाये तो अगले जन्म में व्याघ्र बनेगा। पाँचवें अध्याय में क्या करने से कौन-सी योनि प्राप्त होती है,

इसका वर्णन कया गया है। जैसे जो बाहर से ब्राह्मण वेषधारी है, सन्ध्या नहीं करता, वह अगले जन्म में बगुला बनता है। मनुष्य के शुभाशुभ कर्म समान होने पर पुनः मनुष्य जन्म मलता है- ''मानुषं लभते पश्चात् समी भूते शुभाऽशुभे। 5/52'' छठे अध्याय में मनुष्य के तीन ऋण की चर्चा की गई है। गर्भ में वृद् ध कस प्रकार होती है, इसकी प्रसंग से चर्चा की गई है। जीवन की नश्वरता बताते हुए धर्माचरण करने की प्रेरणा दी गई है। कर्मफल के अनुसार मनुष्य पुनर्जन्म को प्राप्त करता है। ग्यारहवें अध्याय में शरीर की अनित्यता का सुन्दर वर्णन है। मरने वाले के लये रोना व्यर्थ है, वह कभी लौटकर नहीं आता। चौदहवें अध्याय में स्वर्ग की धर्मसभा का वर्णन है, इसमें लबी चौड़ी गप्पें लगाई गई हैं। उस धर्म सभा में वेद-पुराण का पारायण करने वालों को स्थान मलने की चर्चा है। इसी अध्याय में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्या सयों का भी उल्लेख मलता है। नवीन वेदान्त की चर्चा में अध्यारोप अपवाद से ब्रह्म चन्तन करने का वधान कया गया है। शरीर के पारमा र्थक और व्यावहारिक दो रूपों का वर्णन कया गया है। शरीर के अन्दर सात लोक कौनसे हैं? इस की चर्चा है। मोक्ष प्राप्ति के लये अजपा गायत्री जप का वधान कया है। धर्मात्मा स्वर्ग का सुख पाकर पुनः गर्भ में कैसे आता है, इसका वर्णन करते हुए सुन्दर शदों में मनुष्य के शरीर का महत्त्व बताया गया है।

गरुड़ पुराण मुय रूप से और्ध्व दैहिक क्रयाओं के व ध वधान का ग्रन्थ है। जिसमें ब्राह्मणों ने अपने काल्पनिक भय दिखा कर मनुष्य को मृतक के नि मत्त से भोजन, दानादि कराने की व्यवस्था है, जिससे परपरा से ब्राह्मणों के अ धकारों का संरक्षण देखने को मलता है, जैसा कहा गया है-

यह संसार देवताओं के आधीन है, देवता मन्त्रों के आधीन है, मन्त्र ब्राह्मण के आधीन है, अतः सारा संसार ब्राह्मणों के आधीन होता है।

देवाधीनं जगत्सर्वं, मन्त्राधीनाश्च देवताः।

ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनाः, तस्मात् ब्राह्मण दैवतम्।।

– धर्मवीर

अज्ञान और अंध वश्वास आध्यात्मिक उन्नति में बाधक' -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

OCTOBER 21, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सांसारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करना है। यदि कोई मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति की उपेक्षा कर केवल सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशील रहता है तो यह उसके लए एकांगी होने से घातक ही कही जा सकती है। आध्यात्मिक उन्नति से मनुष्य सुख व शान्ति के साथ आत्मा की जन्म जन्मान्तरों में उन्नति व जन्म मरण के दुःखों से मुक्ति प्राप्त करता है और सांसारिक उन्नति से क्ष णक व अल्पका लक सुखों को प्राप्त कर

शुभ व अशुभ कर्मों का संचय कर इनके फलों के भोग में फंस कर जन्म जन्मान्तरों में दुःख पाता है। मनुष्य सांसारिक उन्नति तक इस लए सी मत रहता है क उसे इस उन्नति के लाभ व हानि एवं आध्यात्मिक उन्नति के महत्व का ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान आध्यात्मिक गुरू, शास्त्र, ग्रन्थों व इनके स्वाध्याय से प्राप्त होता है जिसके लए आज के मनुष्यों के पास समय नहीं है। आज के भौतिक दृष्टि से सम्पन्न व सफल मनुष्यों का अन्धानुकरण ही समाज के शेष मनुष्य करते हैं जिससे वह भी इन लोगों के कारण अपना वर्तमान व भावी जन्मों को बड़ी सीमा तक हानि पहुंचाते हैं।

अन्ध वश्वास, अन्धी श्रद्धा तथा ज्ञानरहित आस्था सत्य ज्ञान के वरुद्ध वश्वासों को कहते हैं। ईश्वर का अस्तित्व है, उसे मानना सत्य ज्ञान और न मानना व कुतर्क करना अन्ध वश्वास व अन्धी आस्था है। इसी प्रकार ईश्वर तो है परन्तु वह कैसा है, इस वषय में लोगों की अपनी-अपनी मान्यताओं जिनमें कुछ बातें सत्य व कुछ असत्य होती हैं। यह असत्य बातें ही अज्ञान, ज्ञानरहित आस्था व अन्धी श्रद्धां होती हैं। आज के ज्ञान व वज्ञान के युग में यह अन्ध वश्वास व अन्धी आस्थायें समाप्त हो जानी चाहियें थी परन्तु इनको मानने वाले गुरू वा आचार्यों के अज्ञान, स्वार्थ व कुतर्कों के कारण इनके अनुयायी अन्धकार में फंसे हैं जिससे इनका मानव योनि का अनमोल जीवन मूल उद्देश्य व उसकी प्राप्ति से दूर चला गया है व चला जाता है। इससे जो हानि होती है वह गुरू व चेले, दोनों को ही होती है क्यों क ईश्वर के कर्म-फल वधान के अनुसार जिसने जैसा कर्म कया है उसका तदनुरूप फल उसे मलता है। 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।' अर्थात जीवात्मा को अपने कये हुए शुभ व अशुभ कर्मों के फल अवश्य ही भोगने होंगे। यदि कोई गुरू कहलाने वाला व्यक्ति अपने अनुयायी को असत्य व अज्ञान से युक्त रखता है तो इसके लए वह भी दोषी है। यह भी जानने योग्य है क अज्ञानी व स्वामी मनुष्य चाहे वह कसी कुल में जन्में हों, धर्म गुरू कहलाने के योग्य नहीं होते। धर्मगुरू कहलाने के लए मनुष्य का धर्म का यथार्थ ज्ञान रखने वाला, निर्लोभी तथा परोपकारी भाव वाला होना आवश्यक है। अज्ञानी व स्वार्थी गुरू के दोष व अन्ध वश्वासों से युक्त शक्षायें अशुभ कर्म व पाप की श्रेणी में होती हैं जिसका फल उसको जन्म-जन्मान्तर में दुःखों के भोग के रूप में ही प्राप्त होना है। अतः सभी गुरूओं को स्वयं में ववेक जागृत कर अशुभ कर्मों से बचना चाहिये जिससे उनकी स्वयं की रूकी हुई आध्यात्मिक उन्नति यथार्थ आध्यात्मिक उन्नति में बदल जाये।

सांसारिक व आध्यात्मिक उन्नति के लए सत्य ज्ञान की आवश्यकता होती है। सांसारिक ज्ञान आजकल की अनेक स्कूली पुस्तकों आदि में मल जाता है। इससे इतर सामाजिक व्यवहार व आध्यात्मिक ज्ञान के लए हमें स्वाध्याय की श्रेष्ठ पुस्तकों की सहायता लेनी चाहिये। हमने अपने अनुभव से जाना है क इसके लए सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भू मका, संस्कार व ध, आर्या भ वनय, उपनिषद, मनुस्मृति, 6 दर्शन, चार वेद व उनके भाष्य आदि उत्तम ग्रन्थ है। आध्यात्मिक उन्नति के लए हम इसके दो भाग कर सकते हैं। प्रथम भाग में अध्यात्म से जुड़े ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का ज्ञान, जन्म व मृत्यु का प्रयोजन, नाना प्राणी योनियों में जीवात्मा का जन्म, सृष्टि की उत्प त का प्रयोजन, आध्यात्मिक उन्नति के साधनों व उपायों का ज्ञान आते हैं। द् वतीय भाग में आध्यात्मिक उन्नति के सत्य साधनों व

उपायों को जानकर तदानुसार साधना व आचरण करना है। आध्यात्मिक उन्नति के लए मनुष्य को अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्र णधान को अपनाना अर्थात् आचरण में लाना होगा। कुछ-कुछ तो यह सभी सांसारिक लोग मानते व आचरण करते हैं परन्तु उच्च आध्यात्मिक उन्नति के लए इसे पूर्णरूप से पालन करना आवश्यक है। यदि इसमें से कसी एक व सबको, कुछ व अ धक छोड़ते व पालन नहीं करते, तो उतनी-उतनी मात्रा में हम ईश्वर से दूर होते जाते हैं जिसका परिणाम आध्यात्मिक गरावट होकर अशुभ कर्मों को करना व उसमें फंसना ही होता है। अतः सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय कर इन सब साधनों को गहराई से जानकर इसका पालन करना चाहिये जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की यात्रा सुगम रूप से अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की ओर चल व आगे बढ़ सके। इसके लए यह भी आवश्यक है क प्रत्येक गुरू भक्त अपने गुरू के ज्ञान व उसके जीवन तथा आचरण पर भी पूरा ध्यान रखे और वचार करे क वह उसे उ चत व सत्य शक्षा व मार्गदर्शन दे रहा है या नहीं। यदि वह अपने गुरु की ओर से आंखे बन्द रखेगा तो उसका शोषण होता रहेगा जिसका परिणाम उसकी आध्यात्मिक उन्नति न होकर भावी जीवन में हानि के रूप में सामने आयेगा।

यह भी वचार करना चाहिये क धर्म क्या है व कसे कहते हैं। हमारा अध्ययन व अनुभव बताता है क धर्म सत्य के पालन को कहते हैं। हमें अपने कर्तव्यों का ज्ञान होना चाहिये। उन कर्तव्यों के पालन में हानि लाभ की बुद् ध न रखकर सच्ची निष्ठा से उनका पालन करना ही धर्म होता है। अज्ञानी मनुष्य अपने कर्तव्य से भी पूर्णतः परि चत नहीं होता। इसके लए ही सच्चा गुरू वा स्वाध्याय सहायक होते हैं। परन्तु यदि गुरू स्वयं अज्ञानी हो, साथ में स्वार्थी भी हो व अपने अनुयायी से भौतिक द्रव्यों की अपेक्षा करता हो तो वह अपने अनुयायी, शष्य व भक्त का सही मार्गदर्शन नहीं कर सकता। आजकल अनेक धा र्मक ग्रन्थ में सच्ची शक्षाओं की कमी होने के साथ कुछ ऐसी बातें भी हैं जो धर्म कर्म से सम्बन्ध न रखकर, मनुष्य-मनुष्य को आपस में दूर करती व बांटती हैं। लोगों ने इन्हें भी धर्म समझ रखा है जो क उनका अपना भारी अज्ञान है। धर्म का उद्देश्य तो श्रेष्ठ मानव का निर्माण होता है। वेद में इसे कहा गया है क ''कृण्वन्तो वश्वमार्यम्''। इस उद्देश्य की पूर्ति के लए ही ईश्वर ने सृष्टि की आदि में चार ऋ षयों अग्नि, वायु, आदित्य व अं गरा को क्रमशः एक–एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान दिया था जिनमें ज्ञान, कर्म, उपासना तथा वज्ञान का ज्ञान है। वेदों में कोई भी बात अज्ञान, अन्ध वश्वास, अन्धी आस्था, कुरीति, पाखण्ड, सामाजिक वषमता, सामाजिक अन्याय आदि की नहीं है। चारों वेद सब सत्य वद्याओं की पुस्तक हैं। अतः चारों वेद, उनके व्याख्या व टीका ग्रन्थ व्याकरण, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भू मका, संस्कार व ध, आर्या भ वनय आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन करना चाहिये क्यों क यह सब वेद मूलक ग्रन्थ हैं और इनके बनाने वाले वेदों के मूर्धन्य वद्वान व पूर्ण ज्ञानी मनुष्य थे।

मह र्ष दयानन्द ने वेदों का प्रचार कया और वेदों पर आधारित सत्य ज्ञान से पूर्ण ग्रन्थों की रचना की। उनका उद्देश्य कसी व्यक्ति को उसके मत व पन्थ से छुड़ाना नही था अ पतु वह सभी मनुष्यों में ज्ञान व ववेक उत्पन्न करना चाहते थे जिससे वह अपने जीवन के बारे में सही निर्णय ले सकें और सांसारिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति कर सकें जो

 क मनुष्यों के मत-मतान्तरों में फंसे होने से नहीं हो पाती। आध्यात्मिक उन्नति करने वाले मनुष्य के लए दो मुख्य कर्तव्य हैं जिनमें प्रथम है ईश्वरोपासना वा सन्ध्या तथा दूसरा दैनिक अग्निहोत्र। इन दोनों को करके ही मनुष्य की सांसारिक व आध्यात्मिक उन्नति होती है। सन्ध्या को करना आत्मा की उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन व उपाय है। इसमें ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का चन्तन, ईश्वर के उपकारों का स्मरण, परोपकार व सेवा करने के व्रत लेना व अपने सभी श्रेष्ठ कार्यों को ईश्वर को सम र्पत कर उससे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करना होता है। सन्ध्या करने वाले व्यक्ति को यदि ईश्वर व जीवात्मा के साथ प्रकृति वा सृष्टि के सत्य स्वरूप का ज्ञान नहीं है तो उसे आशातीत सफलता नहीं मल सकती। अतः इसके लए सत्य ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश वा आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्यक करना चाहिये। स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश वा आर्योद्देश्यरत्नमाला ग्रन्थ तो अत्यन्त लघु ग्रन्थ हैं। इन्हें एक या दो घण्टे में ही पढ़ा, समझा व जाना जा सकता है। इससे जो लाभ होता है वह हमारे वचार से बड़े से बड़े पोथे पढ़ने पर भी शायद् नहीं होता। हम सभी मत्रों का आह्वान करते हैं क वह सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय का व्रत लें। वैदिक व ध से साधना कर अपनी आध्यात्मिक उन्नति करें और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सद् ध को प्राप्त करने में सफल हों। इसी के साथ इस लेख को वराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

‘माता- पता, आचार्य, च कत्सक व कसान आदि की तरह धर्म प्रचारक का असत्य धा र्मक मान्यताओं का खण्डन आवश्यक’ -मनमोहन कुमार आर्य

OCTOBER 16, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

खण्डन कसी बात को स्वीकार न कर उसका दोष दर्शन कराने व तर्क व युक्तियों सहित मान्य प्रमाणों को उस मान्यता व वचार को खण्डित व अस्वीकार करने को कहते हैं। हम सब जानते हैं क सत्य एक होता है। अब मूर्तिपूजा को ही लें। क्या मूर्तिपूजा जिस रूप में प्रच लत है, वह ईश्वरपूजा का सत्य स्वरूप है? इस मूर्तिपूजा के पक्ष व वपक्ष के प्रमाणों, तर्कों व युक्तियों को प्रस्तुत कर जो प्रमाण, तर्क व युक्तियां अखण्डनीय होती है, वही सत्य होता है। मूर्तिपूजा करने वाले बन्धुओं को यदि इसे प्रमा णक, तर्क व युक्ति संगत सद्ध करने के लए कहा जाये तो वह ऐसा नहीं कर सकते। दूसरी ओर वेदों के वद्वान व धर्म के मर्मज्ञों

से जब इसकी चर्चा करते हैं तो वह मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा, सत्कार, उसकी उपासना आदि के रूप में स्वीकार नहीं करते। वह बताते हैं क ईश्वर की पूजा व उसका सत्कार करने की पद्धति मूर्तिपूजा नहीं कन्तु उससे सर्वथा भन्न योग, ध्यान, स्वाध्याय, चन्तन, मनन व वेद वहित कर्मों को करना, नि षद्ध कर्मों को न करना आदि है। सृष्टि के आरम्भ से खण्डन-मण्डन की परम्परा चली आयी है। खण्डन प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूपों में कया जाता है। प्रत्यक्ष में यह उपदेश, लेखन तथा शास्त्रार्थ की चुनौती आदि के द्वारा होता है। परोक्ष रूप में प्रच लत प्रथाओं को स्वीकार न कर बिना उपदेश व प्रवचन, लेखन व चुनौती दिए नई परम्पराओं को अपनाना या उन्हें प्रवृत्त करना भी एक प्रकार से वद्यमान मथ्या परम्पराओं, असत्य धा र्मक मान्यताओं आदि का खण्डन ही होता है।

संसार के प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक परिवार होता है जिसमें अनिवार्य रूप से माता पता होते हैं। माता से सन्तान का जन्म होता है। माता- पता दोनों मलकर अपनी सन्तान, पुत्र व पुत्री का पालन करते हैं। उन्हें अच्छे संस्कार देने का प्रयत्न करते हैं। पुत्र द्वारा गलती करने, पढ़ाई न करने, कसी का अनादर करने, क्रोध, चोरी, चुंगली तथा अस्वास्थ्यप्रद भोजन करने आदि पर ताड़ना करते हैं। यह भी एक प्रकार का खण्डन ही है। जब हम वद्यार्थी थे और हमारा परीक्षा का परिणाम आता था तो माता- पता उसे देखकर प्रसन्न होने के बजाय जिन वषयों में सबसे कम नम्बर होते थे, उसका उल्लेख कर निराशा व्यक्त करने के साथ कुछ शक्षा देते थे। यह भी एक प्रकार से खण्डन व मण्डन ही होता था जिससे हम स्वयं का सुधार करते थे। जो बच्चे कुसंगति करते हैं, माता पता येन केन प्रकारेण अपने बच्चें को कुसंगति से निकालने में तत्पर रहते हैं। क्या यह उस बच्चे के अनु चत व्यवहार का खण्डन नहीं है? यदि वह सराहना करते तो वह मण्डन कहलाता। सराहना न होने के स्थान पर आलोचना व डांट पड़ रही है, अतः यह भी खण्डन का एक प्रकार है और बालक के जीवन निर्माण के लए आवश्यक व अनिवार्य है।

आचार्य की ब्रह्मचारी व शष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भू मका होती है। वस्तुतः आचार्य वह होता है जो अपने ब्रह्मचारी, शष्य वा वद्यार्थी को सद् आचरण की शक्षा देकर द् वज बनाता है। द् वज का अर्थ बुद् धमान, ज्ञानवान, वद्यावान तथा संस्कारित होना है। ज्ञान के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जिसे वेद के नाम से सारा संसार जानता है। आचार्य अपने ब्रह्मचारी को वेदों का ज्ञान कराता है। इसके साथ सभी प्रकार से उसे आध्यात्मिक ज्ञान के साथ सांसारिक ज्ञान की शक्षा भी देता है। अपने इस कर्तव्य को सुचारू रूप से पूरा करने के लए उसे वद्यार्थी के जीवन में से बुरे संस्कारों को चुन-चुन कर दूर करना होता है। जीवन में जितने अच्छे गुण होते हैं, उतने ही उसके वपरीत, बुरे गुण व दोष भी होते हैं। आचार्य को दोषों का खण्डन तर्क व युक्ति व शास्त्र प्रमाणों के आधार पर अपने वद्यार्थी पर करना होता है और इसके साथ उसे शास्त्रों की शक्षा व महापुरूषों के जीवनों का ज्ञान कराकर ज्ञान, चरित्र व पुरूषार्थ का महत्व प्रतिपादन करना उसका दैनन्दिन कार्य होता है। अच्छे शष्य व अच्छे गुरू के मलन से ब्रह्मचारी श्रेष्ठ गुणों को धारण कर यशस्वी बनता है। इस प्रकार अवगुणों की आलोचना, निन्दा, भत्र्सना करना गुरू वा आचार्य का एक प्रकार से खण्डन करना ही है जिससे श्रेष्ठ वद्यार्थी बनता है।

आईये, च कत्सक के बारे में भी कुछ वचार कर लेते हैं। च कत्सक के पास रोगी व्यक्ति स्वयं ही जाता है और च कत्सक से रोग को दूर करने की प्रार्थना करता है। वद्वान च कत्सक रोग के कारण का पता लगाता है और रोगी को कुपथ्य को छोड़ने व पथ्य को अपनाने का परामर्श देता है। इसके साथ उस रोग के शमन की ओष ध भी वह रोगी को देता है जिससे कुछ ही समय बाद रोगी ठीक हो जाता है। रोग की साधारण स्थिति में पथ्य व ओष ध के सेवन से स्वस्थ हुआ जाता है। रोग यदि कुछ पुराना है व उसकी तीव्रता अ धक हो तो ओष धयों को इंजेक्शन के रूप में दिया जाता है। कई बार शरीर के अन्दर कुछ वकृतियां हो जाती हैं। परीक्षा कर च कत्सक ऐसे रोगों की शल्य क्रया करता है जिससे रोगी रोगमुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है। यहां च कत्सक द्वारा रोग के कारणों को जानकर जिन पदार्थों के सेवन से रोगी को मना कया जाता है, वह एक प्रकार से खण्डन ही है। इसी प्रकार से रोगी व्यक्ति को अपनी पुरानी जीवन शैली में कुछ परिवर्तन भी करना होता है। जिन चीजों को छोड़ने की सलाह च कत्सक देता है वह भी उनका खण्डन करना ही है। ऐसा कये बिना व्यक्ति स्वस्थ नहीं हो सकता। शल्य क्रया में तो कई बार वकृत अंग व वकृति को काटकर शरीर से पृथक कर दिया जाता। इस खण्डन से ही मनुष्य स्वस्थ होकर अपने जीवन को सुख व आनन्द के साथ व्यतीत करने में समर्थ होता है। यह खण्डन रोगी के हित में आवश्यक होता है और कोई इसे बुरा नहीं कहता। सभी इसका समर्थन करते हैं।

कसान का मुख्य कार्य अपने खेतों को जोतना, उसमें खाद डालना, भू म को जल से सं चत करना, बीज बोना व उसके बाद फसल की निराई व गुडाई करना होता है जिससे अ धक से अ धक उपज प्राप्त की जा सके। कठोर भू म को जोतकर उसे कोमल बनाया जाता है। यह कठोरता का खण्डन करना है जिससे भू म कोमल होती है। जल से स चंत करना भी भू म की कठोरता को कम करने के लए होता है अन्यथा बीज उगेगा नहीं और फसल का इच्छित उत्पादन नहीं हो पाने से कसान को क्लेश होगा। यह कठोर भू म को कोमल करना अर्थात् भू म को संस्कारित करना कठोरता के गुण का खण्डन ही है। इसी प्रकार से निराई व गुडाई कर खरपतवार को दूर करना भी उनका खण्डन ही होता है। बिना खण्डन के आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं। यदि कसान भू म को कोमल करने के लए हल नहीं चलायेगा, सं चत नहीं करेगा और निराई व गुडाई नहीं करेगा, जो क खण्डन हैं, तो वह बाद में पछतायेगा व दुःखी होगा। इस प्रकार खण्डन के परिणाम से ही आशा के अनुरूप खाद्यान्न का उत्पादन होता है।

अब धर्म प्रचारक के कार्य पर वचार करते हैं। धर्म प्रचारक का कार्य मनुष्य के धर्म वा कर्तव्यों का प्रचार करना है जिसको करके वह न केवल सुखी जीवन ही व्यतीत करे अ पतु जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को भी प्राप्त करने में अग्रसर हो। इसके लए पाप कर्मों को छोड़ना और अ धक से अ धक पुण्य कर्मों को करना होता है। वद्याध्ययन करने के पश्चात ब्रह्मचर्य युक्त पुरुषार्थी जीवन व्यतीत करते हुए यथासमय पंचमहायज्ञों को करना ही धर्मपूर्वक सुख प्राप्ति अर्थात् अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति का मार्ग है। आजकल लोगों ने परजन्म वा निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष के बारे में सोचना ही छोड़ दिया है। कर्मों का बन्धन एक

प्रकार की जेल होती है और इसके वपरीत मुक्ति, मोक्ष या निःश्रेयस होता है। दार्शनिक दृष्टि से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है क बन्धन में पड़ा व्यक्ति कभी न कभी स्वतन्त्र था और जो स्वतन्त्र अर्थात् मोक्ष में हैं वह बन्धन से ही मोक्ष में गये हैं और अव ध पूरी कर वा पस पुनः बन्धन में लौटेंगे। जिस प्रकार एक सरकारी कर्मचारी अवकाश की अव ध पूरा करने पर पुनः अपने कार्य पर लौट कर आता है, उसी प्रकार से बन्धन से मुक्त होकर जीवात्मा मुक्ति को और मुक्ति की अव ध पूरी होने पर पुनः बन्धन अर्थात् मनुष्य का जन्म धारण करता है। आर्यजगत के प्र सद्ध वद्वान महात्मा आर्य भक्षु जी अपने प्रवचन में सुनाते थे क एक गोपालक ने सेवक को गाय को खोलने का आदेश दिया। वहां एक दार्शनिक खड़ा था, उसने अपनी डायरी में लखा क गाय बन्धी होगी। एक अन्य घटना में गोपालन सेवक को गाय को बांधने को कहता है। दार्शनिक यह सुनकर अपनी डायरी में नोट करता है क गाय खुली रही होगी। इससे बन्धन व मोक्ष का अनुमान होता है। धर्म प्रचारक का मुख्य कार्य मनुष्यों को धर्म अर्थात् सद्कर्मों का ज्ञान कराना और असद् कर्मो से छुड़ाना है जिससे उनका जीवन अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त कर सके। इसके लए मनुष्यों को अशुभ कर्मों को छोड़ना और शुभ कर्मों को धारण करना होगा। शुभ कर्म वेद वहित कर्मों को कहते हैं। वेद नि षद्ध वा वेद वरोधी कर्म अशुभ या पाप कर्म कहलाते हैं। इन अशुभ व पाप कर्मों को छुड़ाने के लए सच्चे धर्म प्रचारकों के पास इनका दोष दर्शन अर्थात् खण्डन करने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है। यह अलोचना व खण्डन धर्म प्रचारक के अपने हित के लए नहीं अ पतु उस नि षद्ध व वरुद्ध मान्यता के मानने वाले व्यक्ति के हित व कल्याण के लए कया जाता है। यदि ऐसा नहीं होगा तो मनुष्य यथार्थ सुख, ईश्वरीय आनन्द व मोक्ष आदि से सदा सदा के लए दूर हो जायेगा। मह र्ष दयानन्द के खण्डन का उद्देश्य भी लोगों को असत्य से हटाकर सत्य में स्थित व स्थिर करना था। वह अपने उद्देश्य में आं शक रूप से सफल भी हुए। यदि वह खण्डन न करते तो आज हम भी कसी एक मत के अनुयायी बन कर अज्ञान, असत्य, अन्ध वश्वास, कुरीति व असभ्याचरण से ग्रस्त होते। उन्होंने हमें अज्ञान के कूप से निकाल कर ज्ञान के आकाश में स्थित कया। इस प्रकार असत्य व अज्ञान से युक्त धा र्मक मान्यताओं का धर्म प्रचारकों द्वारा खण्डन करना सर्वथा उ चत है। हां, यदि कोई अपने मत के वस्तार व लाभ के लए अज्ञान का प्रचार प्रसार करता है तो वह अनु चत व हेय है। वद्वानों को प्रीतिपूर्वक उनका युक्ति व प्रमाणों से खण्डन कर असत्य को छुंड़वाना व सत्य को मनवाना चाहिये। यदि असत्य अवैदिक मतों का खण्डन न कया गया तो मतों की संख्या में वृद् ध होकर यह अनन्त की ओर अग्रसर होगी जिससे मनुष्य भ्रान्त होकर कंकर्तव्य वमूढ हो जायेंगे और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से वं चत हो जायेंगे। अतः सत्य की स्थापना व सब मनुष्यों को सुख व मोक्ष लाभ के लए असत्य का खण्डन आवश्यक एवं अपरिहार्य है। इसी के साथ इस लेख को वराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

‘वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन, तर्क, ववेचना और सम्यक् ज्ञान-ध्यान के बिना ईश्वर प्राप्त नहीं होता’ -मनमोहन कुमार आर्य

OCTOBER 13, 2015 LEAVE A COMMENT

संसार में कसी भी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसे देखकर व वचार कर कुछ-कुछ जाना जा सकता है। अ धक ज्ञान के लये हमें उससे सम्बन्धित प्रामा णक वद्वानों व उससे सम्बन्धित साहित्य की शरण लेनी पड़ती है। इसी प्रकार से ईश्वर की जब बात की जाती है तो ईश्वर आंखों से दृष्टिगोचर नहीं होता परन्तु इसके नियम व व्यवस्था को संसार में देखकर एक अदृश्य सत्ता का वचार उत्पन्न होता है। अब यदि ईश्वर की सत्ता के बारे में प्रामा णक साहित्य मल जाये तो उसे पढ़कर और उसे तर्क व ववेचना की तराजू में तोलकर सत्य को पर्याप्त मात्रा में जाना जा सकता है। ईश्वर का ज्ञान कराने वाली क्या कोई प्रमा णत पुस्तक इस संसार में है, यदि है तो वह कौन सी पुस्तक है? इस प्रश्न का उत्तर कोई ववेकशील मनुष्य ही दे सकता है। हमने भी इस वषय से सम्बन्धित अनेक वद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ा है। उन पर वचार व चन्तन भी कया है। इसका परिणाम यह हुआ क संसार की धर्म व ईश्वर की चर्चा करने वाली पुस्तकों में सबसे अ धक प्रमा णत पुस्तक ‘‘चार वेद’’ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इसके साथ ही वेदों की अन्य टीकाओं सहित वेदों पर आधारित दर्शन एवं उपनिषद आदि ग्रन्थ भी हैं। इन ग्रन्थों वा ईश्वर के स्वरूप वषयक ग्रन्थों का वेदानुकूल भाग ही प्रमा णत सद्ध होता है। वेद के बाद सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भू मका प्रमुख हैं। इनकी वशेषता यह है क इन्हें एक साधारण हिन्दी भाषा का जानने वाला व्यक्ति पढ़कर ईश्वर के सत्यस्वरूप से अ धकांशतः परि चत हो जाता है और इसके बाद केवल योग साधना द्वारा उसका साक्षात्कार करने का कार्य ही शेष रहता है।

कसी भी मनुष्यकृत पुस्तक की सभी बातें सत्य होना सम्भव नहीं होता अतः यह कैसे स्वीकार कया जाये क वेद में सब कुछ सत्य ही है? इसका उत्तर है क हम संसार की रचना व व्यवस्था में पूर्णता देखते हैं। इसमें कहीं कोई कमी व त्रुटि कसी को दृष्टिगोचर नहीं होती। दूसरी ओर मनुष्यों की रचनाओं को देखने पर उनमें अपूर्णता, दोष व क मयां दृष्टिगोचर होती हैं। अतः मनुष्यों द्वारा र चत सभी पुस्तकें व ग्रन्थ अपूर्णता, अशुद् धयों, त्रुटियों व क मयों से युक्त होते हैं। इसका मुख्य कारण मुनष्यों का अल्पज्ञ, ससीम व एकदेशी होना है। यह संसार कसी एक व अ धक मनुष्यों की रचना नहीं है। सूर्य मनुष्यों ने नहीं बनाया, पृ थवी, चन्द्र व अन्य ग्रह एवं यह ब्रह्माण्ड मनुष्यों की कृति नहीं है, इस लए क उनमें से कसी में इसकी सामथ्र्य नहीं है। यह एक ऐसी अदृश्य सत्ता की कृति है जो सत्य, चत, दुःखों से सर्वथा रहित, अखण्ड आनन्द से परिपूर्ण, सर्वातिसूक्ष्म, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सृष्टि निर्माण के अनुभव से परिपूर्ण, जीवों के प्रति दया व कल्याण की भावना से युक्त, अनादि, अज, अमर, अजर व अभय हो। ऐसी ही सत्ता को ईश्वर नाम दिया गया है। उसी व ऐसी ही अदृश्य सत्ता से मनुष्यों को सृष्टि के आदि में ज्ञान भी प्राप्त होता है। यह ऐसा ही क जैसे

सन्तान के जन्म के बाद से माता- पता अपनी सन्तानों को ज्ञानवान बनाने के लए सभी उपाय करना आरम्भ कर देते हैं। यदि संसार में व्यापक उस सत्ता से आदि मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त न हो तो फर उस पर यह आरोप आता है क वह पूर्ण व ज्ञान देने में समर्थ नहीं है अर्थात् उसमें अपूर्णता या क मयां हैं।

हम संसार में वेदों को देखते है और जब उसका अध्ययन कर उसकी बातों पर वचार करते हैं तो यह तथ्य सामने आता है क वेदों की कोई बात असत्य नहीं है। वेदों की एक शक्षा है 'मा गृधः' अर्थात् मनुष्यों को लालच नहीं करना चाहिये। लालच के परिणाम हम संसार में देखते हैं जो अन्ततः बुरे ही होते हैं। एक व्यक्ति धन की लालच में चोरी करता है। एक बार व कई बार वह बच सकता है, परन्तु कुछ समय बाद पकड़ा ही जाता है और उसकी समाज में दुर्दशा होती है। वह अपने परिवारजनों सहित स्वयं की दृष्टि में भी गर जाता है। इस एक शक्षा की ही तरह वेदों की सभी शक्षायें सत्य एवं मनुष्यों के लए कल्याणकारी हैं। मह र्ष दयानन्द चारों वेदों व वैदिक साहित्य के अ धकारी व प्रमा णक वद्वान थे। उन्होंने चारों वेदों की एक-एक बात पर वचार कया था और सभी को सत्य पाया था। उसके बाद ही उन्होंने घोषणा की क वेद सृष्टि की आदि में परमात्मा के द्वारा आदि चार ऋ ष अग्नि, वायु, आदित्य व अं गरा को दिया गया ज्ञान है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, इन नामों से उपलब्ध मन्त्र संहितायें सभी सत्य वद्याओं की पुस्तकें हैं। इसमें परा वद्या अर्थात् आध्यात्मिक वद्यायें भी हैं और अपरा अर्थात् सांसारिक वद्यायें भी हैं। मह र्ष दयानन्द की इस मान्यता को चुनौती देने की योग्यता संसार के कसी मत व मताचार्य में न तो उनके समय में थी और न ही वर्तमान में हैं। इसकी कसी एक बात को भी कोई खण्डित नहीं कर सका, अतः वेद मनुष्यकृत ज्ञान न होकर अपौरूषेय अर्थात् मनुष्येतर सत्ता से प्राप्त, ईश्वरीय ज्ञान सद्ध हंै। इसका प्रमाण मह र्ष दयानन्द व आर्य वद्वानों का कया गया वेद भाष्य एवं अन्य वैदिक साहित्य है। यह ज्ञान सृष्टि के सभी पदार्थों जिनमें पूर्णता है, उसी प्रकार से पूर्ण एवं निर्दोष है। यहां यह भी उल्लेखनीय है क संसार का कोई मत अपने मत की पुस्तक को सत्यासत्य की कसौटी पर न स्वयं ही परीक्षा करता है और न कसी को अ धकार देता है। अपनी पुस्तकों के दोषों को छिपाने के सभी ने अजीब से तर्क गढ़ लये हैं जिससे उसके पीछे उनकी संशय वृ त्त का साक्षात् ज्ञान होता है। इसी कारण वह सत्य ज्ञान से दूर भी है और यही संसार की अ धकांश समस्याओं का कारण है।

 कसी भी वस्तु के अस्तित्व को पांच ज्ञान इन्द्रियों, मन, बुद् ध, अन्तःकरण वा आत्मा के द्वारा होने वाले ज्ञान व अनुभवों से ही जाना जाता है। यह संसार कब, कसने, कैसे व क्यों बनाया, इसका निभ्रान्त व युक्तियुक्त उत्तर कसी मत के वद्वान या वैज्ञानिकों के पास आज भी नहीं है। इसके अतिरिक्त चारों वेद बार-बार निश्चयात्मक उत्तर देते हुए कहते हैं क यह सारा संसार इसको बनाने वाले ईश्वर से व्याप्त है। यह चारों वेद संसार का सबसे प्राचीन ज्ञान व पुस्तकें हैं। यह महाभारतकाल में भी थे, रामायणकाल व उससे भी पूर्व, सृष्टि के आरम्भ काल से, वद्यमान हैं। अतः वेदों की अन्तःसाक्षी और संसार को देख कर तर्क, ववेचना व ईश्वर का ध्यान करने पर ईश्वर ही वेदों के ज्ञान का दाता सद्ध होता है। इस

कसौटी को स्वीकार कर लेने पर संसार के सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर मल जाते हैं जिनका उल्लेख मह ष दयानन्द सरस्वती ने अपने अपूर्व व अमर ग्रन्थ ‘सत्यार्थ प्रकाश’ में कया है।

ईश्वर वषयक तर्क व ववेचना हम स्वयं भी कर सकते हैं और इसमें 6 वैदिक दर्शनों योग-सांख्य-वैशे षक-वेदान्त-मीमांसा और न्याय का भी आश्रय ले सकते हैं जो वैदिक मान्यताओं को सत्य व तर्क की कसौटी पर कस कर वेदों के ज्ञान को अपौरूषेय सद्ध करते हैं। अतः ईश्वर का अस्तित्व सत्य सद्ध होता है। ईश्वर का अस्तित्व सद्ध हो जाने पर संसार की उत्प त्त की गुत्थी भी सुलझ जाती है। यदि ईश्वर है तो यह सृष्टि उसी की कृति है क्यों क अन्य ऐसी कोई सत्ता संसार में नही है जो ईश्वर के समान हो। सृष्टि रचना का नि मत्त कारण होने से प्राणीजगत, वनस्पति जगत व इसके संचालन का कार्य भी उसी से हो रहा है, यह भी ज्ञान होता है। वेदाध्ययन, दर्शन व उपनिषदों आदि वैदिक साहित्य का अध्ययन कर लेने पर जब मनुष्य ईश्वर, वेद, जीव व प्रकृति आदि वषयों का ज्ञान करता है तो ईश्वर की कृपा से इन सबका सत्य स्वरूप ध्याता व चन्तक की आत्मा में प्रकट हो जाता है। इस ध्यान की अवस्था को योग दर्शन में समा ध कहा गया है। समा ध और कुछ नहीं अ पतु वैदिक मान्यताओं को जानकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लम्बी लम्बी अव ध तक वचार मग्न रहना व इसके साथ मन का ईश्वर के अतिरिक्त कसी अन्य वषय को स्मृति में न लाना ही समा ध कहलाती है। इस स्थिति को प्राप्त करने का सभी मनुष्यों को प्रयत्न करना चाहिये। अन्य मतों में बिना तर्क व ववेचना के उस मत की पुस्तक की मान्यताओं को न, नुच के मानना ही कर्तव्य बताया जाता है जब क वैदिक धर्म व केवल वैदिक धर्म में इस प्रकार का कं चत बन्धन नहीं लगाया गया है। साधक व उपासक को स्वतन्त्रता है क हर प्रकार से ईश्वर के अस्तित्व को जांचे व परखे और असत्य का त्याग कर सत्य को ही ग्रहण करे।

अतः निष्कर्ष में यह कहना है क ईश्वर के यथार्थ ज्ञान के लए वचार व चन्तन के साथ वेद, वैदिक साहित्य सहित सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभू मका का अध्ययन और योगाभ्यास करते हुए वचार, ध्यान, चन्तन व उपासना कर ईश्वर को प्राप्त कया जा सकता है। मह ष दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लखकर यह कार्य सरल कर दिया है। स्वाध्याय के आधार पर हमारा यह भी मानना है क वैदिक धर्मी स्वाध्यायशील आर्यसमाजी ईश्वर को जितना पूर्णता से जानता व अनुभव करता है, सम्भवतः संसार के कसी मत का व्यक्ति अनुभव नहीं कर सकता क्यों क वहंा आधेय के लए आधार वैदिक धर्म की तुलना में कहीं अ धक दुर्बल है। आईये, वेदाध्ययन, वैदिक साहित्य के अध्ययन, सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभू मका ग्रन्थों का बार-बार अध्ययन करने सहित योगाभ्यास का व्रत लें और जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को सद्ध कर जीवन को सफल करें, बाद में पछताना न पड़े।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196 चुक्खूवाला-2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

अंध वश्वास और महा वनाशःराजेन्द्र जिज्ञासु

OCTOBER 10, 2015 1 COMMENT

अभी-अभी आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी के तट पर अंध वश्वास की वनाश लीला का दुखद समाचार सुनकर कलेजा फटे जा रहा है । ऐसा कौनसा धर्म प्रेमी, जाति सेवक सहृदय व्यक्ति होगा जो प्रतिवर्ष अंध वश्वास की वनाश लीला से थोक के भाव हिन्दुओं की मौत पर रक्तरोदन न करता होगा? मी डया इन मौतों के लए उत्तरदायी कौन? इस प्रश्न का उत्तर पाने का कर्मकाण्ड करने में जुट जाता है। परोपकारी प्रत्येक ऐसी दुर्घटना पर अश्रुपात करते हुए हिन्दू जाति को अधं वश्वासों व भेड़चाल से सावधान करता चला आ रहा है। सस्ती मुक्ति पाने की होड़ में ये दुर्घटनायें होती हैं। अष्टांग योग का, श्रेष्ठाचरण का, स्वाध्याय, सत्संग, सत्कर्म, मन की शुद्धता का मार्ग अति कठिन है। नदी, पेड, जड़, स्थल व मुर्दों की पूजा यह पगडण्डी बड़ी सरल है। आर्य समाज की न सुनने से सस्ती मुक्ति तो मलने से रही परन्तु, क्या हिन्दू जाति के शुभ चन्तक सोचेंगे क इससे हिन्दुओं के लए मौत तो बहुत सस्ती हो गई।

जाति के लए रो-रो कर हमारे नयनों में तो अब नीर भी नहीं रहे। अदूरदर्शी हिन्दू संस्थायें ऐसी सब यात्राओं के लये लंगर लगवा कर इन्हें प्रोत्साहन देती हैं। कॉव ड़ये दुर्घटना ग्रस्त होते हैं। अमरनाथ यात्री मरते हैं, कृपालु महाराज के भक्त मौत का ग्रास बने। हिन्दू नेताओं ने इन दुर्घटनाओं को रोकने के लए कभी कुछ सोचा? योग का शोर मचाने वालों ने कभी सोचा क नदियों में डुबकी लगाने व पर्वत यात्रा का योग वद्या से दूर-दूर का भी सबन्ध नहीं। वेद, उपनिषद्, दर्शन साहित्य तथा गायत्री मन्त्र, प्रणव जप का इन यात्रियों को सन्देश, उपदेश तो कभी दिया नहीं जाता। बस भीड़ देखकर सब हिन्दू संस्थायें गद्गद् हो जाती है। आर्य समाज की तो सुनने से पूर्वाग्रह ग्रस्त तथा क थत नेता व गुरु कतराते हैं। ये लोग श्री कबीरजी, सन्त तुकाराम व गुरु गो वन्द संह की ही सुन लें तो बार-बार रोना न पड़े।

आत्मा का स्वााा वक गुण-एक नई खोजः:- गुजरात यात्रा से लौटते ही फरीदाबाद के एक सज्जन ने प्रश्न पूछ लया क क्या धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण है? इस प्रश्न को सुनकर मैं चौंक पड़ा। अपने को आर्य बताने वाला व्यक्ति यह क्या कह रहा है। प्रश्न क्या मेरे लए तो यह बिजली का झटका सा था। उसी ने बताया क यह कथन मेरा नहीं। कसी और ने ऐसा लखा है। मैं तो इस पर आपका वचार जानना चाहता हूँ।

मैंने निवेदन कया क मेरा वचार तो वही है जो वेद मन्त्रों में मलता है। जो ऋ ष मुनि कहते हैं, मैं वही मानता हूँ। उक्त कथन तो वैसा ही लगता है जैसे उफान में आई नदी कनारे तोड़कर बाढ का दृश्य उपस्थित कर दे। उसे कहा, अरे भाई यदि धर्म आत्मा का

स्वाभा वक गुण होता तो परमात्मा को वेद ज्ञान देने की क्या आवश्यकता थी? फर गायत्री मन्त्र तथा शव सङ्कल्प मन्त्रों, प्रार्थना मन्त्रों का प्रयोजन व महत्व ही समाप्त हो जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश की भू मका तो पढ़िये। ऋ ष एक सूक्ष्म सत्य का प्रकाश करते हैं, ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथा प अपने प्रयोजन की सद् ध हठ दुराग्रह और अ वद्या दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।''

ऋ ष के इन मा र्मक शब्दों को सुनकर प्रश्नकर्त्ता भाई तृप्त हो गया। इस वषय में और कुछ लखने की आवश्यकता ही नहीं।

'गुजरात के सोमनाथ मन्दिर की लूट पर मह र्ष दयानन्द का शक्षाप्रद व्याख्यान'-मनमोहन कुमार आर्य

OCTOBER 3, 2015 LEAVE A COMMENT

मह र्ष दयानंद सरस्वती मूर्तिपूजा का वेद वरुद्ध व अकरणीय मानते थे। उनका यह भी निष्कर्ष था क देश के पतन में मूर्तिपूजा, फ लत ज्योतिष, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, बाल ववाह, वधवाओं की दुर्दशा, पुरूषों के चारित्रिक ह्रास, सामाजिक कुव्यवस्था, असमानता व वषमता तथा स्त्री व शूद्रों की अ शक्षा आदि कारण प्रमुख थे। वचार करने पर मह र्ष दयानन्द की बातें सत्य सद्ध होती हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश' मह र्ष दयानन्द जी का प्रमुख ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के ग्याहरवें समुल्लास में आर्यावर्तीय मतमतान्तरों का खण्डन-मण्डन वषय प्रस्तुत कया गया है। ग्याहरवें समुल्लास की भू मका में मह र्ष दयानन्द ने लखा है क इस समुल्लास में उनके द्वारा प्रस्तुत खण्डन मण्डन कर्म से यदि लोग उपकार न मानें तो वरोध भी न करें। क्यों क उनका तात्पर्य कसी की हानि वा वरोध करने में नहीं कन्तु सत्याऽसत्य का निर्णय करने कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्तना अति उ चत है। मनुष्य जन्म का होना सत्याऽसत्य का निर्णय करने कराने के लये है न क वाद ववाद व वरोध करने कराने के लये। इसी मत-मतान्तर के ववाद से जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और आगे भी होंगे, उन को पक्षपातररहित वद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मथ्या मतमतान्तर का वरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और वशेष वद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है क इन वद्वानों के वरोध ही ने सब को वरोध-जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन (स्वार्थ) में न फंस कर सब के प्रयोजन (हित व कल्याण) को सद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इस के होने की युक्ति इस (ग्रन्थ) की पूर्ति में लखेंगे (यह युक्ति मह र्ष दयानन्द ने पुस्तक के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के अन्र्तगत लखी है)। सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों की आत्माओं में प्रका शत करे। आगामी सोमनाथ मन्दिर की घटना को पढ़ते हुए पाठकों को मह र्ष दयानन्द के इन शब्दों में व्यक्त की गई भावना को अपने ध्यान में अवश्य रखना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश में मह ष दयानन्द ने प्रश्नोत्तर शैली में सोमनाथ मन्दिर के वषय में अपने वचार प्रस्तुत कये हैं। प्रश्न करते हुए वह लखते हैं क देखो ! सोमनाथ जी (भगवान) पृ थवी के ऊपर रहता था और उनका बड़ा चमत्कार था, क्या यह भी मथ्या बात है? इसका उत्तर देते हुए वह बताते हैं क हां यह बात मथ्या है। सुनो ! मूर्ति के ऊपर नीचे चुम्बक पाषाण लगा रक्खे थे। इसके आकर्षण से वह मूर्ति अधर में खड़ी थी। जब ‘महमूद गजनवी’ आकर लड़ा तब यह चमत्कार हुआ क उस का मन्दिर तोड़ा गया और पुजारी भक्तों की दुर्दशा हो गई और लाखों फौज दश सहस्र फौज से भाग गई। जो पोप पुजारी पूजा, पुरश्चरण, स्तुति, प्रार्थना करते थे क ‘हे महादेव ! इस म्लेच्छ को तू मार डाल, हमारी रक्षा कर, और वे अपने चेले राजाओं को समझाते थे ‘ क आप निश्चिन्त रहिये। महादेव जी, भैरव अथवा वीरभद्र को भेज देंगे। ये सब म्लेच्छों को मार डालेंगे या अन्धा कर देंगे। अभी हमारा देवता प्र सद्ध होता है। हनुमान, दुर्गा और भैरव ने स्वप्न दिया है क हम सब काम कर देंगे।’ वे वचारे भोले राजा और क्षत्रिय पोपों के बहकाने से वश्वास में रहे। कतने ही ज्योतिषी पोपों ने कहा क अभी तुम्हारी चढ़ाई का मुहूर्त नहीं है। एक ने आठवां चन्द्रमा बतलाया, दूसरे ने यो गनी सामने दिखलाई। इत्यादि बहकावट में रहे।

जब म्लेच्छों की फौज ने आकर मन्दिर को घेर लया तब दुर्दशा से भागे, कतने ही पोप पुजारी और उन के चेले पकड़े गये। पुजारियों ने यह भी हाथ जोड़ कर कहा क तीन क्रोड़ रूपया ले लो मन्दिर और मूर्ति मत तोड़ो। मुसलमानों ने कहा क हम ‘बुत्परस्त’ नहीं कन्तु ‘बुत शकन्’ अर्थात् मूर्तिपूजक नहीं कन्तु मूर्तिभंजक हैं और उन्होंने जा के झट मन्दिर तोड़ दिया। जब ऊपर की छत टूटी तब चुम्बक पाषाण पृथक् होने से मूर्ति गर पड़ी। जब मूर्ति तोड़ी तब सुनते हैं क अठारह करोड़ के रत्न निकले। जब पुजारी और पोपों पर कोड़ा अर्थात कोड़े पड़े तो रोने लगे। मुस्लिम सैनिकों ने पुजारियों को कहा क कोष बतलाओ। मार के मारे झट बतला दिया। तब सब कोष लूट मार कूट कर पोप और उन के चेलों को ‘गुलाम’ बिगारी बना, पसना पसवाया, घास खुदवाया, मल मूत्रादि उठवाया और चना खाने को दिये। हाय ! क्यों पत्थर की पूजा कर (हिन्दू) सत्यानाश को प्राप्त हुए? क्यों परमेश्वर की (सत्य वेद रीति से) भक्ति न की? जो म्लेच्छों के दांत तोड़ डालते और अपना वजय करते। देखो ! जितनी मूर्तियां हैं उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कतनी रक्षा होती? पुजारियों ने इन पाषाणों की इतनी भक्ति की कन्तु मूर्ति एक भी उन (अत्याचारियों) के शर पर उड़ के न लगी। जो कसी एक शूरवीर पुरुष की मूर्ति के सदृश सेवा करते तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।

उपर्युक्त पंक्तियों में मह ष दयानन्द जी ने जो कहा है वह एक सत्य ऐतिहा सक दस्तावेज है। इससे सद्ध है क पुजारियों सहित सैनिको व देशवा सयों के अपमान व पराजय का कारण मूर्तिपूजा, फ लत ज्योतिष, अन्ध वश्वास, पाखण्ड, ढ़ोग, वेदों को वस्मृत कर वेदाचरण से दूर जाना आदि थे। यह कहावत प्र सद्ध है क जो व्यक्ति व जाति इतिहास से सबक नहीं सीखती वह पुनः उन्हीं मुसीबतों मे फंस जाती व फंस सकती है अर्थात् इतिहास अपने आप को दोहराता है। मह ष दयानन्द ने हमें हमारी भूलों का ज्ञान कराकर असत्य व अज्ञान पर आधारित मथ्या वश्वासों को छोड़ने के लये चेताया था। हमने अपनी मूर्खता, आलस्य, प्रमाद व कुछ लोगों के स्वार्थ के कारण उसकी उपेक्षा की। आज भी हम वेद मत को मानने वाली

हिन्दू जनता को सुसंगठित नहीं कर पाये जिसका परिणाम देश, समाज व जाति के लए अहितकर हो सकता है। मह ष दयानन्द ने वेदों का जो ज्ञान प्रस्तुत कया है वह संसार के समस्त मनुष्यों के लए समान रूप से कल्याणकारी है। लेख की समाप्ति पर उनके शब्दों को एक बार पुनः दोहराते हैं- 'जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मथ्या मतमतान्तर का वरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और वशेष वद्वज्जन ईष्र्या द्वेष छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहैं तो हमारे लये यह बात असाध्य नहीं है। ... यदि ये (मत–मतान्तर वाले) लोग अपने प्रयोजन (स्वार्थ) में न फंस कर सब के प्रयोजन (हित व कल्याण) को सद्ध करना चाहैं तो अभी ऐक्यमत हो जायें।' आईये, सत्य को ग्रहण करने व असत्य का त्याग करने का व्रत लें। इसके लये वेदों का स्वाध्याय करें और वेदानुसार ही जीवन व्यतीत करें जिससे देश, समाज व वश्व को लाभ प्राप्त हो।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

ईसा (यीशु) एक झूठा मसीहा है – पार्ट 1

OCTOBER 1, 2015 LEAVE A COMMENT

सभी आर्य व ईसाई मत्रो को नमस्ते।

प्रय मत्रो, जैसे की हम सब जानते हैं – हमारे ईसाई मत्र – ईसा मसीह को परम उद्धारक और पापो का नाशक मानते हैं – इसी आधार पर वो अपने पापो के नाश के लए ईसा को मसीह – यानी उद्धारक – खुदा का बेटा – मनुष्य का पुत्र – स्वर्ग का दाता – शांति दूत – अमन का राजकुमार – आदि आदि अनेक नामो से पुकारते हैं –

इसी आधार ईसा को पापो से मुक्त करने वाला और – स्वर्ग देने हारा – समझकर – अनेक हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन करवाकर – उन्हें स्वर्ग की भेड़े बनने पर ववश करते हैं – ईसा का पछलग्गू बना देते हैं – नतीजा – हिन्दू समाज धर्म को त्याग कर – मात्र स्वर्ग के झूठे लालच में ईसा के पीछे भटकता रहता है –

सोचने वाली बात है – ईसाई जो ऐसा षड्यंत्र रच रहे की ईसा से पाप मुक्ति होगी और ईसा को मानने वाला स्वर्ग में प्रवेश करेगा – क्या ये वास्तव में होगा ? क्या ये षड्यंत्र है अथवा सत्य ? क्या कभी धर्म को त्याग कर मनुष्य केवल एक भेड़ बन जाने से स्वर्ग पा सकता है ?

क्या कहती है बाइबिल ?

बाइबिल के अनुसार – सच्चे मसीह को पहिचानने के लए बाइबिल में कुछ भ वष्यवा णयां की गयी थी – जो उन भ वष्यवा णयों पर खरा उतरेगा वो ही मसीह कहलायेगा – और जो भ वष्यवा णयों पर खरा नहीं उतरेगा वो झूठा मसीह होगा – ऐसे मसीह अनेक आएंगे – जो खुद को ईसा और पाप का नाशक कहेंगे – मगर लोगो को सावधान रहकर – सच्चे मसीह पर वश्वास करना होगा – जो झूठे मसीह पर वश्वास करेगा – वो पापी ही कहलायेगा – वो कभी स्वर्ग नहीं जा सकता – ये बाइबिल का कहना है।

आइये एक नजर डाले – जिस ईसा पर वश्वास करके हमारे ईसाई भाई – हिन्दुओ को बहका कर उनका धर्म परिवर्तन कर रहे – वो ईसा क्या सचमुच बाइबिल के आधार पर – मुक्तिदाता है ? क्या वाकई ये ईसा – कोई मसीह है ? क्या वाकई ईसा पर वश्वास करने से मनुष्य स्वर्ग जाएगा ? कहीं ये कोई ढकोसला, अन्ध वश्वास या षड्यंत्र तो नहीं ?

आइये एक नजर इसपर भी की क्या ये ईसा वही मसीह है जो खुदा का बेटा है – ये वही मसीह है जो मनुष्यो को पाप मुक्त करके स्वर्ग और सुख शांति देगा ?

मुख्यरूप से तीन भ वष्यवा णयां हैं – जिनके द्वारा सच्चे मसीह को पहिचाना जा सकता है – ले कन "ईसा" इन मुख्य तीन भ वष्यवा णयों पर खरा नहीं उतरता – आइये देखे –

पहली भ वष्यवाणी –

23 क, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है " परमेश्वर हमारे साथ"। (मत्ती अध्याय १)

इस भ वष्यवाणी में कहा गया की एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी – उसका नाम "इम्मानुएल" रखा जाएगा – ले कन सच्चाई ये है की "ईसा" को पूरी बाइबिल में – कहीं भी – कसी ने भी – यहाँ तक की ईसा के माता पता ने भी ईसा को "इम्मानुएल" नाम से नहीं पुकारा – न ही इस बच्चे का नाम "इम्मानुएल" रखा – दे खये –

25 और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उस ने उसका नाम यीशु रखा॥

जब भ वष्यवाणी ही "इम्मानुएल" नाम की हुई तो क्यों "ईसा" नाम रखा गया ?

दूसरी भ वष्यवाणी –

3 अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के वषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाउद के वंश से उत्पन्न हुआ। (रो मयो अध्याय १)

29 हे भाइयो, मैं उस कुलपति दाऊद के वषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं क वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है।
30 सो भ वष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर क परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, क मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे संहासन पर बैठाऊंगा। (प्रेरितों के काम, अध्याय २)

यहाँ से साफ़ है – भ वष्यवाणी हुई थी की दाऊद के वंश से – खासकर “शारीरिक वंशज” – यानी दाऊद के वंश में संतानोत्प त्त (सेक्स) करके उत्पन्न होगा – वो मसीह होगा – ले कन हमारे ईसाई मत्र तो कहते हैं की – मरियम – कुंवारी ही गर्भवती हुई ?

इसका मतलब – मरियम के साथ – सेक्स नहीं हुआ – फर दाऊद का वंशज जो संघासन पर बैठना था – वो ईसा कैसे ?

तीसरी भ वष्यवाणी –

16 क्यों क उस से पहिले क वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने, वह देश जिसके दोनों राजाओं से तू घबरा रहा है निर्जन हो जाएगा। (यशायाह, अध्याय 7)

यहाँ भ वष्यवाणी में बताया जा रहा है – जब वो मसीह परिपक्वता, सद् ध – प्राप्त कर लेगा – उससे पहली ही यहूदियों के दोनों देश तबाह और बर्बाद हो जाएंगे – बाइबिल के नए नियम में – इस भ वष्यवाणी के बारे में कोई खबर नहीं है – यानी ईसा को जब सद् ध हुई – तब यहूदियों के दोनों देश बर्बाद हुए – इस बारे में – नया नियम खामोश है –

इन सभी मुख्य तीन भ वष्यवा णयों से सद्ध होता है – की ईसाई समाज जिस ईसा को – खुदा का बेटा – पाप नाशक – और स्वर्ग का दाता – कहते और मानते हैं – वो ईसा तो बाइबिल के आधार पर ही – मसीह सद्ध नहीं होता – फर क्यों – हिन्दुओ को मुर्ख बनाकर – उनको धर्मभ्रष्ट कर के – स्वर्ग का लालच देते हैं ?

मेरे ईसाई मत्रो – ये इस कड़ी का पहला भाग है – इसका दूसरा भाग जल्दी ही मलेगा – जिसमे – खंडन होगा ईसाइयो के उस षड्यंत्र का जिसमे जबरदस्ती ईसा को मसीह सद्ध करने की चाल ईसाई मशनरी – चल रही – और मनुष्य को ईश्वर की जगह शैतान की राह पर चलाने का षड्यंत्र कर रही हैं।

अभी भी समय है – मनुष्य जीवन का लाभ उठाओ – धर्म की और आओ – हिन्दुओ भेड़ बनने से अच्छा है – मनुष्य ही बने रहो – वेद की और लौटो – अपने आप ही ये धरती स्वर्ग बन जायेगी –

लौटो वेदो की और

नमस्ते

यह दोहरा मापदण्ड क्यों?– – राजेन्द्र जिज्ञासु

SEPTEMBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

‘आर्य सन्देश’ दिल्ली के 13 जुलाई के अंक में श्रीमान् भावेश मेरजा जी ने मेरी नई पुस्तक ‘इतिहास प्रदूषण’ की समीक्षा में अपने मनोभाव व्यक्त कये हैं। मैंने अनेक बार लखा है क मैं अपने पाठक के असहमति के अ धकार को स्वीकार करता हूँ। आवश्यक नहीं क पाठक मुझसे हर बात में सहमत हो। समीक्षक जी ने डॉ. अशोक आर्य जी के एक लेख में मुंशी

कन्हैयालाल आर्य वषयक एक चूक पर आप त करते हुए उन्हें जो कहना था कहा और मुझे भी उनके लेख के बारे में लखा। मैंने भावेश जी को लखा मैं लेख देखकर उनसे बात करूँगा। अशोक जी को उनकी चूक सुझाई। उन्होंने कहा , मैंने पं. देवप्रकाश जी की पुस्तक में ऐसा पढ़कर लख दिया। मैंने फर भी कहा स्रोत का नाम देना चाहिये था और बहुत पढ़कर कसी वषय पर लेखनी चलानी चाहिये।

मैं गत 30-35 वर्ष से आर्यसमाज में इतिहास प्रदूषण के महारोग पर लखता चला आ रहा हूँ परन्तु

'रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।'

वाली उक्ति के अनुसार यह तो ऊपर से नीचे तक फैल चुका है। भावेश जी ने अशोक जी की चूक पर तो झट से अपना निर्णय दे दिया क यह भ्रामक कथन है। मैंने कई लेखकों की कई पुस्तकों व लेखों की भयङ्कर भूलों नाम की, सन् की, सवत् की, स्थान की, हटावट की मलावट की बनावट की मनगढ़न्त हदीसें मलाने की निराधार मथ्या बातों के अनेक प्रमाण दिये तीस वर्ष से झकझोर रहा हूँ। मेरे एक भी प्रमाण व एक भी टिप्पणी को कोई आगे आकर झुठलाकर तो दिखावे। अशोक जी के एक लेख पर एक कथन पर भावेश जी ने झट से उसका प्रतिवाद कर दिया। अब भी वह ऐसा करते तो अच्छा होता अथवा मेरे दिये प्रमाणों को झुठलाते। यह तो वही बात हुई ' चत भी मेरी और पट भी मेरी'

तड़प-झड़प वाली शैली पर जो आप त समीक्षक ने की है, वही ऋ ष दयानन्द, पं. लेखराम, पं. चमूपति, देहलवी जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. धर्म भक्षु, पं. नरेन्द्र जी पर वरोधी कोर्टों व पुस्तकों में करते चले आ रहे हैं परन्तु कोई असंसदीय शद तो कसी कोर्ट में सद्ध न हो सका। एक व्यक्ति ने गत तीस-पैंतीस वर्ष से प्रदूषण का आन्दोलन छेड़ा है तो उसी पर अ धक लखा जावेगा। वेश्या व जोधपुर के राज परिवार के लए आर्यसमाज के इतिहास को ही प्रदू षत करना क्या उ चत है?

तड़प-झड़प वाले का लेख ईसाई पत्रिका प वत्र हृदय ने आदर से प्रका शत कया। जब-जब कसी ने प्रहार कया, चाहे सत्यार्थप्रकाश पर दिल्ली में अ भयोग चला, हर बार तड़प-झड़प वाले को ही उत्तर देने व रक्षा के लए समाज पुकारता है। इसका कारण आप ही बता दें। गुरु नानकदेव वश्व वद्यालय अमृतसर का **Sikh Theology** वभाग सारा ही तड़प-झड़प वाले के पास पहुँचा तो क्या इससे आर्यसमाज का गौरव बढ़ा या नहीं? कसी और से वह काम ले लेते। महोदय! मुसलमानों ने आचार्य बलदेव जी से कहलवाकर तड़प-झड़प वाले की एक पुस्तक दो बार छापने की अनुमति ली। शहदयार शीराजी एक वदेशी मुस्लिम स्कॉलर ने पं. रामचन्द्र जी देहलवी व दो अन्य महापुरुषों पर तड़प-झड़प वाले से ग्रन्थ लखवा कर समाज की शोभा शान बढ़ाई या नहीं? ये कार्य आप अपनी वभूति से करवा लेते तो संसार जान जाता। 'इतिहास प्रदूषण' में दिया गया एक प्रमाण, एक टिप्पणी तो झुठलाओ।

परोपकारी पर वार हो तो संगठन भूल जाता है। प्रदूषणकार, हटावट, मलावट, बनावट करने वाले पर लेखनी उठाई जावे तब संगठन की दुहाई देने का क्या अर्थ? तड़प-झड़प वाला अर्थार्थी, स्वार्थी नहीं परमार्थी पुरुषार्थी है। यह क्यों भूल गये? न कभी कसी से पुरस्कार माँगा है, न समान व पेंशन माँगी है। कई बार अस्वीकार तो करता आया है। तन दिया है, मन दिया

है, लहू से ऋ ष की वाटिका, सींची है। धन को धू ल जानकर समाज पर वारा है। न तो कभी साहित्य तस्करी की है और न पुस्तकों की तस्करी का पाप कभी कया है। सच को सच तो स्वीकार करो। इसे झुठलाना आपके बस में नहीं है।

परमात्मा का शरीर कब बना? कससे बना? – राजेन्द्र जिज्ञासु

SEPTEMBER 16, 2015 LEAVE A COMMENT

बाइबिल के प्रथम वाक्य आकाश (Heaven) को ईश्वर द्वारा बनाया गया, लखा है और फर आठवें वाक्य में दोबारा Heaven (आकाश) का सृजन हुआ। आकाश दो बार क्यों रचना पड़ा? पहले जो आकाश बनाया गया था, उसमें क्या दोष था? आश्चर्य है क बहुत पठित लोग भी इस भूल-भुलैयाँ को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।

यही नहीं बाइबिल की 26वीं आयत में आता है, ÒLet us make man in our own image.Ó अर्थात् परमात्मा ने अपनी आकृति पर मनुष्य को बनाने का मन बनाया। परन्तु अपने देह को कब और कैसे बनाया- यह बाइबिल में इस से पहले कहीं बताया ही नहीं गया।

उत्प त्त 2-7 में पुनः God formed man of the dust of the ground.. लखा मलता है अर्थात् धरती की धू ल मट्टी से मनुष्य को बनाया गया। प्रश्न उठता है क जब ईश्वर के सृदश ही मनुष्य को बनाया तो क्या फर परमात्मा की देह भी धू ल मट्टी से नि र्मत होगी। इस शंका का समाधान कैसे हो?

प्रत्येक आर्य को श्री हरिकृष्ण जी की पूना से प्रका शत पुस्तक पढ़नी व पढ़ानी चाहिये।

श्री वशाल का प्रश्नः– दिल्ली के श्री वशाल धर्मनिष्ठ व लगनशील युवक हैं। अभी अनुभवहीन हैं। उन्हें निरन्तर स्वाध्याय करके अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिये। आप वध र्मयों को बहुत सुनते व पढ़ते हैं। उनके प्रत्येक आक्षेप का उत्तर देने की योग्यता तो समय पाकर ही आयेगी। आपने एक मुसलमान का यह आक्षेप सुनकर उसका उत्तर माँगा है क अथर्ववेद के एक मन्त्र में, ''हमारे शत्रुओं को मारने की प्रार्थना है।'' मैं समझ गया क कसी मयाँ ने जेहाद की वकालत में उसकी पुष्टि में वेद के मन्त्र का प्रमाण दे दिया। इससे इतना तो पता चल गया क जेहाद को कुरान से तो न्याय संगत सद्ध नहीं कया जा सका। जेहाद की पुष्टि में मयाँ लोग वेद को घसीट लाते हैं। कुरान का जेहाद वशुद्ध मजहबी लड़ाई व रक्तपात है। वेद में कसी भी मजहब की चर्चा नहीं, अतः वेद में मजहबी लड़ाई (Crusade) की गंध तक नहीं। तब मत पंथ थे ही नहीं। वेद में भले व बुरे, सज्जन व दुर्जन का तो भेद है। अन्यायी दुर्जन से लड़ाई में वजय की प्रार्थनायें हैं।

कुरान व बाइबिल दोनों हमारी इस मान्यता की पुष्टि करते हैं। कुरान की सूरते बकर की आयत संया 213 का प्रामा णक अनुवाद है "Mankind was [of] one religion [before their deviation], then Allah sent the prophetes as………" अर्थात् धरती के वा सयों की एक ही भाषा और एक ही वाणी थी। वह वाणी कौनसी थी? वेदवाणी ही सृष्टि के आरभ में मनुष्य धर्म था। इसी को शद प्रमाण माना जाता था। बाइबिल का घोष वश्व को सुनाना समझाना

होगा, In the beginning was the **Word**, and the **Word** was with God, and the **Word** was God. कतने स्पष्ट शदों में घोषणा की गई है क आदि में शब्द (शब्द प्रमाण-वेद) था, शब्द ईश्वर के पास था और शब्द (ज्ञान) परमात्मा था। मत्रो! मत भू लये बाइबिल में तीन बार आने वाले इस शब्द **Word** का **W** अक्षर **Capital** बड़ा है। व्यक्तिवाचक जातिवाचक संज्ञाओं में धर्म ग्रन्थों का पहला अक्षर सदैव कैपटल ही होता है। यहाँ **Word** संज्ञा होने से **W** कैपटल है। नि र्ववाद रूप से यहाँ शब्द **Word** वेद के लये प्रयुक्त हुआ है। आयत का सीधा सा भाव सृष्टि के आदि में अनादि वेद का आ वर्भाव हुआ। गुण-गुणी के साथ ही रहता है, सो ईश्वर का वेद ज्ञान ईश्वर के साथ था। ईश्वर ज्ञान स्वरूप माना जाता है, सो शद ज्ञान वेद का परमात्मा ब्रह्म कहा जाता है। हिन्दू समाज घर-घर में बाइबिल के इस घोष को गुञ्जा कर मार्गभ्रष्ट जाति बन्धुओं का उद्धार करे।

मैंने वशाल से कहा, अरे भाई वधर्मी से वार्ता करते हुए सदा अपना पक्ष वैज्ञानिक ढंग से रखो। प्रभु नि र्मत कसी वस्तु व नियम में कुछ भी दोष आज तक नहीं पाया गया। सूर्य चाँद नये नहीं बने। मनुष्य, पशु-प क्षयों की निर्माण व ध **(Design)** व ध पुराना है। अग्नि, जल, वायु और सृष्टि के सब वैज्ञानिक नियम **(Laws)** न घटे, न घिसे और न बढ़े, फर ईश्वरीय ज्ञान, मानव धर्म नया (इलहाम) कैसे आ गया। यह मान्यता हठ, दुराग्रह व अन्ध वश्वास है।

नन्द कशोर जी के अनुरोध को शरोधार्य करके मैं नये सरे से एक ऐसी पुस्तक अवश्य लखूँगा। मुसलमानों व ईसाइयों के साहित्य में जो वेदानुकूल नई-नई शक्षायें व मान्यतायें मलती है, सूझबूझ से आर्य युवकों को उनको संग्रहीत करके प्रचारित करना चाहिये।

मुर्गे क्यों बांग देते हैं? गधे क्यों रेंकते हैं ?- इस्लाम के नज़रिए में :

SEPTEMBER 16, 2015 LEAVE A COMMENT

ईश्वर द्वारा बनायी इस सृष्टि में सभी जीव ईश्वर द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करते हए जीवन यापन करते हैं. जिन्हें जिव्हया प्रदान की है वो उसका प्रयोग अपने भावों को व्यक्त करने के लए करते हैं . चाहे वो खुशी को व्यक्त करना चाहें या दुःख को या जीवन की अलग अलग भावनाओं और आवश्यकताओं को.

ले कन हदीसों का अवलोकन करने पर हम इसका एक अन्य कारण भी पाते हैं :-

सहीह बुखारी हदीस नॉ ५२२ , पृष्ट संख्या ३३२

अबू हुरैरा से रिवायत है की मुहम्मद साहब ने कहा क जब आपको मुर्गे की बांग सुनाई दे तो अल्लाह से दुआ मांगों क्यों क मुर्गे का बांग देना यह प्रद र्शत करता है क इसने फरिश्तों को देखा है . और जब तुम गधे का रेंकना सुनो तो अल्लाह से शरण की दुआ करो क्यों क गधे का रेंकना यह प्रद र्शत करता है की गधे ने शैतान को देखता है .

यही हदीस सहीह मुल्सिम में भी है :

सहीह मुस्लिम जिल्द ४ हदीस २७२९ पृष्ठ संख्या २६५

अबू हुरैरा ने बताया क अल्लाह के रसूल ने कहा की जब तुम मुर्गे की बांग को सुनो तो अल्लाह से अपने लए दुआ मांगो क्यों क मुर्गे ने फरिश्तों को देखा है और जब तुम गधे का रेंकना सुनो तो शैतान से बचने के लए अल्लाह से दुआ करो क्यों क गधे ने शैतान को देखा है .

बड़ा ही नायब तर्क है गधे के रेंकने और मुर्गे के बांग देने का !

 वज्ञान तो अभी तक फरिश्तों और शैतान के अस्तित्व को खोजने में ही असफल रहा है.

मौल वयों को आवश्यक है क वज्ञानं द्वारा इस तथ्य को साबित करें क्यों क ज्ञान का प्रचार प्रसार होना सभी के हित में है.

वैसे ये शैतान है बडा ही अद्भुत पात्र क्यों क अल्लाह को भी शैतान की फक्र लगी रहती है और अल्लाह के दिखाए मार्ग पर चलने वाले मुसलमान भी इसके डर से खौफजदा रहते हैं और बार बार अल्लाह से शैतान से बचने के लए दुआ करते रहते हैं .

ये हमारी दरख्वास्त है मौ लयों आ लमों फाज़िलों से क इस्लाम की इस खोज को क मुर्गे क्यों बांग देते और गधे क्यों रेंकते हैं की हकीकत को वज्ञानं की दृष्टि में सद्ध करें जिससे सत्य का प्रसार वश्व भर में हो .

‘वेदों का ज्ञान और समाज का पुराण व र्णत अन्ध वश्वासों का आचरण’-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

SEPTEMBER 15, 2015 LEAVE A COMMENT

सृष्टि की रचना करने के बाद से ईश्वर मनुष्यों को जन्म देता, पालन करता व उनकी सभी सुख सु वधा की व्यवस्थायें करता चला आ रहा है। हमारी यह सृष्टि लगभग 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पूर्व ईश्वर के द्वारा अस्तित्व में आई है। सृष्टि को बनाकर ईश्वर ने वनस्पतियों व प्राणीजगत को बनाया और इसमें अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को उत्पन्न कया। युक्ति व तर्क से सद्ध है क सृष्टि के आरम्भ में जो भी प्राणी जगत की उत्प त्त होती है वह अमैथुनी ही होती है। माता- पता तो प्रथम अमैथुनी सृष्टि होने के बाद ही अस्तित्व में आते हैं। एक बार अमैथुनी अर्थात् माता- पता के बिना पृ थवी माता के गर्भ अर्थात् भू म के भीतर से वृक्ष-वनस्पतियों की उत्प त्त की भांति मनुष्यों की उत्प त्त होने के बाद फर यही मनुष्य भावी सन्तानों के माता- पता होते हैं जिनसे मैथुनी या जरायुज सृष्टि आरम्भ होती है। सृष्टि

के आरम्भ में मनुष्य की उत्प त्त होने के बाद जो प्रमुख समस्या होती है, वह मनुष्यों के परस्पर व्यवहार करने की होती है जिसके लए उन्हें ज्ञान व एक भाषा की आवश्यकता होती है। सृष्टि के आदि काल में ईश्वर से भन्न अन्य कोई चेतन सत्ता नहीं होती। ईश्वर सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ अर्थात् पूर्ण ज्ञानी है, अतः उसी से मनुष्यों को भाषा व ज्ञान मलता हैं। उसके बाद वर्तमान की मैथुनी सृष्टि की तरह हमारे ऋ ष, मुनि व आचार्य भावी सन्ततियों को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद, जिसे सृष्टि के आरम्भ से आज तक हमारे ऋ ष मुनियों द्वारा अनेक कष्ट सहकर सुर क्षत रखा गया है, उस ज्ञान को अपनी सन्ततियों को पीढ़ी दर पीढ़ी देते चले जाते हैं। यहां यह जान लें क सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक व निराकार सृष्टिकर्त्ता ईश्वर ने आदि चार ऋ ष अग्नि, वायु, आदित्य व अं गरा, जो क मनुष्य थे, उन्हें क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का भाषा तथा वेद के मन्त्रों के अर्थ सहित ज्ञान दिया था और इन चारों ऋ षयों ने वेदों के इस ज्ञान को अपने समकालीन व समव्यस्क ब्रह्माजी को देकर इन पांचों ऋ षयों ने शेष मनुष्यों में श्रवण व उपदेश के द्वारा वेद ज्ञान को स्था पत कया था। श्रवण व उपदेश द्वारा वेदों का ज्ञान दिये जाने के कारण ही वेद 'श्रुति' कहलाये और अब भी इन्हें यदा कदा व प्रसंगानुसार श्रुति कहते हैं। यह भी जानने के योग्य है क सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने सभी मनुष्यों को युवावस्था में उत्पन्न कया था क्यों क यदि वह ऐसा न करता तो बच्चों का बिना माता- पता के पालन पोषण नहीं हो सकता था और यदि वृद्धावस्था में मनुष्यों को उत्पन्न करता तो उनके द्वारा सन्तानोत्प त्त न हो सकने से यह सृष्टि आगे नहीं चल सकती थी।

यह सद्ध है क वेद सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान है जिसमें सभी वद्याओं की शक्षा दी गई है। वेद ईश्वरीय ज्ञान इस लए भी हैं क सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को व्यवहार व कर्तव्याकर्तव्य का बोध कराने के लए ईश्वर ही एकमात्र सत्ता होती है। वह यदि वेदों का ज्ञान न दे तो मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता व भाषा की रचना तथा उसे बोलना भी नहीं सीख सकता। बिना ईश्वर की सहायता से भाषा व ज्ञान को प्राप्त व उत्पन्न करने की सामथ्र्य मनुष्यों में सृष्टि के आरम्भ में नहीं होती। एक बार ईश्वर से ज्ञान व भाषा मल जाने पर वह देश काल परिस्थितियों के अनुसार इसमें कुछ कुछ परिवर्तन करने में समर्थ हो जाते हैं। ज्ञान व भाषा अलौ कक एवं दिव्य वस्तु वा पदार्थ है जो ईश्वर में सदा सर्वदा से अर्थात् नित्यस्वरूप से वद्यमान है और उसी को प्रत्येक सृष्टि-कल्प के आरम्भ में परमात्मा मनुष्यों को देता है। वेदों की भाषा संस्कृत, जो लौ कक संस्कृत से कुछ भन्न है, ईश्वर की अपनी भाषा है जिसे कृपा सन्धु ईश्वर ने अपने अमृत पुत्रों को उपहार के रूप में भेंट कया है। यह ऐसा ही है क जैसे माता- पता अपनी ही भाषा को अपनी सन्तानों को सखाते हैं। मनुष्यों का कर्तव्य है क ईश्वर से प्रदत्त इस वेद ज्ञान की रक्षा करें और उसका प्रचार व प्रसार करें जिससे संसार के कसी कोने में अज्ञान रूपी अन्धकार न रहे। सभी मनुष्य सूर्य से प्रेरणा ग्रहण करें व वचार करें क सूर्य कस तरह से अपनी परि ध पर घूमते हुए अपने चारों ओर घूमने वाले पृ थवी व अन्य सभी ग्रहों, उपग्रहों आदि का अन्धकार दूर करता है। इसी प्रकार से वद्वान मनुष्यों को भी अपने चहुंओर वद्यमान मनुष्यों का अज्ञान दूर करना चाहिये। यह वेदों के ज्ञान का प्रचार ही सृष्टि की आदि से सभी मनुष्यों का परम कर्तव्य और परम धर्म रहा है। महाभारत काल के बाद वेदाध्ययन, वेदोपदेश व वेद प्रचार में बाधायें आयीं जिससे न केवल भारत अ पतु सारे वश्व

में अज्ञान अन्धकार उत्पन्न हो गया। इस महाभारत युद्ध का परिणाम यह हुआ क संसार में अज्ञान व अ वद्या सहित अन्ध वश्वासों की उत्प त्त हुई। ईश्वर की महती कृपा हुई क उसने वर्तमान कालगणना की उन्नीसवीं शताब्दी में मह र्ष दयानन्द को उत्पन्न कया और उन्होंने अपूर्व उत्साह, तप व पुरूषार्थ से वलुप्त वेद ज्ञान को प्राप्त कर उसका पुनरुद्धार एवं प्रचार कया।

मह र्ष दयानन्द द्वारा उपलब्ध कराये गये वेदज्ञान से संसार के सभी अन्ध वश्वासों को दूर कर मनुष्यों को ज्ञानी व सुखी बनाया जा सकता है। यह दुःख का वषय है क हमारे तत्कालीन पौरा णक लोगों ने मह र्ष दयानन्द के वेदों के प्रचार के लोकहितकारी कार्यों में अपने स्वार्थों व अज्ञान के कारण बाधायें उपस्थित की। उन्हें अपमानित कया और उनकी जीवन लीला समाप्त करने के प्रयत्न तक कये। वह पुराणानुयायी प्रत्यक्षतः और हमारे वदेशी शासक अंग्रेज दयानन्द जी के वेदों के प्रचार व इससे ईसाई मत के प्रचार में उपस्थित बाधाओं के कारण से उनके वरोधी थे। इस कारण मह र्ष दयानन्द उनके गुप्त षडयन्त्रों का शकार हुए और उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। उनके द्वारा कया जा रहा मानव मात्र के हित का वेद प्रचार का कार्य 30 अक्तूबर, सन् 1883 को उनकी मृत्यु के कारण अवरूद्ध हो गया था। सौभाग्य से उनके कार्यों को उनके योग्य शष्यों ने जारी रखा और उनके प्रयत्नों व ईश्वर की कृपा से वह कार्य अब भी चल रहा है। यह देश और मानवजाति का दुर्भाग्य ही था क वैदिक धर्मी हमारे पौरा णक भाईयों व अन्य मतों के अनुयायियों ने मह र्ष दयानन्द के वेद प्रचार के कार्य में उनका सहयोग नहीं कया और इसके वपरीत उनके ईश्वर प्रेरित वेद प्रचार के कार्य में बाधायें उपस्थित कीं। मह र्ष दयानन्द की मृत्यु के पश्चात हमारे पौरा णक बन्धुओं ने उन्हीं अन्ध वश्वासों, पाखण्डों, कुरीतियों व मथ्या पूजा अर्चना को जारी रखा जो महाभारत काल के वेद ज्ञान के वलुप्त होने व वपरीत परिस्थितियों में उत्पन्न हुए थे। इन्हीं वेद वरोधी लोगों के उत्तरा धकारी आजकल यत्र तत्र पुराणों की कथायें करके अपने मनोरथ, लोकैषणा व वत्तैषणा आदि को सद्ध करते हैं जिससे अज्ञान बढ़ रहा है और मनुष्य समाज में एकता होने के सथान पर उसमें फूट पड़ रही है। वेद ज्ञान से रहित समाज के सामन्य लोग ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि करने के स्थान पर अपने अपने आज के तथाक थत गुरुओं की स्तुति करने, उन्हें अनापशनाप धन देने व उन्हें ही महिमा मण्डित कर रहे हैं। बहुत व अनेकों मथ्याधर्म प्रचारकों के अनु चत कृत्य व व्यवहारों के सामने आने पर भी उनके अनुयायियों में उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति में कोई कमी नहीं आती। यह अन्ध वश्वास की चरम परिणति है जिसने उन्हें ज्ञान व ववेक से शून्य बना दिया है। वेदों के प्रति इन गुरुओं व उनके भक्तों की उदासीनता ने देश व समाज तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म, संस्कृति व सभ्यता के लए अनेक समस्यायें पैदा कर दी हैं परन्तु उन्हें इनकी कोई चन्ता नहीं है।

मह र्ष दयानन्द के दिवंगत होने के बाद पुराणों की प्रतिष्ठा, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फ लत ज्योतिष, जन्मना जातिवाद की वषम सामाजिक व्यवस्था, बाल ववाह, सतीप्रथा आदि व्यवस्थायें व प्रथायें जारी रहीं। आज दिन प्रतिदन नये नये पुराणों के कथाकार उत्पन्न हो रहे हैं जो इनमें से अ धकांश अन्ध वश्वासों व मथ्याचारों का ही प्रचार करते हैं। हमारे पुराण

ग्रन्थ अन्ध वश्वासों व काल्पनिक मथ्या कथाओं से भरे पड़े हैं जिनका दिग्दर्शन मह षे दयानन्द ने अपने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ व उपदेशों में कया था। इन कथाकारों को इन कथाओं को करने में ही आनन्द आता है जिससे उन्हें प्र सद् ध व अपने भक्तों से प्रभूत द्रव्यों की प्राप्ति होती है। हमारी धर्मभीरूजनता के पैतृक संसार क्यों क अ धकांशतः पौरा णक व मथ्या वश्वासों से पूर्ण हैं, अतः ऐसे लोगों की दाल समाज में अच्छी तरह गल रही है। यह लोग पुराणों की कथा इस लये करते हैं क वेदों का अध्ययन करने में पुरुषार्थ करना पड़ता है। यह पुराणों की तुलना में कठिन कार्य है। यदि वह पुराणों को छोड़कर वेदाध्ययन व वेद प्रचार करें भी तो वेदों में अन्ध वश्वास न होने से इन कथाकारों के मनोरथ सद्ध नहीं हो सकते। इस लए इन पुराणों के प्रशंसकों ने सकारण ईश्वर प्रदत्त सत्य ज्ञान वेदों को जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के साधक हैं, अपने अपने स्वार्थ व अज्ञान के कारण ठुकरा दिया है। मह षे दयानन्द के वचारों से सहमत हम इन कृत्यों को देश का दुर्भाग्य ही मानते हैं। भारत की गुलामी का मुख्य कारण मूर्तिपूजा, फ लत ज्योतिष, वेद वरुद्ध सामाजिक व्यवस्था जिसमें बाल ववाह, बेमेल ववाह, वधवाओं के पुन र्ववाह को नकारना, सतीप्रथा जैसी कुरीतियां व जन्मना जाति वाद, अनु चत छुआछूत व ऐसी अनेक वसंगतियों से युक्त व्यवहार व मुख्यतम् सामाजिक व धा र्मक असंगठन के भाव थे। यही सब कुछ वर्तमान आधुनिक समय में भी हो रहा है जिसका परिणाम भ वष्य में देश, जाति व धर्म के लए भयंकर हो सकता है। आज भी यत्र तत्र हिन्दू व पौरा णक अकारण अपमानित होते रहते हैं। देश के कई भागों में हिन्दू होने के कारण ही लोगों को भारी दुख उठाने पड़े हैं फर भी हम लोगों में एकता उत्पन्न नहीं होती जिसका कारण हमारी अज्ञानता की यह सभी बातें, अन्ध वश्वास व कुरीतियां आदि हैं। यह सब हमारे इन धा र्मक पौरा णक कथाकारों के कारण ही अस्तित्व में है तथा इनका इनके निवारण में कोई योगदान नहीं हैं।

हमारा वश्लेषण यह है क यदि हम वेदों को मुख्य धर्म ग्रन्थ के रूप में नहीं अपनायेंगे और वेद वरुद्ध मान्यताओं को अस्वीकार नहीं करेंगे तो धा र्मक दृष्टि से न तो हम उन्नत होंगे और न ही हम मनुष्य जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को ही प्राप्त कर सकेंगे। वेदों की शक्षाओं को जीवन में आत्मसात कर उसका आचरण करना उन्नति का मार्ग है और इस मार्ग के वपरीत जितने भी मार्ग हैं, उनसे जीवन की यथार्थ उन्नति न हुई है और न हो सकती है। यह मानना भूल होगी क जिसके पास अ धक धन व सुख सु वधायें हैं, वह अ धक उन्नत है। धन सम्पन्न व्यक्तियों को ईश्वरीय कर्म-फल व्यवस्था के अनुसार अपने अपने पाप-पुण्यों का भोग भोगना ही होगा जिसके अन्र्तगत उन्हें परजन्मों में उ चतानु चत तरीकों से कमाये धन व पात्र व्यक्तियों को दान न दिये जाने के कारण भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। हमें लगता है क परजन्मों में आजकल के सु वधाहीन मनुष्य जो अज्ञानों व अन्ध वश्वासों से पृथक व वेद मार्ग के प थक हैं, वह अ धक लाभ की स्थिति में होगें। मनुष्य को मनुष्य मननशील होने के कारण कहते हैं। भ वष्य में दुःखों से बचने के लए सभी जिज्ञासुओं को वेद एवं सत्यार्थप्रकाश आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन कर स्वयं सत्य वा असत्य का निर्णय करना चाहिये और असत्य का त्याग और सत्य को स्वीकार करना चाहिये क्यों क सत्य का व्यवहार ही मनुष्य की उन्नति का प्रमुख कारण है और असत्य को मानना व आचरण करना ही पतन का मार्ग हैं। ईश्वर हमें सत्य के ग्रहण और असत्य को छोड़ने की सामथ्र्य प्रदान करें। इत्योम्।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

ईश्वरः जैन एवं वैदिक दृष्टि -डॉ. वेदपाल, मेरठ

SEPTEMBER 11, 2015 1 COMMENT

[वर्ष 2013 में ऋ ष – मेले के अवसर पर आयोजित वेद-गोष्ठी में प्रस्तुत एवं पुरस्कृत यह शोध लेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।] -
सपादक% मनुष्य के अस्तित्वकाल से ही उसके वचारणीय महत्त्वपूर्ण वषयों में एक है- ईश्वर। ईश्वर के सबन्ध में कल्पना बाहुल्य उपलध है। जिसका आधार देश, मत – पन्थ तथा धा मक वश्वास हैं। इसी कारण उसे अनेक नाम से सबो धत कया गया है। ईश्वर के स्वरूप वषयक कल्पनाएं भी कम मनोरंजक नहीं हैं। शव के करात रूप की कल्पना इसका निदर्शन है। इसी प्रकार न कुछ से सब कुछ (अर्थात् अभाव से भाव) करने वाला-मानना (इस्लाम के अनुसार)।

सामान्यतः ऐश्वर्य सपन्न, जगत् कर्त्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा जीव के कर्मफल प्रदाता1 के रूप में उसे स्वीकार कया जाता है। एक मत-धर्म ऐसा भी है जो उक्त जगत्कर्तृत्व आदि रूप में तो उसकी सत्ता स्वीकार नहीं करता, कन्तु सर्वज्ञ गुण सपन्न व्यक्ति को ही जिसने अर्थतः और तत्त्वतः आत्मतत्त्व को जान लया तथा कर्म से वप्रमोक्ष हो गया है उसे सर्वज्ञ2 केवली/ईश्वर कहा गया है। यद्य प यहाँ यह वशेषण स्मरणीय है क तत्त्वसूत्र (उमास्वामी वर चत जैनधर्म के प्रमुख दार्शनिक ग्रन्थ) तथा आचार्य कुन्दकुन्द वर चत 'समयसार' (जैनमत का प्रमुख आध्यात्मिक ग्रन्थ) में ईश्वर पद का प्रयोग नहीं हुआ है।

यह सर्वानुमत है क संसार में जितने भी कार्य पदार्थ हैं, उनसब का कोई चेतन कर्त्ता है। जैसे- घड़ी, वस्त्र, मोटरकार, कागज, लेखनी आदि पदार्थ कसी न कसी व्यक्ति, सत्ता द्वारा बनाए गये हैं। इनमें से कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है, जिसे कसी ने बनाया न हो और वह स्वयं बन गया हो अथवा अनादि निधन हो। जो पदार्थ जितना व्यवस्थित और बेहतर ढंग से डजायन कया गया है उसका कर्त्ता उतना ही बुद् धमान् माना जाता है।

इस दृश्य संसार के लए सृष्टि, जगत् तथा संसार शदों का प्रयोग कया जाता है। सृष्टि शद 'सृज् वसर्गे' धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है-रची हुई, पैदा हुई। जगत् शद का अर्थ है- 'गच्छतीतिजगत्'। संसार का अर्थ भी संसरणशील है3 संसार का कोई भी जड़ पदार्थ ऐसा नहीं है, जिसमें स्वतः गति हो अथवा वह संसरणशील हो या स्वयं ही नि र्मत हो गया हो। अर्थात् इन पदार्थों का स्वभाव बनना गतिशील होना हो। इनमें बनना या इनका गतिशील होना कसी अन्य बनाने वाले अथवा इन्हें गति देने वाले की अपेक्षा रखते हैं।

सृष्टि एवं सृष्टा ईश्वर के वषय में जैन सद्धान्तों को निम्नवत् समझा जा सकता है-

1. सृष्टि नाम भले ही प्रयोग कया जाए, कन्तु यह सृष्ट नहीं है। अणु-स्कन्ध के स्वाभा वक परिणमन से पुद्‌गल की उत्प त्त होती है, कन्तु यह अकृत है। स्वभावतः अनादिनिधना है। अतः स्रष्टा अपे क्षत नहीं।
2. **2**. सृष्टि प्रयोजन कर्मफल भोग के सन्दर्भ में- कर्म स्वतः फलप्रदाता है और कर्त्ता जीव स्वयं भोक्ता है, इसमें कसी अन्य के हस्तक्षेप का अवकाश नहीं।
3. **3**. सृष्ट वस्तु के आधार पर कार्यत्व हेतु-' क्षत्यादिकं सकर्तृकं घटवत्' सयुक्तिक नहीं है, क्यों क जिस प्रकार इस जगत् का कर्त्ता इष्ट है, उसी प्रकार ईश्वर काा कोई कर्त्ता होना चाहिए। इस प्रकार अनवस्था दोष होगा।
4. **4**. यदि ईश्वर सृष्टि का स्वभावतः रू चवशात् या कर्मवशात् कर्त्ता है तो ईश्वर का स्वातन्त्र्य कहाँ? क्यों क उसे तो उक्त कारणो से चाहे-अनचाहे सृष्टि करनी ही होगी। तब तो वह स्वतन्त्र रहा ही नहीं।
5. **5**. जैनमत के संयमप्रधान तपोधर्म होने से ईश्वर के अस्तित्व पर वचार ही नहीं कया गया है अथवा उसकी आवश्यकता ही अनुभव नहीं की गयी, कन्तु जैन मत आध्यात्मिक (आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत समयसार) एवं दार्शनिक (उमास्वामी प्रणीत तत्वार्थसूत्र तथा आचार्य समन्तभद्र प्रणीत आप्तमीमांसा प्रभूति) ग्रन्थों में ईश्वर का निषेध भी उपलध नहीं है। अतः कहा जा सकता है क- ईश्वरपद ही वहाँ अपराभृष्ट है भले ही आज व्यवहार में जिनेश, जिनेश्वर, जिनभगवान् जैसे शदों का प्रयोग क्यों न कया जाता हो।

जैन मत में ईश्वर से मलती-जुलती अवस्था केवली की है इसे ही सर्वज्ञ कहा गया है। मोह का क्षय होने पर अन्तर्मुहूर्त तक क्षीणकषाय रहकर एक साथ ज्ञानावरण- दर्शनावरण तथा अन्तराय क्षय होने पर केवल ज्ञान प्राप्त होता है।**4** वह केवली ही बन्ध हेतुओं (मथ्यात्व आदि) के अभाव होने तथा तप आदि निर्जरा हेतुओं द्वारा पूर्वोपार्जित कर्मों का वप्रमोक्ष होकर मोक्ष को प्राप्त होता है।**5** ऐसा मुक्तात्मा ही सर्वज्ञ पद भाक् है।

जैन मत में ईश्वर की चर्चा न होने के सबन्ध में एक अन्य दृष्टिकोण भी ध्यातव्य है, जिसके अनुसार- ईश्वर वषयक अवधारणा का मूल स्रोत वेद है। जैन मत वेदोपनिषद् से पूर्व भारत में प्रच लत मुनिजनों के संयमात्मक तपोधर्म से उदित है।**6** अर्थात् उस समय ईश्वर की संकल्पना ही नहीं थी।

वैदिक दृष्टि– ईश्वर के सबन्ध में वैदिक दृष्टि सुस्पष्ट है। तदनुसार प्रकृति के परमाणुओं - (जो क जड़ हैं अतः अ क्रय हैं।) को अव्यक्तावस्था से व्यक्तावस्था में लाने वाली चेतन सत्ता ईश्वर पद वाच्य है। जिस प्रकार लौ कक घट-पट आदि कार्य पदार्थों का उपादान कारण मृ त्तका-तन्तु आदि सर्वस्वीकृत हैं इन कार्य पदार्थों का कर्त्ता-नि मत्त कारण कुभकार तन्तुवाय आदि हैं। उसी प्रकार इस कार्य जगत् का उपादान प्रकृति के परमाणु तथा नि मत्त कारण ईश्वर है।

दृश्यमान जगत्/संसार कार्य है। कसी भी कार्य/पदार्थ के सपन्न हेने में तीन कारण सभव हैं। सर्वप्रथम उसके लए उसका मूल, जिसके रूपान्तरित होने पर वह वस्तु बनती है। जिस प्रकार पा र्थव घर के लए मृ त्तका आदि। इसे उपादान कारण कहा जाता है। दूसरा कारण है, जिसके बनाने से कोई वस्तु बने और न बनाने से न बने तथा वह स्वयं रूपान्तरित न हो, अ पतु कसी अन्य पदार्थ-उपादान को कुछ बना देवे। जैसे कुभकार मृ त्तका को घट रूप में

रूपान्तरित कर देता है। अतः वह उसका नि मत्त होने से नि मत्त कारण कहा जाता है। तीसरा कारण है- साधारण, जिन साधनों का उपयोग पदार्थ निर्माण में सामान्येन अपे क्षत रहता है वह साधारण होने से साधारण कारण कहलाता है। उपादान के गुण पदार्थ में रहते हैं।

संसार में दो ही प्रकार के पदार्थ हैं- 1. चत्-चेतन। 2. अ चत्-अचेतन-जड़।7 अचेतन पदार्थ अ क्रय हैं, उनसे स्वतः कसी अन्य पदार्थ का निर्माण नहीं होता अथवा यों कहें क वह कसी पदार्थ का निर्माण नहीं कर सकते। जैसे- पृ थवी जड़ है, इससे बिना बनाये ईंट, घर आदि पदार्थ कभी नहीं बन सकते। जब कोई चेतन कर्त्ता इच्छापूर्वक प्रयत्न करता है तब उससे ईंट-घर आदि पदार्थ बना लेता है। इसी प्रकार कपास से तन्तु/वस्त्र आदि चेतन कर्त्ता के इच्छा-प्रयत्न से ही बनते हैं। जब यह छोटे से छोटे पदार्थ भी चेतन कर्त्ता के बिना नहीं बनते, तब इतने व्यवस्थित संसार/ब्रह्माण्ड का निर्माण बिना चेतन कर्त्ता के कस प्रकार सभव है। स्कन्ध के स्वतः परिणमन से संसार का निर्माण मानने वाले पा र्थव परमाणुओं (पुद्गल/स्कन्ध) से स्वतः घर का निर्माण क्यों नहीं मानते अथवा बिना कुभकार/ तन्तुवाय के स्वयं बनते हुए घट-पट क्यों नहीं दिखा देते? स्वयं के लए भवन व वस्त्र क्यों बनाते हैं? अर्थात् सृजन क्रया के लए चेतन कर्त्ता अपे क्षत है। संसार में जितनेाी चेतन कर्त्ता हैं, उनका ज्ञान व सामर्थ्य सी मत है। अतः इतना व्यवस्थित नियमबद्ध संसार8 जिसका कर्त्ता सी मत ज्ञान प्रयत्न वाला (मनुष्य) होना सभव नहीं। इसका कर्त्ता निश्चय ही सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होना चाहिए। उसी का नाम ईश्वर है। यदि ईश्वर के स्थान पर कोई अन्य संज्ञा रखें तब भी संज्ञा उक्त गुणयुक्त ही होगा। अन्य संज्ञा परी वही प्रश्न सभव है। अतः अन्वर्थ संज्ञा के प्रयोग से कोई हानि नहीं।

जगत् कारणता वषय में कार्यकारण सद्धान्त महत्त्वपूर्ण है, कन्तु जैन दर्शन में इस पर स्पष्ट वचार उपलध नहीं है। केवल जीव द्वारा कए कर्म जिनसे कार्मण वर्गणाएं बनती हैं और वह पुद्गल रूप में रहती हैं, क्यों क ''कर्म-पुद्गल द्रव्य का पर्याय है....अर्थात् कर्मरूप से परिणत कार्मण वर्गणाओं की सत्ता पौद्ग लक रूप में बनी रहती है9''। कार्य कारण सद्धान्त पर जैन की अपेक्षा बोद्धाचार्यों ने अ धक वचार कया है। कल्याण र क्षत (829 ई.) ने ईश्वर भंगकारिका में ईश्वरास्तित्व का निरसन कया है। इनके शष्य धर्मोत्तराचार्य (847 ई.) ने भी कल्याणर क्षत की परपरा का अपने ग्रन्थों (अपोह नाम सद् ध, क्षणभंग सद् ध) में पुष्ट कया है।

कार्य कारण सद्धान्त का खण्डन करने वालों ने अग्नि की कारणता के खण्डन (वह्विदाह का कारण है- अन्वय व्यतिरेक.... कन्तु अर ण सत्त्वेवह्निसत्ता..., म णसत्त्वेवह्निसन्ता...., तृणसत्त्वेवह्निसत्ता.... अन्वय तो बनेगा कन्तु व्यतिरेक नहीं। यथाअरण्यभावे वह्नयभावः...., मण्यभावे वह्नयभावः..., तृणभावे बह्नयभावः नहीं....) के द्वारा अन्य सभी प्रकार की कारणता का भी खण्डन कया है। वस्तुतः यह सद् हेतु न होकर हेत्वाभास है, क्यों क अग्नि दाह के प्रति स्वरूपतः कारण नहीं, अ पतु शक्ति मत्त्वेन कारण (शक्तिवाद मीमांसक मत है) है। अर्थात् कारणावच्छेदकता धर्म अर णत्व-म णत्व-तृणत्व न होकर वह्यनुकूलैकशक्तिमत्त्वे सति बह्निसत्ता-अन्वयः वहन्यनुकूलैक शक्तिमत्त्वाभावे सति बहन्यभावः- व्यतिरेकः। इस प्रकार हेत्वाभास का वारण हो जाता है।

इसी प्रकार अकस्मात् वाद (पूर्वपक्ष-'अनि मत्ततो भावोस ततः कण्टक तैक्ष्ण्यादिदर्शनात्' न्याय 4.1.22 प्रत्यायान-'अनि मत्तनि मत्तत्वान्नानि मत्ततः', 'नि मत्तानि मत्तयोरर्थान्तर भावादप्रतिषेधः' 23-24)। का प्रत्यायान न्याय के साथ ही उदयनार्च ने न्याय कुसुमाञ्ज ल 1.5 में कया है-

हेतुभूतिनिषेध न स्वानुपाय व चर्न च।

स्वभाववर्णना नैवमवचेर्नियत त्वतः।।

प्रस्तुतकारिका में उदयनाचार्य ने अकस्मात्-अकारणात् की पाँच व्यायाओं **1.** कारणं वना भवति **2.** कारण व्यतिरिक्ताद्भवति प्रथम के दो अर्थों-क– हेतु का निषेधक ख**.** उत्प त्त का निषेधक तथा द् वतीय के तीन अर्थों-वा- स्वस्माद् भवति घ. अलीकाद भवति और स्वभावाद् भवति- इन पाँचों का खण्डन एक ही- अवधेर्नियतत्वतः= 'नियतकालाव धककार्यदर्शनात्' द्वारा कया है। कार्यों की स्थिति नियतकाल तक ही दिखाई देती है। कार्य नित्य रहने वाला पदार्थ नहीं है। यह स्थिति तभी बन सकती है, जब कार्यों का कोई कारण माना जाए।

1. **1**. यदि उत्प त्त ही न होती हो या **2**. उसका कोई कारण न हो तो उन्हें नित्यपदार्थ के समान होना चाहिए। **3**. यदि स्वयं अपने से अथवा **4**. अलीक वन्ध्यापुत्र सदृश मथ्या पदार्थ से अथवा **5**. स्वभाव से कार्य (जगत्) की उत्प त्त मानी जाए तो कार्य के नाश का कोई कारण नहीं बनता। क्यों क जिन पदार्थों का कारण कोई भाव पदार्थ है। उस कारण के नाश होने से कार्य का नाश हो जाता है। परन्तु स्वस्मात्-अलीकात्-स्वभावात् (...स्वानुपारव्य व धर्न च। स्वभाववर्णनाा नैवम्...) से उत्पन्न होने की स्थिति में कसके नाश से कार्य का नाश माना जाएगा?

इस लए नाश का सभव न होने से इन तीनों पक्षों में भी कार्य कादा चत्क-अकस्मात्-क्यों है? इसका उपपादन नहीं कया जा सकता है। इस लए **1**. न कार्य के हेतु या कारण का निषेध कया जा सकता है और **2**. न उसकी उत्प त्त या भवन का खण्डन हो सकता है (हेतुभूति निषेधो न) इस लए अकस्मात् भवति यह कथन करना सर्वथा युक्ति वरुद्ध है।

सांयदर्शन में पूर्वपक्ष के रूप में उपन्यस्त 'ईश्वरा सद्धेः' 1.92 नास्तिकों का सर्वप्रमुख एवं प्रय प्रमाण है। जब क यह सूत्र पूर्व पक्ष है तथा उत्तर पक्ष सांय में ही द्रष्टव्य है, क उदयनाचार्य ने इस पूर्वपक्ष के समाधानार्थ आठ हेतु उपस्थित कए हैं-

कार्यायोजन-घृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः।

वाकयात् संया वशेषाच्च साध्यो व धवदव्ययः।।**10**

मह र्ष दयानन्द सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास में प्रश्नोत्तर के रूप तथा द्वादश समुल्लास में आस्तिक-नास्तिक के संवाद (प्रश्नोत्तर) के माध्यम से जगत् कारण (नि मत्त) ईश्वर के स्वरूप को सुव्यक्त कर दिया है। जिज्ञासु वहीं देख सकते हैं।

वेद में ईश्वर को 'अज एकपात्'11 'अकायमव्रणम्'12 सर्वज्ञ वेद भुवनानि13, वश्वा

साक्षी-‘अनश्नन्नन्यो अ भचाकशीति’14 सृष्टिकर्त्ता- ‘य इदं वश्वं भुवनं जजान’15 ‘हृदयगुहा में दर्शनयोग्य – वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा यत्’16 अमर्त्य-‘अमर्त्योमर्त्येना सयोनिः’17 आदि वशेषण वशे षत रूप में व र्णत कया गया है।

सक्षेप में कहा जा सकता है क जैन मतानुसार प्रत्यक्ष दृश्य जगत्/सृष्टि अनादिनिधना है। वहाँ न तो ईश्वर की स्थापना है और न ही निषेध । हाँ केवली पुरुष/तीर्थंकर अवश्य सर्वज्ञ कहे गए हैं। व्यावहारिक दृष्टि से वचारने पर स्पष्ट है क जगत्/ सृष्टि कार्य है। इसका मूल उपादान प्रकृति तथा नि मत्त कारण सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ ईश्वर है। नास्तिकों द्वारा कार्यकारण के निषेधक हेतु मात्र हेत्वाभास हैं। वेद में ईश्वर को सर्वज्ञ, न्यायकारी, सृष्टिकर्त्ता, अज, अमर्त्य आदि वशेषण वशे षत कहा गया है।

सन्दर्भः

1. तत्रैश्वर्य व शष्टः संसार धर्मैरीषदप्यस्पष्टः।

परो भगवान् परमेश्वरः सर्वज्ञः सकलजगद् वधाता।। न्यायसार आगम परिच्छेद

2. दोषावरणयोहीनिर्निश्शेषास्त्यतिशायनात्ः।।

क्व चघथा स्वहेतुयो बहिरन्तर्मलक्षयः।।

सूक्ष्मान्तरित दूरार्थाः प्रत्यक्षः कस्य चद्यथा।

अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरितिसर्वज्ञ संस्थितिः।। समन्तभद्र, आप्तमीमांसा, परिच्छेद 1,4-5

3. स्वोपात्तकर्मवशादात्मनो भवान्तरावाप्तिः संसारः
4. मोहक्षयाज्ज्ञान दर्शनावरणान्तराय क्षयाच्च केवलम्-तत्त्वार्थसूत्र 10.1
5. बन्ध हेत्वभाव निर्जरायां कृत्स्न कर्म वप्रमोक्षो मोक्षः – 10.2
6. भारतीय संस्कृतिकोश-सपादक – पं. महादेव शास्त्री जोशी, खण्ड-3 पृ.367
7. जीव-पुद्गल-दोनों भन्न- भन्न हैं-समयसार पूर्वरंग 23-25, टीकायाम् चेतन-जड़
8. आकृष्टि शक्तिस्तु महीयत्, स्वस्थं गुरुस्वा भमुख स्वशक्त्या।

आकृष्यते तत् पततीव भाति, समे समन्तात् वच पतत्ययं रवेः।।

-भास्कराचार्य, सद्धान्त शरोम ण 19-6 (समय-1171 व.)

9. प्रो. उदयचन्द्र जैन,-‘आप्त मीमांसा’ 1.4 की व्याया, पृ. 71
10. न्यायकुसुमाञ्ज ल 5.1
11. यजु. 34.53
12. वही 40.4
13. वही 32.10
14. ऋक् 1.164.20
15. अथर्व. 13.3.15

16. अथर्व. 2.1.1

17. ऋक् 1.64.6

18. राधे माँ : पाखण्ड की पाखण्ड के वरुद्ध लड़ाई: धर्मवीर

19. SEPTEMBER 10, 2015 LEAVE A COMMENT

20. एक बार एक चोर चोरी करता पकड़ा गया। उसे राजा के कर्मचारियों द्वारा पकड़ लया गया, राजा ने उसे दण्ड देकर जेल में भेज दिया। चोर ने वचार कया और एक उपाय सोचा, उसने राज्य के कर्मचारी से राजा तक सन्देश भजवाया क वह सोने की खेती करना जानता है, यदि राजा उ चत समझें तो वह खेती करके दिखा भी सकता है। राजा के मन में उत्सुकता जगी और उसने चोर द्वारा सोने की खेती देखने का निश्चय कया। चोर ने सोने के बीज मंगवाये, हल मंगवाया, एक खेत तैयार कया गया, राजा राज्य के अ धकारी और नागरिक बड़ी संया में खेती देखने के लये एकत्रित हो गये। चोर कसान के रूप में हल पकड़कर एक हाथ में सोने के बीज लेकर खड़ा हो गया और चन्ता की मुद्रा बनाते हुए राजा से बोला- राजन मेरे सामने एक समस्या है, यदि आप इसमें मेरी सहायता करें तो यह सोने की खेती सफल हो सकती है। राजा ने कहा- बताओ, क्या समस्या है? चोर ने हाथ जोड़कर राजा से कहा- सोने की खेती तभी सफल हो सकती है, जब कोई प वत्र व्यक्ति के द्वारा सोने के बीज खेत में बोये जावें। मैं तो चोरी करने के कारण अपराधी और पाप का भागी बन गया हूँ, अतः आपके नगर में ऐसे व्यक्ति बहुत होंगे, जिन्होंने कभी चोरी न की हो, आप ऐसे व्यक्ति को बुलवा लें और उससे ये सोने के बीज खेत में बुवा दें। राजा ने घोषणा कर दी- नगर का कोई व्यक्ति आ जाये, जिसने जीवन में कभी चोरी न की हो, उसके द्वारा ये बीज बोये जायेंगे। सब ही एक-दूसरे की ओर देखने लगे, सबको अपने द्वारा की गई चोरी याद आने लगी। नगरवा सयों में से जब कोई नहीं निकला तो चोर ने राजा से निवेदन कया- आपके कर्मचारियों में तो ऐसे लोग बहुत होंगे जिन्होंने चोरी नहीं की। राजा ने राज्य के कर्मचारियों को आदेश दिया- जिसने चोरी न की हो, वह आगे आये और बीज बोये। कोई आगे नहीं आया, तब चोर ने कहा- महाराज फर आप ही अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो प वत्र हैं, जिन्होंने कभी चोरी नहीं की, आप स्वयं ही यह सोने के बीज खेत में बोने का काम करें। राजा सोच में पड़ गया और अपने पछले जीवन पर वचार कया तो उसे स्मरण आया बचपन में माँ से छिपा कर लड्डू खाये थे, इस प्रकार राजा ने भी अपने जीवन में चोरी की, तब चोर ने कहा- महाराज! जब आपके राज्य में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जिसने चोरी नहीं की? फर मुझ ही को दण्डित क्यों कर रहे हैं? यही स्थिति राधे माँ की है। राधे माँ तो पाखण्ड कर ही रही है परन्तु इस पाखण्ड का वरोध करने वाले स्वयं सारे ही पाखण्डी हैं। यथार्थ तो यह है क कोई पाखण्ड का वरोध नहीं करना चाहता। जो व्यक्ति दूसरे के पाखण्ड से पी ड़त है, वह पहले व्यक्ति के पाखण्ड का वरोधी है। ऐसी स्थिति में कोई जीते और कोई हारे, पाखण्ड ही जीतता है और पाखण्ड ही हारता है। भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई सत्य, अहिंसा के प्रेमी थे, उनसे एक व्यक्ति ने एक प्रश्न कया- आप कहते हैं सच-झूठ की लड़ाई में सदा सत्य की वजय होती है परन्तु हमारे अनुभव में यह आता है, प्रायः सत्य और असत्य की लड़ाई में असत्य का पक्ष वजयी होता है।

तब मोरार जी भाई ने कहा- यह सत्य नहीं है, वजय तो सदा सत्य की ही होती है। तब मोरार जी भाई ने उस व्यक्ति से पूछा- क्या सत्य की बात करने वाला थोड़ा भी असत्य की सहायता नहीं लेता, तब उस व्यक्ति ने कहा- क्या हुआ कहीं थोड़ी भूल हो गई हो। तब मोरार जी देसाई ने उस व्यक्ति से कहा- भाई! तब यह लड़ाई छोटे झूठ और बड़े झूठ की है, इस परिस्थिति में बड़े झूठ का जीतना निश्चित है। आज राधे माँ पर आरोप है- हत्या, दहेज प्रताड़ना, अश्लील आचरण, आ र्थक शोषण आदि सभी तथाक थत धा र्मक लोग यही करते हैं। उन्हें ऐसा करने के लए धर्म और धा र्मक स्थानों की आड़ सबसे सरल उपाय है। ईसाई, मुसलमान, हिन्दू जितने भी धा र्मक संगठन है, ये सब धर्म का केवल अपने को बचाने के लये आश्रय लेते हैं, धा र्मक होने में कसी की आस्था नहीं है परन्तु धा र्मक दीखने का प्रयत्न सभी करते हैं, इस व्यवस्था के लये लोग धर्म को दोषी मानते हैं। उनके वचार से धर्म की आड़ न हो तो इन अपराधों से बचा जा सकता है। जो लोग आज ऐसा कहते हैं, जब पाखण्ड करने वाले लोगों की संया बड़ी हो जाती है, तब उनको आस्था की बात कह कर बचाने का प्रयास कया जाता है। आज धर्म के नाम पर हजारों सन्त, महन्त, महात्मा, गुरु, महाराज, भगवान, देवी बने घूम रहे हैं परन्तु उनका वरोध करने पर लोग, इसे धर्म का अनादर समझने लगते हैं, धा र्मक वद्वेष की संज्ञा देते हैं। इन धा र्मक सप्रदायों से सरकारायभीत होती है। चुनाव जीतने में पार्टियाँ उनसे हाथ जोड़कर वजयी बनाने का आशीर्वाद माँगती हैं। आसाराम जैसे लोग अपने भक्तों व पैसों के बल पर लबी लड़ाई धर्म के नाम पर ही लड़ते हैं। डेरा सच्चा सौदा जैसे मठों की ताकत सरकार को डराती है। सन्त रामपाल दास जैसे लोग कानून के शकञ्जे में कभी-कभी ही फंसते हैं। इस सब के होने पर भी यह प्र क्रया कभी रुकती नहीं, क्यों? संसार में समाज के सभी लोग कम अ धक पाखण्ड, अधा र्मक, अनैतिक होने पर भी ऐसे लोग धर्म बुरा है तो उसे छोड़ क्यों नहीं देते। इसके वपरीत वे अधर्म पाखण्ड को बुरा मानने वाले लोग धर्म को अपना क्यों नहीं लेते। दोहरा जीवन हमारी ववशता क्यों बन गया है। सामान्य रूप में धर्म के नाम पर अधर्म पाखण्ड होते देखकर मन में यह बात आना स्वाभा वक है, ऐसे धर्म नैतिकता, सच्चाई जैसी बातों का क्या लाभ है। पचास वर्ष पहले तक सायवादी लोग एक बात बहुत बार दोहराते थे, धर्म अफीम है, इसको व्यक्ति को अपने जीवन से निकाल देना चाहिए। समाज में धर्म का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। सायवादी देशों ने धा र्मक बातों, क्रयाकलापों को प्रतिबन्धित कर दिया था। उनका मानना था धर्म शोषण का आधार है, जो वस्तु शोषण का कारण हो उसे समाप्त कर देना चाहिए। उन्होंने ऐसा कया भी परन्तु वे धर्म को समाप्त तो नहीं कर सके। क्यों क शोषण का आधार वही वस्तु बन सकती है जो उसके लये आवश्यक है। कसी मनुष्य या प्राणी को जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं वह वस्तु उससे छीनकर, या न देकर उसे कोई भी ववश नहीं कर सकता। भोजन, वस्त्र, औषध, आवास, धन मनुष्य की आवश्यकता है, इनका प्रलोभन देकर या इन्हें छीन कर उस व्यक्ति को ववश कया जा सकता है, उसे आधीन बनाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि धर्म से कसी का शोषण हो रहा है तो यह भी स्वीकार करना होगा क धर्म मनुष्य जीवन के लये आवश्यक है। एक सामान्य मनुष्य की समस्या यह है क यदि धर्म नैतिकता, ईमानदारी, निष्ठा की बात न करे तो उसे कोई सुनना नहीं चाहता। व्यवहार में बेइमानी, अधर्म, अनैतिकता न करे तो जीवन में संकट आने लगता है। इस ऊहापोह में

उसका पूरा जीवन निकल जाता है, परन्तु वह कसी निर्णय तक नहीं पहुँच पाता। दोनों सत्य उसके समुख हैं, वह दोनों से अपने को पृथक् नहीं कर सकता। इसका उत्तर है परन्तु उस उत्तर तक पहुँचने से पहले ही समाप्त हो जाता है। संसार धर्म-अधर्म, अच्छे-बुरे, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य इसका मश्रण है। ये दोनों शद सापेक्ष है, यदि धर्म नहीं तो अधर्म क्या और अधर्म की सत्ता न हो तो धर्म क्या? झूठ न हो तो सच कसे कहा जाय और सच न हो झूठ का अर्थ क्या? संसार में दोनों बातें थीं, हैं और सदा ही रहेगी। ऋ ष दयानन्द लखते हैं धर्म-अधर्म का सर्वथा अभाव कभी नहीं होता। इनकी वृद् ध और ह्रास होता रहता है। धर्म की मात्रा बढ़ने से समाज में सुख बढ़ता है। अधर्म की वृद् ध से समाज में दुःख की मात्रा बढ़ती है। सामान्य जन के लए यह समझना कठिन है क अधर्म से, अनैतिकता से, पाखण्ड से असत्य से दुःख बढ़ता है। इसके वपरीत समाज में तो हर व्यक्ति अनुभव करता है अधर्म, पाखण्ड, झूठ से मनुष्य सपन्न, सुखी, समानित हो रहा है, धा र्मक व्यक्ति दुःखी, पी ड़त, शो षत कया जा रहा है। यह कथन इस कारण सत्य नहीं है, यदि ये बात सच होती तो हर बेइमान आदमी सुखी और सन्तुष्ट होता। इतना ही नहीं वह समाज में सबके द्वारा समानित भी कया जाता परन्तु ऐसा नहीं है। संसार के नियम, वधान अधर्म, अन्याय, पाखण्ड, झूठ को समाप्त करने के लये बने हैं। कसी को भी सत्य बोलने के लये दण्डित नहीं कया जाता, कोई व्यक्ति सत्य बोलता है, यह कहकर जेल में नहीं डाला जाता। सच्चे व्यक्ति को झूठे आरोपों में फंसाकर दण्डित कया जाता है या जेल भेजा जाता है। समाज में धर्म व सत्य का ही समान कया जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर भी हम देखें तो पाते हैं क हमें कोई झूठा, बेईमान, पाखण्डी कहे, यह कसी को भी स्वीकार नहीं होगा। यदि झूठ बोलना लाभदायक है तो झूठा कहलाना हानि कारक कैसे हो सकता है। कोई व्यक्ति दुराचरण में लप्त पाया जाता है परन्तु उसे कोई दुराचारी कहे, यह उसे सह्य नहीं हो सकता। ये दोनों परस्पर वरोधी बातें प्रत्येक मनुष्य के भीतर ही हैं। इन्हीं से प्रेरित होकर वह कभी अधर्म की ओर प्रेरित होता है और कभी धर्म की ओर। एक ही व्यक्ति ऐसा व्यवहार क्यों करता है, इसको समझना बहुत कठिन नहीं है। इसका उत्तर इस बात से मल जाता है, आप कस कार्य को कर के क्या प्राप्त करते हैं। अधर्म, असत्य, पाखण्ड, झूठ से हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं। पहली वस्तु है, इन कार्यों को करके मनुष्य धन सपन्नता वैभव पाने की इच्छा रखता है, ऐसा करके वह सांसारिक वस्तुओं को पा जाता है। इस परिणाम के बाद उसे इसी मार्ग पर चलते हुए सन्तुष्ट रहना चाहिए, परन्तु इन सब बातों के साथ-साथ सच्चाई, ईमानदारी, धा र्मकता को अपने पास देखना चाहता है। इसका इतना ही अ भप्राय है मनुष्य अधा र्मक या अनैतिक होकर सन्तुष्ट नहीं हो सकता। दूसरा पक्ष है धा र्मकता से क्या मलता है, इससे सन्तुष्टि, शान्ति, सुख का अनुभव मलता है। मनुष्य की समस्या है शान्ति-सन्तुष्टि से भोजन, वस्त्र, आवास, औषधी, शक्षा और दुनिया का जीवन उपयोगी सामान नहीं मलता। भले ही संसार के अ धकांश लोगों का वचार ऐसा ही हो परन्तु यह वचार सत्य नहीं है। यह बात समझना भी कठिन नहीं है, मनुष्य झूठ बोलकर पाखण्ड करके जो पाता है, वह जीवन के लये आवश्यक है। संसार में आवश्यकता का आधार शरीर है। संसार की सारी आवश्यकतायें शरीर से जुड़ी है। ईश्वर ने संसार में इतने पर्याप्त साधन साधन दिये हैं क प्रत्येक मनुष्य नहीं प्रत्येक प्राणी की आवश्यकता पूर्ण हो सकती है। मनुष्य तीन स्तरों पर जीता है-

प्रथम शरीर के स्तर पर, दूसरा मन के स्तर पर, तीसरा आत्मा के स्तर पर। आवश्यकता शरीर की होती है, इच्छा मन की होती है, तीसरा स्तर आत्मा है, जहाँ सुख, शान्ति, सन्तुष्टि का स्थान है। अब हम जो कर रहे हैं वह हम कसके लये कर रहे हैं। शरीर की आवश्यकतायें बहुत सी मत है, इसके लये हम जीवन भर का ग णत करके भोजन, वस्त्र, आवाास का संग्रह करें तो जो आज हमारे पास है, उससे भी कम की आवश्यकता है। दूसरा हमारा साधन है मन वह हमारा है, हमें उसकी भी चन्ता करनी चाहिए, उसकी आवश्यकता को हम इच्छा कहते हैं। वैसे भगवान ने मन को ऐसा बनाया है क शरीर की भांति इसे भोजन, पानी, वस्त्र, आवास की आवश्यकता नहीं होती। शरीर के साधनों से उसका पोषण हो जाता है परन्तु उसकी इच्छा की पूर्ति के लये शरीर को दण्ड भोगना पड़ता है। आपका पेट तो दो रसगुल्ले से भर जाता है परन्तु मन आपको छह खला देता है, इसका दण्ड शरीर को भोगना पड़ता है। शरीर की आवश्यकतायें तो बहुत थोड़े साधनों से पूर्ण की जा सकती है परन्तु संसार के सारे साधन भी एक मन की इच्छा को पूरा नहीं कर पाते। थोड़ी सी ईमानदारी आत्मा को बहुत सारा सुख दे जाती है परन्तु जीवन भर की बेईमानी मनुष्य को कभी तृप्ति देने में समर्थ नहीं होती। संसार में मनुष्य अधर्म करने से तभी रुक सकता है या तो संसार की सारी सप त्त उसे मल जाय या मन तृप्त हो जाये, ये दोनों बातें अधर्म से सभव नहीं है, इस लए मनुष्य कभी अधर्म करने से रुक नहीं पाता। वचारशील व्यक्ति के मन में यहाँ एक प्रश्न उठ सकता है, शरीर की आवश्यकता थोड़ी क्यों मन की इच्छा अ धक क्यों। इसका उत्तर है, दोनों मनुष्य की आत्मा के साधन है। शरीर से इस जीवन की यात्रा होती है, मन से ससांर से मुक्ति की यात्रा करनी है। जैसे एक तोप गाड़ी में गाड़ी की आवश्यकता कम है तोप की अ धक कन्तु तोप का मुख अपनी सेना पर तो नहीं कया जा सकता है। हमने यही कर रखा, अपने मन को मुक्ति की ओर न करके संसार की ओर कर लया है। तोप चलेगी तो गड्ढा होगा, फसेंगे हम ही, वही तो हो रहा है। मन आत्मा के साथ न होकर शरीर के साथ होता है, दुर्बल होता है, आत्मा के साथ होता है तो बलवान होता है। इस दुर्बलता में यह सदा भय और लोभ से ग्रस्त रहता है, परिणामस्वरूप अधर्म, अन्याय, अत्याचार, पाप में लप्त रहता है। धर्म, न्याय, सत्य, आत्मा की आवश्यकता है, शरीर के कारण अधर्म को नहीं छोड़ पाता, आत्मा के कारण सत्य से भाग नहीं सकता। सारभूत बात तो इतनी है स्वामी तो आत्मा है। आत्मा का आदेश तो अन्तिम है। हम संसार में कतना भी झूठ क्यों न बोले कहना पड़ेगा क यह सत्य है। न्यायालय में व्यक्ति साक्षी देता है, कतनी भी झूठी साक्षी दे परन्तु शपथ तो सत्य बोलने की ही खानी पड़ेगी। कोई कतना भी पाखण्ड, अधर्म, अन्याय, अत्याचार क्यों न करे, उसे न्याय और धर्म का ही नाम देना होगा। मनुष्य को वचार करने की बात पाखण्ड, झूठ, अधर्म, सब कुछ धर्म के नाम पर चढ़कर चल रहा है। यदि वह वास्तव में धर्म और सत्य हो तो उसमें कतना बल होगा। जब तक मनुष्य अपने मन को आत्मा से नहीं जोड़ेगा तब तक वह भय और प्रलोभन से मुक्त नहीं हो सकता। मनुष्य झूठ बोलकर पाखण्ड करके अपने को बुद् धमान समझता है परन्तु वास्त वकता तो यह है जो जितना दुर्बल होता है, वह उतना ही अ धक झूठा और बेईमान होता है। व्यक्ति असत्य का सहारा तभी लेता है जब वह दुर्बल होता है। मनुष्य का भय सत्य से, ज्ञान से दूर होता है, ज्ञान में जितना-जितना सत्य ज्ञान आता जायेगा, मनुष्य निर्भय होता जायेगा। तभी मनुष्य

पूर्ण धर्मात्मा और पाखण्ड रहित बन सकेगा। शरीर के स्तर पर जीने वाला दास होता है, मन के स्तर पर जीने वाला पाखण्डी होता है और आत्मा के स्तर पर जीने वाला धा मक होता है। मन के स्तर पर जीने वाले धर्म का उपयोग करते हैं परन्तु साधनों में, संसार में जीते हैं। वे धर्म-अधर्म जानते हुए भी दुर्योधन की तरह अधर्म करने के लये ववश हैं, दुर्योधन कहता है- धर्म क्या है? जानता हूँ, करने की इच्छा नहीं होती, अधर्म को भी पहचानता हूँ, दूर होने का मन नहीं करता, वह हम सबका भी यही हाल है, हम भी कह उठते हैं-

21. जाना म धर्मं न च मे प्रवृतिः जानायधर्मं न च मे निवृ त्तः।
22. केना प देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करो म।।
23. – धर्मवीर

24. क्या राजा दशरथ शकार के लए गये थे ? क्या राजा दशरथ ने हिरण के धोखे में श्रवण कुमार को मार दिया था ?

25. SEPTEMBER 8, 2015 19 COMMENTS

26. कुछ मासाहारी ,मुस्लिम ,राजपूत समुदाय (केवल मासाहारी),कामरेड वादी ,संस्कृति द्रोही लोग सनातन धर्म में मासाहार सद्ध करने के लए राजा दशरथ द्वारा शकार पर जाना ओर हिरण के धोखे में श्रवण को मारने का उलेख करते है |ले कन उनकी यह बात बाल्मिक रामायण के अनुरूप नही है वे लोग आधा सच दिखाते है ओर आधा छुपाते है |राज्य व्यवस्था व न्याय के निपुण आचार्य चाणक्य (ऋ ष वात्सायन) भी अपने सूत्रों में शकार का निषेध बताते हुए लखते है – " मृगयापरस्य धर्मार्थो वनश्यत " (चाणक्यसूत्रा ण ७२) अर्थात आखेट करने वाले ओर व्यवसनी के धर्म अर्थ नष्ट हो जाते है |जब इस काल के आचार्य निषेध करते है तब दशरथ के समय जब एक से बढ़ एक ऋ ष थे जेसे व शष्ठ ,गौतम ,श्रृंगी ,वामदेव , वश्वा मत्र तब कैसे दशरथ शकार कर सकते है |रामयाण के अनुसार दशरथ वन में शकार के लए नही बल्कि व्यायाम के लए गये थे जेसा क बाल्मिक रामायण के अयोध्याकाण्ड अष्टचत्वारिशः सर्गः में आया है –
तस्मिन्निति सूखे काले धनुष्मानिषुमान रथी |
व्यायामकृतसंकल्पः सरयूमन्वगान्नदीम ||८||
अथान्धकारेत्वश्रौष जले कुम्भस्य पूर्यतः |
अचक्षु वषये घोष वारणस्येवनर्दतः ||
अर्थ – उस अति सुखदायी काल में व्यायाम के संकल्प से धनुषबाण ले रथ पर चढ़कर संध्या समय सरयू नदी के तट पर आया ,वहा अँधेरे में नेत्रों की पहुच से परे जल से भरे जाते हुए घट का शब्द मैंने इस प्रकार सूना जेसे हाथी गर्ज रहा हो ||
यहा पता चलता है क वे व्यायाम हेतु गये थे ओर उन्हें जो शब्द सुनाई दिया वो हाथी की गर्जना समान सुनाई दिया न क हिरण के समान …
राजा दशरथ इसे हाथी समझ बेठे और उन्होंने इसे वश में करना चाहा |ये हम सभी जानते है क राजाओं की सेना में हाथी रखे जाते है उनहे प्रशीक्षण दिया जाता है ये हाथी जंगल से पकड़े जाते है और हाथी पकड़ने के लए उसे या तो कसी जगह फसाया जाता है या फर बेहोश कर लाया जाता है अतः हाथी को बेहोश कर वश में

करने के लए दशरथ ने तीर छोड़ा न क जीव हत्या या शकार के उद्देश्य से |
हाथी को सेना में रखने का उद्देश्य चाणक्य अपने अर्थशास्त्र में बताते है –
" हस्तिप्रधानो हि वजयो राज्ञाम |परानीकव्यूहदुर्गस्कन्धावारप्रमर्दना
ह्मातिप्रमाणशरीरा: प्राणहरकर्माण हस्तिन इति ‖६ ‖(अर्थशास्त्र भू मच्छिद्र वधानम)
अर्थात हस्ति वज्ञान के पं डतो के निर्देशानुसार श्रेष्ठ लक्षणों वाले हा थयों को पकड़ते रहने का अ भयान सतत चलाना चाहिए ,क्यूं क श्रेष्ठ हाथी ही राजा की वजय के प्रधान और निश्चित साधन है | वशाल और स्थूलकाय हाथी शत्रु सेना को , शत्रुसेना की व्यूह रचना को दुर्ग श वरों को कुचलने तथा शत्रुओ के प्राण लेने में समर्थ होते है और इससे राजा की वजय निश्चित होती है |
राजा दशरथ ने भी हाथी को प्राप्त करने के लए बाण छोड़ा था न क मारने के लए इसकी पुष्टि भी रामयाण के अयोध्याकाण्ड अष्टचत्वारिश सर्ग से होती है –
ततोअहम शरमुध्दत्य दीप्तमाशी वषोपमम |
शब्द प्रति गजप्रेप्सुर भलक्ष्यमपातयम ‖
तत्र वागुष स व्यक्ता प्रादुरासीव्दनौकस: |
हां हेति पततस्तोये वाणाद्व्य थतमर्मण:‖
राजा दशरथ कहते है क तब मैंने हाथी को प्राप्त करने की इच्छा से तीक्ष्ण बाण निकालकर शब्द को लक्ष्य में रखकर फैंका ,और जहा बाण गरा वहा से दु खत मर्म वाले ,पानी में गरते हुए मनुष्य की हा ! हाय ! ऐसी वाणी निकली ‖
तो पाठक गण स्वयम ही देखे राजा दशरथ हाथी को वश में प्राप्त करना चाहते थे ले कन ज्ञान न होने से तीर श्रवण को लग गया |ओर सम्भवत तीर ऐसा होगा (या तीर में लगा कोई वष) जिससे हाथी आदि मात्र बेहोश होता है ले कन मनुष्य उसे सह नही पाता और प्राण त्याग देता है इस लए श्रवण उस तीर के घात को सह नही सका और प्राण त्याग दिए |
अत: शकार और मासाहार के प्रकरण में दशरथ का उदाहरण देना केवल एक धोखा मात्र है |

27. योगेश्वर श्री कृष्ण और १६ कलाएं तथा जन्माष्टमी

28. SEPTEMBER 5, 2015 2 COMMENTS
29. नमस्ते मत्रो,
30. ५००० वर्ष और उससे भी पूर्व अनेको मनुष्य उत्पन्न हुए मगर इतिहास में याद केवल कुछ ही लोगो को कया जाता है, इतिहास में केवल उनके लए जगह होती है जो कुछ अनूठा करते हैं, कुछ लोग अपने द्वारा की गयी बुराई से अपना नाम इतिहास में दर्ज करवाते हैं, और कुछ अपने सदगुणो, सुलक्षणों और महान कर्तव्यों से अपना नाम अमर कर जाते हैं, क्यों क आज कृष्ण जैसा सुलक्षण नाम अपने पुत्र का तो कोई भी रखना चाहेगा, मगर रावण, कंस आदि दुर्गु णयो के नाम कोई भी अपने पुत्र का न रखना चाहेगा, इसी कारण कृष्ण अमर हैं, राम अमर हैं, हनुमान अमर हैं, मगर रावण, कंस आदि मृत हैं।
31. आर्यावर्त में उत्पन्न हुए अनेको ऐतिहा सक महापुरषो में से एक महापुरुष, ज्ञानी, वेदवेत्ता योगेश्वर श्री कृष्ण का आज ही के दिन जन्म हुआ था, इस दिन को आज

जन्माष्टमी कहते हैं, क्यों क आज भाद्रपद मास की अष्टमी ति थ है, इसी दिन कृष्ण महाराज का जन्म हुआ था। इस लए इस दिन को जन्माष्टमी के नाम से जाना जाता है।

32. हमारे बहुत से बंधू कृष्ण महाराज को पूर्ण अवतारी पुरुष कहते हैं। यहाँ हम अवतार का अर्थ संक्षेप में बताना चाहेंगे, "अवतार का शाब्दिक अर्थ "जो ऊपर से नीचे आया" और "पूर्ण" "पुरुष" इस हेतु कहते हैं पूर्ण कहते हैं जो अधूरा न रहा, और पुरुष शब्द के दो अर्थ हैं :
33. 1. पुरुष शब्द का अर्थ सामान्य जीव को कहते हैं जिसे आत्मा से सम्बोधन करते हैं।
34. 2. पुरुष शब्द का प्रयोग परमात्मा के लए भी कया जाता है जिसने इस सम्पूर्ण ब्राह्मण की रचना, धारण और प्रलय आदि का पुरषार्थ कया और करता है।
35. हम सभी जीव जो इस धरती पर व अन्य लोको पर वचरण कर रहे वो सभी अवतारी हैं क्यों क हम सब ऊपर से ही नीचे आये क्यों क मरने के बाद हमारी आत्मा यमलोक (यम वायु का नाम है अतः वायुलोक यानी अंतरिक्ष में जाती है) तब नीचे आती है। और हम सभी अपनी आत्मा के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाते अर्थात मोक्ष को ग्रहण करने योग्य गुणों को धारण नहीं कर पाते और कुछ ही गुणों को आत्मसात कर पाते हैं। इस लए हम आवागमन के चक्र में फंसे रह जाते हैं। अतः इसी कारण हम अवतार होते हुए भी मृतप्राय रह जाते हैं अमर नहीं हो पाते।
36. अब हम आते हैं कृष्ण को १६ कलाओ से युक्त पूर्ण अवतारी क्यों कहते हैं यहाँ हमारे कुछ पौरा णक बंधू पहले इस तथ्य को भली भांति समझ लेवे की परमात्मा जो पुरुष है वह अनेको कलाओ और वद्याओ से पूर्ण है, जब क जीव पुरुष अल्पज्ञ होने से कुछ कलाओ में निपुण हो पाता है, यही एक बड़ा कारण है की जीव ईश्वर नहीं हो सकता। क्यों क जीव का दायित्व है की ईश्वर के गुणों को आत्मसात करे इसी लए कृष्ण महाराज ने योग और ध्यान माध्यम से ईश्वर के इन्ही १६ गुणों (कलाओ) को प्राप्त कया था इस कारण उन्हें १६ कला पूर्ण अवतारी पुरुष कहते हैं।
37. अब आप सोचेंगे ये १६ कलाएं कौन सी हैं, तो आपको बताते हैं, दे खये :
38. इच्छा, प्राण, श्रद्धा, पृथ्वी, जल अग्नि, वायु, आकाश, दशो इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, लोक और नाम इन सोलह के स्वामी को प्रजापति कहते हैं।
39. ये प्रश्नोपनिषद में प्रतिपादित है।
40. (शत० 4.4.5.6)
41. योगेश्वर कृष्ण ने योग और वद्या के माध्यम से इन १६ कलाओ को आत्मसात कर धर्म और देश की रक्षा की, आर्यवर्त के निवा सयों के लए वे महापुरष बन गए। ठीक वैसे ही जैसे उनसे पहले के अनेको महापुरषो ने देश धर्म और मनुष्य जाति की रक्षा की थी। क्यों क कृष्ण महाराज ने अपने उत्तम कर्मो और योग माध्यम से इन सभी १६ गुणों को आत्मसात कर आत्मा के उद्देश्य को पूर्ण कया इस ल लये उन्हें पूर्ण अवतारी पुरुष की संज्ञा अनेको वद्वानो ने दी, ले कन कालांतर में पौर णको ने इन्हे ईश्वर की ही संज्ञा दे दी जो बहुत ही
42. अब यहाँ हम सद्ध करते हैं की ईश्वर और जीव अलग अलग हैं दे खये :
43. यस्मान्न जातः परोअन्योास्ति या ववेश भुवनानि वश्वा।
    प्रजापति प्रजया संरराणस्त्रिणी ज्योतीं ष सचते स षोडशी।
44. (यजुर्वेद अध्याय ८ मन्त्र ३६)

45. अर्थ : गृहाश्रम की इच्छा करने वाले पुरुषो को चाहिए की जो सर्वत्र व्याप्त, सब लोको का रचने और धारण करने वाला, दाता, न्यायकारी, सनातन अर्थात सदा ऐसा ही बना रहता है, सत, अ वनाशी, चैतन्य और आनंदमय, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव और सब पदार्थो से अलग रहने वाला, छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, सर्वशक्तिमान परमात्मा जिससे कोई भी पदार्थ उत्तम व जिसके सामान नहीं है, उसकी उपासना करे।
46. यहाँ मन्त्र में "सचते स षोडशी" पुरुष के लए आया है, पुरुष जीव और परमात्मा दोनों को ही सम्बोधन है और दोनों में ही १६ गुणों को धारण करने की शक्ति है, मगर ईश्वर में ये १६ गुण के साथ अनेको वद्याए यथा (त्री ण) तीन (ज्योतिषी) ज्योति अर्थात सूर्य, बिजली और अग्नि को (सचते) सब पदार्थो में स्था पत करता है। ये जीव पुरुष का कार्य कभी नहीं हो सकता न ही कभी जीव पुरुष कर सकता क्यों क जीव अल्पज्ञ और एकदेशी है जब क ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है, इसी हेतु से जीव पुरुष को जो गृहाश्रम की इच्छा करने वाला हो, ईश्वर ने १६ कलाओ को आत्मसात कर मोक्ष प्राप्ति के लए वेद ज्ञान से प्रेरणा दी है, ता क वो जीव पुरुष उस परम पुरुष की उपासना करता रहे।
47. ठीक वैसे ही जैसे १६ कला पूर्ण अवतारी पुरुष योगेश्वर कृष्ण उस सत, अ वनाशी, चैतन्य और आनंदमय, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव और सब पदार्थो से अलग रहने वाला, छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, सर्वशक्तिमान, परम पुरुष परमात्मा की उपासना करते रहे।
48. आइये हम भी इन गुणों को अपना कर कृष्ण के सामान अपने को अमर कर जाए। हम १६ कला न भी अपना पाये तो भी वेद पाठी होकर कुछ उन्नति कर पाये।
49. आइये सत्य को अपनाये और असत्य त्याग कर कृष्ण के जन्मदिवस जन्माष्टमी का त्यौहार मनाये। आप सभी मत्रो, बंधुओ को योगेश्वर कृष्ण के जन्मदिवस जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाये।
50. लौटिए वेदो की और।
51. नमस्ते।
52. नोट : अब स्वयं सो चये जो पुरुष (जीव) इन १६ कलाओ (गुणों) को योग माध्यम से प्राप्त कया क्या वो :
53. कभी रास रचा सकता है ?
54. क्या कभी गो पकाओं के साथ अश्लील कार्य कर सकता है ?
55. क्या कभी कुब्जा के साथ समागम कर सकता है ?
56. क्या अपनी पत्नी के अतिरिक्त कसी अन्य महिला से सम्बन्ध बना सकता है ?
57. क्या कभी अश्लीलता पूर्ण कार्य कर सकता है ?
58. नहीं, कभी नहीं, क्यों क जो इन कलाओ (गुणों) को आत्मसात कर ले तभी वो पूर्ण कहलायेगा और जो इन सोलह कलाओ को अपनाने के बाद भी ऐसे कार्य करे तो उसे निर्लज्ज पुरुष कहते हैं, पूर्ण अवतारी पुरुष नहीं।
59. इस लए कृष्ण का सच्चा स्वरुप देखे और अपने बच्चो को कृष्ण के जैसा वैदिक धर्मी बनाये।
60. योगेश्वर महाराज कृष्ण की जय।
61. धन्यवाद

62. वेशों का ईद मुबारक : प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

63. SEPTEMBER 4, 2015 1 COMMENT
64. माननीय सपादक जी, परोपकारी,
65. सप्रेम नमस्ते।
66.
67. वेशपं थयों ने सार्वदे शक सभा के भवन के बाहर 'ईद मुबारक' के बैनर लगाकर यह प्रमा णत कर दिया है क उनके मन में क्या है। इनके मन में कुछ भी हो सकता है परन्तु आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रति लेशमात्र भी कोई भावना नहीं।
68. जब नेपाल में सायवादी प्रधानमन्त्री सत्तासीन हुआ तो श्री अग्निवेश ने ब्र. नन्द कशोर जी से कहा, ''लो नेपाल में मेरा राज हो गया।''
69. सत्यार्थप्रकाश के वरुद्ध अमृतसर में जो कुछ कहा, उस समय के दैनिक पत्रों में छपा मलता है।
70. समलैङ् गकता का समर्थन, बिग बॉस में जाकर साधुवेश की शोभा बढ़ाने वाले ने अब याकूब की रक्षा के लए झण्डा उठा लया है।
71. जिन लोगों ने कभी अग्निवेश के अपमान पर रोष प्रकट करते हुए दिल्ली में कभी जलूस निकाला था, उन्हें अब अग्निवेश के नेतृत्व में बकर ईद (गो-मांस वाली ईद) पर नारे लगाते हुए जलूस निकालना चाहिये।
72. पं. लेखराम, वीर राजपाल, वीर नाथूराम, हुतात्मा श्यामलाल और वीर धर्मप्रकाश वेदप्रकाश के ब लदान पर्व पर तो इन्होंने कभी बैनर लगाया नहीं।
73. ये लोग ईद, रोजे व क्रस मस मनाने में हाजियों से भी आगे-आगे रहेंगे। इस पंथ का जन्म ही आर्य जाति के वनाश के प्रयोजन से हुआ- यह अब सर्व वदित है।
74. इन्होंने तो कभी अपने दीक्षा-गुरु स्वामी ब्रह्ममुनि जी का भी कभी नाम नहीं लया।
75. – राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर, पंजाब

76. 'मृतक श्राद्ध वषयक भ्रान्तियां: वचार और समाधान' -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

77. SEPTEMBER 1, 2015 LEAVE A COMMENT
78. हिन्दू समाज आज कल अन्ध वश्वासों का पर्याय बन गया है। श्राद्ध शब्द को पढ़कर धर्म-कर्म में रू च न रखने वाला एक अल्प ज्ञानी सामान्य व्यक्ति भी समझता है क श्राद्ध अवश्य ही श्रद्धा से सम्बन्ध रखता है। जिस प्रकार से देव से देवता शब्द बनता है उसी प्रकार से श्रद्धा से श्राद्ध बनता है। श्रद्धा उन पारिवारिक जनों व वद्वानों के प्रति होती है जिनसे हमें कुछ लाभ हुआ होता है। हमारे माता- पता व वृद्ध पारिवारिक लोग व आचार्यगण हमारी श्रद्धा के मुख्य रूप से पात्र होते हैं। माता- पता, दादी-दादा, प्र पतामही-प्र पतामह आदि के अतिरिक्त चाचा, ताऊ, बुआ, फूफा, मामा व मौसी आदि सभी संबं धयों के प्रति हमारी श्रद्धा व आदर का भाव होता है। अतः श्रद्धा पूर्वक उन जी वत अपने से अ धक आयु वालों को अपने सद्व्यवहार व सेवा से सन्तुष्ट रखना ही श्राद्ध व तर्पण हो सकता है। यदि हम माता- पता, अन्य वृद्धों व आचार्यों, सभी को भोजन, वस्त्र व उनकी आवश्यकतानुसार धन आदि उन्हें देते हैं और वह हमारी इस सेवा व दान से प्रसन्न होते हैं तो हमारा यह कृत्य श्राद्ध व तर्पण में आता है। श्राद्ध है श्रद्धापूर्वक सेवा और तर्पण अपने आचरण व सेवा से उन्हें सन्तुष्ट करना। माता- पता को सेवा की आवश्यकता तभी तक होती है जब तक की वह जी वत होते हैं। मरने के बाद अन्त्येष्टि द्वारा उनका शरीर भस्म कर दिया

जाता है। उनका मुख, उदर व सभी शरीरांग जल कर नष्ट हो जाते हैं और कुछ मुट्ठी राख ही बचती है। अब चेतन तत्व हमारी व अन्यों की अनादि, अजर, अमर, आत्मा क्यों क शरीर से पृथक हो जाती है अतः उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती। अब तो परलोक व परजन्म में उनका सहायक ईश्वर तथा उनके कर्म अर्थात् प्रारब्ध ही होते हैं। हम कुछ भी कर लें, हमारे कुछ भी करने से हमारे कसी मृतक सगे सम्बन्धी माता- पता आदि को कोई, कसी प्रकार का व कं चत लाभ नहीं हो सकता। ईश्वर ने मनुष्य को बुद् ध इस लए नहीं दी की वह कसी भी कार्य को इस लए करे क उसके पूर्वज व अन्य लोग इस कार्य को करते चले आ रहे हैं अ पतु इस लए दी है क वह प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का वचार कर करे। यदि श्राद्ध को देखे तो इससे हमारे ब्राह्मण वर्ग के पुरोहितों को वशेष आ थक व भौतिक लाभ होता है। वह अच्छा भोजन करते हैं और उन्हें कुछ वस्तु भी दान स्वरूप भेंट करनी होती हैं। कसी कार्य आदि से जिस व्यक्ति को कोई लाभ होता है तो उसका वह संस्कार बन जाता है। उसे कतना ही कोई मना करे, वह उस कार्य को छोड़ता नहीं है। रिश्वत, कामचोरी, शराब, मांसाहार जैसी बुरी आदतों की ही तरह हर कार्य जिससे कसी को कोई लाभ होता हो, उसे वह छोड़ नहीं पाता। अतः मनुष्य को स्वयं ही सत्य व असत्य का वचार करना चाहिये और असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये। इस कारण क संसार में आपसे अ धक आपका कोई हितैषी नहीं है। और तो अपना प्रयायेजन सद्ध करते हैं। अपना हित व अहित देखना और बुद् ध पूर्वक निर्णय करना आपका ही काम है, यह बात गांठ बांध लेनी चाहिये। यही मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य व उद्देश्य है।

79.

80. श्राद्ध में जो भोजन ब्राह्मणों को कराया जाता है उससे उनकी क्षुधा की निवृति वा पेट भरता है। हमारे मृतक पूर्वजों का न तो हमें पता है और न हि हमारे श्राद्ध खाने वाले व बड़े से बड़े कसी वद्वान को क वह आत्मायें जिनका श्राद्ध हो रहा है, वह कहां हैं? मृत्यु के बाद मृतक की आत्माओं की ओर से अपने कसी सगे सम्बन्धी को कभी भी अपना न तो कोई समाचार बताया जाता है और न हमारे हाल चाल ही पूछे जाते हैं। मरने के बाद मनुष्य सब कुछ भूल जाता है। परमात्मा की प्रेरणा से वह अपने कर्मों के अनुसार नई योनि में जन्म लेता है। मनुष्य जन्म लेने वाला कोई बच्चा यह नहीं बताता क मैं पहले मरा हूं, वहां रहता था, अमुक नाम के लोग मेरे पुत्र-पुत्री थे, आदि आदि। कारण क वह सब कुछ भूल चुका है। मनुष्य जन्म लेने में जीवात्मा को मात्र न्यूनतम गर्भावास में 10 महीनों का समय लगता है। कसी कसी मामले में कुछ अ धक भी हो सकता है। अब वचार कीजिए क इस नये उत्पन्न शशु का इसके पूर्व जन्म के पारिवारिक जनों ने श्राद्ध कया होगा तो इसको तो कभी भोजन मलता उसे स्वयं व उसके परिवार जनों को अनुभव नहीं हुआ। यह तो जन्म लेने के बाद प्रातः सायं प्रतिदिन माता से भोजन पाता व करता है। यदि श्राद्ध के दिन इसके पूर्व जन्म की कोई सन्तान इसका श्राद्ध करे तो एक समय के भोजन की इसकी निवृ त्त होकर अनुभव भी होना चाहिये। ऐसा तो कभी कसी को मलता ही नहीं है। यदि कोई यह मानता है क श्राद्ध करने से पूर्वजों को भोजन पहुंचता है तो उन्हें प्रातःसायं दोनों समय पूरे वर्ष भर ही श्राद्ध करना चाहिये जैसे क जी वत माता- पता, दादी दादा व परदादी व परदादा को दिन में दो बार भोजन कराया जाता है। हर दृष्टि से मृतक श्राद्ध करना, तर्क, युक्ति व वेदादि शास्त्र वरूद्ध है। आर्य समाज के वद्वानों ने इस वषय का पर्याप्त साहित्य सृजित कया है। इनमें से एक

ग्रन्थ ''श्राद्ध निर्णय'' वेदों के शीर्ष वद्वान पं. शवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ जी का रचा हुआ है। उसमें श्राद्ध के सभी पहलुओं पर वस्तार से वचार कर निर्णय कया गया है क मृतकों का श्राद्ध अन्ध वश्वास के अलावा कुछ नहीं है। यह भी बता दें क हमारे यह पण्डित जी व हम भी पहले पौरा णक परिवारों के रहे हैं जहां मृतक श्राद्ध होता था और हमारे सम्बन्धी जो अज्ञान में फंसे हुए हैं, वह अब भी मृतक श्राद्ध करते हैं। अभी तक सनातनी कहे जाने वाले हमारे बन्धुओं ने कोई ऐसा प्रमाण व युक्ति नहीं दी है जिससे श्राद्ध को युक्ति व तर्क से सद्ध कया जा सके। अतः बुद् ध से वचार कर हमें केवल अपने जी वत माता- पता व परिवार के सभी वृद्ध जनों जिन्हें हमारा भोजन, वस्त्र, ओष ध वा च कत्सा आदि के रूप में कसी भी प्रकार से सेवा की आवश्यकता है, हमें कर्तव्य पूर्वक प्रतिदिन प्रातः व सायं उनकी यथो चत सेवा करनी चाहिये। अपनों की तो सेवा सभी को करनी है, इसके साथ हि सभी ज्ञानी व वृद्ध लोगों का भी सेवा सत्कार यथा सामर्थ्य सभी को करना चाहिये। यही मनुष्य धर्म व वैदिक धर्म है। यदि हम बुद् धपूर्वक कार्य करेंगे और अन्ध वश्वासों का त्याग करेंगे तो हम वैदिक काल के अपने स्व र्णम वैभव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। हम भ वष्य में पराधीनता व निजी व अपनी जाति व समाज के लोगों के अपमान से बच सकते हैं जैसा क मध्यकाल, मुस्लिम व ब्रटिश शासन आदि में हमारे पूवजों को झेलना पड़ा है। यदि ऐसा नहीं करेंगे और बीती बातों से सबक व शक्षा नहीं लेंगे तो उन घटनाओं की पुनरावृ त्त हो सकती है। ठोकर लगने पर जो न सम्भले उसका जो हश्र होता है, वही हश्र हमारा पुनः हो सकता है।

81.

82. एक अन्य दृष्टि से भी श्राद्ध पर वचार करते हैं। हम इस समय 63 वर्ष के हैं। जब 63 वर्ष पूर्व पूर्व जन्म लेकर पूर्व जन्म की मृत्यु के बाद हम इस जीवन में आये तो सम्भव है क हमारा 30 से 35 वर्ष का कोई पुत्र रहा होगा जो अब लगभग 93 वर्ष का होगा। उसका पुत्र भी लगभग 63 का और उस 63 वर्षीय का पुत्र लगभग 33 वर्ष का हो सकता है। इस प्रकार से पूर्व जन्म के हमारे पोते और पड़पोतों का जी वत होना सम्भव है। हमें अपने वगत 63 वर्षों के जीवन में इन सभी वंशजों से कभी श्राद्ध नाम का भोजन मला हो, ऐसा अनुभव नहीं हुआ और न हि उससे होने वाली तृप्ति अनुभव हुई। संसार में सम्प्रति 7 अरब लोग हैं, शायद इसका एक भी गवाह नहीं मलेगा जो दावा करे क कभी उसके पूर्व जन्म के वशंजों के श्राद्ध से उसकी क्षुधा व अन्य कोई समस्या हल हुई हो। अतः यह मृतक श्राद्ध अन्ध वश्वास ही सद्ध होता है। महाभारतकालीन व पूर्व के साहित्य मुख्यतः वेद आदि में मृतक श्राद्ध आदि का कहीं कोई वर्णन नहीं है। अतः मृतक श्राद्ध अ सद्ध है और अन्ध वश्वास से अ धक कुछ नहीं है। यह भी कहना है क हमारे कुछ ग्रन्थों में मध्यकाल में कुछ स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप कर दिये थे। यदि कहीं कोई उल्लेख मृतक श्राद्ध के पक्ष में है तो उस पर युंक्ति पूर्वक वचार होना चाहिये। हर वद्वान, पुस्तक व ग्रन्थ लेखक को अपनी मान्यता के सम्बन्ध में तर्क व प्रमाण देने चाहिये। यदि कोरा प्रवचन हो तो उसे बुद् ध, युक्ति व तर्क हीन होने पर स्वीकार नहीं करना चाहिये। हम आशा करते हैं क पाठक हमारे वचारों से सहमत होंगे। हम निवेदन करते हैं क मह र्ष दयानन्द, ईश्वर व आप्त वद्वानों व ऋ ष-मुनियों द्वारा प्रदत्त वैदिक साहित्य को पढ़कर अपने जी वत पतरों का श्रद्धापूवक सेवा सत्कार नित्य प्रति कर उनकी आत्माओं को

सन्तुष्ट व प्रसन्न करें और ऐसा करके लौ कक और पारलौ कक उन्नति करें, यही वेद, शास्त्र और ऋ ष दयानन्द सम्मत है।

83. –मनमोहन कुमार आर्य
84. पताः **196** चुक्खूवाला**-2**
85. देहरादून**-248001**
86. फोनः**09412985121**

87. सच्चे तीर्थ माता- पता-आचार्य व आप्त वद्वानों के सदुपदेश आदि हैं।' -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

88. SEPTEMBER 1, 2015 LEAVE A COMMENT

89. आजकल कुछ स्थानों अथवा नदी व सरोवरों को तीर्थ कहा जाता है। कसी से कोई पूछे क इन तीर्थ स्थानों से इतर देश के अन्य सभी स्थान सच्चे तीर्थ क्यों नहीं है, तो इसका उत्तर शायद कोई नहीं दे सकेगा। तीर्थ शब्द संस्कृत भाषा का है और इसका प्रयोग वेद व वैदिक साहित्य में मलता है। समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष निकलता है, उसके अनुसार तीर्थ में क्या भाव निहित है, यह जानना आवश्यक है। तीर्थ शब्द का अर्थ है जिससे मनुष्य दुःखसागर से पार उतरता है, वह तीर्थ होता है। वेदों में सत्याभाषण, वद्या, सत्संग, पांच यम अहिंसा–सत्य–अस्तेय–ब्रह्मचर्य–अपरिग्रह आदि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ तथा वद्यादानादि शुभ कर्मों को दुःखसागर से निवृ त कराने वाले बताया गया है। यही सब वस्तुतः तीर्थ हैं। इसके वपरीत दुःखसागर में डूबाने वाले अशुभ कर्म हैं जिनमें मुख्यतः असत्याभाषण, अ वद्या, कुसंग, पांच यमों के वपरीत आचरण व व्यवहार करना, योगाभ्यास न करना, निठल्ला होना व तपस्वी न होना एवं वद्याहीनता आदि। वचार करने पर ज्ञात होता है क आजकल के जल-स्थल आदि तीर्थ इन तीर्थ वपरीत गुण-कर्म-स्वभाव को चरितार्थ करते हैं। जलस्थलादि कोई भी स्थान तीर्थ नहीं है क्यों क कसी स्थान या नदी, सरोवर व जल के समीप जाने व स्नानादि करने से मनुष्य के दुःख दारिद्रय दूर नहीं होते अर्थात् इन तीर्थों से कोई दुःखों से पार नही होता। इससे तो धन व जीवन के सबसे मूल्यवान समय अर्थात् जीवनकाल का अपव्यय होने से हानि ही हानि व दुःखों में वृद् ध होती है। इन बातों को केवल ववेकशील मनुष्य ही जान सकते हैं, अज्ञानी व अ वद्याग्रस्त बन्धु नहीं जान सकते और इसी कारण से अज्ञानी लोगों को भ्रम में डालकर कुछ लोग अपना मनोरथ सद् ध करते हैं जो क कालान्तर में उनके लए भी दुःखदायी ही होता है।
90.
91. आजकल कुछ वशेष मन्दिरों और नदियों में स्नान आदि को तीर्थ की संज्ञा दी जाती है। यह वचार व भावना वेद और दर्शन, उपनिषद, शुद् ध मनुस्मृति आदि शास्त्रों के वचारों से वरूद् ध होने से असत्य, भ्रामक व अन्ध वश्वास की श्रेणी में ही मानी जा सकती है। जिन वेद आदि शास्त्रों में ईश्वर, जीव, प्रकृति तथा जीवों के परमार्थ व सांसारिक सभी कर्तव्यों का युक्ति व तर्क संगत ज्ञान है, उनमें कसी स्थान व नदी में स्नान आदि को तीर्थ न बताना सकारण ही है क्यों क कोई स्थान व नदियों का जल पूजा व स्नानादि के रूप में तीर्थ होता ही नहीं है। मह ष दयानन्द धा र्मक जगत में सत्य के अन्वेषी थे, अतः उन्होंने अपने समय में उपलब्ध सभी धा र्मक ग्रन्थों को पढ़ा

था तथा ग्रन्थों में निहित वचारों पर युक्ति व तर्क को सामने रखकर चन्तन भी कया था। उन्होंने अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी वरजानन्द सरस्वती, जो क वेदों सहित आर्ष ज्ञान के प्रमा णत वद्वान थे, उनसे सभी वषयों पर चर्चा कर सत्य को प्राप्त कया था। उनका उद्देश्य जनता को बहका फुसला कर उनका धन हड़पना व उन्हें अपना चेला व शष्य बनाना नहीं था अ पतु जनता को सत्य मार्ग दिखा कर स्वयं और सभी को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराना था। उनके समय में ही सहस्रों बुद् धजीवी लोग उनके वचारों व मान्यताओं की महत्ता व सत्यता को जानकर उनके अनुयायी बने थे। उनसे वैदिक वद्वानों की एक लम्बी श्रृंखला चली है जिन्होंने उनकी वैदिक मान्यताओं को अनेक शास्त्रीय प्रमाणों, युक्तियों व तर्कों से सत्य सद्ध कया है। स्वामी दयानन्द ने अपने समय में अन्य मत वालों से कसी भी धा र्मक वषय पर शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी थी। उन्होंने अनेकों से शास्त्रार्थ कए भी तथा सभी शास्त्रार्थों में उनकी ही वजय हुई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है क उनकी सभी मान्यतायें सत्य पर आधारित व अकाट्य थी। उनमें अज्ञान नहीं था और न ही उनका अपना कोई निजी हित व स्वार्थ था जिसके लए वह यह सब कार्य कर रहे थे। उनका उद्देश्य तो मात्र ईश्वर का आज्ञा का पालन करना वा कराना था जो वेदों में वहित है और जिसका आचरण करना ही सभी मनुष्यों का परम कर्तव्य व परम धर्म है।

92.

93. मह र्ष दयानन्द ने अपने जीवन काल में समूचे देश का भ्रमण कया था और तीर्थ स्थानों आदि में जो कुछ धर्माचरण के वरूद्ध होता है, उसे व उसकी सच्चाई को सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से सबके सामने प्रस्तुत कया है जिसको जानने के लए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी जी ने प्रश्न उठाते हुए कहा है क क्या कोई तीर्थ सत्य है वा नहीं? इसका उत्तर हां में देकर वह लखते हैं क वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढाना, धा र्मक वद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना, सत्य करना, ब्रह्मचर्य पालन, आचार्य-अति थ-माता- पता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना, शान्ति से युक्त जीवन, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्तपुरुषार्थ, ज्ञान- वज्ञान आदि शुभ गुण व कर्म दुःखों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं। और जो जल स्थलमय स्थान हैं, वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्यों क 'जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' अर्थात् मनुष्य जिन कर्मों को करके दुःखों से तरे उन का नाम तीर्थ है। जल स्थल तराने वाले नहीं कन्तु डुबाकर मारने वाले हैं। प्रत्युत नौका आदि का नाम तीर्थ हो सकता है क्यों क उन से भी समुद्र आदि को तरते हैं। वैदिक साहित्य के प्र सद्ध व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी के 4/4/107 सूत्र में कहा गया है क 'समानतीर्थे वासी' अर्थात् जो ब्रह्मचारीगण एक आचार्य से एक शास्त्र को साथ-साथ पढ़ते हों वे सब ब्रह्मचारीगण सतीर्थ्य अर्थात् समानतीर्थसेवी होते हैं। इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 16 में मन्त्र सूक्ति 'नमस्तीर्थ्याय च' में कहा गया है क जो वेदादि शास्त्र और सत्यभाषाणादि धर्म लक्षणों में साधु हो उस को अन्नादि पदार्थ देना और उन से वद्या लेनी इत्यादि तीर्थ कहाते हैं। इस प्रकार वेदादि शास्त्रानुमोदित तीर्थ का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। मूर्तिपूजा, मन्दिर, जल व नदी युक्त स्थानों में स्नानादि से मनुष्य दुःखों से नहीं तरते, इस कारण इनका सच्चा तीर्थ न होकर मथ्या होना सद्ध होता है।

94.

95. देश व समाज में हम देखते हैं क तीर्थाटन करने से कसी का अज्ञान व दुःख दूर नहं होते। उत्तराखण्ड के केदारनाथ आदि तीर्थ स्थानों की वगत त्रासदी में यह देखा गया है क इन स्थानों पर आकर तीर्थ यात्रियों को दुःख से तरने के स्थान पर मृत्यु आदि दुःख मले हैं। अतः इनसे दुःख तारने की अपेक्षा पूरी नहीं होती। देहरादून आर्यसमाज में त्रासदी के बाद आर्य संन्यासी स्वामी ववेकानन्द परिव्राजक से पूछे एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था क ईश्वर सर्वव्यापक है। इस लए उसके दर्शन व प्राप्ति के लये कसी को कहीं जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, वह तो साधना करने से अपनी आत्मा में सर्वत्र हो सकते हैं। अतः वैदिक ज्ञान वज्ञान के संवाहक वद्वानों से रहित कसी स्थान वशेष की संज्ञा तीर्थ कदा प नहीं हो सकती और न ही ऐसी यात्रा तीर्थ यात्रा हो सकती है। तीर्थ माता- पता-आचार्य-वैदिक शास्त्रों में निहित है और इनसे ज्ञानार्जन करना ही तीर्थ होता है। जिस प्रकार से कभी कसी को कोई रोगादि हो जाता है तो वैद्यों व च कत्सकों के उपचार से वह स्वस्थ होता है अन्यथा नहीं। धनोपार्जन के लए कृ ष, व्यापार, सेवा आदि कार्य करने होते हैं, कसी मूर्ति आदि की पूजा व जलस्थलादि की यात्रा व पूजा आदि करने से दुःखों पर वजय प्राप्त नहीं होती, अतः वर्तमान के तीर्थ तीर्थ न होकर सत्य व यथार्थ तीर्थ की वकृतियां है जिससे मनुष्यों की भारी हानि हो रही है। यदि तीर्थों में कया जाने वाला पुरुषार्थ सत्य व ज्ञान पूर्वक स्वजीवन व सामाजिक के हित की भावना से हो, तो वह लाभकारी होता है। अतः वैदिक तीर्थों को जानकर उनका सेवन कर वर्तमान जीवन व परलोक के जीवन को सुधारना अर्थात् इनमें होने वाले दुःखों से पार होने के वैदिक उपायों को करना चाहिये। यही हमारे व्यक्तिगत व देश के हित में है।
96. –मनमोहन कुमार आर्य
97. पताः **196** चुक्खूवाला-**2**
98. देहरादून-**248001**
99. फोनः**09412985121**

100. रक्षाबंधन – स्वाध्याय द्वारा जीव और प्रकृति का रक्षण।

101. AUGUST 31, 2015 LEAVE A COMMENT

102. रक्षा बंधन, ये शब्द सुनते ही भाई और बहन का वो प वत्र रिश्ता आँखों के दिखना शुरू हो जाता है जो एक धागे से बंधा होता है।

103. इस दिन श्रावण मास की पूर्णमासी को ये धागा एक बहिन द्वारा अपने भाई की कलाई में बाँध कर भाई से अपनी रक्षा का वचन लेना बहन का कर्तव्य और भाई का अपनी बहन की रक्षा करने का वचन देना करने से ही पूर्ण हो जाता है ऐसा समझा जाता है, और इस कार्य की इतिश्री करके धागा बंधने से पूर्ण कर दिया जाता है। मगर क्या यही सनातन संस्कृति है ?

104. ऐसे अनेको प्रमाण मलते हैं की इस प्रकार का रक्षा बंधन सनातन संस्कृति नहीं है बल्कि ये एक ऐतिहा सक तथ्यों पर आधारित कार्य है। इसके पीछे जो ऐतिहा सक तथ्य है उनमे पौरा णक बंधू इन्हे प्रमुखता देते हैं :

105. 1. द्रौपदी का कृष्ण की आकस्मिक अंगुली कटने पर साडी व दुपट्टा का टुकड़ा बाँध देना।

106. 2. कुंती का अपने पौत्र अ भमन्यु को महाभारत युद्ध में कलाई पर रक्षा कवच बाँध देना।

107. 3. पौरा णक दानी दैत्य राजा ब ल का रक्षा बंधन से रक्षा होना।

108. इन प्रमुख कारणों पर यदि ध्यान से देखा जाए तो भी ये रक्षा बंधन यानी बहन का भाई की कलाई पर राखी बांधना और रक्षा का वचन लेना सनातन संस्कृति सद्ध नहीं होती। क्यों क ये सभी ऐतिहा सक तथ्य हैं और ऐतिहा सक तथ्य कभी सनातन नहीं हो सकते हैं।

109. आ खर क्या कारण है की एक दिन के लए ही भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है ? क्या पुरे साल उसे याद दिलाते रहने के लए ?

110. मुझे तो नहीं लगता, ले कन यदि कुछ सालो पीछे जाये तो याद आएगा की हमारे देश में मुगलो का राज था जिसमे महिलाओ की अस्मत और आबरू खतरे में थी, मुझे ऐसा लगता है की ये त्यौहार भाई बहन के लए उस समय ज्यादा प्रचलन में आया ता क सामाजिक तौर पर प्रत्येक हिन्दू जाती की महिला को सुरक्षा का भाव मले। केवल अपने भाई से ही नहीं वरन सभी पुरुषो से।

111. अब सवाल उठेगा की फर ये श्रावण मास की पू र्णमा को रक्षाबंधन क्यों मनाते हैं ? इसका जवाब हमें अपने भारतीय जनजीवन और भौगो लक परिस्थियों अनुरूप मलता है। दे खये हमारा देश कृ ष प्रधान राष्ट्र है, और कृ ष प्रधान राष्ट्र होने के नाते हमारे देश में कृषक समुदाय अ धक हैं या वो लोग जो कृ ष से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। इस लए यदि आप ध्यान देवे तो आप पाएंगे की हमारे देश में आषाढ से लेकर सावन तक फ़सल की बुआई सम्पन्न हो जाती है। ये क्रम आज भी वैसा ही है जैसे पूर्व काल में होता था मगर बदला है आज का साधु समाज क्यों क वैदिक काल में ऋ ष-मुनि अरण्य में वर्षा की अ धकता के कारण गांव के निकट आकर रहने लगते थे। जो गाँव वालो को वेद धर्म की शक्षा देते थे। क्यों क इस समय कृषक समाज अपनी खेती आदि कार्यो से फारिग हो जाता था इस लए इस धा र्मक कृत्य में प्रमुखता से जुड़ता था जिससे देश और धर्म दोनों का ही कल्याण होता था। इसमें पारस्कर गृह सूत्र का प्रमाण है :

112. अथातोऽध्यायोपाकर्म। औष धनां प्रादुर्भावे श्रावण्यां पौर्णमासस्यम् " (2/10/2-2)

113. इसके पीछे जो रहस्य है वो ऊपर बताने और समझाने का प्रयास कया है।

114. वर्षा ऋतु में वेद के पारायण का वशेष आयोजन इस लए भी कया जाता था क्यों क वर्षा के दौरान बीमारिया फ़ैलाने वाले जीवाणु अ धक उतपन्न होते हैं इस लए इनके निवारण हेतु यज्ञ अ धकमात्रा में होते थे जिसमे वशेष साम ग्रयाँ डाली जाती थी।

115. यही रक्षाबंधन था उस यज्ञ का और जीव का जिससे प्रकृति की रक्षा होती थी और इसी स्वाध्याय के आधार पर यज्ञ होते थे जिससे वर्षा ऋतु में उत्पन्न हुए अनेको वषाणुओं का जो गंभीर बीमारियां उत्पन्न करते थे उनसे यज्ञ द्वारा जीव और प्रकृति की रक्षा होती थी, स्वाध्याय करते हुए नित नए औष ध युक्त साम ग्रयों का निर्माण करना और यज्ञ करते हुए प्रकृति, कृ ष और जीव इनकी रक्षा करना यही बंधन को ऋ ष समझते थे, ज्ञान देते थे।

116. आज भी अनेको गुरुकुलों में पू र्णमा को गुरुकुलों में वद्या र्थयों का प्रवेश हुआ करता है। इस दिन को वशेष रुप से वद्यारंभ दिवस के रुप में मनाया जाता है।

बटूकों का यज्ञोपवीत संस्कार भी कया जाता है। श्रावणी पू र्णमा को पुराने यज्ञोपवीत को धारण करके नए यज्ञोपवीत को धारण करने की परम्परा भी रही है।

117. भले ही इस प वत्र परंपरा को आज लोग भूल गए क्यों क वो वेदो से वमुख होकर अनार्ष ग्रंथो के अध्यन में रत हुए मगर ये भी सत्य है की पूरी तरह से सद्धांतो को न बदल पाये, मुगल काल में महिलाओ की रक्षा हेतु रक्षाबंधन का वचन देकर अपनी बहनो माताओ की रक्षण करना, यज्ञोपवीत धारण करना आदि अनेको भ्रान्तिया भी चली मगर सत्य सनातन वैदिक मत यही है की हम वेद और वज्ञानं आधारित बातो को माने क्यों क सत्य वही है।

118. केवल भाई बहन तक सी मत न रहकर, इस प वत्र त्यौहार को पुरे वश्व बंधुत्व की और ले जाए, अग्रसर हो इस प वत्र त्यौहार को वैदिक रीति से मनाने के लए, क्यों क ये केवल भाई बहन तक सी मत नहीं रखा जा सकता।

119. आइये लौटियो उसी सनातन संस्कृति की और, लौटिए उस वज्ञानं की और जो ऋ षयों ने वेदो के द्रष्टा बनकर हमें दिया। आइये लौटियो वेदो की और।

120. नमस्ते।

121. अंध वश्वासों का खण्डन समाज की उन्नति के लए परम आवश्यक’-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

122. AUGUST 30, 2015 LEAVE A COMMENT

123. जिस प्रकार से मनुष्य शरीर में कुपथ्य के कारण समय-समय पर रोगादि हो जाया करते हैं, इसी प्रकार समाज में भी ज्ञान प्राप्ति की समु चत व्यवस्था न होने के कारण सामाजिक रोग मुख्यतः अन्ध वश्वास, अपसंस्कृति एवं कंकर्तव्य वमूढता आदि हो जाया करते हैं। अज्ञान, असत्य व अन्ध वश्वास का पर्याय है। जहां अज्ञान होगा वहां अन्ध वश्वास वर्षा ऋतु में खेतों में खरपतवार की तरह उग ही जाया करते हैं। उदाहरण के लये हम प्रकृति वा सृष्टि को देखते हैं तो हमारे मन में प्रश्न आता है क यह सुव्यवस्थित संसार कसकी रचना है अर्थात् इसका रचयिता कौन है? अब इस प्रश्न के उत्तर के लए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञानी भी ऐसा हो जो लार्ड मैकाले की शक्षा पद्धति को ही परम प्रमाण न मानकर वैदिक परम्परा में हमारे ऋ षयों व मुनियों ने वचार, ध्यान व चन्तन द्वारा जिस सत्य को प्राप्त कया, उस ज्ञान व अनुभव से परि चत हो व उसको समझने वा मानने वाला हो। आजकल के हमारे पढ़े लखे लोग हमारे वेद एवं अन्य ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति आदि का अध्ययन तो करते नहीं, केवल वज्ञान, इतिहास व भूगोल आदि वषयों का अध्ययन कर इन प्रश्नों पर वचार करते हैं तो वह इस संसार की रचना में छिपी हुई सत्ता को जान नहीं पाते। वेदों ने कहा है क ‘‘ईशावास्य मदं सर्वम् यत्किंच जगत्यां जगत्’, ‘स दाधार पृ थवीन्द्यामुतेमां’ आदि मन्त्र सूक्तियों में संसार के रचयिता को सर्वव्यापक ईश्वर बताया गया है और उसे ही पृ थवी व द्युलोक का आधार, धारणकर्त्ता व रचयिता बताया गया है। ईश्वर का युक्ति व तर्क संगत वर्णन भी वेदों में वस्तार से प्राप्त होता है। जो बात तर्क से सद्ध वा अकाट्य हो वह सत्य होती है। सत्य निर्धारण की मुख्य व ध व प्र क्रया यही है क कसी वषय के पक्ष व वपक्ष के वचारों की समीक्षा की जायें और जो बातें अकाट्य हों, उनको सत्य माना जाये। ईश्वर वषय पर

वस्तार से अध्ययन व निर्णय हेतु वेदान्त दर्शन की रचना मह षे बादरायण वा वेद व्यास जी ने सहस्रों वर्ष पूर्व वैदिक काल में की थी। इसमें कहा गया है क जिससे इस संसार की उत्प त हुई है, जिससे इसका पालन वा संचालन होता है तथा अन्त में जिससे इस संसार का प्रलय व वनाश होता है, उसे ईश्वर करते है। यह ईश्वर हमारी ही तरह से एक चेतन तत्व है। अन्तर इतना है क हम एकदेशी व अल्प हैं तथा ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता उसका अनादि व नित्य गुण है। वह सब सत्य वद्या और जो पदार्थ वद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल वा आदि स्रोत है। वेदान्त दर्शन में इन लक्षणों व गुणों से युक्त ईश्वर को सद्ध भी कया गया है। दर्शन का आधार समस्त वैदिक वचार व उनका चन्तन है। सभी छः दर्शन चार वेदों के पोषक हैं। अतः यह सद्ध होता है क एक सर्वव्यापक और सर्वज्ञ सत्ता ईश्वर है जिससे, जिसके द्वारा व जिसके ज्ञान व सामर्थ्य से मूल प्रकृति नामी सत्ता जो सत्व, रज व तम गुणों वाली अनादि व नित्य है, से पूर्वोक्त ईश्वर ने इस सृष्टि को रचा वा बनाया है। यह कार्य ऐसा ही है जैसे क हम कसी वस्तु के निर्माण का ज्ञान अर्जित कर निर्माण में उपयोगी सभी पदार्थों को एकत्र कर ज्ञान व शक्ति रूपी सामर्थ्य का प्रयोग कर पदार्थों को बनाते हैं। उद्योग में पदार्थों का निर्माण भी इसी सद्धान्त पर होता है। यदि इच्छित वस्तु के निर्माण का ज्ञान न हो, निर्माण में आवश्यक पदार्थ उपलब्ध न हो तथा हमारे उद्योग में यन्त्र पदार्थ निर्माण के सर्वथा वा सब प्रकार से उसके अनुकूल व अनुरूप न हो तो नया इच्छित पदार्थ नहीं बन सकता है।

124.

125. खण्डन का अर्थ कसी पदार्थ को तोड़ना है। सत्य तो सत्य है उसका खण्डन वा उसका तोड़ना सम्भव नहीं है। असत्य व अज्ञान ऐसा है क जिससे मनुष्य को हानि होती है और वह उस अज्ञानाधारित कार्य से इच्छित लक्ष्य व उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाता। अतः हमें अपनी बुद् ध से मनन कर इच्छित वषय के सभी पहलुओं पर वचार कर, जो उद्देश्य को पूरा करने वाले पहलु हैं, उन्हें उपयोग में लाना होता है और जो अनुपयोगी होते हैं, उन्हें छोड़ना होता है वा अज्ञानियों को उन अज्ञानतापूर्ण कार्यों से छुड़वाने के लए उनका खण्डन व सत्य पदार्थ, पक्ष व पहलुवों का मण्डन कर समझाना होता है। इस कसौटी वा तुला पर हम अपने जीवन के प्रत्येक कार्य व चन्तन को देख व परख कर ग्रहण व त्याग कर सकते हैं। सबसे पहला कार्य तो यह करना है क हम सब सभी सत्य वद्याओं का अध्ययन करें। आधुनिक ज्ञान सब अच्छा नहीं है और प्राचीन ज्ञान सब बुरा व अनुपयोगी नहीं है। हमें दोनों में सत्य ज्ञान व वद्याओं का ग्रहण व असत्य ज्ञान तथा वद्याओं का त्याग करना चाहिये। जहां तक इस संसार के निर्माता को समझना है तो हमें केवल वेद और वैदिक साहित्य की ही शरण लेनी चाहिये। मह षे दयानन्द ने ईश्वर के सत्य स्वरूप के निर्धारण के लए सत्यार्थ प्रकाश नाम का ग्रन्थ लखा है जो सभी प्रकार की सत्य मान्यताओं से हमारा परिचय कराता है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी इसी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में असत्य, मथ्या, अज्ञान व तर्कहीन मान्यताओं का परिचय कराकर उनका वेद, युक्ति व तर्क आदि प्रमाणों से खण्डन कया है। यदि हम सत्य को जानना चाहते हैं तो हमें सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना ही होगा। सत्य का ज्ञान हो जाने व जीवन में उसका आचरण करने से हम उन्नति को अथवा जीवन में वकास जो क उन्नति का ही पर्याय है, प्राप्त होते हैं और वपरीत स्थिति में अवनति व गरावट को

प्राप्त होते हैं। इसी कारण मह र्ष दयानन्द ने वेदों के आधार पर सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहने को कहा है। वह उपदेश करते हैं क सत्य को मानना और मनवाना और असत्य को छोड़ना और छुड़वाना उन्हें व सभी मनुष्यों का अभीष्ट होना चाहिये। बहुत से लोग उनके खण्डन करने को बुरा मानते थे परन्तु यही कहा जा सकता है क ऐसे लोग अज्ञानी व स्वार्थी ही हो सकते हैं। कोई भी ज्ञानी व्यक्ति असत्य के खण्डन व सत्य के मण्डन से नाराज व उद् वग्न कभी नहीं हो सकता। ज्ञानी व ववेकपूर्ण व्यक्ति वही हो सकता है जो असत्य के खण्डन का प्रशंसक व सत्य के मण्डन का भी प्रशंसक हो। वगत लगभग 140 से कुछ अ धक वर्षों में मह र्ष दयानन्द द्वारा खण्डित व मण्डित मान्यताओं को कसी मत, सम्प्रदाय, धा र्मक संस्था का कोई भी धर्म गुरू व वद्वान युक्ति व प्रमाण पूर्वक खण्डन व प्रतिवाद नहीं कर सका। इससे सद्ध हो गया है क मह र्ष दयानन्द ने अपने जीवन में जो कहा था वह सर्वथा व पूर्णतः सत्य था व आज भी है।

126.

127. अब खण्डन की देशोन्नति में भू मका पर वचार करते हैं। खण्डन करने से असत्य व अज्ञान का नाश होता है। देशोन्नति में असत्य व अज्ञान बाधक होते हैं, यह सर्वमान्य सद्धान्त है। उदाहरण रूप में वचार कर सकते हैं क यदि देश व समाज के सभी लोग असत्य भाषी अर्थात् झूठे और मथ्याचारी हों तो क्या समाज व देश उन्नति कर सकते हैं? उसका एकमात्र उत्तर है क नहीं कर सकते। सत्य सदा सर्वदा प्रशंसनीय और असत्य व अन्ध वश्वास सर्वदा निन्दनीय होने से खण्डनीय हैं। देश में जितने अ धक मनुष्य सत्याचारी वा सदाचारी, चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वरभक्त, जातिवाद, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े की भावना से मुक्त होंगे वह समाज व देश उतना ही उन्नत होगा। यूरोप में उन्नति का कारण ही वहां अन्ध वश्वासों की कमी व देशवा सयों के आदर्श चरित्र हैं। वहां भ्रष्टाचार, असत्य व्यवहार, जन्मना जातिवाद, ऊंच-नीच, सामाजिक वषमता, मथ्या ईश्वरोपासना, मथ्या धा र्मक कर्मकाण्ड, व्रत व उपवास आदि न्यूनातिन्यून है जिससे वह प्रगति व उन्नति कर रहे हैं। हमारा सारा देश व वश्व के सभी देश अ धकांश रूप में यूरोप के वैज्ञानिकों के आभारी हैं जिनकी कृपा व वैज्ञानिक अनुसंधानों के कारण हमें अपने दैनिक जीवन में उपयोग की वस्तुएं यथा वद्युत व इससे संचा लत यन्त्र, कार, सु वधादायक भवन व आवास, टेलीफोन, कम्प्यूटर, रेल व वायुयान, अच्छी सड़के, रोगोपचार व शल्य क्रया का ज्ञान आदि उपलब्ध हैं। यह सब सत्य की खोज व इससे प्राप्त देनें हैं। दूसरी ओर हमारा देश आज भी अज्ञान, अन्ध वश्वास, असत्य, मथ्याचारों व सामाजिक वषमताओं के झंझावतों में उलझा हुआ है जो हमें पतन, अवनति व गुलामी की ओर ले जा रहे हैं। आज इसी कारण कुछ लोग तो बड़े बड़े धन कुबेर बन गये हैं और दूसरी ओर न लोगों को पेट भर भोजन है, न च कत्सा व्यवस्था है, न अच्छा आवास न अन्य सु वधायें हैं। हमारे अ धकांश देशवा सयों का नरक से भी बुरा जीवन है और हम गर्व करते हैं क हमारा देश सृष्टि का धर्म, ज्ञान व वद्या का आदि स्रोत रहा है। यह पूर्ण सत्य होते हुए भी वर्तमान परिस्थितियों में हमें मथ्या अ भमान से ग्र सत प्रद र्शत करता है। देश के मानव मानव में जमीन आसमान का अन्तर हमारी शासन प्रणाली की देन के साथ सबके लए एक समान, निःशुल्क, वैदिक मूल्यों पर आधारित शक्षा के न होने के कारण है। इसका उत्तरदायित्व भी कसी न कसी रूप में शासन प्रणाली को ही है जिसमें अनेक सुधारों की आवश्यकता है। अतः असत्य का खण्डन कर ही

समस्याओं का निदान कया जा सकता है। असत्य के खण्डन से ही देश सबल, उन्नत व वक सत होगा। इस देश को उन्नत व वक सत उसी दिन कहा जायेगा जिस दिन सभी देशवासी वैदिक शक्षा से श क्षत होकर परस्पर एक दूसरे को मत्र, बन्धु व सबको एक परिवार के सदस्य अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम' की दृष्टि से देखेंगे और मानेंगे।

128. हम समझते हैं क यह सद्ध सत्य सद्धान्त है क असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन से ही व्यक्ति, समाज व देश का वकास व सर्वांगीण उन्नति सम्भव है और इसके वपरीत स्थिति हमें अवनति की ओर ले जाती है।

129. मनमोहन कुमार आर्य
130. पताः **196** चुक्खूवाला-**2**
131. देहरादून-**248001**
132. फोनः**09412985121**

नया सांस्कृतिक धा र्मक आक्रमणः- – राजेन्द्र जिज्ञासु

AUGUST 29, 2015 1 COMMENT

आर्यसमाज के जन्मकाल से ही इस पर आक्रमण होते आये हैं। राजनैतिक स्वार्थों के लए राजनेताओं तथा राजनीतिक दलों ने भी समय-समय पर आर्य समाज पर निर्दयता से वार कये। वदेशी शासकों, देसी रजवाड़ों व वरो धयों ने भी वार कये। कमी कसी ने नहीं छोड़ी। समाज सुधार वरोधी पोंगा-पं थयों ने भी समय -समय पर डट कर वार कये। घुसपैठ करके कई एक ने आर्यसमाज का वध्वंस करने के लए पूरी शक्ति लगा दी। गांधी बापू ने वेद पर, सत्यार्थप्रकाश पर, ऋ ष दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द पर बहुत चतुराई से प्रहार कया था। आर्य नेताओं तथा वद्वानों ने बड़े साहस से यथो चत उत्तर दिया। जवाहर लाल नेहरु ने भी लखनऊ में आर्यसमाज के महासमेलन में आर्य समाज पर घिनौना आक्रमण कया था। यह सन् 1963 की घटना है। तब भी आर्य समाज ने नकद उत्तर दिया था।

अब संघ परिवार एक योजनाबद्ध ढंग से अपनी पंथाई वचारधारा देश पर थोपने में लगा है। आर्यसमाज पर सीधा-सीधा आक्रमण होने लगा है। भाजपा के नये-नये मन्त्री-तन्त्री इस काम में जुट गये हैं। देहली में स्वामी ववेकानन्द की आड़ में श्री वी.के. संह ने अपनी सर्वज्ञता दिखाई। फर गुरुकुल आर्यनगर हिसार के उत्सव पर हरियाणा के मन्त्रियों ने वही कुछ करते हुए संघ का जी भर कर बखान कया। इसके लए गुरुकुल के प्रधान महा वद्वान्? सुमेधानन्द जी बधाई के पात्र हैं। वह भाजपा का ऋण चुकाने में लगे हैं।

1. दत्त तथा चटर्जी नाम के दो बंगाली इतिहासकारों ने अपने ग्रन्थ में लखा है क मह र्ष दयानन्द प्रथम भारतीय थे जिन्होंने भारत भारतीयों के लए घोष लगाया या सुनाया। स्वदेशी व स्वराज्य के इस घोष लगाने से उस युग का कौन-सा नेता व धर्मगुरु ऋ ष दयानन्द के समकक्ष था? बड़ा होने का तो प्रश्न ही नहीं।
2. जब स्वामी ववेकानन्द को कोई नरेन्द्र के रूप में भी अभी नहीं जानता था तब मथुरा की कुटी से दीक्षा लेकर मह र्ष दयानन्द पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में गायत्री व यज्ञ

हवन प्रचार, स्त्रियों को वेद का अ धकार, जाति भेद निवारण, अस्पृश्यता उन्मूलन व स्वदेशी का शंखनाद करने में लगे थे। उस काल में वदेश में नि र्मत चाकूके प्रयोग से मह र्ष का मन आहत हुआ। वदेशी वस्त्रों को तजकर ऊधो को स्वदेशी वस्त्रों के धारण करने की इसी काल में प्रेरणा दी गई। इससे पहले कसने स्वदेशी आन्दोलन का शंखनाद कया? स्वदेशी वस्तुओं व वस्त्रों के प्रयोग में सभी नेता व वचारक ऋ ष दयानन्द को नमन करते आये हैं। अब संघ परिवार ने नया इतिहास गढ़ना आरभ कया है। जो मैक्समूलर तथा नेहरु न कर पाया वह भागवत जी के चेले करके दिखाना चाहते हैं।

3. उन्नीसवीं शतादी के बड़े-बड़े वद्वान्, सुधारक और नेता प्रायः करके गोरी सरकार व गोरों की स र्वस में रहे। पैंशनधारी भी कई एक थे। स्वामी ववेकानन्द जी ने तो अंग्रेज जाति की कभी भूरि-भूरि प्रशंसा भी की थी। गांधी जी की दृष्टि में सूर्य के तले और धरती के ऊपर अंग्रेज जाति जैसा न्याय प्रय और कोई है ही नहीं। मह र्ष दयानन्द ने कसी सरकार की, कसी राजा, महाराजा की नौकरी नहीं की। अंग्रेज जाति व अंग्रेज सरकार का कभी स्तुतिगान नहीं कया। हाँ। धर्मप्रचार की स्वतन्त्रता के लए मुगलों की तुलना में वे अंग्रेजी राज की प्रशंसा करते थे।

न जाने कस आधार पर संघ परिवार स्वामी ववेकानन्द को उन्नीसवीं शतादी का सबसे बड़ा महापुरुष बताते हुए ऋ ष दयानन्द को नीचा दिखाने पर तुला बैठा है। आश्चर्य का वषय है क समर्थ गुरु रामदास व छत्रपति शवाजी का गुणकीर्तन छोड़कर संघ ने स्वामी ववेकानन्द को अपना आदर्श कैसे मान लया?

स्वामी ववेकानन्द ने एक बार यह भी कहा था क मुझे कायस्थ होने पर अ भमान या गौरव है। जो जन्म की जाति-पाँति पर इतराता है वह कतना भी बड़ा क्यों न हो वह आदर्श साधु महात्मा नहीं हो सकता। साधु की कोई जात व परिवार नहीं होता।

5. अंग्रेजी न्यायालय का (Contempt of court) अपमान करने वाला सबसे पहला भारतीय महापुरुष मह र्ष दयानन्द था। उन्हीं से प्रेरणा पाकर महात्मा मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) ने हुतात्मा कन्हाई लाल दत्त के अ भयोग के समय बड़ी निड़रता से अंग्रेजी न्यायालय का अपमान ((Contempt of court)ç कया था। क्या कसी बड़े से बड़े नेता को इन दो ऐतिहा सक तथ्यों का प्रतिवाद करने की हिमत है?

ऋ ष दयानन्द के काल की तो छो ड़ये, मह र्ष के ब लदान के पच्चीस वर्ष पश्चात् तकी कोई भी भारतीय नेता अंग्रेजी न्यायपा लका (British Judiciary)का अपमान नहीं कर सका। न जाने संघ परिवार को मह र्ष दयानन्द की यह वलक्षणता, गरिमा, बड़प्पन, देशप्रेम व शूरता क्यों नहीं दिखाई देती?

6. कसी भी अन्य भारतीय महापुरुष द्वारा उस युग में न्यायपा लका के अपमान की घटना सप्रमाण दिखाने की ववेकानन्दी बन्धुओं को हमारी खुली चुनौती है। लोकमान्य तिलक को उन्नीसवीं शतादी के अन्तिम वर्षों में क्राफर्ड केस में अंग्रेजी न्यायालय ने दण्डित कया था। उन्हें बन्दी बनाया गया। सब नेता न्यायालय के निर्णय को माँ का दूध समझकर पी गये। कांग्रेस तब देश व्यापी हो चुकी थी। कौन बोला न्यायालय के इस घोर अन्याय पर? देशवासी नोट कर लें क तब शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महात्मा मुंशीराम के

रूप में इस निर्णय पर वपरीत टिपणी की थी। महात्मा जी की वह सपादकीय टिप्पणी हमारे पास सुर क्षत है।

7. मह षं दयानन्द जी सन् 1877 के सतबर अक्टूबर मास में जालंधर पधारे थे। तब आपने एक सार्वजनिक सभा में अपनी निर्भीक वाणी से दु खया देश का दुखड़ा रखते हुए अंग्रेजी राज के अन्याय, पक्षपात तथा उत्पीड़न को इन शदों में व्यक्त कया थाः- ''यदि कोई गोरा अथवा अंग्रेज कसी देशी की हत्या कर दे तथा वह (हत्यारा) न्यायालय में कह दे क मैंने मद्यपान कर रखा था तो उसको छोड़ देते हैं।''

इस व्यायान का सार सपूर्ण जीवन चरित्र मह षं दयानन्द के पृष्ठ 73 पर कोई भी पढ़ सकता है। हुतात्मा पं. लेखराम जी ने स्वामी ववेकानन्द जी के जीवन काल में अपने ग्रन्थ में यह पूरी घटना दे दी थी।

ऐसी निर्भीक वाणी उस युग के कसी भी साधु, सन्त व राजनेता के जीवन में दिखाने की क्या कोई हिमत करेगा?

जालन्धर के इसी व्यायान में ऋ ष दयानन्द जी ने सन् 1857 की क्रान्ति को गदर (Mutiny) न कहकर वप्लव कहकर अपने प्रखर राष्ट्रवाद का शंख फूं का था। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जी ने वर्षों बाद हमारा प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम ग्रन्थ लखकर घर-घर ऋ ष की हुँकार पहुँचा दी। अंग्रेजी जानने वाले कसी और बाबा व नेता में तो इतनी हिमत न हुई।

8. जब देशभक्त सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी को कारावास का दण्ड सुनाया गया तब मह षं दयानन्द के मशन के एक मा सक पत्र में सरकारी न्यायालय के इस अन्याय की निन्दा की गई। क्या कसी सन्यासी महात्मा ने देश में सुरेन्द्रनाथ जी के पक्ष में मुँह खोला या लखा । हम इस घटना के प्रमाण स्वरूप अलय Document दस्तावेज दिखा सकते हैं।

दुर्भाग्य का वषय है क आर्य समाज भी ऋ ष की इन घटनाओं को वशेष प्रचारित (Highlight) नहीं करता।

9. देश को सुनाना बताना होगा क उन्नीसवीं शतादी के महापुरुषों में एकमेव सुधारक वचारक ऋ ष दयानन्द थे जिन्होंने देश, धर्म व जाति हित में अपना ब लदान देकर ब लदान की परपरा चलाई। कसी और संगठन, कसी बाबा की परपरा में एक भी साधु, युवक, बाल, वृद्ध गोली खाकर, फांसी पर चढ़कर, छुरा खाकर, जेल में गल सड़कर देश धर्म के लए ब लवेदी पर नहीं चढ़ा। यहाँ पं. लेखराम जी से लेकर वीर राम रखामल (काले पानी में), वीर वेदप्रकाश, भाई श्यामलाल और धर्मप्रकाश, शवचन्द्र तक शहीदों की एक लबी सूची है। सेना प्रमुख श्रीयुत वी.के. संह तथा आर्यनगर हिसार में सुमेधानन्द महाराज की बुलाई नेता-पलटन इतिहास को क्या जाने?
10. मह षं दयानन्द का पत्र व्यवहार पढ़िये। प्रत्येक दो या तीन पत्रों के पश्चात् प्रत्येक पत्र में देश जाति के उत्थान कल्याण की ऋ ष बात करते हैं। कसी अंग्रेजी पठित साधु, नेता के जीवन चरित्र व पत्रावली में ऐसा उद्गार, ऐसी पीड़ा और गुहार दिखा दीजिये। ऋ ष दयानन्द की देन व व्यक्तित्व का अवमूल्यन करने वाले सब तत्त्वों को यह मेरी चुनौती है क इन दस बिन्दुओं को सामने आकर झुठलावें।

11. आर्य और ईस्वी महीनो की तुलना – आर्य महीनो का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

12. AUGUST 26, 2015 1 COMMENT

13. पाठकगण ! इस लेख द्वारा हम यूरोपीय (ईसाई) तथा पंचांगों की तुलना करना चाहते हैं और यह दिखाना चाहते हैं की आर्य पंचांग में वशेषता और गुण क्या हैं।

14. ये जानना आज इस लए भी आवश्यक है की हमारे देश में एक ऐसी प्रजाति भी वक सत हो रही है जो ईसाइयो के अवैज्ञानिक और पाखंडरुपी चुंगल में फंसकर अपनी वैदिक संस्कृति जो पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर है उसे नकार कर अन्ध वश्वास में लप्त होकर देश व धर्म का अहित करते जा रहे हैं।

15. दे खये जो हमारे आर्य महीनो के वैदिक आधार पर पंचांगानुसार नाम हैं वो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कतना उन्नत और व्यवस्थित रूप है जब क ईसाइयो के महीनो का कच्चा चटठा हम इस पोस्ट के माध्यम से रखेंगे। आशा है आप सत्य को जान असत्य को त्याग देंगे।

16. ईसाई महीनो के नाम :

17. जनवरी (January) : यह वर्ष का प्रथम मास (Astronomy) ज्योतिष है जिसे रोमननिवा सयो ने एक देवता जेनस को सम र्पत कया और उसके नाम पर महीने का नाम रखा। उनका वश्वास था की इस देवता के दो शीश (सर) थे, इस लए यह दोनों और (आगे, पीछे) देख सकता था। यह देव आरम्भ देव था जिसको प्रत्येक काम के आरम्भ में मनाया जाता था। चूँ क जनवरी वर्ष का प्रथम मास है इस लए इसका नाम जेनसदेव के नाम पर रखा गया।

18. फ़रवरी – प्रायश्चित का महीना।

19. मार्च – लड़ाई के देवता “मार्स” के नाम पर रखा गया।

20. अप्रैल – यह महीना जब पृथ्वी से नए नए पत्ते, क लयाँ और फल फूल उत्पन्न होते हैं। यह नाम उस महीने की ऋतु का द्योतक है।

21. मई – यह महीना प्रारं भक भाग। भावार्थ यह है की इस मास में ऋतु ऐसी शोभायमान होती है जैसे नवयुवक और नवयुवतिया।

22. जून – छठा महीना जो आरम्भ में केवल २६ दिन का होता था इसके नाम का शब्दार्थ छोटा महीना है। महाराज जू लयस सीज़र के समय से इस महीने की अव ध ३० दिन की मानने लगे हैं।

23. जुलाई : जू लयस सीज़र के नाम पर, जो इस महीने मैं पैदा हुआ था यह नाम रखा गया।

24. अगस्त : महाराज अगस्टस सीज़र के नाम पर यह नाम रखा गया। चूं क जू लयस सीज़र के नाम पर रखा जाने वाला जुलाई का महीना ३१ दिन का होता था और है, इस लए अगस्टस सीज़र ने अगस्त का महीना भी उतने ही अर्थात ३१ दिन का रखा। और यह महीना तब से ३१ दिन का चला आता है।

25. सतम्बर : शब्दार्थ सातवां महीना क्यों क रोमनिवासी अपना वर्ष मार्च से प्रारम्भ करते थे।

26. अक्तूबर : शब्दार्थ आठवां महीना। रोमनिवासीयो के अनुसार आठवां महीना।

27. नवम्बर : शब्दार्थ नवां महीना। रोमनिवासीयो के अनुसार नवां महीना।

28. दिसम्बर : शब्दार्थ दसवां महीना। रोमनिवा सयो के अनुसार दसवां महीना।
29. तो मेरे मत्रो ऊपर दिए शब्दार्थो से आपको वदित होगा की अंग्रेजी महीनो के कुछ के नाम देवताओ के नाम पर, कुछ के ऋतु के अनुसार, कुछ के महाराजाओ के नाम पर और शेष के क्रम के अनुसार नाम रखे गए हैं। यानी कोई वैज्ञानिक आधार इस अंग्रेजी वर्ष और उसके दिए महीनो में नहीं निकलता।
30. अब हम आपको आर्य महीनो के नाम जो वैदिक पंचाग व्यवस्थानुसार सम्पूर्ण वैज्ञानिक रीति पर आधारित हैं उनसे परिचय करवाते हैं।
31. इन आर्य महीनो के नामो के शब्दार्थ समझने से पहले हमें कुछ ज्योतिष सद्धांत समझ लेने चाहिए तभी इन महीनो का वैज्ञानिक आधार और नामो का शब्दार्थ पूर्ण रूप से समझ आएगा। पोस्ट बड़ी न हो इस लए थोड़ा ही समझाया जा रहा है।
32. 1. आर्य ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी सूर्य के चारो और एक अंडाकार वृत्त में ३६५-२४ दिन में घूमती है। यह अंडाकार मार्ग बारह भागो में वभाजित है और उन १२ भागो के नाम मेष, वृष, मथुन, कर्क, संह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन हैं। इन १२ भागो नाम भी १२ रा शयों के नाम से वख्यात हैं। इसी ज्योतिष गणना को यदि वस्तार से बतलाओ तो लेख बहुत लम्बा हो जाएगा इसके बारे में कसी अन्य पोस्ट पर वस्तार से बताया जाएगा।
33. जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य के चारो और एक अंडाकार वृत्त में घूमती है। इसी प्रकार चन्द्रमा भी पृथ्वी के चारो और एक अंडाकार वृत्त में २७ दिन ८ घंटे में घूम आता है। इसका मार्ग २७ भागो में वभाजित है और प्रत्येक भाग को नक्षत्र कहते हैं। २७ नक्षत्रो के नाम इस प्रकार हैं :
34. 1. अश्विनी 2. भरणी 3. कृ त्तका 4. रोहिणी 5. मृग शरा 6. आर्द्रा 7. पुनर्वसु 8. पुष्य ९. अश्लेषा 10. मघा 11. पूर्वाफाल्गुनी 12. उत्तराफाल्गुनी 13. हस्त 14. चत्रा 15. स्वाती 16. वशाखा 17. अनुराधा 18. ज्येष्ठा 19. मुल 20. पुर्वाषाढा 21. उत्तरषाढा 22. श्रवण 23. धनिष्ठा 24. शत भषा 25. पूर्वभाद्रपद 26. उत्तरभाद्रपद 27. रेवती
35. आज पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र है इसका अ भप्राय है की आज चन्द्रमा पृथ्वी के चारो और के मार्ग के पूर्वाषाढ़ा नामक भाग में है।
36. हम पृथ्वी पर रहने वाले हैं पृथ्वी के साथ साथ घुमते हैं। इस कारण हमको पृथ्वी स्थिर प्रतीत होती है और सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों घुमते दिखते हैं।
37. जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी होती है तो चन्द्रमा का वह अर्थ भाग जिस पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है पृथ्वी की और होता है। इसी कारण ऐसी अवस्था में चन्द्रमा सम्पूर्ण प्रकाशवान दीखता है अतः पूर्णमासी को जब चन्द्रमा पूर्ण प्रका शत होता है, चन्द्रमा और सूर्य पृथ्वी के दोनों और उलटी दिशा में होते हैं।
38. आर्य महीनो के नाम नक्षत्रो के नाम पर रखे गए हैं। पूर्णमासी को जैसा नक्षत्र होता है उस महीने का नाम उसी नक्षत्र पर रखा गया है, क्यों क पू र्णमा को सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी के दोनों और उलटी दिशा में होते हैं।*
39. महीनो के नाम नक्षत्रानुसार इस प्रकार हैं :
40. 1. चैत्र – चत्रा
41. 2. वैशाख – वशाखा
42. 3. ज्येष्ठ – ज्येष्ठा
43. 4. आषाढ़ – पूर्वाषाढ़

44. 5. श्रावण – श्रवण
45. 6. भाद्रपद – पूर्वाभाद्रपद
46. 7. आश्विन – अश्विनी
47. 8. का र्तक – कृ त्तका
48. 9. मार्ग शर – मृग शरा
49. १० पौष – पुष्य
50. 11. माघ – मघा
51. 12. फाल्गुन – उत्तरा फाल्गुन
52. इसी आधार पर हमें अंतरिक्ष में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि सभी ग्रहो की चाल, और अभी वो कस जगह स्थित हैं ये पूर्ण जानकारी इसी वज्ञानं के आधार पर मलती जाती है।
53. सर डब्ल्यू जोंस की यह भी सम्मति है की आर्यो के महीनो के नाम इत्यादि से पूरा पता लगता है की आर्य ज्योतिष अत्यंत पुरानी है। आर्यो में प्राचीन काल में वर्ष पौष मास से आरम्भ होता था जब दिन अत्यंत छोटा और रात अत्यंत बड़ी होती है। इसी कारण मार्ग शर मास का द् वतीय नाम अग्रहन्य था, जिसका अर्थ यह है की वह महीना जो वर्ष आरम्भ होने से पहले हो।
54. मेरे सभी हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई भाइयो से निवेदन है की वो इस अंग्रेजी महीने जो देवता, महाराज ऋतु इत्यादि के नाम पर रखे गए हैं त्याग देवे और अपने पूर्ण वज्ञानी रीति से जो आर्य महीने हैं उनकी प्रतिष्ठा को जान लेवे।
55. प्राचीन आर्य पुरुष ज्योतिष में अवश्य वशेष ज्ञान प्राप्त कर चुके थे और उनके ज्ञान के टूटे फूटे चन्ह ही आज तक आर्य समाज में पाये जाते हैं। क्या अच्छा हो यदि हम प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करे और उसके बचे बचाये चन्हो से नयी नयी खोज कर समाज के सामने रखे जिससे देश व धर्म का कल्याण हो।
56. ये केवल संक्षेप में बताया गया फर भी इतनी बड़ी पोस्ट हो गयी, ले कन इसे नजरअंदाज न करे और वेद धर्म का प्रचार करे ता क हमारे अन्य हिन्दू भाई ईसाइयो के अन्ध वश्वास में न पड़े।
57. आओ लौटो वेदो की और
58. नमस्ते।
59. * इसमें सूर्य सद्धांत प्रमाण है :
60. भचक्रं भ्रमणं नित्यं नाक्षत्रं दिनमुच्यते।
    नक्षत्र नाम्ना मासास्तु क्षेयाः पर्वान्त योगतः।
61. अर्थात दैनिक भचक्र का भ्रमण करना ही नाक्षत्रिक दिन है।
62. पू र्णमानता धष्ठित नक्षत्र के नाम से मास का नाम जानना चाहिए।

63. क्या ईश्वर संसार में कसी स्थान वशेष में, कसी काल वशेष में रहता है? क्या ईश्वर कसी जीव वशेष को कसी समुदाय वशेष के

कल्याण के लए और दुष्टों का नाश करने के लए भेजता है? – आचार्य सोमदेव जी

64. AUGUST 26, 2015 LEAVE A COMMENT
65. क्या ईश्वर संसार में कसी स्थान वशेष में, कसी काल वशेष में रहता है? क्या ईश्वर कसी जीव वशेष को कसी समुदाय वशेष के कल्याण के लए और दुष्टों का नाश करने के लए भेजता है?
66. ईश्वर इस संसार के स्थान वशेष वा काल वशेष में नहीं रहता परमेश्वर संसार के प्रत्येक स्थान में वद्‌यमान है। जो परमात्मा को एक स्थान वशेष पर मानते हैं वे बाल बुद्‌ध लोग हैं। वेद ने परमेश्वर को सर्वव्यापक कहा है। वेदानुकुल सभी शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापक कहा है। एक स्थान वश्ेाष पर परमेश्वर को कोई सद्‌ध नहीं कर सकता , न ही शद प्रमाण और न ही युक्ति तर्क से। हाँ ईश्वर शद प्रमाण और युक्ति तर्क से वभु= सर्वत्र व्यापक तो सद्‌ध हो रहा है, हो सकता है। वेद में कहा-
67. एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
68. पादोऽस्य वश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दि व।।
69. – प. 31.3
70. इस पुरुष की इतनी महिमा है क यह सारा ब्रह्माण्ड परमेश्वर के एक अंश में है अर्थात् वह ईश्वर इस समस्त ब्रह्माण्ड में समाया हुआ अनन्त है, यह समस्त जगत् परमात्मा के एक भाग में है अन्य तीन भाग तो परमात्मा के अपने स्वरूप में प्रका शत हैं अर्थात् परमात्मा अनन्त है अर्थात् सर्वत्र वद्‌यमान है उसको कसी एक स्थान पर नहीं कह सकते।
71. नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाण मन्वतः।
72. जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मयं धूनुहि।।
73. – ऋ. 1.10.8
74. इस मन्त्र के भावार्थ में मह र्ष लाते हैं – ''जब कोई पूछे क ईश्वर कतना बड़ा है तो उत्तर यह है क जिसको सब आकाश आदि बड़े-बड़े पदार्थ भी घेर में नहीं ला सकते, क्यों क वह अनन्त है। इससे सब मनुष्यों को उ चत है क उसी परमात्मा को सेवन उत्तम उत्तम कर्म करने और श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति के लए उसी से प्रार्थना करते रहें। जब जिसके गुण और कर्मों की गणना कोई नहीं कर सकता, तो कोई अंत पाने को समर्थ कैसे हो सकता है। और भी -''
75. स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्ना वंर शुद्‌धमपापा वद्‌धम्।
76. क वर्मनीषी परिभूः स्वयभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीश्यः समायः।।
77. – य. 40.8
78. इस मन्त्र में परमेश्वर को सब में व्याप्त कहा है, इस व्याप्ति से ज्ञात हो रहा है क परमात्मा कसी एक स्थान वशेष पर नहीं अ पतु सर्वत्र है। इस प्रकार परमेश्वर के सर्वत्र व्यापक स्वरूप को सद्‌ध करने के लए शास्त्र के हजारों प्रमाण दिये जा सकते हैं। कोईाी प्रमाण ऐसा उपलध नहीं होता जो परमात्मा को एकदेशीय सद्‌ध करता हो।
79. युक्ति से भी कोई परमात्मा को कसी स्थान वशेष पर सद्‌ध नहीं कर सकता। आज वज्ञान का युग है, वैज्ञानिकों ने समस्त पृ थवी, समुद्र, आकाश आदि को देख डाला है।

जिन कन्हीं का भगवान् समुद्र, पहाड़ आकाश आदि में होता तो अब तक वह भगवान् वैज्ञानिकों के हाथ में होता। जो लोग ईश्वर को ऊपर सातवें वा चौथे आसमान अथवा इससे कहीं और ऊपर मानते हैं वे यह सद्ध नहीं कर सकते क कौनसा ऊपर, कौनसा आसमान। क्यों क प्रमाण सद्ध यह पृ थवी गोल है। इस गोल पृ थवी के लगभग चारों और मानव आदि प्राणी रहते हैं।

80. जो मनुष्य भारत में रहते हैं अर्थात् पृ थवी के ऊपरी भाग पर रहते हैं उनका आसमान उनके शर के ऊपर और जो मनुष्य अमेरिका आदि देशों में है अर्थात् पृ थवी के निचलोग में रहते हैं उनका आकाश (आसमान) भारत आदि देश में रहने वालों की अपेक्षा वपरीत होगा अर्थात् भारत वालों को पैरों में आकाश होगा ऐसा ही पृ थवी के अन्य स्थानों पर रहने वाले मनुष्य का आकाश जाने । पृ थवी के चारों ओर आकाश है, आसमान है, पृ थवी पर रहने वाले मनुष्यों के शर जिस ओर होंगे उनका आसमान उसी ओर होगा। ऐसा वचार करने पर जो परमात्मा को आसमान में मानते हैं वे भी एक स्थान वशेष पर सद्ध नहीं कर सकते। इस वचार से भी परमात्मा सर्वत्र ही सद्ध होगा। इस लए परमात्मा सब स्थानों पर वद्यमान है न क कसी एक स्थान वशेष पर।

81. स्थान वशेष की कल्पना ब्रह्माकुमारी मत वालों की भी है। उनका कहना है क यदि ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं तो ईश्वर गन्दगी में शौच आदि मेंाी होगा। यदि ऐसा होगा तो ईश्वराी गन्दा हो जायेगा। इन ब्रह्माकुमारी बाल बुद् ध वालों ने ईश्वर को कतना कमजोर बना दिया क जो ईश्वर सदा प वत्र रहने वाला है, इन ब्रह्माकुमारी वालों का ईश्वर गन्दगी से गन्दा हो जाता है। इनको यह नहीं पता क यह गन्दगी भौतिक है और ईश्वर अभौतिक। परमेश्वर के अभौतिक ओर सदा प वत्र होने से परमेश्वर के ऊपर इस गंदगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हमारे ऊपर भी जो प्रभाव पड़ता है वह इस लये क्यों क हमारे पास भौतिक शरीर इन्द्रियाँ आदि हैं, इनसे रहित होने पर हम जीवात्माओं पर भी उस गंदगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर तो सर्वथा इनसे रहित है तो ईश्वर पर इस गंदगी का प्रभाव कैसे पड़ेगा। इस लए म लनता से बचाने के लए ईश्वर को एक स्थान वशेष पर मानना मूर्खता ही है।

82. इसी प्रकार ईश्वर कसी काल वशेष में होता हो ऐसा नहीं है, परमेश्वर तो सदा सभी कालों में वर्तमान रहता है। काल वशेष में होने की कल्पना अवतारवादी कर सकते हैं, जो क उनकी यह मान्यता सर्वथा असंगत है। वर्तमान, भूत, भ वष्यत काल की आवश्यकता हम जीवों की अपेक्षा से है। परमेश्वर के लए तो सदा वर्तमान रहता है, भूत भ वष्य परमात्मा के लए नहीं है। परमात्मा सदा एक रस रहता है।

83. परमात्मा कसी जीव वशेष को कसी समुदाय वशेष की रक्षा वा दुष्टों के नाश के लए भेजता हो ऐसा नहीं है। यह कल्पना भी अवतारवादियों की है। परमात्मा तो जीवों के कर्मानुसार उनको जन्म देता है। जो जीव वशेष संस्कार युक्त होता हैं वे जगत् के कल्याण और दुष्टों के नाश में प्रवृत्त होते हैं। ऐसा करने पर परमात्मा उनको आनन्द उत्साह आदि प्रदान करता है। कन्तु ऐसा कदा प नहीं है क परमात्मा ने कसी जीव वशेष को इस कार्य में लगााया है यदि ऐसा मानेंगे तो जीव की स्वतन्त्रता न रहेगी। ऐसा मानने पर सद्धान्त की हानि होगी। कर्म फल व्यवस्था की सद् ध ठीक से न हो पायेगी। कसी समुदाय की रक्षा करे तो दोष का भागी हो जायेगा क्यों क ऐसा कदा प नहीं हो सकता क पूरे समुदाय में सभी लोग एक जैसे

धर्मात्मा हों, उस समुदाय में उलटे लोग भी हो सकते हैं। समुदाय में होने से उनकी भी रक्षा करनी पड़ेगी तो न्याय न हो सकेगा। जब क परमेश्वर न्याय कारी है उसके द्वारा भेजी गई आत्मा को भी न्याय करना चाहिए जो क वह कर न सकेगी।

84. अ धकतर लोगों की मान्यता है क परमेश्वर कसी आत्मा को न भेजकर स्वयं अवतार लेते हैं । ऐसा करके परमात्मा सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों का नाश करते हैं। इस प्रकार की यह मान्यता भी ईश्वर के स्वरूप से वपरीत तथा वेद-शास्त्र के प्रतिकूल है। क्यों क ईश्वर वभु है, अनन्त है, वह अनन्त प्रभु एक छोटे से शान्त शरीर में कैसे आ सकता है? परमेश्वर जन्म मरण से परे है फर शरीर में आकर जन्म-मृत्यु को कैसे प्राप्त कर सकता है? परमेश्वर का अवतार मानने पर इस प्रकार की अनेक दोषयुक्त बातों को मानाना पड़ेगा।
85. अवतारवादियों का अवतार मानने का मुय आधार ये दो श्लोक हैं-
86. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
87. अयुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजायहम्।।
88. परित्राणाय साधूनां वनाशाय च दुष्कृताम्।
89. धर्मसंस्थापनार्थाय संभवा म युगे युगे।।
90. इन श्लोकों में अवतार लेने का कारण क जब-जब धर्म की हानि होगी तब-तब धर्म के उत्थान और अर्धा के नाश के लए तथा श्रेष्ठों के परित्राण =रक्षा और दुष्टों के नाश के लए अवतार लेता है। अब यहाँ वचारणीय यह है क जिस परमात्मा ने बिना शरीर के इस सब ब्रह्माण्ड को रच डाला, हम सब प्रा णयों के शरीरों की रचना की है, उस परमात्मा को कुछ क्षुद्र, दुष्ट व्यक्तियों को मारने के लए शरीर धारण करना पड़े यह बात बुद् धग्राह्य नहीं है। इससे तो ईश्वर का ईश्वरत्व न रहकर ईश्वर का बहुत लघुत्व सद्ध हो रहा है। यदि परमात्मा को यही करना है तो वह इस प्रकार के कार्य बिना शरीर के भी कर सकता है क्यों क वह पूर्ण समर्थ है। अस्तु
91. इन उपरोक्त गीता के श्लोकों में अवतार का कारण हमने देखा अब देवी भागवत पुराण में अवतार लेने का कारण दे खये कया लखा –
92. शपा म त्वां दुराचारं कमन्यत् प्रकरो मते।
93. वध्ुारोहं कृतः पाप त्वयाऽहं शापकारणात्।।
94. अवतारा मृत्युलोके सन्तु मच्छापसंभवाः।
95. प्रापो गर्भभवं दुःख भुक्ष्व पापाज्जनार्दन।।
96. इन देवी भागवत के श्लोकों में अवतार का कारण धर्म की रक्षा वा अधर्म के नाश करने के लए नहीं कहा अपितु भृगु का शाप कहा है। अर्थात् मह र्ष भृगु ने वष्णु को उसके दुराचार कर्म के कारण शाप दिया उनके शाप के प्राव से वष्णु का मृत्य ुलोक में अवतार हुआ। गीता के और देवी भागवत पुराण में अवतार के कारणों में परस्पर वरोध है। और दे खये-
97. बौद्धरूपस्त्वयं जातः कलौ प्राप्ते भयानके।
98. वेदधर्मपरायन् वप्रान् मोहयामास वीर्यवान्।
99. निर्वेदा कर्मरहितास्त्रवर्णा तामासान्तरे ।।
100. यहाँ गीता से सर्वथा वपरीत अवतार का कारण कहा है। गीता धर्म की रक्षा कारण कहती है और यहाँ तो धर्म के नाश के लए अतवार ले लया, अर्थात् भागवत पुराण कहता है- भगवान ने बुद्ध का अवतार लेकर, सबको वरुद्ध उपदेश देकर

नास्तिक बनाया तथा वेद मार्ग का नाश कया। यहाँ ये अवतारवादियों के ग्रन्थ परस्पर वरुद्ध कथन कर रहे हैं।

101. यथार्थ में तो ईश्वर के कसी भी रूप में जन्म धारण करने की कल्पना ही युक्ति व शास्त्र वरुद्ध है। क्यों क ईश्वर को कसी भी प्रकार के सहारे की आवश्यकता नहीं, चाहे वह सहारा कसी शरीर का हो अथवा कसी अन्य प्राणी का। परमेश्वर अपने सब कार्य करने में समर्थ है, उसको कोई अवतार लेने की आवश्यकता नहीं है।

102. वेद में ईश्वर को ''अकायमव्रणमस्ना वरम्'' कहा है। वह परमात्मा सूक्ष्म और स्थूल शरीर के बन्धन से रहित है अर्थात् इन बन्धन में नहीं पड़ता। श्वेताश्वतर उपनिषद् मेंऋ ष ने कहा-

103. वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं वभुत्वात्।

104. जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हिप्रवदन्ति नित्यम्।।

105. – 4.21

106. अर्थात् वह परमात्मा अजर है, पुरातन (सनातन) है, सर्वान्तर्यामी है, वा ु और नित्य है। ब्रह्मवादी सदा उसका बखान करते हैं वह कभी जन्म नहीं लेता।

107. उपरोक्त सभी प्रमाणों से सद्ध हो रहा है क परमात्मा जीव के कर्मानुसार उसके भोग के लए शरीर स्थान, समुदाय आदि देता है न क अपनी इच्छा से कसी का नाश वा रक्षा के लए उसको भेजता है और ऐसे ही स्वयं भी अवतार लेकर कुछ नहीं करता अर्थात् स्वयं शरीर धारण करके कसी की रक्षा वा नाश नहीं करता।

108. मूर्तिपूजा के इतिहास पर मह ष दयानन्द का उपदेश: मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

109. AUGUST 23, 2015 LEAVE A COMMENT

110. मह ष दयानन्द के इतिहास वषयक एक उपदेश जिसमें उन्होंने महाभारत काल व उसके बाद देश में धर्म व अध्ययन अध्यापन पर प्रकाश डाला है, को हमनें अपने पूर्व लेख में प्रस्तुत कया था। उसी क्रम में उसके बाद देश में वेदाध्ययन को छोड़कर मूर्तिपूजा के प्रचलन वषयक घटी घटनाओं के इतिहास पर उनके उपदेश को आज के लेख में कं चत सम्पादन के साथ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। मह ष का उपदेश आरम्भ करते हैं:

111.

112. एक द्र वड़ देश के ब्राह्मण काशी में आकर, यहां एक गौड़पाद पण्डित थे, उनके पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त वद्या पढ़ी थी जिसका नाम शंकराचार्य था। वह बड़े पण्डित हुए थे, उन्होंने वचार कया क यह बड़ा अनर्थ हुआ क नास्तिकों का मत आर्यावर्त्त देश में फैल गया है और वेदादिक संस्कृत वद्या का प्रायः नाश ही हो गया है, अतः नास्तिक मत का खयडन और वेदादिक सत्य संस्कृत वद्या का (मण्डन होना चाहिए)। वह अपने मन से ऐसा वचार करके सुधन्वा नाम का राजा था, उसके पास चले गए, क्यों क बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं हो सकेगी। वह सुधन्वा राजा भी संस्कृत में पण्डित था और जैनों के भी संस्कृत के सब ग्रन्थों को पढ़ा था। सुधन्वा जैन के मत का था, परन्तु बुद् ध और वद्या के होने से अत्यन्त वश्वास नहीं था, क्यों क वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैन मत के पण्डित भी बहुत थे। फर शंकराचार्य ने राजा से कहा क आप सभा करावें और उनसे मेरा शास्त्रार्थ हो और आप सुनें। फर जो सत्य हो उसको मानना चाहिए। उसने स्वीकार

कया और सभा भी कराई। उसके अपने पास जैन मत के पण्डित थे और भी दूर-दूर से पण्डित जैन मत के बुलाए, फर सभा हुई। उसमें यह प्रतिज्ञा हो गई क हम वेद और वेद मत का स्थापन करेंगे और आपके मत का खण्डन तथा उन पण्डितों ने ऐसी प्रतिज्ञा की क वेद और वेदमत का हम खण्डन करेंगे और अपने मत का मण्डन। सो उनका परस्पर शास्त्रार्थ होने लगा। उस शास्त्रार्थ में शंकराचार्य का वजय हुआ और जैन मत वाले पण्डितों का पराजय हो गया। फर कोई युक्ति जैनों की नहीं चली, कन्तु शंकराचार्य ने कहा क जैनों का आजकल बड़ा बल है और वेद मत का बल नहीं है। इससे शास्त्रार्थ तो हम करने को तैयार हैं, परन्तु कोई उपा ध करे अथवा शास्त्रार्थ ही न करें, तो हमारा कुछ बल नहीं। इसमें आप लोग प्रवृत्त होंवे क कोई अन्याय करे, उसकी आप लोग शक्षा करें। सो राजा ने उस बात को स्वीकार कया क वह हम करेंगे, परन्तु हमारे छः राजा सम्बन्धी हैं, उनके पास हम चट्ठी लखते हैं और आपको भी शास्त्रार्थ करने के हेतु भेजेंगे। फर वह भी यदि मल जायें तो बहुत अच्छी बात है। फर शंकराचार्य उन राजाओं के पास गए और सभा हुई, फर जैन मत के पण्डितों का पराजय हो गया। फर वे छः भी सुधन्वा से मले ओर सबकी सम्मति से संस्कार भी हुआ तथा वेदोक्त कर्म भी करने लगे।

113.

114. तब तो आर्यावर्त्त में सर्वत्र यह बात प्र सद्ध हो गई क एक शंकराचार्य नामक संन्यासी वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने वाले बड़े पण्डित हैं जिससे बहुत जैन लोगों के पण्डित परास्त हो गए। फर उन सात राजाओं ने शंकराचार्य की रक्षा के हेतु बहुत भृत्य तथा सेवक और सवारी भी रख दी और सबने कहा क आप सर्वत्र आर्यावर्त्त में भ्रमण करे और जैनों का खण्डन करें। इसमें यदि कोई अन्याय से जबर्दस्ती करेगा तो उसको हम लोग समझा लेवेंगे। फर शंकराचार्य जी ने जहां-जहां जैनों के पण्डित और अत्यन्त प्रचार था, वहां-वहां भ्रमण कया और उनसे सर्वत्र शास्त्रार्थ कया। शास्त्रार्थें में सर्वत्र जैन लोगों का पराजय ही होता गया, क्यों क दो तीन दोष उन (जैनियों) के बड़े भारी थे। एक तो ईश्वर को नहीं मानना, दूसरा वेदादिक सत्य शास्त्रों का खण्डन करना और तीसरा जगत् स्वभाव ही से होता है, इसका रचने वाला कोई नहीं, इत्यादि अन्य भी बहुत दोष हैं, उन दोषों को जैन मत के खण्डन मण्डन में वस्तार से (कहेंगे)। फर जितनी जैनों के मन्दिर में मूर्तियां थी, उनको सुधन्वादिक राजाओं ने तोड़वा डाली और कुवों (में डलवा दी) वा पृ थवी में गाड़ दी, सो आज तक जैनों की वे टूटी और बिना टूटी मूर्तियां पृ थवी खोदने से निकलती हैं। परन्तु मन्दिर नहीं तोड़े गए, क्यों क शंकराचार्य और राजा लोगों ने वचार कया क मन्दिरों को तोड़ना उ चत नहीं है। इनमें वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने के हेतु पाठशाला करेंगे, क्यों क लाखों करोड़ों रूपये की इमारतें हैं, इसको तोड़ना उ चत नहीं। और कुछ-कुछ गुप्त रूप से जैन लोग जहां-तहां रह गए थे सो आज तक देखने में आर्यावत्र्त देश में आते हैं। इसके बाद सर्वत्र वेदादि ग्रन्थों के पढ़ने और पढ़ाने की इच्छा बहुत मनुष्यों को हुई। शंकराचार्य, सुधन्वादि राजा तथा और आर्यावर्त्तवासी श्रेष्ठ लोगों ने वचार कया क वद्या का प्रचार अवश्य करना चाहिए। वह वचार ही करते रहे। इतने में **32** वा **33** बरस की उमर में शंकराचार्य का शरीर टूट गया। उनके मरने से सब लोगों का उत्साह भंग हो गया। यह भी आर्यावर्त्त देशवालों का बड़ा अभाग्य था, यदि शंकराचार्य दश वा बारह बरस भी और जीते तो वद्या का प्रचार यथावत् हो जाता। फर आर्यावत्र्त की ऐसी दुर्दशा कभी नहीं होती, क्यों क जैनों का खण्डन तो हो गया, परन्तु वद्या प्रचार यथावत् नहीं हुआ। इससे मनुष्यों को यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्य

का निश्चय नहीं होने से मन में सन्देह ही रहा। कुछ तो जैनों के मत का संस्कार हृदय में रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रों का भी। यह बात इक्कीस या बाइस सौ बरस पूर्व की है। इसके पीछे 200 वा 300 वर्षों तक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा।

115.

116. फिर उज्जैन में विक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा हुआ। उसने राजधर्म का कुछ-कुछ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्याय से होने लगे थे। उसके राज्य में प्रजा को सुख भी मिला था, क्योंकि विक्रमादित्य तेजस्वी, बुद्धिमान्, शूरवीर तथा धर्मात्मा था, इससे कोई और अन्याय नहीं करने पाता था। परन्तु वेदादिक विद्या का प्रचार उसके राज्य में भी यथावत् नहीं होता था। उसके पीछे ऐसा राजा नहीं हुआ, किन्तु साधारण होते रहे। फिर विक्रमादित्य से 500 वर्ष के पीछे राजा भोज हुए। उसने संस्कृत का प्रचार किया, अतः नवीन ग्रन्थों की रचना और प्रचार किया था वेदादि ग्रन्थों का नहीं। परन्तु कुछ-कुछ संस्कृत का प्रचार राजा भोज ने ऐसा कराया था कि चाण्डाल और हल जोतने वाले भी कुछ-कुछ लिखना पढ़ना और संस्कृत भी बोलते थे। देखना चाहिए कि कालिदास गड़रिया था, परन्तु श्लोकादिक रच लेता था और राजा भोज भी नये-नये श्लोक रचने में कुशल था। कोई एक श्लोक भी रच के उनके पास ले जाता था, उसका प्रसन्नता से सत्कार करता था और जो कोई ग्रन्थ बनाता था तो उसका बड़ा भारी सत्कार करता था। फिर बहुत मनुष्य लोग लोभ से नए ग्रन्थ रचने लगे, उससे वेदादिक सनातन पुस्तकों की अप्रवृत्ति प्रायः हो गई। संजीवनी नाम का इतिहास विषयक ग्रन्थ राजा भोज ने बनाया, उसमें बहुत पण्डितों की सम्मति है। उसमें यह बात लिखी है कि तीन ब्राह्मण पण्डितों ने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण रचे थे। उनसे राजा भोज ने कहा कि और के नाम से तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहीं था। संजीवनी ग्रन्थ में महाभारत की बात लिखी है कि कितने हजार श्लोक **20** बरस के बीच में व्यास जी का नाम करके लोगों ने मिला दिए हैं। ऐसे ही महाभारत का पुस्तक बढ़ेगा तो एक ऊंट का भार हो जायगा। और यदि ऐसे ही लोग दूसरे (महर्षि व्यास आदि) के नाम से ग्रन्थ रचेंगे तो बहुत भ्रम लोगों को हो जायगा। अतः उस संजीवनी ग्रन्थ में राजा भोज ने अनेक प्रकार की बातें उनके समय में विद्यमान पुस्तकों के विषय में और देश के वर्तमान के विषय में तथ्य पूर्ण इतिहास सम्मत लेख लिखे हैं। बटेश्वर के पास होलीपुरा एक गांव है, उसमें चैबे लोग रहते हैं, वह जानते हैं कि जिसके पास वह इतिहास विषयक वह संजीवनी ग्रन्थ है, परन्तु वह पण्डित लिखने वा देखने को किसी को नहीं देता, क्योंकि उसमें सत्य–सत्य बात लिखी है। उसके प्रसिद्ध होने से पण्डितों की आजीविका नष्ट हो जाती है। इस स्वार्थरूपी भय से वह पण्डित उस ग्रन्थ को प्रसिद्ध नहीं करता। ऐसे ही आर्यावर्त्त निवासी मनुष्यों की बुद्धि क्षुद्र हो गई है कि अच्छा पुस्तक वा कोई इतिहास, उसको छिपाते चले जाते हैं। यह इनकी बड़ी मूर्खता है क्योंकि अच्छी बात जो लोगों के उपकार की हो, उसको कभी न छिपाना चाहिए।

117.

118. फिर राजा भोज के पीछे कोई अच्छा राजा नहीं हुआ। उस समय में जैन लोगों ने जहां-तहां मूर्तियां मन्दिरों में प्रसिद्ध की और वे कुछ-कुछ प्रसिद्ध भी होने लगे, तब ब्राह्मणों ने विचार किया कि इन जैनों के मन्दिरों में नहीं जाना चाहिए, किन्तु ऐसी युक्ति रचें कि हम लोगों की आजीविका जिससे हो। फिर उन्होंने ऐसा प्रपंच रचा कि हमको स्वप्न आया है, उसमें महादेव, नारायण, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, हनुमान, राम, कृष्ण, नृसिंह ने स्वप्न में कहा है कि हमारी मूर्ति स्थापन करके पूजा करें तो पुत्र, धन, नैरोग्यादिक पदार्थों की प्राप्ति होगी। जिस-जिस पदार्थ की इच्छा करेगा, उस-उस पदार्थ की प्राप्ति

उसको होगी। फर बहुत मूर्खों ने मान लया और मूर्ति स्थापन करने को कोई-कोई घनी पुरुष लगा। फर पूजा और आजी वका भी उनकी (मूर्तियों की) होने लगी। एक की आजी वका देख के दूसरा भी ऐसा करने लगा। और कसी महाधूर्त ने ऐसा कया क मूर्ति को जमीन में गाड़ के प्रातः काल उठके कहा क मुझको स्वप्न हुआ है। फर उनसे बहुत लोग पूछने लगे क कैसा स्वप्न हुआ है, तब उसने उनसे कहा क देव कहता है क मैं जमीन में गड़ा हूं और दुःख पाता हूं, मुझको निकाल के मन्दिर में स्थापन करें और तू ही पुजारी हो तो मैं सब काम सब मनुष्यों का सद्ध करूंगा। फर वे वद्याहीन मनुष्य उससे पूछते थे क वह मूर्ति कहां है? जो तुम्हारा स्वप्न सत्य है तो तुम दिखलाओ। तब जहां उसने मूर्ति गाड़ी थी वहां सबको ले जाकर भू म खोद कर वह मूर्ति निकाली। सबने देख के बड़ा आश्चर्य कया और सबने उससे कहा क तू बड़ा भाग्यवान् है और तुझ पर देवता की बड़ी कृपा है। इए लए हम लोग धन देते हैं, इस धन से मन्दिर बनाओ। इस मूर्ति का उसमें स्थापन करो। तुम इसके पुजारी बनो और हम लोग नित्य दर्शन करेंगे। तब तो उसने प्रसन्न होके वैसा ही कया और उसकी आजी वका भी अत्यन्त होने लगी। उसकी आजी वका को देख के अन्य पुरुष भी ऐसी धूर्तता करने लगे और वद्याहीन पुरुष उसकी मान्यता व प्रतिष्ठा करने लगे। फर प्रायः मूर्ति पूजन आर्यावर्त्त में फैला।

119.

120. मह र्ष दयानन्द ने मूर्ति पूजा के भारत वा आर्यावर्त्त में प्रचलन का यह वृतान्त अपने वश्व प्र सद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्कारण में सन् **1874** में प्रस्तुत कया था। सारा देश जिसमें सभी मूर्ति पूजक भी शा मल है, इन तथ्यों को नहीं जानता। सत्य को जानना व मानना तथा असत्य को छोड़ना व दूसरों से छुड़वाना ही मनुष्य जीवन का एक उद्देश्य है। इसी उद्देश्य से सत्यार्थ के प्रकाश के लए मह र्ष दयानन्द का यह उपदेश प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है क पाठक इतिहास के इस भूले बिसरे पृष्ठ को जानकर लाभान्वित होंगे। इसके बाद मह र्ष दयानन्द ने वदेशी वध र्मयों के भारत आगमन, मन्दिरों को लूटने और मूर्तियों को तोड़ने आदि की अनेक घटनाओं पर प्रकाश डाला है जिनको आगामी लेखों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

121.

122. –मनमोहन कुमार आर्य

123. पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

124. देहरादून-**248001**

125. फोनः**09412985121**

यह ववाह ऋ ष दयानन्द जी की मान्यता के अनुसार जाति बन्धन तोड़कर हुआ है। प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

AUGUST 20, 2015 LEAVE A COMMENT

उत्तर ऐसा दियाः– वैदिक सद्धान्तों का प्रचार करने के लए शंका समाधान व प्रश्नोत्तर की कला में निष्णात होना आवश्यक है। कार्य क्षेत्र में आठ दस वर्ष तक कार्य करने का अनुभव

होने पर जिसने इस कला में कोई सद् ध प्राप्त नहीं की, उसको सफल मशनरी तथा वद्वान् नहीं माना जा सकता। उसके लए बोलना व लखना एक व्यवसाय है। उसका जीवन उद्देश्यहीन जानो। यह कार्य वही कर सकता है जिसमें मशन की पीड़ा होगी। जिसमें ज्ञान उजाला करने की ललक होगी। उसमें उत्तर देने की कला का अ वर्भाव होगा ही। श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी एक बार पानीपत पधारे। एक घण्टे तक व्यायान दिया। फर आधा घण्टा शंका समाधान के लए दिया करते थे । एक श्रोता ने पूछा, आपके अपने से थोड़ा पहले यहाँ ठाकुर जी का तुलसीजी से ववाह हुआ है। भक्तों ने हर्षोल्लास से उसमें भाग लया। आपका इसके बारे में क्या वचार है?

पण्डित जी ने कहा, ''जितनी यहाँ के भक्तों को इस ववाह पर प्रसन्नता हुई मुझे उससे भी कहीं अ धक हो रही है। यह ववाह ऋ ष दयानन्द जी की मान्यता के अनुसार जाति बन्धन तोड़कर हुआ है।''

यह उत्तर सुनकर श्रोताओं ने करतल ध्वनि से इसका स्वागत कया। फर बोले, '' ववाह का प्रयोजन सन्तान की उत्प त्त है। ये जोड़ी अभागी ही रहेगी । ये ऊत ही रहेंगे। इनके सन्तान तो होगी नहीं।'' इस पर फर करतल ध्वनि हुई। सारी नगरी में पण्डित जी के इस उत्तर की चर्चा होने लगी। यह है उत्तर देने की कला की मौ लकता।

ऋ ष दयानन्द

श्री तैलंग स्वामी की कहानीः-प्रा राजेंद्र जिज्ञासु

AUGUST 19, 2015 LEAVE A COMMENT

उ.प्र. से एक सुयोग्य आर्य युवक आशीष प्रताप संह ने चलभाष पर श्री तैलंग स्वामी की राष्ट्रधर्म में छपी कहानी पर प्रकाश डालने की मांग की। उन्हें बताया गया क इस लेख पर परोपकारी में सप्रमाण ववेचन कया जा चुका है। श्रीयुत भावेश मेरजा गुजराती भाषा में एक पठनीय लेख में तैलंग स्वामी की कहानी की शव परीक्षा कर चुके हैं। संक्षेप से नये प्रमाणों के साथ उक्त गढ़न्त पर वचार कया जाता है। मह ष दयानन्द जी ने वैदिक धर्म ध्वजा फहराने , एकेश्वरवाद के प्रचारार्थ, मूर्तिपूजा आदि अंध वश्वासों के उन्मूलन के लये काशी पर सात बार चढ़ाई की। काशी शास्त्रार्थ में भले ही पण्डितों ने बहुत धाँधली मचाई थी परन्तु काशी के पण्डितों में एक हड़कप सा मच गया।

राष्ट्रधर्म के लेखानुसार तब तैलंग स्वामी का पत्र लेकर उनका कोई व्यक्ति ऋ ष से मला। पत्र में क्या था? यह राष्ट्रधर्म के लेखक को कतई ज्ञान नहीं। पत्र पढ़ते ही ऋ ष दयानन्द ने काशी नगरी छोड़ दी। तब पण्ड़ितों की जान में जान आई। उस काल के पत्रों से यही प्रमा णत होता है। कोई भी ये प्रमाण देख ले।

प्रश्न यह है क तैलंग स्वामी का पत्र पढ़ते ही मह ष ने काशी से प्रस्थान कर दिया, लेखक ने कस आधार पर लख दिया। साधु कहीं कसी नगर को चपक कर तो रहता नहीं । यह कहानी आज तक कसी ने लखी नहीं औरकही नहीं। तैलंग स्वामी की चर्चा उस काल के साहित्य व कसी पत्रिका में तो कसी ने की नहीं। काशी शास्त्रार्थ के पण्ड़ितों के जमघट में उसका नाम तक नहीं मलता। ऋ ष इसके पश्चात् छह बार काशी आये और हर बार शास्त्रार्थ

की चुनौती देकर अपनी हुँकार सुनाते रहे। अन्तिम बार जब काशी आये तब श्री मुन्शी इन्द्रम ण जी को लखा क शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करके कोई भी पण्डित सामने नहीं आया। यह है इस कहानी की पोल पट्टी।

काशी शास्त्रार्थ के बारह वर्ष पश्चात् कोलकाता में पुनः देश भर के पौरा णक ब्राह्मणों को द क्षणा देकर ऋ ष के वरोध में लाया गया ।उस जमघट में भी तैलंग स्वामी का नाम नहीं मलता।

काशी शास्त्रार्थ के छह वर्ष पश्चात् आर्यसमाज की स्थापना हुई। इस काल में जब ऋ ष के साथ कोई संगठन नहीं था तब सागर पार के कई देशों में ऋ ष पर लेख छपते रहे। ऐसे दस्तावेज हमने खोज लये हैं। इन में मह र्ष की पर्याप्त चर्चा है। काशी शास्त्रार्थ की भी चर्चा है। वरोध की भी चर्चा है परन्तु तैलङ्ग स्वामी का नामोलेख तक कहीं नहीं है। इससे प्रमा णत हो गया क यह कहानी एक मनगढ़न्त गप्प है। दस्तावेजों में यह भी लखा मलता हे क स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के उसी वषय (मूर्तिपूजा) पर शास्त्रार्थ करनेके लए ललकार रहा है क वेद के प्रमाण मूर्तिपूजा सद्ध करने की कसी में हिमत हो तो आकर शास्त्रार्थ कर ले परन्तु देश भर के कसी भी वद्वान् में उसका सामना करने का साहस नहीं है।

प्रयाग से छपने वाले Tribune ट्रियून पत्र में भी एक लो में ऐसा ही छपा मलता है। इससे अ धक हम इस वषय में क्या लखें। गप्पें गढ़-गढ़ कर कोई अपने अहं की तुष्टि करना चाहता है तो उसे कौन रोक सकता है?

‘धा र्मक अंध वश्वासों का कारण सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय न करना’ -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

AUGUST 17, 2015 LEAVE A COMMENT

अंध वश्वास को कसने जन्म दिया है? वचार करने पर ज्ञात होता है क अ वद्या और अज्ञान से अन्ध वश्वास उत्पन्न होता है। अन्ध वश्वास दूर करने का उपाय क्या है, इस पर वचार करने पर ज्ञात होता है क ज्ञान व वद्या से अन्ध वश्वास दूर होते हैं। ज्ञान व अ वद्या कहां मलती है? इसका उत्तर है क सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से ज्ञान व वद्या की प्राप्ति होती है। अतः अन्ध वश्वास से बचने वा रक्षा के लये सदग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक है। सद्ग्रन्थ कौन से हैं और कौन से ग्रन्थ सद्ग्रन्थ नहीं है, इसका निर्धारण साधारण लोग नहीं कर सकते अ पतु छल-कपट-स्वार्थ-अ वद्या रहित शुद्ध हृदय वाले वद्वान ही कर सकते हैं। वद्वानों की अनेक श्रे णयां हैं। पुराण व अन्य मत-मतान्तरों के ग्रन्थों के अध्ययन से अज्ञान व अ वद्या उत्पन्न होने से अन्ध वश्वास बढ़ते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम समाज व देश वदेश में होने वाली नाना घटनाओं में पाते रहते हैं। साधारण मनुष्यों के स्वाध्याय का सबसे उत्तम ग्रन्थ कौन सा है? इसका उत्तर है क जिसमें अज्ञान, अ वद्या व अन्ध वश्वास से युक्त भ्रान्तिपूर्ण बातें न हों तथा इसके वपरीत ज्ञान व वद्या उत्पन्न करने वाली बातें हो उसे ही हम सद्ज्ञान युक्त ग्रन्थ की संज्ञा दे सकते हैं।

ऐसे वेद, ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, स्मृति आदि अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु संसार में सबसे उत्तम व सरल ग्रन्थ एकमात्र "सत्यार्थ प्रकाश" ही है।

प्रश्न कया जा सकता है क सत्यार्थ प्रकाश ही अन्ध वश्वासों से मुक्त ग्रन्थ है, इसका क्या प्रमाण है? इसका प्रथम उत्तर तो यह है क यह एक सत्यान्वेषी महापुरूष मह र्ष दयानन्द सरस्वती का लखा हुआ ग्रन्थ है जिन्होंने अपना सारा जीवन सत्य की खोज, योग व ईश्वरोपासना तथा अध्ययन व अध्यापन में अ र्पत कया तथा जो समाज, देश व मनुष्यमात्र सहित प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से भरे हुए थे। यह मह र्ष दयानन्द ने अपना सारा जीवन सच्चे ईश्वर, मृत्यु से बचने के उपायों, धर्म, समाज, देशहित की सभी बातों की खोज में लगाया और वह उसमें सफल हुए थे। वह इस कार्य में इस लए सफल हो सके क उन्हें वेद और वैदिक व्याकरण के सच्चे गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी वरजानन्द सरस्वती मले जिनका सारा जीवन ही सत्य की खोज व भ्रान्तिपूर्ण वषयों से सम्बन्धित सत्य के निर्णय में व्यतीत हुआ था। दोनों गुरू शष्य ने मलकर 3 वर्ष तक सच्चे ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति के स्वरूप तथा धर्म कर्म वषयक सभी वषयों पर गम्भीरता से चन्तन कया। उनका मार्गदर्शक ईश्वरीय ज्ञान वेद था। वेद ईश्वरीय ज्ञान कैसे है? इसका एक उत्तर तो यह है क यह संसार की सबसे प्राचीनतम पुस्तक होने के साथ ही सृष्टि के आरम्भ में चार ऋ षयों अग्नि, वायु, आदित्य और अं गरा को सीधे ईश्वर से इसका ज्ञान मला था। सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में बड़ी संख्या में युवा स्त्री-पुरुष उत्पन्न हुए थे। माता- पता आरम्भ में होते नहीं हैं, अतः सृष्टिकर्त्ता ईश्वर बिना माता- पता के अमैथुनी सृष्टि करता है जो अण्डज व जरायुज न होकर उद् भज सृष्टि के अनुरूप होती है। इन उत्पन्न मनुष्यों को अपने जीवन के कर्तव्यों को जानने, समझने व करने के लए भाषा सहित ज्ञान की आवश्यकता थी। ज्ञान व भाषा वर्तमान में सभी को माता- पता व आचार्यों से मलती है। सृष्टि के आरम्भ में यह तीनों ही नहीं थे। केवल एक चेतन सत्ता ईश्वर थी जिसने इस संसार को बनाया था। दूसरी कार्य प्रकृति वा सृष्टि थी जिससे यह संसार बना था परन्तु जड़ व ज्ञानहीन होने से यह मनुष्यों को ज्ञान देने में सर्वथा असमर्थ होती है।

यह संसार ज्ञान व शक्ति के समन्वय तथा तप-पुरूषार्थ का परिणाम है जिसमें प्रकृति की भू मका उपादान कारण के रूप में होती है। संसार को बनाने हेतु जिस ज्ञान की आवश्यक थी उसमें सब सत्य वद्यायें सम्मि लत थी। संसार की वशालता को देखकर उस चेतन व ज्ञानवान सर्वज्ञ शक्ति की वशालता व सर्वव्यापकता के भी दर्शन होते हैं। ज्ञानवान व सर्वव्यापक होने से उस शक्ति ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं थी। अतः उसने मनुष्यों की आत्माओं में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान को स्था पत कर दिया। उस ज्ञान के कारण मनुष्य परस्पर बोलने लगे व आपस में सभी प्रकार के व्यवहार होने आरम्भ हो गये। सृष्टि को बनाने वाला ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय होने के कारण उसका दिया हुआ वेद भी सब सत्य वद्याओं से युक्त है। इसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। इन तथ्यों का साक्षात्कार वद्यासम्पन्न तथा योग सद्ध वद्वान समा ध अवस्था में करते हैं। मह र्ष दयानन्द ने भी वेद व ईश्वर में निहित सत्य ज्ञान का साक्षात्कार कया और उसके आधार पर ही उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना

की। अपने मन व मस्तिष्क से मत-मतान्तरों की बातों, पूर्वाग्रहों व निजी हितों से मुक्त होकर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से सत्यार्थप्रकाश में निहित वषयों की सत्यता का साक्षात ज्ञान होता है जिसकी साक्षी स्वयं हमारी अर्थात् पाठक की आत्मा देती है। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर उसे समझ लेने पर सभी मत-मतान्तरों की अच्छी व बुरी बातों का ज्ञान मनुष्यों को हो जाता है जिससे वह अन्ध वश्वासों से मुक्त व वद्या व ज्ञान से युक्त हो जाते हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के स्वरूप के ज्ञान सहित अध्ययनकर्ता को अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता है। हमारे इस ववेचन से यह ज्ञात हुआ क ईश्वर ज्ञान का देने वाला आदि स्रोत है। इसके बाद जो भी ग्रन्थ व पुस्तकें अस्तित्व में आई हैं वह सब ऋ ष-मुनियों व साधारण मनुष्यों र चत पुस्तकें हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर व सत्पुरूषों की प्रशंसा है, वह पठनीय हैं और जिसमें एक दूसरे की निन्दा व भ्रान्तियुक्त कथन व सृष्टिक्रम के वरूद्ध अ वश्वनीय तर्क व युक्ति वरूद्ध बातें हैं वह पुस्तकें व ग्रन्थ साधारण मनुष्यों द्वारा ल खत होने से त्याज्य हैं। वह प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। ऐसे ग्रन्थ वष सम्पृक्त अन्न के समान होते हैं। मह र्ष दयानन्द ने समस्त वैदिक साहित्य से ज्ञान का आलोडन कर प्राप्त हुए सत्य ज्ञान को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत कया था। इसे पढ़कर निष्पक्ष भाव से इसके संसार का अन्ध वश्वास निवारण व सभी आधयात्मिक व सांसारिक सत्य व यथार्थ ज्ञान को प्रदान करने वाला अपूर्व सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

अतः सफल जीवन व्यतीत करने के लए कसी भी मत, सम्प्रदाय व पन्थ में न फंस कर यदि सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य को पढ़ा जाये तो मनुष्य अज्ञान व अन्ध वश्वासों सहित अन्धी श्रद्धा व आस्था से भी बच सकता है। जो व्यक्ति ईश्वर से प्राप्त मनुष्य जीवन में सत्य को जानने व उसे धारण करने का प्रयत्न नहीं करता व परम्परागत मतों को आंख मूंद कर यथावत् स्वीकार कर लेता है, उसका जन्म लेना इस लए व्यर्थ सद्ध होता है क परमात्मा से प्राप्त सत्य व असत्य का ववेचन करने के लए प्राप्त बुद् ध का उसने सदुपयोग नहीं कया है। वैदिक वचारधारा जिसका पूरा पोषण सत्यार्थ प्रकाश में हुआ है, उसके अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व निःश्रेयस (मोक्ष प्राप्ति) है। इन दोनों की प्राप्ति वैदिक वचाराधारा के अनुसार जीवनयापन कर 'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष' के रूप में होती है। अतः जीवन के कल्याण व सफलता के लए सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का सजग होकर ववेकपूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यह भी बताना है क सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एक माह में जो अ धकांश ज्ञान प्राप्त होता है वह समस्त वैदिक साहित्य के द्वारा कई वर्षों में होता है। अतः सत्यार्थप्रकाश वैदिक वांग्मय का सार व अर्वाचीन मत-मतान्तरों के यथार्थ स्वरूप का परिचय कराने वाला दुर्लभ व मूल्यावान ग्रन्थ है। एक क व की दो पंक्तियां लखकर इस लेख को वराम देते हैं।

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोनः09412985121

धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण ? स्वघो षत वद्वान का ज्ञान घोटाला

AUGUST 10, 2015 LEAVE A COMMENT

क्या धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण है ?
" वेद प्रकाश" के फरवरी २०१५ के अंक में स्वघो षत वद्वान का एक लेख शंका समाधान प्रका शत हुआ था | जिसमें उन्होंने एक शंका उठाकर उसका समाधान प्रस्तुत कया है |
इस लेख में उन्होंने कहा है क धर्म आत्मा का साभा वक गुण है | इसी लए धर्म के जो दस लक्षण हैं वह आत्मा के स्वाभा वक लक्षण हैं |
इस सम्बन्ध में डा. अशोक आर्य , का पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने इसका खंडन करते हुए इसे वैदिक सद्धांतों के वरुद्ध बताया है | वह कहते हैं क – " क इसके उत्तर में बताना चाहूँगा क यह सत्य है क धर्म के दस लक्षण तो हैं कन्तु यह आत्मा का स्वाभा वक गुण नहीं है क्यों क परम पता परमात्मा ने आत्मा को एक शरीर के माध्यम से इस जगत में भेजा है ता क :
१. वगत जन्मों में कये गए शुभ – अशुभ कर्मों का फल भोग सके |
२. इस जन्म में कुछ नए कर्म करते हुए कुछ नया भी संचय कर सके |
हम जानते हैं क परम पता परमात्मा ने जीव को कर्म करने के लए स्वतन्त्र बनाया है कन्तु फल भोगने के लए वह प्रभु की व्यवस्था के आधीन है | स्वतन्त्र नहीं है | जब उसे उसके कर्मों के अनुसार फल मलना है तो इसमें धर्म के दस नियम कहाँ से आ गए ? यदि जीव अर्थात् आत्मा का स्वाभा वक गुण यह दस प्रकार के लक्षण हैं तो फर प्रतिदिन क़त्ल हो रहे हैं, व्य भचार हो रहे हैं, बलात्कार हो रहे हैं , चोरी की घटनाएं सामने आती हैं , लोग ए टी एम् तक तोड़ कर धन निकाल कर ले जाते हैं तो यह सब कौन कर रहा है ? यदि आत्मा का स्वाभा वक गुण यह दस लक्षण ही हैं तो फर आत्मा तो यह कर ही नहीं सकता | कोई चोरी करता ही न , कोई बलात्कार करता ही न, कसी का कभी क़त्ल होता ही न, कन्तु यह सब हो रहा है | यदि आत्मा का गुण यह दस लक्षण ही है तो फर यह सब कौन कर रहा है ? यह सब कस के आदेश से हो रहा है ? नित्य प्रति जुआ खेलने , शराब व अन्य अनेक प्रकार के नशा करने , दुराचार करने आदि की कथाएँ हमारे सामने आती हैं, दूरदर्शन व् समाचार पत्र इस प्रकार के समाचारों से भरे रहते हैं , यह सब कौन कर रहा है ? इन दस लक्षणों वाली आत्मा जिसे अपने स्वाभा वक गुणों में संजोए हुए है , वह तो यह सब कर ही नहीं सकेगी , फर या तो यह सब कुछ परमात्मा कर रहा है या फर मानव कर्म करने में स्वतन्त्र होने के कारण , सब प्रकार के अच्छे व बुरे कर्म वह स्वेच्छा से कर रहा है | जिन का फल उसे भोगना होता है | कुछ अच्छे व बुरे कर्म वह वगत जन्मों के सं चत कर्मों के आधार पर फल स्वरूप कर रहा है तथा कुछ नए कर्म भी कर रहा है |
स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने एक पुस्तक " आदर्श नित्यकर्म व ध" के "समर्पण प्रकरण" में "

हे दयानिधे ! " ... की व्याख्या करते हुए लखते हैं क –
हे दया, कृपा, करुणा व वात्सल्य के अनन्तागार प्रभुदेव ! आप एसी कृपा कीजिए क हम आप की जो स्तुति – प्रार्थना व उपासना कर रहे हैं , उसमें हम नितांत तन्मय तल्लीन व एकाग्रमना हो सकें , हमारी यह प्रार्थानोपासना एसी सार्थक व प्रभाकारी हो जिससे हमारे धर्म (आत्मा के स्वाभा वक गुण) अर्थ (साधना स्वरूप आपसे प्राप्त दिव्य वभूतियाँ , काम (आप की वेदाज्ञा का सतत पालन एवं आपको मलने की इच्छा) मोक्ष (पूर्णत: आपके आनंद स्वरूप को प्राप्त होना) आदि पुरुषार्थ चतुष्टय हैं, वह अ वलम्ब सद्ध हों |
इसमें स्वामी जी ने धर्म को आत्मा का स्वाभा वक गुण बताया है |
सोशल मी डया के कुछ लोगों का भी मानना है की धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण नहीं है |
श्री मदन रहेजा , मुंबई लखते हैं :-
यदि धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण होता तो मनुष्य को धर्म धारण करने के लए बार – बार क्यों कहना पड़ता हाँ ! आत्मा धर्म को सहजता से धारण कर सकता है क्यों क धर्म सरल, सीधा और सहज होता है | आत्मा अल्पज्ञ होने से धर्म की बातों को भूल जाता है इस लए धर्म (अच्छे गुणों को) धारण करने का नाम है |
यदि धर्म जीवात्मा का स्वाभा वक गुण होता तो कोई भी मनुष्य इतना दू:खी नहीं होता | धर्म धारण करके ही वह सुखी होता है | धर्माचरण करने से वह अपवर्ग का भागी होता है |
मनुष्य शुद्र (अज्ञानी) पैदा होता है उसको मनुष्य बनाया जाता है , संस्कार दिए जाते हैं तभी वह मनुष्य बनता है इसी लए वेद भी कहता है – " मनुर्भव " | धा र्मक बनने के लए धर्म धारण करना पड़ता है | पशु – पक्षी मांसाहारी भी होते हैं और शाकाहारी भी इस का यह अर्थ नहीं क वे धा र्मक या अधा र्मक होते हैं |
एक और मत्र श्री वश्वभूषण जी लखते हैं | यदि धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण होता तो सभी धा र्मक ही होते कन्तु ऐसा नहीं है , जिन – जिन को धा र्मक वातावरण मलता है वे धा र्मक हो जाते हैं और जिन्हें धा र्मक वातावरण नहीं मलता वे धा र्मक नहीं हो पाते | यदि धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण होता तो पशु पक्षी भी धा र्मक होते | क्या आप मानते हैं क मनुष्यों की आत्मा और पशु प क्षयों की आत्माओं में कोई अंतर होता है | नहीं | आत्मा का तो कोई लंग भी नहीं होता , आत्मा का दोनों लंगों में प्रयोग कया जाता है | आत्मा कभी नहीं मरता और आत्मा कभी नहीं मरती | दोनों ही ठीक हैं | अंतिम बात आत्मा के दो ही स्वभाव हैं | दुःख से छूटना और सुख प्राप्त करना | यह मनुष्य और पशुओं में समान है |
अत: धर्म आत्मा का स्वाभा वक गुण नहीं अ पतु नै मतिक गुण है |
स्वाध्यायशील पाठक इस पर चंतन मनन करें तथा जो सत्य है वह ग्रहण करें तथा असत्य का त्याग करें | – सम्पादक

टिपण्णी :
वेद प्रकाश पत्रिका के इस लेख पर हम टिपण्णी करते हुए कह सकते हैं क संभवतया इस स्वघो षत वद्वान ने अपना यह कल्पित शंका समाधान का प्रश्न स्वामी जगदीश्वरानन्द के शब्दों से लया होगा यह जो भी लखता है सब इधर उधर से उठाकर उसे अपने ढंग से लखकर अपना बनाने का यत्न करता है | उसके इस शंका समाधान से इस बात की पुष्टी भी होती है क संभवतया स्वामी जगदीश्वरानंद जी के उपर दिए एक शब्द को उसने उठाया और बिना वचारे यह शंका समाधान का रूप देकर पाठकों को मार्ग से च्युत करने का वफल

प्रयास कया |साथ ही हम चाहते हैं क पाठक और हमारे मत्र इस प्रकार के क थत लेखकों के लेखों व साहित्य को पढ़ने के पश्चात वचार करें क इसमें कुछ सत्य है भी या नहीं |यह लेखक क थत रूप से बड़े लेखकों का अपमान करने के लए कुछ उलटा सीधा बोलते रहते हैं तथा उन के लेखन पर दूसरों को फोन व कसी अन्य ढंग से उनके वरुद्ध भ्रांत लेख देने के लए भी कहते हैं |हमारे मत्र सजग रहते हुए इस प्रकार के लेखकों के वचारों से बचाते हुए समाज के कल्याण के लए लगे रहें |यही उत्तम होगा |–

इतिहास प्रदूषक वदु ष ले खका बहन फरहाना ताज "पार्ट – २"

AUGUST 10, 2015 6 COMMENTS

अं गरा ऋ ष के वषय में मत्स्य पुराण, भागवत, वायु पुराण महाभारत और भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहा सक कोष में वर्णन कया गया है।

मत्स्य पुराण में अं गरा ऋ ष की उत्प त्त अग्नि से कही गई है।

भागवत का कथन है क अं गरा जी ब्रह्मा के मुख से यज्ञ हेतु उत्पन्न हुए।

महाभारत अनु पर्व अध्याय 83 में कहा गया है क अग्नि से महा यशस्वी अं गरा भृगु आदि प्रजापति ब्रह्मदेव है।

भार्गववंश की मान्यतानुसार मह र्ष भृगु का जन्म प्रचेता ब्रह्मा की पत्नी वीरणी के गर्भ से हुआ था। अपनी माता से सहोदर ये दो भाई थे। इनके बडे भाई का नाम
अं गरा था।

ब्रह्मपुराण अध्याय – ३४ मे ऋ ष अं गरा को वषमबुद् ध से पढ़ाने वाला गुरु अर्थात शष्यो मे भेदभाव कर पढ़ाने वाला बताया है

इसके अतिरिक्त अं गरा ऋ ष को शवपुराण मे लोभी लालची आदि बताया है

आप सोच रहे होगे मै ये सब क्यो बता रहा हूं ?

इस लए बता रहा हूं क आर्यो के ऋ ष सद्धांतो को बदलने की गहरी साजिश चल रही है वेदो मे इतिहास सद्ध करने का षडयंत्र रचा जा रहा है यकीन नही ?

फरहाना ताज जी जैसी वदु ष ले खका का पोस्ट पढ़े वो ये साबित करने की फराक मे नजर आती है क कैलाश के राजा शंकर और हृदय मे वेद ज्ञान प्रकाश पाने वाले ऋ षयो मे एक ऋ ष अं गरा एक ही है

इनकी लेखनी यही नही रुकी इसके आगे इन्होने और लखते हुए जोर डाला क शव की पूजा करनी है मतलब सच्चे शव की तो अं गरा ऋ ष को पूजो यही नही हमारी बहन फरहाना ताज जी लखती है :

"अरे भोले लोगो देवो के देव आदि महादेव की ही पूजा करनी है तो अं गरा की पूजा करो, शवपुराण में भी शव का आदि नाम अं गरा ही है और अं गरा के मुख से परमात्मा की वाणी अथर्ववेद प्रकट हुआ, इस लए वेद पढ़ो।"

मतलब समझ आया ?

हम देवो के देव महादेव यानी ईश्वर की बात करते है क्यो क महादेव ईश्वर को ही संबोधन है हम उन्ही की उपासना करते है मगर हमारी बहन शायद हमारे सद्धांतो पर चोट करके उन्हे बदल कर हमे ईश्वर के स्थान पर मनुष्य की पूजा करवाना सखाना चाह रही है ले कन भूल गई हिन्दू समाज मे भी मुर्दापूजा निकृष्ट है आप उन्हे सच्चाई बताने की जगह एक मुर्दापूजा से निकाल दूसरी मुर्दापूजा मे दा खला दिलवा रही हो जैसे आर्य समाज मे अं गरा ऋ ष को शव घो षत कर वेदो मे इतिहास साबित करना चाहती हो

ऋ ष अं गरा और शव को एक बताने से पहले शवपुराण पर ही सही से दृष्टि डाल ली होती है, क्यों क शवपुराण में ही शव की शादी के चक्कर में अं गरा ऋ ष को लालची और लोभी बताया है,

क्या आप लोभी और लालची व्यक्ति को शव या अं गरा मान सकती हो ? ऊपर और भी प्रमाण दिए हैं की पुराणो में ऋ ष अं गरा का चरित्र कैसा दिखाया है – यदि आपने पुराण ही मानने हैं तो कृपया ऋ ष सद्धांतो पर चलने वाली स्वयं की उद्घोषणा न करे क्यों क ऋ ष ने महापुरषो के चरित्र पर दाग लगाने वाले पुराणो को त्याज्य बताया है और यहाँ ऋ ष अं गरा के चरित्र पर भी पुराण आक्षेप लगा रहे हैं, बेहतर है आप अपने लेख को ठीक करे।

मेरी बहन आर्य समाज सद्धांत पर आधारित है कृपया अप्रमा णक तथ्यहीन और मनगढंत बात लखने से पूर्व एक बार ऋ ष के सद्धांत और उनके महान कर्मो पर दृष्टि जरूर डाले

हो सके तो सत्य को स्वीकार कर असत्य को त्याग दे

नमस्ते

इतिहास प्रदूषक "फरहाना ताज"

AUGUST 7, 2015 37 COMMENTS

आर्य समाज में प्र क्षप्त और झूठी बातो का प्रचार असहनीय है

……………………………………………………………………………………………………
…..

फरहाना ताज जी की बहुत सी पोस्ट देखी – बहुत से मत्र बंधू इन पोस्ट्स को व्हाट्सप्प पर प्रसारित भी करते हैं – कुछ चीज़े वैदिक संप त पुस्तक से उद्धृत हैं और कुछ इनके अपने दिमाग की उपज है –

जो वैदिक संप त से उद्धृत है वो ठीक लगता है मगर जो इनके अपने दिमाग की उपज (व्याख्या) है वो गड़बड़ झाला है – आर्य समाज को बदनाम न करे – आपकी बहुत सी पोस्ट

पर कमेंट कया पर आपने आजतक जवाब नहीं दिया – ये बहुत ही खेद का वषय है – कृपया समझे –

1. आपकी पुस्तक “घर वापसी” में आपने अपने पति को आर्य समाजी बताया – मगर वही आर्य समाजी बंधू एक्सीडेंट के बाद पौरा णक बन जाता है ? ऐसा क्यों ?

क्या आप इसे मानती हैं ? यदि हाँ तो आप अंध वश्वास और चमत्कार वाली झूठी बातो का समर्थन करती हैं जो आर्य समाज के सद्धांत वरुद्ध है। कृपया स्पष्टीकरण देवे।

2. हनुमान जी – एक ऐसा वीर, धर्मात्मा, श्रेष्ठ पुरुष जिसका रामायण में बहुत उत्तम चरित्र है जो रामायण में पूर्ण ब्रह्मचारी पुरुष है। मह र्ष दयानंद भी हनुमान जी के ब्रह्मचर्य से पूर्ण सहमत थे। फर आपने ऐसे महावीर हनुमान को गृहस्थ घो षत कर दिया वो भी बिना कोई प्रमाण ?

केवल द क्षण के मंदिरो को देखकर ही आपको लग गया की हनुमान जी ब्रह्मचारी नहीं गृहस्थ थे ? ऐसा मंदिर तो दिल्ली के भैरो मंदिर में भी देख लेती वहां भी हनुमान जी के चरित्र को दू षत कया गया है जैसे आप द क्षण के मंदिरो को प्रमाण मान कर एक पूर्ण ब्रह्मचारी को गृहस्थ घो षत करकर ? यदि वहां के मंदिरो को देखकर ही आपको सद्ध हो गया की हनुमान जी गृहस्थ ही हैं तो वहां के मंदिरो में तो हनुमान जी बन्दर स्वरुप भी दर्शाया गया होगा तब उन्हें क्यों नहीं मान लेती ?

3. आपने अपनी एक पोस्ट में कहीं लखा था की ऋ ष अं गरा ही शव थे – जो कैलाश के राजा हुए – तो मेरी बहन मैं आप से कुछ पूछना चाहता हु –

यदि ऋ ष अं गरा ही शव थे जो कैलाश के राजा हुए तो इसका मतलब बाकी के बचे तीन ऋ ष भी कुछ न कुछ होंगे ? मतलब वो भी कहीं के राजा हुए होंगे ? यानी वो वेद ज्ञान प्राप्त कर राजा हो गये ? फर उन्होंने वो ज्ञान अन्य मनुष्यो को कैसे सुनाया होगा ? क्यों क ये वेद श्रुति हैं।

यदि फर भी मानो तो एक बात बताओ – हमारा इतिहास यही बताता है की इस धरती का पहला राजा “स्वयाय्मभव मनु” महाराज थे – और इसी बात को मह र्ष दयानंद भी बता गए। अब मुझे आप बताओ यदि “स्वयाय्मभव मनु” पहले राजा थे तो अं गरा ऋ ष इनसे पहले हुए होंगे क्यों क उन्हें वेद ज्ञान प्रका शत हुआ – तो वो आप शव कल्पना कर कैलाश का राजा बना दिया – तो “स्वयाय्मभव मनु” पहले राजा कैसे हुए ?

कृपया अभी इन ३ के जवाब ही दे देवे – बाकी की आपकी अनेको पोस्ट्स पर जो आप त्त है उनका भी निराकरण आपसे अवश्य मांगेंगे।

नोट : आपसे निवेदन है कृपया आर्य समाज के सद्धांतो और नियमो को भली प्रकार समझ कर तब सत्य और असत्य निष्कर्ष निकालकर पोस्ट लखा करे। हिन्दू समाज वैसे ही बहुत से अंध वश्वासों में डूबा है – अब आर्य समाज को भी अन्ध वश्वास की दलदल न बनाये।

नमस्ते।

क्या रंतिदेव के रसोई में गौ वध होता था ?

AUGUST 1, 2015 1 COMMENT

हमारे ब्लॉग पर ही एक अति जोशीले वपसना साधक ले कन कम्युनिस्ट छाप पुस्तको को पढ़ अपने को अति ज्ञानी समझने वाले एक बन्धु ने राजा रन्तिदेव के स्र्सोई में गौ वध का उलेख कया |चु क जिस पुस्तक से इन्होने चेपा है उसके खंडन में पहले ही " अ रिव्यू ऑफ़ बीफ इन अ कएन्त इं डया " लखी जा चुकी है जिसका उत्तर कम्यूनिस्टो पर नही है |इसके आलावा एक पुस्तक इन्ही के क्मुय्निष्ट छाप के द्वारा लखी गयी जिसका उत्तर आर्य समाज की तरफ से रिप्लाई ऑफ़ dn झा के नाम से लखी गयी है |अब हम उन्ही का पुन खंडन करते है |

इनके द्वारा दिया गया आरोप –

महाभारत में रंतिदेव नामक एक राजा का वर्णन मलता है जो गोमांस परोसने के कारण यशस्वी बना. महाभारत, वन पर्व (अ. 208 अथवा अ.199) में आता है

राज्ञो महानसे पूर्व रन्तिदेवस्य वै द् वज
द्वे सहस्रे तु वध्येते पशूनामन्वहं तदा
अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा
समांसं ददतो ह्यान्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः
अतुला कीर्तिरभवन्नृप्स्य द् वजसत्तम
-महाभारत, वनपर्व 208 199/8-10

अर्थात राजा रंतिदेव की रसोई के लए दो हजार पशु काटे जाते थे. प्रतिदिन दो हजार गौएं काटी जाती थीं मांस सहित अन्न का दान करने के कारण राजा रंतिदेव की अतुलनीय कीर्ति हुई. इस वर्णन को पढ कर कोई भी व्यक्ति समझ सकता है क गोमांस दान करने से यदि राजा रंतिदेव की कीर्ति फैली तो इस का अर्थ है क तब गोवध सराहनीय कार्य था, न क आज की तरह निंदनीय

यहा पर इन्होने वध्यते शब्द देख गौ हत्या अर्थ लया जब क व्याकरण का प्रमा णक ग्रन्थ से ही इस बात का खंडन होता है अष्टाध्यायी के अनुसार – 'वध' धातु स्वतन्त्र है ही नहीं जिसका अर्थ 'मारना' हो सके ,मरने के अर्थ में तो 'हन्' धातु का प्रयोग होता है |पा णनि का सूत्र है "*हनी वध लङ् लङ्ु च* "इस सूत्र में कर्तः हन् धातु को वध का आदेश होता है अर्थात वध स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नही हो सकता है |अतः व्याकरण के आधार पर स्पस्ट है की की ये '*वध्येते*' हिंसा वाले वध के रूप में नहीं हो सकते हैं |तब हंमे यह ढूढ़ना पड़ेगा की इस शब्द का क्या अर्थ है और निश्चय ही ये हत्या वाले 'हिंसा' नहीं अ पतु बंधन वाले ' बध बन्धने' धातु है |

अ पतु यह दान के अर्थ में होगी |पा णनि ने गौहन सम्प्रदाय के कहने से भी इसी बात की पुष्टि की है एक व्याकरण का समान्य बालक भी जनता है की सम्प्रदाय चतुर्थ वभक्ति दान के अर्थ में या के लए में आती है |जब क हिंसा आदि के लए अपादान भी बोल सकते थे |

आगे इसी में समास शब्द आया है मांस से यहा प्राणी जनित मॉस नही बल्कि अन्न है ये आगे के प्रमाण में भी स्पष्ट करेंगे शतपथ ब्राह्मण ११/७/१/३ में आया है परम अन्न मॉस " अब परम अन्न क्या है इस बारे में अमर कोष कहता है – परमान्ना तु पायसम अर्थात चावल की खीर परम अन्न है |तो यहा भी कोई मॉस नही है क्यू क व्यास ने काफी जटिल श्लोको में महाभारत की रचना की थी जिसके बारे में खुद कृष्ण इस तरह से कहते है – *"इसमें ८८८० श्लोक हैं जिनका अर्थ मैं जनता हूँ , सूत जी जानते हैं और संजय जानते हैं या नहीं ये मैं नहीं जनता .."*| अब आप स्वयं ही सोचये की जिनके अर्थ को संजय जानते हाँ या नहीं इसमें संशय है वो क्या इतने सीधे होंगे की उनकी गूढता और प्रसंग का वचार कये बिना केवल शाब्दिक अर्थ (वो भी व्याकरण को छोड़कर) ले लया जाय ?

इस तरह देखा महाभारत काफी गूढ ग्रन्थ है |अंब महाभारत की ही अन्तीय सा क्षयों से राजा रन्तिदेव पर लगे आरोपों का खंडन करते है –
द्रौण पर्व के अनुसार नारद जी जब संजय के पुत्र के मर जाने पर शौक में बेठे संजय को समझाते है तो संजय को राजा रन्तिदेव के बारे में कहते है –

इसे गीताप्रेस से प्रका शत महाभारत का पेज यहा लगा कर बताते है –

ये द्रौण पर्व ६७ से है यहा स्पष्ट लखा है क २ लाख रसोइये भोजन बनाते थे तथा रन्तिदेव ऋ षयों आदि को स्वर्ण ओर गौओ का दान करते थे |श्लोक में ही अन्न शब्द है जिससे वहा मॉस का तो कोई काम ही नही नजर आता है |इस में एक आलम्भ शब्द से आप लोग मारना अर्थ करते है ले कन आल्म्भ शब्द स्पर्श के लए भी प्रयोग होता है |पारसार गृहसूत्र में २/२/१६ में उपनयन संस्कार में शष्य को गुरु के ह्रदय को छूने पर ह्रदय आल्म्भं शब्द आया है वहा स्पर्श ही कया जाता है न की ह्रदय को काटा जाता है |मनु २/१७९ में पत्नी का आल्मभं शब्द से छूना आया है |इसी तरह गौतम धर्मसूत्र में अकारण इन्द्रियों का स्पर्श का निषेध आलम्भ शब्द से कया है -२/२२ ||प्राप्ति अर्थ में भी आलम्भ का प्रयोग निरुक्त १/१४ में हुआ है |मह्रिषी काशकृत्सन ने अपने धातु पाठ में ल भ धारणे (१/३६२) से धारण अर्थ में ही कया है |अतः यहा वध अर्थ क्यूँ लया ये आप जाने |न ही प्रकरण ओर महाभारत के सद्धांत अनुसार यहा वध शब्द लेना सही है | क्यू क इसी महाभारत में गौ वध करने वालो को पापी कहा है जिसका प्रमाण भी गीताप्रेस की महाभारत से देते है |

शान्ति पर्व २९ में आया है –

यहा गौ वध करने वाले गौ ही नही बैल के वध करने वाले को पापी कहा है फर राजा रन्तिदेव को गौ ह थया करने पर महान बताना वरोधी कथन है |ऐसे में आप स्वयम फस जाते हो की कस श्लोक को सत्य माने जब क दोनों श्लोक सत्य है क्यू क रन्तिदेव हत्या नही दान करते थे जो द्रौण पर्व से हम सद्ध कर चुके है |इस लए उन्हें महान राजा कहा है |महाभारत में अंहिसा ही परम धर्म बताया है ये जगह जगह आया है |ओर दान को धर्म

माना है जिनमे गौ दान ही बताया है |

उपरोक्त महाभारत का वनपर्व २०० का अध्याय गौ दान पर ही जोर डाल रहा है इससे स्पष्ट है क महाभारत दान को ही मान्यता देता है हत्या को नही |
फर आप कहते है

रंतिदेव का उल्लेख महाभारत में अन्यत्र भी आता है.

शांति पर्व, अध्याय 29, श्लोक 123 में आता है क राजा रंतिदेव ने गौओं की जा खालें उतारीं, उन से रक्त चूचू कर एक महानदी बह निकली थी. वह नदी चर्मण्वती (चंचल) कहलाई.

महानदी चर्मराशेरूत्क्लेदात् संसृजे यतः
ततश्चर्मण्वतीत्येवं वख्याता सा महानदी

कुछ लो इस सीधे सादे श्लोक का अर्थ बदलने से भी बाज नहीं आते. वे इस का अर्थ यह कहते हैं क चर्मण्वती नदी जी वत गौओं के चमडे पर दान के समय छिड़के गए पानी की बूंदों से बह निकली.

इस कपोलकप्ति अर्थ को शाद कोई स्वीकार कर ही लेता यदि का लदास का 'मेघदूत' नामक प्र सद्ध खंडकाव्य पास न होता. 'मेघदूत' में का लदास ने एक जग लखा है

व्यालंबेथाः सुर भतनयालम्भजां मानयिष्यन्
स्रोतोमूर्त्या भु व परिणतां रंतिदेवस्य कीर्तिम

वास्तव में श्लोक तो आपने तोड़ मरोड़ के अर्थ कया है जब क आपकी बुद् ध का क्या कहना महाभारत की बात पर का लदास का काल्पनिक महाकाव्य भी ले आये ले कन वो भी आपकी कल्पना मात्र है उसमे भी आप सफल नही है |

यहा गीता प्रेस द्वारा प्रका शत महाभारत से पेज दर्शाते है –

यहा कही भी पुरे प्रकरण में गौ को मारना ओर श्लोक में रक्त ओर बूंद बूंद टपकना शब्द नही है मतलब आपने अपनी कल्पना से यह शब्द गढ़ लए |ओर ध्यान देने वाली बात है की यदि रन्तिदेव २००० गाय प्रतिदिन मारता तो साल में होती ७२०००० गाय ओर इस तरह लगभग कुछ सालो में गायो का अस्तित्व ही मट जाना चाहिए था ले कन ऐसा नही हुआ इस लए गौ हत्या बताना कल्पना ही है | इस पेज में आगे पढिये की रन्तिदेव के यज्ञ में पशु अपने आप आ जाते है |अब आप वपसना साधक सोच सकते है क कोई पशु को मारता है तो क्या पशु उसके पास अपने आप जाते है या जो पशुओ से प्रेम करता है उसके पास अपने पास जाते है |शायद आपने गाय को देखा होगा यदि ग्रामीण जीवन का अनुभव कया होगा तो गाय को जो व्यक्ति रोटी देता है उसके पास अपने आप चली जाती है जब क मारने वाले को या तो सींग दिखाती है या दूर भागती है क्यूं क उससे भय होता है जब क रन्तिदेव के पास अपने आप पशुओ का आना सद्ध करता है क रन्तिदेव से पशुओ में भय नही था बल्कि प्रेम था |क्यूं क अवश्य ही यज्ञ से उन्हें भी अन्न आदि मल जाता होगा | इसी पेज के लाइन कये हुए एक श्लोक में तो स्पष्ट लखा है क रन्तिदेव ब्राह्मणों से दाल भात कहने को कह रहे है मॉस नही |जिससे हमारे उपरी कथन को ही बल मलता है क रन्तिदेव की रसोइय में अन्न ही बनता था ओर अति थ भी अन्न ही खाते थे मॉस नही | च लए अब आपके का लदास वाले की समीक्षा करते है उस श्लोक में भी खून ,टपकना .बूंद बूंद शब्द नही है बल्कि जल से नहलाना ही है आपने पूरा श्लोक रखा ही नही –

आराध्य एनम शरवणभवत देवं उल्लग्धिताश्ना
सद्ध द्वन्दे: जलकणभयात बी ण भ: मुक्तमार्गः |
व्यालम्बेधा: सुर भलनया आलाम्भजात आनयिष्यन
स्रोतोंमुर्त्या मू व परिणाताम् रन्तिदेवस्य कीर्तिम ||– पूर्व मेघ ४५
यहा का लदास ने भी जल से ही नदी मानी है जल कण आदि शब्द इसके वाचक है वेसे इस शलोक का भाष्य करते हुए माधव शास्त्री अपने ग्रन्थ " काव्यसरा संग्रह "में लखते है – "
सुर भ तनया – गाव: तान्सा आलम्भन प्रोक्ष्ण ततो जाता प्रसूता मू व ,च स्रोतोंमृर्या प्रवाहरूपेण ,परिणता रूपान्तर गताम |- पेज न १८ "
अर्थात गायो को जल से नहलाने ओर धोलाने से जो पानी जमीन पर गरता वो प्रवाह रूप में गतिमान हो गया |
इससे स्पष्ट है क वादी ने ही अर्थ तोड़ मरोड़ कर कया है जब क का लदास ,ओर उसके टीकाकार भी जल से ही नदी मानते है |कोई मुर्ख ही होगा जो खून से नदी बनना मान ले |
ओर ये कथन नदी बनना भी अलंकारित प्रयोग है क्यूं क नदी तो नहलाने से भी नही बनती हाँ इतना जल अवश्य इक्ठटा हो जाता होगा क उसे नदी से सम्बो धत करना पड़ता होगा |
रन्तिदेव का प्रकरण यज्ञ सम्बन्धित है ओर यज्ञ में पशु हत्या को धूर्तो की मलावट बताया गया है महाभारत ही इसे धूर्तो की मलावट बताती है तो रन्तिदेव के यज्ञ में पशु बद्ध मानना महाभारत के वरुद्ध है जिसकी संगीति नही बैठती |वादी के आक्षेप का सारा खंडन यह श्लोक ही कर देता है – शान्ति पर्व २६५ / ९ " यज्ञ में जीव हत्या आदि धूर्तो के कार्य . मलावट है वेद में तो अंहिसा वहित यज्ञ कर्म ही है |"
यज्ञ में पशु को छुआ जाता था मारा नही पशु मारने का निषेध पुराण जेसे ग्रन्थ भी करते है –
" पशुआलम्भं न हिंसा " (भागवत ११.५.१३) अर्थात यज्ञ में पशु का स्पर्श होता है हिंसा नही |
यहा तक वादी के रन्तिदेव पर लगाये आरोपों का खंडन हमने कर दिया है ओर निष्कर्ष निकलता है की राजा रन्तिदेव दान करते थे हत्या नही |
महाभारत गौ को अवध्य मानती है ओर हत्यारे को पापी इसके अतिरिक्त अन्य श्लोक इसके वपरीत दीखते है वो क्षेपक ही है महाभारत में क्षेपक पर हम कभी कसी दिन प्रमा णत पोस्ट करेंगे |
महाभारत के शब्दों में धर्म क्या है लख लेख की समाप्ति करते है – " न भूतानाहिंसाया ज्यायान धर्मोऽस्ति "(शान्ति पर्व २५२ /३०) " कसी की हिंसा न करना ही सबसे उत्तम धर्म है |
संध र्भत ग्रन्थ अथवा पुस्तके –

(१) **review of beef in acient india – unkonwn**
(2) महाभारत (गीताप्रेस)- अनुवादक पं डत राम नारायणदत्त शास्त्री
(३) काव्यसरा संग्रह – माधव शास्त्री

रामायण में व र्णत लक्ष्मण रेखा का मथक – सुलक्षण रेखा की सच्चाई

हमारे महान भारत में पहले अनेको ऋ ष, मह र्ष, ज्ञानी, वद्वतजन होते थे जो धर्म, ग्रन्थ और इतिहास का अतिसूक्ष्म निरिक्षण करकर सत्य असत्य से जनता को सदैव परि चत करवाते रहते थे। कालांतर में ये पद्धति मृतप्राय हो गयी और अनेको मूर्खो, लालची, लोभी, कुसं गयो द्वारा धर्म और इतिहास वषयक सामग्री में मलावट की जाने लगी। जहाँ मलावट संभव नहीं हो सकती थी वहां मलावट के स्थान पर लोकोक्ति के माध्यम से मथ्या जाल प्रपंच रचा गया।

इस आर्यावर्त में दुर्भाग्य से वद्वानो की कमी होने के कारण सत्य असत्य का निर्धारण करने के ठेका ढोंगी, कपटी, चालाक, तथाक थत स्वयंभू धर्म के ठेकेदारो ने ले लया। फर तो मौज बन आई। महापुरषो को बदनाम कया जाने लगा। सत्य इतिहास को बदनाम कया गया। द्रौपदी का चीरहरण, हनुमान जी बन्दर स्वरुप, ब्रह्मा जी के ४ सर आदि अनेको मथ्या कपोलकल्पित कथाये प्रचारित की जाने लगी। भारतीय जनमानस अपने ही इतिहास से रुष्ट होकर ईसाई, मुसलमान आदि पथभ्रष्ट होना स्वेच्छा से स्वीकार करने लगे। क्यों क वो अपनी बुद् ध से ऐसे इतिहास को अपनाना नहीं चाहते थे। ऐसे ही एक कथा रामायण में जोड़ी गयी :

लक्ष्मण रेखा

जो महानुभाव लक्ष्मण ने सीता माता की रक्षा हेतु खेंची थी। ले कन ये पौरा णक मथ्या ज्ञान बांटने वाले कभी ये नहीं बताते की यदि ये रेखा वाकई लक्ष्मण जी ने खेंची थी तो फर सीता माता का अपहरण कैसे हो गया ?

आइये एक नजर वाल्मी क रामायण पर डालते हैं और इस मथ्या कपोलकल्पित लोकोक्ति का सत्य जानते हैं :

रामायण जैसा महाकाव्य ऋ ष वाल्मी क ने लखा है। ये महाकाव्य इतना अनूठा है की आने वाले समय के अनेको क वयों ने भी इस महाकाव्य पर अपनी अपनी पुस्तके लखी। ले कन हमें ये ध्यान रखना चाहिए की रामायण वषय पर प्रमा णकता केवल वाल्मी क ऋ ष द्वारा र चत वाल्मी क रामायण की ही होती है। दे खये ऋ ष वाल्मी क क्या लखते हैं :

श्री राम जब मृग रूप में मारीच को पकड़ने जाते हैं और मृग (मारीच) श्री लक्ष्मण को श्री राम की आवाज़ में पुकारता है तब माता सीता द्वारा मा र्मक वचन कहे जाने पर श्री लक्ष्मण अपशकुन उपस्थित देखकर माता सीता को सम्बो धत करते हुए कहते हैं –

"रक्षन्तु त्वाम…पुनरागतः "
[श्लोक-३४,अरण्य काण्ड , पञ्च चत्वा वंशः]

अर्थात - वशाललोचने ! वन के सम्पूर्ण देवता आपकी रक्षा करें क्यों क इस समय मेरे सामने बड़े भयंकर अपशकुन प्रकट हो रहे हैं उन्होंने मुझे संशय में डाल दिया है . क्या मैं श्री रामचंद्र जी के साथ लौटकर पुनः आपको कुशल देख सकूंगा ?"

माता सीता लक्ष्मण जी के ऐसे वचन सुनकर व्य थत हो जाती हैं और प्रतिज्ञा करती हैं क श्रीराम से बिछड़ जाने पर वे नदी में डूबकर ,गले में फांसी लगाकर ,पर्वत- शखर से कूदकर या तीव्र वष पान कर ,अग्नि में प्रवेश कर प्राणान्त कर लेंगी पर 'पर-पुरुष' का स्पर्श नहीं करेंगी .

[श्लोक-३६-३७ ,उपरोक्त]

माता सीता की प्रतिज्ञा सुन व् उन्हें आर्त होकर रोती देख लक्ष्मण जी ने मन ही मन उन्हें सांत्वना दी और झुककर प्रणाम कर बारम्बार उन्हें देखते श्रीरामचंद्र जी के पास चल दिए .[श्लोक-39-40] .

स्पष्ट है इस पुरे प्रकरण में कहीं भी लक्ष्मण जी ने कोई रेखा नहीं खींची। यहाँ तर्क दृष्टि से देखा जाये तो भी "लक्ष्मण रेखा" से सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता क्यों क यदि एक लक्ष्मण रेखा से ही माता सीता की सुरक्षा हो सकती थी तो प्रभु राम लक्ष्मण को साथ क्यों नहीं ले गए ?

या फर दूसरा तर्क ये है जो श्री राम ने लक्ष्मण जी को निर्देश दिया :

"प्रद क्षणेनाती ....शङ् कतः '

[श्लोक-५१ ,अरण्य काण्ड ,त्रिचत्वा रिनशः] –

"लक्ष्मण ! बुद् धमान गृद्धराज जटायु बड़े ही बलवान और सामर्थ्यशाली हैं .उनके साथ ही यहाँ सदा सावधान रहना . म थलेशकुमारी को अपने संरक्षण में लेकर प्रतिक्षण सब दिशाओं में रहने वाले राक्षसों की और चैकन्ने रहना ."

यहाँ भी श्रीराम लक्ष्मण जी को यह निर्देश नहीं देते क यदि कसी परिस्थिति में तुम सीता की रक्षा में अक्षम हो जाओ तो रेखा खींचकर सीता की सुरक्षा सुनिश्चित कर देना.

तीसरा तर्क भी देखे : यदि कोई रेखा खींचकर माता सीता की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती थी तो लक्षमण माता सीता को मा र्मक वचन बोलने हेतु ववश ही क्यों करते .वे श्री राम पर संकट आया देख-सुन रेखा खेंचकर तुरंत श्री राम के समीप चले जाते।

अतः वाल्मी क रामायण में तो लक्ष्मण रेखा का कोई औ चत्य नहीं बनता। आइये अब जो अन्य रामायण के संस्करण मलते हैं उन्हें देखे :

श्री वेदव्यास जी द्वारा र चत "अध्यात्म रामायण' में भी 'सीता-हरण' प्रसंग के अंतर्गत लक्ष्मण जी द्वारा कसी रेखा के खींचे जाने का कोई वर्णन नहीं है .माता सीता द्वारा लक्ष्मण जी को जब कठोर वचन कहे जाते हैं तब लक्ष्मण जी दुखी हो जाते हैं –

'इत्युक्त्वा .... भक्षुवेषधृक् "

[श्लोक-३५-३७,पृष्ठ -१२७]

"ऐसा कहकर वे (सीता जी) अपनी भुजाओं से छाती पीटती हुई रोने लगी .उनके ऐसे कठोर शब्द सुनकर लक्ष्मण अति दु खत हो अपने दोनों कान मूँद लए और कहा -'हे चंडी ! तुम्हे

धक्कार है ,तुम मुझे ऐसी बातें कह रही हो .इससे तुम नष्ट हो जाओगी ." ऐसा कह लक्ष्मण जी सीता को वनदे वयों को सौपकर दुःख से अत्यंत खन्न हो धीरे-धीरे राम के पास चले .इसी समय मौका समझकर रावण भक्षु का वेश बना दंड-कमण्डलु के सहित सीता के पास आया ." यहाँ कहीं भी लक्ष्मण जी न तो रेखा खींचते हैं और न ही माता सीता को उसे न लांघने की चेतावनी देते हैं .

हालां क ये प्रामा णक ग्रन्थ मैं नहीं मानता। और नाही लक्षमण जी ऐसे आर्य थे जो ऐसे वचन सीता जी को बोलते न ही सीता जी ने ऐसे लक्षण दिखाए होंगे। फर भी यहाँ लक्ष्मण रेखा का सद्धांत नहीं पाया जाता न ही कसी लक्ष्मण रेखा से सीता जी की सुरक्षा संभव थी क्यों क इस रामायण में लक्ष्मण जी सीता माता को वनदे वयो को सौंपकर चले जाते हैं।

अब अन्य रामायण से जुड़े ग्रंथो पर वचार करते हैं। एक मान्य ग्रन्थ आज हिन्दू समाज में वाल्मी क रामायण से भी ज्यादा प्रच लत है वो है तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस। ले कन खेद की इस ग्रन्थ में भी लक्षमण रेखा का ववरण प्राप्त न हो सका।

अरण्य-काण्ड में सीता -हरण के प्रसंग में सीता जी द्वारा लक्ष्मण जी को मर्म-वचन कहे जाने पर लक्ष्मण जी उन्हें वन और दिशाओं आदि को सौपकर वहाँ से चले जाते हैं –

"मरम वचन जब सीता बोला , हरी प्रेरित लछिमन मन डोला !
बन दि स देव सौपी सब काहू ,चले जहाँ रावण स स राहु !"

[पृष्ठ-५८७ अरण्य काण्ड]

लक्ष्मण जी द्वारा कोई रेखा खीचे जाने और उसे न लांघने का कोई निर्देश यहाँ उल्लि खत नहीं है।

अब जब कहीं भी लक्ष्मण रेखा का उल्लेख कसी मान्य ग्रन्थ में नहीं तब क्यों और कैसे ये लक्ष्मण रेखा रामायण से जुड़ कर प्रच लत हुई ?

आइये एक वचार इसपर भी रखते हैं :

लक्ष्मण -रेखा का अर्थ कोई पंचवटी में कुटिया के द्वार पर खींची गयी रेखा नहीं बल्कि प्रत्येक नर-नारी के लए ऋ षयों द्वारा बनाये नियम और निर्धारित आदर्श लक्षणों से प्रतीत होता है। यह नारी-मात्र के लए ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानव जाति के लए आवश्यक है क वप त्त-काल में वह धैर्य बनाये रखे कन्तु माता सीता श्रीराम के प्रति अगाध प्रेम के कारण मारीच द्वारा बनायीं गयी श्रीराम की आवाज से भ्र मत हो गयी। माता सीता ने न केवल श्री राम द्वारा लक्ष्मण जी को दी गयी आज्ञा के उल्लंघन हेतु लक्ष्मण को ववश कया बल्कि पुत्र भाव से माता सीता की रक्षा कर रहे लक्ष्मण जी को मर्म वचन भी बोले। माता सीता ने उस क्षण अपने स्वाभा वक व् शास्त्र सम्मत लक्षणों, धैर्य, वनम्रता के वपरीत सच्चरित्र व् श्री राम आज्ञा का पालन करने में तत्पर देवर श्री लक्ष्मण को जो क्रोध में मा र्मक वचन कहे उसे ही माता सीता द्वारा सुलक्षण की रेखा का उल्लंघन कहा जाये तो उ चत होगा। माता सीता स्वयं स्वीकार करती हैं –

"हा लक्ष्मण तुम्हार नहीं दोसा ,सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा !" [पृष्ठ-५८८ ,अरण्य काण्ड]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं क लक्ष्मण रेखा को सीता-हरण के सन्दर्भ में उल्लि खत कर स्त्री के मर्यादित आचरण-मात्र से न जोड़कर देखा जाये। यह समस्त मानव-जाति के लए निर्धारित सुलक्षणों की एक सीमा है जिसको पार करने पर मानव-मात्र को दण्डित होना ही पड़ता है।

तुलसीदास जी के शब्दों में –
"मोह मूल मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ "

इस आर्यावर्त में एक ऋ ष ने सत्य का ज्ञान सूर्य उदय कया। ऋ ष ने सभी झूठे तथ्यों और आधारहीन घटनाओ को सरे से ख़ारिज कया। आज आर्य समाज इसी ऋ ष कार्य के सद्धांत को आगे बढ़ा रहा है। हमें चाहिए हम सत्य को जानकार असत्य को दूर फेक देवे।

आओ लौटो सत्य की और – लौटो न्याय और ज्ञान की और

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते।

बच्चों का व्यापार – आचार्य अ खल वनय

JULY 29, 2015 LEAVE A COMMENT

जर्मनी में 'बच्चों का केटलॉग' छापकर बच्चे बेचने का धंधा कया जाता है। उसमें छपा रहता है क तीन सप्ताह में 'बच्चा' लया जा सकता है। वैसे जर्मनी में कसी बच्चे को गोद लेने में दो-ढाई साल तक का समय लगता है। जर्मन माता- पता की निःसंतान बने रहने की समस्या को दूर करने में बच्चों का व्यापार करने वाली हॉलैण्ड की संस्थाएँ अग्रणी हैं।

बच्चे पैदा करके बेचने वाली एक फर्म के बारे में कोलबो का समाचार छाप कर ''बाल साहित्य समीक्षा'' (पृष्ठ 9, जून 1987) ने एक महत्त्वपूर्ण बात बतायी है क कस प्रकार ' शशु फार्म' पर छापा मार कर पु लस ने 26 बच्चे और बारह गर्भवती महिलाएँ बरामद कीं। स्वीडन की महिला लुदरस्ट्राम श्रीलंका से बच्चों का व्यापार करती थी। कतना अमानवीय कृत्य है यह! पैसा कमाने के लए कानूनी तरीके से बच्चे पैदा करके उनका निर्यात कया जाना भर्त्सना के योग्य है।

कन्तु बच्चे बेचने का यह कार्य श्रीलंका ही नहीं, भारत, बंग्लादेश और थाईलैंड से भी होता है। पश्चिम जर्मनी की पत्रिका 'डेर स्पेगल' ने इस रहस्य का उद्घाटन कया, जिसकी चर्चा 'इं डया टूडे' (जनवरी 15, 1943) में की गयी थी। प्रायः हर सप्ताह जर्मनी के फ्रेंकफुर्त नगर के वमानतल पर हीरों के हार पहने जर्मनी महिलाएँ, मुबई से उठाये गये बच्चों को छाती से चपटाये वहाँ उतरती हैं। मुबई, कलकत्ता, कोलबो या थाइलैंड की झोपड़ पट्टियों में निरन्तर बढ़ने वाले ऐसे बच्चे हैं, जो वदेश ले जाये जाते हैं।

पछले दिनों जर्मन चर्च संगठन ने ऐसे एक सर्वेक्षण में पाया था क अकेले कलकत्ता के अनाथगृहों में पचास हजार ऐसे बच्चे थे।ारत में ऐसे अनाथ बच्चों की संया कतनी ज्यादा होगी, इसका सहज ही अंदाज लग सकता है। एजेंटों और बिचो लयों की मदद से बच्चों की बिक्री का यह व्यापार खूब पनप रहा है। मध्यमवर्गीय निःसंतान लोग इस प्रकार अपनी तमन्ना पूरी करते हैं, क्यों क उन्हें सफेद वर्ण का दत्तक बालक मलता नहीं। पश्चिम यूरोप- वशेषकर पश्चिम जर्मनी में यह धंधा खूब पनप रहा है। प्रायः एक बच्चा रुपये 44000/- में, एक निःसंतान जर्मन दपति को मलता है।

कहा जाता है क बच्चों के ऐसे अवैध व्यापार में जर्मनी ही नहीं, निकटवर्ती हॉलैण्ड की कुछ एजें सयों का भी हाथ है। ऐसी ही एक संस्था का नाम है- लैश, जो बच्चों को जल्दी उपलध कराती है। कन्तु सवाल यह उठता है क बच्चे खरीदें क्यों जाते हैं? क्या गोद नहीं ले सकते? कारण स्पष्ट है क गोद लेने की कार्रवाई में ढाई साल तक का समय लग सकता है, जब क एजें सयों के मार्फत बच्चे खरीदने में केवल ढाई सप्ताह लगते हैं। ये एजें सयाँ अश्वेत बच्चों के आकर्षक फोटो देकर अपने 'केटलॉग' छापती हैं और निःसंतान धनी जर्मनी दपतियों को आकृष्ट करती हैं।

पश्चिम जर्मनी की प्रमुख पत्रिका 'डेर स्पीगले' में पत्रकार स्वांट्जे स्ट्रेडर ने बच्चे बेचने की इस प्र क्रया का उल्लेख करते हुए बताया है क हॉलैण्ड की संस्था 'लैश' के डाइरेक्टर- डभास हॉ र्डक संतान के इच्छुक जर्मन दपतियों को बच्चों की पसन्दगी के लए कोलबो ले जाते हैं और वहीं सौदा होता है।

हॉलैण्ड की संस्था 'लैश' की ही भाँति, इस धन्धे में संलग्न कुछ संस्थाएँ आस्ट्रे लया, स्कें डने वया और स्वीट्जरलैण्ड की हैं, जो बच्चों का व्यापार चलाती हैं। खरीदे गए ऐसे बच्चों को गोद लेने के लए जर्मनी का कानून इजाजत नहीं देता, कन्तु उन्हीं बच्चों का प्रथम प्रार्थनापत्र अस्वीकृत होने के बावजूद दूसरी बार निवेदन करने पर ''सेकन्ड एडॉप्शन'' कानून के आधार पर उसे स्वीकृति प्राप्त हो जाती है। यही कारण है क बच्चों का यह अवैध व्यापार चल रहा है।

मासूम बच्चों की आँखों, गुर्दों व दिल का निर्यात-

'बाल साहित्य समीक्षा' (जून 1987 के अंक में, पृष्ठ 4 पर) द्वारा एक समाचार छापा गया है क दिसबर 86 में हाँसराजू की पु लस ने सेन पेड्रोसुला में चार मकानों पर छापे मारकर 13 बच्चों को मुक्त कराया। गरतार लोगों में से पाँच ने स्वीकार कया क वे बच्चों को चुराकर या गरीब परिवार वालों से खरीदकर अमेरिका भेजते थे, जहाँ प्रत्येक बच्चा दस हजार डालर में बिकता है।

इस तरह का जघन्य कृत्य भारत के भी बच्चों के साथ कया जा रहा है। दैनिक ''इं डयन एक्सप्रेस'' के 20 अगस्त 1947 में छपा था क आंध्रप्रदेश के बटपला में इस तरह बच्चों के गुर्दे तथा दिल निकालकर बेचने वाला गरोह स क्रय है। तेनाली के निकटवर्ती गाँव कर्लापलेम के 16 वर्षीय श्रीनिवास राव ने बताया क जब वह एक बस में सफर कर रहा था, वषाक्त रूमाल सुँघाकर एक व्यक्ति बेहोश करके उसे नेल्लोर के पास रेलगाड़ी से ले गया और बाद में उसे मारुति कार में ले जाया गया। श्रीनिवास राव को एक निर्जन स्थल में रखा गया, जहाँ

15 दूसरे बच्चे थे। उसे पता चला क उस दल के लोगों ने 50 बच्चों की हत्या की और उन्हें भी जान से मारेंगे। उस दल में नौ व्यक्ति हैं और बंदूकधारी पहरा देते हैं। वह अन्य युवकों की मदद से जान बचाकर भागा। चार घंटे जंगल में भटकने के बाद एक छोटे स्टेशन पर पहुँचा और कसी प्रकार घर लौटा। दूसरे 15 बच्चे कमजोरी की वजह से भागने में सफल नहीं हो सके।

श्रीनिवास राव के पता ने इस दल की क्रूर कार्रवाइयों की सूचना पु लस को दी और बटपला के पास चंदोलू पु लस स्टेशन में उनकी शकायत दर्ज है। वहाँ के सब-इंस्पेक्टर जी.आय. नेयलू उस मामले की जाँच कर रहे हैं। इससे स्पष्ट है क धन कमाने के लए बच्चों के अवयव बेचने का जघन्य कृत्य लैटिन अमरीकी देशों में ही नहीं, भारत में भी हो रहा है। भारत सरकार को चाहिए क वह इस दिशा में शीघ्र और ठोस कदम उठाये।

बाल साहित्य समीक्षा (मा सक)

कानपुर (उत्तरप्रदेश)

 सतबर, सन **1987**

वेदो का वज्ञानं मानवमात्र के लए

JULY 28, 2015 1 COMMENT

।। ओ३म ।।

अयं त इध्म आत्मा जातवेदः।

"हे अग्ने ! तेरे लए सबसे पहला ईंधन "अयं आत्मा" – अर्थात यह यजमान – स्वयं है।"

वेदो का वज्ञानं मानवमात्र के लए :

क्षयरोग (TB – Tuberculosis) से बचाव और उपचार करता है यज्ञ।

सूर्य का प्रकाश मनुष्य के लए वैसे भी लाभदायक है। इससे शरीर में वटा मन डी बनता है, जिससे हड् डयां पुष्ट होती हैं। उदय और अस्त होने वाले सूर्य की करणे तो और भी अ धक गुणकारी होती हैं।

उद्यन्नादित्यः क्र महन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मि भः।
ये अन्तः क्रमयो ग व।।

(अथर्ववेद २।३२।१)

"उदय होता हुआ और अस्त होने वाला सूर्य अपनी करणों से भू म और शरीर में रहने वाले रोगजनक कीटो का नाश करता है।"

सूर्य का प्रकाश कृ मनाशक है। रोबर्ट काउच ने सन १८९० में अनेको प्रयोगो द्वारा यह सद्ध कया की क्षयरोग (फेफड़ो के क्षयरोग को छोड़कर) के कीटाणु इस प्रकाश में दस मनट से अ धक समय तक जी वत जी वत नहीं रह सकते। इस लए क्षयरोग से ग्रस्त व्यक्ति को धुप सेकनी चाहिए।

संभवतः जनसाधारण में इसको यह कहकर मान्यता प्रदान की जाती है की अँधेरे में क्षयरोग फूलता फलता है तथा प्रकाश में यह दम दबाकर भाग जाता है।

अतः यज्ञ के लए सूर्योदय के पश्चात तथा सूर्यास्त से पूर्व का समय ही ठीक है।

आधुनिक वज्ञानं के अनुसार सूर्य की धुप क्षयरोग के लए बचाव और उपचार दोनों है

http://www.dailymail.co.uk/…/Sunshine-vitamin-helps-treat-p…

अब इस समय पर यज्ञ करना लाभदायक ही होगा क्यों क यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में मुख्य रूप से गौघृत, खांड अथवा शक्कर, मुनक्का, कश मश आदि सूखे फल जिनमे शक्कर अ धक होती है, चावल, केसर और कपूर आदि के संतु लत मश्रण से बनी होती है।

अब इस वषय पर कुछ वैज्ञानिको के वचार :

१. फ्रांस के वज्ञानवेत्ता ट्रिलवर्ट कहते हैं : जलती हुई शक्कर में वायु – शुद्ध करने की बहुत बड़ी शक्ति होती है। इससे क्षय, चेचक, हैजा आदि रोग तुरंत नष्ट हो जाते हैं।

२. डॉक्टर एम टैल्ट्र ने मुनक्का, कश मश आदि सूखे फलो को जलाकर देखा है। वे इस निर्णय पर पहुंचे हैं की इनके धुंए में टायफाइड ज्वर के रोगकीट केवल तीस मनट तथा दूसरी व्या धयों के रोगाणु घंटे – दो घंटे में मर जाते हैं।

३. प्लेग के दिनों में अब भी गंधक जलाई जाती है, क्यों क इसमें रोगकीट नष्ट होते हैं। अंग्रेजी शासनकाल में डाकटर करनल कंग, आई एम एस, मद्रास के सेनेटरी क मश्नर थे। उनके समय में वहां प्लेग फ़ैल गया। तब १५ मार्च १८९८ को मद्रास वश्व वद्यालय के वद्या र्थयों के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने कहा था – "घी और चावल में केसर मलकर अग्नि में जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है।" इस भाषण का सार श्री हैफ कन ने "ब्यूबॉनिक प्लेग" नामक पुस्तक मे देते हुए लखा है, "हवन करना लाभदायक और बुद् धमत्ता की बात है।"

मह र्ष दयानंद ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लखा है :

"जब तक इस होम करने का प्रचार रहा ये तब तक ये आर्यवर्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।"

(स. प्र. तृतीय समुल्लास)

यहाँ ऋ ष इसी वज्ञानं को समझाने की को शश कर रहे हैं जो आज का आधुनिक वज्ञानं मानता है।

कृपया यज्ञ करे – राष्ट्र और पर्यावण को सुखी बनाये

आओ लौटो वेदो की और।

नमस्ते

नोट : इस पोस्ट की कुछ सामग्री “यज्ञ वमर्श” पुस्तक से उद्धृत है।

क व और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

JULY 28, 2015 4 COMMENTS

।। ओ३म ।।

अग्निनाग्निः स मध्यते क वर्गृहपतिर्युवा।
हव्यवावाड्जुह्वास्यः।।

(ऋग्वेद 1.12.6)

प्रथमाश्रम में अपने में ज्ञान को स मद्ध करते हुए हम द् वतीयाश्रम में उत्तम गृहपति बने। वानप्रस्थ बनकर यज्ञो का वहन करते हुए तुरियाश्रम में ज्ञान का प्रसार करने वाले बने।

नमस्ते मत्रो – आज का वषय

क व और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

वेदो में प्रयुक्त क व शब्द एक अलंकार है – कसी प्राणी का नाम नहीं, क्यों क वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों के दृष्टा, को क व कहते हैं – इस कारण ये अलंकार ऋ षयों के लए भी प्रयुक्त होता है और समस्त वद्या (वेदो का ज्ञान) देने वाला ईश्वर भी अलंकार रूप से क व नाम पुकारा जा सकता है।

क्यों क ये एक अलंकार है इससे कसी व्यक्ति प्राणी का नाम समझना एक भूल है – वसंगति है – मगर बहुत से रामपा लये चेले चपाटे अपनी मूर्खता में ये काम करने से भी बाज़ नहीं आते उन्हें कुछ शास्त्रोक्त प्रमाण दिए जाते हैं –

क व शब्द की व्युत्प त : क वः शब्द ‘कु-शब्दे’ (अदादि) धातु से ‘अच इः’ (उणादि 4.139) सूत्र से ‘इः’ प्रत्यय लगने से बनता है। इसकी निरुक्ति है :

‘क्रांतदर्शनाः क्रांतप्रज्ञा वा वद्वांसः (ऋ० द० ऋ० भू०)

“क वः क्रांतदर्शनो भवति” (निरुक्त 12.13)

इस प्रकार वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों का दृष्टा, बहुश्रुत ऋ ष व्यक्ति क व होता है।

इसे "अनुचान" भी इस प्रसंग में कहा है [2.129] ब्राह्मणो में भी क व के इस अर्थ पर प्रकाश डाला है –

"ये वा अनूचानास्ते कवयः" (ऐ० 2.2)

"एते वै काव्यो यद्दश्यः" (श० 1.4.2.8)

"ये वद्वांसस्ते कवयः" (7.2.2.4)

शुश्रुवांसो वै कवयः (तै० 3.2.2.3)

अतः इन प्रमाणों से सद्ध हुआ की वेदो में प्रयुक्त "क व" शब्द एक अलंकार है – जहाँ जहाँ भी जिस जिस वेद मन्त्र में क व शब्द प्रयुक्त हुआ है उसका अर्थ अलंकार से ही लेना उ चत होगा, बाकी मूढ लोगो को बुद् ध तो खुद "कबीर" भी ना दे पाये दे खये कबीर ने अपने ग्रंथो में क्या लखा है :

कबीर जी परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं। कबीर जी के कुछ वचन देखे :

स्वयं संत कबीर दास जी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 855)

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥
सरब बिआपी = सर्वव्यापी
कबीर जी कह रहे हैं की हे मेरे परमात्मा तू सर्वव्यापी है।

तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी॥

तुम्हारे सामान कोई दयालु नहीं है, और मेरे सामान कोई पापी नहीं है।

कबीर जी ब्रह्म का अर्थ परमात्मा लेते है काल नहीं
कबीरा मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रह्म गआनु ॥ (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 1373)

ब्रह्म बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥

सभी की उत्प त्त ब्रह्म अर्थात ईश्वर से होती है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 324)

अब जब कबीर जी भी ईश्वर अर्थात ब्रह्म से सभी की उत्प त्त मानते हैं ऐसा लखते भी हैं तब ये रामपाल और उसके चेले कबीर जैसे संत की वाणी को झूठा क्यों सद्ध करते फरते हैं की कबीर परमात्मा हैं ?

क्या ये धूर्तता और ढोंग पाखंड नहीं ?

क्या कबीर जैसे संत की वाणी को दू षत करना और संत कबीर को ईश्वर कहना क्या संत कबीर के शब्दों और दोहो का अपमान नहीं ?

आशा है सभ्य समाज इस लेख के माध्यम से रामपा लये और उसके चेलो के पाखंड का वरोध करेंगे और बुद् धमान व्यक्ति इस पोस्ट के माध्यम से अपने वचार रखेंगे।

लौटो वेदो की और।

नमस्ते

अनवर जमाल साहब की पुस्तक "दयानंद जी ने क्या खोया क्या पाया" के प्रतिउत्तर में :

JULY 28, 2015 11 COMMENTS

।। ओ३म ।।जनाब अनवर जमाल साहब ऋ ष के ज्ञान और वेद के वज्ञानं पर शंका उत्पन्न करते हुए लखते हैं :

यदि दयानन्द जी की अ वद्या रूपी गांठ ही नहीं कट पायी थी और वह परमेश्वर के सामीप्य से वं चत ही रहकर चल बसे थे तो वह परमेश्वर की वाणी `वेद´ को भी सही ढंग से न समझ पाये होंगे? उदाहरणार्थ, दयानन्दजी एक वेदमन्त्र का अर्थ समझाते हुए कहते हैं-
`इसी लए ईश्वर ने नक्षत्रलोकों के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया।´ (ऋग्वेदादि0, पृष्ठ 107)
(17) परमेश्वर ने चन्द्रमा को पृथ्वी के पास और नक्षत्रलोकों से बहुत दूर स्था पत कया है, यह बात परमेश्वर भी जानता है और आधुनिक मनुष्य भी। फर परमेश्वर वेद में ऐसी सत्य वरूद्ध बात क्यों कहेगा?
इससे यह सद्ध होता है क या तो वेद ईश्वरीय वचन नहीं है या फर इस वेदमन्त्र का अर्थ कुछ और रहा होगा और स्वामीजी ने अपनी कल्पना के अनुसार इसका यह अर्थ निकाल लया । इसकी पुष्टि एक दूसरे प्रमाण से भी होती है, जहाँ दयानन्दजी ने यह तक कल्पना कर डाली क सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रादि सब पर मनुष्यदि गुज़र बसर कर रहे हैं और वहाँ भी वेदों का पठन-पाठन और यज्ञ हवन, सब कुछ कया जा रहा है और अपनी कल्पना की पुष्टि में ऋग्वेद (मं0 10, सू0 190) का प्रमाण भी दिया है-
`जब पृ थवी के समान सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुश्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे? (सत्यार्थ., अश्टम. पृ. 156)
(18) क्या यह मानना सही है क ईश्वरोक्त वेद व सब वद्याओं को यथावत जानने वाले ऋ ष द्वारा र चत साहित्य के अनुसार सूर्य व चन्द्रमा आदि पर मनुष्य आबाद हैं और वो घर-दुकान और खेत ख लहान में अपने-अपने काम धंधे अंजाम दे रहे हैं?

समीक्षा : अब हमारे जनाब अनवर जमाल साहब कुरान के इल्म से बाहर निकले तो कुछ ज्ञान वज्ञानं को समझे पर क्या करे अल्लाह मया ने क़ुरान में ऐसा ज्ञान नाज़िल कया की जमाल साहब उसे पढ़कर ही खुद आ लम हो गए। दे खये जमाल साहब ऋ ष ने क्या कहा और उसका अर्थ क्या निकलता है :

ऋ ष ने लखा :

`इसी लए ईश्वर ने नक्षत्रलोकों के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया।´ (ऋग्वेदादि0, पृष्ठ 107)

अब इसका फलसफा और वज्ञानं देखो – ऋ ष को वेदो से जो ज्ञान और वज्ञानं मला वो इन जमाल साहब को नजर नहीं आएगा –

आकाश में तारा-समूह को नक्षत्र कहते हैं। साधारणतः यह चन्द्रमा के पथ से जुडे हैं, पर वास्तव में कसी भी तारा-समूह को नक्षत्र कहना उ चत है।

ऋ ष का अर्थ है क्यों क चन्द्रमा नक्षत्रो के पथ से जुड़ा है इस लए अलंकार रूप में वहां लखा है की नक्षत्रलोको के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया –

अब इसका वैज्ञानिक प्रभाव देखो :

तारे हमारे सौर जगत् के भीतर नहीं है। ये सूर्य से बहुत दूर हैं और सूर्य की परिक्रमा न करने के कारण स्थिर जान पड़ते हैं—अर्थात् एक तारा दूसरे तारे से जिस ओर और जितनी दूर आज देखा जायगा उसी ओर और उतनी ही दूर पर सदा देखा जायगा। इस प्रकार ऐसे दो चार पास-पास रहनेवाले तारों की परस्पर स्थिति का ध्यान एक बार कर लेने से हम उन सबको दूसरी बार देखने से पहचान सकते हैं। पहचान के लये यदि हम उन सब तारों के मलने से जो आकार बने उसे निर्दिष्ट करके समूचे तारकपुंज का कोई नाम रख लें तो और भी सुभीता होगा। नक्षत्रों का वभाग इसी लये और इसी प्रकार कया गया है।

चंद्रमा २७-२८ दिनों में पृथ्वी के चारों ओर घूम आता है। खगोल में यह भ्रमणपथ इन्हीं तारों के बीच से होकर गया हुआ जान पड़ता है। इसी पथ में पड़नेवाले तारों के अलग अलग दल बाँधकर एक एक तारकपुंज का नाम नक्षत्र रखा गया है। इस रीति से सारा पथ इन २७ नक्षत्रों में वभक्त होकर 'नक्षत्र चक्र' कहलाता है। नीचे तारों की संख्या और आकृति सहित २७ नक्षत्रों के नाम दिए जाते हैं।

इन्हीं नक्षत्रों के नाम पर महीनों के नाम रखे गए हैं। महीने की पू र्णमा को चंद्रमा जिस नक्षत्र पर रहेगा उस महीने का नाम उसी नक्षत्र के अनुसार होगा, जैसे कार्तिक की पू र्णमा को चंद्रमा कृ त्तका वा रोहिणी नक्षत्र पर रहेगा, अग्रहायण की पू र्णमा को मृग शरा वा आर्दा पर; इसी प्रकार और सम झए।

ये ज्ञान और वज्ञानं वेदो में ही दिखता है क़ुरान में नहीं जमाल साहब।

क़ुरान का वज्ञानं हम दिखाते हैं जरा गौर से दे खये :

1. अल्लाह मयां तो क़ुरान में चाँद को टेढ़ी टहनी ही बनाना जानता है :

और रहा चन्द्रमा, तो उसकी नियति हमने मंज़िलों के क्रम में रखी, यहाँ तक क वह फर खजूर की पूरानी टेढ़ी टहनी के सदृश हो जाता है
(क़ुरआन सूरह या-सीन ३६ आयत ३९)

क्या चाँद कभी अपने गोलाकार स्वरुप को छोड़ता है ? क्या अल्लाह मयां नहीं जानते की ये केवल परिक्रमा के कारण होता है ?

2. सूरज चाँद के मुकाबले तारे अ धक नजदीक हैं :

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूउ व (गुरूब) के मक़ामात का भी मा लक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता कया।
(सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत ६)

क्या अल्लाह मया भूल गए की सूरज से लाखो करोडो प्रकाश वर्ष की दूरी पर तारे स्थित हैं ?

3. क़ुरान के मुताबिक सात ग्रह :

ख़ुदा ही तो है जिसने सात आसमान पैदा कए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें ख़ुदा का हुक्म नाज़िल होता रहता है – ता क तुम लोग जान लो क ख़ुदा हर चीज़ पर कादिर है और बेशक ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है।

(सूरह अत तलाक़ ६५ आयत १२)

क्या सात आसमान और उन्ही के बराबर सात ही ग्रह हैं ? क्या खुदा को अस्ट्रोनॉमर जितना ज्ञान भी नहीं की आठ ग्रह और पांच ड्वार्फ प्लेनेट होते हैं।

4. शैतान को मारने के लए तारो को शूटिंग मसाइल बनाना भी अल्लाह मया की ही करामात है।

और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को (तारों के) चराग़ों से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लए दहकती हुई आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।

(सूरह अल-मुल्क ६७ आयत ५)

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है

(सूरह सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत १०)

क्या अल्लाह को तारो और उल्का पंडो में अंतर नहीं पता जो तारो को शूटिंग मसाइल बना दिया ता क शैतान मारे जावे ? और उल्का पंड जो है वो धरती के वायुमंडल में घुसने वाली कोई भी वस्तु को घर्षण से ध्वस्त कर देती है जो जल्दी हुई गरती है ये सामान्य व्यक्ति भी जानते हैं इसको शैतान को मारने वाले मसाइल बनाने का वज्ञानं खुद अल्लाह मयां तक ही सी मत रहा गया।

रही बात सूर्यादि ग्रह पर प्रजा की बात तो आज वज्ञानं स्वयं सद्ध करता है की सूर्य पर भी फायर बेस्ड लाइफ मौजूद है। ज्यादा जानकारी के लए लंक दे खये :

http://www.theonion.com/article/scientists-theorize-sun-could-support-fire-based-l-34559

अब कसको ज्ञान ज्यादा रहा जमाल साहब ?

आपके क़ुरान नाज़िल करने वाले अल्लाह मया को ?

या वेद को पढ़कर पूर्ण ज्ञानी ऋ ष की उपा ध प्राप्त करने वाले मह र्ष दयानंद को।

 लखने को तो और भी बहुत कुछ लखा जा सकता है मगर आपकी इस शंका पर इतने से ही पाठकगण समझ जाएंगे इस लए अपनी लेखनी को वराम देता हु – बाकी और भी जो आक्षेप आपकी पुस्तक में ऋ ष और सत्यार्थ प्रकाश पर उठाये हैं यथासंभव जवाब देने की को शश रहेगी

खुद पढ़े आगे बढे

लौटो वेदो की और

नमस्ते

सोम का वास्त वक अर्थ और सोमरस का पाखंड

JULY 8, 2015 1 COMMENT

अ हं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।

अ हं भुवं यजमानस्य चोदिताऽयज्वनः सा क्ष वश्वस्मिन्भरे ।।

– ऋ० मं० १०। सू० ४९। मं० १।।

हे मनुष्यो! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता उस से सब के ज्ञान को मैं बढ़ाता; मैं सत्पुरुष का प्रेरक यज्ञ करनेहारे को फलप्रदाता और इस वश्व में जो कुछ है उस सब कार्य्य का बनाने और धारण करनेवाला हूं। इस लये तुम लोग मुझ को छोड़ कसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।

नमस्ते मत्रो,

जैसा की आप सभी जानते हों हमारे देश में अनेको वद्वान और गुरुजन होते चले आये हैं और होते भी रहेंगे क्यों क ये देश ही वद्वान उत्पन्न करने वाला है, इसी लए इस देश आर्यावर्त को वश्वगुरु कहा जाता है, मगर ये भी एक कटु सत्य है की इसी देश में अनेको ऐसे भी तथाक थत और स्वघो षत वद्वान होते आये हैं जिनका उद्देश्य ही धर्म अर्थात वेद और वेदज्ञान का उपहास करना रहा है, ऐसे ही एक तथाक थत वद्वान हुए थे जिनका नाम था नारायण भवानराव पावगी इन्होने कुछ पुस्तके लखी थी जिनमे कुछ हैं

1. आर्यावर्तच आर्यांची जन्मभू म व उत्तर ध्रुवाकडील त्यांच्या वसाहती (इ.स. १९२०)

2. ऋग्वेदातील सप्त संधुंचा प्रांत अथवा आर्यावर्तातील आर्यांची जन्मभू म आ ण उत्तर ध्रुवाकडील त्यांच्या वसाहती (इ.स. १९२१)

3. सोमरस-सुरा नव्हे (इ.स. १९२२)

इन पुस्तको में लेखक ने वेदो, वैदिक ज्ञान और ऋ षयों पर अनेक लांछन लगाये जिनमे प्रमुखता से ये सद्ध करने की को शश की गयी की वैदिक काल में ऋ ष और सामान्य मानव भी होम के दौरान सोमरस का पान देवताओ को करवाते थे और अपनी इच्छित मनोकामनाओ की पूर्ति हेतु यज्ञ में पशु वध, नरमेध भी करते थे। अब इन आधारहीन तथ्यों के आधार पर अनेको वधर्मी और महामानव आदि अपनी वेबसाइट और लेखो के माध्यम से हिन्दुओ के मन में वेदज्ञान के प्रति जहर भरने का कार्य करते हैं, उनमे मुख्यत जो आरोप लगाया जाता है वो है :

वेदो और वैदिक ज्ञान के अनुसार ऋ ष आदि अपनी मनोकामनाए पूरी करने हेतु अनेको देवताओ को सोमरस (शराब) की भेंट करते थे।

सोमरस बनाने की व ध वेद में व र्णत है ऐसा भी इनका खोखला दावा है।

आइये एक एक आक्षेप को देखकर उसका समु चत जवाब देने की को शश करते हैं।

आक्षेप 1. वेदों में व र्णत सोमरस का पौधा जिसे सोम कहते हैं अफ़ग़ानिस्तान की पहा ड़यों पर ही पाया जाता है। यह बिना प त्तयों का गहरे बादामी रंग का पौधा है। जिसे यदि उबाल कर इसका पानी पीया जाय तो इससे थोड़ा नशा भी होता है। कहते हैं यह पौरुष वर्धक औष ध के रूप में भी प्रयोग होता है।
सोम वसुवर्ग के देवताओं में हैं ।
मत्स्य पुराण (5-21) में आठ वसुओं में सोम की गणना इस प्रकार है-
आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोज्नलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोज्ष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

समाधान : सोमलता की उत्प त्त जो बिना पत्ती का पौधा है ऐसा इनका वचार है जो अफगानिस्तान की पहा ड़यों में पैदा होता है ऐसा इनका दावा है उसके लए ये ऋग्वेद 10.34.1 का मन्त्र “सोमस्येव मौजवतस्य भक्षः” उद्धृत करते हैं। मौजवत पर्वत को आजके हिन्दुकुश अर्थात अफगानिस्तान से निरर्थक ही जोड़ने का प्रयास करते हैं जब क सच्चाई इसके वपरीत है।

निरुक्त में “मूजवान पर्वतः” पाठ है मगर वेद का मौजवत और निरुक्त का मूजवान एक ही है, इसमें संदेह होता है, क्यों क सुश्रुत में “मुञ्जवान” सोम का पर्याय लखा है अतः मौजवत, मूजवान और मुञ्जवान पृथक पृथक हैं ज्ञात होता है। वेद में एक पदार्थ का वर्णन जो सोम नाम से आता है वह पृथ्वी के वृक्षों की जान है। पृथ्वी की वनस्पति का पोषक है, वनस्पति में सौम्यभाव लाने वाला औ ष धराज है और वनस्पतिमात्र का स्वामी है। वह जिस स्थान में रहता है उसको मौजवत कहते हैं। मेरी पछली पोस्ट में गौओ के निवास को व्रज कहते हैं ये सद्ध कया था उसी प्रकार सोम के स्थान को मौजवत कहा गया है। यह स्थान पृथ्वी पर

नहीं कन्तु आकाश में है। क्यों क वनस्पति की जीवनशक्ति चन्द्रमा के आधीन है इस लए उसका नाम सोम है वह औष ध राज है। अलंकारूप से वह लतारूप है क्यों क जो भी व्यक्ति शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष को समझते हैं जानते हैं उन्हें पता है की चन्द्रमा पंद्रह दिन तक बढ़ता और पंद्रह दिन तक घटता है, इसे न समझकर व्यर्थ की कोरी कल्पना कर ली गयी की शुक्लपक्ष में इस सोमलता के पत्ते होते हैं और कृष्णपक्ष में गर जाते हैं।

सोम वसुवर्ग के देवताओ में हैं ये भी मथ्या कल्पना इनके घर की है क्यों क जो वसु का अर्थ भली प्रकार जानते तो ऐसे दोष और मथ्या बाते प्रचारित ही न करते, आठ वसु में सोम भी शा मल है उसके लए उप ल खत पुराण का श्लोक उद्धृत करते हैं

मत्स्य पुराण (5-21) में आठ वसुओं में सोम की गणना इस प्रकार है-
आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोज्नलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोज्ष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

भागवत पुराण के अनुसार- द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वसु और वभावसु। महाभारत में आप (अप्) के स्थान में 'अहः' और शवपुराण में 'अयज' नाम दिया है।

अब यदि इनसे पूछा जाए की – आठ वसुओं में सोम हैं मत्स्य पुराण के अनुसार जिसका अर्थ है मादक द्रव्य यानी शराब – तो भगवत पुराण में आठ वसुओं में सोम क्यों नहीं लखा ?

दे खये ऋ ष दयानंद अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वसु का अर्थ कस प्रकार करते हैं :

पृ थवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से आठ वसु। (स. प्र. सप्तम समुल्लास)

ऋ ष ने बहुत ही सरल शब्दों में वसु का अर्थ कर दिया। अब अन्य आर्ष ग्रन्थ से आठ वसुओं का प्रमाण देते हैं :

शाकल्य-'आठ वसु कौन से है?'
याज्ञ.-'अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्युलोक, चन्द्र और नक्षत्र। जगत के सम्पूर्ण पदार्थ इनमें समाये हुए हैं। अतः ये वसुगण हैं।

(बृहदारण्यकोपनिषद, अध्याय तीन)

इन प्रमाणों से सद्ध है की आठ वसुओं में सोम नामक कोई नाम नहीं। हाँ यदि सोम का अर्थ चन्द्र से करते हो जैसा की इस लेख से सद्ध भी होता है तो आपकी सोमलता और सोमरस का सद्धांत ही खं डत हो जाता है।

आक्षेप 2. सोम की उत्प त्त के दो स्थान है- (1) स्वर्ग और (2) पा थर्व पर्वत । अग्नि की भाँति सोम भी स्वर्ग से पृथ्वी पर आया । ऋग्वेद ऋग्वेद 1.93.6 में कथन है : 'मातरिश्वा ने तुम में से एक को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा; गरुत्मान ने दूसरे को मेघ शलाओं से।' इसी प्रकार ऋग्वेद 9.61.10 में कहा गया है: हे सोम, तुम्हारा जन्म उच्च स्थानीय है; तुम स्वर्ग में रहते

हो, यद्य प पृथ्वी तुम्हारा स्वागत करती है । सोम की उत्प त का पा र्थव स्थान मूजवन्त पर्वत (गान्धार-कम्बोज प्रदेश) है'। ऋग्वेद 10.34.1

समाधान : यहाँ भी "आँख के अंधे और गाँठ के पुरे" वाली कहावत चरितार्थ होती है दे खये :

अप्सु में सोमो अब्रवीदंत वर्श्वानी भेषजा।
अग्निं च वश्वशम्भुवमापश्च वश्वभेषजीः।। (ऋग्वेद 1.23.20)

यहाँ सोम समस्त औष धयों के अंदर व्याप्त बतलाया गया है। इस सोम को ऐतरेयब्राह्मण 7.2.10 में स्पष्ट कह दिया है की "एतद्वै देव सोमं यच्चन्द्रमाः" अर्थात यही देवताओ का सोम है जो चन्द्रमा है। इस सोम को गरुड़ और श्येन स्वर्ग से लाते हैं। गरुड़ और श्येन भी सूर्य की करणे ही हैं। सोम का सौम्य गुण औष धयों पर पड़ता है, यदि स्वर्ग से गरुड़ और श्येन द्वारा उसका लाना है।

ऐसे वैदिक रीति से कये अर्थो को ना जानकार व्यर्थ ही वेद और सत्य ज्ञान पर आक्षेप लगाना जो सम्पूर्ण वज्ञानं सम्मत है निरर्थक कार्य है, क्यों क आज वज्ञानं भी प्रमा णत करता है की चन्द्रमा की रौशनी अपनी खुद की नहीं सूर्य की रौशनी ही है यही बात इस मन्त्र में यथार्थ रूप से प्रकट होती है और दूसरा सबसे बड़ा वज्ञानं ये है की चन्द्रमा जो रात को प्रकाश देता है उससे औष धयों का बल बढ़ता है।

आशा है इस लेख के माध्यम से सोमरस, सोमलता आदि जो मथ्या बाते फैलाई जा रही हैं उनपर ज्ञानीजन वचार करेंगे। ईश्वर कृपा से इसी वषय पर जो और आक्षेप लगाये हैं उनका भी समाधान प्रस्तुत होता रहेगा

लौटो वेदो की और

नमस्ते

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्मकाल – वेटिकन चाटुकार अज्ञानी पाश्चात्य इतिहासकारों का खंडन

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

नमस्ते मत्रो,

हमारे भारतवर्ष में अनेको अनेक महापुरुष, ज्ञानी, वद्वान, पराकर्मी राजा महाराजा उत्पन्न होते आये हैं, ये मटटी कभी वीरो से खाली नहीं रही, कालांतर में भी पृथ्वी राज चौहान, महाराणा प्रताप, भगत संह, चंद्रशेखर आजाद सरीखे वीर योद्धा इसी पावन प वत्र मटटी की गोद से उत्पन्न हुए हैं।

जहाँ तक समझता हु कालांतर में उत्पन्न हुए ये वीर और इनके माता- पता ने भी कसी न कसी महापुरुष को आदर्श मानकर – इन वीरो में उस महापुरष के संस्कार भरे होंगे। और इस देश भारत के लए अनेको महापुरषो के आदर्श उपस्थित रहे हैं, सभी महापुरषो के समय पर

व चत्र परिस्थितिया रही जिनको उन्होंने उ चत रीति से हल कया। जैसे महाभारत काल में योगेश्वर कृष्ण ने शांति बहाल करने की पूर्ण को शश की मगर जब धर्म की हानि होते दे ख तो युद्ध में पांडवो को वजय दिलवाई। महाराणा प्रताप ने चत्तोड़ की आन बान शान के लए पूरी जिंदगी संघर्ष कया। ऋ ष दयानंद ने देखा देश की हालत बहुत वकट है, आर्य जाती अधम और पाखंड में फंस चुकी थी, भारत गुलामी से त्रस्त था ऐसे में ऋ ष ने "स्वराज्य" का बिगुल बजाया। भगत संह, आजाद, बिस्मिल अशफ़ाकुल्ला खान सरीखे अनेको वीर इस स्वतंत्रता रुपी यज्ञ में अपनी आहुति देने आये।

आ खर ऐसा क्या था जो इन सभी महापुरषो को एक प्रेरणा देता था ?

वो था हमारे इतिहास में उत्पन्न हुए गौरवशाली आदर्श मानव जिन्होंने हमारे भ वष्य के लए अपना वर्त्तमान दांव पर लगाया। वो आज हमारे आदर्श हैं।

ऐसे ही एक महापुरुष के जन्मकाल के समय पर जो लाखो वर्षो से भारतीय जनमानस ही नहीं अ पतु दुनिया के सभी मनुष्यो के लए एक आदर्श रहा है, एक ऐसा मनुष्य जो पुत्र, पति, भाई, मत्र यहाँ तक की एक शत्रु के लए भी आदर्श बन गया। आज हम ऐसे आदर्श श्री राम के जन्म काल गणना पर वचार करेंगे।

हमारे मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम। इनके जन्म काल के वषय में अनेक भ्रांतियां हैं।
कुछ अंग्रेजी इतिहासकार हमारे सच्चे इतिहास को अपनी वेटिकन चाटुकारिता हेतु नकारते हैं, झूठे तथ्य और बेबुनियाद आधार पर हमारी आस्था पर चोट करते हैं, वामपंथी भी ऐसी ही वकृत मान सकता से युक्त हैं, वो भी नहीं चाहते की यहाँ का हिन्दू समाज (आर्य जाती) अपने सच्चे इतिहास को जाने, इसी लए मनमाने और झूठे कुतर्को से झूठ का प्रचार कर हिन्दुओ के मन में भ्रांतियां उत्पन्न करते हैं, नतीजा हिन्दू समाज अपने सत्य इतिहास से दूर होता जाता है।
आज हम इसी वषय पर कुछ ववेचना करेंगे –

दे खये हमारे पास हमारे इतिहास से जुड़े अनेक तथ्य और ऐतिहा सक ग्रन्थ मौजूद हैं, जो हमारी इतिहास की धरोहर है, कुछ अपवाद जैसे प्रक्षेप हिस्से को छोड़ देवे, तो जो सत्य सद्धांत हो वो मानने योग्य है चाहे कसी भी पुस्तक में मौजूद हो – जब श्री राम का जन्म काल जानने का प्रयत्न करते हैं तो सबसे पहले हम वाल्मी क रामायण को प्रमाण मानते हैं आइये देखे वहां क्या लखा है –

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतुनां षठ समत्ययुः।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रं नाव मके तिथौ।।
नक्षत्रोऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंच्चसु।
ग्रहेषु कर्कट लग्ने वाक्पता वन्दुना सह।।
कौशल्याजनमद् रामं दिव्य लक्षणं संयुतम्।
लोहिताक्षं महाबाहु रक्तोष्ठम् दुन्दु भस्वनम्।।
प्रोद्यमाने जगन्न्ाथं सर्व लोक नमस्कृतम।
(वा. रा. – बालकाण्ड, सर्ग ७, श्लोक १-३)

यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् 6 ऋतुएं बीत गईं, तब बारहवें मास चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी ति थ को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त श्रीराम को जन्म दिया। उस समय पांच ग्रह अपने-अपने उच्च स्थानों पर वद्यमान थे।

ऋ ष वाल्मी क ने अपनी रामायण में इस प्रकार की ग्रह स्थिति में श्री राम के जन्म का उल्लेख कया है –

सूर्य, मंगल, शनि, बृहस्पति, शुक्र ग्रह मेष मकर तुला कर्क मीन में थे। चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी ति थ श्री राम की जन्मति थ होने से अब रामनवमी के नाम से प्र सद्ध है।

महाभारत से प्रमाण :

महाभारत के अनुसार त्रेता और द्वापर के सं धकाल में श्री राम का जन्म हुआ था।

संध्येश समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च।
अहं दशरथी रामो भ वष्या म जगत्पतिः।।
(महाभारत शान्तिपव-339/85)

ये श्लोक मलावटी लगता है ले कन इतना जरूर है की जो यहाँ त्रेता और द्वापर के सं ध काल की बात हो रही है – उसमे सत्यता जरूर प्रतीत होती है क्यों क इसी सं ध का ऐसा ही समय आंकलन वायु महापुराण 98/72) (हरिवंश पुराण 4/41 ब्रह्मांड महापुराण 104/11) में भी दिखाई देता है।

चतु र्वशयुगं चा प वश्वा मत्रपुरः सरः।
रामो दशरथस्याथ पुत्रःपदमायतेक्षणः।।

क्यों क यहाँ 24 व चतुर्युगी की बात हो रही है जो इस वैवस्वत मनु के काल में आती है – वो मुझे युक्तियुक्त नहीं लगता अतः हम इसी 28 व चतुर्युगी के आधार पर काल गणना करते हैं –

दे खये इस समय वैवस्वत मनु की 28 व चतुर्युगी का कलयुग 5116वा साल यानी वक्रम का 2072 संवत है – यदि यहाँ से गणना की जाए तो –

इस कलयुग के – 5116 वर्ष

बीत चुके द्वापर के – 8,64,000 वर्ष

बीत चुके त्रेता के – 12,96,000

श्री राम त्रेता और द्वापर के सं ध काल में हुए – तो

8,64,000 + 12,96,000 = 21,60,000 वर्ष

इनका सं ध काल =

21,60,000 / 2 = 10,80,000 वर्ष

अब इसमें संध्याओं का योग करते हैं –

86,400 + 1,29,600 = 2,16,000 / 2 = 1,08,000

(ये युग का दश्वा हिसा है जो एक युग से दूसरे युग का सं ध काल होता है अतः इसका आधा पूर्व और आधा पश्चात का लेना होगा)

सं ध काल + संध्याओ का योग

10,80,000 + 1,08,000 = 11,88,000 वर्ष

अब इसमें कलयुग के 5116 वर्ष और जोड़ते हैं

11,88,000 + 5116 = 11,96,116 (11 लाख, 96 हजार, 116 वर्ष) श्री राम
को उत्पन्न हुए हो गए हैं।

ये काल गणना वैवस्वत मनु की 28 व चतुर्युगी के आधार पर है। अतः इतना तो सद्ध है, ग्यारह लाख, छियानवे हजार एक सौ सौलह वर्ष तो श्री राम के जन्म हुए कम से कम हो ही चुके हैं।

यदि 24 व चतुर्युगी के आधार पर करे तो – ये गणना करोडो वर्ष पूर्व बैठेगी जो तर्कसंगत नहीं होगा क्यों क अभी हाल में ही अमेरिका के एक खोजी उपग्रह ने श्री रामेश्वरम से श्री लंका तक श्रीराम द्वारा बनाए गए त्रेतायुग के पुल को 17.5 लाख वर्ष पुराना माना है। जो इस 28 व चतुर्युगी के आधार पर निकाले गए श्री राम की जन्म काल गणना से मेल खाता है।

अतः हमें जानना चाहिए की हमारा इतिहास कोई काल्पनिक नहीं – युगो की गणना यदि और सटीक तरीके तथा अनेक ऐतिहा सक ग्रंथो का यदि और अ धक अनुसन्धान और वश्लेषण कया जाए तो हम प्रभु श्री राम के जन्म गणना का और अ धक वश्लेषण करके – मॉडर्न वज्ञानं के आधार पर मेल करवा सकते हैं।

धन्यवाद

आओ लौट चले वेदो की और

यज्ञ में पशु-वध वैदिक काल में नहीं था

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

महाभारत काल में भी इसकी पुष्टि मलती है – क्यों क महाभारत में वृतांत आता है –

“यज्ञ में हिंसा की निंदा और अहिंसा की प्रशंसा”

ये वृतांत महाभारत में शांतिपर्व के अंतर्गत अध्याय २७२ में आता है – केवल इतना ही नहीं – यहाँ ये भी बताया गया है की यदि कोई यज्ञ में पशु वध करता है – तो निश्चय ही उसका सब तप नष्ट हो गया।

तस्य तेनानुभावेन मृगहिसात्मनस्तदा।

तपो महत समुच्छिन्नं, तस्माद्धहिंसा न य ज्ञया।।

अहिंसा सकलो धर्मोहिंसा धर्मस्तथा वधः।

सत्यंतेहं प्रवक्ष्या म, यो धर्मः सत्यवादिनाम्।।

इस प्रकरण में महाराज यु धष्ठर ने भीष्म पतामह से पूछा है की धर्म तथा सुख के लए यज्ञ कैसा करना चाहिए ? उसके उत्तर में पतामह ने एक तपस्वी ब्राह्मण -ब्राह्मणी दंप त का वृतांत देते हुए बतलाया है की कसप्रकार उस तपस्वी ब्राह्मण का महान तप, यज्ञ में पशुब ल देने के लए एक वन्य मृग को मारने की इच्छा मात्र से वनष्ट हो गया। इस लए यज्ञ में कभी हिंसा न करनी चाहिए। अहिंसा सार्वत्रिक और सारका लक नित्य धर्म है।

इस प्रमाण से ज्ञात होता है की न तो महाभारत काल में यज्ञ में पशु हिंसा का वधान था – न ही उससे पहले के काल में क्यों क अथर्ववेद 11.7.7 में लखा है –

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः।
अकार्श्वमेधावुच्छिष्टे जीव बर्हिममन्दितमः।।

राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अर्कमेध, अश्वमेध आदि सब अध्वर अर्थात हिंसा रहित यज्ञ हैं, जो क प्रा णमात्र की बुद् ध करने वाला और सुख शांति देने वाला है। एवं इस मन्त्र में राजसूय आदि सभी यज्ञो को “अघ्वर” कहा गया है जिसका
एकमात्र सर्वसम्मत अर्थ “हिंसा रहित यज्ञ है”

जो क निषेधार्थक नञ पूर्वक ‘ध्वर’ हिंसायां धातु से बनता है। घ्वरो हिंसा तदभावोत्र सोध्वरः।

अतः स्पष्ट है की वेदने कसी भी यज्ञ में पशुवध की आज्ञा नहीं दी, उल्टा पशुवध करने पर उसे यज्ञ ही नहीं माना। इस लए वेद के नाम पर यज्ञो में पशुवध करना अपने को धोखा देना है, दुसरो को उल्टा रास्ता बतलाना, अथवा अपनी अज्ञानता प्रकट करना है। फर यह भी दे खये की पशु वध करने पर प्रा णमात्र की क्या वृद् ध हुई और उसे क्या सुख शांति मली, उल्टा प्राणी की हत्या करते समय उसे घोर यातना दी जाती है और उसका जीवन तक समाप्त कर दिया जाता है, तब वह कर्म “बर्हिममन्दितमः” कैसे रहा ?

उपरोक्त तथ्यों से प्रमा णत है की न तो इतिहास में यज्ञो में पशु ब ल का समर्थन मलता है – ना ही वेद में – ब्रह्माण्ड ग्रंथो में भी ऐसा कुछ पाया नहीं जाता –
ले कन फर भी कुछ मूढ़ या ज्ञक (पौरा णक) लोग “वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति” का ढोल पीटते हुए यज्ञ में पशुवध को अहिंसा बताते हुए स्वर्ग का मार्ग तक सद्ध करने की को शश करते हैं –

ऐसा मालूम होता है इन लोगो की बुद् ध कहीं घास चरने चली गयी है, अन्यथा वे ऐसा कभी न कहते क्यों क दे खये मनु महाराज ने "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" का क्या अर्थ दिया है –

या वेद वहिता हिंसा, नियतास्मिंश्चराचरे।
अहिंसामेव तां वद्याद्, वेदाद धर्मो हि निर्बभौ।।
योहिंसकानि भूतानि, हिनस्त्यात्मसुखेच्छया।
स जीवंश्च मृत्श्चैव, न कश्चित् सुखमेधते।।
(५.४४-४५)

अर्थात, जो वश्व संसार में दुष्टो – अत्याचारियो – क्रूरो – पा पयो को जो दंड – दान रूप हिंसा वेद वहित होने से नियत है, उसे अहिंसा ही समझना चाहिए, क्यों क वेद से ही यथार्थ धर्म का प्रकाश होता है। परन्तु इसके वपरीत जो निहत्थे, निरपराध अहिंसक प्रा णयों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह जीता हुआ और मरा हुआ, दोनों अवस्थाओ में कहीं भी सुख को नहीं पाता।

दुष्टो को दंड देना हिंसा नहीं प्रत्युत अहिंसा होने से पुण्य है, अतएव मनु ने (8.351) में लखा है –

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवा वचारयन।।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवती कश्चन।
प्रकाशं वाप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्युमृच्छति।।

अर्थात, चाहे गुरु हो, चाहे पुत्र आदि बालक हो, चाहे पता आदि वृद्ध हो, और चाहे बड़ा भरी शास्त्री ब्राह्मण भी क्यों न हो, परन्तु यदि वह आततायी हो और घात-पात के लए आता हो, तो उसे बिना वचार तत्क्षण मार डालना चाहिए। क्यों क प्रत्यक्षरूप में सामने होकर व अप्रत्यक्षरूप में लुक-छिप कर आततायी को मारने में, मारने वाले का कोई दोष नहीं होता क्यों क क्रोध को क्रोध से मारना मानो क्रोध की क्रोध से लड़ाई है।

उपरोक्त मनु स्मृति के प्रमाण से भी स्पष्ट है की यज्ञ में पशु वध का निषेध है।
वेद प्रमाणों से स्पष्ट है की वेदो में पशु वध निषेध है – जब क वेदो में पशुओ को पालने का स्पष्ट निर्देश है – यहाँ तक की – गाय, घोड़ा आदि पशुओ की हत्या करने वालो को "प्राणदंड" तक का वधान है –

मनु स्मृति भी इस बात की पुष्टि करती है – ब्राह्मण ग्रन्थ भी यही कहते हैं = महाभारत भी यही कहती है – तो इससे सद्ध है – न तो वैदिक काल में यज्ञ में पशु वध होता था – ना ही महाभारत काल में – ये सब महाभारत युद्ध के ५००-१००० वर्ष बाद की उपज ही सद्ध होती है –

अतः सत्य सनातन वैदिक स्वरुप को पहचानिये –

सभी महानुभावो से वनम्र निवेदन है कृपया सत्य को समझे – और माने –

वेदो की और लौटिए –

सत्य और न्याय की और लौटिए।

नमस्ते

नोट : ये मनुस्मृति का श्लोक – श्री राम ने – बाली के वध के समय – बाली को सुनाया भी था – ता क बाली को पता हो की उसने जो वेद वरुद्ध कृत्य कया था – उसका दंड उसे वेद सम्मत और न्यायकारी प्र क्रया के अधीन ही दिया जा रहा है।

बाइबिल के यहोवा का भयंकर वज्ञान

JULY 2, 2015 2 COMMENTS

जी हाँ इतना वज्ञानं आप सुनकर चौंक जायेंगे –

वैसे तो कसी भी पशु का मांस नहीं खाना चाहिए – क्यों क ये मनुष्यता नहीं –
 फर भी यहोवा को कुछ अकल आई और उसने कुछ पशुओ को अशुद्ध ठहरा दिया – उन पशुओ में सूअर, शापान आदि के साथ साथ एक जानवर आपने देखा होगा – "खरगोश" – इसके मांस को – यहोवा ने अशुद्ध बताया है –

आइये एक नजर डा लये – की इन पशुओ में क्या ऐसा है जो इनको अशुद्ध बनाता है – और अन्य पशुओ को शुद्ध –

1 फर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 इस्त्राए लयों से कहो, क जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो।

3 पशुओं में से जितने चरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो।

4 परन्तु पागुर करने वाले वा फटे खुर वालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात ऊंट, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह तुम्हारे लये अशुद्ध ठहरा है।

5 और शापान, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

6 और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

7 और सूअर, जो चरे अर्थात फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इस लये वह तुम्हारे लये अशुद्ध है।

8 इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लये अशुद्ध है॥
(लैव्यव्यवस्था, अध्याय ११)

तो देखा आपने – शुद्ध और अशुद्ध का निराकरण करना – वो भी बाइबिल के यहोवा का तर्कसम्मत वज्ञानं ?

क्या कोई जीव – ईश्वर की नजर में अशुद्ध है ?

 फर बनाया क्यों ?

अब क्या ऐसे को जो अपनी ही बनाई सृष्टि में कुछ पक्षपात करता डोलता है – शुद्ध अशुद्ध का भेद करके – उसे ईश्वर कह सकते हैं –

च लए इस वषय पर फर कभी चर्चा करेंगे अभी तो ऊपर की आयत में यहोवा का भयंकर वज्ञानं पढ़िए – हंसी आएगी = की बाइबिल का यहोवा – इतना मुर्ख ?

3 पशुओं में से जितने चरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो।

यानी जो पशु जुगाली करते हो और उनके खुर फटे हो – यानी खुर (hoof) में फटाव हो – अथवा बंटे हो – ये दोनों स्थति होनी चाहिए =

अब दे खये – यहोवा का मंदबुद् ध वज्ञान

6 और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

यहाँ खरगोश को अशुद्ध बताया है – यानी खरगोश जुगाली तो करता है मगर उसके खुर फटे नहीं होते –

 कसी भाई ने खरगोश को जुगाली करते देखा ?

खरगोश के खुर फटे होते हैं –

क्या ये नार्मल सी बाते भी बाइबिल के यहोवा को नहीं मालूम ?

हाँ केवल आदम हव्वा से दुनिया के अनेक मनुष्य बनाता है – इतना ही अक्ल है –

वाह जी वाह – क्या वज्ञानं है यहोवा का ?

इतने पर भी मेरे ईसाई मत्र कहते हैं –

बाइबिल में वज्ञानं है –

भाई ऐसे वज्ञानं को आप ही पढ़ो और आप ही बांटो –

हम से न होगा –

हंसो मत भाई – यहोवा को बुरा लग गया – तो क़यामत भेज देगा –

बताओ इतना मंदबुद्‌ध और कम अक्ल वाला बाइबिल का यहोवा अपने को सर्वज्ञ और ईश्वर कहलवाता है –

मेरे ईसाई मत्रो – इस वज्ञानं पर कुछ बोलना है ?

ज्ञान और वज्ञानं वेद में है – उसे अपनाओ

इस ढोंग को छोडो – धर्म से नाता जोड़ो –

लौटो वेदो की और

नमस्ते

हिन्दुस्तान कस तरह मुसलमान हुआ ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मौलवी जकाउल्ला प्रोफेसर फरमाते है । यह असली मुसलमान कुल मुसलमानों से जो इस मुल्क में आबाद है आधे होंगे। वाकी आधे ऐसे ही मुसलमान है जो हिन्दुओं से मुसलमान हुए है । सरकारी मर्दुमशुमारी से मालूम होता है क हिन्दुस्तान में ४ करोड़ १० लाख मुसलमान रहते हैं । उनमें से जियादह मुसलमान जो हिन्दुओं से मुसलमान हुए हैं । गो इस्लाम

ने उनके सद्धान्तो को बदल दिया मगर उनके रस्म रिवाज को न बदल सका । गो क वह आपस में मलकर खाने पीने लगे मगर शादी व्याह में अब तक गोत्र बचाते है जैसे हिन्दू-गरज इस्लाम का असर हिन्दुओं पर ऐसा नहीं हुआ जैसा क हिन्दुओं का असर इस्लाम पर हुआ ।
(देखो तारीख हिन्द हिस्सा अव्वल फस्ल दौम सफा 6)

अब हम बतलाते हैं क इतने जो मुसलमान है । ये कस तरह मुसलमान हुए हैं और कब से हुए हैं और सब से पहिला मुसलमान इस मुल्क में कौन हुआ है ।

मुल्क हिन्दुस्तान में सबसे अव्वल मुसलमान वापा राजपूत चत्तोड़ के मा लक ने सन् 812 ई० में खमात्त के हा कस सलीम की लड़की से शादी कर सी और मुसलमान हुआ मगर मुसलमान हॉकर लज्जित हॉकर खुरासान चला गया … फर न आया उसका हिन्दू बेट गद्दी पर बैठा । (देखो आईन तारीख नुमा सफा सन् 1881 ई० ।)

सन् 812 ई॰ से खलीफा मामू रसीद ने बडी फोज के साथ हिन्दुस्तान पर चढाई की । वापा का पोता उस वक्त चतौड़ का हा कम था … नाम उसका राजा कहमान था । उससे ओर मामूं से

जो बीस लडाहयां हुई लेकन आखरकार मामूं शकस्त खाकर हिन्दूस्तान से भाग गया ।
(सफा 6 आईना तारीख नुमा सन् 1881 ई० और देखो मफ्ताहुद तवारीख सफा
(7 सन् 1883 तवये सालस हिस्सा अव्वल)

हिन्दुस्तान का दूसरा मुसलमान राजा सुखपाल नाम महमूद के हाथ राज्य के लालच में मुसलमान हुआ । मगर लखा है जब महमूद बलख की तरफ़ गया तो उसने फर हिन्दू बनकर उसकी तावेदारी की । महमूद ने सन् 1006 ई॰ में उसे पकड़कर जन्म भर के लये कैद कर दिया (सफा 16 आईने तारीख नुमा सन् 1881 ई० और मुखताहुद तवारीख सफा 9 सन् 1883 ई० हिस्सा अव्वल)

अरब कस तरह मुसलमान हुआ ?

JULY 2, 2015 1 COMMENT

खुद हजरत मुहम्मद के जमाने में अरब वालो से मुफ्फसल जैल मशहूर लडाई हुई है । जिनमें हजारों लाखों आदमी तलवार से क़त्ल हुए। सैंकडों स्त्रियाँ लौंडया बनाई गई। और हजारों ऊंट बकरी लूटे गये । हजारों के घर तबाह हुए और जब लूट से काफी पूंजी जमा हो गई तो फर इनाम इकराम मलने लगे । माल मुफ्त दिले बे रहम पर अमल दरामद कया गया – जो साथ शरीक होजाता वह गरीब चरबाहों के हक में गोया भेडया होजाता था । हम इस मौके पर मुफ्फसल हालात लख़ने से पहिले अरब के एक मशहूर और मारूफ़ आदमी अबूसुफयान के मुसलमान होने का हाल दर्ज करते हैं ।

जब मुहम्मद ने मक्के की फतह करने पर फौजे तय्यार की तो अव्वाल और अबूसुफयान जो निष्पक्ष थे घूमते हुए आपस से मले । अब्बास ने अबूसुफयान से कहा क अब क्या मारे जाओगे उसने मारे जाने के बचने का उपाय पूछा । अव्वाल उसको इस्लाम से लाने के बहाने निर्भय कर देने का वादा करके मुहम्मद के पास लेगया । हजरत उमर मारने के वास्ते दौड़े । रात को उसको हवालात में रखा सुबह को हाजिर लाया । मुहम्मद साहब ने कहा क अबतक वह समय नहीं आया क तू कहे क खुदा एक है और उसका कोई साक्षी नहीं और उसके सवाय कोई पूजित नहीं । और मैं सच्चा नबी (पैगम्बर) हूँ अबूसुफयान ने कहा क मेरे माँ बाप आप के भक्त हैं । सब बडाई और बुजुर्गी आपही की है । उन गुस्ताखयों और बेअदबियों के बदले जो मुझसे हुई आप की यह कृपा मुझ पर है । वास्तव में एक खुदा के सवाय कोई पूजित नहीं। परन्तु पैगम्बर की सत्यता पर मौन धारण कया अब्बास ने कहा की पैगम्बर की सत्यता पर भाषण कर नहीं तो खैर नहीं। अबूसुफ़यान ने मजबूर होकर पैगम्बर की सच्चाई मानी और इस्लाम ग्रहण कया। तब अब्बास ने नबी की सेवा में अर्ज कया की हे अल्लाह के पैगम्बर अबूसुफ़यान पद और मान को अच्छा समझता है। उसको कोई पदाधकार दीजिये ताक उसका मान हो। मुहम्मद ने उसको इस आज्ञा से से मान दिया की जो कोई अबूसुफ़यान के घर में दाखल हो उसकी जान बख्शी जावे। निदान वह छुट्टी लेकर मक्के को गया – अब्बास उचत अवसर पाकर पैगम्बर की सम्मति से अबूसुफयसान के पीछे गया, वह डरा अब्बासने कहा डरमत । सारांश यह क अब्बास ने अबूसुफयान को रास्ते के कनारे पर खड़ा कया ताक सब लश्कर इसलाम को देखले और उस पर रोब होजावे ताक वह फर इस्लाम से न फरे । जब क इस्लाम की फौज अबूसुफयान के सामने से निकल गई लोगों ने कहा जल्द जा और कुरैश को डर दिलाकर ओर समझाकर इस्लाम को

घेरे में ला ता क जीवन मोत से निर्भय होजावे अबूसु फयान जल्द उनकी जान मारे जाने से बचा सके, (देखो तारीख अम्बिया सफा ३५४ व ३५५ सन् १२८१ हिजरी और ऐसा ही जिक्र कताब सीरतुल रुस्ल व तफसींर हुसैनी जिल्द १ सूरे तोबा सफा ३६० में है)

जिस कदर खूंरेजी और लूटमार से अरब के लोग मुसलमान हुए है अगर उनकी मुफ्फ सल फहरिस्त लखी जावे तो एक दफ्तर बनजावे । हालत पर लक्ष करते हुए संक्षेप से वर्णन करते हैं ।

(1) गज़वा (लडाई) वदां।

(2) गजबये बवात ।

(3) गजवतुल अशरह

(4) गजबये बदर ऊला ।

(5) जंगे बदर ।

(6) गजब तुल कदर

(7) गजय तुल अन्सार

(8) गज़वा वाजान

(9) गज़वा सौवक

(10) गज़वा अहृद

(11) गज़वा हमराउल असद

(12) गजबा जातुर्रिका

(13) गज़वा बदरुल मुअद

(14) गज़वा दौमतुल जन्दल

(15) गज़्वावनी मुस्त लक

(16) गज़वा बनी नजीर

(17) गज़वा खन्दक

(18) गज़वा बनू तिबियान

(19) गजबाज़ूकुरह

(20) गज़वा फतह मक्का

(21) गज़वा हबाजन

(22) गज़वा औतास

(23) गज़वा ताइफ़

(24) गज़वा बनीकीका

(25) गज़वा बनिनुफैर

(26) गज़वा वनी करैता

(27) ग़ज़वे तलूक ।

इन ले 27 मशहूर ग़ज़वाता (लड़ाइयों) के सवाय और बहुत से हमले और जंग हुए हैं जिनकी कुल तादाद 81 के करीब पहुंचती है इस कस्म के सैकडों मुकाबिले और लड़ाइयो के बाद जान के लाले पड़ जाने के डरसे डरपोक देहाती मुसलमान बन गये और जोर वाले बहादुर शेर दिल देहाती जैसे अब्दुल हुकम ईश्वरीय कृपापात्र वगेरह शहीद डोगये । हिसारे की कोम सकी जंग में लखा है क हजरत अली ने मुहम्मद से पूछा क कब तक कत्ल से हाथ न उठाऊं मुहम्मद ने कहा जब तक यह न कहे क अल्लाह एक है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है तकतक क़त्ल कर (देखो तारीख अम्बिया सफा ३४६ सतर १५ या १६ सन् १८८१ हिजरी)

गजबा वनी कुरेता की बाबत लखा है क साद वन मआज ने पैगम्बर को कहा क इस बदजात कोम यहूदी का कस्सा तमाम करो गर्ज क लड़ने लायक आदमी मारे गये और बाकी कैद गये चुनांचे कई सौ आदमी कुरैती मदीने से लाकर क़त्ल कये गये । (देखो मौलवी नूरुद्दीन साहब की फसलुल खताब सफा १५९)

सुलह फुदक की बावत लखा है क नुहेफा वन मसऊद खुदा की हिदायत के बमूजिब सुलह फुदक तशरीफ ले गये और उस कौम को इस्लाम फैंलाने का पैगाम देकर जहाद का पैगाम दिया – मगर उन्होंने न सुलह का पैगाम दिया और न लड़ने को बाहर मैदान में निकले । (देखो तारीख अम्बिया सफा ३४७ सन् १२८१ हिजरी)

मुहम्मद साहब के मरने के बाद जो बहस हजरत अबू बकर की खलाफत से पहिले साद वन उवादा बडे आद मयों में से था) सैंकडों मुसलमानों के सामने की है। उससे सारा हाल अरब के इस्लाम में लाने का जाहिर होता है । जैसा क लखा है सादबिन उबादा ने क्रोधातुर होकर कहा क है अन्सार का गरोह तुम सब कपटी हो क तुमको इस्लाम के सब गरोहों पर मान है। क्यों क मुहम्मदी अपनी कौम बाद दश वर्ष के जियादा रहा । और सबसे मदद चाहीं और दीन को जाहिर करता रहा – मगर सवाय चन्द आद मयों के कसी ने ध्यान नहीं दिया और कोई उस मुसीबत के समय साथी न हुआ – मगर थोडे दिन मदीने से रहने से और हमारे कष्ट उठाने से खुदा को यह कृपा हुई क दीन इस्लाम को वह तरवकी हुई जो तुम देखते हो ।

पस खुलासा बात यह है क तुम्हारे कष्ट से सवाय इस के और क्या नतीजा होगा क अब बड़े-बड़े रईस इस्लाम मुहम्मद में दा खल हैं । खलाफत के काम ओर रियासत तुम्हारे कब्जे में रहनी चाहिये । सब अंसार ने कहा क हे साद सच है जो तुमने कहा तेरे सवाय अंसार में कोई बडा नहीं । हमने तुझको अपना सर्दार बनाया और तुमसे बरैयत (प्रतिक्षा) करते है तुझसे जियादा अच्छा खलाफ़त का काम बजाने वाना कोई नहीं है अगर मुहाजिर (पुजारी) इस बारे से कुछ वरोध करेंगे तो हम उनसे कहैगे क अच्छा अमीरी तुम्हारे ही खान्दान में सही और हमारे खान्दान में भी सही । (देखो तारीख अम्बिया सका ३७४ सन् १२९१ हिजरी)

मुहम्मद साहब ने लोगों से वादा कया था क कैंसर और कसरा के खजाने बजरिये गनीमत तुम्हारे हिस्से में आवेंगे मुसलमान होजाओ । पस लोग इसी नियत से मुसलमान हुए थे जैसा क अक्सर मर्तवा उस समय के मुसलमान इन्कार करते और परेशान होते रहे (देखो मुफ्फ सल तारीख अम्बिया सफा ३२४ सन् १२८१ हिजरी ।)

गजवये बदर कुब्रा में साद वगेरह मुसलमानों ने मुहम्मद साहिब को यह रायह दी क तेरे लये एक सुर क्षत तख्त की जगह अलग मुकर्रर कर ओर जरूरी असबाब उसमें रखदे ओर फर काम में लगें । अगर हम जीते तो पहिली सूरत में अपनी जगह सवार होकर मदीने में जावें । हजरतने साद की राय पसंद की और भलाई की दुआ दी और नकबख्त आद मयों की राय के मुताबिक ततींबवार अमन करने में लग गये और आनन फानन में ततींब की नींव डाली (देखो तारीख अम्बिया सफा ३०५ सन् १२८१ हिजरी देहली)

गनीमत के माल बांटते पर हमेशा झगड़ेही रहते थे ओर इसी लूट के माल की खातिर पहिले लोग मुसलमान हुए थे और इसी की तर्गीब से मुत लफ वक्तो से मुसलमान होते रहे । (देखो सफा ३१० तारीख अम्बिया ।)

हिजरी की दोम साल में निरपराधो यहूदियों का माल व असबाब लूटा और उनको मदीने से निकाल दिया । चुनाँ च लखा है क तमाम माल व असबाब बुरे काम करने बालों का मुसलमानो के हाथ जाया और पांचवा हिस्सा कायदे के बमूजिब निकाल कर बा क बट गया (देखो सका ३१२ तारीख अम्बिया ।)

साल सोयम हिजरी से कावबिन अशरफ सब उत्तम शायर को सर्फ कुरेश का शायर होने के कारण हजरत मुहम्मद साहब ने एक हीला सोचकर अयुवनामला मुसल्लिमा वगेरह के हाथों से क़त्ल करवा दिया और पैगम्बर पर जान न्योछावर करने बालों ने अयवूराफे वन अ वल हकीक को बेगुनाह क़त्ल कर डाला । देखो सफा २१३ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी ।)

जंग अहद के जिक्र में लखा है क जनाब पैगम्बर की निगाह व हिफाजत में महाजिर (पुजारी) इन्सार ने बडी को शश की इस लडाई में कुरै शयों ने इ तफाक कया था इसमें अक्सर पैगम्बर के साथी व चार महाजिर (पुजारी) और ६६ अंसार लडाई के मैदान से मारे गये मुहम्मद साहिब गड्ढे में गर पड़े । पांव से चोट आयी – कम्प जारी हो गया – बडी कठिनता से तलहाने गड्ढे से नीचे उतर कर कंधे पर चढाया और अली ने आहिस्ता आहिस्ता हाथ पकड़ कर बाहर को खींचा और जिस बक्त मुहम्मद बाहर निकले तो दु खत देखा । दांत टूटे हुए पाये जख्मो से खून जारी था आम खबर फ़ैल गई थी क मुहम्मद साहब मारे गये

...अमीर हमजा वगेरह मारे गये कुरैश की औरतों ने उनके नाक कान काट लये – सफा ३१६ व ३१७ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी में

अगर खुदा करता क यह जरासीं और हिम्मत कर जाती तो मुहम्मदी इस्लाम का नाम व निशान न रहता। मगर अफ़सोस क सुस्ती की-बुद् धमानों ने सच कहा है "कार इमरोज़ व फर्द मफगन" (आज का काम कल पर मत छोडो)। हजरत के मरने पर बडा वरोध और ईर्ष्या व झगडा सब अरब में फ़ैल गया हर एक गरोह रियासत चाहता था और दूसरे का वरोधी (देखो तारीख अम्बिया सफा ३७९ से ३७४ तक)

रिसाले मुअजजात में लखा है क हज़रन के मरने के बाद अरब के बहुत से कबीले फर गये ।

सूरे मायदा :- ' 'या अय्योहल्लजीना आमनूं मई यरतद्दा मन्कम अन्दोनही फसोफा यातिल्लाहो बिकौमन युहिब्बहुम बयोहिब्बूनहू अजिल्लतुम अलल मोमना अइज्जतुन अलल काफरीना व उजाहिदूना की सवी लल्लाह !"

अर्थ :- हे मुसलमानों जो तुम अपने दीन से फर गये एक कोम अल्लाह की तरफ से क़रीब आवेगी क तुम उनको दोस्त रक्खोगे ओर बह काफरों पर जहाद करेंगे अल्लाह के लये ।

ओर अबूउबैदा सही कताबों में लखता है क जिस वक़्त मोहम्मद के मौत की खबर मक्के में पहुंची अक्सर मक्का के लोगों ने चाहा क मुहम्मदी इस्लाम से अलग होजावें चुनाँच मक्का के अमलाबाले कई दिनों तक डर के मारे घर से बाहर नहीं निकले – मुहम्मद के मरने पर जो लोग इस्लाम से फर गये वह भी तलवार से जीते गये। अन्त से फसाद बढ़ते बढ़ते यहाँ तक नौबत पहुंची क अली खलीफा के वक़्त में तल्लाह ओर जुबैर और आयशा मुहम्मद साहिब की बीबी और मावया का शाम के मुल्क की तरफ हजरत अली और दूसरे मुसलमानों के साथ लडाई हुई बीबी आइशा ने तलहा के बढावे की सलाह ओर मुहब्बत से लडाई की । शाम के सब मुसलमान अली के मारने पर तय्यार थे जिसमें हजरत अली मय एक लाख साठ हजार फ़ौज के और हजरत माबिया वगैरह भी मय बहुत सी फौज के फरात नदी के कनारे पर लडाई लड़ने आये ६ माह लडाई होती रही ७००० आदमी अली के तरफ़ के और १२००० माबिया की तरफ़ से मुसलमान हताहत हुए। माबिया ने सुलह (सन्धि) का पैगाम भेजा – अलीने अस्वीकार कया लडाई हुई इसमें ३६००० और भी मारे गये अन्त में २२६००० मुसलमानों के मारे जाने के बाद सुलह हुई । इब्न मुलहम मश्र के रहने वाले मोमन (ईमानबाले) ने बड़े प्रेम से एक औरत के निकाह के बदले अली को मारडाला । उस कुतामा नाम ईमानदार औरत ने अपने महर में अली का क़त्ल लखवाया था । इस तरह अरब में इस्लाम बढ़ा और घट गया (देखो तारीख अम्बिया सफा ४४५ व ४४६ सन् १८८१ हिज्र देहली।)

यह मावया अली के जंग की अग्नि बहुत काल तक प्रज्वलत रही और इसी का अन्तिम परिणाम यह था क अली के लड़कों हसैन व हुसेन का यजीद मावया के लड़के के साथ इमाम होने का झगडा हुआ और असंख्य मुसलमान दोनों तरफ के क़त्ल हुए (देखो जांगनामा हामद।)

जो लोग मुस्लमान होते थे उनको माल व संतान वापस मलता था। क़त्ल से बच जाते थे इस वास्ते अक्सर कबीला अरब जब लड़ते लड़ते और खून की नदिया बहाते बहाते तंग आ गए मजबूरन मुस्लमान हो गए चुनाँ च गज़वा तायफ़ में लखा है बाद फतह के एक गरोह हवाज़न (हवा उड़ाने वालो) ने इस्लाम क़बूल कया और आपने उनकी जायदाद और संतान को वा पस दिया फर मा लक वन अताफ जो हुनैन के का फरो की फ़ौज का सरदार था ववश होकर मुस्लमान हुआ और इसका माल व संतान वा पस दी गयी। (देखो तारिख अम्बिया सफा ३६० सन १२८१ हिजरी)

नवी साल के जिक्र में लखा है की गरोह गरोह अरब के कबीले शौकत व इस्लाम की तरक्की देखकर मुस्लमान हो गए यहाँ तक की नाम इस साल का "सनतुल वफ़ूद" वफ़ादारी का साल कहते हैं (देखो सफा ३६१ तारिख अम्बिया १२८१ हिजरी)

 फर लखा है क मुसलमानो को जीत पर जीत होने से आस पास के मुशरिक लोग दिक्कते व परेशानी उठाने के बाद इस्लाम की शरणागत हुए और का फरपन भूल गए। (तारिख अम्बिया सफा ३८९ व ३६०)

अरब में गुलामी का आम दस्तूर अब तक मौजूद है। और वह हज़रत के वक़्त से जारी है। लौंडी और गुलाम जिस तरह मक्का में भेजे जाते हैं और ख्वाजा सराय बनाये जाते हैं और मक्का मौज़मा और मदीना मनव्वर बल्कि रोज़ह मुतहरह पर ख्वाजा सरायो का यकीन है। निहायत अफ़सोस के काबिल है और फर कहा जाता है की दीन इस्लाम में जबर करना जायज़ नहीं।

एक योग्य और प्रतिष्ठित इतिहास लेखक लखता है की अरब वाले नूह की संतान नहीं है बल्कि कृष्ण लड़के शाम की संतान में से हैं और इसी वास्ते वह शामी कहलाते हैं द्वारिका से ख़ारिज हो जाने के बाद शाम जी अरब मय (साथ) अपने सम्बन्धियों व सेवको के आ गए और उसी रोज़ से अरब आबाद हुआ वर्ना इससे पहिले वहाँ आबादी नहीं थी और अरब शब्द संस्कृत का है (यानि आर्यावः) यानी आर्यो का रास्ता मुल्क मश्र को आर्यो की यात्रा का रास्ता और अरब का अंग्रेजी नाम अरेबिया को देखने से यह बात समझ में आजाती है। पस दरहक़ीक़त अरब के लोग शाम जी कृष्ण के बेटे की संतान में हैं।

साभार –

गौरव गरी पं डत लेखराम जी की अमर रचनाओ में से एक पुस्तक

जिहाद – कुरआन व इस्लामी ख़ूँख़ारी

बिलकुल जिस प्रकार लेखराम जी लख कर गए हैं उसी प्रकार लखा गया ता क समस्त मानव जाती इस्लाम का सच जान सके –

 लखने में यदि कही कोई त्रुटि या कुछ भूल चूक हो तो क्षमा करे –

नमस्ते —

रोम कस तरह मुसलमान हुआ ।

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

जिस तरह हमने अरब का वर्णन वश्वासनीय इतिहास की साक्षी से सद्ध कया है क वह कस जोर जुल्म से मजबूर होकर मुसलमान हुआ और कस कदर लूट घसूट से दीन मुहम्मदी कस ग़रज़ से फैलाया गया । वहीं हाल रूम व शाम का है। चुना च इसका खुलासा हाल फतूह शाम में दर्ज है और दरहकीकत वह देखने के लायक और दीन इस्लाम की कदर

जानने के लए उम्दाह कताब है ।

मुआज़ वनज़वल ने जो उवेदह की तरफ से दूत बनकर आया था वतारका हा कम रूम से कहा क या तो ईमान लाओ कुरान पर मुहम्मद पर या हमें जिजिया दो नहीं तो इस झगडे का फैसला तलवार करेगी हो शयार रहो (देखो तारीख अम्बिया सका ४१३ सन् १२८१ हिजरी)

अबु उवैदाने जो अर्जी मो मनों के अमीर उमर को लखी उसमें लखा था क इसलाम की फौज हर तरफ को भेज दी गई है क जाओ जो जो इस्लाम कबूल करे उनको अमन दो ओर जो इस्लाम कबूल न करे उन्हें तलवार से क़त्ल कर दो। (सफा ४०१ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी) ।

हज़रत अबू बक्र ने उसामा को सपहसलार मुकर्रर करके लश्कर को जहाद के वास्ते शाम के देश से भेजा । उसने वहां जाकर उन के खण्ड मण्ड कर दिये और तमाम का फरों की नाक में दम कर दी जो घबराकर अपने देश को छोड़कर भाग गये । ओर मारता डाटता वहाँ तक जा पहुचा हवाली के लोगों से बदला लया और फर बहुत सा माल लेकर दबलीफा रसूल की खदमत में हाजिर हुआ । उस बक्त लड़ने बालों की कमर टूट गयी क्यों क उन नादानों का गुमान था क अब इस्लाम में बन्दोबस्त न रहेगा। और इस कदर ताकत न होगी क जहाद कर सकें । (देखो तारीख अम्बिया सका ३७६ व ३७७ सन् १२८१ हिजरी)

शाम की जीत के लये जो पत्र हजरत अवू वक्र सद्दीक ने जहाद की हिजरत (तीर्थयात्रा) के बास्ते मुअज्जम (बड़े) मक्का के लोगों के लये उसमें लखा है क कर्बला और शाम के दुश्मनों (देखो सफा १३ जिल्द १ फतूह शाम मतवूआ नवल कशोर सन् १२८६ हिजरी)

फर बही इतिहास वेत्ता लूट का माल हाथों हाथ आने का वर्णन करके लखता है क यजीद लड़का सू फयाना का और रुवैया अ मर का लड़का जो इस लश्कर के सर्दार थे कहा क मुना सब है की सब माल जो रु मयों से हाथ लगा है हजरत सद्दीक के हुजूर में भेजा जावे ता क मुसलमान उस को देखकर रु मयों के जहाद का इरादा करें । (फतूह शाम जिल्द १३ सन् १२८६ हिजरी)

हज़रत बक्र सदीक शाम के जाने के बक्त यह वसीयत उमेर आस के लड़के को करते थे क डरते खुदा से और उसकी राह में लडो और का फरो को क़त्ल करों । (जिल्द अव्वल फतूह शाम सका १९)

शाम की एक लडाई से ६१० कैदी पकडे आये। उमरबिन आस न उन पर इस्लाम का दीन पेश कया पस कोई उनमें का मुसलमान न हुआ फर हुक्म हुआ क उनकी गर्दनें मार दी जावें (जिल्द अव्वल फतूह शाम सफा २५ नवल कशोर)

द मश्क के मुहा सरे की लडाई में लखा है। फर खा लद वन बलीद ने कलूजिस ओर इजराईल को अपने सामने बुलाकर उन पर इस्लाम होने को कहा मगर उन्होंने इंकार कया पस बमूजिब हुक्म वलीद के बेटे खा लद और अजूर के लड़के जरार ने इजराईल को ओर राथा बिन अमरताई ने कलूजिस को कत्ल कया (देखो फ़तूह शाम जिल्द अव्वल सफ़ा ५३ नवल कशोर)

कताब फाजमाना तुक हिस्सा अव्वल जो देहली से छपा उसमें लखा है क तीन सौ साल तक मुसलमान रूम के हुक्म से हर साल १००० ईसाइयो के बच्चो को क़त्ल करने वाली फ़ौज में जबरन भर्ती करके मुसलमान कया जाता था और उनको ईसाइयो के कत्ल और जंग पर आमादह कया जाता था सर्फ यहाँ तक ही संतोष नहीं कया जाता था बल्कि ईसाइयों के निहायत खूबसूरत हजारों बच्चे हर साल गलमाँ बनाये जाते और उनसे रूमी मुसलमान दीन वाले प्रकृति के वरूद्ध (इगलाम-लौंडेबाजी) काम के दोषी होते थे। और जवान होकर उन्हीं गाज़ियो के गरोह में शा मल कये जाते थे क बहिश्त के वारिस हों। अलमुख्त सर मुफस्सिल देखो असल कताब ।)

जिस तरह खलीफों के वक़्त में जबरन गरजे गराये जाते ब बर्बाद जिये जाते थे इसी तरह शाम रूम ने भी जुल्म सतम से गरजाओं को मसजिद बना दिया ।

साभार –
गौरव गरी पं डत लेखराम जी की अमर रचनाओ में से एक पुस्तक
जिहाद – कुरआन व इस्लामी ख़ूँख़ारी

इस्लाम और ईसाइयत का इतिहास एक नज़र में

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

क्या हजरत आदम और उनकी बेगम हव्वा – कभी थे भी ?????

ये सवाल इस लए बहुत महत्वपूर्ण है – क्यों क – ये जानना बहुत जरुरी है इस लए नहीं क कोई मनगढंत बात है या सवाल है –

क्या कोई वैज्ञानिक प्रमाण मला है आज तक जो इनके प्रेम प्रतीक – अथवा त्याग और ब लदान की मसाल पेश करे ??

अब कुछ लोग (ईसाई और मुस्लमान) अपने अपने धारणा के हिसाब से बेबुनियाद बात करते हुए कहेंगे की –

ये जो मानव जाती है – ये इन्ही आदम और हव्वा से चली है – जो की “स्वघो षत” अल्लाह मयां अथवा तथाक थत परमेश्वर “यहोवा” ने बनाई थी –

जब बात आती है – भगवान श्री राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि की तो इन्हे (ईसाई और मुस्लमान) को ठोस प्रमाण चाहिए –

जब क – रामसेतु इतना बड़ा प्रमाण – श्री लंका – खुद में एक अकाट्य प्रमाण – फर भी नहीं मानते –

महाभारत के इतने अवशेष मले – आज भी कुरुक्षेत्र जाकर आप स्वयं देख सकते हैं – दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) पांडवकालीन कला आज भी मौजूद है जिसे पुराना कला के नाम से जाना जाता है।

इतना कुछ है – फर भी कुछ समूह (ईसाई और मुस्लमान) मूर्खो जैसे वही उवाच करते हैं – प्रमाण लाओ –

आज हम इस समूह (ईसाई और मुस्लमान) से कुछ जवाब मांगते हैं –

1. हज़रत आदम और हव्वा यदि मानवो के प्रथम पूर्वज हैं तो – क्यों औरत आदमी से पैदा नहीं होती ???? ऐसा इस लए क्यों क प्रथम औरत (हव्वा) आदम की दाई पसली से नि र्मत की गयी – क्या कसी शैतान ने बाइबिल और क़ुरान के तथाक थत अल्लाह का निज़ाम उलट दिया ?? या कोई और शक्ति ने ये चमत्कार कर दिया ??? जिसे आज तक अल्लाह या यहोवा ठीक नहीं कर पाया – यानि की एक पुरुष संतान को उत्पन्न करे न की औरत ???

2. यदि बाइबिल और क़ुरान की ये बात सही है क यहोवा या अल्लाह ने हव्वा को आदम की पसली से बनाया तो आदम यानि की सभी पुरुषो की एक पसली क्यों नहीं होती ???????? और जो हव्वा को एक पसली से ही पूरा शरीर नि र्मत कया तो हव्वा को भी एक ही पसली होनी चाहिए – या यहाँ भी कोई शैतान – यहोवा या अल्लाह पर भारी पड़ गया और यहोवा और अल्लाह की बनाई संरचना में – बड़ा उलटफेर कर दिया जिसे आजतक यहोवा या अल्लाह ने कटाई छटाई का हुक्म देकर अपना बड़प्पन साबित करने की नाकाम को शश की ???????

3. यहोवा या अल्लाह ने आदम और हव्वा की संरचना कहा पर की ?? क्या वो स्थान कसी वैज्ञानिक अथवा researcher द्वारा खोज गया ????

4. हज़रत आदम और हव्वा ने ऐसा क्या काम कया जिसकी वजह से उन दोनों को स्वर्ग (अदन का बाग़) से बाहर निकल दिया गया ?? क्या अपने को नंगा जान लेना और जो कुछ बन पाये उससे शरीर को ढांप लेना – क्या गुनाह है ????? क्या जीवन के पेड़ से बुद् ध को जागरूक करने वाला फैला खाना पाप था ????? ये पेड़ कसके लए स्वर्ग (अदन का बाग़) में बोया गया और कसने बोया ???? क्या खुद यहोवा या अल्लाह को ऐसे पेड़ या फल की आवश्यकता थी या है ??? अगर नहीं तो फर आदम और हव्वा को खाने से क्यों खुद यहोवा या अल्लाह ने मना कया ??? क्या यहोवा या अल्लाह – हज़रत आदम और हव्वा को नग्न अवस्था में ही रखना चाहते थे ???? या फर यहोवा या अल्लाह नहीं चाहता था की वो क्या है इस बात को हज़रात आदम या हव्वा जान जाये ????

5. यहोवा या अल्लाह द्वारा बनाया गया – अदन का बाग़ – जहा हजरत आदम और हव्वा रहते थे – जहा से शैतान ने इन दोनों को सच बोलने और यहोवा या अल्लाह के झूठे कथन के कारण बाहर यानि पृथ्वी पर फकवा मारा – बेचारा यहोवा या अल्लाह – इस शैतान का फर से कुछ न बिगाड़ पाया – खैर बिगाड़ा या नहीं हमें क्या करना – हम तो जानना चाहते हैं – ये अदन का बाग़ मला क्या ??????

6. यहोवा या अल्लाह द्वारा – आदम और हव्वा को उनके सच बोलने की सजा देते हुए और अपने लए उगाये अदन के बाग़ और उस बाग़ की रक्षा करने वाली खडग (तलवार) से आदम और हव्वा को दूर रखने के लए पृथ्वी पर भेज दिया गया। मेरा सवाल है – कस प्रकार भेजा गया ??? क्या कोई वशेष वमान का प्रबंध कया गया था ???? ये सवाल इस लए अहम है क्यों क बाइबिल के अनुसार यहोवा उड़ सकता है – तो क्या उसकी बनाई संरचना – आदम और हव्वा को उस समय "पर" लगाकर धरती की और भेज दिया गया – या कोई अन्य वकल्प था ???

ये कुछ सवाल उठे हैं – जो भी कुछ लोग (ईसाई और मुस्लमान) श्री राम और कृष्ण के अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं – अब कुछ ठोस और इतिहास की नज़र में ऐसे अकाट्य प्रमाण लाओ जिससे हज़रत आदम और हव्वा का अस्तित्व साबित हो सके – नहीं तो फ़र्ज़ी आधार पर की गयी मनगढंत कल्पनाओ को खुद ही मानो – और ढोल पीटो – झूठ के पैर नहीं होते – और सत्य कभी हारता नहीं – ध्यान रखना –

वो जरा इन सवालो के तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक आधार पर जवाब दे – नहीं तो अपना मुह बंद रखा करे।

नोट : कृपया दिमाग खोलकर और शांतिपूर्ण तरीके से ता र्कक चर्चा करे – आपका स्वागत है – गाली गलौच अथवा असभ्य बर्ताव करने पर आप हारे हुए और जानवर घो षत कये जायेंगे।

सहयोग के लए –

धन्यवाद –

इस्लाम में आज़ादी ? एक कड़वा सच

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

कोई व्यक्ति अपने मत को त्यागकर

इस्लाम मत को अपना ले तो कोई सजा का प्रावधान नहीं।

ले कन जैसे ही

इस्लाम मत को छोड़कर अन्य मत अपना ले

तो उसकी सजा मौत है।

क्या अब भी इस्लामी तालीम में कोई स्वतंत्रता बाकी रही ???

क्या मृत्यु के डर से भयभीत रहने को आज़ादी कहते हैं ???

क्या अल्लाह वास्तव में इतना निर्दयी है की केवल मत बदलने से ही जन्नत जहन्नम तय करता है – तो कैसे अल्लाह दयावान और न्यायकारी ठहरा ?

सच्चाई तो ये ही है की जब तक इस्लाम नहीं अपनाया जाता – वह व्यक्ति स्वतंत्र होता है – पर जैसे ही इस्लाम अपनाया वह आ शक़ – ए – रसूल बन जाता है –
अर्थात हज़रत मुहम्मद का गुलाम होना स्वीकार करता है –

अल्लाह ने सबको आज़ादी के अ धकार के साथ पैदा कया – यदि क़ुरआन की ये बात सही है तो कैसे मुस्लमान अपने को मुहम्मद साहब के गुलाम (आ शक़ – ए – रसूल) कहलवाते हैं ????

क्या इसी का नाम आज़ादी है ????

तो गुलामी का नाम क्या होगा ??

ऐसी स्ति थ में मानवीय स्वतंत्रता कहाँ है ???????

वैचारिक स्वतंत्रता कहाँ हैं ??????

धा र्मक स्वतंत्रता कहाँ है ?????

शारीरिक स्वतंत्रता कहाँ हैं ????

http://navbharattimes.indiatimes.com/…/article…/45219309.cms

ए मुसलमानो जरा सोच कर बताओ ……………………….

कहाँ है आज़ादी ????????????????

क़ुरआन में परिवर्तन

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

आज तरह सौ वर्ष से हमारे मुस्लमान भाई कहते चले आ रहे हैं की हमारे कुरआन शरीफ में कसी प्रकार का भी कोई परिवर्तन अर्थात फेर-बदल नहीं हुआ इस लए ये (क़ुरआन) खुदाई कताब है। परन्तु हमें अपने कई वर्षो के अति गहन निरिक्षण करने के पश्चात इस बात का पूरा पूरा पता लग गया है की कुरआन में बहुत कुछ परिवर्तन अर्थात फेरबदल हो चूका है जिसका एक अंश हम क़ुरान शरीफ की अक्षर संख्या के सम्बन्ध में इस्लामी साहित्य के बड़े बड़े वख्यात वद्वानो के लेखानुसार आप सज्जनो की भेंट करते हैं, अवलोकन कीजिये।

कसके मत में कुरआन की अक्षर संख्या कतनी थी ?

क्रमांक ………………….मत का नाम ………………अक्षर संख्या

1………सुयूती इब्ने अब्बास के कुरआन में …………….323671

2………सुयूती उमब्नेखताब के कुरआन में …………1027000

3……… सराजुल्कारी अब्दुल्ला इब्ने मसऊद …………322671

4……… सरजुल्कारी मुजाहिद के कुरआन में …………321121

5………उम्दतुल्ब्यान अब्दुल्ला इब्ने मसऊद …………322670

6……… सराजुल्कारी प्रस्तुतकर्ता …………………….3202670

7………उम्दतुल्ब्यान प्रस्तुतकर्ता ……………………..351482

8………कसीदतुल करात प्रस्तुतकर्ता ………………..3202670

9………दुआय मुतबर्रकः प्रस्तुतकर्ता ………………….445483

10………रमूजूल कुरआन मुहम्मद हसनअली …………..40265

जवाब दो मुस्लमान मत्रो – ये क्या स्पष्ट मलावट नहीं दिखती ????

अगर नहीं तो कैसे ?????????

साभार : क़ुरआन में परिवर्तन
लेखक – मौलाना गुलाम हैदर अली "उर्फ़" पंडत सत्यदेव "काशी"

ISLAM, आर्य समाज, इस्लाम, पाखण्ड खंडनी, शंका समाधान, समाज सुधार

इस्लाम में स्त्री और पुरुष का बराबरी का हक़ महज एक "अन्ध वश्वास" है

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

इस्लाम में स्त्री और पुरुष का बराबरी का हक़ महज एक
"अन्ध वश्वास" है – और इस अन्ध वश्वास का जितनी जल्दी हो सके निर्मूलन होना ही चाहिए –

अब आप पूछोगे इसमें अन्ध वश्वास क्या है ? इस्लाम तो नारी को बराबरी का दर्ज़ा हज़रत मुहम्मद के समय से देता चला आ रहा है –

तो भाई मेरा जवाब वही है की आँख मूँद कर बुद् ध से बिना समझे कसी बात को मान लेना ही तो अन्ध वश्वास है – और यही अन्ध वश्वास के चक्कर में बहुत से नादान फंस जाते हैं – खासकर युवतियां –

उन युवतियों में भी वशेषकर जो हिन्दू – बौद्ध – सख – जैन – ईसाई – आदि सम्प्रदायों से सम्बन्ध रखती हैं – उन्हें तो वशेष कर इस पोस्ट को ध्यान से पढ़ना चाहिए –

दारुल उलूम – ये वो नाम है जो इस्लामी कायदे कानूनों के बारे में लोगों (मुसलमानो) के संदेहों का निराकरण करने वाली संस्था है। और प्रत्येक मुस्लमान (मुस्लमान मतलब जो मुसल्लम ईमान है – यानि अपने ईमान का पक्का) वो अपने ईमान से जुडी इस संस्था के फतवो को कैसे नज़र अंदाज़ कर सकता है ? यानी एक पक्के और सच्चे मुस्लमान के लए इन फतवो को लेकर कोई गलत फहमी नहीं – जो कह दिया वो पत्थर की लकीर – यही तो ईमान है। क्यों क इस संस्था के फतवे अपने खुद के घर की जागीर नहीं होते – बल्कि इस्लामी कायदे क़ानून – खुदा की पुस्तक क़ुरान (ऐसा मुस्लिम बोलते हैं) तथा हदीसो (इस्लामी परिभाषा में, पैग़म्बर मुहम्मद के कथनों, कर्मों और कार्यों को कहते हैं)

अब चाहे कोई मुस्लिम कसी फतवे को माने या तो ना माने मगर अपने स्वार्थ की पूर्ती के लए तो फतवा बनवा ही सकता है – ऐसी आशंका होनी लाज़मी है – आईये एक नज़र डालते हैं –

“देवबंद ने अपने एक फतवे में कहा क इस्लाम के मुताबिक सर्फ पति को ही तलाक देने का अ धकार है और पत्नी अगर तलाक दे भी दे तो भी वह वैध नहीं है।”

जी हाँ – पढ़ा आपने – केवल एक पुरुष ही तलाक दे सकता है – यानि की पुरुष को ही तलाक देने का “अ धकार” है – स्त्री को कोई अ धकार नहीं – और अगर स्त्री दे भी दे तो भी “वैध” नहीं –

ये है इस्लाम का सच – तो कैसे स्त्री पुरुष – इस्लाम की नज़र में एक बराबर हुए ???????

आइये कुछ और फतवो के बारे में बताते हैं –

“एक व्यक्ति ने देवबंद से पूछा था, पत्नी ने मुझे 3 बार तलाक कहा, ले कन हम अब भी साथ रह रहे हैं, क्या हमारी शादी जायज है? इस पर देवबंद ने कहा क सर्फ पति की ओर से दिया तलाक ही जायज है और पत्नी को तलाक देने का अ धकार नहीं है।”

“इसके अलावा देवबंद ने अपने एक फतवे में यह भी कहा क पति अगर फोन पर भी अपनी पत्नी को तलाक दे दे तो वह भी उसी तरह मान्य है जैसे सामने दिया गया।”
“एक फतवे में कहा गया क इस्लाम के हिसाब से महिलाओं के टाइट कपड़े पहनने की मनाही है और लड़ कयों की ड्रेस ढीली और साधारण होनी चाहिए।”

“गर्भनिरोधकों के इस्तेमाल पर भी देवबंद ने एक फतवा जारी कर सनसनी फैला दी। एक व्यक्ति ने देवबंद से पूछा क उसकी पत्नी को थायराइड की समस्या है, जिसके चलते उसके गर्भवती होने से बच्चे पर असर पड़ सकता है। ऐसी स्थिति से बचने के लए उसे डॉक्टर ने

गर्भनिरोधक के इस्तेमाल की सलाह दी है और क्या वह इस्लाम के मुताबिक गर्भनिरोधक का इस्तेमाल कर सकता है?" –

अब दे खये और जानिये इस बारे में फतवा क्या कहता है –

"इसके जवाब में देवबंद ने कहा क डॉक्टर की सलाह के बाद उसे इस बारे में हकीम से परामर्श लेना चाहिए और अगर वह भी उसे गर्भनिरोधक का उपयोग करने की सलाह देता है, तो वह ऐसा कर सकता है।"

आप समझ रहे हैं ????

चाहे पत्नी मरने की कगार पर हो – मगर एक सच्चे मुसलमान के लए अपनी पत्नी के इलाज से पहले फतवे से ये जानना की क्या जायज़ (वैध) है और क्या नाजायज़ (अवैध) है – उसकी पत्नी की जान से ज्यादा जरुरी है – अभी भी शक है की सच्चा और पक्का मुस्लमान फतवो को नहीं मानेगा ???????? जब क वो हर एक काम को जायज़ या नाजायज़ पूछने के लए मुल्लो मौलवी के फतवो की बांट जोहता है (इन्तेजार करता है)

ये खुद में क्या एक जायज़ बात है ????

मतलब की डॉक्टर जो मॉडर्न वज्ञानं पढ़के – डग्री लेके बैठा है – उसकी बात पर वश्वास नहीं है – मगर एक झोलाछाप और बिना एक्सपीरियंस का हकीम सलाह दे तो वो वैध है –

वाह भाई वाह – क्या वज्ञानं है – क्या ज्ञान है –

आगे भी दे खये –

"देवबंद ने महिलाओं को काजी या जज बनाने को भी लगभग हराम करार दे दिया। देवबंद ने इस बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में फतवा देते हुए कहा महिलाओं को जज बना सकते हैं, ले कन यह लगभग हराम ही है और ऐसा न करें, तो ज्यादा बेहतर है।"

अब भी कोई गुंजाईश बाकी है क्या की इस्लाम में स्त्री पुरुष को सामान अ धकार प्राप्त हैं की नहीं ?????

बात सर्फ काजी या जज की नहीं है – बात असल में है की यदि कोई स्त्री काजी बन गयी – तो फर स्त्रियों के हक़ में और फायदे के लए फतवे आने शुरू होंगे तब दिक्कत हो जाएगी – इस लए काजी नहीं बन सकती कोई मुस्लिम महिला – इस बात का भी ग णत सम झए की कोई महिला जज भी ना बने – तो भाई इसका मतलब तो यही हुआ की महिलाओ या लड़ कयों को श क्षत करना ही इस्लाम के खलाफ है – या फर हायर स्टडी करना ही मुस्लिम महिलाओ के लए हराम है –
क्यों क इतना पढ़ना फर कस लए जब वो उस मुक़ाम पर ही न पहुंच पाये ????????

आगे सुनिए –

“देवबंद ने कहा क यह हदीस में भी दिया गया है, जिसका मतलब है क जो देश एक महिला को अपना शासक बनाएगा, वह कभी सफल नहीं होगा। इस लए महिलाओं को जज नहीं बनाया जाना चाहिए।”

ये दे खए नारी वरोधी एक और फतवा – पता नहीं कस समाज के ऐसे लोग हैं जिनमे बुद् ध २ पैसे की भी नहीं –

क्या इस्लामी हदीस स्त्रियों के वरुद्ध है या ये मुल्ला मौलवी अपनी तरफ से ऐसी बे सर पैर के फतवे जारी कर रहे हैं –

ये सोचना – समझना आपका काम है –

कसी भी जाती की नारी हो – उसका सम्मान – उसको बराबरी का दर्ज़ा ये उसका हक़ है बल्कि नारी जो निर्मात्री है – ऐसा वेद कहते हैं –
“नारी को ऊँचा दर्ज़ा है”

अब आप एक बार स्वयं वचार करे की जिन कताबो की बिनाह पर ये मुल्ले मौलवी इन फतवो को तैयार करते हैं – वो मुहम्मद साहब से ज़माने से चली आ रही हैं – अब या तो उन कताबो में स्त्री से वैर है तभी ऐसे फतवे आ रहे या फर मुल्ले मौलवी अपनी तरफ से ऐसे फतवे तैयार कर रहे –

अब सच क्या है ?????

आप युवतियां, महिलाये, नारियो – स्वयं वचारो – क्यों क आप निर्मात्री हो – समाज की – वर्तमान की और आने वाले इसी मानव समाज के उज्जवल भ वष्य की

नमस्ते –

क़ुरआन सीरियाई शब्द है, तो सम्पूर्ण क़ुरआन अरबी में कैसे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

क़ुरआन शब्द – सीरिया भाषा के “केरयाना” शब्द से लया गया था – जिसका अर्थ होता है – “शास्त्र पढ़” – इसे बदल कर क़ुरआन कर दिया गया – जिसका मतलब होता है – “वह पढ़ा” अथवा “उसे सुनाई” –

दूसरी बात की क़ुरआन में अल्लाह ने बोला है – क़ुरआन को वशुद्ध अरबी भाषा में दिया गया –

तो संशय ये है की सीरियन भाषा – इस्लाम आने के ५०० साल लगभग पहले से वद्यमान है – फर ऐसा क्यों की सीरिया की भाषा को प्रयोग करके “क़ुरआन” शब्द को रचा गया ???

क्या अल्लाह मियां नया शब्द देने में माहिर न थे ???

नोट : क़ुरआन में अल्लाह मियां बहुत जगह ऐसा कहे हैं की क़ुरआन को विशुद्ध अरबी में नाज़िल किया –

तब ऐसा क्यों है की क़ुरआन में अरबी के अलावा 74 अन्य भाषाओ का वजूद मिलता है ????

क्या अल्लाह ने अनेक भाषाओ के शब्द चोरी किये ???

या अन्य भाषाओ के अरबी शब्द ईजाद नहीं किये जा सके ??

या फिर अल्लाह मियां थोड़ा झूठ बोल गए की क़ुरआन विशुद्ध अरबी में है ????

क्योंकि क़ुरआन में अरबी भाषा के आलावा अन्य बहुत सी भाषाए हैं जिनसे कोई मुस्लिम भी इंकार नहीं कर सकता – इससे ये सम्भावना प्रबल होती है की क़ुरआन शब्द विशुद्ध अरबी नहीं है –

भाई सच क्या है – कोई मुस्लिम मित्र जरा सत्य से अवगत करावे –

मनुष्य का सैद्धांतिक और नीतिगत भोजन शाकाहार है, मांसाहार नहीं।

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

भोजन की बात होती है – तो सैद्धांतिक तौर पर – भोजन वो होना चाहिए – जिससे न तो किसी का दोष लगा हो – ना पाप करके चोरी करके लाये हो – न ही हत्या अथवा हिंसा करके –

हिंसा कहते हैं – जो वैर भाव से किया गया कृत्य हो।

लेकिन यदि हम भोजन के तौर पर देखे की क्या खाया जाये – तो एक निर्धारण होता है – एक नियम है – उसकी और ध्यान देना आवश्यक है – क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य बनाया तो उसकी भोजन सामग्री भी अवश्य बनाई होगी और वो ऐसी होनी चाहिए जो सुगम हो सर्वत्र हो आकर्षित करने वाली हो – जो हमारे खाने योग्य हो –

तो ऐसी क्या चीज़ ईश्वर ने बनाई ?

पशु ? पक्षी ? बकरा ? मुर्गा ? बैल ? गाय ? सूअर ?

जी नहीं – क्योंकि न तो इनको देखकर खाने का आकर्षण होता – और न ही इन पशुओ को आपसे वैसा भय रहता जैसे की चीता शेर आदि हिंसक जानवरो से – यदि ये पशु मनुष्य के लिए बने गए होते तो आपके दांत – नाख़ून – पंजे – पेट की आंत – भोजन नली – आदि सब हिंसक जानवरो – पशुओ जैसी होती – जबकि ऐसा नहीं है –

पर यदि आप ध्यान से देखो – तो आपको सुन्दर प्राकृतिक वन – पेड़ पौधे – फल फूल – सुन्दर सुन्दर खुशबू – फूलो का प्राकर्तिक सौंदर्य आपके मन को भाता है – हम अपने घर आँगन को ऐसी ही सजाते हैं –

यदि हमें प्राकर्तिक तौर पर माँसाहारी बनाया होता तो हमें पेड़ पौधों फूलो की अपेक्षा हड्डी मांस खून आदि से वशेष लगाव होता – और अपने घर आदि भी ऐसे ही हड्डी मांस खून आदि से सजाते – जब क ऐसा नहीं होता।

वशेष बात है की – जब हम पेड़ से आम तोड़ते या धान गेहू की फसल काटते तो कोई भागता नहीं है – क्यों क वो भागने के लए बनाये ही नहीं – और इसमें हिंसा भी नहीं हुई क्यों क वैर भाव नहीं था वो जीवो के भोजन हेतु ही बनाये गए हैं – ये सद्ध होता है।

दुनिया में सभी शाकाहारी है – क्यों क बिना शाक – गेहू ज्वर बाजरा सरसो – मूली टमाटर = कुछ नहीं बना सकते – न खा ही सकते – इस लए दुनिया का कोई मनुष्य अपने को शाकाहारी नहीं हु ऐसा सैद्धांतिक तौर पर नहीं कह सकता –

पर कुछ लोग वो खाते हैं जो सभी मनुष्य नहीं खाते –
और जो सब मनुष्य खाते हैं उसे ही शाकाहार कहा जाता है

इस लए शाकाहारी तो सभी हैं – मांसभक्षी भी शाकाहार ही खाता है – पर क्यों क सभी मनुष्य मांस नहीं खाते इस लए वो अपने को मांसाहारी भी कहता है – और बिना शाकाहार उसका मांस व्यर्थ है – इस लए क्यों नहीं शाकाहार अपनाया जाये ?

शेष फर कभी………

ईश्वर निराकार है – एक तर्कपूर्ण समाधान

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

शंका निवारण :

पूर्वपक्षी : क्या ईश्वर के हाथ पाँव आदि अवयव हैं ?

उत्तरपक्षी : ये शंका आपको क्यों हुई ?

पूर्वपक्षी : क्यों क बिना हाथ पाँव आदि अवयव ईश्वर ने ये सृष्टि कैसे रची होगी ? कैसे पालन और प्रलय करेगा ?

उत्तरपक्षी : अच्छा च लए में आपसे एक सवाल पूछता हु – क्या आप आत्मा रूह जीव को मानते हैं ?

पूर्वपक्षी : जी हाँ – में आत्मा को मानता हु – सभी मनुष्य पशु आदि के शरीर में है – पर ये मेरे सवाल का जवाब तो नहीं – मेरे पूछे सवाल से इस जवाब का क्या ताल्लुक ? कृपया सीधा जवाब दीजिये।

उत्तरपक्षी : भाई साहब कुछ जवाब खोजने पड़ते हैं – खैर च लए ये बताये शरीर में हाथ पाँव आदि अवयव होते हैं क्यों क जीव को इनसे ही सभी काम करने होते हैं – पर जो आत्मा होती है उसके अपने हाथ पाँव भी होते हैं क्या ?

पूर्वपक्षी : नहीं होते।

उत्तरपक्षी : क्यों नहीं होते ?

पूर्वपक्षी : #$*&)_*&(*#$*$()
(सर खुजाते हुए – कोई जवाब नहीं – चुप)

उत्तरपक्षी : जब एक आत्मा जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के अधीन है – बिना हाथ पाँव अवयव आदि के – मेरे इस शरीर में वद्यमान रहकर – शरीर को चला सकती है – तो ईश्वर जो सर्वशक्तिमान है – वो ये सृष्टि का निर्धारण उत्प त्त प्रलय सञ्चालन वो भी बिना हाथ पाँव आदि अवयव क्यों नहीं कर सकता ? इसमें आपको कैसे शंका ? कमाल के ज्ञानी हो आप ?

पूर्वपक्षी : #$*&)_*&(*#$*$()
(चुपचाप गुमसुम चले गए)

ईसा मुक्तिदाता नहीं – बाइबिल

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मुख्य रूप से मान्य ग्रन्थ तो ईसाइयो का ही है – पर कुछ भारतीय मुख्य रूप से हिन्दू भाई खासकर – आदिवासी – पछड़ा वर्ग एवं हमारे अति प्रय द लत भाई तथा कुछ ऐसे परिवार भी जो पढ़े लखे समझदार हैं धनाढ्य भी पर फर भी अपने सत्य सनातन शुद्ध वैदिक धर्म को त्याग – अन्ध वश्वास पाखंड और अनाचार में न जाने क्यों प्रवत्त होते जा रहे है ?

शायद इसकी एक बड़ी वजह है – ईसाई मशनरियों द्वारा हिन्दुओ के मानस पटल पर अं कत देवी देवताओ की भाव भं गमाओं रूपों आकृति से मलते जुलते रूप आकार आदि से ईसा की लुभावनी मूर्ति फोटो आदि बना कर "हिन्दुओ" के देवी देवताओ में "सबसे बड़ा देवता" अथवा "ईश्वर पुत्र" घो षत करवाना और "इकलौता मुक्तिदाता" बताकर धर्मांतरण करवाना यदि इससे काम न बने तो हिन्दुओ खासकर गरीब, निर्बल, आदिवासी तथा द लत भाइयो को धन का लालच देकर उनको ईसाई बनाना।

आ खर हिन्दुओ के देवी देवताओ की शरण में इस मुक्तिदाता को क्यों जाना पड़ा ? ऐसी क्या मजबूरी ईसाइयो के लए हो गयी की जिस ईसा को मुक्तिदाता बताते नहीं थकते उसे हिन्दू देवी देवताओ के जैसे रूप आकर आदि से हिन्दुओ को दिखाकर मुर्ख बनाकर ठगने का गोरखधंधा आ खर एक अन्ध वश्वास नहीं तो क्या है ? यदि हिन्दुओ के देवी देवता मुक्ति नहीं दे सकते तो कस प्रकार ईसा उन्ही देव देवी के रूप आकार धारण कर मुक्ति करवाएगा ?

आइये एक नजर डाले आ खर ईसा अकेला मुक्तिदाता कैसे ? ये सवाल इस लए बहुत महत्वपूर्ण है क्यों क ईसा से भी बड़ा मुक्तिदाता था ईसा के ही समय पर फर ऐसा क्या हुआ जो ईसा को ही मुक्तिदाता माना गया अथवा जबरदस्ती घो षत कया कहीं ऐसा तो नहीं एक समुदाय वशेष पर थोपा गया "तथाक थत मुक्तिदाता" ????

आइये एक नजर डाले ——-

हजरत यूहन्ना ने हजरत मसीह को शुद्ध कया अर्थात – बपतिस्मा देकर निष्पाप कया, दूसरे शब्दों में प्रायश्चित कराया। यथा –

1. तब यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लए उसके पास गलील से यदन को गया। (मत्ती ३-१३)

2. और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरंत पानी से ऊपर आया। (मत्ती ३-१६)

3. बपतिस्मा जो इसका दृष्टांत है, और शरीर का मैल दूर करना नहीं, परन्तु परमेश्वर के साथ सीधे ववेक का अंगीकार है। (पतरस ३-२१)

4. यूहन्ना…………….. पापमोचन के लए पश्चाताप के लए बपतिस्मा का उपदेश करने लगा। (लूका ३-३)

केवल ईसा को अकेला मुक्तिदाता बताने वाले और हिन्दू भाइयो को अन्ध वश्वास में गर्त करने वाले ईसाई मशनरी के लोग कृपया बताये ईसा अकेले कैसे मुक्तिदाता हुआ ?

यदि ईसा अकेला मुक्तिदाता है तो फर हजरत मसीह को हजरत यूहन्ना ने बपतिस्मा कस लए दिया ?

1. ईश्वर के साथ सीधे ववेक के लए।

2. पापमोचन के लए।

3. प्रायश्चित के लए।

अब पाठकगण स्वयं वचार करे की हजरत मसीह को तो खुद पाप से मुक्ति करवाने के लए बपतिस्मा लेना पड़ा वो भी हजरत यूहन्ना से फर ईसा अकेले "मुक्तिदाता" कैसे ?

खैर एक वचार इस पर भी कर लेवे की बपतिस्मा करवाने वाला (ईसा को पाप मुक्त बनाने वाला) हजरत यूहन्ना – बपतिस्मा लेना वाला हजरत मसीह जिसे मनुष्यो की शुद् ध करवाने वाला बताया जाता है – उसने स्वयं हजरत यूहन्ना को पाप क्षमा करवाने वाला (बपतिस्मा) देने वालो में सबसे बड़ा कहा है –

दे खये साक्षी स्वयं इंजील ही है – यथा

“मैं तुमसे सच कहता हूँ जो स्त्रियों से जन्मा है, उनमे से यूहन्ना बपतिस्मा देने हारे से बड़ा कोई नहीं।” (म त ११-११)

यदि ईसाई भाई कहे की हजरत मसीह खुदा या खुदा के बेटे थे – तो भाई सवाल उठेगा की खुदा के बेटे के पाप स्वयं खुदा नहीं धो सका – उसके लए हजरत यूहन्ना ही काम आये – इस लहाज से तो हजरत यूहन्ना खुदा से बड़े सद्ध हुए और ईसा से भी –

दूसरी बात की ईसा खुदा के अकेले बेटे नहीं थे – जैसे की ईसाई मशनरी झूठ फैला रही हैं की ईसा ईश्वर के पुत्र थे – देखये

हजरत मसीह भी स्त्री से जन्मे थे, अतः वह भी यूहन्ना से बड़े नहीं हो सकते जैसा की ईसा ने स्वयं अपने मुह से कहा फर खुदा या खुदा के बेटे कैसे हो गए ?

यूहन्ना की माता बूढा होने के कारण पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकती थी, और ईसाइयो के कथनानुसार हजरत मरियम कुंवारी होने से संतान उत्पन्न नहीं कर सकती थी।

अतः दोनों ही प वत्र आत्मा से उत्पन्न होने के कारण खुदा बेटे होने चाहिए। यदि हजरत यूहन्ना ईश्वर के बेटे नहीं तो फर ईसा मसीह कैसे ?

तो अब ईसाई भाई जरा बतावे की ईसा अकेला मुक्तिदाता कैसे और साथ ही अकेला खुदा का बेटा भी सद्ध नहीं होता – इस लए प्रार्थना है ये अन्ध वश्वास, पाखंड और अनाचार छोड़ – सत्य सनातन वैदिक धर्म में लौटिए – अपने शुद्ध रूप को अपनाये –

क्या ईसा मसीह कुंवारी से उत्पन्न हुए थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यहूदी और ईसाई मत के सम्मि लत मजहबी ग्रन्थ प्राचीन और नवीन सुसमाचार आद्योपांत कई भाषाओ में पढ़े, परन्तु ईसाई मत की सर्वश्रेष्ठता के जितने दावे कये जाते हैं, उन सबका ही घोर खंडन प्रतिवाद इन्ही के माननीय ग्रंथो में स्थान स्थान पर पाया।

इनका सबसे प्रथम और आकर्षक दावा यह है की ईसा मसीह कुंवारी से उत्पन्न हुए थे, मरियम की युसूफ बढ़ई के साथ केवल मंगनी सगाई मात्र हुई थी, क उसको गर्भवती पाया गया।

बाइबिल में मसीह के कई भाई बहिनो के नाम आते हैं। परन्तु कहीं उनके माँ बाप के परस्पर ववाह की चर्चा नहीं मलती।

भाइयो ! इस लए उनके सब भाई बहन कुंवारी और प वत्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होने के कारण खुदा के बेटे और बेटियां क्यों नहीं माने जाने चाहिए ?

हजरत मसीह के भाई और बहन –

1. वह क्या बढ़ई का पुत्र नहीं है ? क्या उसकी माता का नाम मरियम और उसके भाइयो के नाम याकूब, योशी, शमोन और जुदा नहीं हैं ? ।। ५५ ।।
और क्या उसकी बहन हमारे यहाँ नहीं हैं ?।। ५६ ।।

(बाइबिल का नया नियम)

2. जब वह (हजरत मसीह) भीड़ से बात कर ही रहा था तो देखो उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे। (मत्ती १२:४६)

3. ये सब एक चत्त होकर स्त्रियों के यीशु की माता मरियम के संग और भाइयो संग प्रार्थना और वनती में लगे रहते थे। (प्रेरितों के काम १:१४)

4. खुदाबंद के भाई और केफस करते हैं। (१ करन्तीनियो को खत ९:५)

5. पर रसूलो में से कसी को नहीं देखा मगर खुदाबंद के भाई याकूब को। (गलैतियो को खत १:१९)

6. जेम्स मसीह का भाई। (पेज १८६ हैण्ड बुक टू दी न्यू टेस्टामेंट)

क्या इन ६ प्रमाणों से यह सद्ध नहीं होता है की हजरत मसीह के कई भाई और बहन थे ? क्या ये सब बिना ववाह के ही हो गए ? केवल हमको ही नहीं प्रत्युत लंका के बड़े योरो पयन पादरी बैप्टिस्ट होवार्ड जे० चार्टर बी० ए० बी० डी० मशनरी (Haward J. Charter, B.A.B.D. Baptist Missinary) स्वयं उस प्रश्न को उठाते हैं। यथा –

There has been much controversy on the question of Jame's exact relation to jesus and opinions are still devided on there two views.
1. That jesus and his brothers Joses, Simon and Juda were the children of Joseph and Mary and younger of our Lord.

2. That they were the children of Joseph by a farmer marriage.
The first of these two views is the most naturat conclusion from the two verses which tell us of the relationship of Jesus to the rest of the family (Matt 13:55)

Is not this the carpenter's son ? Is not his mother called Marry ? and his brothers, James and Joseph and Simon and Judas ? (Mark 6:2)
Is not this the carpenter, the son of Mary and brothers of James and Joses and Judas and Simon ? And are not his sisters here with us ? And they were offended in Him.

The secon view has some traditional support. P186.

It is said to have been derived from the Apocryphal Gaspels of the second century, and it became popular through Origen's influence. P.186.

Hand book to the New Testament by Rev. Haward Baptist.

रेवरेण्ड महोदय के लखने का आशय यह है की –

"इस बात पर वशेष चर्चा होती है की – जेम्स का मुख्य सम्बन्ध मसीह से क्या था ?" इस वषय में दो सम्मतियाँ ठहराई गयी हैं –

1. जेम्स और उसके भाई जोसफ, समौन और जूड़े ये युसूफ और मरियम के पुत्र थे और हमारे प्रभु के भाई थे। यह सम्बन्ध तो वास्ति वक है।

2. यह की वे जेम्स आदि युसूफ की पहली पत्नी से उत्पन्न हुए थे। पहली सम्मति के वषय में तो यह स्वाभा वक परिणाम कई आयतो से मलता है की युसूफ का सम्बन्ध उसी परिवार से था।

(देखो मत्ती १३:५५ और मार्क ६:२)

इन सभी आयतो में इनको मैरी और युसूफ के पुत्र और पुत्री कहा गया है।
दूसरी सम्मति की प्रच लत कथानक द्वारा – रिवायती दंतकथा के तौर पर पुष्टि होती है, वह अ वश्वसनीय है। यानी गैर मुअतबिर है। यह दंतकथा गौस्पेल के नाम से "ओरिजन" के प्रभाव से दूसरी शब्दावली में सर्वसाधारण में फ़ैल गयी।

परिणाम यही निकलता है की मसीह के कई सगे भाई बहन वद्यमान थे, और युसूफ बढ़ई द्वारा मरियम के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। दो पत्नियों की कहानी मनगढ़ंत है।
नोट :- "पहलौटा" शब्द भी यही सद्ध करता है की मसीह के और भी भाई बहन थे।

अंत में स्वयं रेवरेण्ड महोदय यह परिणाम निकालते हैं –

Many Christians hold this view why prefer to believe in the perpatual verginity of Mary. But of course we must remember that preference is not proof. P.186

अर्थात – बहुत से ईसाई मरियम के नित्यकुमारी रहने के वश्वास को वशेषता देते हैं, परन्तु उनको स्मरण रखना चाहिए की केवल वशेषता देना कोई प्रमाण नहीं है।

इन थोड़े प्रमाणों से ही जिज्ञासु गण इस परिणाम पर सहज ही में पहुँच सकते हैं की मसीह कुमारीपुत्र नहीं थे। हमारा दावा है की मसीह युसूफ के वीर्य से, कई बहन भाई सहित मरियम के गर्भ में उत्पन्न हुए।

बाइबिल की परस्पर वपरीत शक्षा – वरोधाभासी वचनो का संग्रह – बाइबिल

JULY 2, 2015 5 COMMENTS

ईसाई भाई बाइबिल को ईश्वर का प वत्र ग्रन्थ मानते हैं और हिन्दू भाइयो का धर्मांतरण इस बाइबिल के आधार पर करवाते हैं यह कहकर क बाइबिल ईश्वर की वाणी है – और जो ईसा पर वश्वास ले आवे वो ही मुक्ति पायेगा क्यों क ईश्वर की "प वत्र पुस्तक" बाइबिल ऐसा निर्देश करती है –

यदि ये बात सही है – तो बाइबिल जैसी प वत्र पुस्तक में कोई भी दोष न होना चाहिए और यदि दोष नहीं होगा तो परस्पर वरुद्ध बाते भी न होनी चाहिए क्यों क ईश्वर सर्वज्ञ है – और ईश्वर अपनी एक बात से वपरीत बात कभी भी कसी पुस्तक में नहीं देता –

क्यों क अपनी बात जो पहले बताई उससे वपरीत बात बोलना एक सामान्य मनुष्य का कार्य तो हो सकता है क्यों क मनुष्य स्वार्थी है – कोई एक बात बोलकर बाद में वपरीत बात बोल सकता है – यदि ईश्वर भी ऐसा वपरीत बर्ताव करने लगे तो उसे ईश्वर नहीं एक सामान्य मनुष्य ही जानना चाहिए।

आइये एक नजर बाइबिल की वपरीत शक्षाओ पर डालते हैं जिससे सद्ध होगा की बाइबिल ईश्वर की पुस्तक नहीं महज एक मनुष्य की बनाई है जिसमे इतना वरोधाभास है की आप गन नहीं सकते –

दे खये –

1. ईश्वर अपने कार्य से संतुष्ट हुआ (उत्प त्त 1.31)

ईश्वर अपने कार्य से बहुत असंतुष्ट हुआ (उत्प त्त 6.6)

---

2. ईश्वर अपने द्वारा चुने मंदिर में बसता (रहता) है। (2 इतिहास 7.12, 16)

ईश्वर कसी मंदिर में नहीं बसता (रहता) है। (प्रेरितों के काम – 7.48)

---

3. ईश्वर प्रकाश में बसता है। (1 तीमु थयुस 6.16)

ईश्वर अन्धकार में बसता है। (1 राजा 8.12) (भजन संहिता 18.11) (भजन संहिता 97.2)

---

4. ईश्वर को देखा और आवाज़ सुनी।
(निर्गमन 33.11, 33.23) (निर्गमन 24.9,10, 11) (उत्प त्त 3.9-10) (उत्प त्त 32.30) (यशायाह 6.1)

ईश्वर को देखना और ईश्वर की आवाज़ सुनना असम्भव है
(यूहन्ना 1.18) (यूहन्ना 5.37) (निर्गमन 33.20) (1 तीमु थयुस 6.16)

---

5. ईश्वर थक जाता है और वश्राम करता है।
(निर्गमन 31.17) (यिर्मयाह 15.6)

ईश्वर कभी नहीं थकता और न ही कभी वश्राम करता है।
(यशायाह 40.28)

---

6. ईश्वर सर्वत्र उपस्थित है – सब कुछ सुनता और जानता है
(नीतिवचन 15.3) (भजन संहिता 139.7-10) (अय्यूब 34.21-22)

ईश्वर सर्वत्र उपस्थित नहीं है – न ही सब कुछ सुनता और न ही सब कुछ जानता है –
(उत्प त्त 11.5) (उत्प त्त 18.20-21) (उत्प त्त 3.8) (प्रेरितों के काम – 1.24) (भजन संहिता 139.2-3)

---

7. ईश्वर सब मनुष्यो के दिलो की बात और राज़ जानता है –
(प्रेरितों के काम – 1.24) (भजन संहिता 139.2-3)

ईश्वर मनुष्यो के दिलो की बात और राज़ जानने का प्रयास करता है –
(व्यवस्था ववरण 13.3) (व्यवस्था ववरण 8.2) (उत्प त्त 22.12)

---

8. ईश्वर सर्वशक्तिमान है –
(यिर्मयाह 32.27) (मत्ती 19.26)

ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है –
(न्यायियों 1.19)

---

9. ईश्वर और उसके वचन कभी नहीं पलटते (अपरिवर्तनीय) हैं –
(यहोशू 1.17) (मलाकी 3.6) (यहेजकेल 24-14) (गनती 23.19)

ईश्वर और उसके वचन पलटते (परिवर्तनीय) हैं –
(उत्प त्त 6.6) (योना 3.10) (1 शमूएल 2.30-31) (2 राजा 20.1,4,5,6) (निर्गमन 33.1,3,17,14)

---

10. ईश्वर निष्पक्ष और न्यायकारी है
(भजन संहिता 92.15) (उत्प त्त 18.25) (व्यवस्था ववरण 32.4) (रो मयो 2.11) (यहेजकेल 18.25)

ईश्वर पक्षपाती और अन्यायकारी है –
(उत्प त्त 9.25) (निर्गमन 20.5) (रो मयो 9.11,12,13) (मत्ती 13.12)

ये तो मात्र कुछ झलकयाँ हैं – पूरी बाइबिल एक कथन से सर्वथा वपरीत कथनो एवं शक्षाओ से परिपूर्ण है – यदि ये ईश्वर की पुस्तक होती तो इसमें वरोधाभासी बाते लेशमात्र भी न होती –

इससे सद्ध है बाइबिल ईश्वरीय ज्ञान नहीं –

कृपया सत्य को जानिए – वेद की और लौटिए – क्यों क एकमात्र वेद ही – पक्षपात, वैरभाव, वरोधाभासी शक्षाओ से रहित ईश्वरीय ज्ञान है –

नमस्ते

क्या ईसा मरकर अपना ब लदान दिया और पुनः जिन्दा भी हुए थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

वषय को पढ़कर आप सभी चौंक जरूर गए होगे की ये क्या लखा – सभी ईसाई ऐसा मानते हैं – ईसाई भाई कुछ इस प्रकार कहते हैं क ईसा ने अपना ब लदान मनुष्यो के लए दिया जिससे अब जो ईसा को "खुदा का बेटा" माने तो निश्चित ही स्वर्ग जायेगा – ये भी मात्र कपोल कल्पना ही है – क्यों क यदि ईसा ने अपने आप ब लदान दिया होता तो क्रॉस पर चढाने से पहले और क्रॉस पर भी अपने मारे जाने से दुखी न होता न ही अपनी जान बचाने को ईश्वर से प्रार्थना करता और न ही ईसा मरकर पुनः जिन्दा हो गए थे मगर हमारे ईसाई भाइयो को इसमें भी शायद कोई संदेह दिखलाई नहीं देता इसी लए इस भ्रान्ति को बहुत बड़ा चमत्कार बताते हुए नासमझ और भोले भाले हिन्दू भाइयो को बहकाते हैं – उनको स्वर्ग का सब्जबाग दिखाते हैं – और हिन्दू भाई इस स्वर्ग के लालच में आकर इस भ्रान्ति को चमत्कार मान अंगीकार करते हुए अपना शुद्ध वैदिक धर्म छोड़ ईसाइयो के अन्ध वश्वास और पाखंड रुपी चंगुल में फंस जाते है।

इस चंगुल में फंस कर न तो कभी स्वर्ग अथवा नरक को समझ पाता – और मुक्ति वषय तो पूछिये ही मत क्यों क जो व्यक्ति अंध वश्वास और पाखंड में सदैव लप्त रहेगा वो कभी इस जन्म मरण के चक्र से मुक्त नहीं हो सकता – हाँ अपने कये कर्मो द्वारा स्वर्ग (सुख वशेष) और नरक (दुःख वशेष) प्राप्त अवश्य करता है और इस प्रकार के स्वर्ग नरक को प्राप्त करवाने हेतु कोई ईसा मूसा मुहम्मद आदि की गवाही और राह पर चलना जरुरी नहीं – क्यों क जो व्यक्ति जैसे कर्म करता वैसे ही फल भोगता है – ये ईश्वरीय वधान है – इसमें कोई तथाक थत "ईश्वर का बेटा" या नबी अथवा रसूल कोई कुछ कम बढ़ती नहीं करवा सकता –

खैर हम वषय पर चलते हैं – वषय है क्या क्या ईसा मरकर अपना ब लदान दिया और पुनः जिन्दा भी हुए थे ?

पूरी बाइबिल (ओल्ड + न्यू टैस्टमैंट) को यदि आप ध्यानपूर्वक पढ़ लेवे तो आपकी शंका खुद ही खत्म हो जाएगी क्यों क अलग अलग चैप्टर (अध्याय) में अलग अलग तरीके से बताया गया है – जिससे ईसा के मरने पर ही शंका हो जाती है –
दुबारा जिन्दा होने की तो बात ही छो ड़ये – दुबारा जिन्दा तो तब होगा न भाई जब कोई मर गया हो – बाइबिल पढ़ने से तो यही ज्ञात होता है की ईसा साहब मरे ही नहीं थे – वे तो जिन्दा थे – इससे मरकर दुबारा जिन्दे होने का सवाल ही पैदा नहीं होता – और जब मरे ही नहीं तो ब लदान कैसा ?

जब क सच्चाई यह है की अपनी जान बचाने के लए ईसा ईश्वर से बार बार प्रार्थना करते नजर आये – यहाँ तक क वो समय जिसमे ईसा को सूली पर चढ़ाया गया उस समय को टालने (अपने आप से हटाने) तक के लए प्रार्थना की थी।

आइये सल सलेवार तरीके से समझते हैं –

1. हे मेरे पता ! जो हो सके तो यह कटोरा (सूली की मृत्यु) पास से टल जाए। (मत्ती २६:३९)

2. यदि हो सके तो यह घड़ी (मौत) उससे टल जाए। (मरकुस (मार्क) १४:३५)

3. यह बात कहकर यीशु आत्मा में घबराया। (यूहन्ना १३:२१)

4. उसने अपने शरीर के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकारकर और रोकर, उससे जो मृत्यु से बचा सकता था, वनती की, निवेदन कये। (इब्रानियों को पत्र ५:७)

5. यीशु ने बड़े जोरो से पुकार कर कहा – "एलीएली लामा शवकतनी" अर्थात हे मेरे ईश्वर ! तूने मुझे क्यों त्यागा है ? (मत्ती २७:४)

उपरोक्त यीशु द्वारा की गयी प्रार्थनाओं और रुदन से स्पष्ट है की यीशु ने कोई ब लदान नहीं दिया – क्यों क जो ब लदान होता है – उसमे ऐसे प्रार्थना और रुदन नहीं होता –

उदहारण के लए शहीद भगत संह आदि वीरो को दे खये जब उन्हें फांसी के लए ले जाया जा रहा था तो उन्हें कोई दुःख नहीं था – बल्कि वतन के लए क़ुर्बान होने का सुख था – और वो "मेरा रंग दे बसंती चोला" गाकर जेलख़ानो में सुनाया गया – इसे कहते हैं ब लदान।

"सच्चा ब लदान"

अब हमारे ईसाई भाई कैसे इस "हत्या के षड्यंत्र" को ईसा का ब लदान सद्ध करेंगे ? जब क ईसा खुद स्वेच्छा से सूली पर नहीं चढ़ा – उसको तो मारने का षड्यंत्र कया गया क्यों क ईसा ने अपने आप को "ईश्वर का बेटा" घो षत करने की मथ्या चाल चली थी – जो की उस समय के कानून के हिसाब से दण्डित कृत्य था –

खैर जो भी हो अभी तो ईसाई भाई केवल यही बता देवे की जब ईसा ने अपना ब लदान ही नहीं दिया जैसे की बाइबिल खुद सद्ध करती है – तो आप ईसाई ऐसा शोर क्यों मचाते हो की ईसा ने अपना ब लदान मनुष्यो के लए दिया और जो ईसा को माने सो स्वर्ग का अ धकारी होगा ?

अभी भी समय है – पाखंड छो ड़ये – और सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाये – चाहे ईसा को मानो या न मानो – अपने कर्मो के आधार पर सभी स्वर्ग (सुख वशेष) के अ धकारी हैं –

इस लए ये स्वर्ग का लालच छोड़ – शुद्ध और सात्विक कृत्य करे – वेदो की और लौटे
खैर अब आगे देखते हैं – क्या यीशु सूली पर मर गए थे और पुनः जिन्दा हो गए ?

अन्ध वश्वास और पाखंड रुपी चंगुल

अगले भाग में …….

यहोवा का भूला बिसरा ज्ञान – ऊट पटांग वरोधी बातो से भरी बाइबिल

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

लगता है बाइबिल का लेखक नशे में टुन्न था – या फर मदहोशी में बाइबिल लखी गयी –

क्यों क ईश्वर भूत भ वष्य और वर्तमान सब जानता है – इस लए वो अतीत की बातो का भी पूर्ण ज्ञान रखता है –

पर क्या बाइबिल का यहोवा इसी प्रकार का ज्ञान रखता है ? यदि हाँ तो "यहोवा" सब कुछ जानने वाला "सर्वज्ञ" है – नहीं तो वो ईश्वर नहीं – मात्र एक मनुष्य ही कहलायेगा – जिसे अपनी ही बनाई अतीत का पता तक नहीं ?

एक नजर बाइबिल में व र्णत इतिहास की बातो पर –

1. पशु आदि सभी जीवो की उत्प त्त के बाद मनुष्य को बनाया (उत्प त्त – १:२४,२५,२६,२७)

तब परमेश्वर ने कहा – "पृथ्वी हर एक जाती के जीव जंतु उत्पन्न करे बहुत से भन्न जाती के जानवर हो ……. यही सब हुआ (२४)

तो, परमेश्वर ने हर जाती के जानवरो को बनाया। परमेश्वर ने जंगली जानवर, पालतू जानवर और सभी छोटे रेंगने वाले जीव ……. परमेश्वर ने देखा की यह अच्छा है (२५)

तब, परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनुष्य बनाये। हम मनुष्य को अपने जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी तरह होगा …………. जीवो पर राज करेगा।"

तो यहोवा द्वारा उत्प त्त (gen) के पहले अध्याय में यह बताया जाना की पशु आदि सभी जीवो की उत्प त्त के बाद मनुष्य को उत्पन्न कया – सद्ध होता है –

च लए अब दूसरे अध्याय में देखते हैं क्या वहां भी यहोवा यही बात कहता है ? कहीं ऐसा तो नहीं यहोवा भूल गया और कुछ का कुछ बोल दिया ?

आइये दे खये –

तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, "में समझता हु क मनुष्य का अकेला रहना ठीक नहीं है। में उसके (मनुष्य) के लए एक सहायक बनाऊंगा जो उसके लए उपयुक्त होगा।" (२:१८)

यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश की हर एक पक्षी को भू म की मटटी से बनाया। यहोवा इन सभी जीवो को मनुष्य के सामने लाया और मनुष्य ने हर एक का नाम रखा। (२:१९)

मनुष्य ने पालतू जानवरो, आकाश के सभी प क्षयों और जंगल के सभी जानवरो का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे ले कन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो उसके योग्य हो। (२:२०)

अब दे खये कतनी व चत्र बात है – यहोवा ने पहले अध्याय में बोला की पशु आदि सभी जीवो की उत्प त्त के बाद मनुष्य को बनाया –

और दूसरे अध्याय में बता दिया की मनुष्य के लए कोई सहायक होना चाहिए जिससे मनुष्य का अकेलापन दूर हो इस लए मनुष्य उत्पन्न करने के बाद पशु आदि जीव उत्पन्न कये

अब इनमे से कौन सी बात सही माने ? कोई ईसाई भाई जरा शंका समाधान कर देवे।

नोट : एक वशेष बात नोट कीजिये – केवल यही वरोध नहीं है – दूसरा मसला है की जब यहोवा कुछ बनाता है उसके बाद ही उसे ज्ञात होता है की ये तो अच्छा है –
मतलब की पहले से नहीं पता होता की जो यहोवा बना रहा है – वो अच्छा ही बनेगा – कोई श्योरटी नहीं – पता नहीं कब बुरा बन जायेगा –

दूसरी बात जो ये पशु आदि जीव मनुष्य का अकेलापन दूर करने हेतु बनाये – उससे मनुष्य का अकेलापन दूर नहीं हुआ – और पशु आदि जीव उत्पन्न करने का कुछ प्रयोजन भी सफल नहीं हुआ – क्यों क मनुष्य का एकाकीपन – इन पशुओ से दूर न हो सका – क्या यही यहोवा का ज्ञान है जो ये भी न जान सका की एक मनुष्य नहीं उसे भी जोड़े से ही उत्पन्न करना था जैसे की सभी पशु प क्षयों को जो ड़यों से उत्पन्न कया ?

शायद इस लए आगे की आयत में एक अति वज्ञानं की बात यहोवा ने कर दी – मनुष्य को गहरी नींद में सुलाने के बहाने उसकी पसली चोरी की और हव्वा को बना दिया –

वाह क्या करामात है ! हैरत अंगेज – ये काम तो मनुष्य भी बुरा ही मानते हैं – कसी को सुला के या बेहोश कर उसकी कडनी आदि निकाल लेते – बताओ क्या ये ईश्वर के काम होंगे ?

ईश्वर होता तो जैसे मनुष्य और पशु आदि जीवो को मटटी से बनाया – वैसे हव्वा को बनाने का वज्ञानं क्या यहोवा भूल गया था ? या हव्वा मटटी से नहीं बन सकती थी ? और यदि मटटी से ही बना दिया – तो जो शरीर है उसमे पानी अग्नि वायु आदि अवयव का करामात कसी और यहोवा ने कया ? यानी यहोवा का भी यहोवा ?

कुछ तो गड़बड़ जरूर रही होगी क्यों ईसाई मत्रो ?

क्या ये ईश्वर के कथन और गुण सद्ध होते हैं ?

यहोवा तो शायद खुद कंफ्यूज है की पहले क्या बनाया ?

कसी ईसाई भाई को पता हो तो बताये – पहले कसकी उत्प त्त हुई ?

मनुष्य की अथवा पशु आदि जीवो की ?

क्या वेदो को ऋ ष वेद व्यास ने लखा था ? मथक से सच्चाई की ओर

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

वे पौरा णक मत्र जो ये कहते नहीं थकते की वेदो को "वेद व्यास" जी ने लखा – वो या तो पूर्वाग्रह के शकार हैं या फर अपने पुराणो के ज्ञान को जानते नहीं हैं –

गरुण पुराण के अनुसार –

वेद व्यास जी ने वेद रूपी वृक्ष को अनेक शाखाओ में वभक्त कया
गरुण पुराण अध्याय १ (पृष्ठ १८)

अब जब वेद पहले ही वद्यमान थे जैसे की इस पुराण को पढ़कर पता चलता है – तब ये पौरा णक मत्र क्यों लोगो को भरमाते रहते हैं की वेद व्यास जी ने वेदो की रचना की ?????
यहाँ स्पष्ट रूप से लखा है की वेद व्यास जी ने वेदो की रचना नहीं की – तो कृपया ऊल जलूल तर्क देकर समय व्यर्थ न करे – अपना भी और मेरा भी

मेरा मानना है की वेदो की शाखा भी वेद व्यास जी से पहले ही वद्यमान थी – क्यों क वेद व्यास जी के पता ऋ ष पराशर जी पराशर संहिता में बहुत जगह वेद और वेदो की शाखाओ की बात करते हैं –

अब यहाँ वचारणीय तथ्य ये है की यदि उपरोक्त व र्णत पुराण को प्रमाण माने तो वेदो को शाखाओ में वभक्त करने वाले वेद व्यास जी थे – तब कैसे पराशर जी ने अपने पराशर संहिता में वेद की शाखाओ का भी जिक्र कया ???

अब कुछ पौरा णक ये कहेंगे की व्यास उनके बेटे थे जब उन्होंने वेदो की शाखाये बना दी तब उन्होंने अपने ग्रन्थ में लखा –

तो मेरा सुझाव उनको ये है की जाके पहले अपना मुंह गरम पानी से धो ले और अपनी नींद को उत्तर लेवे – तब बात करे –

क्यों क जब पराशर संहिता लखी गयी तब वेद व्यास जी उत्पन्न नहीं हुए थे – अगर आप पौरा णक फर भी मानते हैं तो कृपया प्रमाण ले आये –

नमस्ते –

आ खर क्यों मैं एक ईसाई नहीं हु

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यह लेख ईसाइयों के अनुरूप इस धारणा से प्रेरित है की यदि में ऐसा वश्वास करू की बाइबिल ही एक सच्ची ईश्वरीय कताब है तो मैं एक ईसाई बन जाऊंगा। मगर मेरे वैदिक धर्मी बने रहने के बहुत से अनेक कारण हैं जिन पर बाइबिल का ईश्वरी पुस्तक होने का वश्वास नहीं हो पाता। उनमे से कुछ मुख्य कारण हैं :

1. “सर्वोच्च शक्ति” मात्र एक “सनाई पर्वत” अथवा छ्वे आसमान पर रहती है ? यह बात आज के आधुनिक वज्ञानं सम्मत ता र्कक आधार युक्त नहीं।

जब क दूसरी और वेद कहते हैं – कण कण में ईश्वर व्याप्त है और यही वज्ञानं का मूलभूत आधार है क्यों क प्रत्येक अणु परमाणु को गति देने का काम ईश्वर करता है यदि ऐसा न हो तो ब्रह्माण्ड की गतिशीलता बंद होकर नाश का कारण होगा जब क ईश्वर प्रत्येक अणु परमाणु में व्याप्त होकर उसे गति देता है जिससे ब्रह्माण्ड निरंतर नियमवत अपने कार्य में तल्लीन है

2. “सर्वोच्च शक्ति” का दयालु और प्रेम भाव बाइबिल के ईश्वर से नदारद रहना।

जब क ईश्वर ने मनुष्यो को एक दूसरे से प्रेमभाव बरतने को कहा और सभी जीवो को अपने पुत्रवत समझकर अपना प्रेम एकसामान सभी जीवो पर लुटाया।

3. “सर्वोच्च शक्ति” का अर्थात बाइबिल के ईश्वर का बाइबिल अनुसार पूजा के लए अ धकार न देकर एक मनुष्य की पूजा करवा पाखंड को बढ़ावा देना।

वेद में ईश्वर ने कहीं भी अपना गर्वगण्ड न करके मनुष्यो को स्वतंत्र कर्म करने को कहा – उस कर्म में ईश्वर की उपासना केवल उस ईश्वर का धन्यवाद स्वरुप है – जिसका स्वर्ग नरक से कुछ लेना देना नहीं

4. बाइबिल में “सर्वोच्च शक्ति” यानी बाइबिल के ईश्वर का अपनी कही बातो से मुकर जाना या फर एक बात से दूसरी वरोधी बात करना।

वेद में ईश्वर की कल्याणमयी वाणी से सद्ध है कहीं भी एक से उलट दूसरी बात वा शक्षा नहीं पायी जाती

5. “सर्वोच्च शक्ति” का वज्ञानं सम्मत ज्ञान न होना।

वेद में तृण से लेके ब्रह्माण्ड पर्यन्त सब वस्तुओ का यथावत ज्ञान है

6. “सर्वोच्च शक्ति” का अपने बनाये मनुष्यो और उनके सद्भाव को देखकर, जलना, हिरस करना, चढ़ना, द्वेष, घृणा और पक्षपात आदि करना।

वेद में ईश्वर ने कहा “मनुर्भव” अर्थात मनुष्य बनो – कहीं भी कोई सम्पर्दायी बात नहीं – ना ही कहीं – हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाई बन जाने लालच या स्वर्ग नरक का डर।

7. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा महिलाओ के प्रति द्वेष, घृणा और नफरत आदि ज्ञान से उनका शोषण करवाना।

वेद ने महिलाओ को अबला नहीं सबला कहा, निर्मात्री कहा, ये सद्ध करता है वेद नारियो को “देवी” प वत्र कहता है

8. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा भाई-बहन, माता पुत्र, पता पुत्री, आदि अनेक रिश्तो की मर्यादाओ को तार तार करवाना।

पूरी सृष्टि जब से बनी तब से ही रिश्तो की मर्यादाओ का पूरा ध्यान वेद ने दिया है, इसी लए सृष्टि की आदि में अनेक स्त्री पुरषो की उत्प त्त ईश्वर करता है – ना की आदम हव्वा बना के भाई बहन का रिश्ता कलं कत करता है

9. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा उपलब्ध करवाई “ईश्वरीय पुस्तक” में ज्ञान, वज्ञानं की जगह, छल, कपट, धोखा, वैमनस्य, इतिहास, जादू, टोना, और अता र्कक अन्ध वश्वास आदि भ्रम युक्त अज्ञान का समावेश होना।

वेद में केवल ज्ञान, वज्ञानं, और पदार्थ वद्या का यथावत ज्ञान है, आडम्बर, ढकोसले, और पाखंड का वेद से दूर दूर तक कोई नाता नहीं

10. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा इस कताब पर बिना तर्क, प्रमाण आदि युक्तियों द्वारा सद्ध कये केवल वश्वास ले आने पर ही स्वर्ग भेजने का प्रलोभन देना।

वेद कहता है – इस लए ना मानो क्यों क वेद है इस लए मानो क्यों क तुम्हारे पास बुद् ध है, सत्य को ग्रहण करो और असत्य का त्याग करो

कोई भी ऐसी पुस्तक जो अपने को ईश्वरीय होने का दम्भ भरती हो, ले कन उसमे यदि ऐसी ववादास्पद बाते अथवा वषय पाये जाए तो क्या उसे ईश्वरीय पुस्तक का दर्ज़ा दिया जा सकता है ?

क्या कोई “सर्वोच्च शक्ति” ऐसी बेतुकी और निराधार बाते अपनी पुस्तक में लखवा सकती है ?

में जानता हु अ धकांश लोग इन सभी बातो को ईश्वरीय होने से नकार देंगे – और यही वजह है की मेने भी बाइबिल को ईश्वरीय होने से इन्ही कारणों के मद्देनजर नकार दिया है। क्यों क ये पुस्तक या ऐसी ही अन्य सम्प्रदायों की पुस्तके – ईश्वरीय होने का दम्भ तो भरती हैं मगर उनके सभी दावे जमीनी हकीकत पर खोखले सद्ध होते हैं क्यों क ईश्वरीय पुस्तक ज्ञान और वज्ञानं से भरी होनी चाहिए ना क ऐसी बुद् ध वहीन बातो से।

जाहिर है इस लेख से सभ्य समाज सहमत होगा और इस पुस्तक को केवल कुछ मनुष्यो द्वारा अपने फायदे और स्वार्थ की पूर्ति हेतु बनाई गयी पुस्तको की संज्ञा देगा ना क ईश्वरीय ग्रन्थ की।

अभी भी समय है, सम्पूर्ण वश्व के कल्याण हेतु, ब्रह्माण्ड की शांति हेतु, आइये लौटिए ईश्वर की सच्ची, कल्याणमयी वाणी की और, ज्ञान की और, न्याय और वज्ञानं की और

आओ लौट चले वेदो की और

नमस्ते

अभी पॉइंट तो बहुत उठ सकते हैं, मगर फलहाल पोस्ट बड़ी न हो जाए इस हेतु मुख्यतया इन्ही १० बिन्दुओ पर वचार करेंगे।

शेष अगले भाग में –

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 1

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यहूदा ने अपने बेटे की बहु से व्य भचार कया।

यदि पर्दा पड़ा था – ऐसा बोलो =

तो इसका मतलब की पैगम्बर कोई आम आदमी हुआ जो "वैश्या-रंडी" को देखकर अपने पर काबू भी न कर पाया ?

ऐसे पैगम्बर से भले तो हम सभ्य लोग ही सही – जो वैश्या-रंडी को देखकर काबू में रहते हों।

(उत्प त्त, अध्याय 38) –

12 बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी सो मर गई; फर यहूदा शोक से छूटकर अपने मत्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लये तिम्नाथ को गया।

13 और तामार को यह समाचार मला, क तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लये तिम्नाथ को जा रहा है।

14 तब उसने यह सोच कर, क शेला सयाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना वधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डाल कर अपने को ढांप लया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है, जा बैठी:

15 जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा; क्यों क वह अपना मुंह ढ़ापे हुए थी।

16 और वह मार्ग से उसकी ओर फरा और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, (क्यों क उसे यह मालूम न था क वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, क यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा?

17 उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। तब उसने कहा, भला उस के भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा?

18 उस ने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वसतुएं दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई।

19 तब वह उठ कर चली गई, और अपना घूंघट उतार के अपना वधवापन का पहिरावा फर पहिन लया।

20 तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपने मत्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया, क वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मली।

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 2

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

पैगम्बर दाऊद ने ऊरिय्याह की पत्नी से व्य भचार कया।

2 सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठ कर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।

3 जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री को पुछवाया, तब कसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?

4 तब दाऊद ने दूत भेज कर उसे बुलवा लया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई।

5 और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, क मुझे गर्भ है।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अब दाऊद ने जो व्य भचार और पाप कया उसे छिपाने को ऊरिय्याह को मरवा डालने की योजना बनाई

14 बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चट्ठी लखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेजदी।

15 उस चट्ठी में यह लखा था, क सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोडकर लौट आओ, क वह घायल हो कर मर जाए।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अब जब ऊरिय्याह को मरवा डाला जो क दाऊद की सोची समझी चाल थी –

16 और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख भालकर जिस स्थान में वह जानता था क वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया।

17 तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध कया, और लोगों में से, अर्थात दाऊद के सेवकों में से कतने खेत आए; और उन में हित्ती ऊरिय्यह भी मर गया।

18 तब योआब ने भेज कर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया;
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अपनी योजना पूरी हो जाने पर अर्थात दाऊद की काम पपासा शांत होने की राह का रोड़ा ऊरिय्यह के मर जाने पर फर ऊरिय्याह की बीवी को अपने घर में डाला

27 और जब उसके वलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने कया था यहोवा क्रो धत हुआ।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

ऐसे ऐसे पैगम्बर ईसाइयो में हुए हैं।

अब इन्हे पैगम्बर कौन कहे ?

क्या ये पैगम्बरी के काम थे ?

 कसी औरत को नहाते देखना – फर अपनी काम पपासा को शांत करने हेतु उस औरत को बुलवा लेना – मौज मस्ती करना – अगर उस औरत का पति राह का रोड़ा बने तो ठिकाने लगवा देना – फर उस औरत का जमकर उपभोग करना –
भाई फल्मो में और हा लया जिंदगी में ऐसे काम वलेन करते हैं – यानी खलनायक – यानी बुरे लोग – मगर पुरानी फल्मो में तो वलेन भी ऐसे नहीं दिखाते थे – कम से कम नारी का सम्मान कुछ तो होता ही था – ये तो पैगम्बर कम – प्रेम चोपड़ा और गुलशन ग्रोवर जैसे लोगो का दादा जरूर लगता है –
आप क्या कहते हो ?

नोट : ऊरिय्याह कौन था ? ये जानना बहुत जरुरी है –

ऊरिय्याह अपने स्वामी दाऊद के प्रति वफादार, कर्तव्यनिष्ठ, सच्चा, ईमानदार और वीर पुरुष था। जो की ऊरिय्याह की दाऊद को बोली इस बात से सद्ध होता है

7 जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब दाऊद ने उस से योआब और सेना का कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा।

8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, अपने घर जा कर अपने पांव धो। और ऊरिय्याह राजभवन से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया।

9 परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और अपने घर न गया।

10 जब दाऊद को यह समाचार मला, क ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया, तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया?

11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब सन्दूक और इस्राएल और यहूदा झोंप ड़यों में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जा कर खाऊं, पीऊं, और अपनी पत्नी के साथ सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ, क मैं ऐसा काम नहीं करने का।

12 दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, आज यहीं रह, और कल मैं तुझे वदा करूंगा। इस लये ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम में रहा।

देखो ईसाई मत्रो – तुम्हारे बाइबिल में ही तुम्हारे पैगम्बरों के बारे में क्या क्या लखा है ?
 फर भी तुम ऐसे लोगो को श्रेष्ठ पुरुष समझने से बाज़ नहीं आ रहे ?
क्या श्रेष्ठ पुरुष ऐसे ही होते हैं जो :

औरत को नहाते हुए नगनवस्था में देखे ?

अपनी काम पपासा को शांत भी न कर पाये ?

अपनी कामाग्नि को शांत करने को कसी नारी के साथ व्य भचार तक कर लेवे ?

और हद्द तो तब हो जाए जब अपनी कामाग्नि से धहकते हुए – उस स्त्री के पति को मारने के लए चालबाजियां करे ?

धूर्तता से, छल से, कपट से उस वीर को मारे ?

औरत को पाने के लए चाल चले ?

अपने ही कर्तव्यपरायण, सच्चे, निर्भीक, वफादार, ईमानदार पुरुष को पुरस्कृत करने की बजाये उसे मरवा के उसकी बीवी के साथ रंगर लयां मनाते रहे ?

क्या इसी को ईसाइयत में पैगम्बरी कहते हो ?

और देखो – यहोवा क्रो धत हुआ और दाऊद को क्या कहा –

9 तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जान कर क्यों वह काम कया, जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात कया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है।

10 इस लये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्यों क तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लया है।

11 यहोवा यों कहता है, क सुन, मैं तेरे घर में से वप त्त उठा कर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने ले कर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा।

12 तू ने तो वह काम छिपाकर कया; पर मैं यह काम सब इस्राए लयों के साम्हने दिन दुपहरी कराऊंगा।

13 तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के वरुद्ध पाप कया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर कया है; तू न मरेगा।

14 तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।
(शमूएल 2 अध्याय 12)

अब बताओ – ये इनके ईश्वर यहोवा का इन्साफ है – मतलब की एक व्यक्ति ने अगर कसी महिला का बलात्कार कया = तो उसकी सजा बलात्कारी की बहन को बलात्कार करके दी जाए –

वाह रे वाह धन्य हो ईसाइयो –

क्या महिला की कोई इज्जत नहीं होती ?

और वो जो बच्चा पैदा हुआ – उसमे उसकी क्या गलती थी ? उस बच्चे को क्यों मार ? मारना तो दाऊद को था –

क्या ये इन्साफ है ?

तो नाइंसाफी कसे कहे ?

कृपया सत्य को समझे –

ज्ञान और वज्ञानं की और लौटे

न्याय और धर्म की और लौटे

सत्य की और लौटे

आओ लौट चलो वेदो की ओर

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 3

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मत्रो जैसे की पछली दो पोस्ट से ये कारवां चलता आ रहा है की सत्य को सामने रखा जाए – और असत्य को दूर फेक दिया जाए – उसी कड़ी में पेश है – एक और सत्य की खोज।

हजरत दाऊद का चरित्र जो बाइबिल में एक कामांध, काम पपासु, स्त्रियों का अत्य धक सेवक, और निर्लज्ज आदमी – जिसने अपनी काम पपासा को शांत करने हेतु अपने खुद के एक कर्तव्यनिष्ठ, सच्चे, वीर, वफादार योद्धा को जान से मरवा दिया ता क उसकी बीवी को ह थया सके। उसके साथ रंगर लयां मना सके।

जिसकी मान सकता ऐसी थी उसकी संतान कैसी होगी ? क्या आपने कभी सोचने का पर्यत्न कया ?

आइये आज प्रयत्न करते हैं सत्य को खोजने का

जैसे की हम सब जानते हैं –

बाप पे पूत,
नसल पे घोडा
बहुत नहीं, तो थोड़ा थोड़ा।

ये पोस्ट इसी वषय को चरितार्थ करती है। आपको पछली पोस्ट में हजरत दाऊद जैसे पैगम्बर के बारे में बाइबिल क्या कहती है – उससे रूबरू करवाया था।
अब थोड़ा मुखातिब हुआ जाये हजरत दाऊद के संतानो से।

हजरत दाऊद का एक बेटा था – अबशालोम

हजरत दाऊद का एक और बेटा था – अम्नोन

हजरत दाऊद की एक बेटी – तामार जो अबशालोम की बहिन थी।

यानी तीनो एक ही पता से उत्पन्न भाई बहिन थे।

अब हुआ क्या ?

हुआ ये की भाई का दिल अपनी बहन पर आ गया

यानी दाऊद के एक बेटे अम्नोन का दिल अपनी बहन तामार पर आ गया।

1 इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

अब दिल आ जाये तो क्या करे ? वही होता है – जो आ शक़ों का हाल होता है – खाना पीना छूट जाना – भूख प्यास न लगना, बीमार पड़ जाना आदि आदि। वही अम्नोन के साथ हुआ।

2 और अम्नोन अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा वकल हो गया क बीमार पड़ गया; क्यों क वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता था।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

अब क्या करे अम्नोन ? सो अपने दोस्त की सलाह ली।

3 अम्नोन के योनादाब नाम एक मत्र था, जो दाऊद के भाई शमा का बेटा था; और वह बड़ा चतुर था।

4 और उसने अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण है क तू प्रति दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने उस से कहा, मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं।

5 योनादाब ने उस से कहा, अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पता तुझे देखने को आए, तब उस से कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खलाए, और भोजन को मेरे साम्हने बनाए, क मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

बस जी बन गया काम – अंधे को क्या चाहिए – दो आँखे –

हजरत दाऊद जो की पैगम्बर थे – यहोवा इनसे बात करता था – पता नहीं यहोवा कहाँ गुम हुआ जो ऐसी जरुरत की बताने वाली बात – अथवा पाप को होने से बचा भी न पाया और न हजरत दाऊद को बता पाया – शायद यहोवा भी इस काम को पसंद करता हो ?

खैर हजरत दाऊद ने खबर भजवा दी – तामार को भेजो – अम्नोन खाना खाना चाहता है – पता नहीं पैगम्बरी ने साथ क्यों न दिया – जो भ वष्य की बात ऐसे पैगम्बर चुटकी में जान लेते हैं – इस पाप से अन भज्ञ रहे ? हो सकता है हजरत दाऊद इस काम को मन से समर्थन दे रहे हो ?

खैर जो भी हो – तामार आ गयी अपने बीमार भाई को ठीक करने के लए। धन्य है ऐसी बहिन जो अपने भाई की बिमारी की खबर मलते ही पधार गयी – और पूरी बना दी।

7 और दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, क अपने भाई अम्नोन के घर जा कर उसके लये भोजन बना।

8 तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उसने आटा ले कर गूंधा, और उसके देखते पूरियां। पकाईं।

मगर अम्नोन के मन में जो पाप चल रहा था – उससे वो बेचारी अबला बहिन अनजान थी – उसे तो केवल अपने भाई के ठीक होने की जल्दी थी – इस लए भाई को अकेले – एकांत कमरे में भी भोजन करवाने को राजी हो गयी।

तब उसने थाल ले कर उन को उसके लये परोसा, परन्तु उसने खाने से इनकार कया। तब अम्नोन ने कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से निकल गए।

10 तब अम्नोन ने तामार से कहा, भोजन को कोठरी में ले आ, क मैं तेरे हाथ से खाऊं। तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठा कर अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में ले गई।

भाई हमने तो सुना है – स्त्रियों में एक सेंस होती है – जो पहचान जाती है की कोई उसके साथ जो कर रहा है – उसमे उसकी मान सकता अच्छी है या बुरी है। मगर बेचारी तामार इतनी भोली थी – की अपने भाई की बुरी बात को पहिचान तक न सकी।

11 जब वह उन को उसके खाने के लये निकट ले गई, तब उसने उसे पकड़कर कहा, हे मेरी बहिन, आ, मुझ से मल।

12 उसने कहा, हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्यों क इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूढ़ता का काम न कर।

13 और फर मैं अपनी नामधराई लये हुए कहां जाऊंगी? और तू इस्राए लयों में एक मूढ़ गना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लये मना न करेगा।

14 परन्तु उसने उसकी न सुनी; और उस से बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट कया।

और तामार जैसी सुशीला, नेक बहिन के साथ – हजरत दाऊद के पुत्र अम्नोन ने कुकर्म कर ही दिया। उसे भ्रष्ट करके ही माना।

छी ! छी ! छी !

कतनी घिनौनी हरकत थी – अपनी ही बहिन के साथ कुकर्म करना – मगर देखने वाली बात है – हजरत दाऊद जो एक महान पैगम्बर हुए हैं – उनके घर में – उनके अपने ही खून – अपने ही बेटे ने – ऐसा जलील काम कया।

क्या ये पाप कृत्य नहीं था ?

क्या हजरत दाऊद को अपनी पैगम्बरी के लए – ऐसे कुपुत्र को दंड नहीं देना चाहिए था ?

क्या अपनी बेटी के लए हजरत दाऊद को कोई सहानुभूति नहीं थी ?

क्या इसे पैगम्बरी कह सकते हैं ?

जो पैगम्बर अपने घर में हो रहे पाप को नहीं रोक सका ?

जो पैगम्बर अपने पुत्र को सही शक्षा नहीं दे सका ?

जो पैगम्बर अपनी पुत्री की रक्षा नहीं कर सका ?

जो यहोवा सब कुछ जानने वाला है – पैगम्बरों से बात करता है – भ वष्य की बात बताता है – राष्ट्र को बनवाता और बिगड़वाता है –

वो अपने पैगम्बर की पुत्री की लाज न बचा सका ?

क्या ये बाइबिल धर्म की शक्षा देती है ?

अगर देती है –

तो ये अधर्म करने वाले पैगम्बर और उनके पुत्रो को दंड का वधान क्यों नहीं ?

सत्य को जानो ईसाई मत्रो !

मनुष्य जीवन का लाभ उठाओ।

सत्य को जानो और मानो।

आओ लौट चले सत्य की और

वेद और वज्ञानं की और

मनुष्यता की और

"कृण्वन्तो वश्वमार्यम"

नमस्ते

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 4

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

 मत्रो जैसे की पछली तीन पोस्ट से ये कारवां चलता आ रहा है की सत्य को सामने रखा जाए – और असत्य को दूर फेक दिया जाए – उसी कड़ी में पेश है – एक और सत्य की खोज।

हजरत याकूब (इजराइल) के 12 पुत्र हुए :

1. रूबेन, शमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून –
ये छह बेटे याकूब की पहली बीवी लआ से हुए

2. युसूफ और बिन्यामीन – दूसरी बीवी राहेल से हुए

3. दान और नप्ताली – राहेल की दासी बिल्हा से थे

4. गाद और आशेर – ये लआ की दासी जिल्पा से हुए।
(उत्प त ३५:२३-२६)

ये तो हुआ संछिप्त परिचय – अब आप सोचोगे इसमें चरित्रहीनता कहाँ है ?

भाई लोगो – पहली चरित्रहीनता तो यही देख लो – की हजरत याकूब जो एक ईसाई पैगम्बर थे – उनकी एक नहीं दो दो बी वयां थी – क्या ये कम चरित्रहीनता है ?

चलो इसे चरित्रहीनता नहीं कहते – ये शादी थी। मगर क्या अपनी पत्नी की दा सयों के साथ बिना शादी कये संतान पैदा करना चरित्रहीनता नहीं है ?

चलो एक बार को माना की दासी के साथ भी ववाह कया था – अव्वल तो ये संभव ही नहीं था – फर भी यदि मान लया जाए तो – अपनी पत्नी को सुरक्षा की जिंदगी देना ये एक मनुष्य का कर्तव्य होता है – ले कन हजरत याकूब जो एक महान पैगम्बर थे – अपने बेटे को अच्छी शक्षा तक न दे सके – क्या ये महानता की बात थी ?

मैं चरित्रहीनता इस लए कहता हु की एक पैगम्बर होने के नाते समाज को और अपने परिवार को सु शक्षा देना ही पैगम्बर का कार्य होता है – मगर ये कैसे पैगम्बर जिनके बेटे ने अपनी ही माँ के साथ कुकर्म कर दिया ?

दे खये –

जैसे की आपने ऊपर पढ़ा – रूबेन – याकूब की पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र हुआ था – मगर उसका आचरण इतना भ्रष्ट था की उसने अपनी ही सौतेली माँ के साथ कुकर्म कया।

इजराइल (याकूब) वहां थोड़े समय ठहरा। जब वह वहां था तब रूबेन इजराइल (याकूब) की दासी बिल्हा के साथ सोया। इजराइल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

(उत्प त ३५:२२)

अब इस बात का थोड़ा ग णत सम झए।

इजराइल (याकूब) के बीवी राहेल पुत्र को जन्म देते समय मर गयी तो – तो याकूब उसे दफनाने में व्यस्त था – बस फर क्या था रूबेन को मौक़ा मल गया – और उसने अपनी ही माँ का बलात्कार कया।

अब ऐसे ऐसे पता पुत्र जिस समाज – कुल के पैगम्बर हुए हो – उस समाज से आप कस प्रकार की शक्षा की उम्मीद कर सकते हैं ?

रूबेन के इस पाप की सुचना जब याकूब को मली – तो उसने उसे क्या सजा दी ? क्या कोई ईसाई मत्र बताने का कष्ट करेगा ?

मेरे ईसाई मत्रो इस पापयुक्त आचरण को छोडो = सत्य सनातन वैदिक धर्म से नाता जोड़ो =

नमस्ते

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्रहीन थे – पार्ट 5

JULY 2, 2015 3 COMMENTS

सभी मत्रो – जैसे की पछली ४ पोस्ट से ये पोल खोल चालू है – की ईसाई पैगम्बर अत्यंत ही चरित्रहीन थे – खुद बाइबिल ऐसा प्रमा णत करती है – मगर फर भी हमारे कुछ हिन्दू भाई – इस पाखंड में फंसते जाते हैं – क्यों क वो बाइबिल को पढ़ते नहीं – और जो कुछ पढ़ते हैं – वो सही से समझते नहीं – आइये अपने हिन्दू भाइयो को इस पाखंड रुपी चुंगल से निकालने के लए सहयोग करे और इस पोस्ट के माध्यम से सत्य को एक बार फर प्रसारित करे –

आज जिन महान पैगम्बर की चरित्रहीनता का जिक्र इस पोस्ट में कया जायेगा – वो इतने महान थे – की उन्होंने न केवल अपने फायदे और काम पपासा को शांत करने के लए अपने खुदा (यहोवा) की आज्ञा का अपमान कया – बल्कि इस बाइबिल में अपने खुदा (यहोवा) से इस कृत्य के लए आशीर्वाद भी प्राप्त कया –

ऐसा लखवा दिया –

आइये एक नजर डाले – आ खर माजरा क्या है –

बाइबिल में अनेक जगह पर यहोवा कहता है –

शा पत हो वह जो अपनी बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उस से कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन॥
व्यवस्था ववरण, अध्याय २७:२२)

और यदि कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी संगी बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, तो वह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आंखों के साम्हने नाश कए जाएं; क्यों क जो अपनी बहिन का तन उघाड़ने वाला ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा।
लैव्यव्यवस्था, अध्याय २०:१७)

तो उपर ल खत प्रमाणों से सद्ध है की अपनी बहिन – चाहे सगी हो अथवा सौतेली – उस से यदि कोई गलत काम करता है – तो वो व्य भचारी है – यानी ऐसा मनुष्य चरित्रहीन है – निन्दित है – और उसका नाश कया जाए –

बात बिलकुल ठीक है – कायदे की है – ऐसा ही होना चाहिए – मगर मेरी उस वक़्त आँख फटी की फटी रह गयी जब मेने – महान ईसाई पैगम्बर "इब्राहिम" का जिक्र बाइबिल में पढ़ा –

अरे दादा इतना घोर अनर्थ – इतना व्य भचारी पैगम्बर ? अपनी ही बहिन को अपनी हवस का शकार बना डाला ?

छिः धक्कार है ऐसी बाइबिल पर और ऐसे ईश्वर पर जो एक जगह कहता कुछ है – और जब पैगम्बर की बात आई तो बदल गया ? क्या ऐसा भी ईश्वर का काम हो सकता है ?

दे खये

इब्राहिम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, क इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।
(उत्प त्त, अध्याय २०:११)

और फर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फर वह मेरी पत्नी हो गई।
(उत्प त्त, अध्याय २०:११)

ईसाई मत्रो देखो आपका पैगम्बर – जिसने अपने ही खुदा की कही बात को मटटी में मला दिया ?

क्या ऐसे ही पैगम्बर होते हैं ?

पैगम्बर तो वो कहलाते हैं – जो खुदा की बात पर चले – मगर क्या "इब्राहिम" जो महान पैगम्बर थे – खुदा की बात पर अमल कर पाये ? नहीं – क्यों क अपनी काम पपासा जो शांत करनी थी ? और देखो अपनी जान बचाने को भी अपनी पत्नी को बहिन बनवा दिया – फर सच भी बता दिया की हाँ वो बहिन तो है मगर बीवी भी है – क्यों क इब्राहिम के पता की बेटी थी – उसके माँ की नहीं ?

क्या ये पैगम्बर के कर्म होते हैं ?

अब देखो आपका खुदा कैसे बदला – क्यों क पैगम्बर की बात जो है –
फर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
(उत्प त्त, अध्याय १७:१५)

और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, क वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।
(उत्प त्त, अध्याय १७:१६)

अब बताओ – क्या भरोसा कया जाए आपके खुदा का ?

जो अपनी एक बात पर ही टिका नहीं रहता – अरे भाई न्याय तो कम से कम सही होना चाहिए – बल्कि एक पैगम्बर के लए तो खासकर कोई रियायत नहीं होनी चाहिए – क्यों क

वो एक समाज का नेता होता है – अब यदि नेता ही ऐसे कानून तोड़ने लगे – और यहोवा आशीर्वाद देता रहे – तो आम आदमी क्यों नहीं ये सब पाप कर्म करेगा ?

मेरे ईसाई मत्रो अभी समय है – इस पापयुक्त आचरण से अपने को भ्रष्ट ना करो – ईश्वर की शरण में आओ – सच्ची मुक्ति वेद के द्वारा है – इस झूठी मलावटी – हर पैगम्बर द्वारा र चत अपने फायदों के लए बनाई बाइबिल से आपका घर परिवार ही दू षत होगा – और कुछ नहीं

वेद शक्षा अपनाओ

धर्म में पुनः स्था पत हो जाओ

सत्य और न्याय की और

ईश्वर की सत्य सनातन व्यवस्था की और

चलो चले वेदो की और

नमस्ते

बाइबिल और ईसाई पैगम्बरों की चरित्रहीन, पथभ्रष्ट और असामाजिक शक्षा

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

बाइबिल अनुसार – माँ बेटे से – पता पुत्री से – भाई सगी बहन से – सेक्स सम्बन्ध बना सकता है – ये उ चत कार्य हैं।

ईसाई समाज में –

आदम के काल से आज तक

पता पुत्री

माँ बेटा

भाई बहन

आदि का शारीरिक सम्बन्ध बनाना – या भारतीय परिवेश में कहे तो ऐसे घृ णत रिश्ते – नाजायज़ ताल्लुक – बनाना –

ईसाइयो अथवा बाइबिल की शक्षा मानने वालो के लए –

श्रद्धा, समर्पण, वश्वास और गर्व का वषय है

रेफ. दे खये –

भाई बहन के सम्बन्ध :

1 हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, मैं अपनी बारी में आया हूं, मैं ने अपना गन्धरस और बलसान चुन लया; मैं ने मधु समेत छत्ता खा लया, मैं ने दूध और दाखमधु भी लया॥ हे मत्रों, तुम भी खाओ, हे प्यारों, पयो, मनमाना पयो!

2 मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लये द्वार खोल; क्यों क मेरा सर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गरी हुई बून्दोंसे भीगी हैं।

3 मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मैं उसे फर कैसे पहिनूं? मैं तो अपने पांव धो चुकी थी अब उन को कैसे मैला करूं?
(श्रेष्ठगीत, अध्याय 5)

7 तेरा डील डौल खजूर के समान शानदार है और तेरी छातियां अंगूर के गुच्छों के समान हैं॥

8 मैं ने कहा, मैं इस खजूर पर चढ़कर उसकी डा लयों को पकडूंगा। तेरी छातियां अंगूर के गुच्छे हो, और तेरी श्वास का सुगन्ध सेबों के समान हो,
(श्रेष्ठगीत, अध्याय 7)

भाई बहन का ववाह –

11 इब्राहीम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, क इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।

12 और फर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फर वह मेरी पत्नी हो गई।
(उत्प त्त अध्याय २०:११-१२)

हजरत इब्राहिम ने अपनी बहिन सारा से ववाह कया –

अम्नोन ने अपनी बहिन तामार का बलात्कार कया – जब क तामार कहती रही की – अम्नोन से ब्याह हो सकता है – (2 शमूएल, अध्याय १३:१-१४)

कैन ने अपनी बहिन से ही ववाह कया – क्यों क और कोई उत्प त्त स्त्री की यहोवा ने की नहीं – केवल आदम और हव्वा बनाये – तो सद्ध है – कैन ने अपनी ही बहिन से ववाह कया।

अब देखते हैं पता पुत्री सम्बन्ध :

30 और लूत ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंक वह सोअर में रहने से डरता था: इस लये वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफा में रहने लगे।

31 तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरूष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए:

32 सो आ, हम अपने पता को दाखमधु पला कर, उसके साथ सोएं, जिस से क हम अपने पता के वंश को बचाए रखें।

33 सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पता को दाखमधु पलाया, तब बड़ी बेटी जा कर अपने पता के पास लेट गई; पर उसने न जाना, क वह कब लेटी, और कब उठ गई।

34 और ऐसा हुआ क दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पता के साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पलाएं; तब तू जा कर उसके साथ सोना क हम अपने पता के द्वारा वंश उत्पन्न करें।

35 सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पता को दाखमधु पलाया: और छोटी बेटी जा कर उसके पास लेट गई: पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था।

36 इस प्रकार से लूत की दोनो बेटियां अपने पता से गर्भवती हुई।
(उत्प त, अध्याय 19)

आइये अब देखे –

माँ बेटे का रिश्ता

इजराइल (याकूब) वहां थोड़े समय ठहरा। जब वह वहां था तब रूबेन इजराइल (याकूब) की दासी बिल्हा के साथ सोया। इजराइल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।
(उत्प त ३५:२२)

अब इस बात का थोड़ा ग णत सम झए।

इजराइल (याकूब) के बीवी राहेल पुत्र को जन्म देते समय मर गयी तो – तो याकूब उसे दफनाने में व्यस्त था – बस फर क्या था रूबेन को मौक़ा मल गया – और उसने अपनी ही माँ के साथ रात बितायी (सम्भोग कया)

सम्बन्ध तो और भी बहुत से लोगो के इसी प्रकार से बाइबिल में लखे हैं – मगर पोस्ट बड़ी करने का उद्देश्य नहीं – इस लए एक बार स्वयं बाइबिल पढ़ कर वचार करे –

क्या ये ऐसे घटिया – और मान सक स्तर से गरे हुए लोग – जो अपने को स्वघो षत "पैगम्बर" और एक काल्पनिक गढ़ा हुआ खुदा "यहोवा" कोई सभ्य व्यक्ति हुए होंगे ?

एक तरफ यहोवा कहता है कोई व्य भचार नहीं करो – मगर उसके पैगम्बर और उसके बेटी बेटियो के कये भ्रष्ट आचरण को अपनी दैवीय मुहर लगाकर प वत्र बना देता है ?

कुछ उदहारण –

20 अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद को ब्याह लया और उससे हारून और मूसा उत्पन्न हुए, और अम्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।
(निर्गमन, अध्याय 6)

29 अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं: अब्राम की पत्नी का नाम तो सारै, और नाहोर की पत्नी का नाम मल्का था, यह उस हारान की बेटी थी, जो मल्का और यिस्का दोनों का पता था।
(उत्प त्त, अध्याय ११)

यहाँ अबिराहम तो वो जिसने अपनी बहिन साराह से सम्बन्ध बनाये – मगर यहाँ एक बात ध्यान से पढ़िए – अबिराहम के भाई नाहोर ने अपनी भतीजी मल्क से सम्बन्ध बनाये –

26 जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए॥
(उत्प त्त, अध्याय ११)

ये बाइबिल केवल अपने सेक्स की भूख कैसे और कस प्रकार शांत की जाए – एक नारी की अस्मत कैसे बर्बाद की जाए – कैसे हवस की भूख को पूरा कया जाए – उसकी सभी युक्तियाँ बाइबिल में पायी जाती हैं =

ये थोड़ा सा बाइबिल में नारी की स्थति वषय को बताया – बाकी सभी पाठकगण स्वयं वचार करे –

मेरे ईसाई मत्रो – आप क्यों संकोच में हो अभी तक – बाहर निकलो इस मजहबी गंदगी से – प्रकाश और ज्ञान की और आओ –

धर्म और सत्य की और आओ

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते'

क्या अर्जुन के रथ पर हनुमान जी वद्यमान थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

अर्जुन के रथ में जो पताका थी, उसमे केवल हनुमान जी ही स्था पत थे – ऐसा महाभारत नहीं कहती –

जैसे आज भी हम बहुत से अत्याधुनिक मसाइल, फाइटर प्लेन , एयरक्राफ्ट देखते हैं, उन सबमे, कुछ प्रतीक उपयोग कये जाते हैं, मसाल के तौर पर –

राष्ट्र का ध्वज

सेना से सम्बन्ध वभाग का लोगो

कुछ न. भी लखे होते हैं

आदि आदि अनेक एम्ब्लोम (प्रतीक चन्ह) भी स्था पत होते हैं।

इसी प्रकार – अर्जुन के रथ (वमान) में अनेक अनेक महापुरषो, वीरो, और पतरो आदि के मूर्ति (प्रतीक चन्ह) लगे हुए थे।

जो लोग केवल ये कहते हैं की हनुमान जी की ही मूर्ति या ध्वजा थी – वो कृपया एक बार – महाभारत में ही उद्योगपर्वान्तर्गत यानसन्धि पर्व – अध्याय ५६ श्लोक संख्या ७-८ पढ़ लेवे

संजय ने कहा – प्रजानाथ ! वश्वकर्मा त्वष्टा तथा प्रजापति ने इंद्र के साथ मलकर अर्जुन के रथ की ध्वजा में अनेक प्रकार के रूपों के रचना की है।। ७ ।।

उन तीनो ने देवमाया के द्वारा उस ध्वज में छोटी बड़ी अनेक प्रकार की बहुमूल्य एवं दिव्य मूर्तियों का निर्माण कया है ।। ८ ।।

इन श्लोको में अर्जुन के रथ की ध्वज का वर्णन है – स्पष्ट है कहीं भी केवल हनुमान जी का वर्णन नहीं है – क्यों क अनेक वीर, महापुरष, राजाओ आदि के चन्ह उस ध्वज पर अं कत कये गए थे ठीक ऐसे ही हनुमान जी भी उनमे से एक थे।

मगर कुछ मूर्खो ने केवल हनुमान जी को ही ध्वज पर दिखा कर अर्जुन, कृष्ण जैसे महावीरों की वलक्षण और ज्ञानग र्भत सोच को दर कनार करके – पक्षपाती तरीके से केवल हनुमान जी को ही ध्वज पर दिखाया –

क्या इस प्रकार के पक्षपात से अनेक वीरो और महापुरषो का अपमान नहीं होता ?

एक तरफ तो पौरा णक लोग कहते नहीं थकते की हनुमान जी प्रभु श्री राम के चरणो से हटते तक नहीं – दूसरी तरफ कृष्ण को राम का ही दूसरा रूप भी बताते हैं –

फर मेरी शंका है – ये हनुमान जी कृष्ण यानी अपने प्रभु राम के चरणो से हटकर – उनके सर पर क्यों और कैसे सवार हो गए ?

क्या ये तर्क सही होगा ?

आशा है इस पोस्ट का सही मतलब समझा जाएगा

धन्यवाद

नोट : अर्जुन के रथ में १०० घोड़े (हार्सपावर) उपयोग था – जो एक फाइटर प्लेन था – जिसमे अनेक शस्त्र और तकनीकी थी – जिसके बारे में वस्तार से पोस्ट लखी जायेगी।

"ईसा के शांतिवादी सद्धांत का मथक"

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

ईसा की "अशांति अवधारणा" (आतंकी शक्षा) का सच और

"शांतिवादी सद्धांत" अहिंसा सद्धांत

या बिलकुल सरल भाषा में कहे तो –

"ईसा के शांतिवादी सद्धांत का मथक"

मेरे मत्रो,

जैसे की हम सब जानते हैं – ईसाई मत के अनेक पैगम्बर – चरित्रहीन गुणों से लबरेज थे – पूरा ईसाई मत और बाइबिल – इन पैगम्बरों के चरित्रहीन होने का पुख्ता सबूत तो है – उसके साथ साथ चरित्रहीनता को यहोवा का समर्थन और पैगम्बरों को ऐसे दीन-हीन कर्म करने को "कर्तव्य" समझ कर धारण करने का खुला आवाहन खुद ईसाइयो का "परमेश्वर यहोवा" करता है – पछली अनेक पोस्ट से ज्ञात हुआ –

आज हम जिस बात पर ध्यान केंद्रित करने की को शश करेंगे – वो है – "ईसा का झूठा शांति सद्धांत" या फर कहे की ईसा के शांतिपाठ का पोल खोल –

हमारे अनेक ईसाई मत्र – ऐसी तर्कहीन या यु कहे – अफवाह उड़ाते हैं – की ईसा एक शांति दूत था – जिसने बाइबिल में अनेक बार शांति की बात की – खुद शांति के लए मर गए – यहाँ शांति से तात्पर्य अहिंसा से भी है – आइये देखे –
ईसा का तथाक थत शांति अहिंसा का पाठ :

एक "अहिंसावादी" "शांतिदूत" खासतौर पर या आमतौर पर एक ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो कसी भी प्रकार की हिंसा का कसी भी कारण से समर्थन नहीं करता। यही "अहिंसावादी" या "शांतिदूत" का पारिभा षक अर्थ होगा – और होना भी यही चाहिए – यदि बाइबिल में ईसा की केवल दो चार बातो से ही ईसा का ऐसा सद्धांत ईसाई मत्र मानते हैं – तो उन्हें में केवल "मुर्ख" का ही दर्जा दे सकता हु – क्यों क दो चार बातो से तो पूरी बाइबिल की शक्षा ही बेकार साबित होती है – फर दो चार बातो के जरिये ही ईसा को "अहिंसावादी" और "शांतिदूत" जैसे शब्दों से नवाजना – ये गलत होगा –

आइये ईसा की कुछ शांति प्रय एक दो बातो को देखे –

38 तुम सुन चुके हो, क कहा गया था, क आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।

39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, क बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे।

40 और यदि कोई तुझ पर ना लश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे।

41 और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा।

42 जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़॥

43 तुम सुन चुके हो, क कहा गया था; क अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।

44 .परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, क अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लये प्रार्थना करो।
(मत्ती – Mt – अध्याय ५ : ३८-४४)

तो ये है वो आयते जिनको लेके – ईसाई मत्र – अनेक हिन्दू भाइयो को भरमजाल में फंसाते हैं – और ईसा को अहिंसावादी घो षत कर देते हैं – ऐसी ही तथाक थत "शांति प्रय" कुछ आयते – कुरआन में भी पायी जाती हैं – तो क्या कुरआन को भी "शांतिवादी" "अहिंसावादी" घो षत कर दोगे ?

ऊपर जो अर्थ दिया था – उस हिसाब से तो ईसाई सही कहते हैं ऐसा प्रतीत होता है – क्यों क ईसा ने वाकई शांति की बात की – मगर ये जो प्रतीत होता है, क्या वाकई सत्य है ?

आइये एक नजर ईसा की वास्त वक शक्षा पर नजर डालते हैं – जिससे ईसा के शांति प्रय होने की खोखली दलील बेनकाब हो जाएगी।

मत्ती अनुसार ईसा की क्रूरतापूर्ण शक्षाये :

34 यह न समझो, क मैं पृथ्वी पर मलाप कराने को आया हूं; मैं मलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं।

35 मैं तो आया हूं, क मनुष्य को उसके पता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं।

36 मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।
(मत्ती अध्याय 10)

6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्यों क इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
(मत्ती अध्याय 24)

36 यीशु ने उत्तर दिया, क मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, क मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां

का नहीं।
(यूहन्ना अध्याय 18)

13 और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।

14 और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने
हुए उसके पीछे पीछे है।

15 और जाति जाति को मारने के लये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।
(प्रका शत वाक्य, अध्याय 19)

12 और उन्होंने उस से बिनती करके कहा, क हमें उन सूअरों में भेज दे, क हम उन के
भीतर जाएं।

13 सो उस ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा।
(मरकुस अध्याय 5)

ईसा की ईर्ष्यालु शक्षा :

20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ के काम कए थे; क्यों क उन्होंने अपना मन नहीं फराया था।
(मत्ती अध्याय 11)

29 और जिस कसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लये छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मलेगा: और वह अनन्त जीवन का अ धकारी होगा।
(मत्ती, अध्याय 19)

21 एक और चेले ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे, क अपने पता को गाड़ दूं।

22 यीशु ने उस से कहा, तू मेरे पीछे हो ले; और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे॥
(मत्ती, अध्याय 8)

1 तब यरूशलेम से कतने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे।

2 तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, क बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?

3 उस ने उन को उत्तर दिया, क तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा
टालते हो?

4 क्यों क परमेश्वर ने कहा था, क अपने पता और अपनी माता का आदर करना: और जो कोई पता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए।

5 पर तुम कहते हो, क यदि कोई अपने पता या माता से कहे, क जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को भेंट चढ़ाई जा चुकी।

6 तो वह अपने पता का आदर न करे, सो तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया।

7 हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे वषय में यह भ वष्यद्वाणी ठीक की।
(मत्ती, अध्याय 15)

 लखता जाऊँगा तो अंत नहीं – बाइबिल के पुरे नियम में – ईसा ने केवल – लड़ाई झगडे – परिवार को बांटने – लड़ने – तलवार खरीदने – मंदिर और मुर्तिया तोड़ने – यहाँ तक की यदि कोई ईसा को भोजन करने से पहले हाथ धोने की नसीहत दे दे तो उसे भी जान से मारने को तईयार रहने वाली शक्षा का बोल वचन सुना दिया – भाई क्या ये ही "शांतिवाद" और अहिंसा का सबक है ईसा का ?

इससे भी बढ़कर – पुराने नियमानुसार – जो जो क्रुरताये और पैगम्बरों – भ वष्वक्ताओ की बाते और क्रूर नियम – जाहिल रिवाज – और जंगली सभ्यता थी – उसकी भी वकालत – ईसा ने की है – साथ ही ये भी कह दिया की – उसमे कोई बदलाव नहीं हो सकता – वो पूर्ण है – और इसी जंगली, वहशी, क्रूर नियमो को पूर्ण करने ईसा आया है – दे खये

17 यह न समझो, क मैं व्यवस्था या भ वष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।

18 लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्यों क मैं तुम से सच कहता हूं, क जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।
(मत्ती, अध्याय 5)

मेरे ईसाई मत्रो – बाइबिल के पुराने नियम में कतना व्य भचार, जंगली रिवाज और असभ्यता मौजूद है – वो आपको पता है – अब यदि ईसा खुद उसे नकार नहीं रहा – बल्कि उसे पूर्ण करने आया है – तब आप क्यों नकार रहे हो ?

नोट : पुराने नियम का जंगली रिवाज एक ये भी था की पता अपनी पुत्री की योनि में अपनी ऊँगली कपडे से ढक कर डालता और पुष्टि करता था की पुत्री कुंवारी है – अथवा सुहागरात मनाने वाले वर वधु की चादर को पुरे समाज में दिखाता था की उसकी पुत्री कुंवारी है।

लेख को बहुत बड़ा करने का उद्देश्य नहीं है – इस लए पाठकगण संक्षेप में ही समझ जायेंगे – उद्देश्य केवल इतना है की ईसा जैसा था वैसा ही मानने में समझदारी है – कहने को तो गांधी जी भी अहिंसा प्रय थे – मगर वो हिन्दू समाज को केवल "पंगु अवस्था" में छोड़ गए – इस लए अभी भी समय है – चेत जाओ –

धर्म की और आओ –

वेद की और आओ

सत्य की और आओ

लौटो वेदो की और

नमस्ते

क्या हनुमान जी उड़कर समुद्र लांघ लंका पहुंचे थे ?

JULY 2, 2015 2 COMMENTS

सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ – बाल्मी क रामायण में हनुमान जी के उड़ने जैसा कोई वर्णन कहीं प्राप्त नहीं होता है –

आ खर सच क्या है – आइये एक नजर बाल्मी क रामायण के सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ तक देखे और वचार करते हैं :

जो हनुमान जी के उड़कर समुद्र लांघ कर लंका जाने की बात है वो भी एक मथक ही है – यदि आप बाल्मी क रामायण को पढ़े – तो सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ – कृपया ध्यान दीजिये – इस रेफ को नोट कीजिये और जाकर चेक कीजिये – वहां वाल्मी क जी लखते हैं –

दुष्करं निष्प्रतिद्वद्वं चकीर्षन्कर्म वानरः।
समुदग्र शरोग्रीवो गवां पतिरिवाबभौ ।। १ ।।

प्लवग प्लवने कृतनिश्चयः।
ववृघे रामवृद्धयर्थे समुद्र इव पर्वसु ।। २ ।।

वकर्षन्नू र्मजालानी बृहन्ति ळवणाम्भ स।
पुप्लुवे क पशार्दूलो व करन्निव रोदसी ।। ३ ।।

मेरुमंदरसंकाशानुदगतांसुमहार्णवे।
अत्यक्राम्न्महावेगस्त रंगंगान्यन्निव ।। ४ ।।

ति मनक्रझषाः कूर्मा दृश्यन्ते ववृतास्तदा।
वस्त्रापकर्षणेनेव शरीरा ण शरीरिणाम ।। ५ ।।

येनासौ याति बलवान्वेगेन क पकुञ्जरः।
तेन मार्गेण सहसा द्रो णकृत इवार्णवः ।। ६ ।।

प्राप्तभूयिष्ठपारस्तु सर्वतः परिलोकयन्।
योजनानां शतस्यान्ते वनराजी ददर्श सः ।। ७ ।।

सागरं सागगनूपानसागरानूपजान्द्रुमान।
सागरस्य च पत्नीनां मुखान्या प वलोकयत ।। ८ ।।

स चारुनाना वघरूपधारी परं समासाद्य समुद्रतीरम।
निपत्य तीरे च महोदधेस्तदा ददर्श लंकाममरावती मव ।। ९ ।।

(सुन्दर काण्ड सर्ग १ श्लोक संख्या १-९)

अर्थ :

बड़ा, कठिन, तुलना से रहित कर्म करना चाहता हुआ, ऊँचे सर और ग्रीवावाला वानर सांड की तरह भासने लगा ।। १ ।।

डोंगी से तैरने में निश्चय वाला, डोंगी से तैरने वालो में श्रेष्ठो से देखा हुआ वह पर्वो में समुद्र के तरह राम के अर्थवृद् ध को प्राप्त हुआ ।। २ ।।

उस खारी जल में बड़े बड़े २ लहरो के समूहों को चीरता हुआ वह वानर श्रेष्ठ मानो द्यौ पृथ्वी पर (जल के फूल) बिखेरता हुआ खेवा करने लगा ।। ३ ।।

मेरु मंदर के बराबर महासागर में उठती हुई लहरो को बड़े वेगवाला, मानो गनता हुआ गया ।। ४ ।।

(बल से जल उछलने पर) मछ लये, मगर, मच्छ, इस तरह नंगे हुए दीखते हैं जैसे वस्त्र के खींच लेने से शरीर धारियों के शरीर ।। ५ ।।

बलवान वानर श्रेष्ठ वेग से जिस मार्ग से जा रहा था, उस मार्ग से समुद्र सहसा द्रोण की तरह होता जाता था (पानी में उसकी डोंगी के आकार बनते जाते थे) ।। ६ ।।

बहुत बड़ा भाग पार करके सब और देखता हुआ वह सौ योजन की समाप्ति पर वन समूह को देखता भया ।। ७ ।।

सागर, सागर के कनारे के देश, और उस देश में होने वाले वृक्ष और सागर की पत्नियें (नदियों) के मुहाने देखता भया ।। ८ ।।

सुन्दर नाना वधरूप धारी वानर समुद्र के परले तीर पर पहुंचकर महासागर के कनारे पर उतरकर अमरावती के तुल्य लंका को देखता भया ।। ९ ।।

इस सारे सर्ग से अ धकतर हनुमान जी का समुद्र को फांद कर पार होना पाया जाता है , जो क असंभव है। और ये कोई मथक अथवा लोकोक्ति बनायीं गयी लगती है – क्यों क यहाँ सर्ग में ही स्वयं वाल्मी क जी ने दूसरे श्लोक में हनुमान जी को डोंगी से तैर कर समुद्र पार करने का स्पष्ट इशारा कया है –

प्लव = छोटी नौका – डोंगी अथवा आज के समय पर तेज वेग से पानी में चलने वाली "वेवरनर" जैसा कोई तीव्र वाहन –

श्लोक ३ में लखा है – "उस खारी जल में बड़े बड़े २ लहरो के समूहों को चीरता हुआ वह वानर श्रेष्ठ" – आप वचार करे – बिना जल में कोई नौका चलाये ये काम असंभव है।

श्लोक ४ में लखा है – "मेरु मंदर के बराबर महासागर में उठती हुई लहरो को बड़े वेगवाला, मानो गनता हुआ गया" – स्वयं वचार करे – लहरे उठती रहती हैं समुद्र में – पर जैसे कोई "स फंग" करने गया मनुष्य उन उठती लहरो के ऊपर संतुलन बनाकर वेग से चलता है – ठीक वैसे ही इस श्लोक में बताया गया – उड़ना नहीं बताया।

श्लोक ४ में लखा है – "बलवान वानर श्रेष्ठ वेग से जिस मार्ग से जा रहा था, उस मार्ग से समुद्र सहसा द्रोण की तरह होता जाता था (पानी में उसकी डोंगी के आकार बनते जाते थे) – इस श्लोक से तो सारी शंकाओ का पूर्ण समाधान ही हो गया – जब भी पानी पर डोंगी नाव कुछ भी चलेगी वो पानी को चीरकर आगे बढ़ेगी जिससे उस मार्ग में पानी का रास्ता कटता हुआ दिखेगा जो नाव अथवा डोंगी के आकार का ही होगा – अ धक वश्लेषण हेतु एक बार इस पोस्ट के साथ संलग्न चत्र को देखे –

श्लोक 9 में लखा है – "सुन्दर नाना वधरूप धारी वानर समुद्र के परले तीर पर पहुंचकर महासागर के कनारे पर उतरकर अमरावती के तुल्य लंका को देखता भया" – अब दे खये यहाँ स्पष्ट रूप से व र्णत है हनुमान जी समुद्र के पार लंका के कसी तीर (नदी अथवा समुद्र का कनारा) पर पहुंच कर लंका को देखने लगे।

यहाँ वचारने योग्य बात यह है की यदि हनुमान जी उड़कर लंका गए होते तो कसी समुद्र कनारे उतरने की कोई आवश्यकता नहीं थी – वो सीधे ही लंका के महल पर उतरते – या फर जहाँ माता सीता को रखा गया था उस अशोक वाटिका में उतरते –
अ धक जानकारी के लए सुन्दर काण्ड के दुसरे सर्ग की श्लोक संख्या १-१७ भी पढ़ लेवे –

यहाँ संक्षेप में बताता हु – वहां लखा है –

हनुमान जी नीले हरे घास के, उत्तम गंध वाले, मधु वाले और उत्तम वृक्षों वाले वनो के मध्य में से गया। (सुन्दर काण्ड सर्ग २ श्लोक ३)

अब बताओ भाई – यहाँ स्पष्ट लखा है वनो के मध्य में से गए – फर उड़ कर वनो के ऊपर से क्यों नहीं गए ???????

इसके आगे के श्लोको में भी हनुमान जी के उड़ने का कोई वर्णन नहीं बल्कि स्पष्ट लखा है – वो चतुराई से कैसे लंका में दा खल हुए – उसके लए उन्हें शाम तक इन्तेजार करना पड़ा – यदि उड़ सकते होते तो शाम तक इन्तेजार करते क्या ????

कृपया सत्य को जाने और माने –

नमस्ते –

क्या हनुमान जी सचमुच पर्वत उठा लाये थे ?

JULY 2, 2015 6 COMMENTS

एक बार पत्नी ने पति से कहा शाम को आते वक़्त सब्जी लेते आना – शाम को पति को याद आया सब्जी ले जानी है – तो पति महोदय सब्जी लेने सब्जी मंडी चले गए – वहां जाकर अनेक प्रकार की सब्जी दे ख – तो संदेह से भर गए – क्या क्या लेकर चलू – देर बहुत हो रही थी – तो जो जो सब्जी ठीक लगी – सब भर के घर आ गए –

घर आते ही

पत्नी ने कहा – अरे वाह स्वामी ! आप तो पूरी सब्जी मंडी ही उठा लाये –

पति ने कहा – देखो भाग्यवान ! जितना समझ आया – जो ठीक लगा वो ले आया हु – अब आपका काम देखो और मुझे तो बस चाय पला दो – सर्दी आज ज्यादा है –

ये कोई नया कस्सा नहीं है – आमतौर पर हम सभी के साथ होता है – जब हमें कोई एक दो वास्तु लानी हो तो हम कभी कभी ज्यादा सामान ले आते हैं जिससे लगभग अपने सभी जानकार देखते ही एक संज्ञा दे देते हैं –

“आप तो आज पूरी सब्जी मंडी उठा लाये।”

“आज तो पूरी दूकान ही उठा कर ले आये”

“आज तो दूकान ही खोल लोगे क्या ?”

ये एक मानव नि र्मत संज्ञा है – क्यों क जब कोई एक वास्तु की अपेक्षा बहुत सी वस्तुए उठा लाते हैं – तो यही संज्ञा लगभग दी जाती है – आप सोचोगे इस वषय पर पोस्ट करने की क्या जरुरत थी – ये तो हम सब जानते ही हैं – इसमें कौतुहल का वषय क्या था – वषय इस पोस्ट का बड़ा ही सारग र्भत है –

दे खये – रामायण में एक प्रसंग आता है की हनुमान जी को सुषेण वैद्य ने कहा की संजीवनी बूटी ले आओ – हनुमान जी को बूटी तलाशने में संशय हुआ – तो वो जो सम्बं धत बूटी अथवा जो भी संजीवनी जैसे बूटी लगी उसे ले आये – तो ये प्रसंग को ऊपर दिए उदहारण से मला कर दे खये – और अब बताये –

क्या अब भी आप यही कहोगे की हनुमान जी पर्वत उठा लाये ?

जी नहीं – क्यों क जब हनुमान जी एक बूटी की जगह बहुत सी बूटियों का अम्बार ले आये – तो वहां मौजूद सभी के मुख से अनायास ही निकल पड़ा –

“हनुमान जी आप तो पूरा पर्वत ही उठा लाये”

तो ये था वषय और इसके बारे में भ्रान्ति बना दी गयी की हनुमान जी पर्वत उठा लाये –

कृपया एक बार अवश्य सो चये –

नमस्ते

द्रौपदी का चीरहरण – मथक से सत्यता की ओर

JUNE 30, 2015 3 COMMENTS

मेरे सभी हिन्दू भाइयो और बहिनो –

जो जो भी व्यक्ति – महाभारत में ऐसा सोचते और समझते हैं की द्रौपदी के "चीर हरण" जैसा कुत्सित और भ्रष्ट आचरण हुआ था –

तो ऐसी वसंगति को दिमाग से पूरी तरह हटा देवे – और जो इस पोस्ट में लखा जा रहा है – उसे ध्यान पूर्वक पढ़े – निष्पक्ष होकर जांच करे और जो सत्य हो उसे मान लेवे –

यहाँ पोस्ट को बड़ी करने का उद्देश्य नहीं है – इस लए पॉइंट तो पॉइंट बात लखूंगा – यदि कसी भाई को स्पष्टीकरण चाहिए तो वषय से सम्बं धत सन्दर्भ दिए गए हैं स्वयं जांच कर लेवे – तब भी कोई शंका शेष हो तो सवाल पूछ लेवे –

पहली बात – जब द्यूतक्रीड़ा महाभारत में आरम्भ हुई और यु धष्ठर ने स्वयं और अपने भाइयो को तथा अपनी "पत्नी द्रौपदी" को दांव पर लगा दिया – और हार गए –
तब यहाँ ये जानना आवश्यक है क वो क्या हार गए और हारने के बाद क्या बन गए ?

दे खये –

दुर्योधन ने जब देखा की शकुनि ने यु धष्ठर से सब कुछ जीत लया है तो आदेश दिया –

दुर्योधन बोला – वदुर ! यहां आओ। तुम जाकर पांडवो की प्यारी और मनोनुकूल द्रौपदी को यहाँ ले आओ। वह पापाचारिणी शीघ्र यहां आये और मेरे महल में झाड़ू लगाये। उसे वहीँ दा सयों के साथ रहना होगा।

द्यूतपर्व – अध्याय ६६ श्लोक १

यहाँ स्पष्ट है – दुर्योधन ने पांडवो और द्रौपदी को केवल लज्जित ही करना था इस लए वदुर को बोला गया की द्रौपदी जो एक कुल की रानी थी – को "दासी" और पांडव जो राजा थे उन्हें – "दास" बना कर लज्जित ही करना मात्र दुर्योधन का मंतव्य था –

वदुर के वरोध और नीतिवचन सुनने के बाद दुर्योधन ने "प्रतिका मन" को आदेश दिया की द्रौपदी को यहाँ ले आवो (दासीरूप में झाड़ू लगाने हेतु)

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक २

प्रतिका मन ने द्रौपदी से कहा –

द्रुपदकुमारी ! धर्मराज यु धष्ठर जुए के मदसे उन्मत्त हो गए थे। उन्होंने सर्वस्व हारकर आप को दांव पर लगा दिया। तब दुर्योधन ने आपको जीत लया। याज्ञसेनी ! अब आप धृतराष्ट्र के महल में पधारे। मैं आपको वहां दासी का काम करवाने के लए ले चलता हूँ।

यहाँ भी बिलकुल स्पष्ट है की द्रौपदी को केवल दासी के काम हेतु महल की सफाई आदि करवाने के उद्देश्य से दुर्योधन ने प्रतिका मन को भेजा था – ता क द्रौपदी और पांडवो का मानमर्दन हो सके – अन्य कोई मंतव्य दुर्योधन का नहीं था।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक ४

उपरोक्त श्लोको से स्पष्ट है – दुर्योधन का मंतव्य द्रौपदी का चीरहरण करना तो बिलकुल गलत और समाज को भ्रा मत करने वाली बात गढ़ी गयी है।

आगे दे खये –

कुछ मत्र कहते हैं की दुःशासन द्रौपदी को जबरदस्ती पकड़ कर – सभाग्रह ले आया – यहाँ पर भी कुछ शंका खड़ी होती है –

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! दुर्योधन क्या करना चाहता है, यह सुनकर यु धष्ठर ने द्रौपदी के पास एक ऐसा दूत भेजा, जिसे वह पहचानती थी और उसी के द्वारा यह सन्देश कहलाया – "पाँचालराजकुमारी ! यद्य प तुम रजस्वला और नीवी (ना भ) को नीचे रखकर एक ही वस्त्र धारण कर रही हो, तो भी उसी दशा में रोती हुई सभामे आकर अपने श्वसुर के सामने खड़ी हो जाओ।

"तुम जैसी राजकुमारी को सभा में आई देख सभी सभासद मन ही मन इस दुर्योधन की निन्दा करेंगे।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक १८-२१

यहाँ धर्मराज यु धष्ठर की बात से भी प्रमाण मलता है की द्रौपदी का चीरहरण जैसी घटना – समाज को भ्र मत करने हेतु कुछ धूर्तो ने रची – यदि दुर्योधन का मंतव्य केवल द्रौपदी का चीरहरण करना ही था – तो यु धष्ठर द्रौपदी को सभा में आने के लए क्यों कहते ?

जब क यह स्पष्ट है की द्रौपदी को यु धष्ठर ने सभा में आने के लए दूत से बुलावा भेज दिया – और द्रौपदी भी सभा में आने को तईयार थी – तब ये कहना की दुःशाशन जबरदस्ती द्रौपदी को पकड़ कर सभा में ले आया संदेह प्रकट करता है – खैर यदि ये मान भी ले की दुःशासन ने द्रौपदी को बाल से खींच घसीट कर सभा में ले आया – तो उसका वृतांत महाभारत में दे खये

दुःशासन के खींचने से द्रौपदी का शरीर झुक गया। उसने धीरे से कहा -'ओ मंदबुद् ध दुष्टात्मा दुःशासन। में रजस्वला हूँ तथा मेरे शरीर पर एक ही वस्त्र है। इस दशा में मुझे सभा में ले जाना अनु चत है।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३२

दुःशासन बोला – द्रौपदी ! तू रजस्वला, एकवस्त्रा अथवा नंगी ही क्यों न हो, हमने तुझे जुए में जीता है ; अतः तू हमारी दासी हो चुकी है, इस लए अब तुझे हमारी इच्छा के अनुसार दा सयों में रहना पड़ेगा।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३४

यहाँ दुःशासन के बोले शब्द दे खये – दुःशासन का उद्देश्य भी द्रौपदी का चीरहरण करना नहीं था – बल्कि यहाँ भी स्पष्ट है की कौरवो – दुर्योधन आदि को केवल पांडवो और द्रौपदी को "दास" आदि बनाकर भरी सभा में अपमानित ही करना था।

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! उस समय द्रौपदी के केश बिखर गए थे। दुःशासन के झकझोरने से उसका आधा वस्त्र भी खसककर गर गया था। वह लाज से गाड़ी जाती थी और भीतर ही भीतर दग्ध हो रही थी। उसी दशा में वह धीरे से इस प्रकार बोली

द्रौपदी ने कहा – अरे दुष्ट ! ये सभा में शास्त्रो के वद्वान, कर्मठ और इंद्र के सामान तेजस्वी मेरे पता के सामान सभी गुरुजन बैठे हुए हैं। मैं उनके सामने इस रूप में कड़ी होना नहीं चाहती।

क्रूरकर्मा दुराचारी दुःशासन ! तू इस प्रकार मुझे ना खींच, ना खींच, मुझे वस्त्रहीन मत कर। इंद्र आदि देवता भी तेरी सहायता के लए आ जाएँ, तो भी मेरे पति राजकुमार पांडव तेरे इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकेंगे।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३५-३७

यहाँ ही वह शब्द है जहाँ पर द्रौपदी को घसीटने के कारण – द्रौपदी के रजस्वला अवस्था में पहने हुए एक वस्त्र के सरकने से द्रौपदी के चीरहरण की कथा गढ़ ली गयी – जब क ये चीरहरण नहीं था – केवल द्रौपदी को दुःशासन द्वारा खींचा गया –
घसीटा गया – जिसके परिणामस्वरूप द्रौपदी का एकमात्र पहना हुआ वस्त्र शरीर से थोड़ा सरक गया – जिसके आधार पर पूरी की पूरी मथ्या कथा बना दी गयी – की द्रौपदी का चीरहरण हुआ –

यदि द्रौपदी का चीरहरण करना उद्देश्य ही नहीं था दुर्योधन का तो चीरहरण जैसी कुत्सित भ्रान्ति क्यों और कस लए फैलाई गयी ?

इस लेख को ज्यादा बड़ा बनाने का कोई औ चत्य नहीं – इस लए यहाँ से स्पष्ट होगा की द्रौपदी का चीरहरण नहीं हुआ –

अब जो महाभारत में द्रौपदी के चीरहरण की झूठी और बेबुनियाद कथा जोड़ी गयी है अगले लेख में उसका भंडाफोड़ करेंगे – कैसे "द्रौपदी का चीरहरण" घटना जो महाभारत में जबरदस्ती ठूंसा गया – और क्यों ?

शेष अगले लेख में अगले लेख का इन्तेजार करे –

"द्रौपदी का चीरहरण" – भारतीय संस्कृति को बदनाम करने का षड्यंत्र – पार्ट 2

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

जैसे की पछली पोस्ट से स्पष्ट हुआ की "द्रौपदी का चीरहरण" मात्र कुछ धूर्तो की मलावट का परिणाम है – क्यों क महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण जैसी कुत्सित घटना का होना एक असंभव कृत्य था – भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि गुरुओ और वदुर जैसे महानितिनिपुण के होते – ये कार्य हो ही नहीं सकता था –
फर भी यदि कुछ हिन्दू भाई इस पक्ष में नहीं हैं – यदि वो अभी भी कहते हैं की द्रौपदी का चीरहरण हुआ था – तो इस पोस्ट को भी ध्यानपूर्वक पढ़ – सत्य से अवगत होकर अपने दुराग्रह और पूर्वाग्रह को छोड़ – संस्कृति और सभ्यता को बदनाम करना छोड़ देवे –

आइये गतलेख से आगे थोड़ा और वस्तार से समझते हैं –

जब पांडव जुए में राज्य के साथ साथ अपने आप को और द्रोपदी को हार गए तब पांड्वो की स्थिति दासों की तरह और द्रोपदी की स्थिति दासी की तरह रह गयी थी , अतः अब उन्हें राजाओ अथवा राजकुमारों जैसे वस्त्र धारण करने का कोई अ धकार नहीं रह गया था । यही दशा द्रोपदी की भी थी , पर जब द्रोपदी सभा में लाई गयी , उस समय केवल पांडव उच्च कोटि और सज्जित वस्त्र धारण कये थे , और द्रौपदी ने केवल एक वस्त्र धारण कया हुआ था क्यों क द्रौपदी उस समय रजस्वला थी। अतः उनसे उनके वस्त्र उतर के दासो और दासी के परिधान पहन लेने के लए कहा गया।

द्रौपदी ने वरोध कया – क्यों की वो अपने आप को हारी हुयी नहीं मानती थी – द्रौपदी ने कहा – जब यु धष्ठर स्वयं अपने को हार गए तब कस प्रकार वे मुझे दांव पर लगाने का अ धकार रखते थे ?

द्रौपदी के प्रश्नो के उत्तर हेतु – वदुर ने सभासदो से पूछा – साथ में – धृतराष्ट्र का एक पुत्र " वकर्ण" स्वयं द्रौपदी के समर्थन में उत्तर आया – उसने भी यही कहा – जब यु धष्ठर स्वयं अपने को दांव पर लगा हार गए – तब कस प्रकार द्रौपदी को दांव लगाने का अ धकार यु धष्ठर के पास रहा ?

तब कोई जवाब ना पाकर – द्रौपदी हताश और निराश हो गयी – दुःशासन द्रौपदी को "दासी" कहकर सम्बो धत करने लगा – इतने में कर्ण ने अपने अनु चत वचनो से द्रौपदी को अनेक बुरे वचन कहकर दुःशासन को द्रौपदी और पांडवो के वस्त्र उतार लेने को कहा।

दुःशाशन ! यह वकर्ण अत्यंत मूढ है तथा प वद्वानों सी बाते बनाता है , तुम पांड्वो और द्रोपदी के भी वस्त्र उतर लो ”
द्यूतपर्व अध्याय ६८ श्लोक ३८

ध्यान देने की बात है की कर्ण केवल द्रोपदी के ही वस्त्र उतरने के लए नहीं कहता वरन पांड्वो के भी वस्त्र उतरने के लए कहता है । इस बात से स्पष्ट है की “द्रौपदी का चीरहरण” मात्र कुछ लोगो की “धूर्त मान सकता” का परिणाम है।

असल में हुआ ये था की – पांडवो ने अपने वस्त्र उतार कर रख दिए और दासो के वस्त्र धारण कये होंगे –

वैशम्पायन जी कहते हैं – “जनमेजय ! कर्ण की बात सुन के समस्त पांड्वो ने अपने अपने राजकीय वस्त्र उतार कर सभा में बैठ गए (सभा पर्व अध्याय 68, श्लोक 39)

क्यों क द्रौपदी अपने को हारी नहीं मानती थी – इस लए दुःशासन को जबरदस्ती द्रौपदी के कपडे बदलवाने हेतु ववश कया गया था – जिसे “धूर्तमंडली” व्याख्याकारों ने – चीरहरण का नाम दिया।

यदि एक बार ऐसा भी मान ले – की दुःशासन ने चीरहरण करने को द्रौपदी की साडी खींची और कृष्ण ने साडी को बढ़ा दिया – तो भाई जरा इस श्लोक पर भी एक सरसरी नजर डाल लेवे –

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! उस समय द्रौपदी के केश बिखर गए थे। दुःशासन के झकझोरने से उसका आधा वस्त्र भी खसककर गर गया था। वह लाज से गाड़ी जाती थी और भीतर ही भीतर दग्ध हो रही थी। उसी दशा में वह धीरे से इस प्रकार बोली

द्रौपदी ने कहा – अरे दुष्ट ! ये सभा में शास्त्रो के वद्वान, कर्मठ और इंद्र के सामान तेजस्वी मेरे पता के सामान सभी गुरुजन बैठे हुए हैं। मैं उनके सामने इस रूप में कड़ी होना नहीं चाहती।

क्रूरकर्मा दुराचारी दुःशासन ! तू इस प्रकार मुझे ना खींच, ना खींच, मुझे वस्त्रहीन मत कर। इंद्र आदि देवता भी तेरी सहायता के लए आ जाएँ, तो भी मेरे पति राजकुमार पांडव तेरे इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकेंगे।
द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३५-३७

यदि कृष्ण ने साडी देकर नग्न होने से बचाया – तो भाई – इन श्लोक के अनुसार तो द्रौपदी अर्धनग्न हो चुकी थी – तभी क्यों नहीं बचा लया ? या फर जब दुःशासन बाल पकड़कर जबरदस्ती द्रौपदी को खींच रहा था – और द्रौपदी कृष्ण को आवाज़ लगा बुला रही थी – तब ही क्यों नहीं कृष्ण ने बचा लया ?

क्या कृष्ण जी इस बात का इन्तेजार कर रहे थे की – कब दुःशासन साडी खींचे और मैं चमत्कार दिखाऊ ?

क्या कृष्ण द्रौपदी की पहली आवाज़ सुनकर ही नहीं बचा सकते थे ? यदि पहली आवाज़ पर ही बचा लया होता – तो ये धूर्तो ने जो मलावट करने की को शश की – वो होती ही नहीं –

आगे दे खये –

वनपर्व में जब श्रीकृष्ण जंगल में पांडवों से मलने गए थे। वहाँ श्रीकृष्ण ने बताया की वें द्युतसभा में जो कुछ भी हुआ था उससे अन भज्ञ है। उन्होने ये भी कहा की अगर वें वहाँ मौजुद होते तो यु धष्ठिर को ऐसा कभी नही करने देतें। यु धष्ठिर ने पुछा की उस वक्त वें कहाँ थे तब श्रीकृष्ण ने बताया की उस वक्त शाल्व ने अपने प्रचंड 'सौभ' वमान से द्वारका पर ऊपर से बमबारी शुरु कर द्वारका जला रहा था, इस लए श्रीकृष्ण उसे मारने के लए गए थे, जब वो वमान का संहार करके वा पस आए तब उन्हे सात्यकी से खबर मली की द्युतसभा में यु धष्ठिर जुए में सारा राज्य हार गया और इस लए वें दौडते पांडवों से मलने जंगल में आए।

आगे कसी जगह दु:खी द्रौपदी भी यु धष्ठिर, अर्जुन और अपने भाई को कोसते हुए कहती है की उनमें से कोई भी उसकी वटंबना रोकने नहीं आया इस लए उनमें से कोई भी उसका अपना नहीं है। वो उधर खडे श्रीकृष्ण को भी कहती है की तुम भी मेरी मदद के लए नहीं आए इस लए कृष्ण तुम भी मेरें नहीं। अगर कृष्णने सचमें वस्त्रावतार लया था तब द्रौपदी क्या उन्हे ऐसे शब्द कहती?

ये सारी घटनाओ से ज्ञात होता है की द्रौपदी का चीरहरण हुआ नहीं था – मात्र कुछ धूर्तो ने कृष्ण के चमत्कार को दर्शाने के लए ये सब मनगढ़ंत बात गढ़ी है –

एक आखरी पोस्ट और आएगी – जिसमे इस द्यूतपर्व में मलावट की पूरी स्थति आपके सामने आ जाएगी

अपनी सभ्यता और संस्कृति पर स्वयं ही मथ्या दोष न गढ़े।

कृपया सत्य को जानिये –

वेदो की और लौटिए

ईश्वर का वैदिक स्वरुप – ईश्वर, जीव और प्रकृति – तीनो कारण स्वयं सद्ध और अनादि हैं

JULY 1, 2015 LEAVE A COMMENT

संस्कृत भाषा में परमात्मा = परम + आत्मा तथा जीवात्मा = जीव + आत्मा दो शब्द हैं।

परमात्मा शब्द का अर्थ है – सर्वश्रेष्ठ आत्मा

और जीवात्मा का अर्थ है प्राणधारी आत्मा

आत्मा शब्द दोनों के लए आता है और बहुधा परम-आत्मा तथा जीव-आत्माओ का भेदभाव कये बिना समस्त जीवनतत्वो के लए व्यवहृत कया जाता है।

परमात्मा और जीवात्माओं के कार्यो में इतनी समानता है [मगर दोनों के कार्य क्षेत्र निसंदेह अत्यंत व भन्न हैं] की प्रायः इनके सम्बन्ध के वषय में भ्रम हो जाता है और इस भ्रम के कारन दर्शनशास्त्र तथा धर्म दोनों क्षेत्रो में बाल की खाल निकाली जाती है।

खासतौर पर ईश्वर को ना मानने वाले लोग मनुष्य को ही " सद्ध" व "ईश्वर" का दर्जा देकर अपनी अल्पज्ञता के कारण ऐसा वचार लाते हैं –

वैदिक ईश्वर का स्वरुप कैसा है और जीव का स्वरुप कैसा है – जब इस प्रकार की चर्चा की जाती है तब आवश्यक हो जाता है इस प्रकृति के बारे में भी कुछ जाना जाए – तो आइये – इस वषय पर कुछ वचार करे –

इस कार्यरूप सृष्टि में तीन नियम बहुत ही स्पष्ट रूप से दीखते हैं :

पहिला – इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ नियमपूर्वक, परिवर्तनशील है।

दूसरा – प्रत्येक जाती के प्राणी अपनी जाती के ही अंदर उत्तम, माध्यम और निकृष्ट स्वाभाव से पैदा होते हैं।

तीसरा – इस वशाल सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है वह सब निय मत, बुद् धपूर्वक और आवश्यक है।

पहिला नियम : सृष्टि नियमपूर्वक परिवर्तनशील है इसका अर्थ जो लोग सृष्टि को स्वाभा वक गुण से परिवर्तनशील मानते हैं वे गलती पर हैं क्यों क स्वाभाव में परिवर्तन नहीं होता ऐसे लोग भूल जाते हैं की परिवर्तन नाम है अस्थिरता का और स्वाभाव में अस्थिरता नहीं होती क्यों क उलटपलट, अस्थिर ये नै म त्तक गुण हैं स्वाभा वक नहीं। इस लए सृष्टि में परिवर्तन स्वाभा वक नहीं। इसकी एक बड़ी वजह ये भी है की यदि प्रकृति में परिवर्तन स्वाभा वक माने तो ये अनंत परिवर्तन यानी अनंत गति माननी पड़ेगी और फर एकसमान अनंत गति मानने से संसार में कसी भी प्रकार से ह्रास वकास संभव नहीं रहेगा कन्तु सृष्टि में बनने और बिगड़ने की निरंतर प्र क्रया से सद्ध होता है की सृष्टि का परिवर्तन नै म त्तक है सवभ वक नहीं, इसी लए इस परिवर्तनरुपी प्रधान नियम के द्वारा यह सद्ध होता है की सृष्टि के मूल कारणों में से यह एक प्रधान कारण है जो खंड खंड, परिवर्तन शील और परमाणुरूप से वद्यमान है। परन्तु यह परमाणु चेतन और ज्ञानवान नहीं हैं इसकी बड़ी वजह है की जो भी चेतन और ज्ञानवान सत्ता होगी वो कभी दूसरे के बनाये नियमो में बंध नहीं सकती बल्कि ऐसी सत्ता अपनी ज्ञानस्वतंत्रता से निर्धारित नियमो में बाधा पहुचाती है – जहाँ तक हम देखते हैं परमाणु बड़ी ही सच्चाई से अपना काम कर रहे हैं – जिस भी जगह उनको दूसरे जड़ पदार्थो में जोड़ा गया – वहां आँख बंद करके भी कार्य कर रहे हैं जरा भी इधर उधर नहीं होते इससे ज्ञात होता है की इस सृष्टि का परिवर्तनशील कारण जो परमाणु रूप में वद्यमान है ज्ञानवान नहीं बल्कि जड़ है – इसी जड़, परिवर्तनशील और परमाणु रूप उपादान कारण को

माया, प्रकृति, परमाणु मेटर आदि नामो से कहा जाता है और संसार के कारणों में से एक समझा जाता है

दूसरा नियम : सभी प्रा णयों के उत्तम और निकृष्ट स्वाभाव हैं। अनेक मनुष्य प्रतिभावान, सौम्य और दयावान होते हैं, अनेक मुर्ख उद्दंड और निर्दय होते हैं। इसी प्रकार अनेक गौ, घोडा आदि पशु स्वाभाव से ही सीधे होते हैं और अनेक शेर, आदि क्रोधी और दौड़दौड़कर मारने वाले होते हैं यहाँ देखने वाली बात है की ये स्वभाव वरोध शारीरिक यानी भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जो चैतन्य बुद् ध और ज्ञान से सम्बन्ध रखता है। ले कन ध्यान देने वाली है ये ज्ञान प्रा णयों के सारे शरीर में व्याप्त नहीं है, क्यों क यदि सारे शरीर में ये ज्ञान व्याप्त होता तो कसी का कोई अंग भंग यथा अंगुली, हाथ, पैर आदि कट जाने पर उसका ज्ञानंश कम हो जाना चाहिए ले कन वस्तुतः ऐसा होता नहीं इस लए यह निश्चित और नि र्ववाद है की ज्ञानवाली शक्ति जो प्रा णयों में वास करती है वो पुरे शरीर में व्याप्त नहीं है प्रत्युत वह एकदेशी, परिच्छिन्न और अनुरूप ही है क्यों क सुक्षतिसूक्ष्म कृ मयों में भी मौजूद है दूसरा तथ्य ये भी है की यदि पुरे शरीर में ज्ञानशक्ति मौजूद होती तो जैसे शरीर का आकर बढ़ता है वैसे उस शक्ति को भी बढ़ना पड़ता जब क ऐसा होता नहीं और ये शक्ति परमाणुओ के संयोग से भी नहीं बनी क्यों क ऊपर सद्ध कया गया की ज्ञानवान तत्व, परमाणु संयुक्त होकर नहीं बन सकता और न ही ये हो सकता है की अनेक जड़ और अज्ञानी परमाणु एकत्रित होकर परस्पर संवाद ही जारी रख सकते हो। यदि कोई मनुष्य ब्रिटेन में जिस समय पर गाडी दौड़ा रहा है – तो उसी समय पूरी दुनिया में मौजूद इंसान उस गाडी और मनुष्य को नहीं देख पा रहे इस लए प्रा णयों में मौजूद ज्ञानवान शक्ति, अल्पज्ञ है, एकदेशी है, परिच्छिन्न है। इस लए इस शक्ति को जीव, रूह और सोल के नाम से जानते हैं।

इस वस्तृत सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है, वह निय मत, बुद् धपूर्वक और आवश्यक है। सूर्य चन्द्र और समस्त ग्रह उपग्रह अपनी अपनी नियत धुरी पर निय मत रूप से भ्रमण कर रहे हैं। पृथ्वी अपनी दैनिक और वा र्षक गति के साथ अपनी नियत सीमा में घूम रही है। वर्षा, सर्दी और गर्मी नियत समय में होती है। मनुष्य और पशुपक्ष्यादि के शरीरो की बनावट वृक्षों में फूलो और फलो की उत्प त्त, बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज का नियम और प्रत्येक जाती की आयु और भोगो की व्यवस्था आदि जितने इस सृष्टि के स्थूल सूक्ष्म व्यवहार हैं, सबमे व्यवस्था, प्रबंध और नियम पाया जाता है। नियामक के नियम का सब बड़ा चमकार तो प्रत्येक प्राणी के शरीर की वृद् ध और ह्रास में दिखलाई देता है। क्यों एक बालक नियत समय तक बढ़ता और क्यों एक जवान धीरे धीरे ह्रास की और – वृद्धावस्था की और बढ़ता जाता है इस बात का जवाब कोई नहीं दे सकता यदि कोई कहे की वृद् ध और ह्रास का कारण आहार आदि पोषक पदार्थ हैं, तो ये युक्तियुक्त और प्रामा णक नहीं होगा क्यों क हम रोज देखते हैं एक ही घर में एक ही परिस्थिति में और एक ही आहार व्यवहार के साथ रहते हुए भी छोटे छोटे बच्चे बढ़ते जाते हैं और जवान वृद्ध होते जाते हैं तथा वृद्ध अ धक जर्जरित होते जाते हैं। इन प्रबल और चमत्कारिक नियमो से सू चत होता है की इस सृष्टि के अंदर एक अत्यंत सूक्ष्म, सर्वव्यापक, परिपूर्ण और ज्ञानरूपा चेतनशक्ति वद्यमान है जो अनंत आकाश में फ़ैल हुए असंख्य लोकलोकान्तरो का भीतरी और बाहरी प्रबंध कये हुए हैं। ऐसा इस लए ता र्कक और प्रामा णक है क्यों क नियम बिना नियामक के, नियामक बिना ज्ञान के और ज्ञान बिना ज्ञानी के ठहर नहीं सकता। हम सम्पूर्ण सृष्टि में नियमपूर्वक व्यवस्था देखते हैं, इस लए सृष्टि का यह तीसरा कारण भी सृष्टि के नियमो से ही सद्ध होता है। इसी को

परमात्मा, ईश्वर खुदा और गॉड कहते आदि अनेक नामो से पुकारते हैं हैं जिसका मुख्य नाम ओ३म है।

सृष्टि के ये तीनो कारण स्वयं सद्ध और अनादि हैं।

मेरे मत्रो, ज्ञान और वज्ञान की और लौटिए,

सत्य और न्याय की और लौटिए

वेदो की और लौटिए….

आओ लौट चले वेदो की और।

ईश्वर वचार – तर्क आधार पर ईश्वर की सद् ध

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

जब हम संसार में कसी पदार्थ को देखते हैं तो हमें उस में दो प्रकार के पदार्थ प्रतीत होते हैं – एक परिणामी दूसरे अपरिणामी।

जितने साकार पदार्थ हैं वे सब परिणामी और जितने निराकार पदार्थ हैं वे अपरिणामी हैं।

परन्तु जब हम इन साकार पदार्थो में प्रथम मनुष्य शरीर को देखते हैं तो यह शरीर माता पता के संयोग से उत्पन्न होता है बढ़ता है घटता है और अंत को नष्ट हो जाता है इससे हमें क्या अनुमान होता है जो पैदा हुआ है वो नष्ट भी होगा जिस में परिणाम है वह पैदा हुआ है। जब परिणामी पदार्थो को उत्प त्त वाला सद्ध कर लेते हैं तो हम व्यष्टि पदार्थ अर्थ एक व्यक्ति को छोड़ कर समष्टि जगत को देखते हैं तो यह ही परिणाम प्रतीत होता है की अवयवी के अवयव परिणाम को प्राप्त होते हैं वह अवयवी भी परिणामी होता है क्यों क सम्पूर्ण अवयवो का नाम अवयवी है जब हम इस प्रकार सूक्ष्म वचार करते हैं तो हमें जगत परिणामी प्रतीत होने लगता है हम जगत के परिणामी होने से उसकी उत्प त्त का अनुमान कर लेते हैं यद्य प मध्य अवस्था में उसकी उत्प त्त का बोध अनुमान के बिना नहीं होता फर भी शब्द प्रमाण से जगत हुतपन्न हुआ और जगत, संसार, सृष्टि इसके पर्यायवाचक जितने शब्द दिए जाते हैं सब के अर्थ उत्प त्त वाले के हैं।

जब हमने जगत को उत्प त्त वाला अनुभव कया तो हमारा वचार वह होता है की यह उत्प त्त स्वाभा वक है या नै म त्तक दूसरे हम जिस पदार्थ की उत्प त्त जिस पदार्थ से देखते हैं उसका लय भी उसी पदार्थ में होता है इस से कार्यरुप सब पदार्थो में अनित्यता और कारणरूप पदार्थो में नित्यता का बोध होता है जब हम पांच भूतो में अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में सब पदार्थो का लय देखते हैं तो उन्ही पंच पदार्थो से इस जगत की उत्प त्त का वचार करते हैं.

यद्य प कार्य अवस्था इन पदार्थो की अनित्य है परन्तु कर्णावस्था में यह नित्य होते हैं जब हम जगत के उपादान कारण नि मत्त भी हैं अथवा जगत पंचभूतों ही से उत्पन्न हुआ वा इन के बिना कोई और भी पदार्थ है ?

जब हम पृथ्वी को वचरते हैं तो जड़ प्रतीत होती है जल भी ज्ञानशून्य है अग्नि भी ज्ञान नहीं रखती वायु में भी ज्ञान का अभाव वही प्रतीत होता है आकाश ज्ञान से हीं है इस प्रकार के वचार से हम सम्पूर्ण भूतो को ज्ञान से रहित पाते हैं।

परन्तु जब हम संसार में जो सोने के बने गहने में सोने और गुण और चांदी में चांदी के गुण पाते हैं इस से हमको बोध होता है की कारण के गुण अनुकूल कार्य में गन रहते हैं। जब भूतो में ज्ञान गुण नहीं हैं तो उसके कार्यरूप जगत में भी ज्ञान नहीं हो सकता और जगत में मनुष्यो को ज्ञान से युक्त देखते हैं तो शीघ्र वचार उत्पन्न होता है की यह ज्ञान गुण कसका है ?

बहुत से लोग खासकर चार्वाकी कहते हैं पृथक भूतो में तो चैतन्यता नहीं कन्तु संयोग से उत्पन्न होती है यहाँ ध्यान देने वाली बात है की जो गुण एक एक में न रहे वह संयोग से उत्पन्न नहीं होता जैसे मैदे में मधुरता नहीं – जल में मधुरता नहीं उत्पन्न होती – चीनी में मधुरता है – जल में मलाने से तुरंत मधुरता उत्पन्न हो जाती है।

दूसरे रेल के इंजन में पृथ्वी है, जल है, अग्नि है, वायु है, आकाश है परन्तु ज्ञानशक्ति नहीं है, मृतक शरीर में पांचो ज्ञानशक्ति का आधार कोई दूसरी वास्तु है। जब हम इस प्रकार सृष्टि में जड़ चैतन्य को दो स्वरूप करके वचार लेते हैं तो हमको सृष्टि में इनका संयोग और सृष्टि में स्वाभाव से संयोग है या नि मत्त से यह वचार उत्पन्न होता है। जब हम बाज़ार जाते हैं तो हम को कभी कहीं ईंटे गरी पड़ी पाती है तो हम अनुमान से जान जाते हैं ये स्वाभा वक गरी होंगी। परन्तु यदि कसी स्थान पर १० की निश्चित संख्या में गन गन के कसी ने राखी हैं तो इससे यह सद्ध होता है की जहाँ पर नियम हैं वह नै म त्तक और जो वे नियम हैं वह स्वाभा वक हैं।

जब सृष्टि में नियम को देखते हैं तो इसके हर एक पदार्थ में नियम प्रतीत होता है, मनुष्य स्त्री के संयोग से लड़का उत्पन्न होता है, घोडा घोड़ी के संयोग से घोडा ही होता है, घोड़ी और गधे के संयोग से खच्चर – इसी प्रकार सब पदार्थ नियमानुसार प्रतीत होते हैं, गर्मी में देश घंटे की रात और सर्दी में १४ घंटे की – कहने का तात्पर्य जिधर देखो उधर नियम बंध रहा है फर इसे कस युक्ति से स्वाभा वक माने ?

दूसरा जो स्वाभा वक गुण हैं वे सर्वदा एक रास रहते हैं वे बिना कसी नि मत्त के बदलते नहीं जैसे जल का स्वाभाव शीतल है वह बिना अग्नि संयोग के उष्ण न होगा – इससे सद्ध है की जल में उत्पन्न वह उष्णता अग्नि की है – न की जल की – इससे सद्ध है की पंचभूतों में ज्ञान नहीं – ना ही वे स्वयं से संयोग वयोग कर ही सकते हैं क्यों क पंचभूत जड़ पदार्थ हैं –

इस लए भूतो के स्वाभाव से तो जगत की उत्प त्त असंभव है – इस लए यह निश्चित कया जाता है की जगत का नि मत्त कारण ज्ञानशक्ति संपन्न सर्वशक्तिमान कोई ना कोई अवश्य ही है।

जब हम इस प्रकार ईश्वर को मानेंगे तो कुछ लोगो को शंका उत्पन्न होगी की –

ईश्वर ने जगत उत्पन्न कया है तो ईश्वर को कसने उत्पन्न कया ?

इसका उत्तर है की –

परिणामी पदार्थ कार्य होते हैं उनको कारण की अपेक्षा होती है यदि ईश्वर परिणामी हो तो उसका भी कारण हो मगर ईश्वर नित्य है अपरिणामी है – उसका कर्ता नहीं हो सकता।

यदि कोई कहे ईश्वर कहाँ है ?

तो उत्तर यही ठीक है रहने का ठिकाना एकदेशी के लए होता है – वभु के लए नहीं –

इस लए ईश्वर निराकार शक्ति है जो जगत का नि मत्त कारण है

इति सद्धम

न जहर, न मांसाहार, दूध है अमृत

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

दूध – मधुर, स्निग्ध, रु चकर, स्वादिष्ट और वात- पत्त नाशक होता है। यह वीर्य,

बुद् ध और कफ वर्धक होता है। शीतलता, ओज, स्फूर्ति और स्वास्थ्य प्रदायक होता है।

स्त्री और गाय का दूध गुण-धर्म की दृष्टि से समान होता है। उसमें वटा मन ए और खनिज तत्व होते हैं, जो रोगों से लड़ने की ताकत (प्रतिरोधक क्षमता) प्रदान करते हैं और आंखों का तेज बढ़ाते हैं। दूध एक पूर्ण आहार है। शरीर को पुष्ट और स्वस्थ रखने के लए जितने तत्वों की जरूरत होती है, वे सभी उसमें पाए जाते हैं।

दूध रक्त नहीं है। इसका सबसे बड़ा वैज्ञानिक प्रमाण तो यह है क दूध में जो केसीन नामक प्रोटीन मौजूद रहता है, वह खून और मांस में नहीं पाया जाता। जो रक्त क णकाएं (डब्ल्यूबीसी, आरबीसी) और प्लेटलेट्स खून में पाए जाते हैं, वे दूध में नहीं होते। यह बात साइंसदानों ने दूध का बेंजोइक टेस्ट करके बताई है। यह परीक्षण कसी भी पैथोलॉजी लैब में कसी भी डॉक्टर से कराकर देखा जा सकता है। दूध एनिमल प्रॉडक्ट होने पर भी रक्त-मांस से बिल्कुल अलग एक शुद्ध रस है।

कोई यह तर्क दे सकता है क दूध में वही प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स और
शर्करा आदि तत्व पाए जाते हैं, जो खून में पाए जाते हैं, इस लए दोनों एक हैं। ले कन अगर

यह तर्क सही है, तो वे सभी तत्व हरे या भगोए हुए सोया, गेहूं, चना आदि अनाज में भी पाए जाते हैं, लहाजा उन्हें भी मांसाहार कहना पड़ेगा, जो क सही नहीं होगा।

यह सही है क जेनेटिक ब्लू प्रंट के मुताबिक अपनी-अपनी प्रजाति की मां का दूध सबसे अच्छा होता है इस लए गाय का बछड़ा गाय का दूध, बकरी का मेमना बकरी का दूध, बिल्ली का बच्चा बिल्ली का दूध और शेरनी का बच्चा शेरनी का दूध पीता है। इस प्रकार सभी स्तनधारी प्रा णयों की मांएं अपने बच्चों के पोषण और वकास के लए दूध देती हैं।

ले कन यह भी सदियों से आजमाई हुई बात है क जिन प्रा णयों की मां नहीं होती या दूध नहीं दे पाती, गाय उनकी मां बन जाती है। गाय का दूध सभी प्रा णयों के अनुकूल पड़ता है और पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कया जा सकता है। इसके उलट अन्य प्रा णयों का दूध प्रतिकूल और अपर्याप्त होने से सभी के काम नहीं आता। ले कन याद रखें क दूध मां का हो या गाय का, उसका सेवन करने की एक निश्चित मात्रा होती है। यदि उससे अ धक ग्रहण कया जाएगा, तो हानि पहुंचाएगा। इस लए 'हित मत भुख' यानी थोड़ा और हितकारी भोजन करने को कहा गया है। अति तो हर चीज की बुरी होती है। यह कह कर भी दूध को खारिज नहीं कया जा सकता क वह छह से आठ घंटे में पचता है। बहुत सी ऐसी शक्तिवर्धक चीजें (बादाम, काजू, मूंगफली आदि) हैं, जिन्हें पचने में इससे ज्यादा समय लगता है।

शशु अवस्था में लेक्टॉस एंजाइम का पर्याप्त मात्रा में स्त्राव होता है। वे ही एंजाइम दूध को पचाते हैं, इस लए बच्चों का वह पूर्ण आहार होता है, ले कन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, लेक्टॉस एंजाइम का स्त्राव घटता जाता है। फर भी लगातार दूध पीने वालों को यह पचता रहता है। यूनिव र्सटी ऑफ कै लफॉर्निया में क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी के प्रोफेसर डॉ. ट्यूबर का कहना है क जो वयस्क आदतन दूध और उससे बने उत्पादों का सेवन करते हैं, उनके लेक्टॉस एंजाइम स क्रय बने रहते हैं और दूध पचता रहता है। ले कन जो बचपन के बाद दूध का सेवन बंद कर देते हैं, उनमें इस एंजाइम का संश्लेषण बंद हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों को दूध पीने के बाद डायरिया और पेट दर्द की शकायत हो सकती है। ले कन दूध नहीं पचा सकने वाला व्यक्ति अगर (चावल, रोटी आदि के साथ) थोड़ा-थोड़ा बढ़ाते हुए क्रम से दूध का सेवन करता है, तो एंजाइम की मात्रा सुधर जाती है और दूध पचने लगता है।

दूध इतना अ धक होता है क उसे दुहा जाना जरूरी है। हानाह शोध संस्थान के डॉक्टर वाइल्ड का कहना है क अगर दूध दुहा न जाए, तो स्तन ग्रं थयों पर बुरा असर पड़ता है। इससे स्तन को शकाएं मरने लगती हैं। ले कन यह ध्यान रखना चाहिए क बछड़े को पेट भर दूध मले। इंजेक्शन का इस्तेमाल कभी नहीं करना चाहिए।

दूध का उपयोग अनादिकाल से हो रहा है। हमारे महापुरुष इसी अमृत को पीकर बड़े हुए। इस लए दूध के आलोचकों को न सर्फ तथ्यों से, बल्कि परंपरा से भी सबक लेना चाहिए।

ईश्वर नियंता है, न्यायकारी है, आधीन नहीं

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

मत्रो,

आज बात करते हैं सद्धांतो और नियमो की – क्यों क बिना इनके न तो धर्म संभव है न ही ज्ञान –

वैदिक वचार – ईश्वर ऐसा कुछ नहीं कर सकता जो सृष्टि नियम और सद्धांत वरुद्ध हो – क्यों क ईश्वर सर्वज्ञ है – न्यायकारी है – सत्य है – ज्ञानी है आदि आदि।

कुछ हिन्दू भाई धर्म तत्व से अन भज्ञ होकर सृष्टि नियम व सद्धांतो को ताक पर रखकर ईश्वर पर केवल दोष सद्ध करके उसे न्यायकारी परमात्मा को अन्यायकारी और नियम वरुद्ध चलने वाला मान बैठते हैं – जिससे वो खुद ही नहीं जान पाते की ईश्वर क्या है – आइये एक छोटे से उदहारण से समझने की को शश करते हैं –

सद्धांत क्या हैं और नियम क्या हैं – पहले ये समझना होगा –

सद्धांत – जो अटल हो – सत्य हो – तर्कपूर्ण हो – जिनसे सद्ध कया जाता है – ये छोटी सी परिभाषा है – समझने के लए।

नियम – जो निय मत हो – जिनमे परिवर्तन न होता हो – जो मान्य हो – सत्य और न्याय पर आधारित हो – ये छोटी सी परिभाषा है – समझने के लए।

2 + 2 = 4 ये एक बहुत छोटा सा सवाल है जिसे एक पहली कक्षा में पढ़ने वाला वद्यार्थी भी आसानी से हल कर सकता है – ये सवाल जिसका जवाब सैद्धांतिक और नियमानुसार नहीं बदल सकता – एक ही जवाब आएगा चाहे कसी भी प्रकार सद्ध कया जाये।

यदि हम भी इस सवाल का उत्तर देंगे तो यही होगा – क्यों क यह न्याय और सद्धांतो की बात है – इसका कतई मतलब ये नहीं निकल सकता की हम इस सद्धांत के आधीन हैं।

आधीनता और स्वाधीनता चेतन तत्वों में ही चरितार्थ हो सकती है – जड़ तत्वों में नहीं। क्यों क सद्धांत और नियम जड़ तत्व हैं – इस लए कोई चेतन वस्तु इनके आधीन नहीं हो सकती।

अब कुछ लोग कहेंगे क्यों क भारतीय सं वधान है वो जड़ है मगर एक जज उसके आधीन है। तो यहाँ दो बाते समझने वाली हैं –

१. क्यों क सं वधान है – तो उसको कसीने बनाया होगा – और बनाने वाला चेतन होगा क्यों क वचार और कर्म चेतन में ही संभव है जड़ में नहीं। इस लए यदि आप कहो की कोई जज भारतीय सं वधान के आधीन है तो पहले तो आपको यही सद्धांत स्वीकार करना पड़ेगा की ईश्वर है क्यों क इस सृष्टि के नियम और सद्धांत स्वयं नहीं बन सकते उनको बनाने वाली कोई सत्ता होनी चाहिए जो चेतन हो इस लए ईश्वर है।

२. जज आधीन नहीं, स्वतंत्र है क्यों क वो अपने ववेक और न्याय से फैसला करता है। यदि जज कसी के आधीन हो तो न्याय नहीं कर सकता क्यों क न्याय करने के लए नियम होने

चाहिए इस लए वो नियमानुसार ही न्याय करेगा यदि नियमानुसार न्याय न करे तो पक्षपाती और दुष्ट कहलाये फर उसको जज कोई कैसे कहे ? इस लए की ईश्वर न्यायकारी है और न्याय के लए नियम चाहिए क्यों क वो सबको एकसमान न्याय करता है पक्षपात नहीं इस लए वो नियंता है –

नियंता आधीन नहीं होता – नियंता नियम से न्याय करता है इसी लए वो स्वतंत्र होना चाहिए – बिना स्वतंत्र हुए वो नियमपूर्वक न्याय नहीं कर सकता।

जीव नियमो के आधीन है क्यों क जीव को कर्मो के फल भोग करने हैं। और ईश्वर स्वतंत्र है इस लए नियमानुसार कर्मो के फल, जीव को भोग करवाता है।

अतः ईश्वर सर्वज्ञ, न्यायकारी है इस लए स्वतंत्र है।

जीव अल्पज्ञ है, कर्मो के फल भोग हेतु परतंत्र है।

जगत और जगत का कारण जड़ है।

नमस्ते

शव लंग – ईश्वर के कल्याणकारी और मंगलमय होने का प्रमाण

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

कुछ लोग लंग शब्द की व्याख्या ठीक नहीं करते –

कुछ लंग शब्द की व्याख्या ही गलत करते हैं –

कुछ ऐसे भी हैं जो लंग शब्द की व्याख्या अपने अनुरूप करते हैं –

अब पता नहीं ये अति व शष्ट ज्ञानी – कौन से ज्ञान का प्रदर्शन करते है ?????

सदैव अर्थ का अनर्थ ही करते हैं –

उनमे कुछ ऐसे भी हैं जो बस केवल लंग शब्द की व्याख्या कर " शव लंग" को सद्ध करना चाहते हैं – जब इन व्यख्याकारो से इस शब्द के अर्थ का प्रमाण मांगो की ये अर्थ कहाँ से कस आधार पर कया तो वो उनके पास होता नहीं – फर और ज्ञान का प्रदर्शन कर अपशब्द और भद्दी भद्दी गा लयाँ शुरू हो जाती हैं – जब पुराणो से " शव लंग" बताओ तो मानते नहीं – बस अपना अनर्थ ही सद्ध करने का प्रयोजन करते हैं जो ठीक वदित नहीं होता –

आइये देखते हैं – लंग का अर्थ आ खर है क्या ???

लंग का अर्थ होता है “प्रमाण” –
ब्रह्म सूत्र के चौथे अध्याय के पहले पाद का दूसरा सूत्र है-

“ लंगाच्च”

वेदों और वेदान्त में लंग शब्द सूक्ष्म शरीर के लए आया है. सूक्ष्म शरीर 17 तत्त्वों से बना है. शतपथ ब्राह्मण-5-2-2-3 में इन्हें सप्तदशः प्रजापतिः कहा है. मन बुद् ध पांच ज्ञानेन्द्रियाँ पांच कर्मेन्द्रियाँ पांच वायु. इस लंग शरीर से आत्मा की सत्ता का प्रमाण मलता है. वह भा सत होती है. आकाश वायु अग्नि जल और पृथ्वी के सात्विक अर्थात ज्ञानमय अंशों से पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन बुद् ध की रचना होती है. आकाश सात्विक अर्थात ज्ञानमय अंश से श्रवण ज्ञान, वायु से स्पर्श ज्ञान, अग्नि से दृष्टि ज्ञान जल से रस ज्ञान और पृथ्वी से गंध ज्ञान उत्पन्न होता है. पांच कर्मेन्द्रियाँ हाथ, पांव, बोलना. गुदा और मूत्रेन्द्रिय के कार्य सञ्चालन करने वाला ज्ञान.
प्राण अपान,व्यान,उदान,सामान पांच वायु हैं. यह आकाश वायु, अग्नि, जल. और पृथ्वी के रज अंश से उत्पन्न होते हैं. प्राण वायु नाक के अगले भाग में रहता है सामने से आता जाता है. अपान गुदा आदि स्थानों में रहता है. यह नीचे की ओर जाता है. व्यान सम्पूर्ण शरीर में रहता है. सब ओर यह जाता है. उदान वायु गले में रहता है. यह उपर की ओर जाता है और उपर से निकलता है. सामान वायु भोजन को पचाता है.

आइये अब देखते हैं शव का अर्थ क्या होता है –

“मंगलमय और कल्याणकर्ता”

अब इन दोनों अर्थो को मला कर दे खये –

शव + लंग = मंगलमय और कल्याणकर्ता + प्रमाण

तो इससे सद्ध है की शव लंग का अर्थ हुआ

वह ईश्वर जो मंगलमय और कल्याणकर्ता है उसका यह प्रमाण है की – मृत्यु के उपरान्त प्राणी की आत्मा को आवृत्त रखनेवाला वह सूक्ष्म शरीर जो पाँचों, प्राणों, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों सूक्ष्मभूतों, मन, बुद् ध और अहंकार से युक्त होता है परन्तु स्थूल अन्नमय कोश से रहित होता है। लोक-व्यवहार में इसी को सूक्ष्म-शरीर कहते हैं। वशेष—कहते हैं क जब तक पुनर्जन्म न हो या मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक यह शरीर बना रहता है।

शव कल्याणकर्ता है – मंगलमय है इसी लए वह ईश्वर (शव) यह कर्मफल व्यवस्था है क आप जब तक मोक्ष प्राप्त न कर लो – इस हेतु आपका पुनर्जन्म होता रहेगा – और ये सूक्ष्म शरीर इसी लए प्रमाण है की आप स्थूल शरीर से उत्तम कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्त करो – इसी कारण ईश्वर को शव अर्थात कल्याणकारी कहा जाता है।

यह है वैज्ञानिक और वेदो के आधार पर “ शव लंग” का अर्थ –

वह शव लंग नहीं जिसका पुराणो में बड़ा ही अश्लील चत्रण मलता है –

मैं सभी हिन्दू भाइयो से वनम्र प्रार्थना करता हु कृपया सत्य को जाने – वेदो को पढ़िए – ज्ञान और वज्ञानं की और लौटिए – दुराग्रह को त्याग कर सत्य को जाने और शव को शव (मंगलमय और कल्याणकर्ता) ही जाने – अन्य नहीं –

नमस्ते –

सीता की उत्प त्त – मथक से सत्य की और

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

जनक के हल जोतने पर भू म के अन्दर फाल का टकराना तथा उससे एक कन्या का पैदा होना और फर उसी का नाम सीता रखना आदि असंभव होने से प्र क्षप्त है । इस वषय में प्र सध्द पौरा णक वद्वान स्वामी करपात्री जी ने स्वर चत ''रामायण मीमांसा' में लखा है – "पुराणकार कसी व्यक्ति का नाम समझाने के लए कथा गढ़ लेते है। जनक पुत्री सीता के नाम को स्पष्ट करने के लए उन्होंने वैदिक सीता (= हलकृष्ट भू म) से सम्बन्ध जोड़कर उसका जन्म ही भू म से हुआ

बता दिया" (पृ ० 89) अथवा यह हो सकता है क कसी ने कारणवश यह कन्या खेत में फेक दी हो और संयोगवश वह जनक को मल गई हो अथवा कसी ने 'खेत में पडी लावारिस कन्या मली है' यह कहकर जनक को सौप दी हो फर उन्होंने उसे पाल लया हो । मह र्ष कण्व को शकुन्तला इसी प्रकार मली थी। और प्राप्ति के समय प क्षयों द्वारा संर क्षत एवं पा लत (न क प्रसूत) होने से उसका नाम शकुन्तला रख दिया था ।

धरती को फोड़कर निकलने बालों की "उद् भज्ज" संज्ञा है। तृण, औष ध, तरु, लता आदि उद् भज्ज कहलाते हैं । मनुष्य, पश्वादि, जरायुज, अण्डज और स्वेदज प्रा णयों के अन्तर्गत है । मनुष्य वर्ग में होने के कारण सीता की उत्प त्त पृ थवी से होना प्रकृति वरुध्द होने से असंभव है।

सीता की उत्पति पृ थवी से कैसे मानी जा सकती है, जब क बाल्मी क रामायण में अनेक स्थलों में उसे जनक की आत्मजा एवं औरस पुत्री तथा उ र्मला की सहोदरा कहा गया है –

वर्धमानां ममात्मजाम् (बाल० 66/15) ;

जानकात्मजे (युद्ध० 115/18) ;

जनकात्मजा (रघुवंश 13/78)

महाभारत में लखा है –

वदेहराजो जनक: सीता तस्यात्मजा वभो
(3/274/9)

अमरकोश (2/6/27) में 'आत्मज' शब्द का अर्थ इम प्रकार लखा है –

आत्मनो देहाज्जातः = आत्मजः अर्थात जो अपने शरीर से पैदा हो, वह आत्मज कहाता है। आत्मा क्षेत्र (स्त्री) का पर्यायवाची है ; क्षेत्र और शरीर पर्यायवाची है।

क्षीयते अनेन क्षेत्रम

स्त्री को क्षेत्र इस लए कहते हैं की वह संतान को जनने से क्षीण हो जाती है। पुरुष बीजरूप होने से क्षीण नहीं होता ।

रघुवंश सर्ग 5, श्लोक 36 में लखा है –

ब्राह्मे मुहूर्ते कल तस्य देबी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् ।
अतः पता ब्रह्मण एव नाम्ना तमात्मजन्मानमजं चकार ।।

महामना पं ० मदनमोहन मालवीय की प्रेरणा से संवत 2000 में वक्रमद् वसहस्राब्दी के अवसर पर संस्था पत अ खल भारतीय वक्रम परिषद द्वारा नियुक्त का लदास ग्रंथावली के संपादक मण्डल के प्रमुख साहित्याचार्य पं ० सीताराम चतुर्वेदी ने उक्त श्लोक में आये "आत्मजन्मान्म" का अर्थ रघु की रानी की कोख से जन्मा कया हैं । तव जनक की 'आत्मजा' का अर्थ पृ थवी से उत्पन्न कैसे हो सकता है ? ब्रह्म मुहुर्त में जन्य लेने के कारण रघु ने अपने पुत्र का नाम अज (अज ब्रह्मा का पर्यायवाची है, क्यों क ब्रह्मा का भी जन्म नहीं होता) रखा। अज का अर्थ जन्म न लेने वाला होता है। कोई मूर्ख ही कह सकता है क अज का यह नाम इस लए रखा गया था, क्यों क वह पैदा नहीं हुआ था।

आत्मज या आत्मजा उसी को कह सकते हैं जो स्त्री – पुरुष के रज-वीर्य से स्त्री के गर्म से उत्पन्न हो, इसमें सामवेद ब्राह्मण प्रमाण है-

अंगदङ्गात् सम्भव स हृदयाद धजायते .... आत्मा स पुत्र।
(1.5.17)

है पुत्र ! तू अंग-अंग से उत्पन्न हुए मेरे वीर्य से और हृदय से पैदा हुआ है, इसी लए तू मेरा आत्मा है । खेत से उत्पन्न होने से तो तृण, औष ध, वनस्पति, वृक्ष, लता आदि सभी आत्मज और आत्मजा हो जाएँगे और बाप-दादा की सम्प त्त में भागीदार हो जाएंगे।

'जनी प्रादुर्भावे' से जननी शब्द निष्पन्न होता है। इससे जन्म देने वाली को ही जननी कहते है। पालन-पोषण करने वाली यशोदा माता कहलाती थीं, परन्तु जन्म न देने के कारण जननी देवकी ही कहलाती थी। बनवास काल में अत्रि मुनि
के आश्रम में अनसूया से हुई बातचीत में सीता ने कहा था –

पा णप्रदानकाले च यत्पुरा तवाग्निसन्निधौ।
अनु शष्टं जनन्या में वाक्यं तद प में घृतम् ।।
अयो० 118/8-9

 ववाह के समय मेरी जननी ने अग्नि के सामने मुझे जो उपदेश दिया था, उसे मैं कं चत भूली नहीं हूँ । उन उपदेशों को मैंने हृदयंगम कया है ।

क्या यहाँ ववाह के समय उपदेश देने वाली यह ‘जननी’ पृथवी हो सकती है ?
और क्या बेटी को वदा करते समय बिलख बिलख कर रोने वाली पृथवी थी ?
यहाँ माता को ही जननी कहकर स्मरण कया है, पृथवी को जननी नहीं कहा।

तुलसीदास जी ने तो माता = जननी का नाम भी इस चौपाई
में लख दिया है :-

जनक वाम दिस सोह सुनयना ।
हिमगरि संग बनी जिम मैना ।।
(रामचरितमानस बालकाण्ड 356/2)

(ववाह वेदी पर) सुनयना (महारानी) महाराजा जनक की बाई और ऐसी शोभायमान थी, मानो हिमाचल के साथ मैना (पार्वती की माता) वराजमान हो।

पाणग्रहण संस्कार के समय जिस प्रकार रामचन्द्र जी की पीढियों का वर्णन कया गया था उसी प्रकार सीता की भी 22 पीढियों का वर्णन कया गया। यदि सीता की उत्पत्त पृथवी ये हुई होती तो पृथ्वी से पहले की पीढ़िया कैसे बनती ?
इसे शाखोच्चार कहते है । राजस्थान में ववाह के अवसर पर दोनो पक्षों के पुरोहित आज भी 22 के ही नहीं, 30-40 पीढ़ियों तक के नामो का उल्लेख करते हैं । साधारणतया सौ वर्ष में चार पुरुष समझे जा सकते हैं। इस प्रकार 40 पीढियों में लगभग एक हजार वर्ष बनते है। अर्थात् सर्वसाधारण लोग भी मुहांमुही सैकडों वर्षो के पारिवारिक इतिहास का ज्ञान रख सकते थे। जिसका 22 पीढ़ियों का क्रमक इतिहास ज्ञात है उसे कीड़े-मकौडों या पेड़-पौधों की तरह पृथवी से उत्पन्न हुआ नहीं माना जा सकता। वस्तुतस्तु सीता के पृथवी से उत्पन्न होने

सम्बन्धी गप्प का स्रोत वष्णु पुराण, अंश 4, अध्याय 4, वाक्य 27-28 है जिसका वाल्मीक रामायण में प्रक्षेप कर दिया गया है। जन्म को पृथ्वी से मानकर सीता का अंत भी पृथ्वी में समाने की कल्पना करके ही कया गया है ।

अयोनिजा – सीता को अनेक स्थलों में अयोनिजा कहा गया है । पृथवी से उत्पन्न होने का अर्थ माता-पता के बिना अर्थात स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना उत्पन्न होना है। इसी को अयोनिज सृष्टि कहते है, क्योंक इसमें गर्भाशय से
बाहर निकलने में योनि नामक मार्ग का प्रयोग नहीं होता । सृष्टि के आदि काल में समस्त सृष्टि अमैथुनी होती हैं –

अमैथुनी सृष्टि से सम्बंधत पोस्ट का लंक – यहाँ से पढ़े
https://www.facebook.com/Aryamantavya/photos/a.1418444565059896.1073741828.1418437208393965/1618030795101271/?type=1&theater

यहाँ यह तथ्य जरूर जोड़ा जाता है की सृष्टि चाहे मैथुनी हो अथवा अमैथुनी – प्राणयों के शरीरो की रचना परमेश्वर सदा माता पता के संयोग से ही करता है।
पर दोनों में अंतर केवल इतना है की आदि सृष्टि में माता (जननी) पृथ्वी होती है और वीर्य संस्थापक सूर्य (ऋग्वेद 1.164.3) में कहा है –

“द्यौर्मे पता जनिता माता पृथ्वी महीयम”

अर्थात सृष्टि के आदि काल में प्रा णयों के शरीरो का उत्पादक पता रूप में सूर्य था और माता रूप में यह पृथ्वी। परमात्मा ने सूर्य और पृथ्वी – दोनों के रज वीर्य के सं मश्रण से प्रा णयों के शरीरो को बनाया। जैसे इस समय बालक माता के गर्भ में जरायु में पड़ा माता के शरीर में रस लेकर बनता और वक सत होता है, वैसे ही आदि सृष्टि में पृथ्वी रुपी माता के गर्भ में बनता रहता है। इसी शरीर को साँचा रुपी शरीर भी कहा जाता है जिससे हमारे जैसे मैथुनी मनुष्य उत्पन्न होते रहते हैं।

सीता का जन्म सृष्टिक्रम चालु होने और साँचे तैयार होने के बाद त्रेता युग में हुआ था, अतः सीता के अयोनिजा होने का प्रश्न ही नहीं उठता। जनक उनके पता थे और रामचरितमानस के अनुसार सुनयना उनकी माता का नाम था।

मेरी सभी बंधुओ से वनती है, कृपया लोकरीति, मथक, दंतकथाओं आदि पर आंखमूंदकर वश्वास करने से अच्छा है – खुद अपनी धा र्मक पुस्तको और सत्य इतिहास को पढ़ कर बुद् ध को स्वयं जागृत करते हुए दूसरे हिन्दू भाइयो को भी जगाये – ता क कोई वधर्मी हमारे सत्य इतिहास और महापुरषो महा वदु षयों पर दोषारोपण न कर सके

आओ लौटे ज्ञान और वज्ञानं की और –

आओ लौट चले वेदो की और

नमस्ते

परम पता परमात्मा ने चार ऋ षयों को चारो वेदो का प्रकश उनके आत्मा में कया था

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

कोई वेद आगे पीछे पहले बाद में नहीं आया।

आक्षेप करिये – मगर जो आक्षेप का जवाब आपको मल चूका – जिसमे आपकी सम्मति हो चुकी – तब पुनः उसी वषय को बार बार उठाना ये बुद् धमानी नहीं – कृपया स्वयं एक बार इस पोस्ट को पढ़े फर यदि कोई शंका हो तो बताये – अन्यथा इस सद्धातं को जिस प्रकार सनातन मत मानता चला आ रहा है उसी प्रकार मानकर आगे बढ़िए – बाकी आपकी जैसी इच्छा वैसे करे।

वेदत्रयी : तीन प्रकार के मंत्रो के होने, अथवा वेदो मे ज्ञान,कर्म ओर उपासना तीन प्रकार के कर्तव्यो के वर्णन करने से वेदत्रयी कहे जाते है ।

यही बात सर्वानुक्रमणीवृ त्त की भू मका मे ” षड्गुरु शष्य” ने कही है-

" वनियोक्तव्यरूपश्च त्रि वधः सम्प्रदर्श्यते|
ऋग् यजुः सामरूपेण मन्त्रोवेदचतुष्टये||"

अर्थात् यज्ञो मे तीन प्रकार के रूप वाले मंत्र वनियुक्त हुआ करते है|

तस्माद यज्ञात सर्वहुतः ऋचः सामानि ज ज्ञरे।
छन्दां स ज ज्ञरे तस्माद यज्ुस्तस्मादजायत।। (यजु० 31.7)

उस सच्चिदानंद, सब स्थानो में परिपूर्ण, जो सब मनुष्यो द्वारा उपास्य और सब सामर्थ्य से युक्त है, उस परब्रह्म से ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और छन्दां स – अथर्ववेद ये चारो वेद उत्पन्न हुए।

अन्य साक्षी :

यस्माद्दचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपकशन।
सामानि यस्य लोमानी अथर्वां गरसो मुखं।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमःस्विदेव सः।। (अथर्व० 10.4.20)

अर्थ : जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, उसी से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद (अं गरसः) अथर्ववेद, ये चारो उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार रूपकालंकार से वेदो की उत्प त्त का प्रकाश ईश्वर करता है की अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमो के सामान, यजुर्वेद ह्रदय के सामान और ऋग्वेद प्राण के सामान हैं, (ब्रूहि कतमःस्विदेव सः) चारो वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं सो कौन सा देव है ? उसको तुम मुझसे कहो, इस प्रशन का उत्तर यह है की (स्कम्भं तम) जो सब जगत का धारणकर्ता परमेश्वर है, उसका नाम स्कम्भ है, उसी को तुम वेदो का कर्ता जानो। (ऋ० भा० भू० वेदोत्प त्त वषय)

ब्राह्मणो ने भी इस मान्यता को यथावत स्वीकार कया है –

"एवं वा श्वरेस्य महतो भूतस्य निःश्व सतमेतद्।
यद्दग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्वां गरसः।। (शत० 14.5)

अर्थात : उस महान शक्तिशाली परमात्मा के निश्वासरूप में प्रकट ये चारो वेद जो ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अं गरा से प्रकट अथर्ववेद के नाम से प्र सद्द हैं।

अन्य साक्षी :

"तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्र्यो वेदा अजायन्त, अग्नेऋग्वेदो, वायोर्यजुर्वेदः, सुर्यात्साम्वेदः।" (श० 11.5.2.3)

अर्थात : उन तपस्वी ऋ षयों के माध्यम से परमात्मा ने अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद, इस प्रकार त्रयी वद्यारूप चार वेद प्रकट कये।

अब जब वेद और ब्राहमण ग्रन्थ दोनों ही प्रमाण हैं फर भी कैसे कोई सनातनी ये आक्षेप कर सकता है की अथर्ववेद बाद में आया है ? क्या ये सनातनी ज्ञान होगा अथवा नवीन भूल ?

खैर मनुस्मृति से एक साक्षी और देते हैं :

अध्यापयामास पतण्शिशुरां गरसः क वः।
पुत्रका इतिहोवाच ज्ञानेन परिग्रह्य तान।। (मनु० 2.126)

[इस प्रसंग में एक इतिवृत्त भी है] (अं गरसः शशुः क वः) आं गवंशी " शशु" नामक बालक वद्वान ने (पतृन्) अपने पता के सामान चाचा आदि पतरो को (अध्यापयामास) पढ़ाया (ज्ञानेन परिग्रह्य) ज्ञान देने के कारण (तान "पुत्रकाः" इति ह उवाच) उनको हे पुत्रो इस शब्द से सम्बो धत कया।

क व शब्द की व्युत्प त : क वः शब्द 'कु-शब्दे' (अदादि) धातु से 'अच इः' (उणादि 4.139) सूत्र से 'इः' प्रत्यय लगने से बनता है। इसकी निरुक्ति है :

'क्रांतदर्शनाः क्रांतप्रज्ञा वा वद्वांसः (ऋ० द० ऋ० भू०)
"क वः क्रांतदर्शनो भवति" (निरुक्त 12.13)

इस प्रकार वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों का दृष्टा, बहुश्रुत ऋ ष व्यक्ति क व होता है।
इसे "अनुचान" भी इस प्रसंग में कहा है [2.129] ब्राह्मणो में भी क व के इस अर्थ पर प्रकाश डाला है –

"ये वा अनूचानास्ते कवयः" (ऐ० 2.2)

"एते वै काव्यो यद्दश्यः" (श० 1.4.2.8)

"ये वद्वांसस्ते कवयः" (7.2.2.4)

शुश्रुवांसो वै कवयः (तै० 3.2.2.3)

शशु अं गरस – यह अं गरावंश का एक वद्वान बालक था। बाल्यावस्था में मन्त्रद्रष्टा होने के कारण यह गुणा भधान " शशु" नाम से ही प्र सद्द हो गया।
इसका यह आख्यान ताण्ड्य ब्राह्मण 13.3.23-24 और पञ्च ब्रा० 13.3.24 में यथावत आता है। वहां इसे "मन्त्रकृतां मन्त्रकृत" कहा है। ऋ० 9.112 सूक्त इसी शशु ऋ ष द्वारा दृष्ट है। सामवेद में यत्सोम चत्रम………" [उ० 3.2.13] तृच् को इसके द्वारा दृष्ट होने के कारण ही "शैशव साम" कहा गया है।

उपरोक्त वेद और इतिहास प्रमाणों से सद्ध है की परमात्मा ने चारो ऋ षये के आत्माओ में एक एक वेद का प्रकाश एक ही समय में कया था। जब चारो वेदो ने स्वंय अर्थववेद के वेदत्व को स्वीकार कया है तो फर अर्थववेद को नया बतलाकर वेद की सीमा से दूर करना मुर्खतामात्र है|

बाकी ज्ञानीजन वचार करे।

।। ओ३म ।।

क्या ववाह के समय श्री राम की आयु १६ वर्ष और माता सीता की आयु ६ वर्ष थी ?

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

शंका निवारण –

कुछ व शष्ट जनो को भगवान राम और माँ सीता के ववाह के सन्दर्भ में कुछ भ्रान्ति है. कुछ तर्क वाल्मी क रामायण से लेकर ये निष्कर्ष निकला जा रहा है की ववाह के वक़्त माँ सीता की उम्र मात्र छ साल की थी, जो सही नहीं है.. बाल्मी क रामायण से एक श्लोक का प्रमाण निकालकर कुछ लोग ऐसा प्रमा णत करना चाहते हैं की श्रीराम और माता सीता का ववाह "बाल ववाह" था – अर्थात – श्री राम की आयु १६ और माता सीता की आयु ६ वर्ष थी – जब क ये सत्य नहीं –

आइये बाल्मी क रामायण में सबसे पहले इसी श्लोक पर चर्चा कर लेते हैं की वहां क्या लखा है –

उ षत्वा द्वादश समाः इक्ष्वाकुणाम निवेशने |
भुंजाना मानुषान भोगतसेव काम समृद् धनी ||
(अरण्यकाण्ड ४७: ४)

ध्यान दे की इस श्लोक में द्वा और दश शब्द अलग अलग है. येद्वादश यानि बारह नहीं बल्कि द्वा "दो" को और दश "दशरथ" को संबो धत करता है. इसमें माँ सीता, रावन से, कह रही है की इक्ष्वाकु कुल के राजा दशरथ के यहाँ पर दो वर्ष में उन्हें हर प्रकार के वे सुख जो मानव के लए उपलब्ध है उन्हें प्राप्त हुए है। क्यों क इस श्लोक में इक्ष्वाकु कुल का नाम सीता जी बोल रही हैं – ले कन उस कुल में दशरथ पुत्र राम से उनका ववाह हुआ – स्पष्ट है – पुरे श्लोक में दशरथ नाम कहीं और भी नहीं लखा है – इस लए "द्वा" दो को और "दश" – महाराज दशरथ को सम्बोधन है।

इसे पूर्ण रूप से न समझ कर – कुछ ऐसा अर्थ कया जाता है – एक उदहारण –

"उस समय छोटे बच्चो को कमरे में बंद रखा जाता था" –
इसे कुछ इस तरह अर्थ कया गया –

"उस समय छोटे बच्चो को कमरे में बंदर खा जाता था" –

श्लोक का अर्थ थोड़ा गलत करने से पूरा मंतव्य ही बदल गया।

मम भर्ता महातेजा वयसा पंच वंशक ||३-४७-१० ||
अष्टा दश हि व र्षणी नान जन्मनि गण्यते ||३-४७-११ ||

इस श्लोक में माँ सीता कह रही है की उस समय (वनवास प्रस्थान के समय) मेरे तेजस्वी पति की उम्र पच्चीस साल थी और उससमय मैं जन्म से अठारह वर्ष की हुई थी. इसे ये

ज्ञात होता है की वनवास प्रस्थान के समय माँ सीता की उम्र अठारह साल की थी औरवो करीब दो साल राजा दशरथ के यहाँ रही थी यानि माँ सीता की शादी सोलह साल की उम्र के आस पास हुई थी. ये केवल सोच और समझ का फेर है।

सद्धाश्रम : श्री राम १४-१६वे वर्ष में ऋषी वश्व मत्र के साथ सद्धाश्रम को गए थे। इस तथ्य की पुष्टि वाल्मीक रामायण के बाल काण्ड के वीस्वें सर्ग के शलोक दो से भी हो जाती है, जिसमे राजा दशरथ अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहते हैं- उनका कमलनयन राम सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ और उसमें राक्षसों से युद्ध करने की योग्यता भी नहीं है।

उनषोडशवर्षो में रामो राजीवलोचन: न युद्धयोग्यतामास्य पश्या म सहराक्षसौ॥ (वाल्मीक रामायण /बालकाण्ड /सर्ग २० शलोक २)
चूँ क भगवान राम ऋ ष वश्वा मत्र के साथ चौदह अथवा सोलह वर्ष की उम्र में गए थे और उसके बाद ही उनका ववाह हुआ था इसे ये सद्ध हो जाता है की प्रभु रामकी शादी सोलह वर्ष के उपरान्त हुई थी

श्री राम और लक्ष्मण ने – ऋ ष वश्वा मत्र के आश्रम सद्धाश्रम में करीब १२ वर्ष तक निवास कया और ऋ ष वश्वा मत्र ने उन्हें ७२ शस्त्रास्त्रों का सांगोपांग ज्ञान तथा अभ्यास कराया –

यदि श्री राम की आयु ऋ ष वश्वा मत्र के साथ उनके आश्रम में जाते समय १६ नहीं १४ भी माने तो ऋ ष वश्वा मत्र के आश्रम में वद्या ग्रहण करते हुए १२ साल व्यतीत हुए जिसका योग २६ वर्ष होता है –

उपरोक्त तथ्यों से सद्ध है की श्रीराम की आयु म थला में स्वयंवर जाते समय २५-२६ वर्ष थी और माता सीता की आयु १६ वर्ष थी।

अब भी यदि कुछ अतिज्ञानी नहीं मानते – तो कृपया बताये –

स्वयंवर के समय श्री राम की आयु यदि १६ वर्ष और माता सीता की आयु यदि ६ वर्ष मानते हो – तो वनवास क्या श्री राम २-४ वर्ष की आयु में गए ?

कृपया सत्य को जाने वेदो की ओर लौटिए –

नमस्ते –

नोट : प्रथम पद में यह द्वी शब्द रहता है – यहाँ पर द्वा द् ववचन का रूप है।

आदि सृष्टि के मनुष्यो की भाषा क्या थी और भाषा का वस्तार कैसे हुआ ?

JUNE 30, 2015 13 COMMENTS

भाषा की उत्प त :

मानव जिस समय पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ उस समय बोलने और समझने की शक्ति समपन्न अवस्था थी – यह निर्देश पहले भी कया जा चुका है की आदि सृष्टि के मनुष्य युवा अवस्था के उत्पन्न होते हैं – इस लए उनमे बोलने की शक्ति थी तो यह भी मानना होगा की वर्ण भी थे जिनके द्वारा वह अपनी वाणी को प्रकट कर सके। यदि कोई यह माने की वर्ण नहीं थे तो उसके साथ यह भी स्वीकार करना ही पड़ेगा की मनुष्य आदिम अवस्था में गूंगा उत्पन्न हुआ। यदि गूंगा उत्पन्न हुआ तो फर वह कसी भी हालत में बोलने वाला नहीं हो सकता। इस लए निष्कर्ष यही निकलेगा की उसमे बोलने की शक्ति थी और जब बोलने की शक्ति थी तो ये भी तथ्यात्मक है की जो भाषा वो बोले उनके वर्ण भी होने चाहिए।

जो लोग कहते हैं की से मटिक भाषाए, हीब्रू अथवा अरबी आदि आर्य भाषाओ से स्वतंत्र हैं वह गलती पर हैं, कारण की मनुष्य कसी नवीन भाषा को तो कभी बना ही नहीं सकता ?

क्यों क मैथुनी (सेक्स) सृष्टि के लोगो की भाषा सदैव उनके माता पता तथा गुरु की भाषा होती है। ले कन आदि मनुष्यो की भाषा पूर्ण (संस्कृत) भाषा ही थी ऐसा नियम इस लए मान्य है क्यों क आदि मनुष्यो का माता पता और गुरु ईश्वर के अतिरिक्त और कोई थे ही नहीं। तो ऐसी स्थति में और कोई देशीय भाषा वरासत में मलना असंभव है – तो साफ़ है उनकी केवल वही भाषा होगी जो सृष्टि के पदार्थो में वद्यमान हो – परमेश्वर द्वारा मनुष्य पर प्रकट कये जाने वाले ज्ञान के पूर्ण माध्यम होने की उस भाषा में क्षमता हो और वह ऐसी भाषा होनी चाहिए जो सदा प्रत्येक कल्प में एक सी रहती हो तथा आगे बोल चाल की समस्त भाषाओ को उत्पन्न करने में सक्षम हो। वशेष बात यह है की वो कसी देश वदेश की भाषा न हो और न उससे पूर्व कोई ज्ञान वा भाषा पृथ्वी पर कहीं मौजूद हो

बस यही बात है जो वशेष वर्णन के योग्य है की परमेश्वर ने मानव के पृथ्वी पर आने के साथ ही साथ वेद ज्ञान की प्रेरणा मनुष्य में दी – और वह वेद की भाषा "संस्कृत" में ईश्वरीय ज्ञान मानव को मला जो आदि ज्ञान और आदि भाषा – दोनों था।

वाणी भाषाओ का वस्तार –

ऊपर जो कुछ दर्शाया गया है उसका भाव यह है की आदि अमैथुनी सृष्टि के मनुष्यो के शरीर तथा शरीर के सब अंग आदि आदर्श रुपी थे, जैसे वो आदि सृष्टि के मनुष्य मैथुनी सृष्टि के मनुष्यो के लए साँचे रुपी थे अर्थात मनुष्य समाज के प्रवर्तक थे वैसे ही आदि भाषा भी साँचा रुपी और सभी भाषाओ की प्रवर्तक होनी चाहिए। इसी लए उस आदि भाषा का नाम संस्कृत है। संस्कृत का अर्थ होगा पूर्ण भाषा यानी जो पूर्ण भाषा हो वो संस्कृत कहलाएगी।

इसी प्रकार अपूर्ण भाषाए जो वेद भाषा से संकोच, अपभ्रंश और मलेच्छित आदि होकर मनुष्य के बोल चाल की भाषाए बनती हैं। क्यों क संस्कृत भाषा के दो भाग हैं –

1. वैदिक संस्कृत
2. लौ कक संस्कृत

प्राय सभी पश्चिमी वद्वान और अनेक भारतीय अनुसन्धानी भी संस्कृत को ही सभी भाषाओ का मूल मानते हैं – पर ध्यान देने वाली बात है की लौ कक संस्कृत की जन्मदात्री वैदिक संस्कृत है। वैदिक संस्कृत ही आदि भाषा है क्यों क वैदिक संस्कृत अर्थात वेद की भाषा कभी भी कसी भी देश वा कसी जाती की अपने बोलचाल की भाषा नहीं रही है – क्यों क वेदो में वाक्, वाणी आदि पदो का प्रयोग देखा जाता है भाषा का नहीं।

अब हम समझते हैं भाषा का वस्तार कस प्रकार हुआ – दे खये वेद में वैदिकी वाणी को नित्य कहा है –

तस्मै नूनम भद्यवे वाचा वरूप नित्यया।

(ऋग्वेद 8.75.6)

नित्यया वाचा – अर्थात नित्य वेदरूप वाणी – यानी की वैदिक संस्कृत यह सब वा णयों (भाषाओ) की अग्र और प्रथम है –

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्नं

(ऋग्वेद 10.71.1)

प्रभु से दी गयी वेदवाणी ही इस सृष्टि के प्रारं भक शब्द थे।

ईश्वर की प्रेरणा से यह वाणी सृष्टि के प्रारम्भ में ऋ षयों पर प्रकट होती है।

यज्ञेन वाचः पदवीयमायणतामानव वन्दन्नृ षषु प्र वष्टाम्।

(ऋग्वेद 10.71.3)

प्रभु अग्नि आदि को वेदज्ञान देते हैं इससे अन्य यज्ञीय वृ त्तवाले ऋ षयों को यह प्राप्त होती है – इसी मन्त्र में आगे लखा है –

इस ही प्रथम, निर्दोष और अग्र वाणी को लेकर लोग बोलने की भाषा का वस्तार करते हैं।

तामाभृत्या व्यदधुः पुरूत्रा तां सप्त रेभा अभी सं नवंते।।

(ऋग्वेद 10.71.3)

इस वाणी को ऋ ष मानव समाज में प्रचारित करते हैं। यह वेदवाणी सात छन्दो से युक्त है अर्थात २ कान – २ नाक – २ आँख और एक मुख ये सात स्तोता बनकर इसे प्राप्त करते हैं –

उपरोक्त प्रमाणों और तथ्यों से सद्ध होता है की मनुष्य की एक ही भाषा थी – और मनुष्यो ने इसी वेद वाणी से अर्थात प्रथम व पूर्ण भाषा संस्कृत से – अपूर्ण भाषाए – अर्थात जितनी

भाषाए आज प्रच लत हैं उनका निर्माण कया – ले कन वैदिक संस्कृत में आज भी कोई फेर बदल नहीं हो सका – क्यों क वैदिक संस्कृत पूर्ण भाषा है –

कृपया सत्य को जानिये –

वेद की और लौटिए —

बोद्ध ग्रंथो में मासाहार (झूटी अंहिसावाद)

JUNE 21, 2015 1 COMMENT

बोद्ध ओर नवबोद्ध अपने आप को कतना भी संयमी ,सात्विक आहारी बताये ले कन बोद्ध देशो को देखने पर पता चलता है क वहा के बोद्धो में काफी हिंसक भावनाए है ,, वे लोग अपने जीभ के स्वाद के लए कसी भी प्राणी यहाँ तक क मानव भ्रूण को तक खाने लगे है |क्यू क जेसा आहार होता है वेसे ही वचार ओर व्यवहार होता है |
मह्रिषी मनु मॉस भक्षण को हिंसक ओर पाप मानते हुए कहते है –
" स्मुत्प त च मॉसस्य बवबन्धो च देहिनाम |
प्रसमीक्षय निवर्तेत सर्वमॉसस्य भक्षणात || मनु . ५/४९ ||
अर्थात मॉस की उत्पति जेसे होती है उसको ,प्रा णयों की हत्या ओर बंधन के कष्टों को देख सब प्रकार के मॉस भक्षण से दूर रहे |
ओर कहते है –
" अनुमन्ता वश सता निहन्ता क्रय वक्रयी |
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकेश्चेति घातका ||मनु .५/५१ ||"
मारने की आज्ञा देने वाले ,मॉस को काटने वाले पशु को मारने वाले क्रय वक्रय करने वाले ,पकाने वाले परोसने वाले खाने वाले ये सब हत्यारे ओर पापी है |
इस तरह मनु ने मॉस भक्षण को पाप बताया है ,,साथ ही मॉस व्यापार को क्यू क मॉस खाने की आदत ही जीवो की हिंसा को प्रेरित करती है |
हिन्दू धर्म के काशी खंड में निम्न श्लोक मलता है – जातु मॉस न भोक्तव्यम प्राणै कंठगतैर प (काशी खंड ,३५३ -५५) चाहे प्राण कंठ तक आ जाए तो भी मॉस नही खाना चाहिए |
अर्थववेद ८/६/९३ में कहा है जो अंडे मॉस खाते है उनका मै नाश करता हु |
इस तरह मॉस भक्षण को सनातन शास्त्रों में निन्दित बताया है |
अब हम बोद्ध दर्शन में मॉस भक्षण सम्बन्धित बातें देखते है –
बोद्ध ने यज्ञ में पशु वध का वरोध कया ले कन बोद्ध मॉस भक्षण से अपने आप को दूर नही रख सके इसके बारे में सक लक सुत्त में देवदत्त वद्रोह नामक अध्याय में आता है ,इस अध्याय में एक कथा अनुसार देवदत बोद्ध से निम्न बातो की शर्त रखता है वो इस तरह है |देवदत्त बुद्ध से कहता है , क संघ में निम्न नियम बनाये जाए -(१) भक्षु वन में रहे नगर में रहे तो दोष हो |
(२) जिन्दगी भर भक्षा मांग कर खाने वाला हो |
(३) जिंदगी भर फेंके हुए चीथड़े पहने ,जो चीवर का उपभोग करे उस पर दोष हो |
(४) जिन्दगी भर वृक्ष के नीचे रहे |

(५) जिन्दगी भर मॉस मच्छली न खाए जो खाए उस पर दोष हो |
इसमें से बुद्ध एक भी शर्त नही मानते है ,,हम यहाँ बा क ४ पर बुद्ध के उत्तर न लख ५ वे पर लखते है क मॉस भक्षण पर बुद्ध ने क्या कहा –
बुद्ध कहते है – है देवदत्त ! जो अदृष्ट (जिसे मरते हुए मेने न देखा हो) अश्रुत (जिसे मरते हुए न सुना हो) अ परिशं कत (जो संदेह में न हो) इस तरह का मॉस खाने की मेने आज्ञा दी है |
बुद्ध ने देवदत्त के मॉस भक्षण के निषेध वाली शर्त को ठुकरा दिया ओर इससे देवदत्त बोद्ध के संघ से अलग हो गया |
इसी तरह की बात जीवक नामक भक्षु से बोद्ध ने जीवक सुत्तन्त (२९/५) में कही है
जीवक से बुद्ध कहते है –
जिस जीव का अपने लए न मारा जाना हो |जिसे मारे हुए न देखा हो , न सुना हो न शंका हो |ऐसे मॉस को खाने का मेने आज्ञा दी है |
बोद्ध के उपरोक्त कथन को देखा जाए तो कसी दूकान से मॉस खाया जा सकता है ,,क्यूं क दूर कसी होटल आदि पर पकाए हुए मॉस की कसी दूर से आये खाने वाले को कोई जानकारी नही होती |
एक स्थान से दुसरे स्थान की यात्रा में अगर कोई मासाहार भोजनालय है तो वहा मॉस खा सकते है क्यूं क खाने वाले ने न प्राणी को कटते देखा है ,न ही वो उसके लए काटा है न ही वो उसने काटते हुए सुना है |
इस तरह बुद्ध ने हिंसा का एक दूसरा रास्ता खोल दिया |ओर असयम को जो क स्वाद से है को बढ़ावा दिया |
इस तरह एक जातक कथा में भी मॉस भक्षण का उलेख मलता है – जिसके अनुसार एक भक्षु के पास एक चील द्वरा छुटा हुआ कोई मॉस गरता है भक्षु बुद्ध से कहता है क इसका क्या करू बुद्ध उसे वह मॉस खाने को कहते है |
इस तरह बोद्ध ग्रंथो में जगह जगह एक अलग प्रकार की हिंसा का उलेख मलता है जो उनके अहिंसक ओर संयमी होने के दावे पर प्रश्न चन्ह लगाता है |
शायद बुद्ध को इस बात पर ध्यान देना चाहिय था क जेसा आहार वेसा ही वचार ओर व्यवहार हो जाता है |मॉस भक्षण कसी भी प्रकार का जीव हत्या को बढ़ावा देता है |

संध र्भत पुस्तके एवम ग्रन्थ – (१) मनुस्मृति – सुरेन्द्रकुमार जी
(२) म झम निकाय – राहुल सांस्क्रतायन
(३) बुद्धचर्या – राहुल सांस्क्रतायन
(४) दीर्घ निकाय – राहुल सांस्कृतायन

तो क्या? (वैदिक धर्म में गौ मांस भक्षण एक झूठ) – संजय शास्त्री, कनाडा

JUNE 5, 2015 LEAVE A COMMENT

महाराष्ट्र में गोमांस पर राज्य सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाते ही कुछ लोगों की मानवीय संवेदनाएँ आहत हो उठीं और उनको लगा, जैसे मानवा धकारों पर कयामत टूट पड़ी हो। कुछ लोग भारतीय इतिहास की दुहाई देते हुए संस्कृत शास्त्रों से गोमांस-भक्षण के उदाहरण देते हुए हिन्दुओं को सलाह देने लगे क अपने शास्त्रों की बात मानोगे या आधुनिक

हिन्दुत्ववादियों की? (इस वषय में मुसलमानों का एक मतान्ध कन्तु अति मन्दगति वर्ग बहुत स क्रय हो गया है, इस लये इस लेख में मुसलमानों की चर्चा करने पर बाध्य हुआ हूँ।) कुछ लोगों के हृदय में आर्य और अनार्य का क थत शाश्वत वैर जाग उठा और वे चल्ला उठे क गोमांस-भक्षण अनार्यों की प्राचीन परम्परा रही है, वदेश से आए आर्यों ने ही इस पर प्रतिबन्ध लगाया। यह कैसी षड्यन्त्रानुप्रा णत ऐतिहा सक शक्षा है जो हमें इतना मूर्ख बनाने में सफल रही है क हम दो परस्पर वरोधी 'ऐतिहा सक तथ्यों' को मानने लगे हैं। अजीब है- एक तरफ तो यह सद्ध कया जाता है क गोमांस-भक्षण आर्यों के समाज में होता था, और दूसरी तरफ यह भी बताया जाता है क गोमांस-भक्षण भारत के मूल निवासी अनार्यों की परम्परा रही है और बाहर से आये आर्यों ने ही इस पर जबर्दस्ती प्रतिबन्ध लगाया। खैर, जो भी हो, एक बात अवश्य ही स्पष्ट है क जो लोग इन उदाहरणों को देकर गोमांस-भक्षण को आर्यों की सामान्य परम्परा सद्ध करना चाहते हैं, वे उन प्रसंगों की सच्चाई छुपा कर ही ऐसा करते हैं। (इसका खुलासा नीचे भारतीय आदर्श के प्रसंग में कया गया है।) ले कन इस वषय पर फर कभी बात करूँगा। अभी तो बस इतना ही कहना है क गोमांस-भक्षण के उदाहरणों का इस युग से क्या सम्बन्ध है, और उनकी उपयुक्तता क्या है। इस लेख में मैं प्राचीन भारतीय शास्त्रों में गोमांस-भक्षण के उदाहरणों की समीक्षा नहीं करना चाहता। वह इस लेख की सीमा से बाहर है। ऐसी समीक्षा निष्फल भी है, क्यों क सामान्यतः अतीत की व्याख्या व्यक्ति के मान सक परिप्रेक्ष्य में तैयार होती है – वैचारिक और नैतिक मानदण्डों से बँधी होती है और जब तक कोई व्यक्ति इस तरह की सीमाओं से बाहर निकलने को तैयार नहीं हो, तब तक मतभेदों का समाधान असम्भवप्रायः होता है। इसको ऐसे समझा जा सकता है-

१. जिन लोगों को गोमांस-भक्षण से ऐतराज नहीं है, उनको भारतीय इतिहास के इस प्रसंग में प्रायः उद्धृत उदाहरणों की व्याख्या गोमांस-भक्षणपरक करने से भी कोई ऐतराज नहीं होगा। यदि वे गोमांस खाते हैं, तो वे कदा प नहीं चाहेंगे क इस पर प्रतिबन्ध लगे और वे इतिहास की ढाल लेकर मैदान में कूद पड़ेंगे।

२. ले कन जिनको गोमांस-भक्षण संास्कृतिक पाप मालूम होता है, वे उन्हीं सन्दर्भों की व्याख्या गोमांस-भक्षण परक नहीं करेंगे। और यदि ऐसे सन्दर्भ कहीं मलते भी हैं तो उनको प्र क्षप्त मानकर अमान्य कर देंगे।

३. तीसरा प्रकार उन लोगों का है जो इतिहास की ऐसी बातों को गोमांस-भक्षण के वरोधी हिन्दुओं को द्वेष भावना से केवल नीचा दिखाने के लये कहते हैं। उन्हें न तो इतिहास से कुछ लेना-देना है, और न ही गोमांस-भक्षण से। ये वे बच्चे हैं, जिनको साथी बच्चों की शान्ति भंग करने में ही मजा आता है।

४. कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनको यह मान लेने से कोई ऐतराज नहीं है क अतीत में कुछ लोगों ने गोमांस खाया होगा, ले कन ऐसा मानने वाले यह भी मानते हैं क इतिहास अतीत की बदलती हुई राजनीतिक और सामाजिक धाराओं का प्रवाह मात्र है, जिसको पढ़कर हम वर्तमान को सुधारने के लये शक्षा तो ले सकते हैं, ले कन उसे हम आज न तो अनुभव कर सकते हैं और न ही उसको जी सकते हैं।

जो भी हो, एक बात स्पष्ट है क ऐसे उदाहरणों की व्याख्या व्यक्ति के वैचारिक और नैतिक मानदण्डों से प्रेरित होती है, जिसका त्वरित समाधान सम्भव नहीं है, इस लये यह लेख दुर्जनपरितोषन्याय से लखा गया है। माना क प्राचीन काल में कुछ लोगों ने गोमांस खाया होगा, तो क्या?

गोमांस-भक्षण के उदाहरण

जो गोमांस-भक्षण के उदाहरण दिये जाते हैं, वे इतने छिटपुट और प्रसंगतः क्षुद्र हैं क उनके आधार पर गोमांस-भक्षण को सद्ध करने की बात पर प्रमाण-शास्त्र को मानने वाला कोई भी व्यक्ति हँसेगा। उसका कारण है क गौ के प्रति आर्यों की प वत्र भावना शाश्वत है। वेदों और दूसरे संस्कृत ग्रन्थों में गोमांस-भक्षण के उदाहरण देने वाले भी यह मानते हैं क हिन्दुओं के प्राचीनतम शास्त्र ऋग्वेद से लेकर आज तक गौ के प्रति प वत्रभावना अ वच्छिन्न रूप से मलती है। ऋग्वेद में गाय को अघ्न्या (जिसको नहीं मारना चाहिये) कहा गया है और यही भावना बाद के ग्रन्थों में वस्तार से मलती है। यदि गोमांस-भक्षण के उदाहरणों और गोहत्या को पाप तथा गोरक्षा को पुण्य मानने वाले उदाहरणों का परिमाण देखा जाए तो तुलना ऐसी होगी-गोहत्या से पाप और गोरक्षा से पुण्य मलने का बखान करने वाले उदाहरण एक महासागर की तरह हैं, जिसमें गो मांस खाने के उदाहरण कुछेक तिनकों की तरह हैं। ऐसा क्यों है क ये लोग उन छिटपुट उदाहरणों को तो प्रमाण मान रहे हैं, ले कन बाकी महासागर की उपेक्षा कर रहे हैं? ऐसा कसी न कसी स्वार्थ या काम के वशीभूत होकर दुराग्रही होने पर ही होता है। प्रमाण-शास्त्र को मानने वालों के लये यह हास्यास्पद ही होगा क गोरक्षा की असीम वच्छिन्नधारा की उपेक्षा कर दो-चार वाक्यों को प्रमाण मानकर सांस्कृतिक ऐतिहा सक धारा को मोड़ने का प्रयास कया जाए।

 कसी घटना के केवल उदाहरण मलने से ही ऐसी घटनाएँ वधान तो नहीं बन जाती हैं। यह सोचना चाहिये क उस युग में भी आदर्श क्या था? इस वषय में भी इतिहासकारों को कोई संन्देह नहीं है क तब भी गौ के प्रति सम्मान भावना रखना ही आदर्श माना जाता था। न केवल इतना, बल्कि कसी प्रकार के मांस को न खाना ही उनका आदर्श था। तो फर आदर्श आचार से उनके आचार को सद्ध करने में इतना परिश्रम क्यों कर रहे हैं ये लोग?

और फर मनुष्य कभी भी धर्मशास्त्र का सर्वथा अक्षरशः पालन नहीं करता है। कतने ईसाई और मुसलमान हैं, जो बाइबिल और कुरान की अच्छी शक्षाओं का अनुसरण करते हैं? मनुष्य पहले स्वभावतः मनुष्य ही होता है, उसकी धा र्मक पहचान भी अक्सर उसके स्वभाव के नीचे दबकर रह जाती है। जैसे ईसाई या मुसलमान अपने धर्म का अक्षरशः पालन नहीं करते हैं, वैसे ही कुछ हिन्दू भी नही करते हैं। ऋ ष कपूर जैसे सु वख्यात कलाकार, जिनका परिचय हिन्दू के रूप में ही है, आज भी गोमांस खाते हैं। उन्होंने लखा था क ''मुझे गुस्सा आ रहा है। खाने को धर्म से आप क्यों जोड़ रहे हैं? मैं बीफ खाने वाला एक हिन्दू हूँ। तो क्या, इसका मतलब यह है क मैं बीफ नहीं खाने वाले की अपेक्षा कम धा र्मक हूँ? सोचो!'' और यह महोदय यहाँ तक लख बैठते हैं क ''वैसे मुझे मेरे उन मुस्लिम दोस्तों की तरह पार्क चॉप्स भी बेहद पसंद हैं जो मेरी तरह सोचते हैं। जब आप धर्म को खाने से जोड़ते हैं तो वे भी आप पर हँसते हैं।'' भारत के अहिंसा के आदर्श और गौ के प्रति देवी तथा मातृवत् भाव के इतिहास से परि चत व्यक्ति इसका क्या उत्तर देगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है, ले कन

इसका उत्तर मशहूर शायर गा लब से मलता है । १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद पुनः अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा हो गयी और अंग्रेजों ने दिल्ली में संदिग्ध लोगों की धरपकड़ शुरू की । इसी प्रसंग में एक बर्न नाम के कर्नल ने अपनी टूटी-फूटी उर्दू में गा लब से पूछा, ''तुम मुसलमान हो?'' गा लब ने कहा, ''आधा।'' ''इसका मतलब?'' कर्नल ने पूछा तो गा लब ने जवाब दिया, ''मैं शराब पीता हूँ, ले कन सूअर नहीं खाता।'' अर्थात् यदि गा लब शराब भी नहीं पीते तो पूरे मुसलमान होते और यदि शराब पीते और सूअर भी खाते तो मुसलमान ही नहीं रहते। खैर, जो भी हो, क्या यह उ चत है क ऋ ष कपूर जैसे लोगों के उदाहरण से यह सद्ध कया जाए क आज हिन्दुओं में गोमांस खाना मान्य है? यदि नहीं तो, इतिहास में क्यों इस तरह की मान सकता थोपने की को शश हो रही है? इन्द्रियों का दास हो चुके मनुष्य के लये धर्मशास्त्र व्यर्थ हैं। धर्म का ज्ञान केवल उन्हीं को होता है, या हो सकता है, जो स्वार्थ और काम की भावना के वशीभूत नहीं हैं। स्वार्थान्ध और कामान्ध व्यक्ति के लये तो शास्त्र नियम अ भशाप की तरह हैं, मानवा धकारों का उल्लंघन है। ऋ ष कपूर जैसे लोगों की यही करुण व्यथा है- गोवध पर प्रतिबन्ध से उनके मानवा धकारों का उल्लंघन हो रहा है।

इसी प्रसंग में एक बात और। यदि इन लोगों को भारत के अतीत से इतना ही प्यार और मान्य-भावना है, तो इनको यह भी समझना चाहिये क उस युग के आचरणों की यथावत् प्रतिष्ठा के लये जितना महत्वपूर्ण उस युग की बातों के होने का है, उतना ही महत्वपूर्ण कुछ बातों का नही होना भी है। उस समय ईसाइयत और इस्लाम भारत में तो क्या दुनिया में भी नहीं थे। तो जो लोग प्राचीन हिन्दू धर्म में गोमांस-भक्षण को प्रमाण मानकर आचरणीय मानते हैं, तो क्या उनको हिन्दू धर्म को स्वीकार कर अपनी आस्था को खुले रूप में प्रकट नहीं करना चाहिये? जब तक ऐसे लोग वैदिक धर्म और आचरण को स्वीकार न कर लें, तब तक उन्हें वैदिक या हिन्दू धर्म में आस्था रखने वालों को ''अतीत की कस परम्परा का अनुसरण करना चाहिये'' के वषय में बोलने का कोई अ धकार ही नहीं है।

इतिहास में कसी घटना के उदाहरण मलना भी उनको हर युग और देश में स्वीकार करने का कारण नहीं हो सकता। भारतीय परम्परा में संस्कृति को प्रवाहमान माना गया है, जो हर युग में बदलती रहती है। इतिहास में इस तरह की परम्पराएँ रही हैं, जिनके वषय में आज सोचना भी मन में जुगुप्साभाव पैदा करता है। जैसे क ईरान में सगे सम्बन्धियों में आपस में शादी की परम्परा थी, जिसको पूरी धा र्मक और कानूनी मान्यता थी। यहाँ तक क माँ-बेटे, बहन-भाई और पता-बेटी की शादी की भी बहुप्रच लत परम्परा थी। यदि ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस को प्रमाण माना जाए तो ऐसी परम्पराएँ भी थीं, जब कसी के बीमार होने पर उसी के सम्बन्धी उसको मारकर, पकाकर उसका भोग लगाते थे। क्या गोमांस के छिटपुट उदाहरणों के आधार पर हिन्दुओं की धा र्मक भावना से खलवाड़ करने को जायज ठहराने से पहले सगे सम्बन्धियों से शादी करने और बीमार सम्बन्धियों का भोग लगाने की परम्परा को कानूनी रूप से स्वीकार कर लया जाये?

शास्त्र में कही गयी बातों के आचरणीय या अनाचरणीय होने के वषय में कामसूत्र में एक ही बात दो बार सावधान करने के लये कही गयी है-

न शास्त्रमस्तीत्येतेन प्रयोगो हि समीक्ष्यते/न शास्त्रमस्तीत्येतावत् प्रयोगे कारणं भवेत्।
शास्त्रार्थान् व्या पनो वद्यात् प्रयोगांस्त्वेकदे शकान्।।

(कामसूत्र, २.९.४१,७.२.५५)।

शास्त्र में कसी बात की चर्चा है, केवल इसी आधार पर उसका प्रयोग या आचरण नहीं कया जा सकता, क्यों क शास्त्र का वषय व्यापक होता है, जब क प्रयोग एकदे शक होते हैं, अर्थात् शास्त्र व भन्न देश और काल की चर्चा करते हैं, उनका रिकार्ड रखते हैं, ले कन प्रयोग प्रयोक्ता की शक्ति, समय, देश और परम्परा के अनुसार ही होते हैं, सर्वकालीन और सर्वजनीन नहीं। यही कारण है क काम शास्त्र में रागवर्धक व चत्र प्रयोगों का ववरण देने के बाद उनका यत्नपूर्वक निवारण भी कर दिया गया है (कामसूत्र ७.२.५४)।

भारतीय आदर्श– अब आते हैं भारतीय आदर्श पर। गोमांस की बात छोड़ो, भारतीय परम्परा में तो कसी भी प्राणी के मांस भक्षण से सर्वथा निवृ त्त को ही आदर्श माना जाता था। मुसलमानों के इस धूर्त वर्ग ने मनु का भी एक श्लोक भारत में मांस भक्षण के पक्ष में प्रमाण के रूप में प्रचारित कया है। इसमें कहा गया है क भोक्ता अपने खाने लायक पदार्थों को खाने से कसी दोष का भागी नहीं होता है। इन खाने लायक भोजनों में प्रा णयों को भी गना गया है (मनु ५.३०)। वशेष बात यह है क भारतीय वद्वानों ने इसको प्राण-संकट होने पर मान्य माना है। जैसे क मनु के व्याख्याकार मेधाति थ ने इस श्लोक की व्याख्या में कहा है क इसका मतलब यह है क प्राणसंकट में हों तो मांस भी अवश्य खा लेना चाहिये (तस्मात् प्राणात्यये मांसमवश्यं भक्षणीय मति त्रिश्लोकी वधेरर्थवादः।) ऐसा भी नहीं है क यह मेधाति थ की मनमर्जी से की गई व्याख्या है। यह मनु के अनुरूप ही है। ऊपर उद्धृत श्लोक के बाद मनु ने प्रा णयों की अहिंसा का गुणगान कई श्लोकों में करते हुए मांस भक्षण को पुण्यफल का वरोधी माना है। उन्होंने यहाँ तक कहा है क यदि कोई व्यक्ति सौ साल तक हर साल अश्वमेध यज्ञ करता रहे और यदि कोई व्यक्ति मांस न खाए तो उनका पुण्यफल समान होता है (५.५३)। सन्तों के प वत्र फल-फूल भोजन मात्र पर निर्वाह करने वाले को भी वह पुण्यफल नहीं मलता है जो क केवल मांस छोड़ने वाले को मलता है। मनु ने मांस की बड़ी अच्छी परिभाषा देते हुए कहा है क-

मांस भक्षयितामुत्र यस्य मांसमदाम्यहम्।

एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनी षणः।।

– समझदार लोग कहते हैं क मांस को मांस इस लये कहा जाता है, क्यों क मैं आज जिसको खा रहा हूँ (मां) मुझे भी (सः) वह परलोक में ऐसे ही खाएगा। और मनु गौ को तो सर्वथा अवध्य मानते हैं और उसकी रक्षा करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य मानते हैं। इसी प्रसंग में ऊपर दिया कामसूत्र वषयक परिच्छेद (भारतीय आदर्श शीर्षक से पहले) एक बार और देख लें तो वषय और भी स्पष्ट हो जाएगा। एक शास्त्र होने के नाते मनुस्मृति में चाहे मांस-भक्षण की चर्चा है, ले कन जिस वस्तृत स्पष्टता के साथ इसको अपुण्यशील माना है, वह मांस-भक्षण की स्वीकृति के पक्ष में नहीं, अ पतु उसके साक्षात् वरोध में खड़ा है। तब भी यदि कोई इसमें मांस-भक्षण की स्वीकृति को सद्ध करने की चेष्टा करता है, तो या तो वह मूढ़ अज्ञानी है, या धूर्त है।

हिन्दू बनाम गैर-हिन्दू

यह तर्क भी दिया जाता है क गोहत्या केवल हिन्दुओं के लये पाप है, दूसरे धर्मावलम्बियों (ईसाई और मुसलमानों) के लये तो नहीं। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और शासन को एक धर्म की मान्यताओं के आधार पर दूसरे धर्मावलम्बियों के मानवा धकारों का हनन नहीं करना चाहिये।

तर्क तो ठीक है, ले कन बाकी तर्कों की ही तरह पक्षपाती है। कुरान केवल मुसलमानों के लये ही तो प वत्र है, पैगम्बर मुहम्मद साहब भी केवल मुसलमानों के लये पैगम्बर हैं, तो क्या मुसलमान यह स्वीकार करेंगे क दूसरे धर्मावलम्बी कुरान के साथ जैसा चाहे व्यवहार कर सकते हैं? क्या ईसाईयों को यह स्वीकार होगा क यदि कोई सूली पर लटके ईसा की काष्ठमूर्ति को जलाकर ठण्ड से सकुड़ते बदन को सेक ले? यदि मुसलमानों और ईसाइयों को यह स्वीकार नहीं होगा तो उनको हिन्दुओं की धा मक भावनाओं का ध्यान रखना ही चाहिये। गाय का प्रश्न केवल खाने-पीने तक नहीं है, गाय को श्रद्धाभाव से, प वत्र देवी के रूप में देखा जाता है। यदि एक-दूसरे की भावनाओं का ध्यान नहीं रखेंगे, तो अतीत की तरह दंगों की आग दोनों ही तरफ के लोगों को झुलसाती रहेगी। समय-समय की बात है – कभी मुसलमानों-ईसाइयों का पलड़ा भारी होगा तो कभी हिन्दुओं का, ले कन इस हठध मता से कोई समाधान नहीं होगा। समाधान केवल तभी होगा जब आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। – ''जो व्यवहार अपने प्रति पसन्द नहीं, वह व्यवहार दूसरों के प्रति भी न करें'' का पालन कया जाए।

और ऐसा भी क्यों है क मुसलमानों का एक वर्ग हिन्दुओं के प्रति वद्वेषभावना से बाबर, हुमायूँ, औरंगजेब जैसे कट्टरपन्थी मुगलों की केवल गन्दी वरासत को ही ढोने और उसके लये मर मटने के लये तैयार रहता है? यह वर्ग इन शासकों की उन बातों पर कभी ध्यान क्यों नहीं देता, जिनसे भारतीय समाज में सौहार्दभाव को बढ़ावा मले और शान्ति स्था पत हो सके? इसके ऐतिहा सक प्रमाण हैं क हिन्दुओं की धा मक/सांस्कृतिक भावनाओं के भड़क जाने के भय से बाबर ने न केवल अपने शासन में गोवध पर पाबन्दी लगा रखी थी, बल्कि अपने बेटे हुमायूँ को भी इसको जारी रखने का हुक्म दिया था। अकबर ने भी अपने शासन में गोवध पर पाबन्दी लगा रखी थी। यहाँ तक क औरंगजेब जैसे कट्टर और परधर्मद्वेषी शासक ने भी गोवध पर मृत्युदण्ड घो षत कर रखा था और इसी परम्परा को आ खरी मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने भी जारी रखा था।

जहाँ तक बात है अल्पसंख्यकों के मानवा धकारों की रक्षा की, तो यह रक्षा यदि बहुसंख्यकों की धा मक भावनाओं को आहत करके होती है तो सर्वथा अनु चत है। और फर केवल कुछेक व्यक्तियों के मानवा धकारों की ही बात क्यों हो? क्या बहुसंख्यकों के अ धकारों की रक्षा नहीं होनी चाहिये? ऐसा भी नहीं है क राज्य सरकार द्वारा पारित यह नियम केवल अल्पसंख्यकों पर लागू होगा, यह तो सभी पर लागू होगा- ऋ ष कपूर जैसे और भी लोग होंगे जो अल्पसंख्यकों की श्रेणी में नहीं आते हैं। उन पर भी लागू होगा। इस तरह की सर्वजन-समभाव की सु वधा गैर-मुस्लिमों को मुगल सल्तनत में कभी नहीं मली।

इन्हीं अ धकारों की भाषा बोलते-बोलते मुसलमानों का यह वर्ग एक और देश वभाजन हो जाने की धमकी देने लगा है। देश वभाजन होगा या नहीं, इसका जवाब तो समय ही देगा, ले कन मुसलमानों के भारत में अ धकार की चर्चा के वषय में मैं इस्लामी धर्मशास्त्र,

परम्परा, और इतिहास के सर्वश्रेष्ठ वद्वानों में से एक मौलाना वहीदुद्दीन खान के मन्तव्य के साथ इस लेख को समाप्त करता हूँ। सन् २००७ में बीबीसी ने आजादी के साठ वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक लेखमाला छापी थी, जिसमें मौलाना वहीदुद्दीन खान के मन्तव्य भी छपे थे। उसका एक अंश बीबीसी से ही उद्धृत करता हूँ-

इस्लामी मौलाना वहीदुद्दीन खान कहते हैं क मुसलमानों को भारत में जो कुछ मला है, वह हिन्दू समुदाय की मेहरबानी है और उन्हें इस देश में जो कुछ भी मला है, उसका उन्हें अ धकार ही नहीं था, इस लए उन्हें ज्यादा उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इस्लामी वद्वान् मौलाना वहीदुद्दीन खान कहते हैं, ''स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान मुसलमानों ने जो ब लदान दिए, उनके बदले उन्हें पा कस्तान के रूप में एक अलग देश मल गया और इस तरह उन्होंने अपनी कुर्बानियों को भुना लया। वभाजन की दलील ही यह थी क भारत हिन्दू का और पा कस्तान मुसलमान का, तो फर अब भारत में उनका अ धकार कैसा? इसके वपरीत हिन्दू समुदाय ने बड़ी बात की है क आजाद भारत में भी मुसलमानों को बराबरी का दर्जा दे दिया।''

उपसंहार– इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए केवल मूर्ख व्यक्ति ही ऐसा दुराग्रह करेगा क चूँ क पहले कुछ लोगों ने ऐसा कया था, इस लये आज भी ऐसा करना चाहिये। युग बदल गया है, कुछ आचार- वचार बदल गये हैं और कुछ आचार- वचार समाप्त-प्राय हैं। कुछ परम्पराएँ क्षीण हो गयी हैं, तो कुछ बलवती हो गयी हैं। आधुनिक भारतीय इतिहास को सप्रमाण जानने वाला हर वद्वान् यह मानता है क पछले कुछ सौ वर्षों में हुए हिन्दू-मुस्लिम द्वेष और दंगों के पीछे सबसे बड़ा कारण गोहत्या से जुड़ी घटनाओं का होना रहा है। १८५७ में हुए स्वतन्त्रता संग्राम के दिल्ली में वफल हो जाने का एक कारण गोहत्या के कारण हिन्दू-मुस्लिम लोगों का बँट जाना भी था, जिसका अंग्रेजों ने पूरा लाभ उठाया। ऐसे में सवाल यह नहीं है क पहले भारत में क्या होता था और क्या नहीं होता था। सवाल यह है क आज की अस लयत क्या है? आज हिन्दुओं के लये गौ एक धा र्मक पहचान है और उसकी रक्षा करना धा र्मक कर्तव्य । जब क गोमांस खाने वाले कसी भी व्यक्ति के लये न कसी त्यौहार पर और न कसी दूसरे अवसर पर गोमांस खाना धा र्मक या सांस्कृतिक कर्तव्य है। भारत के अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने गोहत्या पर पाबन्दी लगाई और गोवध करने वाले को तोप से उड़ा दिये जाने की घोषणा की तो दिल्ली के दो सौ प्रतिष्ठित मुसलमानों ने उनके पास जाकर गुहार लगाई क ईद के मौके पर उनको गोहत्या करने दी जाए। जफर आग-बबूला हो गये और बोले क मुसलमान का धर्म गाय की ब ल पर निर्भर नहीं है। जैसा पहले कहा गया है, यहाँ तक क धा र्मक रूप से क्रूर पहचान रखने वाले मुगल बादशाह भी कुछ हद तक हिन्दुओं की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए गोहत्या पर पाबन्दी लगा सकते हैं, तो क्या धर्म-निरपेक्ष भारत में सामाजिक समरसता और शान्ति बनाए रखने के लये गोवध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है? क्या गोवध पर प्रतिबन्ध के खलाफ लड़ाई केवल खाने की लड़ाई है या इसके पीछे सामाजिक समरसता को भंग करने वाले कुछ धूर्त हैं? क्या हम भारत में परस्पर वैमनस्य ही फैलाते रहेंगे?

– बी.बी.सी. हिन्दी,

भगवानों की सूची जारी करोः- प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

राजनेताओं की धा र्मकता व भक्ति भावना देख-देख कर आश्चर्य होता है। लोकसभा के चुनाव के दिनों काशी में गंगा स्नान और गंगा जी की आरती की प्रतियो गता देखी गई। केजरीवाल भी धर्मात्मा बनकर सा थयों सहित गंगा में डुब कयाँ लगाते हुए मोदी को गंगा की आरती में सम्मि लत होने के लए ललकार रहा था। अजमेर की कबर-यात्रा पर एक-एक करके कई नेता पहुँचे। चुनाव समाप्त होते ही दिग्विजय के गुरु स्वरूपानन्द जी ने साई बाबा भगवान् का ववाद छेड़ दिया। सन्तों का सम्मेलन होने लगा। स्वरूपानन्द जी संघ परिवार वरोधी माने जाते हैं। इन्हें हिन्दू हितों का ध्यान आ गया। हिन्दुओं को जोड़ने व हिन्दुओं की रक्षा के लए कभी कोई आन्दोलन छेड़ा?

क्या ब्राह्मणेतर कुल में जन्मे कसी व्यक्ति को अपना उत्तरा धकारी बनाने का साहस आप में है? क्या द लत वर्ग में जन्मे कसी भक्त से जल लेकर आचमन कर सकते हैं?

हिन्दुओं के कतने भगवान् हैं? यह उमा जी ने चर्चा छेड़ी है। संघ परिवार को और स्वरूपानन्द जी को हिन्दुओं के भगवानों की अपनी-अपनी सूची जारी करनी चाहिये। यह भी बताना होगा क भगवान् एक है या अनेक? भगवानों की संख्या निश्चित है या घटती-बढ़ती रहती है। अमरनाथ यात्रा वाले अब लंग की बजाय 'बर्फानी बाबा' का शोर मचाने लगे हैं। यात्री बम-बम भोले रटते हुए 'ऊपर वाले' की दुहाई देते हैं। क्या भगवान् सर्वत्र नहीं? ऊपर ही है? यह संघ व स्वरूपानन्द जी को स्पष्ट करना चाहिये। अमरनाथ यात्री टी.वी. में बता रहे थे क ऊपर वाले की कृपा से हमें कुछ नहीं होगा। यदि भगवान् ऊपर ही है तो 'ईशावास्य' यह ऋचा ही मथ्या हो गई। प्रभु कण-कण में है- यह मान्यता निरर्थक हो गई। हिन्दुओं को हिन्दू साधु, आचार्य, सन्त भ्र मत कर रहे हैं। धर्म रक्षा व धर्म प्रचार कैसे हो? एकता का कोई सूत्र तो हो।

मन्नतें पूरी होती हैंः– साई बाबा ववाद में उमा जी ने यह भी कहा है क अनेक भक्तों की मन्नतें साई बाबा ने पूरी कीं। मन्नतें पूरी करने वाले देश में सैकड़ों ठिकाने हैं। उमा जी जैसे भक्तों को राम मन्दिर निर्माण, कश्मीर के हिन्दुओं का पुनर्वास, धारा ३७०, निर्धनता निवारण, आतंकवाद से छुटकारे के लए मन्नत माँग कर देश में सुख चैन का युग लाना चाहिए।

मन्नतों का अन्ध वश्वास फैलाकर देश को डुबोया जा रहा है। केदारनाथ, बद्रीनाथ यात्रा की त्रासदी को कौन भूल सकता है? मन्नतें माँगने गये सैकड़ों भक्त जी वत घरों को नहीं लौटे। कई भगवान् बाढ़ में बह गये। इससे क्या सीखा? आँखें फर भी न खुलीं।

भावुकता से अन्धे होकरः– जामपुर (पश्चिमी पंजाब) में एक आर्य कन्या ने आर्यसमाज के सत्संग में एक क वता सुनाई। उसकी एक पंक्ति थी-

मेरी मट्टी से बूये वफ़ा आयेगी।

अर्थात् मरने के पश्चात् मेरी कबर से निष्ठा की गन्ध आयेगी। पं. चमूपति जी ने वहीं बोलते हुए कहा, क्या शक्षा दे रहे हो? क्या मेरी यह पुत्री मुसलमान के रूप में मरना चाहती है? चता की, दाहकर्म की बजाय कबर की बात जो कर रही है। बोलते और लखते समय अन्ध वश्वास

तथा भ्रामक वचार फैलाने से बचने के लए सद्ग्रन्थों के आधार पर ही कुछ लखना-बोलना चाहिए।

आर्यसमाज की हानिः– संघ का गुरु द क्षणा उत्सव था। संघ वाले स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास अपने कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का प्रस्ताव लेकर आये। लोकैषणा से कोसों दूर महाराज ने यह कहकर उनकी वनती ठुकरा दी क इसमें आर्यसमाज की हानि है।

उन्होंने पूछा, 'क्या हानि है?'

स्वामी जी ने कहा, 'मेरी अध्यक्षता में आप जड़ पूजा करेंगे। झण्डे को गुरु मानकर द क्षणा चढ़ायेंगे, इससे आर्यसमाज में क्या सन्देश जायेगा?'

आर्यसमाज अपनी मर्यादा, अपने इतिहास को भूलकर योगेश्वर नामधारी थोथेश्वरों को अपना पथ प्रदर्शक मानकर भटक रहा है। एक योग गुरु ने मर्जापुर में मजार पर चादर चढ़ाई। कोई गंगा की आरती उतार रहा है तो कोई म.प्र. जाकर मूर्ति पर जल चढ़ा रहा है।

ऋ ष ने लखा है, उसी की उपासना करनी योग्य है। यही वेदादेश है।

हनुमान जी बन्दर नहीं थे

MAY 17, 2015 3 COMMENTS

भारतीय इतिहास में अनेक वद्वान् तथा बलवान् हुए हैं। हनुमान उनमें से एक व्यक्ति थे। उनकी सेवक के रूप में बहुत अच्छी है। उनका जीवन आदर्श ब्रह्मचारी का भी रहा है परन्तु हमारे नादान पौरा णक भाइयों ने उन्हें बन्दर मानकर उनके साथ अन्याय कया हैः-
एक वे हैं जो दूसरों की छ व को देते हैं सुधार।
एक हम हैं लया अपनी ही सूरत को बिगाड़।।
वे बन्दर न थे, अ पतु पूर्णतः ऊपरोक्त गुणों से युक्त एक प्रेरक, आदर्श तथा कुलीन महापुरुष थे। कुछ प्रमाणों से हम इसे स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। मर्यादा
राम से उनकी प्रथम भेंट तब हुई थी, जब राम व लक्ष्मण भगवती सीता की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे। खोजते-खोजते वे दोनों ऋष्यमूक पर्वत पर- सुग्रीव की ओर गए तो सुग्रीव उन्हें दूर से देखकर भयभीत हो गया। उसने अपने मन्त्रियों से यह कहा क ये दोनों वाली के ही भेजे हुए हैं ऐसा प्रतीत होता है। हे वानर शरोमणी हनुमान! तुम जाकर पता लगाओ क ये कोई दुर्भावना लेकर तो नहीं आये हैं।
सुग्रीव की इस बात को सुनकर हनुमान जहाँ अत्यन्त बलशाली श्री राम तथा लक्ष्मण थे, उस स्थान के लए तत्काल चल दिये। वहाँ पहुँचने से पूर्व उन्होंने अपना रूप त्यागकर भक्षु (=सामान्य तपस्वी) का रूप धारण कया तथा श्री राम व लक्ष्मण के पास जाकर अपना परिचय दिया तथा उनका परिचय लया।
तत्पश्चात् श्री राम ने अनुज लक्ष्मण से कहा-
नानृग्वेद वनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेद वदुषः शक्यमेवं वभा षतुम्।।

वा. रा., किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक २८

जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान् नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचदपश दितम्।।

-वा. रा., किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग श्लोक २९

अर्थः- निश्चय ही इन्होंने व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया है। यही कारण है कि इनके इतने समय बोलने में इन्होंने कोई भी त्रुटि नहीं की है।

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित्।।

-वा. रामायण, किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक ३०

अर्थः- के समय इनके मुख, नेत्र, ललाट, भौंह तथा अन्य सब अंगों से भी कोई दोष प्रकट हुआ हो, ऐसा कहीं ज्ञात नहीं हुआ।

इससे स्पष्ट है कि हनुमान वेदों के विद्वान् तो थे ही, व्याकरण के उत्कृष्ट ज्ञाता भी थे तथा उनके शरीर के सभी अंग अपने-अपने करणीय कार्य उचित रूप में ही करते थे। शरीर के अंग जड़ पदार्थ हैं व मनुष्य का आत्मा ही अपने उच्च संस्कारों से उच्च कार्यों के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करता है। किसी बन्दर में यह योग्यता हो सकती है कि वह वेदों का विद्वान् बने? व्याकरण का विशेष ज्ञाता हो? अपने शरीर की उचित देखभाल भी करे?

रामायण का दूसरा प्रमाण इस विषय में प्रस्तुत करते हैं। यह प्रमाण तब का है, जब अंगद, व हनुमान आदि समुद्रतट पर बैठकर समुद्र पार जाकर सीता जी की खोज करने के लिए विचार कर रहे थे। तब ने हनुमान जी को उनकी उ कथा सुनाकर समुद्र लङ्घन के लिए उत्साहित किया। केवल एक ही श्लोक वहाँ से उद्धृत है-

सत्वं केसरिणः पुत्रःक्षेत्रजो भीमविक्रमः।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः।।

-वा. रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सप्तषष्टितम सर्ग, श्लोक २९

अर्थः- हे वीरवर! तुम केसरी के क्षेत्रज पुत्र हो। तुम्हारा पराक्रम शत्रुओं के लिए भयंकर है। तुम वायुदेव के औरस पुत्र हो, इसलिए तेज की दृष्टि से उन्हीं के समान हो। इससे सिद्ध है कि हनुमान जी के पिता केसरी थे परन्तु उनकी माता अंजनी ने पवन नामक पुरुष से नियोग द्वारा प्राप्त किया था। इस सत्य को स्वयं हनुमान जी ने भी स्वीकार किया, जब वे लंका में रावण के दरबार में प्रस्तुत किए गए थे-

अहं तु हनुमान्नाम मारुतस्यौरसः सुतः।
सीतायास्तु कृते तूर्णं शतयोजनमायतम्।।

– वा. रामायण, सुन्दरकाण्ड, त्रयस्त्रिंश सर्ग

अर्थः- मैं पवनदेव का औरस पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। मैं सौ योजन पार कर सीता जी की खोज में आया हूँ।

हनुमान को मनुष्य न मानकर उन्हें बन्दर मानने वालों से हमारा निवेदन है कि इन दो प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है कि हनुमान जी बन्दर न थे, अपितु वे एक नियोगज पुत्र थे। नियोग प्रथा मनुष्य समाज में अतीत में प्रचलित थी। यह प्रथा बन्दरों में प्रचलित होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। रामायण के इस प्रबल प्रमाण के होते हुए हनुमान जी को

मनुष्य मानना ही पड़ेगा।
रामायण में से ही हम तीसरा प्रमाण भी प्रस्तुत करते हुए सद्ध कते हैं क हनुमान मनुष्य ही थे, न क वे बन्दर थे। यह प्रमाण तब का है, जब हनुमान लंका में पहुँच तो गए थे कन्तु बहुत प्रयास करने पर भी सीता जी का पता न कर पाए तो वे सोचने लगे थे क बिना सीता जी का अता-पता पाए मैं यदि लौटूँगा तो राम जी तथा स्वामी सुग्रीव जी को
सूचना दूँगा? वहाँ हा हाकार मचेगा। वाल्मी क ऋ ष के शब्द्दों मेंः-
सोऽहं नैव ग मष्या म कष्कि न्धां नगरी मतः।
वानप्रस्थो भ वष्या म ह्यदृष्ट्वा जनकात्मजाम्।।
वा. रा., सुन्दरकाण्ड, सप्तम सर्ग
अर्थः- मैं यहाँ से लौटकर कष्किन्धा नहीं जाऊँगा। यदि मुझे सीता जी के दर्शन नहीं हुए तो मैं वानप्रस्थ धारण कर लूँगा। हनुमान जी को मनुष्य न मानकर बन्दर घो षत करने वाले अपने पौरा णक भाई-बहनों से निवेदन है क वे अपना हठ त्याग कर यह तथ्य तुरन्त स्वीकार कर लें क हनुमान सच्चे वैदिक धर्मी मनुष्य थे, न क वे बन्दर थे क्यों क वानप्रस्थी बनने की बात सोचना तो दूर क ी बात है, वानप्रस्थ होता है, बन्दरों को यह भी ज्ञात नहीं होता। हनुमान को बन्दर मानने वाले लोग तुलसीदास गोस्वामी द्वारा र चत ''हनुमान चालीसा'' का पाठ करते हैं परन्तु उसमें भी एक प्रमाण ऐसा है जो हमारी बात का समर्थन करता हैः-
हाथ वज्र औ ध्वजा वराजे।
कान्धे मूँज जनेऊ साजे।।
काश! ऐसे लोग इस चालीसा में यह पाँचवा पद बोलते-पढ़ते समय इतना समझ पाते क इसके अनुसार हनुमान जी अपने कन्धे पर जनेऊ धारण कए फरते थे तथा बन्दर नहीं, अ पतु जनेऊ (= यज्ञोपवीत) तो मनुष्य ही धारण करते हैं।
हनुमान दूरस्थ कसी पर्वत पर जाकर मूर्च्छित लक्ष्मण के उपचार के लए संजीवनी बूटी लाए थे। यह कार्य भी कोई बन्दर नहीं कर सकता अ पतु कोई मनुष्य ही कर सकता था जिसे जड़ी-बूटियों का पर्याप्त ज्ञान हो।
हनुमान से हटकर अब थोड़े वचार उनके समकालीन रामायण के कुछ अन्य पात्रों के वषय में भी प्रस्तुत हैं। इनमें एक प्रसंग वाली की पत्नी तारा से है। जब सुग्रीव दूसरी बार वाली को युद्ध के लए ललकारने गया तो वाली की पत्नी तारा ने अपने पति को राम जी से मैत्री कर लेने की प्रार्थना की परन्तु वाली ने ऐसा न करके सुग्रीव का सामना करने, सुग्रीव का घमण्ड चूर-चूर करने, परन्तु सुग्रीव के प्राण हरण न करने का वचन देकर तारा को वा पस राजप्रसाद में चले जाने को कहा तो-
ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मन्त्र वद् वजयै षणी।
अन्तःपुरं सह स्त्री भः प्र वष्टा शोकमोहिता।।
-वा.रा. कष्किन्धा काण्ड, षोडश सर्ग श्लोक १२
अर्थः- वह पति की वजय चाहती थी तथा उसे मन्त्र का भी ज्ञान था। इस लए उसने वाली की मंङ्गल-कामना से स्वस्तिवाचन कया तथा शोक से मोहित होकर वह अन्य स्त्रियों के साथ अन्तःपुर को चली गई।
मन्त्र का ज्ञान बन्दरों को अथवा बन्दरियों को नहीं होता, न ही हो सकता है। अतः सद्ध है क हनुमान का जिन से मलना-जुलनादि था, उनकी पत्नियाँ भी मनुष्य ही थीं। यही तारा जब अपने पति वाली को प्राण त्यागते देख रही थी तो अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी

बोली-

यद्य प्रयं कं चदसम्प्रधार्य कृतं मया स्यात् तव दीर्घबाहो।
क्षमस्व मे तद्धरिवंशनाथ व्रजा म मूर्धा तव वीरपादौ।।

– वा. रा. कष्किन्धाकाण्ड, एक वंश सर्ग, श्लोक २५

अर्थः- ''महाबाहो! यदि नासमझी के कारण मैंने आपका कोई अपराध कया हो तो आप उसे क्षमा कर दें। वानरवंश के स्वामी वीर आर्यपुत्र! मैं आपके चरणों में मस्तक रखकर यह प्रार्थना करती हूँ।'' इस श्लोक से सद्ध है क वाली आर्यों के एक वंश वानर में जन्मा मनुष्य ही था। इसी प्रकार तारा को भी मह र्ष वाल्मी क ने आर्य पुत्री ही घो षत कयाः-

तस्येन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महानुभावस्य समीपमार्या।
आर्तातितूर्णा व्यसनं प्रपन्ना जगाम तारा परि वह्वलन्ती।।

– वा. रा. कष्किंधा काण्ड, चतु वंश सर्ग श्लोक २९

अर्थः- ''उस समय घोर संकट में पड़ी हुई शोक पी ड़त आर्या तारा अत्यन्त वह्वल हो गरती-पड़ती तीव्र गति से महेन्द्र तुल्य दुर्जय वीर महानुभाव श्री राम के समीप गई।''

वाली की मृत्यु के पश्चात् अङ्गद व सुग्रीव ने वाली के शव का अन्त्येष्टि-संस्कार शास्त्रीय व ध से कयाः-

ततोऽग्ं्नि व धवद् द वा सोऽपसव्यं चकार ह।
पतरं दीर्घमध्वानं प्रस्थितं व्याकुलेन्द्रियः।।
संस्कृत्य वा लनं तं तु व धवत् प्लवगर्षभाः।
आजग्मुरुदकं कर्तुं नदीं शुभजलां शवाम्।।

– वा. रा. कष्किंधा काण्ड, षड् वंश सर्ग, श्लोक ५०-५१

अर्थः- '' फर शास्त्रीय व ध के अनुसार उसमें आग लगाकर उन्होंने उसकी प्रद क्षणा की। इसके बाद यह सोचकर क मेरे पता लम्बी यात्रा के लए प्रस्थित हुए हैं, अङ्गद की सारी इन्द्रियाँ शोक से व्याकुल हो उठीं। इस प्रकार व धवत् वाली का दाह संस्कार करके सभी वानर जलाञ्ज ल देने के लए प वत्र जल से भरी हुई कल्याणमयी तुङ्गभद्रा नदी के तट पर आए।''

इस प्रमाण से सद्ध होता है क वाली, सुग्रीव, अङ्गद आदि वेद वहित शास्त्रीय कार्य करते थे। यह भी उनके मनुष्य होने का प्रमाण है।

उपर्युक्त तथ्यों के बाद हम अब सामान्य वश्लेषण करते हुए पौरा णकों से पूछते हैं क वाली की पत्नी तारा, सुग्रीव की पत्नी रुमा हनुमान की माँ अंजनि मनुष्य योनि की स्त्रियाँ थीं तो उनके माताओं- पताओं ने उन्हें बन्दरों अर्थात् वाली, सुग्रीव तथा केसरी के सङ्ग

दिया था? बन्दरों व स्त्रियों से बन्दरों का जन्म होना अव्यवहारिक व अवैज्ञानिक है। अतः यह सर्वथा अमान्य है क उक्त पुरुष बन्दर थे। यह भी निवेदन है क बन्दरों, उनकी पत्नियों, उनके पताओं तथा उनकी माताओं के नाम नहीं होते, उनके जीवन का कोई इतिहास नहीं होता, खाने-पीने व सोने-जागने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य वे करते नहीं। फर ऊपरोक्त पात्रों के नामकरण हुए? उनके कार्य-व्यवहार मनुष्यों जैसे-कैसे हुए?

वास्त वकता यह है क वानर एक जाति है। इसे आंग्ल भाषा में सरनेम भी कहते हैं। हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा व हमीरपुर जिलों में नाग जाति के कुछ मनुष्य आपको मल सकते हैं। नाग का अर्थ सर्प है परन्तु वे इस को अपने नाम के साथ सहर्ष लखते हैं। पछले वर्ष के न्द्र सरकार में कार्यरत एक उच्चा धकारी जब सेवानिवृ ा

हुए था तो कसी वशेष कारण वश उसका नाम भी दैनिक पत्रों में छपा था। तब पता चला क वह भी ऊपरोक्त नाग जाति का ही सदस्य था। सन् १९६९ में भारत के राष्ट्रपति पद पर वी.वी. गरि नामक एक द क्षण भारतीय व्यक्ति आसीन हुआ था। गरि का अर्थ पर्वत है परन्तु वह पर्वत न होकर मनुष्य ही था। गरि उसका सरनेम था या उसकी जाति थी। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उ ारप्रदेश तथा कुछ अन्य प्रदेशों में बहुत-से लोग (अ धकतर जन्मना क्षत्रिय) अपने नाम के साथ संह का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ शेर है। हरियाणा में बहुत-से लोग मोर जाति से सम्बद्ध हैं और उनके नाम के पीछे मोर लखा होता है। पंजाब के एक राज्यपाल जयसुख लाल हाथी हुए हैं। हरियाणा में संह मार नामक जाति के कई व्यक्ति आपको मल सकते हैं।
इस वर्णन के आधार पर हमारा निवेदन है क जिस प्रकार नाग, गरि, मोर, संह, हाथी व संह मार नामक जातियाँ मनुष्यों की ही हैं, न क सर्पों, पर्वतों, शेरों, हा थयों व शेरों के हत्यारों आदि की हैं, हालां क इनके शा िदक अर्थ ऊपरोक्त ही है। इसी प्रकार रामायण के हनुमान, सुग्रीव, बाली, तारा, रुमा, जाम्बवान व अङ्गद आदि वानर नामक मनुष्य जाति के सदस्य थे, न क ये बन्दर थे। यह उनके कार्यों व इतिहास से प्रमा णत कया गया है।
– चूना भट्ठियाँ, सटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर (हरियाणा)

नरक, स्वर्ग व मोक्ष क्या हैं ? – आचार्य सोमदेव

MAY 1, 2015 5 COMMENTS

जिज्ञासा– मैं आपसे अपनी ही नहीं अ पतु आम व्यक्तियों की जिज्ञासा हेतु कुछ जानना चाहता हूँ। कृपया समाधान कर कृतार्थ करें-

(क) तमाम कथावाचक, उपदेशक, साधु व सन्त नरक, स्वर्ग व मोक्ष की बातें करते हैं। आप इन को वस्तृत रूप से समझायें और अपने वचार दें।

समाधन– (क) वेद वरुद्ध मत-सम्प्रदायों ने अनेक मथ्या कल्पना कर, उन कल्पनाओं को जन सामान्य में फैलाकर पूरे समाज को अ वद्या अन्धकार में फँसा रखा है, जिससे जगत् में दुःख की ही वृद् ध हो रही है। ये मत-सम्प्रदाय ऊपर से अध्यात्म का आवरण अपने ऊपर डाले हुए मलते हैं। यथार्थ में देखा जाये तो जो वेद के प्रतिकूल होगा वह अध्यात्म हो ही नहीं सकता। कहने को भले ही कहता रहे। मह र्ष दयानन्द के काल में व उनसे पूर्व और आज वर्तमान में इन मत-सम्प्रदायों की संख्या देखी जाये तो हजारों से कम न होगी। उन हजारों में शैव, शाक्त, वैष्णव, वाममार्ग, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम आदि प्रमुख हैं। मह र्ष दयानन्द के समय से कुछ पूर्व स्वामी नारायण सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, गुसाईं मत आदि और मह र्ष के बाद राधास्वामी मत, ब्रह्माकुमारी मत, हंसा मत, सत्य सांई बाबा पंथ (द क्षण वाले), आनन्द मार्ग, महेश योगी, माता अमृतानन्दमयी, डेरा सच्चा सौदा, आर्ट ऑफ ल वंग, निरंकारी, वहंगम योग, शव बाबा आदि कतनों के नाम लखें। ये सब अवैदिक मान्यता वाले हैं। इन्होंने अपने-अपने मत की पुस्तकें भी बना रखी हैं। इन पुस्तकों में इन मत वालों ने अपनी मनघड़न्त कल्पनाओं के आधार पर ही अ धक लख रखा है। स्वर्ग, नरक, मोक्ष, आकाश में देवताओं का निवास स्थान, यमराज, यमदूत आदि की व्याख्याएँ अ वद्यापरक ही हैं।

आपने स्वर्ग, नरक, मोक्ष के वषय में जो आज के तथाक थत उपदेशक, कथावाचक, साधु-सन्त कहते-बतलाते हैं, उसके सम्बन्ध में जानना चाहा है। यहाँ हम मह र्ष की मान्यता को लखते हैं व इन तथाक थत कथावाचकों की इन वषयों में क्या दृष्टि है उसको भी लखते हैं। ''स्वर्ग- जो वशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है वह स्वर्ग कहाता है। नरक- जो वशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है उसको नरक कहते हैं।'' आर्योद्दे. १४-१५ स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मह र्ष इनके वषय में लखते हैं- ''स्वर्ग-नाम सुख वशेष भोग और उनकी सामग्री प्राप्ति का है। नरक- जो दुःख वशेष भोग और उनकी सामग्री प्राप्ति को प्राप्त होना है।'' सत्यार्थप्रकाश ९वें सम्मुल्लास में मह र्ष लखते हैं- ''.......सुख वशेष स्वर्ग और वषय तृष्णा में फँसकर दुःख वशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है, स्व सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः, अतो वपरीतो दुःखभोगो यस्मिन् स नरक इति। जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति में आनन्द है, वही वशेष स्वर्ग कहाता है।''

मह र्ष की इन परिभाषाओं के आधार पर (परमेश्वर की प्राप्ति रूप वशेष स्वर्ग को छोड़) स्वर्ग-नरक कसी लोक वशेष या स्थान वशेष पर न होकर, जहाँ भी मनुष्य आदि प्राणी हैं, वहाँ हो सकते हैं। जो इस संसार में सब प्रकार से सम्पन्न है अर्थात् शारीरिक स्वस्थता, मन की प्रसन्नता, बन्धु जन आदि का अनुकूल मलना, अनुकूल साधनों का मलना, धन सम्प ि पर्याप्त मलना आदि है, जिसके पास ये सब हैं वह स्वर्ग में ही है। इसके वपरीत होना नरक है, नरक में रहना है। वह नरक भी इसी संसार में देखने को मलता है।

नरक के वषय में कसी नीतिकार ने लखा है

अत्यन्तकोपः कटुका च वाणी, दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम्।

नीचप्रसङ्गः कुलहीनसेवा चह्नानि देहे नरकस्थितानाम्।।

अत्यन्त क्रोध, कटुवचन, दारिद्र्य, अपने स्वजनों से वैर-भाव, नीच-दुर्जनों का संग और कुलहीन की सेवा, ये चह्न नरकवा सयों की देह में होते हैं। ये सब चह्न इसी संसार में देखने को मलते हैं। इस आधार पर स्वर्ग अथवा नरक के लए कोई लोक पृथक् से हो ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा। यह काल्पनिक ही सद्ध हो रहा है।

जिस स्वर्ग लोक की कल्पना इन लोगों ने कर रखी है, वह तो इस पृ थवी पर रहने वाले एक साधन सम्पन्न व्यक्ति से अ धक कुछ नहीं है।

मोक्ष निराकार परमेश्वर को प्राप्त कर, उसके आनन्द में रहने का नाम है अर्थात् जब जीव अपने अ वद्यादि दोषों को सर्वथा नष्ट कर, शुद्ध ज्ञानी हो जाता है तब वह सब दुःखों से छूट कर परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है, इसी को मोक्ष कहते हैं। वहाँ आत्मा अपने शरीर रहित अपने शुद्ध स्वरूप में रहता है। कथावाचकों के मोक्ष की कल्पना और उसके साधनों की कल्पना सब मथ्या है। कन्हीं का मोक्ष गोकुल में, कसी का वष्णु लोक क्षीरसागर में, कसी का श्रीपुर में, कसी का कैलाश पर्वत में, कसी का मोक्ष शला शवपुर में, तो कसी का चौथे अथवा सातवें आसमान आदि पर। इस प्रकार के मोक्ष के उपाय भी मथ्या एवं काल्पनिक हैं। जैसे-

गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैर प।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो वष्णुलोकं स गच्छति।।

– ब्रह्मपुराण. १७५.९२/पप.पु.उ. २३.२

अर्थात् जो सैकड़ों सहस्रों कोश दूर से भी गंगा-गंगा कहे, तो उसके पाप नष्ट होकर वह वष्णु-लोक अर्थात् वैकण्ठ को जाता है।

हरिर्हरति पापानि हरिरित्यक्षरद्वयम्।।

अर्थात् हरि इन दो अक्षरों का नामोच्चारण सब पापों को हर लेता है, वैसे ही राम, कृष्ण, शव, भगवती आदि नामों का महात्म्य है।

इसी तरह

प्रातः काले शवं दृष्ट्वा नि श पापं वनश्यति।

आजन्म कृतं मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्।।

अर्थात् जो मनुष्य प्रातः काल में शव अर्थात् लंग वा उसकी मूर्ति का दर्शन करे तो रात्रि में कया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्मभर का, सायङ्काल में दर्शन करने से सात जन्मों का पाप छूट जाता है।

इस प्रकार के उपाय पाप छूटाने मोक्ष दिलाने के मथ्या ग्रन्थों में लखे हैं और इन्हीं प्रकार के उपाय आज का तथाक थत कथावाचक बता रहा है। पाठक स्वयं देखें, समझें क ये उपाय पाप छुड़ाने वाले हैं या अ धक-अ धक पाप कराने वाले। भोली जनता इन साधनों से ही अपना कल्याण समझती है, जिससे लोक में अ वद्या अन्धकार, अन्ध वश्वास, पाखण्ड और अ धक फैल रहा है।

वेद व ऋ षयों द्वारा मुक्ति व उसके उपाय ऐसे नहीं हैं। वहाँ तो सब बुरे कामों और जन्म-मरण आदि दुःख सागर से छूटकर सुखस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होकर सुख ही में रहना मुक्ति कहाती है। और ऐसी मुक्ति के उपाय मह र्ष दयानन्द लखते हैं ''.....ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, वश्वास, तीर्थ सेवन (वद्याभ्यास, सु वचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्मों का सेवन), सत्पुरुषों का संग और परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना, ये सब मुक्ति के साधन कहाते हैं।'' इन मुक्ति के साधनों को देख पाठक स्वयं वचार करें क यथार्थ में मुक्ति के साधन, उपाय ये मह र्ष द्वारा कहे गये हैं वा उपरोक्त मथ्या ग्रन्थों व तथाक थत कथावाचकों द्वारा कहे गये हैं वे हैं। निश्चित रूप से ऋ ष प्रतिपादित ही मुक्ति के उपाय हो सकते हैं, दूसरे नहीं।

 मथ्या पुराणों जैसी ही मुक्ति ईसाइयों व मुसलमानों की भी है। ईसाइयों के यहाँ खुदा का बेटा जिसे चाहे बन्धन में डलवा दे। ईसाई जगत् में तो जी वतों को मुक्ति के पासपोर्ट मल

जाते हैं। समय से पूर्व अपना स्थान सुर क्षत कराया जाता है। जितना कुछ चाहिए उससे पूर्व उतना धन चर्च के पोप को पूर्व में जमा कराया जाता है।

मुसलमानों के यहाँ भी 'नजात' होती है और वहाँ पहुँच कर सब सांसारिक ऐश परस्ती के साधन वद्यमान हैं, मोहम्मद की सफारिश के बिना उसकी प्राप्ति नहीं है अर्थात् उन पर ईमान लाये बिना। कबाब, शराब, हूरें, गतमा आदि सभी ऐय्याशी के साधन मलते हैं। क्या यह भी कभी मुक्ति कहला सकती है? अर्थात् ऐय्याशी करना कभी मुक्ति हो सकती है? इस मुक्ति पर मुसलमानों का वश्वास भी है। वे कहते हैं-

अल्लाह के पतले में वहदत के सवाय क्या है।

जो कुछ हमें लेना है ले लेंगे मोहम्मद से।।

इतना सब लखने का तात्पर्य यही है क जो वेद व ऋ ष प्रतिपादित नरक, स्वर्ग व मोक्ष की परिभाषाएँ हैं, वही मान्य हैं इससे इतर नहीं। स्वर्ग व मोक्ष के उपाय भी वेद व ऋ षयों द्वारा कहे गये ही उ चत हैं। इन मथ्या पुराणों व इनके कथावाचकों द्वारा कहे गये नहीं।

हिंदूइस्म धर्म या कलंक का प्रत्युतर

APRIL 19, 2015 2 COMMENTS

हिन्दू धर्म पर कटाक्ष करती ओर अंट शंट झूटे आरोपों से युक्त एक अम्बेडकरवादी ऐ आर बाली ने हिन्दू धर्म पर पुराणों के अलावा वेदों के सन्धर्भ से आरोप लगाया क वेदों में पता पुत्री ,माता पुत्र , भाई बहन आदि के बीच योन सम्बन्धो की छुट थी |वेसे आपको बता दे हम पुराणों को प्रमाण नही मानते क्यूं क पुराण काफी बाद के है ओर उनमे सत्य इतिहास भी होना सम्भव नही ले कन फर भी आपके कुछ तथ्य पुराणों से जांचते है ..
एक बात ओर ध्यान र खये यदि कसी एतिहा सक घटना में कोई बुद् ध वरोध या अश्लील प्रसंग आता है तो उसका ये मतलब नही क वो उसके धर्म का या संस्कृति का अंग है ..जेसे जापान में पता पुत्री .माँ बेटे के बीच सम्बन्ध बनाने को कानूनी मान्यता मली है जिसे गूगल पर लीगल इन्सेक्ट लख कर देख सकते है तो क्या हम ये माने क बोद्ध धम्म इन सबकी आज्ञा देता है |अब आपके आरोप को देखते है –

आपका कहना है क पता पुत्री के सम्बन्ध वैदिक काल में उ चत थे महाशय जी जरा वेदों के बारे में भी दे खये वेद इस बारे में क्या कहते है -स लक्ष्मा यद वषुरूपा भवाति -अर्थव ८।१।२ अर्थात सगे सम्बन्धियों की कन्या से सम्बन्ध रखना बड़ा ही वषम है |आप तो वैदिक काल में कुछ ओर बता रहे थे जब क वेदों में तो मौसी की लडकी , मामी की लडकी बुआ की लडकी आदि सगे सम्बन्धियों की कन्या से सम्बन्ध का निषेध है |ओर दे खये –" पापामाहुर यः स्वसार निग्च्छात " अर्थव १८।१।१४ अर्थत वो पापी है जो बहन से सम्बन्ध या ववाह करता है |देखा आपने वेदों में ऐसे सम्बन्धो का निषेध है |ले कन क्या आप जानते है क आपके ही भगवान बुद्ध ने अपने बुआ की लडकी यशोधरा से ववाह कया था अर्थात बुद्धो में इन सबकी छुट है आर्यों में नही |

आप मनुस्मृति का निम्न श्लोक भी दे खये –
" अस पंडा च या मातुरसगोत्र च या पतु:|
सा प्रशस्ता द्‌ वजातीना दारकर्मा ण मैथुन ||मनु ३:५ ||" अर्थत जो स्त्री माता की छः पीढ़ी ओर पता के गोत्र की न हो ववाह करने के लए उत्तम है |
देखो आर्यों में तो सगोत्र ववाह या सम्बन्ध तक का निषेध है फर आप ये कहा से ले आये |
अब आपके दिए उदाहरण देखते है – आपने लखा व शष्ठ का ववाह शतरूपा से हुआ | वाह क्या कहना आपका ये सब जानते है क स्वयभू मनु की पत्नि का नाम शतरूपा था | दे खये ब्रह्माण पुराण २/१/५७ में शतरूपा को मनु की पत्नि बताया है ओर धरती के पहले स्त्री पुरुष | फर आपने लखा इला का ववाह मनु से ,,,ये भी आपकी मुर्खता कहे या कुंठा समझ नही आता ले कन ये भी पौरा णक बन्धु जानता है क मनु की पुत्री इला थी ओर उसका ववाह चन्द्रमा (सोम) के पुत्र बुद्ध से हुआ जिनका एक पुत्र पुरुरवा था जिससे पुरु वंश चला | आपने ये भी लखा है क दोहित्र ने अपनी पुत्री का ववाह पता चन्द्र से कया ले कन उपर दे खये चन्द्र की पत्नि तारा थी जो ब्रहस्पति की पुत्री बताई है | उसी से बुध उत्पन्न हुआ था | मत्स्य पुराण में ऋ ष अत्रि ओर अनसूया का पुत्र चन्द्र या सोम बताया है | आपने सूर्य की पुत्री उषा बताई ले कन पुराणों में सूर्य के पुत्री में यमुना का उलेख है जो क यम की बहन है | आपने अपने दिमाग के आधार पर सारा इतिहास गढ़ लया | वेसे आप लोगो के वरोधाभास का क्या कहना एक तरफ तो हिन्दू ग्रंथो को काल्पनिक तो दूसरी तरफ अपना उल्लू सीधा करने के लए उन्ही का साहरा लेते हो | एक बात पर रु कए काल्पनिक है तो सब काल्पनिक ही मानिए |

आपने एक प्रथा यज्ञ में अपने मन से गढ़ ली जिसका उलेख न वेदों में है ,न श्रोतसूत्रों में ओर न ही ब्राह्मण ग्रंथो में है वामदेव वर्कत | इसी पुष्टि में आपने सत्यवती ओर पाराशर का उदाहरण भी दिया | ले कन आपकी कुंठा का क्या कहना महाभारत में जो स्थल नौका का था क्यूं क सत्यवती एक मछुआरिन थी ,उसे आपने यज्ञ स्थल अपनी गोबरबुद्‌ ध से कर दिया | वो महाभारत का प्रसंग है ओर महाभारत में उतरोतर श्लोक बढ़ते गये है जिनमे हो सकता है ये पूरा प्रसंग प्रक्षेप हो फर भी जेसा आपने यज्ञ स्थल की बात की है तो बताइए सत्यवती के पता ने कौनसा यज्ञ का अनुष्ठान कया | ओर यदि महाभारत ,रामायण में पाराशर ओर सत्यवती आदि के जेसे कोई अनु चत सम्बन्ध मलते है तो इसका ये अर्थ नही क वो उस संस्कृति या धर्म का सद्धांत हो गया जेसा मेने उपर ही बता दिया है वो एक घटना मात्र है | आपने योनि शब्द की भी कल्पना कर ली ओर अयोनि की भी पता नही कहा से आपने संस्कृत ,हिंदी का ज्ञान लया ये तो आप ही जाने ले कन योनि या योनिज उन्हें बोलते है जो मैथुन आदि से उत्पन्न हो जेसे स्तनधारी प्राणी ,सर्प आदि ओर अयोनिज उसे बोलते है जो अमेथुनी अर्थात बिना मैथुन से उत्पन्न होए जेसे क्लोन , पसीने से उत्पन्न कीट , वर्षा ऋतु में उत्पन्न मच्छर , मछ लय आदि | इसके लए वैशे षक दर्शन भी देख सकते है | अपने पक्ष की पुष्टि के लए आपने द्रोपती ओर सीता का उदाहरण दिया | आपने बताया क द्रोपती की उत्त्पति घर के बाहर हुई जब क महाभारत में ही लखा है क एक यज्ञ के अनुष्ठान द्वारा द्रोपती की उत्त्पति राजा द्रुपद के समक्ष हुई | आपने बाहर का काल्पनिक प्रसंग कहा से गढ़ लया | आपने सीता का उदाहरण दिया | वेसे आपको बता देंवे महाभारत की तरह रामायण में भी प्रक्षेप है इसका उदाहरण है – चतु वशतिसहस्त्रानि श्लोकानाक्त्वान ऋ ष:| तत: सर्गशतान पंच षटकाण्डानि तथोत्तरम ||बालकाण्ड ४/२ अर्थात रामायण का निर्माण

२४००० श्लोको पांच सौ सर्ग ओर छह कांडो में कहा गया |जब क आज प्राप्त रामायण में २५००० श्लोक ओर ७ काण्ड है इससे पता चलता है रामायण में प्रक्षेप है |
सीता जनक की ही पुत्री थी इसका प्रमाण रामायण के निम्न स्न्धर्भो से ज्ञात होता है -
रामायण में अनेक जगह सीता को जनक की आत्मजा कहा है |अमरकोश २/६/२७ में आत्मज का अर्थ है जो शरीर से पैदा हो |इस तरह जनक की आत्मजा मतलब जनक से उत्पन्न उनकी पुत्री |रामयाण बालकाण्ड ६६/१५ में आया है वर्धमान ममातमजात ये वाक्य सीता का परिचय देते हुए जनक कहते है क ये मेरी आत्मजा है |रघुवंश १३/७८ में सीता को जनक की आत्मजा बताया है जनकात्मजा (रघुवंश १३/७८) |
रामयाण में सीता की भू म से उत्पति वाली काल्पनिक कथा है जिसके बारे में पौरा णक आचार्य करपात्री जी अपनी रामायण मीमासा पेज न ८९ पर लखते है –" पुराणकार कसी व्यक्ति का नाम समझाने के लए कथा गढ़ लेते है |जनक की पुत्री सीता का नाम स्पष्ट करने के लए उसका सम्बन्ध वैदिक सीता (हलकृष्ट भू म) से सम्बन्ध जोड़कर उसका जन्म भू म से बता दिया |" इन सब उपरोक्त प्रमाणों से आपके दिए काल्पनिक उदाहरणों का खंडन हो जाता है |अब आगे देखते है ये महाशय क्या लखते है –

आप पता नही कौनसा शब्दकोष पढ़ते है जिसमे आपको कन्या का ये अर्थ मला |कन्या को निरुक्त में दुहिता कहा है जिसका अर्थ स्पष्ट करते हुए यास्क लखते है –" दुहिता दुर्हिता दुरे हिता भवतीत " अर्थात जिसका दूर (गोत्र या देश) में ववाह होना हितकारी हो |जब आर्यों के मतानुसार उनकी कन्या का ववाह दूर होना हितकारी है फर कसी भी पुरुष से सम्बन्ध कर ले वो कन्या ये कल्पना क्या आपको बुद्ध ने बताई थी |आपने मत्स्यगंधा का उदाहरण दिया असल में मत्स्यगन्ध सत्यवती का ही दूसरा नाम था जेसा मेने उपर बताया क वो एक मछुआरिन थी ओर उसमे मच्छ लयो जेसी गंध आना स्वभा वक है इस लए उसका नाम मत्स्यगंधा हुआ अर्थात मछ लयों जेसी गंध वाली |आपने कुंती के ववाह से पूर्व कई पुत्र बता दिए ये आपने कहा से पढ़ा महाभारत में भी ऐसा नही है |उसमे कर्ण का वर्णन है ओर यदि ये ववाह पूर्व देवता से सन्तान होना सही माना जाता तो कुंती को उसे नदी में फेकने ओर सबसे छुपाने की आवश्यकता ही न होती आपकी गोबर बु ध का ध्यान इस ओर क्यूँ नही गया क्यूं क ता र्कक नही कुंठित मान सकता से ग्र सत थे |उस घटना से तो यही सद्ध होता हहै क ववाह पूर्व सन्तान उस समय अनु चत ही मानी जाती थी ओर ववाह पूर्व सम्बन्ध भी |वेदों में व्य भचार की निंदा या ववाह पूर्व सम्बन्ध बनाने की निंदा की हुई है ऋग्वेद २/२९/१ में आये रहसूरिव की व्याख्या करते हुए सायण लखते है –जो स्त्री अन्यो के द्वारा कये हुए गर्भ के कारण एकांत में सन्तान उत्पन्न करती है ,वह व्य भचारिणी ओर पापी मानी गयी है | ऐसे सम्बन्धो को आज का समाज लव एंड ओपन रिलेशन नाम देता है ले कन वेद ऐसे सम्बन्ध को व्य भचार ओर पाप ही कहता है |अब आपके आगे के आरोप देखते है –

आपने अश्वमेध का उदाहरण देकर अश्व ओर स्त्री के बीच सम्बन्ध को लखा ऐसा कसी वेद संहिता में वधान नही है |ये महीधर के भाष्य में है ओर महीधर ने मन्त्रो का वनियोग कल्प सूत्रों से कया अर्थात ऐसा वधान कल्पसूतरो में है महीधर कात्यायन श्रोत सूत्र अ. २० कं डका ६ ओर सूत्र १६ से अश्वमेध में लंग ग्रहण करने की प्रथा का उलेख करते हुए लखते है –" अश्व शश्रमुपस्ये कुरुते वृषावाजिति " अर्थात वृषाबाजी इत्यादी मन्त्र पढ़ते हुए रानी

स्वयम घोड़े का लंग अपनी उपस्थ इन्द्रिय में धारण करे |ये वधान कल्पसूत्र से है जिसमे वाममा र्गयो द्वरा काफी गडबड की हुई है |इनको वेदों के समान प्रमा णक नही बल्कि अप्रमा णक काफी समय से माना जाता रहा है |क्यूं क ये सभी क्रया कलाप उस समय भी शष्टजनों में घ्र णत ही समझे जाते थे |जेसा की जै मनी ने मीमासा दर्शन में स्पष्ट कहा है क कल्पसूत्रों में वेदों के वरुद्ध कई बातें है अत: उपरोक्त बात भी वेद वरुद्ध ही थी ओर मनु के अनुसार धर्म का मूल वेद ही था |दे खये मीमासा का सन्धर्भ – पूर्व पक्ष से कोई जै मनी से प्रश्न करता है – " प्रयोगशास्त्र मति चेत "(मीमासा १/३/११) अर्थात वेद वहित धर्मो का यथा व ध अनुष्ठान बताने वाले कल्पसूत्र भी वेद के समान स्वत: प्रमाण है यदि ऐसा कहो तो –

उत्तर में जै मनी कहते है – " नाऽसन्नीयमात "(१/३/१२) अर्थात यह बात ठीक नही |कल्पसूत्र वेद के समान प्रमा णक नही हो सकते ,क्यूं क उसमे आवेदिक वधानों का भी निरूपण पाया जाता है |इसी कथन के पता चलता है क कल्प सूत्रों के आवेदिक वधान उस समय ऋ ष गणों में स्वीकार नही थे |

अब आपके अगले आरोप की समीक्षा करते है –

आपकी गोबरबु ध ओर कुंठित मानस कता ने आपके दिमाग का कूड़ा कर दिया जो ऋ ष दयानद जी के भाष्य को भी आपने नही छोड़ा यदि कोई आपसे कहे की मधुर रसीले आमो का भोग करो ,,मखमली गद्दों का भोग करो तो आप तो आमो से योन सम्बन्ध बनाने ओर गद्दों से मैथुन क्रया करना शुरू कर देंगे क्यू क आपके अनुसार भोग का अर्थ सम्भोग ही होता है जब क संस्कृत में भोग मतलब उपयोग में लेना होता है ऋ ष दयानद जी ने भी यही स्पष्ट कया है ,ऋ ष ने ऋषभेन उक्षेन भून्जीरन लखा है अर्थात बैल रूपी साधन से खेती व कुए आदि चला कर सुख भोगे |इसी भाष्य में म्ह्रिशी ने लखा है क मनुष्य छेरी आदि पशुओ के दूध आदि से प्राणपान की रक्षा के लए चकने ओर पके हुए पदार्थो का भोजन कर उत्तम रसो को पीकर वृद् ध को पाते है वे अच्छे सुख को प्राप्त होते है |यहा पशुओ से सम्बन्ध नही बल्कि उनका दूध पीना ,खेती आदि कार्यो में उपयोग लेने का उपदेश है वही अर्थ स्वामी जी ने भी कया है |अब आपके कये अगले मन्त्रो का अर्थ देखते है – न सेशे ……………..उत्तर: (ऋगवेद १०.८६.१६) ओर न सेशे………..उत्तर. (ऋग्वेद १०-८६-१७) इन दोनों मन्त्रो का आपने बहुत अश्लील अर्थ लखा जब क इस मन्त्र में लंग वाची शब्द है ही नही ये मन्त्र संवादत्मक शेली में है जिसमे तीन पात्र इंद्र उसकी पत्नि इन्द्राणी ओर मत्र वृषाक प है |ऐसा ऐतिहा सक परख अर्थ में है ओर नेरुक्त पक्ष में इंद्र वद्युत इन्द्राणी मध्यम वाक् ओर वृषाक प आ धत्य है |(निरुक्त ११.३८ व ११.३९) यहा हम इनका ऐतिहा सक अर्थ लखते है – इन्द्राणी इंद्र से कहती है – न सेशे ….. वश्वस्मादिन्द्र उत्तर: अर्थात तुम तो सबके सामने नम्र होकर सर झुका कर रहते हो ,नम्रता या सर झुकाने से कार्य निर्वाह नही होता बल्कि अपने प्रभाव को वस्तार करने से होता है |इस मन्त्र में सर झुकने की बात है उसके लए कृपन शब्द भी आया है ले कन आपने लंग अर्थ ले लया |अब इसका प्रत्युतर इंद्र देता है – न सेशे ….उत्त्तर (ऋग्वेद १० -८६ -१७) है इन्द्राणी तुमने जो कहा वह ठीक है |तो यह भी नियम सब पर लागू नही होता |कभी कभी ऐसा होता है की वह समर्थ नही होता जो डट कर खड़ा हो जाता है ओर सर ताने रखता है प्रतुतय वह समर्थ होता है जिसका सर दुसरो के पैरो में झुकता है या नम्र होता है |इस सम्पूर्ण काल्पनिक आख्यान में इंद्र का सखा वृषाक प उनका सोम ले लेटा है जिसे इन्द्राणी को बहुत बुरा लगता

है ओर वो अपने पति इंद्र को उससे लड़ने ,झगड़ने के लए प्रेरित करती है लेकन इंद्र उसे नम्रता ओर वनम्रता से वस्तु लेने का उपदेश देता है ,,इस मन्त्र द्वरा या इस आख्यान द्वरा यही उपदेश दिया है क मत्रो ,बंधुओ से अपना कार्य करवाने के लए झगड़ा आदि करने की जगह नम्रता से कार्य निकलवाना चाहिए क्यूंक झगड़ा आदि से कार्य बिगड़ने की गुंजाइश ज्यादा रहती है |

अब अगले मन्त्र ऋग्वेद १०/८६/६ का भी आपने एक अश्लील अर्थ लखा है जबक उसका अर्थ होगा – वो भी इसी सूक्त का है उसमे वृषाकप से क्रोधत ओर जोश में आती इन्द्राणी कहती है – "

न मत्स्त्री………..………………उत्‌तर:(ऋग्वेद १०-८६-६) अर्थात मुझसे अधक अन्य कोई स्त्री सुभग्या सुन्दरी नही है , न सुखनि या सुपुत्रवती है , न मुझसे बढ़ कर शत्रुओ को नाश करने वाली है न ही उद्‌यम करने वाली है |इस मन्त्र में वृषाकप से क्रोधत इन्द्राणी की बात है तो इसमें वीरता आदि का ही उपदेश होगा न क मैथुन आदि का इन्द्राणी ओर इंद्र के रूप में वीर स्त्री ओर सदाचारी पुरुष का रूपक अलंकार है |अब आपका अगला मन्त्र देखते है जिसका देवता इंद्र है |यास्क के निघंट में इंद्र को त्वष्टा कहा है ,जिसका अर्थ होता है सूर्य | मन्त्र है ताम……………..……..शेमम. (ऋग्वेद १०-८५-३७) जिसका उचत अर्थ होगा औषधयों का पोषण करने वाले सूर्य ! जिस भूम में मनुष्य लोग बीज बोते है जो भूम हम पुरुषो की कामना को पूरी करती है |जिसके तल में हम आश्रय लेते है अर्थात घर बना कर रहते है | जिसके गर्भ में हल को प्रवेश कराते है ,उस अतिक्ल्याणकारी भूम को तु वर्षा आदि करा कर प्रेरित कर |इस मन्त्र में भूम की वशेषता ओर सूर्य द्वरा उचत वर्षा करवा कर उत्तम फसल की उत्पति को प्राप्त करने का उपदेश है |

उपरोक्त प्रमाणों से सद्ध होता है क वैदिक काल में जार कर्म अच्छा नही समझा जाता था अपतु इसे व्यभचार ओर पाप समझा जाता था |हिंदूइस्म धर्म ओर कलंक के लेखक ने यह अध्याय कसी तार्कक भावना से नही अपतु अपनी कुंठित ओर हिन्दुओ ,आर्यों को नीचा दिखने की मानसकता से लखी थी |जिसके कारण उनके दिमाग में ऋष के अच्छे उत्तम भाष्य का अश्लील अर्थ आया ओर अन्य मन्त्रो का अश्लील अर्थ ही कया जबक मन्त्रो का अध्यात्मिक ,आधभौतिक (वैज्ञानिक) अर्थ भी होता है |

सधर्भत ग्रन्थ या पुस्तके – (१) वेदों की वर्णन शेलया -रामनाथ जी वेदालंकार
(२) ऋग्वेद भाष्य – जयदेव शर्मा
(३) मीरपुरी सर्वस्व – बुद्‌धदेव मीरपुरी
(४) निरुक्त -यास्क (भाषानुवाद -भगवतदत्त जी)
(५) मनुस्मृति -स्वाम्भुमनु (भाषानुवाद – सुरेन्द्र कुमार)
(६) ऋग्वेद में आचार सामग्री

क्या भारत में गोहत्या कभी पुण्यदा थी यश आर्य

APRIL 9, 2015 LEAVE A COMMENT

http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2015/04/150331_beef_history_dnjha_sra_vr

वैदिक साहित्य में ऐसे कई उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है क उस दौर में भी गोमांस का सेवन कया जाता था. जब यज्ञ होता था तब भी गोवंश की बली दी जाती थी.

उत्तर: प्रमाण कहां है ?

धर्मशास्त्रों में यह कोई बड़ा अपराध नहीं है इस लए प्राचीनकाल में इसपर कभी प्रतिबंध नहीं लगाया गया.

उत्तर :ये झूठ है।वेद में गो वध निषेध है ।
सारा ववाद 19वीं शताब्दी में शुरू हुआ जब आर्य समाज की स्थापना हुई और स्वामी दयानंद सरस्वती ने गोरक्षा के लये अ भयान चलाया. और इसके बाद ही ऐसा चह्नित कर दिया गया क जो 'बीफ़' बेचता और खाता है वो मुसलमान है. इसी के बाद साम्प्रदायिक तनाव भी होने शुरू हो गए. उससे पहले साम्प्रदायिक दंगे नहीं होते थे.

उत्तर: ऋ ष द्यानंद ने कहां कहा है क गो मांस भक्षक केवल मुसल्मान होता है , और ईसाइ आदि नहीं ? क्या साम्प्रदायिक दंगे अंग्रेज़ सरकार आदि ने नहीं भडकाए ? बंगाल वभाजन क्यों हुआ ?

सारांश : द् वजेंद्र नारायण झा एक मांसाहारी समाज का सदस्य है । उसका समाज तंत्र [शक्ति] को मानता है । तंत्र अवैदिक मत है,मांसाहार करने देता है । वह स्वयम कार्ल मार्क्स का पुजारी है । यदि वह वेद मंत्र लखता तो मैं खं डत करता । सारा लेख झा जी की कल्पना पर आधारित है । अतः लेख निराधार है । क्या यह व्यक्ति यह सद्ध कर सकता है, क वेदिक संहिताओं में गोहत्या करने पर अमुक पुण्य प्राप्त होगा , ऐसा लखा है ? देखो वेद क्या कहता है :
http://www.onlineved.com/yajur-ved/?language=2&adhyay=14&mantra=8

क्या हिन्दू गौ मांस खाते थे ?

APRIL 6, 2015 9 COMMENTS

हाल ही में बीबीसी वालों ने डॉ भीमराव आंबेडकर के अवैदिक लेख को प्रस्तुत कर बड़ा मूर्खतापूर्ण कार्य कया है

भारतीय संस्कृति और वैदिक धर्म को चोट पहुंचाने में बीबीसी आजकल बड़ी भू मका निभा रहा है,

चाहे वह दिल्ली गेंग रेप के अपरा धयों के इंटरव्यू से यहाँ के लोगों की मान सकता को घटिया बताना हो या वेदों में गाय के मांस खाने को सही बताना हो,

इन धूर्त वदे शयों ने आज तक केवल यही काम कया है, फुट डालो और राज करो और भारतीय इतिहास को नष्ट करके देश का भ वष्य बर्बाद करो ,

भारतीय सं वधान के निर्माता (जो वास्त वक रूप से लगते नहीं है क्यूं क यह सं वधान "कही की इंट कही का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा" को ज्यादा चरितार्थ करता है) **Dr. B.R.A.** *ने वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन कराए की आँखों से कया है अर्थात उनकी बातों से उनकी पुस्तकों से और उक्त गौ मॉस वाले लेख से स्पष्ट है क उन्होंने स्वयं कभी वैदिक ग्रन्थों*

को पढ़ा नहीं है, अ पतु दुसरे लेखकों की पुस्तक पढ़ कर उन पर वशवास कर अपने द्वेष भाव से पी ड़त होकर लेख लखा है,

Dr. B.R.A. *ने वैदिक धर्म को शायद ही कभी दुराग्रह छोड़ कर समझा होगा यदि समझते तो आज अपने अनुयायियों के साथ मलकर वैदिक धर्म से दुश्मनी न करते, वे स्वयं तो चले गए परन्तु अपने कर्मों का फल आज सभी को भुगतता हुआ छोड़कर चले गए*

खैर ***Dr. B.R.A.*** *के बारे में ज्यादा लखने की जरुरत नहीं है फर भी हमें आज उनकी बुद् ध पर तरस आता है, की इतना पढने लखने के बाद भी ये बुद् ध से उपयोग ना कर पाए हमेशा कताबी कीड़े ही रहे जो कसी ने लखा उसकी प्रमा णकता जाने बिना उस पर वशवास कर लया, मनु के प्रति इनका द्वेष देखते ही बनता है, यही द्वेष आज सारा भारत आरक्षण के रूप में झेल रहा है, इन्होने मनु को समझने का जतन कभी नहीं कया बस जो कसी लेखक ने लख दिया*

उसे रटकर उसकी प्रमा णकता जाने बिना मनु को दुश्मन समझ बैठे, परन्तु उनके अनुयायियों पर तरस आता है, जो आज भी अंधभक्ति की बिमारी से ग्रस्त होकर उनका समर्थन कये जा रहे है, हमारा उन सभी अनुयायियों से निवेदन है की अपनी बुद् ध का प्रयोग करके सत्य असत्य का निर्णय करे

अब आते है ***Dr. B.R.A.*** *के बुद् धहीन लेख पर*

प्राचीन काल में हिन्दू गोमांस खाते थे'

भारतीय सं वधान के प्रमुख निर्माताओं में से एक डॉक्टर बीआर अंबेडकर अच्छे शोधकर्ता भी थे. उन्होंने गोमांस खाने के संबंध में एक निबंध लखा था, 'क्या हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया?'

यह निबंध उनकी कताब, 'अछूतः कौन थे और वे अछूत क्यों बने?' में है.

दिल्ली वश्व वद्यालय में राजनीति वज्ञान के प्रोफ़ेसर शम्सुल इस्लाम ने इस निबंध को संपादित कर इसके कुछ हिस्से बीबीसी हिंदी के पाठकों के लए उपलब्ध करवाए हैं.

'प वत्र है इस लए खाओ'

अपने इस लेख में अंबेडकर हिंदुओं के इस दावे को चुनौती देते हैं क हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया और गाय को हमेशा प वत्र माना है और उसे अघन्य (जिसे मारा नहीं जा सकता) की श्रेणी में रखा है.

अंबेडकर ने प्राचीन काल में हिंदुओं के गोमांस खाने की बात को साबित करने के लए हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों का सहारा लया.

उनके मुताबिक, “गाय को प वत्र माने जाने से पहले गाय को मारा जाता था. उन्होंने हिन्दू धर्मशास्त्रों के वख्यात वद्वान पीवी काणे का हवाला दिया. काणे ने लखा है, ऐसा नहीं है क वैदिक काल में गाय प वत्र नहीं थी, ले कन उसकी प वत्रता के कारण ही बाजसनेई संहिता में कहा गया क गोमांस को खाया जाना चाहिए.” (मराठी में धर्म शास्त्र वचार, पृष्ठ-180).

डॉ. पांडुरंग वमन काणे भी एक शौधकर्ता ही है, इन्होने वही लखा जो इन्होने पढा या सुना परन्तु वेदों में ऐसी कोई बात का उल्लेख नहीं है जैसा इन्होने प्रमाण दिया है, महाभारत, रामायण में भी कही भी मांस भक्षण का ववरण नहीं है, तो गौमास खाना तो बहुत दूर की बात है, और जिस वैदिक काल की ये बात कर रहे है वह शायद वामपं थयों के समय के लए वैदिक काल शब्द उपयोग में ले रहे है, गौ मॉस का भक्षण वामपं थयों द्वारा कया जाता था, ना वैदिक ध र्मयों द्वारा !!

अंबेडकर ने लखा है, “ऋगवेद काल के आर्य खाने के लए गाय को मारा करते थे, जो खुद ऋगवेद से ही स्पष्ट है.”

ऋगवेद में (10. 86.14) में इंद्र कहते हैं, “उन्होंने एक बार 5 से ज़्यादा बैल पकाए’. ऋगवेद (10. 91.14) कहता है क अग्नि के लए घोड़े, बैल, सांड, बांझ गायों और भेड़ों की ब ल दी गई. ऋगवेद (10. 72.6) से ऐसा लगता है क गाय को तलवार या कुल्हाड़ी से मारा जाता था.”

Dr. B.R.A. *जी ने वेदों से गौ मांस खाने का प्रमाण दिया है इतना पढने मात्र से ही इस लेख पर संदेह उत्पन्न हो जाता है*

पता नहीं इंसान उस जगह हाथ पैर क्यों मारता है जिसका उसे रति भर ज्ञान नहीं होता है, वेदों को पढने से पहले कई ग्रन्थ व्याकरण, निरुक्त आदि पढने पड़ते है, उसके बाद ही वेदों को समझा जा सकता है अन्यथा उसे भाष्यकारों के भाष्य पर ही निर्भर रहना पड़ता है, कुछ इस निर्भरता के चलते ***Dr. B.R.A.*** *जी ने यह अनर्गल आरोप वैदिक धर्म पर मंड दिया की वे गौ मांस खाते थे*

इन्होने ऋग्वेद के १० मंडल से कुछ प्रमाण प्रस्तूत कये है, जिसमें इंद्र के एक बार मांस पकाने के बारे में बताया है, यदि आज ***Dr. B.R.A.*** *जी जी वत होते तो शायद आज इस आर्य से लज्जित होकर जाते परन्तु ईश्वर इच्छा से वे इस पुण्य कार्य से बच गए*

Dr. B.R.A. *जी आपके ज्ञान का क्या कहे, क्या आपको इतना ज्ञान भी नहीं था की वेदों में कही भी इतिहास या भ वष्य नहीं है ??*

पता भी होता तो आप अपने द्वेष के चलते इस बात को स्वीकार नहीं करते क्यूं क आप पर नास्तिकता हावी थी और इसी नास्तिकता के चलते आप वेदों को ईश्वरीय ज्ञान ना मान कर मनुष्यकृत मानते थे, यही आपकी सबसे बड़ी गलती थी

च लए आपको आपके प्रमाणों का आपके मृत्यु पश्चात सही अर्थ आपके अनुयायियों को बता देते है, ता क आपके कये गए कार्यों पर उन्हें थोड़ी बहुत तो लज्जा आये

ऋग्वेद १०:८६:१४ में क्या लखा है :-
भावार्थ :- वषय व्यावृत इन्द्रियों व प्राणसाधना से वीर्य का परिपाक होकर आत्मिक शक्ति का वकास होता है, प्रसंगवश यह वीर्य का परिपाक गुर्दे आदि के कष्टों से भी हमें बचाता है

इस मन्त्र से हमें यही शक्षा मलती है की हमें वीर्य क्षति से बचना चाहिए क्यूं क इससे शरीर में अनेक प्रकार की दुर्बलता आती है और गुर्दे आदि की बिमारी होने की संभावना बढती है, इसमें कही भी इंद्र द्वारा मांस भक्षण नहीं बताया है

दूसरा प्रमाण ऋग्वेद १०:९१:१४ :–
भावार्थ:– हम 'अश्व, ऋषभ, उक्षा, वश व मेष' बनकर प्रभु के प्रति चलें, उसके प्रति अपना अर्पण करें | वे प्रभु हमारी शक्ति का रक्षण करने वाले, हमें सौम्यता को प्राप्त कराने वाले व हमारी सब शक्तियों का निर्माण कराने वाले है | उस प्रभु की प्राप्ति के लए हम श्रद्धा से ज्ञानोत्पादिनी बुद् ध को अपने में उत्पन्न करते हैं |

इस मन्त्र में भी कही भी **Dr. B.R.A.** *के बताये अनुसार घोड़े सांड आदि के मारकर भक्षण के बारे में नहीं बताया है अ पतु उनके समांनातर बनकर प्रभु क्र प्रति समर्पण के लए कहा है, जैसे इस मन्त्र में अश्व शब्द से तात्पर्य सदा कर्म में व्याप्त रहने वाले से है, जैसे घोडा सदैव कर्म करने में व्याप्त रहता है जैसा उसका मा लक उससे कार्य करवाता है वैसे ही वह करता है ठीक उसी प्रकार मनुष्यों को प्रभु की शरण में रहकर कर्म करने की बात कही है ना की अश्व आदि के भक्षण की !!*

अब तीसरा प्रमाण ऋग्वेद १०:७२:६ को देखते है
भावार्थ:– आकाश में वर्तमान ये सब पण्ड अलग-अलग होते हुए भी परस्पर व्यवस्था में सम्बद्ध है | कभी-कभी इनका कोई श थल भाग तीव्र –गति होकर दुसरे पण्ड की ओर चला जाता है

इस मन्त्र में कहीं भी तलवार कुल्हाड़ी नहीं दिखती यह मन्त्र उल्कापात की जानकारी देता है

उपरोक्त तीनों प्रमाण **Dr. B.R.A.** *जी द्वारा उनके अनुयायियों को उन्होंने गलत बताये, तीनों प्रमाणों को पढ़कर आज एक बात तो समझ आई की यह पंक्तियाँ क्यों कही गई थी*
"सावन के गधे को हर जगह हरा ही हरा दीखता है"
सु ध पाठकगण इतना कहने मात्र से मेरी भावनाए समझ जाए

उपरोक्त सभी मन्त्र के भावार्थ और मेरे द्वारा काट की गई बातों की प्रमा णकता अर्थात इन मन्त्रों के सही अर्थ जानने के लए आप **www.aryamantavya.in** *पर जाए और वहां वैदिक कोष में वेद डाउनलोड करें और स्वयं जांचे मेरे द्वारा कही बात का वशवास करने से उत्तम है आँखों दे ख पर वशवास कया जाए*

'अति थ यानि गाय का हत्यारा'

अंबेडकर ने वैदिक ऋचाओं का हवाला दिया है जिनमें ब ल देने के लए गाय और सांड में से चुनने को कहा गया है.

अंबेडकर ने लखा "तैत्रीय ब्राह्मण में बताई गई कामयेष्टियों में न सर्फ़ बैल और गाय की ब ल का उल्लेख है बल्कि यह भी बताया गया है क कस देवता को कस तरह के बैल या गाय की ब ल दी जानी चाहिए."

वो लखते हैं, " वष्णु को ब ल चढ़ाने के लए बौना बैल, वृत्रासुर के संहारक के रूप में इंद्र को लटकते सींग वाले और माथे पर चमक वाले सांड, पुशन के लए काली गाय, रुद्र के लए लाल गाय आदि."

"तैत्रीय ब्राह्मण में एक और ब ल का उल्लेख है जिसे पंचस्रदीय-सेवा बताया गया है. इसका सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, पांच साल के बगैर कूबड़ वाले 17 बौने बैलों का ब लदान और जितनी चाहें उतनी तीन साल की बौनी बछियों का ब लदान."

अंबेडकर ने जिन वैदिक ग्रंथों का उल्लेख कया है उनके अनुसार मधुपर्क नाम का एक व्यंजन इन लोगों को अवश्य दिया जाना चाहिए- (1) ऋत्विज या ब ल देने वाले ब्राह्मण (2) आचार्य- शक्षक (3) दूल्हे (4) राजा (5) स्नातक और (6) मेज़बान को प्रय कोई भी व्यक्ति.

कुछ लोग इस सूची में अति थ को भी जोड़ते हैं.

मधुपर्क में "मांस, और वह भी गाय के मांस होता था. मेहमानों के लए गाय को मारा जाना इस हद तक बढ़ गया था क मेहमानों को 'गोघ्न' कहा जाने लगा था, जिसका अर्थ है गाय का हत्यारा."

उपरोक्त प्रमाणों को पढ़कर इतना मात्र कहना चाहूँगा की तेत्रिय ब्राह्मण आदि वेद नहीं है, कुछ लोग इसे वेद मानते है, परन्तु यह वेद ना होकर उसकी शाखा है जो ईश्वरीय ज्ञान नहीं है, यह मनुष्यकृत होने से इसमें वे वे बाते ही मान्य है जो वेदोक्त है, तेत्रिय ब्राह्मण में काफी भाग अवैदिक है जो मान्य नहीं है

'सब खाते थे गोमांस'

इस शोध के आधार पर अंबेडकर ने लखा क एक समय हिंदू गायों को मारा करते थे और गोमांस खाया करते थे जो बौद्ध सूत्रों में दिए गए यज्ञ के ब्यौरों से साफ़ है.

अंबेडकर ने लखा है, "कुतादंत सुत्त से एक रेखा चत्र तैयार कया जा सकता है जिसमें गौतम बुद्ध एक ब्राह्मण कुतादंत से जानवरों की ब ल न देने की प्रार्थना करते हैं."

अंबेडकर ने बौद्ध ग्रंथ संयुक्त निकाय(111. .1-9) के उस अंश का हवाला भी दिया है जिसमें कौशल के राजा पसेंडी के यज्ञ का ब्यौरा मलता है.

संयुक्त निकाय में लखा है, "पांच सौ सांड, पांच सौ बछड़े और कई बछियों, बकरियों और भेड़ों को ब ल के लए खंभे की ओर ले जाया गया."

अंत में अंबेडकर लखते हैं, "इस सुबूत के साथ कोई संदेह नहीं कर सकता क एक समय ऐसा था जब हिंदू, जिनमें ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण दोनों थे, न सर्फ़ मांस बल्कि गोमांस भी खाते थे."

*इस प्रमाण में **Dr. B.R.A.** जी ने जिन ग्रन्थों का उल्लेख कया है वह वामपंथयों के लए है ना की वैदिक धर्मयों के लए, गौ मास का भक्षण केवल वधर्मी और मलेछ कया करते थे और करते है उन्हें कभी हिन्दू नहीं माना गया है, परन्तु **Dr. B.R.A.** जी ने अपनी उदारता दिखाते हुए इन्हें भी हिन्दू मानकर यह सोच बना ली की हिन्दू अर्थात सनातन वैदिक धर्मी भी गौ मास खाते थे, जब क वेदों में इसका कोई प्रमाण नहीं मलता है, **Dr. B.R.A.** जी ने अपने द्वेष और वैदिक ग्रन्थों के अनर्गल अर्थ निकाल कर गलतफहमी बना ली थी, की ये ग्रन्थ ऊँच नीच जैसी बातों को जन्म देते है, और यह गलतफहमी केवल उनके गलत अर्थ निकालने के कारण बनी जिसका परिणाम यह हुआ की उन्होंने अपने अनुयायियों को वैदिक धर्म से अलग कर दिया, आरक्षण की जड़ उनकी यह गलतफहमी ही बनीं की पछड़ी जातियों के वकास के लए आरक्षण जरुरी है और यह आरक्षण आज एक बहुत बड़े झगड़े का मूल बन चूका है*

वेदों में कही भी मांसाहार को उ चत नहीं बताया है अ पतु गौ हत्यारों को कई प्रकार के दंड देने का वधान है और गौमास भक्षण का वरोध भी है

*ऋग्वेद **8:101:**१५*

*ऋग्वेद **8:101:**२७*

अथर्ववेद १०:१:२७

*अथर्ववेद **12:**४:३८*

ऋग्वेद ६:२८:४

*अथर्ववेद **8:3:**२४*

यजुर्वेद १३:४३

*अथर्ववेद ७:**5:5***

यजुर्वेद ३०:१८

*इन प्रमाणों को जांचने के लए आप **www.onlineved.in** पर जाए और स्वयं पढ़े*

प्राचीन काल में हिन्दू गौ मांस खाते थे – BBC का खंडन यश आर्य

APRIL 5, 2015 LEAVE A COMMENT

भारतीय सं वधान के प्रमुख निर्माताओं में से एक डॉक्टर बीआर अंबेडकर अच्छे शोधकर्ता भी थे. उन्होंने गोमांस खाने के संबंध में एक निबंध लखा था, 'क्या हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया?'

यह निबंध उनकी कताब, 'अछूतः कौन थे और वे अछूत क्यों बने?' में है.

दिल्ली वश्व वद्यालय में राजनीति वज्ञान के प्रोफ़ेसर शम्सुल इस्लाम ने इस निबंध को संपादित कर इसके कुछ हिस्से बीबीसी हिंदी के पाठकों के लए उपलब्ध करवाए हैं.

'प वत्र है इस लए खाओ'

अपने इस लेख में अंबेडकर हिंदुओं के इस दावे को चुनौती देते हैं क हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया और गाय को हमेशा प वत्र माना है और उसे अघन्य (जिसे मारा नहीं जा सकता) की श्रेणी में रखा है.

अंबेडकर ने प्राचीन काल में हिंदुओं के गोमांस खाने की बात को साबित करने के लए हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों का सहारा लया.

उनके मुताबिक, "गाय को प वत्र माने जाने से पहले गाय को मारा जाता था. उन्होंने हिन्दू धर्मशास्त्रों के वख्यात वद्वान पीवी काणे का हवाला दिया. काणे ने लखा है, ऐसा नहीं है क वैदिक काल में गाय प वत्र नहीं थी, ले कन उसकी प वत्रता के कारण ही बाजसनेई संहिता में कहा गया क गोमांस को खाया जाना चाहिए." (मराठी में धर्म शास्त्र वचार, पृष्ठ-180).

अंबेडकर ने लखा है, "ऋगवेद काल के आर्य खाने के लए गाय को मारा करते थे, जो खुद ऋगवेद से ही स्पष्ट है."

ऋगवेद में (10. 86.14) में इंद्र कहते हैं, "उन्होंने एक बार 5 से ज़्यादा बैल पकाए'. ऋगवेद (10. 91.14) कहता है क अग्नि के लए घोड़े, बैल, सांड, बांझ गायों और भेड़ों की ब ल दी गई. ऋगवेद (10. 72.6) से ऐसा लगता है क गाय को तलवार या कुल्हाड़ी से मारा जाता था."

$$$$$$$$$$$$$$
ये झूठ है । देखो

अति थ यानि गाय का हत्यारा'

अंबेडकर ने वैदिक ऋचाओं का हवाला दिया है जिनमें ब ल देने के लए गाय और सांड में से चुनने को कहा गया है.

अंबेडकर ने लखा "तैत्रीय ब्राह्मण में बताई गई कामयेष्टियों में न सर्फ़ बैल और गाय की ब ल का उल्लेख है बल्कि यह भी बताया गया है क कस देवता को कस तरह के बैल या गाय की ब ल दी जानी चाहिए."

@@@@@@@@

माध्यंदिनी सन्हिता ही यजुर्वेद है । तै त्तरीय वेद नहीं है ।

@@@@@@@@@@

वो लखते हैं, " वष्णु को ब ल चढ़ाने के लए बौना बैल, वृत्रासुर के संहारक के रूप में इंद्र को लटकते सींग वाले और माथे पर चमक वाले सांड, पुशन के लए काली गाय, रुद्र के लए लाल गाय आदि."

"तैत्रीय ब्राह्मण में एक और ब ल का उल्लेख है जिसे पंचस्रदीय-सेवा बताया गया है. इसका सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, पांच साल के बगैर कूबड़ वाले 17 बौने बैलों का ब लदान और जितनी चाहें उतनी तीन साल की बौनी बछियों का ब लदान."

अंबेडकर ने जिन वैदिक ग्रंथों का उल्लेख कया है उनके अनुसार मधुपर्क नाम का एक व्यंजन इन लोगों को अवश्य दिया जाना चाहिए- (1) ऋत्विज या ब ल देने वाले ब्राह्मण (2) आचार्य- शक्षक (3) दूल्हे (4) राजा (5) स्नातक और (6) मेज़बान को प्रय कोई भी व्यक्ति.

कुछ लोग इस सूची में अति थ को भी जोड़ते हैं.

मधुपर्क में "मांस, और वह भी गाय के मांस होता था. मेहमानों के लए गाय को मारा जाना इस हद तक बढ़ गया था क मेहमानों को 'गोघ्न' कहा जाने लगा था, जिसका अर्थ है गाय का हत्यारा."

'सब खाते थे गोमांस'

इस शोध के आधार पर अंबेडकर ने लखा क एक समय हिंदू गायों को मारा करते थे और गोमांस खाया करते थे जो बौद्ध सूत्रों में दिए गए यज्ञ के ब्यौरों से साफ़ है.

अंबेडकर ने लखा है, "कुतादंत सुत्त से एक रेखा चत्र तैयार कया जा सकता है जिसमें गौतम बुद्ध एक ब्राह्मण कुतादंत से जानवरों की ब ल न देने की प्रार्थना करते हैं."

अंबेडकर ने बौद्ध ग्रंथ संयुक्त निकाय(111. .1-9) के उस अंश का हवाला भी दिया है जिसमें कौशल के राजा पसेंडी के यज्ञ का ब्यौरा मलता है.

संयुक्त निकाय में लखा है, "पांच सौ सांड, पांच सौ बछड़े और कई बछियों, बकरियों और भेड़ों को ब ल के लए खंभे की ओर ले जाया गया."

@@@@@@@@@

यहाँ बौद्ध लोगों ने वाम मार्गी लोगों की चर्चा की है। सच्चे ब्राह्मणों की नहीं ।

@@@@@@@@@@

अंत में अंबेडकर लखते हैं, "इस सुबूत के साथ कोई संदेह नहीं कर सकता क एक समय ऐसा था जब हिंदू, जिनमें ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण दोनों थे, न सर्फ़ मांस बल्कि गोमांस भी खाते थे."

$$$
ऑम्बेद्कर और B B C और दिल्ली वश्व वद्यालय में राजनीति वज्ञान के प्रोफ़ेसर शम्सुल इस्लाम और गो मांस भक्षक हिंदुओं का मत असत्य है

क्या शंकराचार्य जी ने बोद्ध धम्म को भारत से नष्ट करा था ?

APRIL 2, 2015 1 COMMENT

अक्सर हम सुनते है बोद्धो ओर सनातनियो से की शंकराचार्य जी ने भारत से बोद्ध धम्म को खत्म कया |कुछ लोग इसे शास्त्रार्थ द्वारा बताते है ,लेकन माधव शंकर दिग्विजय में राजा सुधन्वा आदि की सेना द्वारा उनका संहार करने का वर्णन है .. क्या शंकराचार्य जी की वजह से बोद्ध धम्म का नाश हुआ ..क्या शंकराचार्य जी ने हत्याये करवाई इस वषय में हम अपने वचार न रखते हुए एक महान बोद्ध पंडत राहुल सांस्कृत्यन जी की पुस्तक बुद्ध चर्या के प्रथम संस्करण १९३० की जिसका प्रकाशन गौतम बुक सेंटर दिल्ली से हुआ के अध्याय भारत में बोद्ध धम्म का उथान और पतन ,पेज न १०-११ से उधृत करते है – इसमें बोद्धो के पतन का कारण तुर्की आक्रमण कारी ओर उनका तंत्रवाद को प्रबल प्रमाणों द्वारा सद्ध करते हुए शंकराचार्य वषय में निम्न पक्ष रखते है –

" एक ओर कहा जाता है ,शंकर ने बोद्धो को भारत से मार कर भगाया और दूसरी ओर हम उनके बाद गौड़ देश में पालवंशीय बोद्ध नरेशो का प्रचंड प्रताप फैला देखते है ,तथा उसी समय उदन्तपूरी और वक्रमशीला जेसे बोद्ध वश्ववद्यालयों को स्थापत देखते है |इसी समय बोद्धो को हम तिब्बत पर धर्म वजय करते भी देखते है |११ व सदी में जब क ,उक्त दंत कथा अनुसार भारत में कोई भी बोद्ध न रहना चाहिए , तब तिब्बत से कतने ही बोद्ध भारत आते ओर वे सभी जगह बोद्ध ओर भक्षुओ को पाते है |पाल काल के बुद्ध ,बोधसत्व ओर तांत्रिक देवी देवताओं की गृहस्थो हजारो खंडत मुर्तिया उतरी भारत के गाँव तक में पायी जाती है |मगध , वशेष कर गया जिले में शायद ही कोई गाँव होगा ,जिसमे इस काल की मुर्तिया न हो (गया -जिले के जहानाबाद सब डवजन के गाँव में इन मूर्तियों की भरमार है ,केस्पा .घेजन आदि गाँव में अनेक बुद्ध ,तारा ,अवलोकतेश्वर आदि की मुर्तिया उस समय के कुटिलाक्षर में ये धर्मा हेतुप्रभवा …..श्लोक से अंकत मलती है) वह बतला रही है क उस समय कसी शंकर ने बोद्ध धम्म को नस्तनाबुत नही कया था |यही बात सारे उत्तर भारत से प्राप्त ताम्र लेखो ओर शलालेख से मालुम होती है |गौडनपति तो मुसलमानों के बिहार बंगाल वजय तक बोद्ध धर्म और कला के महान संरक्षक थे ,अंतिम काल तक उनके ताम्र पत्र बुद्ध भगवान के प्रथम धर्मोपदेश स्थान मृगदाव (सारनाथ) के लांछन दो मृगो के बीच रखे चक्र से अलंकृत होते थे |गौड़ देश के पश्चिम में कन्याकुब्ज राज था ,जो क यमुना से गण्डक तक फैला था |वहा के प्रजा जन और नृपति गण में भी बोद्ध धम्म का खूब सम्मान था |यह बात जयचंद के दादा गोवंदचद्र के जेतवन बिहार को

दिए पांच गाँवों के दानपात्र तथा उनकी रानी कुमारदेवी के बनवाये सारनाथ के महान बौद्ध मन्दिर से मालुम होती है |गो वंद चन्द्र के बेटे जयचन्द्र की एक प्रमुख रानी बौद्धधर्मावलम्बिनी थी ,जिसके लए लखी गयी प्रज्ञापार मता की पुस्तक अब भी नेपाल दरबार पुस्तकालय में मौजूद है |कन्नौज में गहडवारो के समय की कतनी ही बोद्धमुर्तिया निलती है ,जो आज कसी देवी देवता के रूप में पूजी जाती है |
का लंजर के राजाओ के समय की बनी महोबा आदि से प्राप्त संहनाद अवलो कतेश्वर आदि की सुंदर मुर्तिया बतला रही है क .तुर्को के आने के समय तक बुन्देलखंड में बोद्धो की संख्य काफी थी |द क्षण भारत में देव गरी के पास एलोरा के भव्य गुहा प्रसादों में भी कतनी ही बोद्ध गुहये ओर मुर्तिया .मा लक काफूर से कुछ पहले तक की बनी हुई है |यही बात ना सक के पांडववे लनी की गुहाओ के वषय में है |क्या इससे सद्ध नही होता क .शंकर द्वारा बोद्ध का निर्वसन एक कल्पना मात्र है |खुद शंकर की जन्मभू म केरल से बोद्धो का प्र सद्ध तन्त्र मन्त्र ग्रन्थ "मंजूष मूलकल्प संस्कृत में मला है ,जिसे वही त्रिवेन्द्रम से स्व महामहोपाध्याय गणपतिशास्त्री जी ने प्रका शत कराया था |क्या इस ग्रन्थ की प्राप्ति यह नही बतलाती क ,सारे भारत से बोद्धो का निकलना तो अलग केरल से भी वह बहुत पीछे लुप्त हुए है |ऐसी बहुत सी घटनाओं ओर प्रमाण पेश कये जा सकते है जिससे इस बात का खंडन हो जाता है |
राहुल जी की इस बात से न्व्बोद्धो ओर कुछ सनातनियो की इस बात का खंडन हो जाता है क शंकराचार्य जी ने भारत से बोद्ध धम्म को नष्ट कया ..माधव दिग्विजय एक दंत कथा मात्र है |बोद्ध धम्म भारत से बोद्धो के अंध वश्वास ओर तुर्क आक्रमण कारियों के कारण नष्ट हुआ ,,,

स्वामी ववेकानन्द का हिन्दुत्व (स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की दृष्टि में)

MARCH 22, 2015 LEAVE A COMMENT

स्वामी ववेकानन्द का हिन्दुत्व

(स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की दृष्टि में)

– नवीन मश्र

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती एक वैज्ञानिक संन्यासी थे। वे एक मात्र ऐसे स्वाधीनता सेनानी थे जो वैज्ञानिक के रूप में जेल गए थे। वे दार्शनिक पता पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के एक दार्शनिक पुत्र थे। आप एक अच्छे क व, लेखक एवं उच्चकोटि के गवेषक थे। आपने ईशोपनिषद् एवं श्वेताश्वतर उपनिषदों का हिन्दी में सरल पद्यानुवाद कया तथा वेदों का अंग्रेजी में भाष्य कया। आपकी गणना उन उच्चकोटि के दार्शनिकों में की जाती है जो वैदिक दर्शन एवं दयानन्द दर्शन के अच्छे व्याख्याकार माने जाते हैं। परोपकारी के नवम्बर (द् वतीय) एवं दिसम्बर (प्रथम) २०१४ के सम्पादकीय ''आदर्श संन्यासी- स्वामी ववेकानन्द'' के देश में धर्मान्तरण, शुद् ध, घर वापसी की जो चर्चा आज हो रही है साथ ही इस सम्बन्ध में स्वामी सत्यप्रकाश जी के ३० वर्ष पूर्व के वचार आज भी प्रासं गक हैं। इसी क्रम में

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा ल खत पुस्तक ''अध्यात्म और आस्तिकता'' के पृष्ठ १३२ से उद्धृत स्वामी जी का लेख पाठकों के वचारार्थ प्रस्तुत है-

'' ववेकानन्द का हिन्दुत्व ईसा और ईसाइयत का पोषक है।''

''मह ष दयानन्द सरस्वती ने अवतारवाद और पैगम्बरवाद दोनों का खण्डन कया। वैदिक आस्था के अनुसार हमारे बड़े से बड़े ऋ ष भी मनुष्य हैं और मानवता के गौरव हैं, चाहे ये ऋ ष गौतम, क पल, कणाद हों या अग्नि, वायु, आदित्य या अं गरा। मनुष्य का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से है मनुष्य और परमात्मा के बीच कोई बिचौ लया नहीं हो सकता- न राम, न कृष्ण, न बुद्ध, न चैतन्य महाप्रभु, न रामकृष्ण परमहंस, न हजरत मुहम्मद, न महात्मा ईसा मूसा या न कोई अन्य। पैगम्बरवाद और अवतारवाद ने मानव जाति को वघटित करके सम्प्रदायवाद की नींव डाली।''

हमारे आधुनिक युग के चन्तकों में स्वामी ववेकानन्द का स्थान ऊँचा है। उन्होंने अमेरिका जाकर भारत की मान मर्यादा की रक्षा में अच्छा योग दिया। वे रामकृष्ण परमहंस के अद् वतीय शष्य थे। हमें यहाँ उनकी फलॉसफी की आलोचना नहीं करनी है। सबकी अपनी-अपनी वचारधारा होती है। अमेरिका और यूरोप से लौटकर आये तो रूढ़िवादी हिन्दुओं ने उनकी आलोचना भी की थी। इधर कुछ दिनों से भारत में नयी लहर का जागरण हुआ-यह लहर महाराष्ट्र के प्रतिभाशाली व्यक्ति श्री हेडगेवार जी की कल्पना का परिणाम था। जो मुसलमान, ईसाई, पारसी नहीं हैं, उन भारतीयों का ''हिन्दू'' नाम पर संगठन। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई। राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से गुरु गोलवलकर जी के समय में संघ का रू प निखरा और संघ गौरवान्वित हुआ, पर यह सांस्कृतिक संस्था धीरे-धीरे रूढ़िवादियों की पोषक बन गयी और राष्ट्रीय प्र व त्तयों की वरोधी। यह राजनीतिक दल बन गयी, उदार सामाजिक दलों और राष्ट्रीय प्र व त्तयों के वरोध में। देश के वभाजन की वपदा ने इस आन्दोलन को प्रश्रय दिया, जो स्वाभा वक था। हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की पराकाष्ठा का परिचय १९४७ के आसपास हुआ। ऐसी परिस्थिति में गाँधीवादी काँग्रेस बदनाम हुई और साम्प्रदायिक प्र व त्तयों को पोषण मला। आर्य समाज ऐसा संघटन भी संयम खो बैठा और इसके अ धकांश सदस्य (जिसमें दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के वशेष रूप से थे) स्वभावतः हिन्दूवादी आर्य समाजी बन गए। जनसंघ की स्थापना हुई जिसकी पृष्ठभू म में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था। फर वश्व हिन्दू परिषद् बनी। पछले दिनों का यह छोटा-सा इतिवृत्त है।

हिन्दूवादियों ने ववेकानन्द का नाम खोज निकाला और उन्हें अपनी गति व धयों में ऊँचा स्थान दिया। पछले १००० वर्ष से भारतीयों के बीच मुसलमानों का कार्य आरम्भ हुआ। सन् ९०० से लेकर १९०० के बीच दस करोड़ भारतीय मुसलमान बन गये अर्थात् प्रत्येक १०० वर्ष में एक करोड़ व्यक्ति मुसलमान बनते गये अर्थात् प्रतिवर्ष १ लाख भारतीय मुसलमान बन रहे थे। इस धर्म परिवर्तन का आभास न कसी हिन्दू राजा को हुआ, न हिन्दू नेता को। भारतीय जनता ने अपने समाज के संघटन की समस्या पर इस दृष्टि से कभी सूक्ष्मता से वचार नहीं कया था। पण्डितों, वद्वानों, मन्दिरों के पुजारियों के सामने यह समस्या राष्ट्रीय दृष्टि से प्रस्तुत ही नहीं हुई।

स्मरण र खये क पछले १००० वर्ष के इतिहास में मह ष दयानन्द अकेले ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस समस्या पर वचार कया। उन्होंने दो समाधान बताए- भारतीय समाज

सामाजिक कुरीतियों से आक्रान्त हो गया है- समाज का फर से परिशोध आवश्यक है। भारतीय सम्प्रदायों के कतिपय कलङ्क हैं, जिन्हें दूर न कया गया तो यहाँ की जनता मुसलमान तो बनती ही रही है, आगे तेजी से ईसाई भी बनेगी। हमारे समाज के कतिपय कलङ्क ये थे-

१. मूर्तिपूजा और अवतारवाद।

२. जन्मना जाति-पाँतवाद।

३. अस्पृश्यता या छूआछूतवाद।

४. परमस्वार्थी और भोगी महन्तों, पुजारियों, शंकराचार्यों की गद्दियों का जनता पर आतंक।

५. जन्मपत्रियों, फ लत ज्योतिष, अन्ध वश्वासों, तीर्थों और पाखण्डों का भोलीभाली ही नहीं श क्षत जनता पर भी कुप्रभाव। राष्ट्र से इन कलङ्कों को दूर न कया जायेगा, तो वदशी सम्प्रदायों का आतंक इस देश पर रहेगा ही।

दूसरा समाधान मह र्ष दयानन्द ने यह प्रस्तुत कया क जो भारतीय जनता मुसलमान या ईसाई हो गयी है उसे शुद्ध करके वैदिक आर्य बनाओ। केवल इतना ही नहीं बल्कि मानवता की दृष्टि से अन्य देशों के ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनी सबसे कहो क असत्य और अज्ञान का परित्याग करके वद्या और सत्य को अपनाओ और वश्व बन्धुत्व की संस्थापना करो।

 ववेकानन्द के अनेक वचार उदात्त और प्रशस्त थे, पर वे अवतारवाद से अपने आपको मुक्त न कर पाये और न भारतीयों को मुसलमान, ईसाई बनने से रोक पाये। यह स्मरण र खये क यदि मह र्ष दयानन्द और आर्य समाज न होता तो वषुवत रेखा के द क्षण भाग के द्वीप समूह में कोई भी भारतीय ईसाई होने से बचा न रहता। ववेकानन्द के सामने भारतीयों का ईसाई हो जाना कोई समस्या न थी।

आज देश के अनेक अंचलों में ववेकानन्द के प्रय देश अमेरिका के षड़यन्त्र से भारतीयों को तेजी से ईसाई बनाया जा रहा है। स्मरण र खये क ववेकानन्द के वचार भारतीयों को ईसाई होने से रोक नहीं सकते, प्रत्युत मैं तो यही कहूँगा क यदि ववेकानन्द की वचारधारा रही तो भारतीयों का ईसाई हो जाना बुरा नहीं माना जायेगा, श्रेयस्कर ही होगा। ववेकानन्द के निम्न श   दों पर वचार करें- (दशम् खण्ड, पृ. ४०-४१)

मनुष्य और ईसा में अन्तरः– अ भव्यक्त प्रा णयों में बहुत अन्तर होता है। अ भव्यक्त प्रा ण के रूप में तुम ईसा कभी नहीं हो सकते। ब्रह्म, ईश्वर और मनुष्य दोनों का उपादान है। ...... ईश्वर अनन्त स्वामी है और हम शाश्वत सेवक हैं, स्वामी ववेकानन्द के वचार से ईसा ईश्वर है और हम और आप साधारण व्यक्ति हैं। हम सेवक और वह स्वामी है।

इसके आगे स्वामी ववेकानन्द इस वषय को और स्पष्ट करते हैं, ''यह मेरी अपनी कल्पना है क वही बुद्ध ईसा हुए। बुद्ध ने भ वष्यवाणी की थी, मैं पाँच सौ वर्षों में पुनः आऊँगा और पाँच सौ वर्ष बाद ईसा आये। समस्त मानव प्रकृति की यह दो ज्योतियाँ हैं। दो मनुष्य हुए हैं बुद्ध और ईसा। यह दो वराट थे। महान् दिग्गज व्यक्ति   व दो ईश्वर समस्त संसार को

आपस में बाँटे हुए हैं। संसार में जहाँ कही भी किञ्चित ज्ञान है, लोग या तो बुद्ध अथवा ईसा के सामने सर झुकाते हैं। उनके सदृश और अधिक व्यक्तियों का उत्पन्न होना कठिन है, पर मुझे आशा है कि वे आयेंगे। पाँच सौ वर्ष बाद मुहम्मद आये, पाँच सौ वर्ष बाद प्रोटेस्टेण्ट लहर लेकर लूथर आये और अब पाँच सौ वर्ष फिर हो गए हैं। कुछ हजार वर्षों में ईसा और बुद्ध जैसे व्यक्तियों का जन्म लेना एक बड़ी बात है। क्या ऐसे दो पर्याप्त नहीं हैं? ईसा और बुद्ध ईश्वर थे, दूसरे सब पैगम्बर थे।''

कहा जाता है कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को भारत से बाहर निकाल दिया और आस्तिक धर्म की पुनः स्थापना की। महात्मा बुद्ध (अर्थात् वह बुद्ध जो ईश्वर था) को भी मानिये और उनके धर्म को देश से बाहर निकाल देने वाले शंकराचार्य को भी मानिये, यह कैसे हो सकता है? विश्व हिन्दू परिषद् वाले स्वामी शंकराचार्य का भारत में गुणगान इसलिए करते हैं कि उन्होंने भारत को बुद्ध के प्रभाव से बचाया, वरना ये ही विश्व हिन्दू परिषद् वाले सनातन धर्म स्वयं सेवक संघ की स्थापना करके बुद्ध की मूर्तियों के सामने नत मस्तक होते। यह हिन्दुत्व की विडम्बना है। यदि स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में बुद्ध और ईसा दोनों ईश्वर हैं तो भारत में ईसाई धर्म के प्रवेश में आप क्यों आपत्ति करते हैं। पूर्वोत्तर भारत में ईसाइयों का जो प्रवेश हो रहा है, उसका आप स्वागत कीजिये। यदि विवेकानन्द को तुमने ''हिन्दुत्व'' का प्रचारक माना है तो तुम्हें धर्म परिवर्तन करके किसी का ईसाई बनना किसी को ईसाई बनाना क्यों बुरा लगता है?

मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि विवेकानन्दी हिन्दू (जिन्हें बुद्ध और ईसा दोनों को ईश्वर मानना चाहिए) देश को ईसाई होने से नहीं बचा सकते। भारतवासी ईसाई हो जाएँ, बौद्ध हो जायें या मुसलमान हो जाएँ तो उन्हें आपत्ति क्यों? ईसा और बुद्ध साक्षात् ईश्वर और हजरत मुहम्मद भी पैगम्बर!

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की स्थिति स्पष्ट है। हजरत मुहम्मद भी मनुष्य थे, ईसा भी मनुष्य थे, राम और कृष्ण भी मनुष्य थे। परमात्मा न अवतार लेता है न वह ऐसा पैगम्बर भेजता है, जिसका नाम ईश्वर के साथ जोड़ा जाए और जिस पर ईमान लाये बिना स्वर्ग प्राप्त न हो।

भारत को ईसाइयों से भी बचाइये और मुसलमानों से भी बचाइये जब तक कि यह ईसा को मसीहा और मुहम्मद साहब को चमत्कार दिखाने वाला पैगम्बर मानते हैं।

– आर्यसमाज, अजमेर

महर्षि दयानन्द दर्शन का विश्वव्यापी प्रभाव : प्रो राजेंद्र जिज्ञासु

MARCH 14, 2015 1 COMMENT

महर्षि दयानन्द दर्शन का विश्वव्यापी प्रभावः– सस्ता साहित्य मण्डल ने 'हमारी परम्परा' नाम से एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। इसके संकलनकर्ता अथवा सम्पादक प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री वियोगीहरि जी ने आर्यसमाज विषय पर भी एक उत्तम लेख देने की उदारता दिखाई

है। उनसे ऐसी ही आशा थी। वे आर्यसमाज द्वेषी नहीं थे। इन पंक्तियों के लेखक से भी उनका बड़ा स्नेह था। प्रसंगवश यहाँ बता दें क आप स्वामी सत्यप्रकाश जी का बहुत सम्मान करते थे।

इस ग्रन्थ में छपे आर्यसमाज वषयक लेख के लेखक आर्य पुरुष यशस्वी हिन्दी साहित्यकार स्वर्गीय श्री वष्णु प्रभाकर जी हैं। आपने इसमें एक भ्रमोत्पादक बात लखी है जिसका निराकरण करना हम अपना पुनीत व आवश्यक कर् ाव्य मानते हैं। आपने लखा है क आर्यसमाज के समाज सुधार सम्बन्धी कार्यों का जितना प्रभाव पड़ा है वैसा प्रभाव आर्यसमाज के दर्शन का नहीं पड़ा। हम इस भ्रमोत्पादक कथन के लए मान्य वष्णु प्रभाकर जी को कतई दोष नहीं देते। उनका कथन इस दृष्टि से यथार्थ है क ऋ ष-दर्शन का जितना प्रचार होना चाहिए था उतना प्रचार इस समय नहीं हो रहा है। एक भावनाशील आर्य होने के नाते आपने जो अनुभव कया सो ठीक है। तथ्य यही है क आर्यसमाज के नेताओं की तीन पीढ़ियों ने असह्य दुःख कष्ट झेलकर, जानें वारकर, रक्तरंजित इतिहास रचकर ऋ ष दर्शन की संसार पर अ मट व गहरी छाप लगाई। चौथी पीढ़ी आन्तरिक शत्रु की घेराबन्दी में फंसकर हतोत्साहित ही नहीं हुई पूर्णतया पराजित व असहाय हो गई।

पराभव कैसे हुआ?ः- यह घेराबन्दी संस्थावादियों या स्कूल पन्थियों ने की। आर्यसमाज संस्थावाद के कीच-बीच फंसकर शक्षा व्यापार मण्डल का रूप धारण कर गया। वैदिक दर्शन का प्रचार तो कुछ व्यक्ति तथा कुछ ही संस्थायें कर रही हैं। यहाँ पहली तीन पीढ़ी के महापुरुषों के कुछ नाम देकर उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करना हमारा कर् ाव्य बनता है।

तीन पीढ़ियों के आग्नेय नेताः— पं. गुरुद ा वद्यार्थी और वीर शरोम ण पं. लेखराम प्रथम पीढ़ी की दो वभूतियाँ थीं।

श्री स्वामी नित्यानन्द महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द महाराज, स्वामी दर्शनानन्द महाराज, स्वामी योगेन्द्रपाल, पं. गणपति शर्मा, आचार्य रामदेव दूसरी पीढ़ी के तपस्वी सर्वस्व त्यागी मशनरी नेता थे।

महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. धर्म भक्षु, पं. रामचन्द्र देहलवी, भूमण्डल प्रचारक मेहता जै मनि, पं. गंगाप्रसाद द्वय, आचार्य चमूपति, वीर शरोम ण श्याम भाई, क्रान्तिवीर नरेन्द्र, कर्मवीर लक्ष्मण आर्योपदेशक, कुँवर सुखलाल, स्वामी अभेदानन्द, पं. अयोध्याप्रसाद तीसरी पीढ़ी के सम र्पत नेता थे।

चौथी पीढ़ी के नेता जोड़-तोड़ वादी कुर्सी भक्त, चुनाव तनाव के चक्करों में उलझकर मशन को गौण बनाने का कलङ्क लेकर संसार से गये। ये लोग शक्षा व्यापार मण्डल के सुनियोजित संगठन का सामना न कर पाये। गुरुकुल भी निष्प्राण हो गये। बड़ों से सम्पदा तो अपार मल गई परन्तु न तो श्रीमद्दयानन्द उपदेशक वद्यालय लाहौर का स्थान कोई संस्था ले पाई और न स्वामी स्वतन्त्रानन्द के रिक्त स्थान की पूर्ति ही समाज कर पाया।

भू म के गुरुत्व आकर्षण का नियमः— तथा प यह मानना पड़ेगा क पहली तीन पीढ़ियों ने इतना ठोस और व्यापक प्रचार कया क सकल वश्व के वैचारिक चन्तन तथा व्यवहार में

भू म के गुरुत्व आकर्षण के नियम के सदृश मह ष दयानन्द के गुरुत्व आकर्षण का नियत ओतप्रोत है। जैसे यह नियम सब मानवीय गति व धयों में ओतप्रोत है परन्तु दिखाई नहीं देता ठीक इसी प्रकार सब मत पन्थों के मानने वालों की सोच और व्यवहार में मह ष दयानन्द का दर्शन ओतप्रोत है। यह छाप और प्रभाव भले ही देखने वालों को दिखाई न दे परन्तु इतिहास इसकी साक्षी दे रहा है। यह सब कुछ आपके सामने है। हाँ! हमें यह तो मान्य है क अन्ध वश्वासों की अन्धी आँधी सब मत पन्थों को उड़ाकर ले जाती दीख रही है। लीजिये मह ष दयानन्द जी महाराज के वैदिक दर्शन को दिग्विजय के कुछ तथ्य कुछ बिन्दु इस लेखमाला में देते हैंः-

शैतान कहाँ है?ः-ईसाई तथा इस्लामी दर्शन का आधार शैतान के अस्तित्व पर है। शैतान सृष्टि की उत्प ि के समय से शैतानी करता व शैतानी सखलाता चला आ रहा है। उसी का सामना करने व सन्मार्ग दर्शन के लए अल्लाह नबी भेजता चला आ रहा है। मनुष्यों से पाप शैतान करवाता है। मनुष्य स्वयं ऐसा नहीं सोचता। पूरे वश्व में आज पर्यन्त कसी भी कोर्ट में कसी ईसाई मुसलमान जज के सामने कसी भी अ भयुक्त ईसाई व मुसलमान बन्धु ने यह गुहार नहीं लगाई क मैंने पाप नहीं कया। मुझ से अपराध करवाया गया है। पाप के लए उकसाने वाला तो शैतान है।

कसी न्यायाधीश ने भी कहीं यह टिप्पणी नहीं की क तुम शैतान के बहकावे में क्यों आये? दण्ड कर्ता को ही मलता है। कर्ता की पूरे वश्व के कानून वद् यही परिभाषा करते हैं जो सत्यार्थप्रकाश में लखी है अर्थात् 'स्वतन्त्रकर्ता' कहिये शैतान कहाँ खो गया? फांसी पर तो इल्मुद्दीन तथा अ दुल रशीद चढ़ाये गये। क्या यह मह ष दयानन्द दर्शन की वजय नहीं है? अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इरान, पा कस्तान व मश्र में इसी नियम के अनुसार अपराधी फांसी पर लटकाये जाते हैं और कारागार में पहुँचाये जाते हैं।

सर सैयद अहमद का लेख याद कीजियेः–मुसलमानों के सर्वमान्य नेता तथा कुरान के भाष्यकार सर सैयद अहमद खाँ ने अपने ग्रन्थ में एक कहानी दी है। एक मौलाना को सपने में शैतान दीख गया। मौलाना ने झट से उसकी दाढ़ी को कसकर पकड़ लया। एक हाथ से उसकी दाढ़ी को खींचा और दूसरे हाथ से शैतान की गाल पर कस कर थप्पड़ मार दिया। शैतान की गाल लाल-लाल हो गई। इतने में मौलाना की नींद खुल गई। देखता क्या है क उसके हाथ में उसी की दाढ़ी थी जिसे वह खींच रहा था और थप्पड़ की मार से उसी का गाल लाल-लाल हो गया था।

इस पर सर सैयद की टिप्पणी है क शैतान का अस्तित्व कहीं बाहर नहीं (खारिजी वजूद) है। तुम्हारे मन के पाप भाव ही तुम से पाप करवाते हैं। अब प्रबुद्ध पाठक अपने आपसे पूछें क यह क्रान्ति कसके पुण्य प्रताप से हो पाई? यह कसका प्रभाव है? मानना पड़ेगा क यह उसी ऋ ष का जादू है जिसने सर्वप्रथम शैतान वाली फ़लास्फ़ी की समीक्षा करके अण्डबण्ड-पाखण्ड की पोल खोली।

'जवाहिरे जावेद' के छपने परः-देश की हत्या होने से पूर्व एक स्वाध्यायशील मुसलमान वकील आर्य सामाजिक साहित्य का बड़ा अध्ययन कया करता था। उस पर मह ष के वैदिक सद्धान्त का गहरा प्रभाव पड़ता गया परन्तु एक वैदिक मान्यता उसके गले के नीचे नहीं उतर रही थी। जब जीव व प्रकृति भी अनादि हैं, इन्हें परमात्मा ने उत्पन्न नहीं कया तो फर

परमात्मा इनका स्वामी कैसे हो गया? प्रभु जीव व प्रकृति से बड़ा कैसे हो गया? तीनों ही तो समान आयु के हैं। न कोई बड़ा और न ही छोटा है।

आचार्य चमूपति की मौ लक दार्शनिक कृति 'जवाहिरे जावेद' के छपते ही उसने इसे क्रय करके पढ़ा। पुस्तक पढ़कर वह स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास आया। महाराज के ऐसे कई मुसलमान प्रेमी भक्त थे। उसने स्वामी जी से कहा क आर्यसमाज की सब मान्यताएँ मुझे जँचती थीं, अपील करती थीं परन्तु प्रकृति व जीव के अनादि व का सद्धान्त मैं नहीं समझ पाया था। पं. चमूपति जी की इस पुस्तक को पढ़कर मेरी सब शंकाओं का उ ार मल गया।

 मत्रो! कहो क यह कस की दिग्विजय है। इसी के साथ यह बता दें क दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार में कसी गली में एक प्र सद्ध मुस्लिम मौलाना महबूब अली रहते थे। मूलतः आप चरखी दादरी (हरियाणा) के निवासी थे। आपने भी यह अद्भुत पुस्तक पढ़ी। फर आपने एक बड़ा जोरदार लेख लखा। श्री सत्येन्द्र संह जी ने हमें उस लेख का हिन्दी अनुवाद करने की प्रेरणा दी। अब समय मलेगा तो कर देंगे। इस लेख में पण्डित जी के एतद् वषयक तर्कों को पढ़कर मौलाना ने सब मौल वयों से कहा था क यदि प्रकृति व जीव के अनादित्व को स्वीकार न कया जावे तो कुरान व र्णत अल्लाह के सब नाम निरर्थक सद्ध होते हैं। मौलाना की यह युक्ति अकाट्य है। कैसे? अल्लाह के कुरान में ९९ नाम हैं यथा न्यायकारी, पालक, मा लक, अन्नधन (रिजक) देने वाला आदि। अल्लाह के यह गुण व नाम भी तो अनादि हैं। जब जीव नहीं थे तो वह कसका पालक, मा लक था? कसे न्याय देता था? प्रकृति उत्पन्न नहीं हुई थी तो जीवों को देता क्या था? तब वह स्रष्टा (खा लक) कैसे था? कससे सृजन करता था? मौलाना की बात का प्रतिवाद कोई नहीं कर सका। अब प्रबुद्ध पाठक निर्णय करें क यह कस की छाप है? यह वैदिक दर्शन की वजय है या नहीं?

मरयम कुमारी थी क्या?ः- मुसलमान व ईसाई दोनों ही हज़रत ईसा का जन्म कुमारी मरयम से मानते आये हैं। अब वश्व प्र सद्ध दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रस्सल तथा सर सैयद की कोटि के वचारक ऐसा नहीं मानते। सर सैयद अहमद खाँ ने तो लाहौर के एक पठित मुस्लिम युवक के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री ईसा के जन्म वषयक तर्क भी वही दिया जो पं. लेखराम जी ने कुल्लियात आर्य मुसा फर में दिया है। अमेरिका से प्रका शत एक पुस्तक में कई युवा पादरियों ने अनेक ऐसे-ऐसे वैदिक वचारों को स्वीकार कया है।

पुराण व्यासकृत नहींः– हरिद्वार के सन् १८७९ के कुम्भ तक ऋ ष वरो धयों का सबसे बड़ा सनातनी सेनापति पं. श्रद्धाराम फलौरी था। वह ऋ ष की शत्रुता में काशी वालों से भी तब तक कहीं आगे था। उसने लखा है क १८ पुराण व्यासकृत नहीं।१ यह सन्देश इस युग में सर्वप्रथम ऋ ष ने सुनाया। यह छाप ऋ ष की वैदिक वचारधारा की नहीं तो कसकी है?

वेद संहितायें चार ही हैंः– पौरा णक तो उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ सबको वेद ही मानते थे। मह र्ष का घोष था क चार संहितायें ही ईश्वरीय वाणी हैं। त्रिवेदी और चतुर्वेदी ब्राह्मण तो पाये जाते हैं परन्तु कई वद्वानों को सात उपनिषदें कण्ठाग्र हैं फर वे सप्तवेदी और आठ-दस उपनिषदों के वद्वान् अष्टवेदी, दशवेदी और एकदशवेदी क्यों नहीं? अमेरिका से प्रका शत स्द्गष्ह्म्द्गह्ल ञ्जद्गड्डष्द्धद्बठ्ठद्दह्य शद्घ ञ्जद्धद्ग ङ्कद्गस्रड्डह्य के ईसाई लेखक ने तथा डॉ. अ वनाशचन्द्र वसु सरीखे सब लेखकों ने चार संहिताओं को ही वेद माना है। यह कसके पुण्य प्रताप का फल है।

वेद के यौ गक अर्थः– वेद भाष्यकारों को मह ष ने आर्ष ग्रन्थों के आधार पर वेदभाष्य करने के लये यौ गक अर्थों की कुञ्जी दी। ॥…….. पुस्तक के अमेरिकन लेखक ने भी डंके की चोट से मह ष की वेदभाष्य की इस वधा को स्वीकार कया है। कौन है जो इस मूलभूत आर्ष मान्यता की इस दिग्विजय को मह ष दयानन्द का वश्वव्यापी प्रभाव न मानेगा?

न्याय की रात या न्याय का दिनः– ईसाई मुसलमान सभी प्रलय की रात (या दिन) को ईश्वरीय न्याय के सद्धान्त को मानते आये हैं। इसी को अंग्रेजी में —— कहा जाता है। अब डॉ. गुलाम जेलानी की लोक प्रय पुस्तकों में इस्लाम का नया दार्शनिक दृष्टिकोण सामने आया है। वह यह घोषणा कर रहे हैं क अल्लाह ताला प्रतिपल न्याय करता है। जिसकी आँखें हैं वे देख रहे हैं क सारे संसार पर ऋ ष की दार्शनिक छाप का गहरा प्रभाव है। आर्यसमाज की वेदी से ही दार्शनिक सद्धान्तों का प्रचार बन्द होने से स्कूल खोले, नारी उद्धार कया, स्वराज्य के मन्त्र द्रष्टा की रट लगाने वालों के दुष्प्रचार को प्रमुखता मलने से भ्रामक वचार फैल गया क आर्यसमाज के दार्शनिक वचारों का संसार पर कोई वशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य सत्यामृतप्रवाह लेखक पं. श्रद्धाराम जी।

– वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

अवतारवाद का अन्त होगा? रामनिवास गुणग्राहक

MARCH 14, 2015 LEAVE A COMMENT

अवतारवाद की अनिष्टकारी कल्पना जिसने भी कभी की होगी, तब उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा क एक दिन कोई भी यूँ ही मुँह उठाकर स्वयं को परमात्मा का अवतार घो षत कर देगा। अवतारवाद की अवधारणा चाहे जब से चली हो, ले कन प्रतीत होता है क वगत ५०-६० वर्षों के कालखण्ड में इस अवतारवाद ने कुछ अ धक ही उन्नति कर ली है। एक समय था जब क शंकराचार्य से लेकर सन्त तुलसी तक सब साधु-महात्मा भक्त बनकर ही आनन्द की अनुभूति कर लेते थे, स्वामी ववेकानन्द तक को भगवान बनने की न सूझी। आज की बात करें तो लगता है भक्त बनने में कोई अ धक सुख शेष नहीं रहा, जिसे देखो भगवान बनने में लगा हुआ है। सम्भवतः पुरानी पीढ़ी के धर्मशील लोगों को स्मरण हो क सन् १९७० के आस-पास एक पूरा परिवार ही व भन्न परमात्माओं का अवतार बनकर भक्त मण्डली की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे थे। सन् १९५४ में एक व्यक्ति ने- 'स्वामी हंस महाराज' नाम रखकर स्वयं को श्री कृष्ण का अवतार घो षत कर दिया। इनकी पत्नी को 'जगत् जननी' की उपा ध मल गई। इस जगत् -जननी ने चार पुत्रों को जन्म दिया और चारों ही अवतार बन गये। बड़ा पुत्र सत्यपाल- 'बाल भगवान' बनकर 'सन्तलोक के स्वामी' कहलाये। दूसरे महीपाल 'शंकर के अवतार' बनकर 'भोले भण्डारी' के नाम से प्र सद्ध हुए। तीसरे धर्मपाल-प्रजापति ब्रह्म के अवतार बनकर भक्त मण्डली में चक्रवर्ती राजा के नाम से वख्यात हुए। सबसे छोटे प्रेमपाल ने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' घो षत करके देश- वदेशों में मनमानी लीलाएँ कीं।

इनकी लीला स्थ लयों में इंग्लैण्ड और अमेरिका का नाम वशेष उल्लेखनीय हैं। वैसे तो ये गोरे भक्त-भक्तिनों के साथ देश- वदेश में खूब आते-जाते रहते थे, ले कन नवम्बर १९७२ में लगभग ९०० गौरांग भक्त-भक्तिनों के साथ पालम हवाई अड्डे पर उतरे तो स्वयं तो कुछ वशेष शष्य- शष्याओं के साथ राल्स रॉयस कार में निकल गए। इनका निजी स चव बिहारी संह कस्टम अ धकारियों से सामान लेने गया तो कस्टम वालों ने एक बक्स की चाबी माँगी। चाबी तो पूर्ण परमात्मा ले उड़े थे, जब उनसे मँगाकर बॉक्स खोला गया तो उसमें दस लाख रुपये के सोना, हीरे व डॉलर आदि निकले। परमात्मा की चोरी पकड़ी गई। इतना ही नहीं एक वर्ष पूर्व १९७१ में इनके भक्तों ने भगवान की एक पत्रकार वार्ता रखी जिसमें आपने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' कहते हुए यह भी घोषणा की क 'मैं हिन्दू नहीं हूँ।' अगले दिन समाचार पत्रों में इस वार्ता का ववरण छापा तो नवभारत टाइम्स में छपे कुछ श दों को लेकर इनके भक्त कु पत हो गये और नवभारत टाइम्स के कार्यालय पर पथराव कया जिसमें कई घायल हुए और एक सपाही का प्राणान्त हो गया।

हमारे अवतारवादी बन्धु तो धन्य हो गये होंगे, इतने भगवानों को एक ही समय व एक ही परिवार में पाकर। पता नहीं क्यों सनातन धर्म वालों को यह सब अच्छा नहीं लगा। मेरठ के कट्टर सनातनधर्मी भक्त श्री रामशरण दास जी लखते हैं- 'भारत में लगभग ढ़ाई सौ से ऊपर अवतार हैं और मैं सैकड़ों से भेंट कर चुका हूँ..... जो अपने को भगवान श्री राम का अवतार तो कोई अपने को भगवान श्री कृष्ण का, कोई अपने को भगवान श्री शंकर का, तो कोई स्वयं को भगवती श्री दुर्गा का अवतार बता-बताकर डोल रहे हैं और लूट रहे हैं स्वयं पर ब्रह्म परमात्मा बनकर।..... हाय-हाय कैसे रक्षा होगी मेरे इस देश की? इस महान् परम प वत्र हिन्दू जाति की इन महान् कालने म पाखण्डी नकली अवतारों से?' सनातन धर्म प्रतिनि ध सभा पंजाब के महामन्त्री और केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के मन्त्री स्वामी चरणदास जी महामण्ड़लेश्वर ने गाँधी मैदान में एक सार्वजनिक सभा के अध्यक्षीय भाषण में अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा था- केवल दिल्ली में पछले ८-१० वर्षों से १४ ढ़ोंगी व्यक्ति हिन्दुओं में बड़े हो गये हैं जो अपने को अवतार कहते हैं और हिन्दू धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं।

भक्त रामशरण दास जी- 'धर्म कालने म पाखण्डी नकली अवतारों की चर्चा करते हैं। प्रश्न होता है क क्या कोई असली अवतार भी होता है? क्या कोई भी सनातनधर्मी वद्वान्, साधु-संन्यासी या धर्माचार्य सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त परमात्मा का असली अवतार प्रमा णत कर सकता है? जब से हमारे क थत सनातनधर्मी सच में पुराणपन्थी धर्म गुरुओं ने पूर्ण परमात्मा को भौतिक शरीरधारी बना दिया, तब से इस अवतारवाद के पाखण्ड ने संसार के व भन्न क्षेत्रों में ईश्वर पुत्रों, पीर-पैगम्बरों की एक नई शृंखला का बीजारोपण कर दिया यही बीजारोपण आज वकृति की सीमा पार करता हुआ क थत सन्त रामपालदास पर आकर पहुँच गया। अगर अब भी हमारे सनातनधर्मी इस पाखण्ड के वरुद्ध खड़े न हुए तो आगे चलकर इसका और भी कुत्सित चेहरा हमारे सामने आकर रहेगा। भर्तृहरि ने सच कहा है-

ववेकभ्रष्टानां भवति वनिपातः शतमुखः।

अर्थात् ववेक भ्रष्ट व्यक्ति व समाज का हर दिशा व हर दृष्टि से पतन ही होता है। इस संसार का एक अनुभव सद्ध सद्धान्त है क कोई वस्तु हमारे लए जितनी उपयोगी,

लाभदायक व कल्याणकारी होती है, उसका दुरुपयोग उतना ही घातक व अकल्याणकारी होता है। आयुर्वेद के ऋ ष लखते हैं-

प्राणाः प्राणभृतां अन्नं तद् अयुक्त्या निहन्ति असून्।

वषं प्राणहरं तत् च, युक्तियुक्तं रसायनम्।।

अर्थात् अन्न प्राण का भरण-पोषण करने वाला है। अन्न गलत ढंग से खाया जाये तो वष बनकर प्राणघातक बन जाता है और युक्तियुक्त ढंग से खाया जाये तो रसायन का काम करता है।

अन्न हमारे जीवन का आधार है- 'अन्नं वै प्रा णनां प्राणः', 'अन्नं वै ब्रह्म तद् उपासीत्' जैसे ऋ ष वचन इसकी पुष्टि करते हैं। सोचने की बात है क ऋ षयों की दृष्टि में अन्न का दुरुपयोग प्राण-पोषण के स्थान पर प्राण-घातक परिणाम देता है। हम जाने-अनजाने में अन्न का दुरुपयोग करके अनेक प्रकार की भयंकर बीमारियों का शकार होते रहते हैं। यही स्थिति धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में है। सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् परमात्मा को देह के बन्धन में डालकर, एक देशी बनाकर पछले तीन-चार हजार वर्षों से हमारे धर्मगुरु, धर्माचार्य ईश्वर और धर्म का जो निजी स्वार्थों के लए जो भयंकर दुरुपयोग कर रहे थे, उसका परिणाम तो आसाराम और रामपाल के रूप में आना ही था। सारे सनातनधर्मी कहलाने वाले हिन्दू पौरा णक यह बता दें क श्रीराम और श्रीकृष्ण परमात्मा का अवतार हो सकते हैं तो आसाराम और रामपाल क्यों नहीं हो सकते? जब पुराणपन्थी बिना सद्धान्त, बिना तर्क और बिना वेद शास्त्रों के प्रमाण दिये, श्री राम-श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार मानकर पूजा कर-करा सकते हैं तो कबीरपन्थी रामपाल को परमात्मा का अवतार मानकर क्यों नहीं पूज सकते?

हम यहाँ रामपाल और आसाराम की श्रीराम और श्री कृष्ण से तुलना नहीं कर रहे। निःसन्देह मर्यादा पुरुषो ाम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण का जीवन पूर्णतः प वत्र था, वे हर दृष्टि से महापुरुष थे, हम सबके आदर्श थे। प्रश्न यह है क क्या कोई शरीरधारी परमात्मा हो सकता है? अगर सच में एक घड़े या लोटे में समुद्र का सम्पूर्ण जल आ सकता है तो इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता क घड़ा सोने का है या लोहे का। सृष्टि में सर्वत्र नियम- सद्धान्त ही काम करते हैं, सद्धान्ततः मनुष्य सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त नहीं हो सकता। निष्कर्षतः हम यह कहना चाहते हैं क रामपाल और आसाराम का परमात्मा होना निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा पाखण्ड है, अन्ध वश्वास है तो श्री राम और श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार कहना-मानना भी बहुत बड़ा पाखण्ड और अन्ध वश्वास है। हम सबको एक बात गाँठ बाँध लेनी चाहिये क जब तक श्री राम और श्री कृष्ण आदि महापुरुषों को परमात्मा का अवतार मानकर पूजने, भक्ति करने के पाखण्ड को जी वत रखा जाएगा, तब तक देश और दुनियाँ से बाल योगेश्वर हंस, आसाराम और रामपाल जैसे पाखण्डियों की परम्परा को मटाया नहीं जा सकेगा। बीज रहेगा तो बेल भी उगेगी-बढ़ेगी और उस पर फूल-फल भी लगेंगे जो आगे बीज भी पैदा करेंगे।

आर्यो! तनिक आप भी अपनी अकर्मण्यता-असफलता पर वचार करना सीख लो। ''हम ये कर रहे हैं, हम वो कर रहे हैं।'' कहकर अपनी पीठ थपथपाने वालो। 'हम क्या नहीं कर पा रहे' का भी कभी चन्तन कर लया करो। ऋ ष दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय की आग

की एक चनगारी को अपने हृदय में सुलगने-धधकने का अवसर देकर देखो। वे कोई दूसरी दुनियाँ के पुरुष नहीं थे। इसी समाज और राष्ट्र की ऐसी ही परिस्थिति में पल-बढ़ कर उनका व्यक्ति व बना था। उन्होंने जो कुछ लया यही से लया। समाज व राष्ट्र की लगभग ऐसी ही दुर्दशा तब थी, जिसे देखकर वे चैन की नींद तक नहीं ले पाते थे। एक हम हैं क सब कुछ देख-सुनकर भी कबूतर की तरह आँख बन्द कर लेते हैं, शतुरमुर्ग की तरह धरती में मुँह धँसा लेते हैं- सोचते हैं संकट टल गया। आर्यो! हमारी अनदेखी से संकट टल जाता तो धरती तल पर कभी कोई समस्या, कोई संकट रहता ही नहीं। आप मानो या न मानो, सच यह है क भारत की हर समस्या, हर संकट आर्यों के अनार्यपन की उपज हैं। ऋ ष दयानन्द के अनुयायी कहलाने वाले सद्धान्तहीन लोगों के कारण ही वेद वद्या के प्रचार-प्रसार का अ भयान निष्प्राण होकर रह गया है। यह कोई छोटा अपराध नहीं है, आर्यो! अपने जीवन की उपल िधयों का सच्चे हृदय से आंकलन करो। देखो क हमने झूठे और खोखले मान-सम्मान के अलावा आर्यसमाज में आकर क्या पाया?

पत्थर जोड़ने (भवन बनाने) और पत्थरों पर नाम लखाने से आगे बढ़कर जीवन-निर्माण के क्षेत्र में हमारी उपल िध क्या रही? आर्यो! जीवन को घाटे का सौदा मत बनाओ, भवन-निर्माण से जीवन-निर्माण अ धक पुण्यप्रद कर्म है। देश में व्याप्त धा र्मक-पाखण्ड, अन्ध वश्वास, भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिगत वद्वेष और पारिवारिक बिखराव- उन सब रोगों की एक ही अमोघ औष ध है और वह है वेद वद्या का प्रचार-प्रसार। यह काम केवल और केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। संकल्प लो क हम स्वयं वेद पढ़ेंगे और वेद वद्या के प्रचार-प्रसार में ही अपना तन, मन, धन और समय लगायेंगे। ध्यान रखें जब तक हम स्वयं वेद पढ़ना प्रारम्भ नहीं करेंगे मनो वज्ञान का सद्धान्त है क तब तक हम वेद के लए कुछ भी नहीं कर सकते। वेद प्रचार करने-कराने का दिखावा तो कोई भी कर सकता है, ले कन सच्चे अर्थों में वेद वद्या के प्रचार-प्रसार में स क्रय सहयोग व समर्थन देकर आर्य होने का सच्चा प्रमाण, सच्चा आदर्श वही प्रस्तुत कर सकता है जो स्वयं नित्य वेद स्वाध्याय करते हो। मत्रो! क्या आप वेद-स्वाध्याय का व्रत लेकर अपने व वश्व के कल्याण करने की दिशा में छोटा-सा दिखने वाला एक बड़ा कदम उठा रहे हो? यदि हाँ तो लेखक की हर्दिक शुभकामनाएँ सदा आपके साथ हैं, ईश्वर की कृपा, करुणा और दया सदैव आपका मार्ग प्रशस्त करें!!

– मह र्ष दयानन्द स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान

चलभाष– ०७७९७८९४९९१

डा अम्बेडकर का खंडन प. शवपूजन संह कुशवाह द्वारा भाग २

FEBRUARY 14, 2015 1 COMMENT

पछले लेख में शवपूजन संह जी द्वारा अम्बेडकर साहब के अछूत कौन ओर केसे का खंडन हमने प्रका शत कया था अब शुद्रो की खोज की उन बातो के खंडन का अंश जो अम्बेडकर जी ने वैदिक वचारधरा पर आक्षेप कया था उसका प्रत्युतर है |
डा. अम्बेडकर – पुरुष सूक्त ब्राह्मणों ने अपनी स्वार्थ सद् ध के लए प्र क्षप्त कया है |कोल

बुक का कथन है क पुरुष सूक्त छंद तथा शैली में शेष ऋग्वेद से सर्वथा भन्न है |अन्य भी वद्वानों का मत है क पुरुष सूक्त बाद का बना है |

शवपूजन संह जी – आपने जो पुरुष सूक्त पर आक्षेप कया है ये आपकी वेद की अन भज्ञता प्रकट करता है |आ धभौतिक दृष्टि से चारो वर्णों के पुरुषो का समुदाय एक पुरुष रूप है |इस समदाय पुरुष या राष्ट्र पुरुष के यथार्थ परिचय के लए पुरुष सूक्त के मुख्य मन्त्र -ब्राह्मणोंऽस्य मुखमासीत ...(यजु ३९/११)

पर वचार करना चाहिय |उक्त मन्त्र में कहा है ब्राह्मण मुख है, क्षत्रिय भुजाय, वैश्य जंघाए,शुद्र पैर ,,केवल मुख पुरुष नही ,भुजाय पुरुष नही ,जंघाए पुरुष नही ,पैर पुरुष नही अ पतु मुख ,भुजाय ,जंघाए ,पैर इन सबका समुदाय पुरुष है |वह समुदाय भी यदि असंगत ,या क्रमरहित अवस्था में है तो उसे हम पुरुष नही कह सकते है |उसे पुरुष तभी कहेंगे जब वो एक वशेष प्रकार के क्रम में हो ओर वशेष प्रकार से संगठित हो |राष्ट्र में मुख के स्थापन ब्राह्मण है ,भुजाओं के क्षत्रिय ,जंघाओं के वैश्य ओर पैरो के शुद्र |राष्ट्र के ये चारो वर्ण जब शरीर के मुख आदि अवयवो की तरह व्यवस्थित ओर सुसंगत हो जाते है तभी इनकी पुरुष संज्ञा है |अव्यवस्थित तथा छीन भन अवस्था में स्थित मनुष्य समुदाय को पुरुष नही पुकार सकते है |आ धभौतिक दृष्टि में यह सुव्यवस्थित तथा एकता के सूत्र में परोया हुआ ज्ञान ,क्षात्र , व्यवसाय तथा परिश्रम – मजदूरी इनका निर्देशक जनसमुदाय ही एक पुरुष रूप है |

च र्चत मन्त्र का मह्रिषी दयानद इस प्रकार अनुवाद करते है " इस पुरुष की आज्ञा के अनुसार वद्या आदि उत्तम गुण तथा सत्य भाषण ओर सत्योपदेश आदि श्रेष्ट कर्मो से ब्राह्मण वर्ण उत्पन्न होता है |इन गुण कर्मो के सहित होने से वह पुरुष उत्तम कहलाता है और ईश्वर ने बल पराक्रमयुक्त आदि पूर्वोक्त गुणों से क्षत्रिय को उत्पन्न कया |इस पुरुष के उपदेश से खेती,व्यापर ओर सब देशो की भाषाओ को जानना तथा पशुपालन आदि मध्यम गुणों से वैश्य वर्ण सद्ध होता है |जैसे पग सबसे नीचे का गुण है वैसे मुर्खता आदि गुणों से शुद्र वर्ण सद्ध होता है |

आपका लखना की पुरुष सूक्त बहुत बाद में वेदों में जोड़ दिया गया सर्वथा भ्रमपूर्ण है |चारो वेद ईश्वर का ज्ञान है पुरुष सूक्त बाद का नही है |मैंने अपनी पुस्तक ऋग्वेद के १० मंडल पर पाश्चताप वद्वानों का कुठाराघात में सम्पूर्ण " पाश्चताय और प्राच्य वद्वानों का खंडन कया है |

डा. अम्बेडकर – शुद्र क्षत्रियो के वंशज होने से क्षत्रिय है |ऋग्वेद में सुदास, शन्यु, तुरवाशा, त्र्प्सू , भरत आदि शुद्रो के नाम आये है |

प. शवपूजन संह जी – वेदों के सभी शब्द यौ गक है रूढ़ नही |आपने ऋग्वेद में जिन नामो को प्रद र्शत कया है |वे ऐतिहा सक नाम नही है| वेद में इतिहास नही है क्यूं क वेद सृष्टि के आरम्भ में दिया ज्ञान है|

डा.अम्बेडकर – छत्रपति शवाजी शुद्र तथा राजपूत हूणों की सन्तान है |

प. शवपूजन संह जी – शवाजी शुद्र नही वरन क्षत्रिय थे |इसके लए अनेको प्रमाण इतिहास में भरे पड़े है |राजस्थान के प्रख्यात इतिहासक ,महोपाध्याय डा. गौरी शंकर हरीचंद औझा लखते है – मराठा जाति द क्षणी हिन्दुस्तान की रहने वाली है |इनके प्र सद्ध राजा क्षत्रपति शवाजी का मूल मेवाड़ का ससोदिया राज्य वंश ही है |क वराज श्यामलदासजी लखते है क - शवाजी महाराणा अजय संह के वंश में थे |यहो सद्धांत बालकृष्ण , लट् आदि का है |इसी प्रकार राजपूत हूणों की सन्तान नही शुद्ध क्षत्रिय थे |श्री चंतामणी वनायक वेद्य ऍम ए

,श्री ई.बी.कावेल ,श्री शेरिंग, श्री वहीलर, श्री हंटर, श्री क्रुक ,पं डत नागेब्द्र भट्टाचार्य आदि वद्वान् राजपूतो को शुद्ध क्षत्रिय मानते है| प्रवी कौं सल ने निर्णय कया है क जो क्षत्रिय भारत में रहते है और राजपूत एक ही श्रेणी के है |
इस तरह उन्होंने अपने खंडन अम्बेडकर जी को भी पंहुचाय ले कन अम्बेडकर जी इसके ५ साल ओर ३ माह बाद चल बसे |उन्होंने इसका प्रत्युतर भी नही दिया ओर ना ही अपनी जिद्द के कारण अपनी उन दोनों कताबो में कोई परिवर्तन कया |

पाखण्ड खं डनी

डा . अम्बेडकर का खंडन प. शवपूजन संह कुशवाह (आर्य समाज) द्वारा

FEBRUARY 11, 2015 1 COMMENT

डा . शवपूजन संह जी आर्य समाज के एक उत्क्रष्ट वद्वान् थे तथा अच्छे वैदिक सद्धांत मंडन कर्ता थे |उन्होंने अम्बेडकर जी की दो कताब शुद्रो की खोज ओर अच्छुत कौन ओर केसे की कुछ वेद वरुद्ध वचारधारा का उन्होंने खंडन कया था |ये उन्होंने अम्बेडकर जी के देह्वास के ५ साल पूर्व भ्रान्ति निवारण एक १६ पृष्ठीय आलेख के रूप में प्रका शत कया ओर अम्बेडकर साहब को भी इसकी एक प्रति भेजी थी |हम यहा उसके कुछ अंश प्रस्तुत करते है –
डा. अम्बेडकर – आर्य लोग नि र्ववाद से दो संस्कृति ओर दो हिस्सों में बटे थे जिनमे एक ऋग्वेद आर्य ओर दुसरे यजुर्वेद आर्य थे ,जिनके बीच बहुत बड़ी सांस्कृतिक खाई थी | ऋग्वेदीय आर्य यज्ञो में वश्वास करते थे ओर अर्थ्व्वेदीय जादू टोनो में |
प. शव पूजन संह जी – दो आर्यों की कल्पना आपके ओर आप जेसे कुछ मष्तिस्क की उपज है ,ये केवल कपोल कल्पना ओर कल्पना वलास है केवल |इसके पीछे कोई एतिहा सक प्रमाण नही है |कोई एतिहा सक वद्वान् भी इसका समर्थन नही करता है |अर्थववेद में कसी प्रकार का जादू टोना नही है |
डा. अम्बेडकर – ऋग्वेद में आर्य देवता इंद्र का सामना उसके शत्रु अहि वृत्र (सर्प देवता) से होता है ,जो कालान्तर में नाग देवता के नाम से प्र सद्ध हुआ |
प. शव पूजन संह जी – वैदिक संस्कृत ओर लौ कक संस्कृत में रात दिन का अंतर है |यहा इंद्र का अर्थ सूर्य ओर वृत्र का अर्थ मेघ है यह संघर्स आर्य देवता ओर नाग देवता का न हो कर सूर्य ओर मेघ का है |वैदिक शब्दों के पीछे नेरुक्तिको का ही मत मान्य होता है नेरुक्तिक प्र क्रया से अन भज्ञ होने के कारण आपको यह भ्रम हुआ |
डा. अम्बेडकर – महोपाध्याय डा. काणे का यह मत है क –" गाय की प वत्रता के कारण ही वाजसेनी संहिता में गौ मॉस भक्षण की प्रथा थी |
प. शवपूजन संह जी – काणे जी ने कोई प्रमाण नही दिया है ओर न ही आपने यजुर्वेद पढने का कष्ट उठाया |जब आप यजुर्वेद का स्वाध्याय करेंगे तो स्पष्ट आपको गौ वध निषेध के प्रमाण मलेंगे |
डा. अम्बेडकर – ऋग्वेद से ही स्पष्ट है क तत्कालीन आर्य गौ वध करते थे ओर गौ मॉस भक्षण करते थे |
प. शवपूजन संह जी – कुछ प्राच्य एवम पश्चमी वद्वान् आर्यों पर गौ मॉस भक्षण का दोषारोपण करते है कन्तु कुछ वद्वान् इस मत का खंडन भी करते है |वेद में गौ मॉस

भक्षण का वरोध करने वाले २२ वद्वानों का मेरे पास स सन्धर्भ प्रमाण है |ऋग्वेद में आप जो गौ मॉस भक्षण का वधान आप कह रहे है वो लौ कक संस्कृत ओर वैदिक संस्कृत से अन भज्ञ होने के कारण कह रहे है |जेसे वेद में उक्ष बल वर्धक औष ध का नाम है भले ही लौ कक अर्थ उसका बैल ही क्यूँ न हो |

डा. अम्बेडकर – बिना मॉस के मधु पर्क नही हो सकता है |मधुपर्क में मॉस और वशेष रूप से गौ मॉस एक आवश्यक अंश होता है |

प. शवपूजन संह जी – आपका यह वधान वेद पर नही अ पतु गृहसूत्रों पर आधारित है | गृहसूत्रों के वचन वेद वरोध होने से मान्य नही है |वेद को स्वत: प्रमाण मानने वाले मह्रिषी दयानद के अनुसार – दही में घी या शहद मलाना मधुपर्क कहलाता है |उसका परिमाण १२ तौले दही में ४ तौले शहद या घी मलाना है |

डा. अम्बेडकर – अति थ के लए गौ हत्या की बात इतनी समान्य हो गयी थी क अति थ का नाम ही गौघन पड़ गया था अर्थात गौ की हत्या करने वाला |

प. शवपूजन संह जी – "गौघ्न"का अर्थ गौ की हत्या करने वाले नही है |यह शब्द गौ और हन दो के योग से बना है |गौ के अनेक अर्थ है – वाणी,जल ,सुख वशेष ,नेत्र आदि |धातुपाठ में मह्रिषी पा णनि हन का अर्थ गति ओर हिंसा बतलाते है |गति के अर्थ है – ज्ञान ,गमन ,प्राप्ति |प्राय सभी सभ्य देशो में जब कभी कसी के घर अति थ आता है तो उसके स्वागत करने के लए ग्रह पति घर से बहार आते हुए कुछ गति करता है ,उससे मधुर वाणी में बोलता है | फर उसका जल से स्वागत करता है , फर उसके लए कुछ अन्य सामग्री प्रस्तुत करता है ,यह जानने के लए की प्रय अति थ इन सत्कारो से प्रसन्न है या नही गृहपति की आँखे भी उसकी ओर टकटकी लगाये होती है |गौघ्न का अर्थ हुआ – गौ: प्राप्यते दीयते यस्मै स गौघ्न: अर्थत जिसके लए गौदान दी जाती है , वह गौघ्न कहलाता है |

डा. अम्बेडकर- हिन्दू चाहे ब्राह्मण हो या अब्राह्मण ,न केवल मासाहारी थे अ पतु गौमासाहार भी थे |

प. शवपूजन संह जी -ये बात आपकी भ्रम है , वेदों में गौ मॉस भक्षण का वधान की बात जाने दीजिये मॉस भक्षण भी नही है |

डा. अम्बेडकर – मनु ने भी गौ हत्या पर कोई कानून नही बनाया बल्कि वशेष अवसरों पर उसने गौ मॉस भक्षण को उ चत ठहराया है |

प. शवपूजन संह जी – मनु स्मृति में कही भी मॉसभक्षण का वधान नही है ओर जो है वो प्र क्षप्त है |आपने भी इस बात का कोई प्रमाण नही दिया की मनु ने कहा पर गौ मॉस भक्षण उ चत ठहराया है |मनु (५/५१) के अनुसार मॉस खाने वाला ,पकाने वाला ,क्रय , वक्रय करने वाला इन सबको घातक कहा है |

ये उपरोक्त खंडन के कुछ अंश थे इसमें पूर्व पक्ष अम्बेडकर का अछूत कौन ओर कैसे से था |

अब इस लेख का अगला अंश दूसरी पोस्ट में प्रसारित कया जाएगा जिसमे शवपूजन संह जी द्वारा अम्बेडकर जी की शुद्र कौन पुस्तक के खंडन का कुछ अंश होगा |

आ खर क्या है वैलेंटाइन डे? शवदेव आर्य

JANUARY 28, 2015 LEAVE A COMMENT

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को समाज में इस प्रकार तोड़ा जा रहा है जिसका कोई बखान नहीं कर सकता और यदि लेखनी भारतीयता की व्यथा को व्यक्त करने की को शश भी करे तो उसे चारों ओर से कुचलने का प्रयास कया जाता है। पुनर प ये लेखनी अपने कतव्र्य को कैसे भूल सकती है। ये तो अपने कर्म के प्रति सदैव कटिबद्ध रहती है। इसी लए इसे ब्राह्मण की गौ कहा गया है अर्थात् ब्राह्मण की वाणी। ब्राह्मण को वेद सदैव आदेश देता है क तू अपने कर्तव्य (जागृति) का वस्तार सदा करता रहे। जब-जब भी समाज में अन्धकार का वर्चस्व फैला है तब-तब लेखनी ने सूर्य के अद् वतीय प्रकाश के समान अन्धकार का दमन कया है।

आज भी कुछ इसी प्रकार हो रहा है। सभी को घोर अन्धकार ने इसप्रकार घेर लया है जैसे कसी व्यक्ति के पास अपनी श्रेष्ठ वस्तु है कन्तु वह दूसरे की तुच्छ वस्तु से इतना आकृष्ट हो जाता है क अपनी श्रेष्ठ वस्तु को भूला देता है।

हमारे देश में ऋतुओं के अनुसार पर्व तथा उत्सव मनाने की अद् वतीय परम्परा है । वसन्त पंचमी, मकर संक्रान्ति, माघ पू र्णमा, श्रावणी उपाक्रम, हो लकोत्सव, दीपोत्सव आदि अनेक पर्व इस देश में एक नवीन ऊर्जा का संचार करते है कन्तु दुर्भाग्य है इस भारतवर्ष की युवा पीढ़ी का, जिसने अपने ऊर्जावान् पर्वों को भूला दिया और पाश्चात्य पर्वों को मनाने की प्रथा शुरू कर दी। पाश्चात्य देशों में उन पर्वों को मनाने के पीछे कोई न कोई कारण जरुर रहा होगा, जिसकी वहां आवश्यकता होगी। कन्तु बिना कसी कारण को जाने हमारे भारतवासी भाई लोग इन पर्वों को अपनी मन-मर्जी से मनाते हैं। मनाने के साथ-साथ कभी यह भी वचार नहीं करते क हम जो ये पर्व मना रहे है, इसका उद्देश्य क्या है? क्या लाभ होगें? इत्यादि।

वैलेंटाइन डे, फ्रैंड शप डे आदि अनेक पाश्चात्य पर्वों को मनाने के लए हम सदैव उद्यत रहते हैं कन्तु अपने पर्वों को मनाने के लए जगाना पड़ता है, शोभायात्राएं निकालनी पड़ती हैं, लोगों को भारतीय पर्वों की ओर आकृष्ट करने के लए प्रलोभन दिये जाते हैं। फर भी भारतीय पर्वों के प्रति निराशा भरा वातावरण चहु ओर दृष्टिगोचर होता है।

अभी हाल में ही फरवरी मास में युवाओं को अपनी ओर सर्वा धक आकृष्ट करने वाला पाश्चात्य सभ्यता का पर्व वैलेंटाइन डे आ रहा है। जिस पर्व के सत्यार्थ को न समझ लोग मौज-मस्ती में निमग्न हो सब कुछ गलत कर बैठते है। बिना शादी-सुदा हुए ही भोग- वलासता की सभी हदें पार कर देते हैं। आ खर क्या कारण है, जो इस पर्व को मनाया जाता है? इसके पीछे क्या रहस्य छिपा हुआ है? क्यों क पर्व मनाने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य एवं रहस्य अवश्य छिपा होता है। इस वैलेंटाइन डे की भी बहुत लम्बी कहानी है।

सुहृद पाठकों!

आज से कई वर्षों पूर्व यूरोप की दशा वर्तमान यूरोप से बहुत निम्नस्तर की थी। यूरोप में पहले शादियां नहीं होती थी। लोग रखैलों में वश्वास रखते थे। पूरे यूरोप भर मे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मल सकता, जिसकी एक शादी हुई हो अथवा जिसका एक स्त्री के साथ सम्बन्ध रहा हो। ये परम्परा उनके यहां आज से ही प्रच लत नहीं है अ पतु कई हजार वर्षों से यही होता चला आ रहा है। यूरोप के बड़े-बडे लेखक, वचारक तथा दार्शनिक भी इन्हीं परम्पराओं में सं लप्त थे। वे भी ऐसे ही मौज-मस्ती भरे जीवन को जीना पसन्द करते थे। प्लूटो जैसा दार्शनिक भी एक स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखता प्रत्युत अनेक स्त्रीयों से रखता था। प्लूटो खुद इस बात को इस प्रकार लखता है क ' मेरा 20-22 स्त्रीयों से सम्बन्ध रहा है।' अरस्तु, रुसो आदि पाश्चात्य वचारक इसी प्रकार के थे। इन सभी पाश्चात्य दार्शनिकों ने हैवानियत की सभी हदें पार करते हुए मातृतुल्य पूजनीय स्त्रीयों के सन्दर्भ में एकमत होकर कहते हैं क- ' स्त्री में तो आत्मा होती ही नहीं है। स्त्री तो मेज और कुर्सी के समान है, जब पुरानी से मन भर जाये तो नयी का प्रयोग करो'।

ऐसी घृ णत मान्यता को देख कई बार लोगों का पत्थर दिल भी पघल कर वद्रोह की भावना को जन्म देता है। ऐसे अनेक यूरो पयन हुए जिन्होंने बीच-बीच में इस प्रचलन का वरोध कया। ऐसे ही वरो धयों में एक वैलेंटाइन नामक व्यक्ति भी था। जिसने इस कुप्रथा के प्रति आवाज उठायी। उसका कहना था क हम लेग जो शारीरिक सम्बन्ध रखते हैं, वह कुत्तों की तरह, जानवरों की तरह का है, ये अच्छा व्यवहार नहीं है। इससे शारीरिक रोग होते हैं। इसका सुधार करो, एक पति एक पत्नी के साथ ववाह करके ही रहे, ववाह के बाद ही शारीरिक सम्बन्धों को स्था पत करें। ऐसी बातों को वैलेंटाइन ने घूम-घूम कर लोगों को बताया और लोग भी जागृत हुए।संयोगवश वह एक चर्च के पादरी बन गये। चर्च में आने वाले प्रत्येक नागरिक को ऐसी ही सलाह देने लगे तो लोग प्रायः पूछ लेते क आप ऐसा क्यों कर रहे हो? अपनी परम्पराओं को क्यों तोड़ना चाहते हो? दोष युक्त होने पर भी अपनी संस्कृति तो अच्छी होती है, पुनर प आप ये सब क्यों कर रहे हो? इसके उत्तर में वह कहते क आज-कल मैं भारतीय सभ्यता और दर्शन का अध्ययन कर रहा हूं और मुझे लगता है क भारतीय सभ्यता तथा भारतीय जीवन श्रेष्ठ हैं और इसे स्वीकार करने में कोई हनि भी नहीं है। इसी लए आप लोग मेरी बात को स्वीकार करो, कुछ लोग उनकी उस बात को स्वीकार करते और कुछ लोग अस्वीकार कर देते। धीरे-धीरे चर्च में ही शादीयां कराने लगे। सैकड़ों की संख्या में शादी होने लग गई तथा अनेक लोग इस घृ णत कार्य से रुक गये। वैलेंटाइन के इस कार्य की सूचना पूरे रोम में जगह-जगह होने लगी। धीरे-धीरे ये बात रोम के राजा क्लौडीयस तक भी पहुंच गयी। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा ने तुरन्त वैलेंटाइन को बुलाकर कहा क – तुम ये क्या गलत काम कर रहे हो? तुम अधर्म क्यों फैला रहे हो? अपसंस्कृति को अपना रहे हो? हम बिना शादी के रहने वाले लोग हैं, मौज-मस्ती में डूबे रहने वाले लोगों को तू बन्धन में बांधना चाहते हो, ये सब गलत है। वैलेंटाइन ने कहा – महाराज! मुझे लगता है क ये ठीक नहीं है। ये बोलते ही राजा ने एक न सुनी और तुरन्त ही उसे फांसी की सजा सुना दी। क्लौड़ीयस ने उन सब को बुलाया, जिनकी वैलेंटाइन ने शादी करायी थी।

14 फरवरी 498 ई.वी को खुले मैदान में, सार्वजनिक रूप से वैलेंटाइन को सजा दे दी गई। जिन लोगों की वैलेंटाइन ने शादी करायी थी, वो लोग बहुत दुःखी हुए, इसी दुःख की याद में वैलेंटाइन डे मनाना शुरु हुआ।

आज ये वैलेंटाइन डे भारत में भी आ गया है पर ये बिल्कुल वपरीत है। जिस भारतवर्ष को वैलेंटाइन ने एक आदर्शवादी देश के रूप में स्वीकार कर अपने देश को भी उसी प्रकार बनाने का वचार कया था। जिस देश में शादी होना एक मान्य बात है, आज वहीं बिना शादी के घुमना तो एक आमबात (सामान्य) है। कहां हम कसी के आदर्शवादी थे और आज हम अपने देश को उसी गर्त में ले जाना चाह रहे हैं, जिस गर्त से वैलेंटाइन अपने देश को बचाना चाहता है।

भारतीय लोग पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण मात्र ही नहीं कर रहे अ पतु उसका अन्धानुकरण कर रहे हैं। वैलेंटाइन डे का यह दिवस बड़ा व चत्र है। जो दिवस उस पाश्चात्य महापुरुष के दुःख के रूप में स्वकीर कया जाता है। आज वही दिवस उसके सद्धान्तों से सर्वथा वपरीति होता जा रहा है। भारतवर्ष में शादी के प वत्र बन्ध को तोड़ने के लए इस दिवस को मनाया जाता है।

अब ये वैलेंटाइन हमारे स्कूलों, का ॅलेजों व वश्व वद्यालयों में आ गया है, बड़ी धूम-धाम के साथ इसे मनाया जा रहा है। लड़के-लड़ कयां बिना कुछ सोचे- वचारे एक दूसरे को वैलेंटाइन डे का कार्ड दे रहे हैं। और जो कार्ड होता है उसमें लखा होता है क- “Would You Be My Valentine” I इसका मतलब कसी को मालूम नहीं होता है और अन्धी दौड़ में बस भागते ही रहते हैं। वो समझते हैं क हम जिस कसी से प्यार करते हैं उसको ये कार्ड दिया जाता है, इस लए इस कार्ड को वो सभी को दे देते हैं। ये कार्ड एक या दो लोगों को नहीं देते अ पतु दस-बीस लोगों को दे देते हैं। कोई उनको इस कार्ड में लखे वाक्य का तात्पर्य भी नहीं समझाता।

इस कार्य को बढ़ावा देने के लए टेली वजन चैनल इसका बहुत प्रचार तथा प्रसार करते हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपने काम-धंधे को वस्तृत करने के लए कार्ड, गफ्ट, चा ॅकलेट आदि को दुगुनी अथवा तीगुनी रकम में बेचते हैं।

यदि कसी लड़की को गुलाब दिया जाये और वह लड़की उस गुलाब को स्वीकार कर ले तो वैलेंटाइन और न स्वीकार करे तो उसी क्षण उसके चहरे पर तेजाब डाल दिया जाता है। ये कैसी परम्परा है? जिस कन्या को देवी के तुल्य समझा जाता है, उसी देवी के साथ खलवाड़ हो रहा है। इसमें कोई शक नहीं क नारी ने बहुत तरक्की की है, ले कन यह भी सच है क हमारे पुरुष प्रधान देश में आज भी नारी को दबाया जाता है। समय आ गया है क हम नारी का सम्मान करें। क्यों क कहा भी गया है- ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्त रमन्ते तत्र देवता’। आओ! हम सब मलकर नारी का सम्मान करें। देश को पुनः वश्वगुरु बनाने का यत्न करें।

अम्बेडकर वादी धूर्त का गलत गायत्री मन्त्र का अर्थ और उसका प्रत्युत्तर

JANUARY 27, 2015 5 COMMENTS

कुछ दिन पहले एक अंबेडकरवादी नवबौद्ध मलमूत्र निवासी ने एक पोस्ट मे गायत्री मन्त्र का अत्यन्त गंदा और असभ्य अर्थ कया था और कुछ दुष्ट मुल्लों ने उस पोस्ट को बहुत अ धक शेयर कया था।
उस पोस्ट मे उस महानीच नराधम ने प्रचोदयात् शब्द को प्र+चोदयात को अलग कर के अत्यन्त असभ्य अर्थ कया है। इस मन्त्र पर वचार करने से पहले संस्कृत के कुछ शब्दो पर वचार करे जो हिन्दी मे बिलकुल अलग अर्थों मे प्रयोग करते हैं।

संस्कृत के अनेक शब्द हिन्दी में अपना अर्थ आं शक या पूर्ण रूप से बदल चुकें हैं।
पूरण रूप से अर्थ परिवर्तन- उदाहरण-
1-अनुवाद- (हिन्दी)-भाषान्तर, Translation
(संस्कृत)- व ध और वहित का पुनःकथन (व ध वहितस्यानुवचनमम्नुवादः -न्यायसूत्र 4।2।66),
प्रमाण से जानी हुई बात का शब्द द्वारा कथन(प्रमाणान्तरावगतस्यार्थस्य शब्देन सङ्कीर्तनमात्रमनुवादः -का शका)
2-जयन्ती- (हिन्दी)- जन्म ति थ (संस्कृत)—पताका,आयुर्वेद में औष ध
3- प्रकाशन- (हिन्दी) कसी पुस्तक को छपना या छपवाना, Publication (संस्कृत) – उजाला, प्रकट करना
4-सौगन्ध-(हिन्दी)- कसम (संस्कृत)- सुगन्धि, सुगन्धि युक्त
5-कक्षा- (हिन्दी)- वद्यालय की श्रे ण (संस्कृत)- रस्सी, हाथी को बान्धने की जंजीर, परि ध
6-निर्भर-(हिन्दी)- आ श्रत (संस्कृत)-अत्या धक, जैसे निर्भरनिद्रा= गहरी नींद (हितोपदेश)
7- वश्रान्त- (हिन्दी) थका हुआ (संस्कृत) – वश्राम कया हुआ
आं शक रूप से अर्थ परिवर्तन – उदाहरण-
1- धूप- (हिन्दी)- सूर्य का ताप, सुगं धत धुंआ (संस्कृत)-सुगन्धित धुंआ, सूर्य ताप संस्कृत में नहीं है
2- वह्नि- (हिन्दी)- आग (संस्कृत)- आग, ले जानेवाला
3- साहस- (हिन्दी) – हिम्मत, कठिन कार्य में दृढता, उत्साह,वीरता, हौसला आदि।
(सस्कृत) संस्कृत में साहस के ये अर्थ भी हैं परन्तु संस्कृत में साहस शब्द लूट, डाका, हत्या आदि के अर्थों में प्रयोग होता है।

4 प्रजा- (हिन्दी)- राजा के अधीन जनसमूह (संस्कृत)- राजा के अधीन जनसमूह, सन्तान

पुरानी हिन्दी पुस्तकों मे भी ऐसे शब्दों का प्रयोग मलता है जो आधुनिक हिन्दी के अर्थों के प्रतिकूल और संस्कृत के शब्दों के अनुकूल है —-उदाहरण –
गोस्वामी तुलसीदास की रामचरित मानस –

1- मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक स चव सुमंत बुलाए ॥ यहाँ मंदिर का अर्थ देवालय न होकर राजमहल है।
2- करहूँ कृपा प्रभु आस सुनी काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥ – यहाँ पर निर्भर का अर्थ आ श्रत न हो कर भरपूर है ।
3- खैर खून खांसी खुशी क्रोध प्रीति मद पान। रहिमन दाबे न दबे जानत सकल जहान॥
यहाँ पर पान का अर्थ हिन्दी मे पान का पत्ता (ताम्बूल) न होकर पीना है। आधुनिक हिन्दी

मे पान का प्रयोग पौधे के पत्ते के लए होता है ।
हिन्दी मे बहुत से शब्द ऐसे हैं जो देशज शब्द कहलाते हैं जो संस्कृत से कोई सम्बंध नहीं रखते जैसे लड़का, छोरा, लुगाई, चारपाई, कुर्सी आदि।
****
यदि मैं इंग लश के CAT का अर्थ कुत्ता , RAT का अर्थ हाथी करूँ और यह जिद्द करूँ क सभी इंग लश जानने वाले गधे हैं। केवल मेरा अर्थ ही सही माना जाए तो क्या यह कोई स्वीकार करेगा। इस लए गायत्री मंत्र का अर्थ भी वेद व संस्कृत के वशेषज्ञों द्वारा कया गया ही स्वीकार कया जाएगा।

****

नीचे वेद के वद्वान मह ष दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मे गायत्री मंत्र का जो अर्थ कया है वह दिया जा रहा है।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्स वतुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
 धयो यो नः प्रचोदयात् ।।
इस मन्त्र में जो प्रथम (ओ३म्) है उस का अर्थ प्रथमसमुल्लास में कर दिया है, वहीं से जान लेना। अब तीन महाव्याहृतियों के अर्थ संक्षेप से लखते हैं-'भूरिति वै प्राणः' 'यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः' जो सब जगत् के जीवन का आवमार, प्राण से भी प्रय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। 'भुवरित्यपानः' 'यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः' जो सब दुःखों से रहित, जिस के संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इस लये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। 'स्वरिति व्यानः' 'यो व वधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः' । जो नाना वध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है इस लये उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है। ये तीनों वचन तै त्तरीय आरण्यक के हैं। (स वतुः) 'यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स स वता तस्य'। जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है । (देवस्य) 'यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः' । जो सर्वसुखों का देनेहारा और जिस की प्राप्ति की कामना सब करते हैं। उस परमात्मा का जो (वरेण्यम्) 'वर्त्तुमर्हम्' स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्गः) 'शुद्धस्वरूपम्' शुद्धस्वरूप और प वत्र करने वाला चेतन ब्रह्म स्वरूप है (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) 'धरेमहि' धारण करें। कस प्रयोजन के लये क (यः) 'जगदीश्वरः' जो स वता देव परमात्मा (नः) 'अस्माकम्' हमारी (धयः) 'बुद्धीः' बुद् धयों को (प्रचोदयात्) 'प्रेरयेत्' प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।
यहाँ ओ३म का अर्थ – सर्वव्यापक रक्षक आदि है
****

जो चत्र मैंने पोस्ट के साथ लगाया है उसमे सायण (SY) महीधर (Mah) उदगीथ (U) व आचार्य सायण की भाष्य भू मका (BB) का उदाहरण दिया है।
प्रचोदयात् के अर्थ को रेखां कत कया है

—

(नोट – आंबेडकर वादी के वेदों के अश्लील अर्थ के कारण हमने मलमूत्र निवाशी नाम से संबो धत कया है ये सर्फ उसी व्यक्ति के लए है)

जिसे यहाँ देखे –

इतिहास का एक स्व र्णम पृष्ठ-अब्दुल अज़ीज़ की शुद् धः : राजेंद्र जिज्ञासु परोपकारी पत्रिका DEC II, 14

JANUARY 15, 2015 LEAVE A COMMENT

इतिहास का एक स्व र्णम पृष्ठ-अब्दुल अज़ीज़ की शुद् धः- गत दो-तीन वर्षों में कुछ सज्जनों ने News Valueसमाचार या मी डया प्रचार शैली से शुद्ध कये गये मुसलमानों में से दो-चार को चुनकर कुछ लेख लखे फर एक सज्जन ने मुझ से कुछ ऐसे और नाम सुझाने को कहा। कोई वशेष जानकारी तो कोई दे न सका। शुद् ध आन्दोलन को बढ़ाने के लए स्वामी चदानन्द जी, अनुभवानन्द जी, ठाकुर इन्द्र वर्मा जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. गोपालदेव कल्याणी जी, श्याम भाई जी, पं. नरेन्द्र जी की तपस्या पर तो कोई लखता नहीं। मैंने तब हैदराबाद के ऋ ष भक्त मौलाना हैदर शरीफ जी के सबन्ध में कुछ खोजकर लखने का सुझाव दिया परन्तु कोई आगे न आया। ऋ ष ने देहरादून के महाशय मुहमद उमर को स्वयं शुद्धकर उन्हें आर्य धर्म में दी क्षत कर अलखधारी नाम दिया। यह थी कसी मुसलमान की पहली शुद् ध। इसके पश्चात् दूसरी ऐतिहा सक शुद् ध मौलाना अदुल अज़ीज़ की थी। वह अरबी भाषा व इस्लाम के मर्मज्ञ वद्वान् थे। उन दिनों ऐक्स्ट्रा अ सस्टैण्ट क मश्नर सबसे बड़ा पद था जो कसी भारतीय को मल सकता था। आप इस उच्च पद पर गुरदासपुर आदि कई नगरों में कार्यरत रहे। इस शुद् ध का श्रेय पं. लेखराम जी तथा परोपकारिणी सभा को प्राप्त है।

मह ष दयानन्द जी के ब लदान के पश्चात् यह सब से महत्त्वपूर्ण शुद् ध थी। महात्मा हंसराज इस घटना को बड़ा महत्त्व दिया करते थे। वास्तव में यह घटना हमारे लए ऊर्जा का स्रोत है। मौलाना अदुल अज़ीज़ कभी कुसंग में पड़कर धर्मच्युत हो गये। वह उत्तर पश्चिमी पंजाब के एक प्रतिष्ठित कुल में जन्मे थे। उनकी पुत्रियाँ ही थीं। जयपुर के प्रतिष्ठित और प्र सद्ध आर्यसमाजी बलभद्र जी ने मेरे एक ग्रन्थ में इनकी शुद् ध की चर्चा पढ़कर मुझसे पत्र व्यवहार करके पूछा था क हमारे एक कुटुबी युवक को पं. लेखराम जी ने शुद्ध कया था। क्या यह वही तो नहीं? मैंने उन्हें सारी जानकारी देते हुए कहा क जी हाँ, यह मेधावी आर्य पुरुष आप ही के कुल का था। इस शुद् ध पर कड़ा और बड़ा संघर्ष हुआ था। इस कारण शुद् ध का संस्कार लाहौर में करना पड़ा। व चत्र बात तो यह रही क पौरा णकों ने वरोध तो डटकर कया परन्तु पौरा णकों का एक वर्ग आर्यसमाज के पक्ष में भी खड़ा हो गया। ऐसा आर्य इतिहासकार पं. वष्णुदत्त जी ने लखा है। तब एक और व चत्र दृश्य देखने को मला। स्वामी दर्शनानन्द जी के पता पं. रामप्रताप आर्यसमाज के वरोधी श वर में थे और स्वामी जी पं. लेखराम की सेना में थे।

परोपकारिणी सभा का योगदानः– इस शुद् ध का श्रेय परोपकारिणी सभा को पं. लेखराम जी ने तो दिया परन्तु इसका प्रमाण कोई नहीं मल रहा था। पं. लेखराम जी का लेख मथ्या नहीं हो सकता सो पूर्ण श्रद्धा से मैंने 35 वर्ष इसके प्रमाण की खोज में लगा दिये। यह घटना ऋ षवर के ब लदान के कुछ ही मास के भीतर घटी। पं. लेखराम जी ने इस उच्च श क्षत युवक के मन में वैदिक धर्म तथा ऋ ष के प्रति ऐसी श्रद्धा उत्पन्न कर दी क अदुल अज़ीज़ जी बहुत धन व्यय करके लबी यात्रा करके परोपकारिणी सभा के प्रथम अ धवेशन में अजमेर पहुँचे। पं. गुरुदत्त, राव बहादुर संह मसूदा, क वराजा श्यामलदास तथा मेरठ आदि दूरस्थ नगरों के नेता उस अ धवेशन में उपस्थित थे। उन्होंने मह र्ष की उत्तरा धकारिणी परोपकारिणी सभा से आर्य धर्म की दीक्षा लेने की प्रार्थना की। पाठक इसका प्रमाण मांगेंगे। इसके प्रमाण के लए 'देशहितैषी' मा सक अजमेर की फाईल सभा को भेंट की जा रही है।1 अमृतसर के पौरा णकों ने ऋ ष पर पत्थर वर्षा की। इस शुद् ध में अमृतसर से ही वशेष समर्थन मला। पं. वष्णुदत्त जी ने लखा है क उनकी पुत्रियाँ अमृतसर के प्रतिष्ठत परिवारों में याही गईं। अदुल अज़ीज़ जी को अब लाला हरजसराय के नाम से जाना जाने लगा। वह जहाँ-जहाँ रहे आर्यसमाज की शोभा बढ़ाई।

हीरालाल गाँधी वषयक प्रश्नः– हीरालाल गाँधी वषयक एक लेख पढ़कर कुछ उत्साही युवकों ने मुझसे कई प्रश्न पूछे हैं। प्रश्न लेखक से पूछे जायें तो यही अच्छा होगा। मैं कल्पित बातों का क्या उत्तर दूँ। हाँ! कुछ नई बातें जो सुनाता तो रहा परन्तु लखी कभी नहीं वे आज लखने लगा हूँ। पहले यह नोट कर लें क मैंने भाई परमानन्द जी की जीवनी में प्रत्यक्षदर्शी आर्य पुरुष श्री ओमप्रकाश जी कपड़े वाले दिल्ली की साक्षी से लखा है क हिन्दुओं का मनोबल बढ़ाने के लए आर्यसमाज नया बांस में भी सोत्साह हीरालाल की शुद् ध का एक कार्यक्रम आयोजित कया गया। इस कथन की प्रामा णकता को कोई नहीं झुठला सकता। श्रीयुत् धर्मपाल आर्य दिल्ली इस तथ्य के साक्षी हैं क आर्य नेता श्री ओमप्रकाश आर्यसमाज के इतिहास का ज्ञानकोश थे। उनकी स्मृति असाधारण थी। वह उस समारोह के आयोजकों में से एक थे।

हीरालाल ने श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक आदि को सार्वदे शक सभा में बताया था गाँधी जी के व्यवहार से चढ़कर बाप को अपयश देने के लए हीरालाल मुसलमान बना था। वह इस्लाम की शक्षा से प्रभा वत होकर मुसलमान नहीं बना था। वह लबे समय तक ब लदान भवन में ठहरा था। यहीं उसका भाई देवदास उसे मलने आता रहा। ये बातें मुझे पाठक जी ने सुनाईं। लाला रामगोपाल शालवाले ने भी उसके मुख से सुनी कई बातें सुनाई थीं। जिन्हें आज नहीं लखूँगा। एक बार हज़ूरी बाग श्रीनगर में हीरालाल ने चौ. वेदव्रत जी को वही कुछ बताया जो ब लदान भवन में पाठक जी को कहा था। हैदराबाद सत्याग्रह के समय जवाहरलाल नेहरू के एक हानिकारक व्यक्तव्य का हीरालाल ने कड़ा उत्तर लखा। आर्य नेता समझते थे क इसे पढ़कर नेहरू आर्यसमाज को और हानि पहुँचा सकता है। हीरालाल को बहुत कहा गया क वह अपनी प्रति क्रया न छपवाये परन्तु वह नहीं मान रहा था, तब आर्य नेता देवदास गाँधी को बुलाकर लाये। देवदास की बात हीरालाल मान जाता था। देवदास आर्य सत्याग्रह का समर्थन करता ही था। उसके कहने पर हीरालाल ने अपना वह व्यक्तव्य रोका। हीरालाल की शुद् ध के समय गाँधी परिवार में से कौन-कौन मुबई में था? इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दूँगा। पाठक स्वयं जानने का प्रयत्न करे।

जवाहिरे जावेद का नया हिन्दी अनुवादः– पंजाब के एक उदीयमान सु श क्षत युवक से कुछ वर्ष पूर्व मेरा सपर्क हुआ। वह आर्यसमाज से जुड़ गया। स्वाध्याय में बहुत रु च है। वह कुछ सप्ताह अजमेर रहकर न्यायदर्शन पढ़ा रहा था। निरन्तर स्वाध्याय, निरन्तर सेवा और निरन्तर सपर्क से ही संगठन सुदृढ़ होता है। इस युवक ने सभा को पं. चमूपति जी की बेजोड़ दार्शनिक कृति 'जवाहिरे जावेद' का नया हिन्दी अनुवाद छपवाने का प्रस्ताव दिया है। अर्थ की व्यवस्था यही युवक करेगा। श्री धर्मवीर जी ने इस वषय में मुझसे वचार कया। यह कार्य अत्यावश्यक व करणीय है। मैंने दिन रैन व्यस्त होते हुए भी सभा के लये इस कार्य को सरे चढ़ाने का आश्वासन दे दिया है। श्री सत्येन्द्र संह जी ने मुझे इसके लए प्रेरित कया है। पं. चमूपति जी के साहित्य ने इस्लाम का रंग रूप ही बदल डाला है। एक ओर इस्लामी आतंकवाद कट्टरवाद है तो साथ के साथ 'वैदिक इस्लाम' का उदय हो रहा है। सू चयाँ बनाने वाले एक भाई ने पण्डित जी के योगेश्वर कृष्ण को उनका कालजयी ग्रन्थ बताया है। यह सस्ता मत है। मेरे कहने पर ही स्वामी दीक्षानन्द जी ने शरर जी से इसका अनुवाद करवाया और मुझसे दो बार इस पुस्तक की गौरव गरिमा पर वस्तार से लखवाया गया। कसी कारण से मेरा निबन्ध साथ न छप सका। शरर जी ने जवाहिर जावेद के एक-एक बिन्दू पर अपनी मा र्मक टिप्पणी कहीं भी नहीं दी। वह बहुत कुछ जानते थे। यह उनकी भूल थीं।

मैं इसका मुद्रण भी ऐसा चाहता हूँ क पुस्तक के शीर्षक, उपशीर्षक व टिप्प णयाँ देखकर अपने-पराये मुग्ध हो जायें। पण्डित चमूपति अपने समकालीन वद्वानों के मन मस्तिष्क पर तो छाये ही थे उनकी छाप नये इस्लामी साहित्य पर कतनी गहरी है, यह इस नये संस्करण में बताया जायेगा। पा कस्तान के एक दैनिक 'कोहिस्तान' का एक लेख मेरे पास सुर क्षत है, वह लेख इस बात का प्रमाण है क अनेक मौल वयों पर पण्डित जी का रोब व दबदबा है। श्वहलद्गहम्ठ्ठद्बहलब् (नित्यता) पर एक मुसलमान वद्वान् ने परपरा से हटकर पहली बार एक पुस्तक लखने का साहस कया है। मृत्यु को 'ह्रश्चद्गठ्ठद्बठ्ठद्द शद्घ ड्ड ह्रशशहम् हलश ठ्ठद्गख् द्यद्बद्घद्ग' नये जन्म का द्वार बताने का यह साहस वन्दनीय है। 'कुरान में पैगबर के एक भी चमत्कार का वर्णन नहीं' यह कई एक ने खुलकर लखा है।

पैगबर को मुक्ति का तवस्सुल (मध्यस्थ) मानने वाले मदरसों में पढ़ाई जाने वाली एक पुस्तक में हमारे भक्तराज अमींचन्द जी का एक गीत पढ़ाया जा रहा है। अजमेर, दिल्ली, हैदराबाद, मालाबार के मदरसों में जाकर देख लो। यह पं. लेखराम, पं. चमूपति की कृपा का प्रसाद है। यह पढ़कर आर्यजन को कैसा लगेगा क श्वहलद्गहम्ठ्ठद्बहलब् (नित्यता) नाम का ग्रन्थ स्वयं लेखक ने मुझे सप्रेम भेंट कया। आर्यो! सर्व सामर्थ्य से पं. लेखराम की परपरा के वद्वानों के साहित्य का प्रसार प्रकाशन करो। वह दिन दूर नहीं अलीगढ़, देवबन्द और अजमेर के मुसलमान यह पुकारेंगे- 'पं. शान्तिप्रकाश हमारा है, वह तुहारा नहीं।' मैं अभी से कहता हूँ क आपने भक्तराज अमींचन्द के गीत को लया, कुल्लियाते आर्य मुसा फर ले ली, जवाहिर जावेद और चौदहवीं का चाँद अपनाया, आप पं. शान्तिप्रकाश, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय भी लेते हो तो ले लो। हम तो सच्चे हृदय से कह रहे हैंः-

कौन कहता है क हम तुम में जुदाई होगी।

यह हवाई कसी दुश्मन ने उड़ाई होगी।।

ऋ ष जीवन पर नई खोजः– मेरे बहुत से पत्र-पत्रिकायें दबी पड़ी रह गईं। उनके प्रमाण तो कण्ठाग्र थे परन्तु सामने पुस्तक व पत्रिका रखकर ऋ ष जीवन में उनको उद्धृत करना चाहता था। ऐसा हो न सका। अतः श्री रमेशकुमार जी मल्होत्रा ने परोपकारिणी सभा के लए एक नया, छोटा परन्तु अनूठा ऋ ष जीवन लखने की प्रेरणा दी है। 'जीवन पल पल क्षण क्षण बीता जाये' तो भी जी जान से जो कुछ भी मेरे सीने में, मेरे मन व मस्तिष्क में सुर क्षत है सब कुछ आर्यसमाज की नई पीढ़ी को सौंप रहा हूँ। लीजिये! कुछ नई जानकारी। जोधपुर के राजघराने के, सर प्रताप संह के आपने बड़े कस्से पढ़ लये। नन्हीं भगतन को चरित्र का प्रमाण पत्र देने वाले भी देखे। अब सुनिये! 'देशहितैषी' में ऋ ष के शाहपुरा में कार्यरत होने का समाचार तो मलता है परन्तु उसके आगे जोधपुर का एक भी समाचार नहीं मलता। ये सब अंक परोपकारिणी सभा को सौंप दूँगा। नये युवा वद्वान् इस वषय पर वचार करके कारण तो बतावें क जोधपुर से कोई समाचार क्यों न निकलने दिया गया। मेवाड़ के तो सब समाचार मल गये।

घोर वरोधी ने स्वीकार कयाः– मह र्ष के ब लदान पर 'क्षत्री हितकारी' पत्र के संया चार पृष्ठ पाँच पर 'शोक! शोक!! शोक' शीर्षक देकर ये पंक्तियाँ पढ़ने को मलती हैं, ''हम को शोक है क स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसा पण्डित इस काल में होना कठिन है, यह एक पुरुष बड़ा वलक्षण बुद् ध और परमोत्साही उद्योगी था। यह सामर्थ्य इसी महाशय में था क श्रुति, स्मृति के अर्थ को यथार्थ जाने, यह पुरुष पूर्ण आयु को पहुँचने के योग्य था परन्तु काल यह कब सोचता है।'' इस पत्र के सपादक वीर संह वर्मा ऋ ष के घोर वरोधी को उनकी वद्वत्ता व व्यक्तित्व पर ये शद लखने पड़े परन्तु इसी लेख में वह ऋ ष पर वार भी करता है। न जाने उसकी क्या ववशता थी। चलो! यह तो मानना पड़ा क श्रुति, स्मृति के यथार्थ अर्थ को जानने का सामर्थ्य इसी महात्मा में है। 'देशहितैषी' पत्र से यह अवतरण यहाँ उद्धृत कया है।

भूल सुधारः– अल्पज्ञ जीव से भूल का होना सभव है। जब कभी लखने-बोलने में जाने-अनजाने या मुद्रण दोष से हमसे ूल हो गई, हम ने पता लगने पर झट से क्षमा माँगते हुए भूल का सुधार करना अपना कर्त्तव्य जाना। अभी 'तड़प झड़प' में इन दिनों लातूर (महाराष्ट्र) के ठाकुर शवरत्न जी का नाम देना था परन्तु भूलवश हरगो वन्द संह लखा गया। उनके भाई का नाम गो वन्द संह था। वह कलम (मराठवाड़ा) के जाने माने आर्य पुरुष थे। इन दोनों की चर्चा मेरे ग्रन्थों में है। 'तड़प झड़प' डाक में भेजते ही चूक का पता चल गया। मैंने तत्काल चलभाष करके धर्मवीर जी को इसे ठीक करने को कहा। व्यस्ततायें उनकी भी इतनी हैं क वह ऐसा न कर सके। फर बता दें क ठाकुर शवरत्न संह जी ने पंजाब के पं. वष्णुदत्त से अपनी पुत्री का ववाह कया तो पौरा णकों के प्रचण्ड बहिष्कार के कारण उन्हें वदर्भ से पंजाब पलायन करना पड़ा।

एक दुःखद लेखः– 'आर्यजगत्' के 25 मई अंक में माननीय कृष्णचन्द्र जी गर्ग पंचकूला का 'जगन्नाथ' वषयक एक लेख छपने की जानकारी मली। यह लेख कस प्रयोजन से लखकर छपवाया? यह मैं समझ न पाया। ऋ ष के हत्यारे का नाम जगन्नाथ नहीं, यह कहानी झूठी है इत्यादि बातें लखने की क्या आवश्यकता पड़ गई? श्रीराम शर्मा, लक्ष्मीदत्त दी क्षत आदि बहुत निब घीसा चुके। महत्त्व हत्यारे के नाम का नहीं, मुय बात ऋ ष के वषपान की, ऋ ष को मरवाने के षड्यन्त्र की है। इस वषय पर प्रमाणों के ढेर लगा कर लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में जितनी जानकारी दी गई है, कसी भी ग्रन्थ में इतनी खोज नहीं मलेगी।

ऋ ष की जोधपुर यात्रा के समाचार क्यों बाहर न निकलने दिये गये? यह ऊपर हम बता चुके। श्री कृष्ण संह बारहट का ग्रन्थ छप चुका है। क्या देखा है? आपके घर के पास से दित्त संह ज्ञानी के क थत शास्त्रार्थों की कल्पित कहानी छपी, नन्हीं वेश्या को चरित्र की पावनता का प्रमाण पत्र देते हुए लखा गया। श्री गर्ग जैसे सब सयाने यह चुपचाप पढ़ते-सुनते रहे। स्वामी आत्मानन्द जी को ऋ ष ने चत्तौड़ में गुरुकुल खोलने के लए कहा, अन्त समय में नाई को पाँच रुपये दिये गये। इन दो प्रेरक प्रसंगों को झुठलाया गया। तैलंग स्वामी की आड़ में ऋ ष पर वार प्रहार कया गया। अब शाहपुरा के रसोइये की दुहाई देकर आर्यजन को क्या सन्देश देना चाहते हैं? आपकी भावना शुद्ध है, यह मैं जानता हूँ।

श्री पं. लेखराम जी ने सर्वप्रथम सर नाहर संह के नाम ऋ ष का एक पत्र छापा क शाहपुरा के दिये सब नौकर बड़े निकमे थे। इस पत्र का प्रमाण देकर हमने श्रीराम और प्रं. लक्ष्मीदत्त को चुप करवाया। स्वामी सत्यानन्द जी के ग्रन्थ की वशेषतायें भी हैं, कुछ क मयाँ भी हैं। जगन्नाथ की कहानी झूठी का शोर मचाकर इस ग्रन्थ का अवमूल्यन न करें। मूलराज के गीत गा-गाकर उसे ऋ ष का कर्मठ साथी बता कर आर्य इतिहास प्रदू षत कया गया। आप चुप बैठे रहे, यह चन्ता का वषय है। परोपकारी के धर्म रक्षा महा भयान में जु ड़ये।

स्वामी बलेश्वरानन्द जी द्वारा समान के लए आभारः– पुण्डरी के स्वामी श्री ब्रह्मानन्द आश्रम के स्तभ प्रय आर्यवीर राजपाल स्वामी बलेश्वरानन्द जी का सन्देश लेकर आये क हम इस वर्ष आपका समान करना चाहते हैं। स्वीकृति दें। मैं प्रायः हर व्यक्ति व संस्था का ऐसा प्रस्ताव अब सुनकर अनसुना कर देता हूँ। माँगने की, धन संग्रह की प्रवृ त न बन जावे। लोकैषणा की स र्पणी न डस जावे, सो समान से बचता हूँ परन्तु स्वामी जी का प्रस्ताव मैंने स्वीकार करके तत्काल निर्णय कर लये क वह जो कुछ देंगे उसमें कुछ और धन मलाकर श्रीमती वेद जिज्ञासु के नाम की स्थिर नि ध स्था पत करके अभी 50.000/- की रा श परोपकारिणी सभा को भेंट करूँगा।

स्वामी जी ने तो मेरे मनोभाव न जाने कैसे जान लये क समान रा श ही 51000/- की भेंट कर दी। मैंने यह रा श सभा को पहुँचा दी है और इसमें जो कुछ हो सकेगा और रा श मला दी जावेगी। मैं स्वामी जी का, आश्रम का और स्वामी जी के भक्तों का हृदय से आभार मानता हूँ। यह आश्रम वेद प्रचार का वैदिक धर्म का और आर्यसमाज का सुदृढ़ दुर्ग बने, ऐसा हम सबका प्रयास होना चाहिये।

कहानीकार सुदर्शन जी तथा हरियाणाः– स्वर्गीय चौ. मत्रसेन जी बहुत दूरदर्शी थे। आपने चौधरी छोटूराम जी की एक उर्दू पुस्तक (लेखमाला) का हिन्दी अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की। मैंने उन की इच्छा शरोधार्य कर प्राक्कथन स्वरूप चौधरी छोटूराम तथा आर्यसमाज पर कुछ खोजपूर्ण सामग्री देने का सुझाव रखा। चौधरी जी को मेरा सुझाव जँच गया। छपने पर मुझे कुछ प्रतियाँ भेजना वे भूल गये। एक ठोस काम वे कर गये। इसमें मैंने एक घटना दी क चौधरी छोटूराम जी ने कहानीकार सुदर्शन जी को जाट गज़ट का सपादक बनाया। केवल इस लये क वह पक्के आर्यसमाजी हैं। एक गोरे पादरी के साथ टक्कर लेने से गोरा शाही सुदर्शन जी से चढ़ गई। चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द से आर्यसमाजी सपादक को हटाने का दबाव बनाया। चौ. छोटूराम अड़ गये। सरकार की यह बात नहीं मानी। यह घटना प्रथम वश्व युद्ध के दिनों की है। वर्ष का स्मरण मुझे नहीं था हरियाणा के कसी भी आर्य ने, जाट

ने, अजाट ने इस घटना के समय का पता लगाने में कतई रु च नहीं दिखाई। अब सुदर्शन जी की एक पुस्तक से प्रमाण मल गया क आप 1916-1917 में रोहतक में कार्यरत थे।

टिप्पणी

1. द्रष्टव्य देशहितैषी मा सक का मार्च 1884 का अंक।

सेक्युलरिज्म या इस्ला मक तुष्टिकरण

JANUARY 14, 2015 13 COMMENTS

भारतीय सं वधान के अनुसार यह देश सनातनी नहीं सेक्युलर देश है, वश्व का एकमात्र देश, जिसमें सनातनी (हिन्दू) बहुसंख्यक है, ऐसा देश जो सनातनियों का है, वो आज उनका ना होकर हर मत-मजहब वालों का है, यह सब हमारी चुप्पी और एक गंभीर ना दिखने वाली बिमारी की वजह से है,
जी हां !!!
एक गंभीर ना दिखने वाली बिमारी जिसका नाम है सेक्युलरिज्म !

हर मत मजहब सम्प्रदाय वालों का भाईचारा, जहाँ कोई ऊँचा निचा नहीं, भेदभाव नहीं, सब भाई- भाई की सोच से रहे, पर ऐसा कुछ है नहीं, भारत में सेक्युलरिज्म की परिभाषा बड़ी अजीब और एक मत सम्प्रदाय मात्र को खुश रखने की निति के अनुसार है

भारत में हिन्दुइज्म की बात करना अर्थात सेक्युलरिज्म को खतरा, और इस्लाम हित की बात करना सेक्युलरिज्म है
धा र्मक स्थल का उद्घाटन करने जाने पर आजाद भारत (जो सही मायनों में है नहीं) के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने हमारे राष्ट्रपति को इस लए उदघाटन में ना जाने के लए समझाया की इससे सेक्युलरिज्म को ख़तरा है ! अजीब बात है कसी हिन्दू धा र्मक स्थल के उद्घाटन से सेक्युलरिज्म को खतरा कैसे ? इसका जवाब और कुछ नहीं मुसलमानों की ख़ुशी को बनाये रखना है, आज तक जितनी सरकारें आई है, वे मुसलमानों को खुश रखने के लए इस सेक्युलरिज्म को सबसे बड़ा ह थयार बनाती आई है, जिसकी परिभाषा बिलकुल इसके नाम से वपरीत और निराली है,

और हिन्दू भी इन शकारियों के जाल में फसता जा रहा है, हिन्दू मुस्लिम भाई भाई का राग अलापे जा रहा है, हिन्दू और मुस्लिम दो अलग अलग, वपरीत और वरोधी वचारधारा से जुड़े हुए है, दो अलग अलग और वरोधी वचार वाले भाई कैसे हो सकते है ? ये सोचनीय है |

हिन्दू संस्कृति (वैदिक संस्कृति) उदारता से भरी है, हमें कभी जिहादी या हिंसक बनने की शक्षा नहीं दी जाती, मनुस्मृति में मनु मजहबी नहीं, मनुष्य बनने की सलाह देते है, वेद भी कभी यह नहीं सखाता की गैर हिन्दू का कत्ल करो या वे तुम्हारे दुश्मन है, यहाँ तक की

प्राणी मात्र को ना मारने की सलाह हमें वेद देते है, जितना भाईचारा या उदारता की शिक्षा हमें वेदों से मलती है वो अन्य कसी से नहीं मल सकती

वही दूसरी और जिस मजहब को हमें भाई बनाने के लए यह सरकारें और नए नए संगठन सलाह देते है, उन्होंने कभी या तो यह जानने की को शश नहीं की या जानते हुए भी चुप्प रहे की यह मजहब जिस कताब को खुदाई बताता है उसमें गैर इस्लाम के लए क्या क्या आज्ञा दी गई है, इस्ला मक खुदाई पुस्तक कुरान, गैर इस्लामी को कसी भी तरह से भाई बनाने की सलाह नहीं देती अ पतु उन्हें भाई ना बनाने की सलाह देती है, और यदि कोई भावावेश में आकर भाई बना भी ले तो वो मुसलमान नहीं रहता वो भी का फर हो जाता है,

आइये पहले यह जान लें की का फर क्या होता है?

का फर एक अरबी शब्द है यदि google पर सर्च कया जाए तो आपको इसके कई मतलब मलेंगे और वो मतलब भी सही है, मैंने यहाँ google पर जाने के लए इस लए कहाँ है की हमारी मान सकता ही कुछ ऐसी हो चुकी है, लोगों को अपनों से ज्यादा आजकल परायों पर वशवास है, इस लए उ चत है उन्हें वशवास दिलाने के लए वहां भेजना !

इसका साधारण सा अर्थ है गैर इस्लामी !!! जो इस्लाम को ना माने जो अल्लाह को ना माने जो इस्लाम में बताई उपासना पद्दति के अलावा कसी और पद्दति को मानता हो और जो नास्तिक हो

गैर इस्लामी को कुरान में नास्तिक ही माना जाता है क्यूं क इस्लाम के अनुसार दुनिया में इस्लाम ही ऐसा धर्म (कसी प्रकार से इस्लाम धर्म नहीं है ये केवल एक मत का, समूह का नाम है) है जो खुदा का बनाया गया है तो इनके अनुसार गैर इस्ला मक अर्थात "का फर" होता है |

अब आप जब कुरान पर नजर डालेंगे तो हर दूसरी आयत आपको आपकी वरोधी प्रतीत होगी जो की वाकई में वरोधी है, कुरान में कसी प्रकार के गैर इस्लामी से भाईचारे की कोई सलाह नहीं है, तो आप सोच रहे होंगे की फर ये मुसलमान हर समय भाईचारे, अमन का राग क्यों अलापते है, तो इसके लए आपको बड़े ध्यान से भारत के आज की और आजादी से पहले के भारत की जनसंख्या को धर्म के आधार पर बाँट कर देखना होगा

मोहम्मद का एक ही सपना था की उसका बनाया हुआ यह समूह बहुत बड़ा वस्तार करें उसी का परिणाम है की आज इस्ला मक लोग गैर इस्लामी को हर तरीका उपयोग लेकर उन्हें इस्लाम कबुलवाने में लगे है जिसके कई जरिये है, उन पर भी आगामी लेखों में नजर डालेंगे जो आपको हमारी वेबसाइट www.aryamantavya.in पर मलेंगे

जब मुसलमान कुरान को पूरी तरह से मानते है और उसका अनुशरण भी करते है तो यह सर्व वदित होना चाहिए की मुसलमान गैर मुस्लिम को भाई मान ही नहीं सकते और यदि मानते भी है तो यह "मुहं में राम बगल में छुरी वाली बात होगी

आइये आपको कुछ आयते बताते है जो साफ़ तौर पर काफरों को मारने का हुक्म देती है अर्थात ऐसी आयते जो मुसलमानों के अजीम दोस्त हिन्दू को मारने के लए कहती है:-

ला यत खजिल-मुअ मनुनल..................|
(कुरान मजीद पारा ३ सुरा आले इमान रुकू ३ आयत २८)

मुसलमानों को चाहिए की मुसलमानों को छोड़कर काफरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह का कोई सरोकार नहीं है |

या अय्युहल्ल्जी-न आमनू ला ......||
(कुरान मजीद पारा ५ सुरा निसा रुकू १८ आयत १४४)
अय ईमान वालों !! तुम ईमान वालों को छोड़कर काफरों को दोस्त मत बनाओ |क्या तुम जाहिर खुदा का अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो |

कातिलुल्ल्जी-न ला यअ मनू-न.........||
कुरान मजीद पारा १० सूरा तोबा रुकू ४ आयत २९)

कताब वाले जो न खुदा को मानते है और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगमबर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते है और न सच्चे दींन अर्थात इस्लाम को मानते है, इनसे लड़ों और यहाँ तक की जलील होकर (अपने) हाथों जजिया दें |

जब अल्लाह ने भाईचारा रखने पर अपना रिश्ता समाप्त करने की धमकी दे रखी है तो यह वचार करने की बात है की मुसलमान अपने परवरदिगार से आपके लए कैसे नाता तोड़ सकते है बिलकुल नहीं तोड़ेंगे तो आपसे भाईचारा क्यों ?? यह सवाल दिमाग में आना स्वाभावक है !!

इस भाईचारे के पीछे कई वजह है इसी भाईचारे को जानने के लए मैंने आपसे जनसंख्या का धर्म के आधार पर बांटने के लए कहा था

कश्मीर, जहाँ पर कश्मीरी पंडत और मुसलामानों का भाईचारा ही था, फर अचानक क्या हुआ की सहस्त्रों कश्मीरी पंडतों को मार डाला गया या भगा दिया गया यह वचार करने से पहले ही लोग तर्क देते है की वहां के मुसलमान अच्छे नहीं है तो उनसे मेरा सवाल है की अन्य देशों में रह रहे हिन्दू भी क्या अलग अलग है क्या उनका मत भारतीय हिन्दुओं से अलग है आपका जवाब होगा नहीं !! फर ये कश्मीर के और बाकी भारत के मुसलमान में अंतर कैसे ??

ये भाईचारे के दुश्मनी में बदलने का कारण है इस्लाम और खुदाई आज्ञा !! जिस समय हिन्दू मुसलमानों में कश्मीर में भाईचारा और अमन चरम पर था, उस समय मुस्लिम वहां अल्पसंख्यक थे और हिन्दू बहुसंख्यक चूँक हिन्दू हमेशा से उदारता से परिपूर्ण रहा है तो इसी उदारता के कारण उसने मुसलमानों को अपना भाई ही माना जो गलत भी नहीं है क्यूंक भारतीय मुस्लिम वास्तव में हमारे भाई ही है, जिनके पूर्वजों को ब्लात्पुर्वक हिन्दू से मुस्लिम बनाया गया था और उसी दबाव को आज भी वो सहता हुआ मुस्लिम ही बना हुआ है, और खुदा के डर में जी रहा है

जब कश्मीर में मुस्लिम अल्पसंख्यक से बहुसंख्यक हुए तो इनका भाईचारा दुश्मनी में परिवर्तित होने लगा और छुट पूट लड़ाई झगड़े शुरू हुए खत्म हुए और इन्हीं झगड़ों और परस्पर वरोधी मान्यताओं के चलते और इस्लाम के वस्तार के अपने लक्ष्य को पूरा करने की चाह में मुसलमानों ने हिन्दुओ को कश्मीर से भगाया और मार भी डाला

और यही परिद्रश्य आपको आसाम, बंगाल, केरल और हैदराबाद में भी देखने को मलेगा इन कारणों पर हमें वचार करना ही होगा, अन्यथा आने वाली पीढ़ी आपको पूरी जिन्दगी कोसती रहेगी

ये भाईचारा आपको भी कश्मीरी पं डतों के दर्द से परिचय कराएगा यह सार्वभौ मक सत्य है यह होगा यदि आपका यह भाईचारा इसी तरह रहा

इस्लाम को जानिये की यह वास्तव में क्या है, क्या यह धर्म है ?? क्या ये अमन और शान्ति का मजहब है ??

नहीं ये केवल और केवल आतंक का दुसरा नाम है, इस्लाम में भाईचारे, अमन, शान्ति और नारी की कोई जगह नहीं है

सेक्युलरिज्म का यह जहर आपको धीरे धीरे खा रहा है और आप इससे अपरि चत बने रह रहे हो आज समय की जरुरत है की हमें धर्म के प्रति निष्ठावान होना होगा

आपसे वनम्र निवेदन है की हमें झगडा कराने वाला ना समझे हम तो स्वयं चाहते है की देश में अमन और शान्ति बने पर ताली एक हाथ से नहीं बजती, वैदिक धर्म तो जन्म से उदार है और हम इस ओर पहल भी करने को तैयार है पर क्या हमारे मुस्लिम भाई इस का फर दुश्मन कुरान को त्यागने का माद्दा रखते है ??????????

यदि मुस्लिम कुरान भी नहीं त्याग सकते और हमसे भाईचारे की उम्मीद भी रखते है तो यह दोगलापन लगता है इसमें बड़ी साजिश की बू आती है

इस लए सजग रहिये सतर्क रहिये, समझदार बनिए क्यूं क भोले दिखने वाले गजब के गोले होते है

आपके वचार र खये, प्रश्न कीजिये, सुझाव दीजिये आपका स्वागत है और आगामी लेख की थोड़ी सी प्रतीक्षा कीजिये

तब तक के लए आज्ञा दीजिये

नमस्ते
आर्यमंतव्य

भस्मासुर बनते सन्त : आचार्य धर्मवीर जी

JANUARY 9, 2015 LEAVE A COMMENT

भारतीय परपरा में धर्म का सबन्ध शान्ति के साथ है। जहाँ धर्म है वहाँ शान्ति और सुख अनिवार्य है परन्तु आज के वातावरण में धर्म अशान्ति और परस्पर संघर्ष का पर्याय होता जा रहा है। धा र्मक स्थान पर रहने वाले लोगों को साधु, सन्त आदि शदों से पहचाना जाता था। साधु का अर्थ ही अच्छा होता है, संस्कृत भाषा में जो दूसरों के कार्यों को सद्ध करने में अपने जीवन की सार्थकता समझता है उसे ही साधु कहते हैं। जिसका स्वभाव शान्त है वही सन्त होता है। आजकल इन शदों का अर्थ ही बदल गया है, जो स्वार्थ सद्ध करने में लगा है वह साधु है, जो अशान्ति फैला रहा है वह सन्त है। जो जनता को मूर्ख बना रहा है वह योगी है। पुराने समय में साधु लोग जिन स्थानों पर निवास करते थे उन स्थानों को आश्रम कहा जाता था। वहाँ जाकर सबको वश्राम मलता था। वहाँ कसी के आने-जाने पर प्रतिबन्ध नहीं होता था, उनके यहाँ मनुष्य क्या, पशु-पक्षीाी निर्भय होकर वचरते थे। उनके निवास स्थान का गर्मी-सर्दी, शारीरिक कष्ट, पशुओं के द्वारा हानि न पहुँचे इतना ही उद्देश्य था। इसके लए उन्हें न तो बड़े-बड़े महलों की आवश्यकता थी, न सुरक्षा के लए कले जैसे आश्रम बनाने की जरूरत, न अपनी फौज, कमाण्डो रखने का झंझट। जब वैराग्य हो गया तो कसका भय, कससे द्वेष, फर आश्रम की ऊँची-ऊँची दीवारें कसकोय से बनाई जायें।

आज सन्त वह है जो अशान्त हुआ घूम रहा है। ठग संन्यासी हो गया, वलासी- वरक्त कहला रहा है, यह सब क्यों हो रहा है? क्यों होने दिया जा रहा है? आज हमारे पास ऐसे बहुत उदाहरण हैं जिनसे इन दुर्घटनाओं के कारणों को समझ सकते हैं। सन्त रामपाल दास चौबीसों घण्टे दूरदर्शन और समाचार-पत्रों का वषय बना हुआ है। आज तात्का लक समस्या के समाधान के रूप में सरकार ने उसे गरतार कर लया परन्तु इससे समस्या का समाधान होने वाला नहीं है। यह समस्या सरकार और समाज की बनाई हुई है, यदि इसके कारणों पर वचार करके उसके समूल वनाश का प्रयास नहीं कया गया तो यह समस्या प्रतिदिन खड़ी रहेगी। केवल उसके नाम बदलते रहेंगे। कभी यह समस्या भण्डरावाला के रूप में, कभी आसाराम बापू के रूप में, कभी राम-रहीम के रूप में, कभी रामपाल दास के रूप में। इन सन्तों में और चन्दन तस्कर वीरप्पन में भौतिक अन्तर इतना है क एक आदमी डाकू बनकर डकैती करता है दूसरा सन्त या गुरु बनकर डकैती या ठगी करता है। एक जंगलों में छिपता है तो दूसरा नगरों में कलेनुमा महल बनाकर रहता है। एक बदनाम है और दूसरे की चरण वन्दना होती है। परिणाम दोनों का एक जैसा होता है। जब इनसे जनता का दुःख बढ़ जाता है, सरकार के अस्तित्व पर संकट आता है तब दोनों को अपराधी मानकर पु लस, फौज, प्रशासन उनको गरतार करने, दण्ड देने में जुट जाता है। इन दोनों के बनाने के लए सरकार और समाज ही पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं।

रामपाल दास को सन्त कसने बनाया? समाज के समानित समझे जाने वाले लोगों ने। रामपाल दास हरियाणा सरकार की सेवा में एक जूनियर इञ्जीनियर था, गबन के कारण उसे सरकारी नौकरी से निष्का सत कर दिया गया। वह आज इतना बड़ा सन्त बन बैठा। वह अपने को कबीर का अवतार मानता है। जब दुष्ट व्यक्ति धा र्मकता का आडबर करता है तो जनता को मूर्ख बनाता है। धर्म के क्षेत्र में भक्त सन्तों को बड़ा बनाने का कार्य करते हैं।

रामपाल दास कबीरदासी मठ में रहते हुए अपने दुराचरण के कारण अपनी मण्डली में निन्दा का पात्र बना, इसके एक चेले ने इसकी पोल खोलते हुए एक पुस्तक लखी 'शैतान बण्यो भगवान' इस पुस्तक से क्रो धत होकर रामपाल दास ने उसे गुण्डों से पटवाया। उसने अपनी कहानी अपने परि चतों में अपने क्षेत्र के लोगों को सुनाई। रामपाल दास की दुष्टता से गाँव के लोग भी तंग थे, वहाँ की महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाओं से ग्रामवासी उत्तेजित थे। आश्रम के पास खेती करने वालों के खेतों पर कजा करने के उसके प्रयास से वहाँ के कसान भी परेशान थे। सरकार में सन्त की पहुँच बढ़ गई थी, लोगों की सुनवाई नहीं हो रही थी, तब आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में ग्रामवा सयों ने संघर्ष कया। सरकार को बाध्य होकर कार्यवाही करनी पड़ी। एक युवक का ब लदान भी हुआ। रामपाल दास को सरकार ने गरतार भी कया, वह जेल में भी रहा, जमानत पर छूटा, सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को उसका आश्रम उसे लौटाने का निर्देश दिया। ग्रामीणों के लए फर संकट आ गया, रोष बढ़ता रहा, बलदेव जी के नेतृत्व में फर संघर्ष हुआ। इसमें तीन लोगों का ब लदान हुआ। रामपाल दास से आश्रम खाली कराया गया फर उसने वही सब हिसार के बरवाला आश्रम में करना प्रारभ कया, आज उसी घटना का अगला दृश्य जनता के सामने है।

इस घटनाचक्र में रामपाल दास ने समाचार पत्र और दूरदर्शन के माध्यम से ऋ ष दयानन्द को गा लयाँ देना, पुस्तकों के उद्धरण को गलत तरीके से प्रस्तुत करना, समाचार पत्रों में बड़े-बड़े वज्ञापन देकर आर्यसमाज और ऋ ष दयानन्द की निन्दा करने का अ भयान जारी रखा। आर्यसमाज ने अपने सी मत साधनों से उसका उत्तर देने का प्रयास कया परन्तु उसके साधनों के सामने यह बहुत स्वल्प था। जब मनुष्य का दुर्भाग्य आता है तो दुर्बुद् ध साथ लाता है। रामपाल दास अपने मुकद्दमे की पेशी पर जाने से बचता रहा और वह दिन आ गया जब न्यायालय ने कसी भी स्थिति में उसे गरतार कर न्यायालय में प्रस्तुत करने का आदेश दिया। एक सप्ताह तक पु लस प्रयास करने पर भी उसे गरतार करने में सफल नहीं हो सकी तब आश्रम तोड़कर, बिजली, पानी बन्द कर उसे पकड़ने का प्रयास कया और 14 दिन बाद उसे गरतार कया जा सका।

इस घटना में वचारणीय बिन्दु है क इसके लए दोषी कौन है? क्या रामपाल दास दोषी है? इसका उत्तर है नहीं। क्या जनता दोषी है? इसका भी उत्तर है नहीं। फर इसका दोषी कौन है? इसका उत्तर है सरकार, प्रशासन, पु लस अ धकारी, राजनेता और समाज के धनी लोग इसके लए उत्तरदायी हैं। जब समाज के लोग ऐसे व्यक्ति को माध्यम बनाकर अपने काम सद्ध करते हैं तो वे ही लोग समाज में ऐसे लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। इन बड़े सपन्न प्रतिष्ठित लोगों को इन साधुओं की पूजा करते देखते हैं तो सामान्य जनता इनके भँवरजाल में फंस जाती है। समाज में अ धकांश लोग आज भी धर्म, अधर्म, झूठ-सच इसका अन्तर करने में समर्थ नहीं है। वे तो कसी को भी इस स्थान पर सन्त की वेशभूषा में देखकर उस पर सहज वश्वास कर लेते हैं, अपना सबकुछ उसको सौंपने के लए तैयार हो जाते हैं, यही कारण है क इन धा र्मक ठगों के भक्तों, अनुयायियों की संया हजारों में नहीं, लाखों में पहुँच गई है। इनकी बढ़ती भीड़ लोगों को अपनी ओर इतना आक र्षत करती है क सामान्य व्यक्ति उस भीड़ का हिस्सा बनकर अपने को धन्य समझ लेता है। भक्तों के धन से ये सन्त कुबेर बन जाते हैं, इनकी झोप ड़याँ महलों में बदल जाती हैं। इनके भक्तों की भीड़ से समाज में इनका महत्त्व बढ़ता जाता है। पु लस इनसे डरती है, सरकारी अ धकारी इनकी सेवा करते हैं, मन्त्री इनको प्रणाम करते हैं और निर्वाचन के समय इनके भक्तों के वोट प्राप्त करने के लोभ में इनके

चरण छूकर आशीर्वाद लेते हैं। ऐसे में वे अपने को सर्वशक्तिमान् समझने लगें तो आश्चर्य की क्या बात है?

रामपाल दास के प्रसंग में भी यही कुछ हुआ है। रामपाल दास का बचाव पहले से सरकारी अ धकारी करते आ रहे हैं, पु लस क मश्नर का वक्तव्य ध्यान देने योग्य है, उन्होंने पत्रकारों से कहा क पु लस के दस प्रतिशत लोग रामपाल दास के प्रभाव में हैं, इसी कारण पु लस को अपने कार्य में सफलता नहीं मल रही। इस तथ्य की जानकारी मलने पर कार्य-नीति बदली गई और अपरि चत पु लस को इस कार्य में लगाया गया तब जाकर पु लस को सफलता मली। स्मरण रखने की बात है क भूतपूर्व मुयमन्त्री भूपेन्द्र संह हुड्डा की पत्नी रामपाल दास के ट्रस्ट की ट्रस्टी है, यह भी समाचार पत्रों में आ चुका है। मनोहर लाल खट्टर नये मुयमन्त्री हैं, उन्हें प्रशासन को निर्दे शत करने में कठिनाई है। यह स्वाभा वक है परन्तु मुयमन्त्री स्वयं रोहतक के रहने वाले हैं, अतः यह समझना चाहिए क वे रामपाल दास और उसके साथ घटी घटनाओं से भलीभांति परि चत हैं फर भी इस घटनाक्रम में लोगों को ऐसा लगा क सरकार जानबूझकर कार्यवाही करने से बचना चाहती है। आलोचकों और पत्रकारों की दृष्टि में ऐसी सोच का ठोस कारण है, खट्टर सरकार ने रामपाल दास से चुनाव में उसका समर्थन माँगा था और भक्तों से भाजपा को मत देने की माँग की गई थी।

राजनीति में एक-एक मत का और मतदाता का मूल्य होता है। मतदाता मतदाता है, वह चोर है, डाकू है, सन्त है, दादा है, जिसके साथ जितने मत जुड़े हैं वह उतना ही महत्त्वपूर्ण है। ऐसी परिस्थिति में राजनेता भूल जाते हैं क वह कौन है, उन्हें तो बस मतदाता की चरण-वन्दना करनी होती है। रामपाल दास के साथ-साथ भाजपा ने राम-रहीम बाबा का चुनाव में समर्थन लया। उसके भक्तों के मत ही भाजपा को वजयी बनाने में समर्थ हुए, पछले दिनों एक बड़े कांग्रेसी नेता ने स्वीकार कया क कांग्रेस की हार का प्रमुख कारण, राम रहीम बाबा का भाजपा को समर्थन देना है। इस का समर्थन, कांग्रेस को भी चाहिए, चौटाला को भी चाहिए, फर राजनीति में रहना है तो भाजपा कैसे पीछे रह सकती है। बाबा राम रहीम के समर्थन का धन्यवाद मनोहर लाल खट्टर ने अपने मन्त्रीमण्डल के सहयो गयों के साथ बाबा के आश्रम में पहुँचकर चरण-वन्दना करके कया। ध्यान देने की बात है क बाबा राम रहीम रामपाल दास से बड़ा बाबा है, उसके आश्रम में होने वाले अवैध कार्यों की जाँच पड़ताल करने का साहस पहली सरकारों मेंाी नहीं था वर्तमान सरकार में भी नहीं है। वहाँ पत्रकार की हत्या का प्रसंग बहुत च चंत रहा है, समय-समय पर आलोचनायें होती हैं। सरकारें अपने स्वार्थ और दुर्बलता के कारण सार्थक कार्यवाही करने में समर्थ नहीं हो सकी हैं। जो भी कार्यवाही देखने में आई वे न्यायालय द्वारा की गई है। अभी बाबा राम रहीम के डेरे का एक वाद न्यायालय में लबित है। बाबा ने अपने अन्तरंग कार्यकर्त्ताओं को बड़ी संया में बलपूर्वक नपुंसक बना दिया जिससे अन्तरंग कार्यों में उनसे कोई बाधा नहीं पहुँचे। न्यायालय इस बात की जाँच कर रहा है। सरकार में यह साहस नहीं है क आश्रम के वषय में आई शकायतों की जाँच कर कार्यवाही कर सके।

बाबा लोग अपने कार्यक्रमों में राजनेताओं को बुलाकर अपना प्रभाव प्रद र्शत करते हैं और राजनेता उनके कार्यक्रमों में जाकर आशीर्वाद लेते हैं। इन बाबाओं में कई तो निपट मूर्ख होते हैं और इन बाबाओं के भक्तों कीाीड़ में बड़े शक्षा वद्, प्रशासक, राजनेता हाथ बांधे पंक्ति में खड़े रहते हैं। कुछ वर्ष पहले शेखावत मुयमन्त्री थे, आसाराम का जयपुर में कार्यक्रम था,

आसाराम ने अनेक स्थानों से सफारिश दबाव डालकर मुयमन्त्री को अपने कार्यक्रम में बुलाया था।

राजनेताओं को भीड़ ऐसे लुभाती है जैसे ठेका शराबियों को। फर कौन, कसे दोष दे? आसाराम ने आश्रम बनाये, भू म पर अवैध कजे कये, महिलाओं का शोषण कया, भक्तों के धन से धनपति बन बैठा, प्रायः करके हर बाबा-सन्त की यही कहानी है।

भण्डरावाला की कहानी से इस देश के नेताओं ने कोई शक्षा नहीं ली। इन्दिरा गाँधी ने उसे अपने वरो धयों को परास्त करने के लए आगे कया था परन्तु भारत सरकार के लए वह कतना बड़ा सरदर्द बना और इन्दिरा गाँधी की हत्या का कारण बना। आजकल एक नहीं दर्जनों सन्त इसी कार्य में लगे हुए हैं, ये पाखण्ड फैलाकर जनता के वश्वास को दिन-रात लूटने में लगे हुए हैं। मोदी की जन-धन योजना तो सफल हो या न हो पर इन पाखण्डियों की जन-धन योजना शत-प्रतिशत सफल है। एक निर्मल बाबा, हरी-लाल चटनी खलाकर लोगों का भाग्य बदल रहा है। कुमार स्वामी ब्रह्मर्ष बनकर बीज-मन्त्र दे रहा है और ऐसे लोगों को इन राजनेताओं से खूब सहयोग और समर्थन मलता है। द क्षण का सोना स्वामी हो या नित्यानन्द स्वामी, सभी लोग जनता को मूर्ख बनाकर लूटते हैं और का मनी काञ्चन के स्वामी बनते हैं, अपनी प्रवृ त्तयों का स्वा मत्व तो इन्हें न मला और न ही मलेगा।

इन सारी घटनाओं को देखने से एक बात साफ होती है क जनता को समझदार और जागरूक कये बिना इसका सुधार सभव नहीं है। आर्यसमाज इन्हीं लोगों की ऐसी बातों का खण्डन करता है तो नासमझ लोग कहते हैं सभी को अपनी आस्था चुनने का अ धकार है, सबको अपने वचारों का प्रचार करने की स्वतन्त्रता है परन्तु आर्यसमाज भी तो वचार ही दे रहा है। क्या गलत बातों से सावधान करना, वचार का प्रचार करना नहीं है? क्यों क गलत वचारों के निराकरण के बिना सद् वचारों को स्थान नहीं मल सकता। रामपाल दास के दुष्कृत्यों के वरोध में आर्यसमाज ने आवाज उठाई, आन्दोलन कया, आज उसी का परिणाम है क रामपाल दास का यथार्थ रूप जनता के सामने आ सका।

इस घटनाक्रम में बाबा की ओर से गोलीबारी में पु लस वाले और कुछ लोग घायल हुए परन्तु पु लस को गोली नहीं चलानी पड़ी। रामपाल दास को पु लस ने गरतार कया या रामपाल दास ने समर्पण कया यह तो प्रशासन और सरकार की नीयत को बतायेगा। परन्तु एक दुर्घटना का अन्त हुआ। पु लस को बधाई, ईश्वर का धन्यवाद। इस घटनाक्रम पर पञ्चतन्त्र की पंक्ति सटीक लगती है-

प्रथमस्तावदहं मूर्खो द् वतीयः पाशबन्धकः।

ततो राजा च मन्त्री च सर्वं वै मूर्खमण्डलम्।।

– धर्मवीर

आदर्श संन्यासी – स्वामी ववेकानन्द भाग -२ : धर्मवीर जी

दिनांक २३ अक्टूबर २०१४ को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में प्रतिवर्ष की भांति आर्यसमाज की ओर से मह षे दयानन्द ब लदान समारोह मनाया गया। इस अवसर पर भूतपूर्व सेनाध्यक्ष वी.के. संह मुख्य अति थ के रूप में आमन्त्रित थे। उन्होंने श्रद्धाञ्ज ल देते हुए जिन वाक्यों का प्रयोग कया वे श्रद्धाञ्ज ल कम उनकी अज्ञानता के प्रतीक अ धक थे। वी.के. संह ने अपने भाषण में कहा- 'इस देश के महापुरुषों में पहला स्थान स्वामी ववेकानन्द का है तथा दूसरा स्थान स्वामी दयानन्द का है।' यह वाक्य वक्ता की अज्ञानता के साथ अ शष्टता का भी द्योतक है। सामान्य रूप से महापुरुषों की तुलना नहीं की जाती। वशेष रूप से जिस मञ्च पर आपको बुलाया गया है, उस मञ्च पर तुलना करने की आवश्यकता पड़े भी तो अच्छाई के पक्ष की तुलना की जाती है। छोटे-बड़े के रूप में नहीं की जाती। यदि तुलना करनी है तो फर यथार्थ व तथ्यों की दृष्टि में तुलना करना न्याय संगत होगा।

श्री वी.के. संह ने जो कुछ कहा उसके लए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाता, आने वाला व्यक्ति जो जानता है, वही कहता है। यह आयोजकों का दायित्व है क वे देखें क बुलाये गये व्यक्ति के वचार क्या है। यदि भन्न भी है तो उनके भाषण के बाद उनकी उपस्थिति में शष्ट श दों में उनकी बातों का उ ार दिया जाना चाहिए, ऐसा न कर पाना संगठन के लए लज्जाजनक है। इसी प्रसंग में स्वामी ववेकानन्द के जीवन के कुछ तथ्य वी.के. संह की जानकारी के लए प्रस्तुत है।

'मेरठ में वे २५९ नंबर, रामबाग में, लाल नन्दराम गुप्त की बागान कोठी में ठहरे। अफगानिस्तान के आमीर अ दुर रहमान के कसी रिश्तेदार ने उस बार साधुओं को पुलाव खलाने के लए कुछ रुपये दिए थे। स्वामी जी ने उत्साहित होकर रसोई का जिम्मा अपने ऊपर ले लया। और दिनों में भी स्वामी जी बीच-बीच में रसोई में मदद कया करते थे। स्वामी तुरीयानन्द को खलाने के लए वे एक दिन खुद ही बाजार गये, गोश्त खरीदा, अंडे जुगाड़ कये और कई लजीज पकवान पेश कए।' (वही पृ. ९२)

'मेरठ में स्वामी जी अपने गुरुभाइयों को जूते- सलाई से लेकर चण्डीपाठ और साथ ही पुलाव क लया पकाना सखाते रहे। एक दिन उन्होंने खुद ही पुलाव पकाया। मांस का कीमा बनवाया। कुछेक सींक-कबाब भी बनाने का मन हो आया। ले कन सींक कहीं नहीं मली। तब स्वामी जी ने बुद् ध लगाई और सामने के पीच के पेड़ से चंद नर्म-नर्म डा लयाँ तोड़ लाए और उसी में कीमा लपेट कर कबाब तैयार कर लया। यह सब उन्होंने खुद पकाया, सबको खलाया, मगर खुद नहीं खाया। उन्होंने कहा 'तुम सबको खलाकर मुझे बेहद सुख मल रहा है।' (वही पृ. ९२)

'स्वामी जी ने अमेरिका से एक होटल का ववरण भेजा ''यहाँ के होटलों के बारे में क्या कहूँ? न्यूयार्क में मैं एक ऐसे होटल में हूँ, जिसका प्रतिदिन का कराया ५००० तक है। वह भी खाना-पीना छोड़कर। ये लोग दुनिया के धनी देशों में से हैं। यहाँ रुपये ठीकरों की तरह खर्च होते हैं। होटल में मैं शायद ही कभी रुकता हूँ, ज्यादातर यहाँ के बड़े-बड़े लोगों का मेहमान होता हूँ।'' वदेश में ग्रेंड- डनर कैसा होता है, इसका ववरण ववेकानन्द ने खुद दिया है '' डनर

ही मुख्य भोजन होता है। अमीर हैं तो उनका रसोइया फ्रेंच होता है और चावल भी फ्रांस का। सबसे पहले थोड़ी सी नमकीन मछली या मछली के अण्डे या कोई चटनी या स जी। यह भूख बढ़ाने के लए होता है। उसके बाद सूप। उसके बाद आजकल के फैशन के मुताबिक एक फल। उसके बाद मछली। उसके बाद मांस की तरी! उसके बाद थान-गोश्त का सींक कबाब! साथ कच्ची स जी! उसके बाद आरण्य मांस-हिरण वगैरह का मांस और बाद में मठाई। अन्त में कुल्फी। मधुरेण समापयेत्।'' प्लेट बदलते समय कांटा चम्मच भी बदल दिये जाते हैं। खाने के बाद बिना दूध की काफी।' (वही पृ. ९५)

'एक दिन भाई महेन्द्र से ववेकानन्द ने पूछा 'क्या रे, खाया क्या?' अगले पल उन्होंने सलाह दे डाली 'रोज एक जैसा खाते-खाते मन ऊब जाता है। घर की से वका से कहना, बीच-बीच में अण्डे का पोच या ऑमलेट बना दिया करे, तब मुंह का स्वाद बदल जाएगा।' (वही पृ. ९७)

'एक और दिन करीब डेढ़ बजे स्वामी जी ने अपने भक्त मस्टर फॉक्स से कहा 'ध ा तेरे की'! रोज-रोज एक जैसा उबाऊ खाना नहीं खाया जाता! चलो अपन दोनों चलकर कसी होटल में खा आते हैं।' (वही पृ. ९७)

'एक दिन शाम के खाने के लए गोभी में मछली डालकर तरकारी पकाई गई थी। उनके साथ उनके भक्त और तेज गति के भाषण लेखक गुड वन भी थे। गुड वन ने वह स जी नहीं खाई। उसने स्वामी जी से पूछा 'आपने मछली क्यों खाई?' स्वामी जी ने हंसते-हंसते जवाब दिया 'अरे वह बुढ़िया से वका मछली ले आई। अगर नहीं खाता तो इसे नाली में फेंक दिया जाता। अच्छा हुआ न मैंने उसे पेट में फेंक दिया।' (वही पृ. ९८)

'मेज पर स्वामी जी की पसन्द की सारी चीजें नजर आ रही हैं- फल, डबल अण्डों की पोच, दो टुकड़े टोस्ट, चीनी और क्रीम समेत दो कप काफी।' (वही पृ. १०३)

'पारिवारिक भ्रमण पर निकलते हुए स्वामी जी का आदिम तरीके से क्लेम या सीपी खाना। गर्म-गर्म सीपी में उंगली डालकर मांस निकालने के लए एक खास प्र शक्षण की जरूरत होती है। ले कन कीड़े-मकोड़े-केंचुओं के देश से सीधे अमेरिका पहुँचकर, यह सब सीखने में स्वामी जी को जरा भी वक्त नहीं लगा।' (वही पृ. १०३)

'उसी परिवार में स्वामी जी के दोपहर-भोजन का एक सं क्षप्त ववरण- मटन (बीफ या गाय का गोश्त हर गज नहीं) और तरह-तरह की साग-स िजयाँ, उनके परम प्रय हरे मटर, उस वक्त डेजर्ट के तौर पर मठाई के बजाय फल-खासकर अंगूर।' (वही पृ. १०३)

' ववेकानन्द ही एकमात्र ऐसे भारतीय थे, जिन्होंने पाश्चात्य देशों में वेदान्त और बिरयानी को एक साथ प्रचारित करने की दूरद र्शता और दुस्साहस दिखाया।' (वही पृ. ११०)

'इससे पहले लन्दन में भी स्वामी जी ने पुलाव-प्रसंग पर भी अपनी राय जाहिर की है। प्याज को पलाशु कहते हैं- पॅल का मतलब है मांस। प्याज को भूनकर खाया जाए, तो वह अच्छी तरह हजम नहीं होता। पेट के रोग हो जाते हैं। सझाकर खाने से फायदेमंद होता है और मांस में जो 'कस्टिवनेस' होता है वह नष्ट हो जाते हैं।' (वही पृ. ११२)

'पुलाव पर्व का मानो कहीं कोई अन्त नहीं। पहली बार अमेरिका जाने से पहले, स्वामी जी बम्बई में थे। अचानक उनके मन में इच्छा जागी क अपने हाथ से पुलाव पकाकर सबको खलाया जाय। मांस, चावल, खोया खीर वगैरह, सभी प्रकार के उपादान जुटाये गये। इसके अलावा यख़्नी का पानी तैयार कया जाने लगा। स्वामी जी ने यख़्नी के पानी से थोड़ा-सा मांस निकाल कर चखा। पुलाव तैयार कर लया गया। इस बीच स्वामी जी दूसरे कमरे में जाकर ध्यान में बैठ गये। आहार के समय सभी लोगों ने बार-बार उनसे खाने का अनुरोध कया। ले कन उन्होंने कहा 'मेरा खाने का बिल्कुल मन नहीं है। मैं तो पकाकर तुम लोगों को खलाना चाहता था। इस लए १४ रुपये खर्च करके हं डया भर पुलाव बनाया है। जाओ तुम लोग खा लो और स्वामी जी दुबारा ध्यानमग्न हो गये।' (वही पृ. ११२)

' मर्च देखते ही स्वामी का ब्रेक फेल हो जाता।' (वही पृ. ११४)

'अमेरिका में एक बार स्वामी जी फ्रेंच रेस्तराँ में पहुँच गये। वहाँ की चंगड़ी मछली खाने के बाद घर आकर उन्होंने खूब-खूब उल्टियाँ की। बाद में ठाकुर रामकृष्ण को याद करते हुए, उन्होंने कहा 'मेरे रंग-ढंग भी अब उस बूढ़े जैसे होते जा रहे हैं। कसी भी अप वत्र व्यक्ति का छुआ हुआ खाद्य या पानी उनका भी तन-मन ग्रहण नहीं कर पाता था।' (वही पृ. ११६)

' वद्रोही ववेकानन्द की उपस्थिति हम उनके खाद्य-अभ्यास में खोज सकते हैं और पा सकते हैं। शास्त्र में कहा गया है क दूध और मांस का एक साथ सेवन नहीं करना चाहिए। ले कन स्वामी जी इन सबसे लापरवाह दूध और मांस दोनों ही वपरीत आहारों के खासे अभ्यस्त हो गये थे।' (वही पृ. ११८)

'इसी तरह एक बार आईसक्रीम का मजा लेते हुए उच्छ्वा सत होकर कहा- 'मैडम, यह तो फूड फॉर गॉड्स है। अहा सचमुच स्वर्गीयम्' (वही पृ. १२०)

' शष्य शरच्चन्द्र की ही मसाल लें। पूर्वी बंगाल का लड़का। स्वामी जी का आदेश था। 'गुरु को अपने हाथों से पकाकर खलाना होगा।' मछली, स जी और पकाने की अन्यान्य उपयोगी साम ग्रयाँ लेकर शष्य शरच्चन्द्र करीब आठ बजे बलराम बाबू के घर में हाजिर हो गया। उसे देखते ही स्वामी जी ने निर्देश दिया, तुझे अपने देश जैसा खाना पकाना होगा। अब शष्य ने घर के अन्दर रसोई में जाकर खाना पकाना आरम्भ कया। बीच-बीच में स्वामी जी अन्दर आकर उसका उत्साह बढ़ाने लगे। कभी उसे मजाक-मजाक में छेड़ते भी रहते- 'देखना मछली का 'जूस' (रंग) बिल्कुल बांग्लादेशी जैसा ही हो।'

'अब इसके बाद की घटना शष्य की जुबानी ही सुनी जाए- 'भात, मूंग की दाल, कोई मछली का शोरबा, खट्टी मछली, मछली की 'सुक्तिनी' तो लगभग तैयार हो गया। इस बीच स्वामी जी नहा-धोकर आ पहुँचे और खुद ही प ो में ले-ले कर खाने लगे। उनसे कई बार कहा भी गया क अभी और भी कुछ-कुछ पकाना बाकी है, मगर उन्होंने एक न सुनी। दुलरुवा बच्चे की तरह कह उठे 'जो भी बना है फटाफट ले आ, मुझसे अब इन्तजार नहीं कया जा रहा। मारे भूख के पेट जला जा रहा है।' शष्य कभी भी पकाने-रांधने में पटु नहीं था, ले कन आज स्वामी जी उसके पकाने की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। कलक ा के लोग मछली की सुक्तिनी के नाम पर ही हंसी-मजाक करने लगते हैं। ले कन स्वामी जी ने वही सुक्तिनी खाकर कहा 'यह व्यञ्जन मैंने कभी नहीं खाया।' वैसे मछली का जूस जितना मर्चदार है,

इतनी मर्चदार बाकी सब नहीं हुई। 'खट्टी' मछली खाकर स्वामी जी ने कहा 'यह बिल्कुल वर्धमानी कस्म की हुई है।' अब स्वामी जी ने अपने शष्य से बेहद मह वपूर्ण बात कही, 'जो अच्छा पका नहीं सकता, वह अच्छा साधु हर गज नहीं हो सकता।' (वही पृ. १२२)

'अपनी महासमा ध के कुछ दिनों पहले स्वामी जी ने इसी शष्य को कैसे खुद पकाकर खलाया था, यह जान लेना भी बेहतर होगा।' (वही पृ. १२२)

'उन दिनों स्वामी जी का क वराजी इलाज जारी था। पाँच-सात दिनों से पानी-पीना बिल्कुल बन्द था, वे सर्फ दूध पर चल रहे थे। ये वही शख्स थे जो घण्टे-घण्टे में पाँच-सात बार पानी पीते थे। शष्य मठ में ठाकुर को भोग लगाने के लए एक रूई मछली ले आया। मछली काट-कूट ली जाए, तो उसका अगला हिस्सा ठाकुर के भोग के लए निकाल कर थोड़ा-सा हिस्सा अंग्रेजी पद्धति से पकाने के लए स्वामी जी ने खुद ही मांग लया। आग की आँच में उनकी प्यास बढ़ जाएगी, इस लए मठ के लोगों ने उनसे अनुरोध कया क वे पकाने का इरादा छोड़ दें। ले कन स्वामी जी ने उन लोगों की एक न सुनी। दूध, ब र्मसेली, दही वगैरह डालकर उन्होंने चार-पाँच तरह से मछली पका डाली। थोड़ी देर बाद स्वामी जी ने पूछा, क्यों कैसी लगी? शष्य ने जवाब दिया 'ऐसा कभी नहीं खाया।' शष्य ने ब र्मसेली कभी नहीं खाई थी। उसने जानना चाहा क यह कौन सी चीज है? स्वामी जी को मजाक सूझा। उन्होंने हंसकर कहा- यह वलायती केंचुआ है। इन्हें मैं लन्दन से सुखाकर लाया हूँ।' (वही पृ. १२२-१२३)

'समयः- मार्च १८९९ स्थान बेलुड़ मठ। इस लञ्च के कुछेक दिन पहले ही बिना कसी नोटिस के सस्टर निवेदिता को उन्होंने वेलुड़ में ही सपर खलाया था। उस दिन का मेन्यू था- कॉफी, कोल्ड मटन, ब्रेड एण्ड बटर। स्वयं स्वामी जी ने सामने बैठकर परम स्नेह से निवेदिता को खलाया और नाव से कलक ा ा वापस भेज दिया।'

'अगले इतवार के उस अ वस्मरणीय लञ्च का धारा- ववरण वे मस मैक्लाइड को लखे गए एक पत्र में रख गए हैं। 'वह एक असाधारण सफलता थी। काश तुम भी वहाँ होतीं, स्वामी जी ने उस दिन अपने हाथ से खाना पकाया था, खुद ही परोसा भी था। हम दूसरी मंजिल पर एक मेज के सामने बैठे थे। सरला पूर्व की तरफ मुंह कए बैठी थी, ता क उसे गंगा नजर आती रहे। निवेदिता ने इस लञ्च को नाम दिया था 'भौगो लक लञ्च' क्यों क एक ही मेज पर समूचे वश्व के पकवान जुटाये गये थे। सारे व्यञ्जन स्वामी जी ने खुद पकाये थे। खाना पकाते-पकाते ही, उन्होंने निवेदिता को एक बार तम्बाकू सजा लाने को कहा, आइए, इस अतिस्मरणीय मेन्यू का ववरण सुनाएँ-

१. अमेरिकी या यांकी- फश चाउडर।

२. नार्वेजियन- फश-बॉल या मछली के बड़े- 'यह व्यञ्जन मुझे मैडम अगनेशन ने सखाया था' स्वामी जी ने मजाक-मजाक में बताया। यह मैडम कौन हैं, स्वामी जी वे क्या करती हैं? मुझे भी उनका नाम सुना-सुना लग रहा है। उ ार मला, 'और भी बहुत कुछ करती हैं, साथ में फश-बॉल भी पकाती हैं।'

३. इंग्लिश या यांकी- बो र्डंग हाउस हैश। स्वामी जी ने आश्वस्त कया क यह ठीक तरह से पकाया गया है और इसमें प्रेक मलाया गया है। ले कन प्रेक? इसके बजाय हमें उसमें लौंग मली, अहा रे! प्रेक न होने की वजह से हमें अफसोस होता।'

४. कश्मीरी- मन्सड पाई आ ला कश्मीरा। बादाम और कश मश समेत मांस का कीमा।

५. बंगाली- रसगुल्ला और फल। पकवान का ववरण सुनकर वस्मित होना ही चाहिए।' (वही पृ. १२६)

४ जुलाई १९०२ शुक्रवार को स्वामी जी ने क्या दोपहर का, आखरी भोजन ग्रहण कया था? अलबत खाया था। इ लश मछली, जुलाई का महीना, सामने ही गंगा नदी। इ लश मछली के अलावा अगर और कुछ पकाया गया तो दुनिया के लोग कहते- यह शख्स निहायत बेर सक है। नितान्त रसहीन। आसन्न वयोगान्त नाटक की परिणति का आभास कसी को भी नहीं था। ४ जुलाई की सुबह। स्वामी प्रेमानन्द का ववरण पढ़ने लायक है। 'इस वर्ष पहली बार गंगा की एक इ लश मछली खरीदी गई। उसकी कीमत को लेकर कतने ही हंसी-मजाक हुए। कमरे में एक बंगाली लड़का भी मौजूद था। स्वामी जी ने उससे कहा- 'सुना है नई-नई मछली पाकर तुम लोग उसकी पूजा करते हो, कैसे पूजा की जाती है, तू भी कर डाल।' आहार के समय बेहद तृप्ति के साथ रसदार इ लश मछली और अम्बल की भुजिया खाई। आहार के बाद उन्होंने कहा 'एकादशी व्रत करने के बाद भूख काफी बढ़ गई है। लोटा-कटोरी भी चाट-चूटकर मैंने बड़ी मुश्किल से छोड़ी।'

'उन्हें एक और चीज भी पसन्द थी- कोई मछली। शमला स्ट्रीट की द ा-कोठी में यह मजाक मशहूर था- कोई मच्छी दो तरह की होती है, सख कोई और गोरखा कोई। सख कोई लम्बी-लम्बी होती है और गोरखा कोई बौनी, ले कन काफी दमदार।' (वही पृ. १२८)

पहली बार अमेरिका जाने के लए बम्बई में जहाज पर सवार होने से पहले स्वामी जी का अचानक कोई मछली खाने का मन हो आया। उस समय बम्बई में कोई मछली मलना मुश्किल था। भक्त कालीपद ने ट्रेन से आदमी भेजकर काफी मुश्किलें झेलकर ववेकानन्द को कोई मछली खलाने का दुर्लभ सौभाग्य अर्जित कया।' (वही पृ. १२८)

' कसी- कसी भक्त के यहाँ जाकर वे खुद ही मेन्यू तय कर देते थे। कुसुम कुमारी देवी बता गई हैं, 'मेरे घर आकर उन्होंने उड़द की दाल और कोई मछली का शोरबा काफी पसन्द कया था।' (वही पृ. १२८)

स्वामी जी की पसन्द-नापसन्द के मामले में मटर की दाल और कोई मछली का दुर्दान्त प्रतियोगी है- इ लश और पोई साग। स्वामी जी की महासमा ध के काफी दिनों बाद भी एक स्नेहमयी ने अफसोस जाहिर कया 'पोई साग के साथ चंगड़ी मछली बनती है, तो नरेन की याद आ जाती है।' (वही पृ. १२९)

'जैसे चाबी और ताला, हांडी और आहार, शव और पार्वती की जोड़ी बनी है, उसी तरह स्वामी जी के जीवन में इ लश मछली और पोई साग की जोड़ी घर कर गई थी। कान खींचते ही जैसे

सर आगे आ जाता है। उसी तरह घर इ लश आते ही स्वामी जी पोई साग की खोज करते थे। अब सुनें, इलाहबाद के सरकारी कर्मचारी, मन्मथनाथ गंगोपाध्याय का संस्मरण।

एक बार स्वामी जी स्टीमर से गोयपालन्द जा रहे थे। एक नौका पर सवार मछेरे अपने जाल में इ लश मछली बटोर रहे थे। स्वामी जी ने अचानक कहा 'तली हुई इ लश खाने का मन हो रहा है।' स्टीमर चालक समझ गया क स्वामी जी सभी खला सयों को इ लश मछली खलाना चाहते हैं। ना वकों से मोलभाव करके उसने बताया, 'एक आने में एक मछली, तीन-चार मछ लयां काफी होंगी।' स्वामी जी ने छूटते ही निर्देश दिया 'तब एक रुपइया की मछली खरीद ले। बड़ी-बड़ी सोलह इ लश ले ले और साथ में दो-चार फाव में।' स्टीमर एक जगह रोक दिया गया।'

स्वामी जी ने कहा 'पोई साग भी होता, तो मजा आ जाता। पोई साग और गर्म-गर्म भात। गांव करीब ही था। एक दुकान में चावल तो मल गया। मगर वहाँ बाजार नहीं लगता था। पोई साग कहाँ से मले? ऐसे में एक सज्जन ने बताया, 'च लए, मेरे घर की ब गया में पोई साग लहलहा रहा है। ले कन मेरी एक शर्त है, एक बार मुझे स्वामी जी के दर्शन कराने होंगे।' (वही पृ. १२९)

रोग सूची- (वही पृ. १५८, १८९)

'दूसरी बार वदेश-यात्रा के समय उन्होंने मानसकन्या निवेदिता से जहाज में कहा था- 'हम जैसे लोग चरम की समष्टि हैं। मैं ढेर-ढेर खा सकता हूँ और बिल्कुल खाये बिना भी रह सकता हूँ। अ वराम धूम्रपान भी करता हूँ और उससे पूरी तरह वमुख भी रह सकता हूँ। इन्द्रियदमन की मुझमें इतनी क्षमता है, फर भी इन्द्रियानुभूति में भी रहता हूँ। नचेत दमन का मूल्य कहाँ है।' (वही पृ. १६०)

'उनके शष्य शरच्चन्द्र चक्रवर्ती पूर्वी बंगाल के प्राणी थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था- 'सुना है पूर्वी बंगाल के गांव-देहात में बदहजमी भी एक रोग है, लोगों को इस बात का पता ही नहीं है। शष्य ने जवाब दिया- 'जी हाँ, हमारे गाँव में बदहजमी नामक कोई रोग नहीं है। मैंने तो इस देश में आकर इस रोग का नाम सुना। देश में तो हम दोनों जून मच्छी-भात खाते हैं।'

'हाँ, हाँ, खूब खा। घास-प ो खा-खाकर पेट पचके बाबा जी लोग समूचे देश में छा गये हैं। वे सब महातमोगुण सम्पन्न हैं? तमोगुण के लक्षण हैं- आलस्य, जड़ता, मोह, निद्रा, यही सब।' (वही पृ. १६४)

'हमने यह भी देखा क उनका धूम्रपान बढ़ गया था। उसमें नया आकर्षण भी जुड़ गया, नई-नई आ वष्कृत अमेरिका की आइसक्रीम.....।' (वही पृ. १८८)

' कसी भक्त ने सवाल कया 'स्वामी जी, आपकी सेहत इतनी जल्दी टूट गई, आपने पहले से कोई जतन क्यों नहीं कया।' स्वामी जी ने जवाब दिया- 'अमेरिका में मुझे अपने शरीर का कोई होश ही नहीं था।' (वही पृ. १८८)

'दोपहर ११.३० अपने कमरे में अकेले खाने के बजाय, सबके साथ इकट्ठे दोपहर का खाना खाया- रसदार इ लश मछली, भजिया, चटनी वगैरह से भात खाया।' (वही पृ. २०५)

'शाम ५ बजे- स्वामी जी मठ में लौटे। आम के पेड़ तले, बैंच पर बैठकर उन्होंने कहा- 'आज जितना स्वस्थ मैंने काफी अर्से से महसूस नहीं कया।' तम्बाकू पीकर पाखाने गऐ। वहाँ से लौटकर उन्होंने कहा- 'आज मेरी तबियत काफी ठीक है।' उन्होंने स्वामी रामकृष्णानन्द के पता श्री ईश्वरचन्द्र चक्रवर्ती से थोड़ी बातचीत की।'

रात ९ बजे-इतनी देर तक स्वामी जी लेटे हुए थे, अब उन्होंने बाईं करवट ली। कुछ सैकेण्ड के लए उनका दाहिना हाथ जरा कांप गया। स्वामी जी के माथे पर पसीने की बूंदें। अब बच्चों की तरह रो पड़े।

रात ९.०२ से ९.१० बजे तक गहरी लम्बी उसांस, दो मनट के लए स्थिर, फर गहरी सांस, उनका सर हिला और माथा त कये से नीचे लुढक गया। आंखें स्थिर, चेहरे पर अपूर्व ज्योति और हँसी।' (वही पृ. २०६)

इस सारे ववरण को पढ़ने के बाद यदि कोई कहता है क स्वामी ववेकानन्द इस देश के सर्वोच्च महापुरुष थे और ऋ ष दयानन्द सरस्वती दूसरे पायदान पर आते हैं तो मेरा उनसे आग्रह होगा क वे अपने वक्तव्य में संशोधन कर लें और कहें – स्वामी ववेकानन्द इस देश के महापुरुषों में पहले पायदान पर हैं और ऋ ष दयानन्द सीढ़ी के अन्तिम पायदान पर हैं तो हम बधाई देंगे। हमारे वन्दनीय तो फर भी ऋ ष दयानन्द ही होंगे क्यों क इस इस देश के ऋ षयों ने महानता का आदर्श धन, बल, सौन्दर्य, वद्व ाा, वक्तित्व आदि को नहीं माना, उन्होंने बड़प्पन का आधार सदाचार को माना है। इस लए मनु महाराज कहते हैं-

यह देश सच्चरित्र लोगों के कारण सारे संसार को शक्षा देता रहा है। जैसा क

ऐतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शक्षेरन् पृ थव्यां सर्वमानवाः।।

टिप्पणी

पुस्तक का नाम – ववेकानन्द- जीवन के अनजाने सच

प्रकाशक – पैंग्विन प्रकाशन, नई दिल्ली

– धर्मवीर

आदर्श सन्यासी -स्वामी ववेकानन्द : प्रो धर्मवीर

DECEMBER 22, 2014 2 COMMENTS

दिनाक 23 अक्टूबर 2014 को रामलीला मैदान,न्यू दिल्ली में प्रतिवर्ष की भांति आर्यसमाज की और से मह षं दयानन्द ब लदान समारोह मनाया गया. इस अवसर पर भूतपूर्व सेनाध्यक्ष वी.के. संह मुख्य अति थ के रूप में आमंत्रित थें1 उन्होंने श्रद्धांज ल देते हुए जिन वाक्यों का प्रयोग कया वे श्रद्धांज ल कम उनकी अज्ञानता के प्रतिक अ धक थें. वी.के. संह ने अपने भाषण में कहा-'इस देश के महापुरषो में पहला स्थान स्वामी ववेकानंद का हैं1 तथा दूसरा स्थान स्वामी दयानन्द का हैं' यह वाक्य वक्ता की अज्ञानता के साथ अ शष्टता का भी घोतक हैं. सामान्य रूप से महापुरषो की तुलना नहीं की जाती. वशेष रूप से जिस मंच पर आपको बुलाया गया हैं . उस मंच पर तुलना करने की आवश्यता पड़े भी तो अच्छाई के पक्ष की तुलना के जाती हैं. छोटे-बड़े के रूप में नहीं की जाती. यदि तुलना करनी हैं तो फर यथार्थ व तथ्यों की दृष्टि मेंत तुलना करना न्याय संगत होगा.

श्री वी.के. संह ने जो कहाँ उसके लए उनको दोषी नहीं ठहराया जाता, आने वाला व्यक्ति जो जानता हैं, वही कहता हैं. यह आयोजको का दायितव हैं की वे देखे बुलाये गए व्यक्ति के वचार क्या हैं. यदि भन्न भी हैं तो उनके भाषण के बाद उनकी उपस्थिति में शष्ट शब्दों में उनकी बातो का उतर दिया जाना चाहिए, ऐसा न कर पाना सगंठन के लए लज्जाजनक हैं. इसी प्रसंग में स्वामी ववेकानंद के जीवन के कुछ तथ्य वी.के. संह की जानकारी के लए प्रस्तुत हैं:

भारतवर्ष में सन्यास संसार को छोड़ने और मोह से छुटने का नाम हैं. स्वामी ववेकानंद न संसार

छोड़ पाए न मोह से छुट पाए इस लय वे सारे जीवन घर और घाट की अजीब खीचतान में पड़े रहे . (वही पृष्ठ – २)

अपने कसी प्रयजन का मुत्यु सवांद पाकर सन्यासी ववेकानंद को रोता देखकर कसी ने मंतव्य दिया- 'सन्यासी के लए कसी की मुत्यु पर शोक प्रका शत करना अनु चत हैं.

ववेकानंद ने उतर दिया 'यह आप कैसे बाते करते हैं? सन्यासी हूँ इस लए क्या में अपने हृदय का वसर्जन दे दूँ .सच्चे सन्यासी का हृदय तो आप लोगो के मुकाबले और अ धक कोमल होना चाहिए .हजार हो, हम सब आ खर इंसान ही तो हैं.' अगले ही पल, उनकी अ चंतनिये अग्निवर्षा हुई, ' जो सन्यास दिल को पत्थर कर लेने का उपदेश देता हैं, में उस सन्यास को नहीं मानता. (वही पृष्ठ – २)

' जो व्यक्ति बिल्कुल सच्चे-सच्चे मन से अपनी माँ की पूजा नहीं कर पाता,वह कभी महान नहीं हो सकता.

इसके लए स्वामी ववेकानंद ने शंकराचार्य और चैतन्य का उदाहरण दिया. (वही पृष्ठ – ३)

में अति नाकारा संतान हूँ .अपनी माँ के लए कुछ भी नहीं कर पाया .उन लोगो ने जाने को कहाँ तो बहा कर चला आया. (वही पृष्ठ – ७)

‘सोने जैसे परिवार का सोना बेटा नरेंदर नाथ लगभग एक ही समय दो-दो प्रबल भंवर में फँस गया था- आध्यात्मिक जगत में वपुल आलोडन द क्षणेश्वर के श्री रामकृष्ण से साक्षात्कार .दूसरा भंवर था- पता वश्वनाथ की आकस्मिक मौत से पारिवारिक वपर्यय .यह एक ऐसी परिस्थिती थी, जब इक्कीस वर्षीय वकालत दा, बड़े बेटे के अलावा कमाने लायक और कोई नहीं था 1’(वही पृष्ठ – २०)

; पता की मत्यु के साल भार बाद सन १८८५ में मार्च महीने में नरेंदरनाथ ने घर छोड़ देने का फैसला ले लया था ऐसा हम अंदाजालगा सकते हैं .यह सब व्रतांत पढ़कर आलोचकों ने मोके का फायदा उठाते हुय कहाँ एक टेढ़ा सा सवाल जड़ दिया-स्वामी जी अभाव सन्यासी थें या स्वभाव सन्यासी थें (वही पृष्ठ – २६)

अब घर से उनका कोई खास सरोकार नहीं रहा .हाँ जब वे कोलकत्ता में होते थें तो कभी-कभार माँ से मलने चले आते थें .सन १८९७ में यूरोप से लोटने के पहले तक घर में कसी ने उन्हें गेरुआ वस्त्र में नही देखा1 (वही पृष्ठ – ४१)

‘ इस प्रसंग में वेणीशंकर शर्मा ने कहाँ हैं- जो कुछ परिवार से जुड़ा हैं, वह निंदनीय या वर्जनीय हैं,ऐसा उनका मनोभाव नही था.मात्रीभक्ति को उन्होंने सन्यास की वेदी पर ब ल नहीं दी, बल्कि हम तो यह देखते हैं की वे माँ के लय उच्च्कान्क्षा , नेतृत्व ,यश सब कुछ का वसर्जन देने को तेयार थें. (वही पृष्ठ –४५)

‘वेणीशंकर शर्मा की राय हैं- ऐसा लगता हैं स्वामी जी को अमेरिका भेजने को जो खर्चीला संकल्प महाराज ने ग्रहण कया था, उसमे स्वामी जी की माँ और भाइयो के लए सों रुपये महीने का खर्च भी शा मल था .महाराज ने सोचा क स्वामी जी को अपनी माँऔर भाइयो की दु षन्नता से मुक्त करके भेजना ही , उनका कर्तव्य हैं (वही पृष्ठ –४६)

‘खेतड़ी महाराज को पत्र (१७ सतम्बर १८९८) भेजा मुझे रुपयों की जरूरत हैं, मेरे अमेरिकी दोस्तों ने यथासाध्य मेरी मदद की हैं,ले कन हर वक्तगत फेलाने में लाज आती हैं, खासतोर पर

इस वजह से बीमार होने का मतलब ही हैं-एक मुश्त खर्च . दुनिया में सर्फ एक ही इंसान हैं, जिससे मुझे भीख मागंते ममुझे संकोच नहीं होता .और वह इंसान हैं आप .आप दे या न दे, मेरे लए दोनों बराबर हैं .अगर संभव हो तो मेहरबानी करके , मुझे कुछ रूपये भेज दे (वही पृष्ठ – ५५)

‘ में क्या चाहता हूँ, उसका वशद ववरण में लख चुका हूँ .कलकत्ता में एक छोटा सा घर बनाने पर खर्च आएगा दास हजार रुपये .इतने रुपये से चार-पांच जन के रहने लायक छोटा सा घर कसी तरह ख़रीदा या बनवाया जा सकता हैं .घर खर्च के लए आपर मेरी माँ को हर महीने जो सों रूपये भेजते हैं, वह उनके लए पर्याप्त हैं .जब तक में जिन्दा हूँ, अगर आप मेरे चर्च के लए और सों रुपये भेज सकें, तो मुझेबेहद ख़ुशी होगी .बिमारी की वजह से मेरा खर्च भयंकर बढ़ गया हैं .वैसे यह अतिरिक्त बोझ आपको जयादा दिनों तक वहन करना होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता, क्यो कं में हद से हद और दो-एक वर्ष जिन्दा रहूँगा .में एक और भीख भी मांगता

हूँ-माँ के लए आप जो हर महीने सों रूपये भेजते हैं, अगर हो सके तो उसे स्थायी रखे.मेरी मौत के बाद यह भी मदद उनके पास पहुचती रहे .अगर कसी कारणवश मेरे प्रति अपने प्यार या दान में वलाप लगाना पड़ें तो एक अ कचन साधु के प्रति कभी प्रेम प्रीति रही हैं,यह बात यद् रखते हुए, महाराज इस साधु की दु खयारी माँ पर करुणा बरसाते रहे 1' (वही पृष्ठ – ५६)

'उन्होंने अपनीयह इच्छा भी बताई क अब वे अपनी जिन्दगी के बचे-खुचे दिन अपनी माँ के साथ बिताएंगे .उन्होंने कहा- देखा नहीं, इस बार बीच में आपदा हैं- प्रकत वैराग्य ! अगर संभव होता तो में अपने अतीत का खंडन करता, अगर मेरी उम्र दस वर्ष काम होती, तो में ववाह करता .वह भी अपनी माँ को खुश करने के लए, कसी अन्य कारण से नहीं .उफ़ ! कस बेसु ध में मेने यह कुछ साल गुजार दिये, उचाशा के पागलपन में था'…अगले ही पल वह अपने समर्थन में कह उठे, में कभी उचा भलाषी नहीं था .खयाति का बोध मुझे पर लाद दिया गया था 1' 'निवेदिता ने कहा, खयाति की शुदरता आप में कभी नहीं थी .ले कन में बेहद खुश हूँ क आपकी उम्र दस वर्ष कम नहीं हैं ' (वही पृष्ठ – ५७)

' वश्व वजय कर कलकत्ता लोट आने के बाद (१८९७) स्वामी जी का माँ से मलने जाने का हर द्रश्य भी अं कत हैं 1- पेट्रियट, औरेटर,सैंट कहाँ गुम हो गया वे दोबारा अपनी माँ के गोद के नन्हे से लला बन गए .माँ की गौद में सर रखकर,असहाय शरारती शशु की तरह वे रोने लगे-माँ-माँ अपने हाथो से खलाकर,मुझे इंसान बनाओ. (वही पृष्ठ – ६१)

' अगले सप्ताह में अपनी माँ को लेकर तीर्थ में जा रहा हूँ .तीर्थ-यात्रा पूरी करने में कई महीने लग जायेंगे .तीर्थ-दर्शन हिन्दू- वधवायो की अन्तरग साध होती हैं .जीवन भरमेने अपने आत्मीय स्वाजनो को केवल दुख ही दिया .में उन लोगो की कम से कम एक इच्छा पूरी करने की को शश कर रहा हूँ . (वही पृष्ठ – ६४)

स्वामी त्रिगुणातितानंद ने यह भी जानकारी दी हैं- 'उनकी दोनों बाहे और हाथ कसी औरत की बाहों की तुलना में जयादा खुबसूरत थें. (वही पृष्ठ – १४९)

'स्वामी जी के घने काले बालो के एइश्वर्य के बारे में उनकी कई- कई तस्वीरों से हमारी धारणा बनती हैं-घुघराले नहीं, लहर-लहर घने बालो का अरन्य .उनके घने काले बालो का एक छोटा-

गुच्छा अचानक ही मस जोसे फन मेक्लाइड ने काट लया था और वे परेशान हो उठे थें .बालो का वह गुच्छा मस मेक्लाइड अपने जेवर के डब्बे में संजोकर हमेशा अपने पास रखती थी .स्वदेश लौटकर बेलुड मठ में अपना सर मुंडाते हुए भी स्वामी जी अपने बालो को लेकर खूब-खूब हंसी-ठटा कया था .ऐसे खुबसूरत बालो जो वदेश में भाषण देते हुए माथे पर झूलकर आँखों को ढँक लेते थें, स्वदेश लौटकर उन्होंने काट फेंका .

' हम जानते हैं क बेलुड मठ में वे हर महीने बाल मुंडवा लेते थें .बेलुड मठ में उनके बाल मूडकर नाइ उन्हें समेट कर फेकने ही जा रहा था की स्वामी जी ने हंसकर मंतव्य कया .अरे देख क्या रहा हैं ! इसके बाद तो ववेकानंद के गुच्छे भार बालो के लए, दुनिया में 'क्लैमर ' मच जायेगा

नरेंदर के अंग-प्रत्यंग के बारे में जब ढेरो तथेय जमा कर रहा हूँ, तब यह भी बता दूँ क उनकी 'टेम्परिंग फंगर' थी, बंगला में महेन्दरनाथ दत ने जिन उंग लयों को 'चम्पे की कली' कहाँ हैं, इस कस्म की उंग लया दु वधाशुन्य निश्येयात्मक मन सकता का संकेत देती हैं .उनके नाख़ून

ईशत रक्ताभ थें औरे नाख़ून का उपरी हिस्सा ईशत अर्धचंद्राकर संस्कृत में कस्म के दुर्लभ न नाखुनो को 'नखम ण' कहते हैं .

महेन्द्रनाथ अपने बड़े भाई के पदचाप के बारे में भी संकेत दे गये हैं- उनके न कदमो की गति जयादा तेज थी, न जयादा धीमी, मानो गम्भीर चंतन में निमग्न रहकर वजयाकंषा में अतिद्रंड, ससुनि षत ढंग से, धरती पर कदम रखकर चलते थें 1'

, भाषण देते समय ववेकानंद अपने हाथ की उंग लया पहले कसकर अचानक फेला देते थें उनके मन में जैसे-जैसे भाव संचरित होते थें, उंग लयों का संचरण भी तदनुसार होता रहता था . उनके अवयव के जिस हिस्से कोलेकर देश- वदेश के भक्तो में मतभेद नहीं हैं, वह हैं स्वामी जी की आँखें .जो लोग भी उनके करीब आये,सभी उनकी मोहक राजीवलोचन आँखों के जयगान में मुखर हो उठे. (वही पृष्ठ –१५०)

वेरी लार्ज एण्ड ब्रि लयंट-तमाम अखबारों और व भन्न संस्मरणों में बार-बार यह घूम- फरकर आई हैं उनकी आँखों के बारे में अंग्रेजी के और भी दुर्लभ शब्दों का प्रयोग कया हुआ हैं- फ्लोइंग,ग्रेसफुल,ब्राइट, रेडीएंट,फाइन, फुल ऑफ़ फ्ले शंग लाइट .आलोचकों ने प्रकारांतर से उनकी आँखें पर कीचड उछालने की व्यर्थ को शश में अमेरिका में अफवाहे फेलाई अमेरिकी महिलाये उनके आदर्श की और आकृष्टहोकर पतंग की तरह दोडी हुई नहीं आती, वे लोग उनके नयन-कमल की चुम्ब्कीय शक्ति की और खची चली आती हैं(वही पृष्ठ – १५१)

इंदौर की घटना हैं .पत्रकार वेदप्रताप वैदिक के पता श्री जगदीश प्रसाद वैदिक इंदौर के एक वधायक की चर्चा कर रहे थें .वैदिक जी ने वधायक से कहा शंकर संह ! तू कसी सद्धान्त का पालन नहीं करता, अपने को आर्यसमाजी कहता हैं . यह अनु चत हैं . वधायक बोला पं डत जी में पाडे आर्यसमाजी हूँ में निराकार ईश्वर को मानता हूँ आर्य समाज के सद्धान्तो को मानता हूँ, ऋ ष दयानन्द में मेरी निष्ट हैं, में उनको अपना गुरु मानता हूँ वैदिक जी वधायक से बोले- शंकर तुम मांस खाते हो, शराब पीते हो, अन्य क्य्सन करते हो, फर आर्यसमाजी कैसे हो! शंकर बोला मेरी सद्धान्तो में निष्ठां हैं इस लए आर्यसमाजी हूँ .खाता-पीता हूँ कह सकते हो, में बिगड़ा हुआ आर्यसमाजी हूँ .स्वामी ववेकानंद के संस्यास के वषय में कहा जा सकता हैं .तो वे संस्यासी उनकी संस्यास में आस्था हैं, परन्तु व्यव्हार में संस्यास दूर तक भी दिखाई नहीं देता 1

स्वामी ववेकानंद के संस्यासी जीवन को व्यव्हार के धरातल पर देखा जाए तो एक वाक्य में कहा जा सकता हैं- उनका जीवन मछली से प्रारम्भ होता हैं और मछली पर आकर समाप्त हो जाता हैं1

कसी भी व्यक्ति के सन्यासी होने की सर्वमान्य कसोटी हैं .यम-नियमो में आस्था रखना , उनका पालन करना, उनके पलना का उपदेश करना, क्यो क इनके पालन करने से व्यक्तिगत,

पारिवारिक व सामाजिक जीवन की उन्नति होती हैं और यदि कोई कहता हैं की यम-नियमो का पालन न करके,उनके वपरीत आचरण करके कोई संस्यासी महान बनता हैं तो इस से बड़ी मूर्खता और नहीं हो सकती .यम-नियामी में पांच यम-अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्ये और अपरिग्रह तथा पांच नियम- शोच, संतोष, तप, स्वाधायक और ईश्वर प्र णधान हैं .यह दस संस्यास की आवशयक बाते हैं .यदि कोई इनका निषेध करके अपने आपको संस्यासी मानता है, तो वह मर्यादा से पतित ही कहा जा सकता हैं संस्यास,योग, समाधी जैसे बातो में अहिंसा का सर्वोपरि स्थान हैं,परन्तु ववेकानंद के जीवन में अहिंसा के लए कोई स्थान नहीं हैं .जो मनुष्य अपने भोजन और जिहा के स्वाद के लए प्राणी- हिंसा का समर्थन करता हो, वह व्यक्ति योग और सन्यास के पथ का प थक नहीं बन सकता .स्वामी ववेकानंद को मासांहार कतना प्रय था और वे इसके लए कतने आग्रही थें .इस बात कोउनके जीवन में आई निम्न घटनाओं को देखकर परिणाम निकाला जा सकता हैं-

" खाने-पीने के बारे में, बड़े होकर मंझले भाई के नाश्ते की ही बात ले .उन दिनों कलकत्ता की दुकानों में पाडे के मुंड बिका करते थें दोनों भाई नरेंदर और महेंदर ने पाडे वाले से मलकर पक्का इंतजामकर लया था .दो चार आने में ही पाडे के दस बारह मुंड जुटा लए जाते थें दस-बारह सर और करीब दो-ढाई सेर हरे मटर एक संग उबल कर सालन पकाया जाता था .महेंदर ने लखा हैं –शाम को में और स्वामी जी ने स्कूल से लोटकर वो सालन और करीब सोलह रोटिया नाश्ते में हजम कर जाते थें1(ववेकानन्द, जीवन के अनजाने सच पृष्ठ १३)

' दादा नरेन काफी काम उम्र में सुघनी लेने लगे थें और उसकी गन्ध मसहरी के अन्दर से आती रहती थी,यह बात उनके मंझले भाई महेंदरनाथ हमें बता चुके कबूतर उड़ाने का उन्हें खानदानी शोक था. (वही पृष्ठ – १७)

' एक बार वे भाई, दादा और माँ- पता के साथ रायपुर जा रहे थें .महेंदरनाथ ने जानकारी दी हैं की घोडाताला में मांस पकाया गया .में खाने को राजी नहीं था बड़े भाई ने मेरे मुहमांस का टुकड़ा टूस दिया और मेरी पीठ पर धोल ज़माने लगे- खा, उसके बाद और क्या! शेर के मुह को खून का स्वाद लग गया (वही पृष्ठ –१८)

" मास्टर साहेब ने पूछा ' तुम्हारी माँ ने कुछ कहाँ ? नरेंदर ने उतर दिया- नहीं .वे खाना खलाने के लए उतावली हो उठी .हिरण का मांस था , खा लया .ले कन खाने का मन नहीं था. (वही पृष्ठ – २८)

' दत्त लोगो की मेधा के प्रसंग में और एक सरल कथा भी हैं मंझले भाई नरेंदनाथ से निरन्जन महाराज ने एक बार कहा था .नरेन में इतनी बुद् ध क्यों भरी हैं, जानता हैं ? नरेन् बहुत जयादा हुक्का गुडगुडा सकता हैं अरे हुक्का न गुडगुडाया जाए तो क्या बुद् ध अन्दर से बाहर निकल सकती हैं....तुम भी तमाखू पीना सीखो .नरेन की तरह तुम्हारी बुद् ध भी खुल जाएँगी. (वही पृष्ठ – ४२)

' यानि माँ की साडी समस्याओं के समाधान के लए भरसक को शश करते रहे, उनके संसार-वीतरागी जयेष्ट पुत्र ! जाने से पहले माँ की इच्छा और अपना वचन करने के लए, उन्होंने सर्फ तीर्थ-यात्रा ही नहीं की बल्कि कालीघाट में ब ल तक दे डाली .उनके निधन के बढ़ भी

माँ को कोई तकलीफ ना हो, इसके लए वे अपने गुरु भाइयो से सदर अनुरोध कर गए थें. (वही पृष्ठ – ७१)

‘ रसगुल्ला प्रसंग में हेडमास्टर सुधांशु शेखर भट्टाचार्य जी ने एक सीधे-सीधे बल्लेबाजी की थी 1’ सुन, ववेकानंद मठाई खाने वाले जीव थें ही नहीं, वे जो तुम सब की आँखों में आंसू आने के अलावा और कुछ नहीं बचेगा .उस चीज का नाम था – मर्च (वही पृष्ठ –७६)

‘ उन्हें खबर मल चुकी थी की का मनी-कंचन का परित्याग जरूरी होते हुए भी राम कशन मठ- मशन में भोजन के बारे मों कोई बाधा निषेध नहीं हैं. (वही पृष्ठ –७७)

‘ दुनिया भर में एकमात्र वही ऐसे भारतीय थें, जो सप्त सागर पार करके अमेरिका पहुंच और वहाँ वेदान्त और बिरयानी दोनों का एक साथ प्रचार करने का दुसाहस दिखाया. (वही पृष्ठ – ७७)

‘इसी दोर में नरेंदनाथ का सफलतम अ वष्कार था- बतख के अंडे को खूब फेटकर, हरी मटर और आलू डालकर भुनी हुई खचड़ी .गीली-गीली खचड़ी के बजाय यह व्यंजन- व ध कहीं जयादा उपयोगी हैं, यह बात कई सालो बाद जाकर वशेषज्ञो ने स्वीकार की हैं.उनके पता गीली खचड़ी और का लया पकाते थें और उनके सुयोग्य बेटे ने एक कदम और आगे बढकर और एक नई डश के जरिये पूर्व-पश्चिम को एकाएक कर दिया (वही पृष्ठ – ८३)

‘बाद में महेंदरनाथ ने लखा-में वे सब खाने को कतई तेयार नहीं था .मुझे उबकाई आने लगी .बड़े भैया ने मेरे मुहं में मांस ठूसकर, मुक्के-मुक्के सेमेरी धुनाई की और कहता रहा-खा ! खा ! उसके बाद फर क्या था ? बाघ को जैसे खून का नया नया स्वाद मल गया और क्या. (वही पृष्ठ – ८३)

पटला दादा ने कहाँ- ले, तू नोट कर .इंसानों के प्रति प्यार, गर्म चाय, खुशबूदार तम्बाकू और दिमाग ख़राब कर देने वाली मर्च-इन चार मामलो में ववेकानंद सीमाहीन थें. (वही पृष्ठ – ८६)

‘ एक बार होटल में खाकर जब वे ठाकुर के वहाँ आय तो उन्होंने उनसे कहा, ‘ श्रीमान, आज होटल में, जिसे आम लोग अखाघ कहते हैं,खाकर आया हूँ 1’ठाकुर ने उतर दिया- तुझे कोई दोष-पाप नहीं लगेगा’ (वही पृष्ठ –८७)

अब श्री श्री माँ की जुबानी, नरेन के खाना पकाने का कस्सा सुनें .ठाकुर के लए कोई रसोई बनाने का जिक्र छिडा था .जब में काशीपुर में ठाकुर के लए खाना पकाती थी तब ठन्डे पानी में ही मांस चढा देती थी .थोडा सा तेजपत्ता और मसाले डाल देती थी .मांस जब रुई की तरह सीझ जाता था,तो उतार लेती थी मेरे नरेन् को तरह तरह से मांस पकाना आता था .वह मांस को खूब भुनता था, आलू मसलकर कैसे-कैसे तो पकता था, क्या तो कहते हैं उसे ? शायद कसी तरह का चाप-कटलट होगा . (वही पृष्ठ –८८)

सदाचरण को ही परम धर्म कहाँ हैं

आचार: परमो धर्मः 11

शेष भाग अगले भाग में …..परोपकारी नवम्बर (द् वतीय) २०१४

सर्व मनोकामना पूर्ण यज्ञ : एक अवैदिक कृत्य : प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु

DECEMBER 12, 2014 4 COMMENTS

आज देश में मन्नत माँगने व मन्नतों को पूरा करवाने का बहुत अच्छा धन्धा चल रहा है I पढ़े लखे लोग भी अंध वश्वासों की दलदल में फंसकर नदी सरोवर के स्नान पेड़ पूजा कबर पूजा कुत्ते बिल्ली के आगे पीछे घूमकर अपनी मनोकामनाएँ पूरी करवाने के लए धक्के खा रहे हैं I जो सैकड़ों वर्ष पूर्व कबरों में दबाये गए उनको अल्लाह मयाँ ने मनुष्यों के दुःख निवारण करने का मुख्तार बना दिया है I मनुष्यों की इस दुर्बलता का शकार आर्य समाजी भी हो रहे हैं I ऐसे अटार्नी जनरल आर्यसमाज में मनोकामनायें पूरी करवाने के नए नए जाल फैला रहे हैं I कुछ सज्जनों का प्रश्न है की कसी से कोई यज्ञ अनुष्ठान करवाने से मन्नत पूरी हो जाती हैं ? कामनाएं पूरी करने के लए वेदानुसार क्या कर्म करने चाहिए ?

अब इस प्रश्न का क्या उत्तर दें ? परन्तु जब उच्च श क्षत व्यक्ति व परिवार ऐसा प्रश्न उठायें तो कुछ समाधान करना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है I हम मह र्ष दयानन्द जी द्वारा इस प्रश्न का उत्तर पाठकों की सेवा में रखते हैं I सर्वकामनाएं ऐसे पूर्ण होती हैं I

१. “जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं इसी से प्रारब्ध की उपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है I”

२. फर लखा है “ क्यों क जो परमेश्वर की पुरषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा”

३. “जो कोई ‘गुड मीठा है ‘ ऐसा कहता है उसको गुड प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता I और जो यत्न करता है उसको शीघ्र वा वलम्ब से गुड मल ही जाता है “

४. “जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है वैसा ही वर्तमान करना चाहिए “

५. “अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है “

वेदोपदेश आर्ष वचनों के प्रमाण तो हमने दे दिए पोंगापंथी टोटके और अनार्ष वचनों को हम जानते हैं परन्तु उनकी शव परीक्षा यहाँ नहीं करेंगे I धर्म कर्म मर्म हमने ऋषी के शब्दों में दे दिया है .

परोपकारी अक्टूबर (द् वतीय) २०१४

अम्बेडकर द्वारा मनु स्मृति के श्लोको के अर्थ का अनर्थ कर गलत या वरोधी निष्कर्ष निकालना (अम्बेडकर का छल)

NOVEMBER 23, 2014 3 COMMENTS

डा. अम्बेडकर ने अपने ब्राह्मण वाद से घ्रणा के चलते मनुस्मृति को निशाना बनाया और इतना ही नही अपनी कटुता के कारण मनुस्मृति के श्लोको का गलत अर्थ भी कया …अब चाहे अंग्रेजी भाष्य के कारण ऐसा हुआ हो या अनजाने में लेकन अम्बेडकर जी का वैदिक धर्म के प्रति नफरत का भाव अवश्य नज़र आता है क उन्होंने अपने ही दिए तथ्यों की जांच करने की जिम्मेदारी न समझी |

यहाँ आप स्वयम देखे अम्बेडकर ने कस तरह गलत अर्थ प्रस्तुत कर गलत निष्कर्ष निकाले –

(१) अशुद्ध अर्थ करके मनु के काल में भ्रान्ति पैदा करना और मनु को बोद्ध वरोधी सद्ध करना –

(क) पाखण्डिनो वकर्मस्थान वैडालव्रतिकान् शठान् |
हैतुकान् वकवृत्तीश्र्च वाङ्मात्रेणा प नार्चयेत् ||(४.३०)

डा . अम्बेडकर का अर्थ – " वह (गृहस्थ) वचन से भी वधर्मी, ताकक (जो वेद के वरुद्ध तर्क करे) को सम्मान न दे|"

" मनुस्मृति में बोधो और बुद्ध धम्म के वरुद्ध में स्पष्ट व्यवस्था दी गयी है |"
(अम्बेडकर वा. ,ब्राह्मणवाद की वजय पृष्ठ. १५३)

शुद्ध अर्थ – पाखंडयो, वरुद्ध कर्म करने वालो अर्थात अपराधयों ,बिल्ली के सामान छली कपटी जानो ,धूर्ति ,कुतकयो,बगुलाभक्तो को अपने घर आने पर वाणी से भी सत्कार न करे |

समीक्षा- इस श्लोक में आचारहीन लोगो की गणना है उनका वाणी से भी अतिथ सत्कार न करने का निर्देश है |

यहा वकर्मी अर्थात वरुद्ध कर्म करने वालो का बलात वधर्मी अर्थ कल्पित करके फर उसका अर्थ बोद्ध कर लया | वकर्मी का वधर्मी अर्थ कसी भी प्रकार नही बनता है | ऐसा करके डा . अम्बेडकर मनु को बुद्ध वरोधी कल्पना खडी करना चाहते है जो की बिलकुल ही गलत है |

(ख) या वेदबाह्या: स्मृतय: याश्च काश्च कुदृष्टय: |
सर्वास्ता निष्फला: प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ता: स्मृता:|| (१२.९५)

डा. अम्बेडकर का अर्थ – जो वेद पर आधारित नही है, मृत्यु के बाद कोई फल नही देती, क्यूंक उनके बारे में यह घोषत है क वे अन्धकार पर आधारित है| " मनु के शब्द में वधर्मी बोद्ध धर्मावलम्बी है| " (वही ,पृष्ठ१५८)

शुद्ध अर्थ – ' वेदोक्त' सद्धांत के वरुद्ध जो ग्रन्थ है ,और जो कुसधान्त है, वे सब श्रेष्ट फल से रहित है| वे परलोक और इस लोक में अज्ञानान्ध्कार एवं दु:ख में फसाने वाले है |

समीक्षा- इस श्लोक में कसी भी शब्द से यह भासत नही होता है क ये बुद्ध के वरोध में है| मनु के समय अनार्य ,वेद वरोधी असुर आदि लोग थे ,जिनकी वचारधारा वेदों से वपरीत थी| उनको छोड़ इसे बुद्ध से जोड़ना लेखक की मुर्खता ओर पूर्वाग्रह दर्शाता है |

(ग) कतवान् कुशीलवान् क्रूरान् पाखण्डस्थांश्च मानवान|
वकर्मस्थान् शौण्डिकाँश्च क्षप्रं निर्वासयेत् पुरात् || (९.२२५)
डा. अम्बेडकर का अर्थ –" जो मनुष्य वधर्म का पालन करते है ....राजा को चाहिय क वह उन्हें अपने साम्राज्य से निष्का सत कर दे |"(वही ,खंड ७, ब्राह्मणवाद की वजय, पृष्ठ. १५२)
शुद्ध अर्थ – ' जुआरियो, अश्लील नाच गाने करने वालो, अत्याचारियों, पाखं डयो, वरुद्ध या बुरे कर्म करने वालो ,शराब बेचने वालो को राजा तुरंत राज्य से निकाल दे |
समीक्षा – संस्कृत पढने वाला छोटा बच्चा भी जानता है क कर्म, सुकर्म , वकर्म ,दुष्कर्म इन शब्दों में कर्म ' क्रया ' या आचरण का अर्थ देते है | यहा वकर्म का अर्थ ऊपर बताया गया है | ले कन बलात वधर्मी और बुद्ध वरोधी अर्थ करना केवल मुर्खता प्राय है |
(२) अशुद्ध अर्थ कर मनु को ब्राह्मणवादी कह कर बदनाम करना –
(क) सेनापत्यम् च राज्यं च दंडेंनतृत्वमेव च|
सर्वलोकाघिपत्यम च वेदशास्त्र वदर्हति||(१२.१००)
डा. अम्बेडकर का अर्थ – राज्य में सेना पति का पद, शासन के अध्यक्ष का पद, प्रत्येक के ऊपर शासन करने का अ धकार ब्राह्मण के योग्य है|' (वही पृष्ठ १४८)
शुद्ध अर्थ- ' सेनापति का कार्य , राज्यप्रशासन का कार्य, दंड और न्याय करने का कार्य ,चक्रवती सम्राट होने, इन कार्यो को करने की योग्यता वेदों का वद्वान् रखता है अर्थात वाही इसके योग्य है |'
समीक्षा – पाठक यहाँ देखे क मनु ने कही भी ब्राह्मण पद का प्रयोग नही कया है| वेद शास्त्र के वद्वान क्षत्रिय ओर वेश्य भी होते है| मनु स्वयम राज्य ऋ ष थे और वेद ज्ञानी भी (मनु.१.४) यहा ब्राह्मण शब्द जबरदस्ती प्रयोग कर मनु को ब्राह्मणवादी कह कर बदनाम करने का प्रयास कया है |
(ख) कार्षापण भवेद्दण्ड्यो यत्रान्य: प्राकृतो जन:|
तत्र राजा भवेद्दण्ड्य: सहस्त्र मति धारणा || (८.३३६)
डा. अम्बेडकर का अर्थ –" जहा निम्न जाति का कोई व्यक्ति एक पण से दंडनीय है , उसी अपराध के लए राजा एक सहस्त्र पण से दंडनीय है और वह यह जुर्माना ब्राह्मणों को दे या नदी में फैक दे ,यह शास्त्र का नियम है |(वही, हिन्दू समाज के आचार वचार पृष्ठ२५०)
शुद्ध अर्थ – जिस अपराध में साधारण मनुष्य को एक कार्षापण का दंड है उसी अपराध में राजा के लए हज़ार गुना अ धक दंड है | यह दंड का मान्य सद्धांत है |
समीक्षा :- इस श्लोक में अम्बेडकर द्वारा कये अर्थ में ब्राह्मण को दे या नदी में फेक दे यह लाइन मूल श्लोक में कही भी नही है ऐसा कल्पित अर्थ मनु को ब्राह्मणवादी और अंध वश्वासी सद्ध करने के लए कया है |
(ग) शस्त्रं द् वजाति भर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते |
द् वजातिनां च वर्णानां वप्लवे कालकारिते|| (८.३४८)
डा. अम्बेडकर का अर्थ – जब ब्राह्मणों के धर्माचरण में बलात वघ्न होता हो, तब तब द् वज शस्त्र अस्त्र ग्रहण कर सकते है , तब भी जब द् वज वर्ग पर भयंकर वपति आ जाए |" (वही, हिन्दू समाज के आचार वचार, पृष्ठ २५०)
शुद्ध अर्थ:- ' जब द् वजातियो (ब्राह्मण,क्षत्रिय ,वैश्य) धर्म पालन में बाँधा उत्पन्न की जा रही हो और कसी समय या परिस्थति के कारण उनमे वद्रोह उत्पन्न हो गया हो, तो उस समय द् वजो को शस्त्र धारण कर लेना चाहिए|'

समीक्षा – यहाँ भी पूर्वाग्रह से ब्राह्मण शब्द जोड़ दिया है जो श्लोक में कही भी नही है |
(३) अशुद्ध अर्थ द्वारा शुद्र के वर्ण परिवर्तन सद्धांत को झूटलाना |
(क) शु चरुत्कृष्टशुश्रूषुः मृदुवागानहंकृतः |
ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्रुते|| (९.३३५)
डा. अम्बेडकर का अर्थ – " प्रत्येक शुद्र जो शु च पूर्ण है, जो अपनों से उत्कृष्ट का सेवक है, मृदु भाषी है, अंहकार रहित हैसदा ब्राह्मणों के आ श्रत रहता है (अगले जन्म में) उच्चतर जाति प्राप्त करता है |"(वही ,खंड ९, अराजकता कैसे जायज है ,पृष्ठ ११७)
शुद्ध अर्थ – ' जो शुद्र तन ,मन से शुद्ध प वत्र है ,अपने से उत्क्रष्ट की संगती में रहता है, मधुरभाषी है , अहंकार रहित है , और जो ब्राह्मणाआदि तीनो वर्णों की सेवा कार्य में लगा रहता है ,वह उच्च वर्ण को प्राप्त कर लेता है|
समीक्षा – इसमें मनु का अ भप्राय कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का है ,जिसमे शुद्र उच्च वर्ण प्राप्त करने का उलेख है , ले कन अम्बेडकर ने यहाँ दो अनर्थ कये – " श्लोक में इसी जन्म में उच्च वर्ण प्राप्ति का उलेख है अगले जन्म का उलेख नही है| दूसरा श्लोक में ब्राह्मण के साथ अन्य तीन वर्ण भी लखे है ले कन उन्होंने केवल ब्राह्मण लेकर इसे भी ब्राह्मणवाद में घसीटने का गलत प्रयास कया है |इतना उत्तम सधांत उन्हें सुहाया नही ये महान आश्चर्य है |
(४) अशुद्ध अर्थ करके जातिव्यवस्था का भ्रम पैदा करना
(क) ब्राह्मणः क्षत्रीयो वैश्यः त्रयो वर्णो द् वजातयः|
चतुर्थ एक जातिस्तु शुद्रः नास्ति तु पंचमः||
डा. अम्बेडकर का अर्थ- " इसका अर्थ यह भी हो सकता है क मनु चातुर्यवर्ण का वस्तार नही चाहता था और इन समुदाय को मला कर पंचम वर्ण व्यवस्था के पक्ष में नही था| जो चारो वर्णो से बाहर थे|" (वही खंड ९, ' हिन्दू और जातिप्रथा में उसका अटूट वश्वास,' पृष्ठ१५७-१५८)
शुद्ध अर्थ – वद्या रूपी दूसरा जन्म होने से ब्राह्मण ,वैश्य ,क्षत्रिय ये तीनो द् वज है, वद्यारुपी दूसरा जन्म ना होने के कारण एक मात्र जन्म वाला चौथा वर्ण शुद्र है| पांचवा कोई वर्ण नही है|
समीक्षा – कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था ,शुद्र को आर्य सद्ध करने वाला यह सद्धांत भी अम्बेडकर को पसंद नही आया | दुराग्रह और कुतर्क द्वारा उन्होंने इसके अर्थ के अनर्थ का पूरा प्रयास कया |
(५) अशुद्ध अर्थ करके मनु को स्त्री वरोधी कहना |
(क) न वै कन्या न युवतिर्नाल्प वध्यो न बा लशः|
होता स्यादग्निहोतरस्य नार्तो नासंस्कृतस्तथा||(११.३६)
डा. अम्बेडकर का अर्थ – " स्त्री वेद वहित अग्निहोत्र नही करेगी|" (वही, नारी और प्रतिक्रान्ति, पृष्ठ ३३३)
शुद्ध अर्थ – ' कन्या ,युवती, अल्प श क्षत, मुर्ख, रोगी, और संस्कार में हीन व्यक्ति , ये कसी अग्निहोत्र में होता नामक ऋत्विक बनने के अ धकारी नही है|
समीक्षा – डा अम्बेडकर ने इस श्लोक का इतना अनर्थ कया की उनके द्वारा कया अर्थ मूल श्लोक में कही भव ही नही है | यहा केवल होता बनाने का निषद्ध है न क अग्निहोत्र करने का |
(ख) सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया |
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्त्या|| (५.१५०)

डा. अम्बेकर का अर्थ – " उसे सर्वदा प्रसन्न ,गृह कार्य में चतुर , घर में बर्तनों को स्वच्छ रखने में सावधान तथा खर्च करने में मतव्ययी होना चाहिय |"(वही ,पृष्ठ २०५)
शुद्ध अर्थ -' पत्नी को सदा प्रसन्न रहना चाहिय ,गृहकार्यो में चतुर ,घर तथा घरेलू सामान को स्वच्छ सुंदर रखने वाली और मत्यव्यी होना चाहिय |
समीक्षा – " सुसंस्कृत – उपस्करया " का बर्तनों को स्वच्छ रखने वाली" अर्थ अशुद्ध है | 'उपस्कर' का अर्थ केवल बर्तन नही बल्कि सम्पूर्ण घर और घरेलू सामान जो पत्नीं के निरीक्षण में हुआ करता है |
(६) अशुद्ध अर्थो से ववाह - व धयों को वकृत करना
(क) (ख) (ग) आच्छद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्|
आहूय दान कन्यायाः ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः||(३.२७)
यज्ञे तु वतते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्वते|
अलकृत्य सुतादान दैव धर्म प्रचक्षते||(३.२८)
एकम गो मथुंनं द्वे वा वराददाय धर्मतः|
कन्याप्रदानं व ध वदार्षो धर्मः स उच्यते||(३.२९)
डा अम्बेडकर का अर्थ – बाह्म ववाह के अनुसार कसी वेदज्ञाता को वस्त्रालंकृत पुत्री उपहार में दी जाती थी| देव ववाह था जब कोई पता अपने घर यज्ञ करने वाले पुरोहित को द क्षणास्वरूप अपनी पुत्री दान कर देता था | आर्ष ववाह के अनुसार वर, वधु के पता को उसका मूल्य चूका कर प्राप्त करता था|"(वही, खंड ८, उन्नीसवी पहेली पृष्ठ २३१)
शुद्ध अर्थ – 'वेदज्ञाता और सदाचारी वद्वान् कन्या द्वारा स्वयम पसंद करने के बाद उसको घर बुलाकर वस्त्र और अलंकृत कन्या को ववाह व धपूर्वक देना ' बाहय ववाह' कहलाता है ||'
' आयोजित वस्तृत यज्ञ में ऋत्विज कर्म करने वाले वद्वान को अलंकृत पुत्री का ववाह व धपूर्वक कन्यादान करना' दैव ववाह ' कहाता है ||"
' एक या दो जोड़ा गाय धर्मानुसार वर पक्ष से लेकर ववाह व धपूर्वक कन्यादान करना 'आर्ष ववाह ' है |' आगे ३.५३ में गाय का जोड़ा लेना वर्जित है मनु के अनुसार
समीक्षा – ववाह वैदिक व्यवस्था में एक संस्कार है | मनु ने ५.१५२ में ववाह में यज्ञीय व ध का वधान कया है | संस्कार की पूर्ण व ध करके कन्या को पत्नी रूप में ससम्मान प्रदान कया जाता है | इन श्लोको में इन्ही ववाह पद्धतियों का निर्देश है | अम्बेडकर ने इन सब व धयों को निकाल कर कन्या को उपहार , द क्षणा , मूल्य में देने का अशुद्ध अर्थ करके सम्मानित नारी से एक वस्तु मात्र बना दिया | श्लोको में यह अर्थ कसी भी दृष्टिकोण से नही बनता है | वर वधु का मूल्य एक जोड़ा गाय बता कर अम्बेडकर ने दुर्भावना बताई है जब क मूल अर्थ में गाय का जोड़ा प्रेम पूर्वक देने का उलेख है क्यूं क वैदिक संस्कृति में गाय का जोड़ा श्रद्धा पूर्वक देने का प्रतीक है |
अम्बेडकर द्वारा अपनी लखी पुस्तको में प्रयुक्त मनुस्मृति के श्लोको की एक सारणी जिसके अनुसार अम्बेडकर ने कतने गलत अर्थ प्रयुक्त कये और कतने प्र क्षप्त श्लोको का उपयोग कया और कतने सही श्लोक लए का ववरण –

उपरोक्त
वर्णन के आधार पर स्पष्ट है क अम्बेडकर ने मनु स्मृति के कई श्लोको के गलत अर्थ प्रस्तुत कर मन मानी कल्पनाय और आरोप गढ़े है | ऐसे में अम्बेडकर निष्पक्ष लेखक न हो कर कुंठित व्यक्ति ही माने जायेंगे जिन्होंने खुद भी ये माना है की उनमे कुंठित भावना थी |

जो क इसी ब्लॉग पर बाबा साहब की बेवाक काबिले तारीफ़ नाम से है |इन सब आधारों पर अम्बेडकर के लेख और समीक्षाय अप्रमा णक ही कही जायेंगी |
संध र्भत पुस्तके – (१) मनु बनाम अम्बेडकर-डा. सुरेन्द्र कुमार
(२) मनुस्मृति और अम्बेडकर – डा.के वी पालीवाल …..

ताज महल ही बाक्की रह गया था !

NOVEMBER 22, 2014 1 COMMENT

आज आजमखान की मांग टीवी पर देखने को मली ये नेता जी ताजमहल को वक्फ बोर्ड को देने की मांग कर रहे थे, जिसे एक इमाम ने समर्थन देते हुए यह भी कह दिया है की ताजमहल में ५ वक्त की नमाज भी होनी चाहिए, आजमखान कह रहे है की ताजमहल को वक्फ बोर्ड को सौंप दिया जाए क्यों क यह एक मकबरा है और मकबरा होने के नाते इस पर वक्फ बोर्ड का हक़ बनता है, वक्फ बोर्ड को सौंपने से इससे होने वाली आमदनी से मुसलमानों की तालीम में उपयोग में लया जा सके, और इसकी आमदनी से कम से कम दो यूनिव र्सटी बन सकती है, बड़ा अचरज हुआ इनकी बेबुनियाद मांग को देख कर, क्या इन्हें सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी कम लगती है, क्या देश की हजारों मस्जिदों से इतना धन भी प्राप्त नहीं होता की मुसलमानों की तालीम का अच्छे से बंदोबस्त कया जा सके, क्या इन मस्जिदों से प्राप्त धन का उपयोग कुरान में बताये जिहाद पर ज्यादा खर्च होता है ? इस लए इन्हें अब ताजमहल का पैसा चाहिए |

तालीम की बात आई तो सोचा इनकी तालीम पर थोड़ी रौशनी डाल दी जाए तो आम जनता को कुछ जानकारी मले और सेकुलरो की आँख की पट्टी खुल सके, इनकी तालीम की जानकारी मलने के बाद हिन्दू-मुस्लिम भाई भाई शायद बोलना भी पाप लगने लगेगा, आइये आपको मदरसों की तालीम का दर्शन कराते है |

भारतीय मदरसों में भारत में स्कूलों में दी जाने वाली शक्षा तो दी ही जाती है, यदि यही शक्षा देनी है तो मदरसों की क्या जरुरत है, यह शक्षा तो सरकारी स्कूलों में निःशुल्क दी जाती है, और उसमें ऐसा कोई कानून नहीं है की उसमें मुसलमान नहीं पढ़ सकते है हर कोई पढ़ सकता है तो अलग से मदरसा क्यों ?

मदरसों में स्कूली शक्षा के अलावा एक शक्षा और दी जाती है जिसे ये खुदाई पुस्तक कहते है, कुरान!! जी हाँ !! मदरसों में कुरानी की तालीम दी जाती है, इस तालीम को पाने के बाद कोई मुस्लिम हिन्दू- मुस्लिम भाई भाई का राग तो कतई नहीं अलापेगा !

ऐसा क्या है कुरान में जो मुसलमान इसकी तालीम पाने के बाद जिहादी बन जाता है, यह सोचने की जरुरत है इसी की जानकारी हम इस लेख में देना चाहते है

दे खये कुरान की तालीम

और जब इरादा करते हैं हम ये की हलाक अर्थात कत्ल करें कसी बस्ती को, और हुक्म करते है हम दौलतमंदों को उसके की, पास! नाफ़रमानी करते हैं, बीच उसके |बस! साबित हुई ऊपर

उसके मात गज़ाब की, बस! हलाक करते हैं हम उनको हलाक करना |
(कुरान मजीद, सुरा ६, रुकू २, आयत ६)

और दे खये इससे अगली आयत में कहा गया है की-
और बहुत हलाक कये हैं हमने क्यों मबलगो? तुम्हारा खुदा तो जब उसे कसी बस्ती के हलाक करने का शौक चढ़ आये तब उसमें रहने वाले दौलतमंदों को नाफ़रमानी करने अर्थात आज्ञा न मानने वाले का हुक्म दे ! या यूँ कह सकते हैं की इसके इस हुक्म की ता मल करें नाफ़रमानी करो तो उन्हें और उनके साथ बस्ती में रहने वाले बेगुनाहों, मासूम बच्चों तक को अपना शौक पूरा करने के लए हलाक अर्थात कत्ल करें !

और दे खये
और कत्ल कर दो, यहाँ तक की ना रहे फसाद, यानी गलबा कफ्फार का ‖
(कुरान मजीद, सुरा अन्फाल, आयत ३९)
मु शरकों को जहाँ पाओ कत्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक में बैठे रहो …….‖
(कुरान मजीद, सुरा तौबा, आयत ५)
इस आयत का नतीजा यदि देखना है तो देखो कश्मीरी पं डतों के साथ क्या हुआ था, केवल एक पत्र दिया गया की घर खाली करों एक दिन का समय है अन्यथा मार दिए जाओगे, और काफी संख्या में कश्मीरी पं डत मार दिए गए या भगा दिए गए,

और दे खये

ऐ नबी ! मुसलमानों को कत्लेआम अर्थात जिहाद क लए उभारो ……‖
(कुरान मजीद, सुरा अन्फाल, आयत ६५)

जब तुम का फरों (गैर मुसलमान) से भीड़ जाओ तो उनकी गर्दन उड़ा दो, यहाँ तक की जब उनको खूब कत्ल कर चुको, और जो जिन्दा पकडे जाएँ, उनको मजबूती से कैद कर लो
(कुरान मजीद, सुरा मुहम्मद, आयत ४)

ऐ पैगम्बर! का फ़रों और मुना फकों से लड़ो और उन पर सख्ती करो, उनका ठिकाना दोज़ख है, और वह बहुत ही बुरी जगह है |
(कुरान मजीद. सुरा तहरिम, आयत ९)

यह नजराना है कुरान से आपके लए इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ भरा पड़ा है इस खुदाई पुस्तक में, अब कहिय जनाब ! यहाँ आपका क्या कहना है ? इन आयतों में क्या यहाँ धर्म के वरो धयों, जा लमों और बदमाशों के कत्ल करने इजाजत नहीं है | बल्कि स्पष्ट तौर पर का फ़रों को कत्ल करने का निर्देश है, और आप ये जानते हैं की "का फर" बद्चलनों, बदमाशों, चोरों, डाकुओं, लुटेरों और दुष्टों आदि को नहीं बल्कि उनको कहा जाता है जो की हजरत मोहम्मद साहब को खुदा का रसूल ना मानें, चाहे वो शख्स कतना भी नेक चलन, अच्छे आचरण वाला भला आदमी ही क्यों न हो ?
परन्तु चाहे जनता दुष्टाचरण करने वाली भी हो, दुनियाभर की बुराइयां उसमें मौजूद हों, परन्तु

वह हजरत मोहम्मद साहब को खुदा का रसूल मान ले, बस! समझों की वह मो मन बने बनाये हैं |

इतना कुछ जानने के बाद भी यदि आप मदरसों में दी जाने वाली तालीम के पक्षधर है, तो आपसे बड़ा धर्म का दुश्मन कौन हो सकता है, आजमखान साहब मदरसों की तालीम से इतना मोह कैसे है क्या मुज्जफरनगर दंगों से भी बड़ा काण्ड करने की इच्छा है क्या ??

अब ये सवाल तो स्वयं आजमखान चाह कर भी नहीं दे सकते है खैर मदरसों की चल चलन हम तो भलीं भांति जानते है बाकी पाठकगण समझदार है लेख पढ़े कुछ खा मयां हो तो अवगत जरुर कराये

और हाँ !! अपना सेकुलरिज्म का चश्मा जरुर उतार लें !!

औ३म

नमस्ते

महिलाओ के प्रति कुरान का दृष्टिकोण

NOVEMBER 18, 2014 LEAVE A COMMENT

मुसलमान कहते है भारत में कुरान की जरुरत इस लए हुई की यहाँ अत्याचार, मारकाट, औरतों पर जुल्म चरम पर था, उस स्थिति को सुधारने के लए भारत में कुरान की जरूरत हुई, कुरान को खुदाई पुस्तक बताकर उसे भारतीय जनता का उधारक बताया है, जब क सच्चाई इससे कोसों दूर है, यदि कुरान को केवल उपरी नजर से भी पढ़ा जाए तो सच्चाई सामने आ जायेगी

सच यह है की भारतीय जनता को गुमराह करने के लए ये उलजुलूल तर्क कुरान में दिए है, भारत देश जिसमें रहने वाले लोग वैदिक धर्मी थे, यही एक मात्र धर्म है संसार में जिसमें औरत को पूजनीय बताया गया है, वेद का एक-एक मन्त्र पढ़ लया जाए तो भी उसमें औरत के लए गलत कुछ नहीं लखा है, यही एक मात्र देश है जहाँ नारी को पुरुष के समकक्ष अ धकार दिए गए है
वही दूसरी और वो मजहब जो कुरान को मानता है, वहां औरत पर जुल्म इतने है की ह्रदय काँप जाए, औरत को भोग की वस्तु बना कर उसको तरह तरह से अप्राकृतिक रूप से भोगने के आदेश दिए हुए है, १०-१० बच्चे पैदा करने तक मजबूर कया जाता है, एक पुरुष अनेकों महिलाओं से निकाह कर सकता है, वो भी केवल अपनी काम इच्छा की पूर्ति के लए, इस्लाम का शरियत कानून देख लों जो औरतों पर ऐसे अत्याचार करता है की सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते है, सं क्षप्त में आपको इस्लाम में महिलाओं की स्थिति के दर्शन कराते है

कुरान में गैर इस्लामी लोगों को मारने, काटने की बहुत जगह आज्ञा दी गई है, और सबसे ज्यादा अत्याचार करने की आज्ञा है तो वो है औरतों पर, इस खुदाई पुस्तक में औरत को भोग

का साधन मात्र बताया गया है, लुटने, भोगने की चीज बताया है, आइये देखते है खुदा के औरतों पर जुल्मः-

धर्म के अनुसार औरत पर जुल्म करने वाले को जा लम और दुष्ट कहा गया है, और जो खुदा अपनी ही प्रजा (स्त्रियों) पर जुल्म ढाने, उनसे व्य भचार करने, बलात्कार करने का हुक्म दे तो क्या वह जा लम और दुष्ट नहीं है?

दे खये कुरान में कहा गया है की–
या अय्युहल्लजी-न आमनू कुति-ब........||
(कुरान मजीद पारा २ सूरा बकर रुकू २२ आयत १७८)

ऐ ईमान वालों ! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है| आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत|
इसमें हमारा एतराज इस अंश पर है की "औरत के बदले औरत" पर जुल्म कया जावे | यदि कोई बदमाश कसी की औरत पर जुल्म कर डाले तो उस बदमाश को दण्ड देना मुना सब होगा कन्तु उसकी निर्दोष औरत पर जुल्म ढाना यह तो सरासर बेइन्साफी की बात होगी | ऐसी गलत आज्ञा देना अरबी खुदा को जा लम साबित करता है, न्यायी नहीं |

वल्मुहसनातु मनन्निसा-इ इल्ला मा.........||
(कुरान मजीद पारा ५ सुरा निसा रुकू ४ आयत २४)
ऐसी औरतें जिनका खा वन्द ज़िंदा है उनको लेना भी हराम है मगर जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लए तुमको खुदा का हुक्म है ...... फर जिन औरतों से तुमने मजा उठाया हो तो उनसे जो ठहराया उनके हवाले करो | ठहराए पीछे आपस में राजी होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ उर्ज नहीं | अल्लाह जानकर हिकमत वाला है

समीक्षा

निर्दोष औरतों को लुट में पकड़ लाना और उनसे व्य भचार करने की खुली छुट कुरानी खुदा ने दे दी है, क्या यह अरबी खुदा का स्त्री जाती पर घोर अत्याचार नहीं है ? क्या वह व्य भचार का प्रचारक नहीं था, फीस तय करके औरतों से व्य भचार करने तथा फीस जो ठहरा ली हो उसे देने की आज्ञा देना क्या खुदाई हुक्म हो सकता है ? अरबी खुदा और कुरान जो औरतों पर जुल्म करने का प्रचारक है क्या समझदार लोगों को मान्य हो सकता है ?

और दे खये इस्लामी पुस्तक कुरान बीबियों को कस तरह काम पूर्ति का साधन मानती है, अपनी बीबियों के साथ पीछे से संभोग करना, क्या यह भी कोई शराफत की बात है जिसकी आज्ञा खुदा ने दी ?
दे खये कुरान में कहा गया है की—
निसा-उकुम हरसुल्लकुम फअतु.........||
(कुरान मजीद पारा २ सुरा बकर रुकू २८ आयत २२३)

तुम्हारी बीबियाँ तुम्हारी खेतियाँ है | अपनी खेती में जिस तरह चाहो (उस तरह) जाओ | यह अल्लाह का हुक्म है |

पीछे से सम्भोग करने का आशय दो तरीकों से है, एक तो प्राकृत सम्भोग से है दुसरा अप्राकृतिक सम्भोग अर्थात –गुदा मैथुन से है, हम मानते हैं इनमें से कोई भी हो दोनों ही गलत है |
चरक और सुश्रुतु की मान्यतानुसार अगर उलटे सीधे तरीकों से सम्भोग कया जाएगा तो उनके द्वारा पैदाशुदा संतान भी उलटी-सीधी अर्थात वकारित ही पैदा होगी |
जैसे की पीछे से प्राकृत सम्भोग करने पर वायु का दबाव अ धक रहने के कारण कष्टदायक होता है तथा संतान भी वकलांग ही पैदा होती है |
रही बात गुदा मैथुन की ? उसका समर्थन तो कुरान में साफ़ शब्दों में कया गया है दे खये-
“कुरान मजीद सुरा बकर पारा-२, रुकू २८, आयत २२३”
जिसमें अल्लाह ताला ने कहा है की—
“औरतें तुम्हारी खेतियाँ है जिधर से चाहो उधर से जाओ“ तथा “तफसीरे कबीर जिल्द २, हुज्जतस्स लसा, सफा २३४, मश्र छापा”
जिसमें गुदा मैथुन अर्थात इग्लामबाजी का स्पष्ट आदेश मौजूद है |
अतः पीछे से सम्भोग करने का तात्पर्य दोनों तरह से माना जा सकता है, जो मानवता, नैतिकता व् ईश्वरीय नियम के वरुद्ध है |

ऐसी कई कुरानी खुदा की आज्ञा कुरान में दी है यह तो केवल कुरानी खुदा की फल्म का ट्रेलर है पूरी फल्म आपको www.aryamantavya.in पर इस्लाम से सम्बं धत पुस्तकों में मल जायेगी

जिस कुरान की जरुरत भारत में औरतों पर अत्याचार को रोकने के लए बताई है वही कुरान भारत जैसे धा र्मक देश में जहाँ पर नारी को पूजनीय बताया गया है वही पर यह कुरान औरत पर बलात्कार आदि जैसे अत्याचारों को बढ़ावा देने का कारक बन गई है, पाठकगण अपनी बुद् ध ववेक का उपयोग करें और हो सके तो कुरान का स्वयं भी अध्ययन करें ता क आप स्वयं दूध का दूध पानी का पानी कर सके यदि कुरान पढने का समय नहीं दे पाते है, तो आप www.aryamantavya.in इस साईट पर आये ता क हम आपका इस्लाम के जुल्म से भरे चेहरे का दर्शन करा सके

पाठकगण अपनी प्रति क्रया जरुर दें

नमस्ते
औ३म्

बहुकुण्डी यज्ञ – एक ववेचना आचार्य सुनील शास्त्री

OCTOBER 25, 2014 1 COMMENT

‘‘ओ३म्’’

आज आर्य समाजों व सम्पन्न श्रद्धालु आर्यों में बहुकुण्डी यज्ञ व वेद –परायण यज्ञों का प्रचलन तीव्रता से हो रहा है । प्रायः समाजों व परिवारों में उत्सवादि वशेष अवसरों पर इनका आयोजन होना अब सामान्य बात है । सामान्यतः यह सब देख –सुनकर आर्यजनों के सुखद अनुभूति व उत्साह मलता है । आर्य उपदेशकों द्वारा भी इनके आयोजन हेतु उत्साह व प्रेरणा मलती है । आर्य समाज के संस्थापक मह र्ष दयानन्द सरस्वती जी ने वेद और वेदानुकूल शास्त्रोक्त उपदेशों को मनसा –वाचा –कर्मणा पालन करना ही (आर्यो चत) धर्म माना है । अतः अब इनकी कसौटी पर बहुकुण्डी यज्ञ की प्रामा णकता को हम कसते हैं । हम देखेंगे क वेद व वेदानुकूल शास्त्र तथा मह र्ष दयानन्द सरस्वती जी महाराज कहाँ तक इसका अनुमोदन करते हैं ? साथ ही साथ यह भी वचारणीय है क इस नव –प्रतिष्ठित या ज्ञक –परम्परा से क्या –क्या लाभ व हानियाँ हो रही हैं ।

वेदों में द्रव्य –यज्ञों का कहीं भी स्पष्ट वर्णन नहीं है । ऋ षयों ने बाद में वेद –मन्त्रों के आधार पर इन यज्ञों का आ वष्कार कया । अतः वेदों में बहुकुण्डी ही नहीं कसी भी प्रकार के शास्त्रीय यज्ञों सोमयाग , अश्वमेधादि का प्रत्यक्ष वर्णन नहीं है ।

(वशेष – वस्तृत अध्ययन के लए महामहोपाध्याय पं० यु धष्ठिर मीमांसक द्वारा वर चत ''श्रौत यज्ञों का सं क्षप्त परिचय'' नामक पुस्तक पढ़ें प्रकाशक –रामलाल कपूर ट्रस्ट)

कल्प साहित्य मूलतः कर्मकाण्डीय है । इन ग्रन्थों में भी कहीं भी बहुकुण्डी यज्ञ का वर्णन अथवा संकेत भी नहीं है । इनमें वैदिक या ज्ञक कर्मकाण्ड का स वस्तार व व धवत् सर्वांगरूपेण वर्णन है । कन्तु बहुकुण्डी व वेद –परायण का कहीं संकेत भी नहीं है ।

गुरूवर मह र्ष देव दयानन्द जी ने भी अपने कर्मकाण्डीय ग्रन्थ संस्कार – व ध अथवा पञ्च महायज्ञ – व ध अथवा अपने अन्य कसी भी ग्रन्थ में इस बहुकुण्डी यज्ञ का वर्णन व संकेत नहीं कया है । मह र्ष ने सर्वत्र ही अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों की चर्चा की है ।

इस प्रकार उपरोक्त ववेचन से स्पष्ट है क बहुकुण्डी यज्ञ का वर्णन वेद अथवा प्राचीन प्रामा णक या ज्ञक ग्रन्थों में कहीं भी नहीं मलता है । साथ ही साथ यह मह र्ष की इच्छाओं व मन्तव्यों के भी सर्वथा वरूद्ध है ।

श्रद्धेय आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी, पूर्व उपकुलपति गुरूकुल काँगडी वश्व वद्यालय , ने अपने ग्रन्थ यज्ञ –मीमांसा में इस वषय में स्पष्ट लखते हैं –''वेदों में या कसी अन्य प्रामा णक प्राचीन आर्ष ग्रन्थ में बहुकुण्डी यज्ञ का वधान भी हमें अद्याव ध प्राप्त नहीं हो सका है ।''–(यज्ञ मीमांसा, भू मका , प्रका शत – वजय कुमार गो वन्द राम हासानन्द)

बहुकुण्डी यज्ञ के प्रचलन के कारण –वेद , वेदानुकूल आर्ष या ज्ञक ग्रन्थों तथा मह र्ष के ग्रन्थों में भी बहुकुण्डी यज्ञ का वधान का समर्थन न होने के बावजूद आर्य समाजों में बहुकुण्डी यज्ञ प्रच लत हुआ और क्रमशः बढता जा रहा है । जब क मह र्ष की इच्छा अश्वमेधादि शास्त्रीय यज्ञों के प्रचार –प्रसार की भी । कन्तु आर्य समाज में कहीं भी कसी भी वद्वान द्वारा इस वषय में कोई वशेष प्रयत्न नहीं दिखता है । इसका कारण महामहोपाध्याय श्रद्धेय पं० यु धष्ठिर मीमांसक जी लखते हैं (यद्य प वहाँ वेद –परायण यज्ञ का प्रसंग है कन्तु बहुकुण्डी यज्ञ भी वेद –परायण यज्ञ की भाँति अनार्ष ही है; अतः

यह कथन यहाँ भी ठीक बैठता है) ''आजकल आर्य समाज में जो वद्वान् हैं , उनमें एक भी व्यक्ति ऋ ष दयानन्द प्रद र्शत पाठ – व ध के अनुसार शक्षा से लेकर वेद – पर्यन्त अध्ययन कया हुआ नहीं है ।''—- यही कारण है क ऋ ष दयानन्द के मन्तव्यों को आज के आर्य समाज के वद्वान यथावत् समझने में प्रायः असमर्थ हैं ।'' वे पुनः आगे लखते हैं – ''आर्य समाज में ऋ ष दयानन्द प्रद र्शत अग्नि होत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों का प्रचलन न होने का प्रधान कारण ब्राह्मण – ग्रन्थों तथा श्रौत – सूत्रों का यथावत् अध्ययन न करना है ।'' – (श्रौत यज्ञों का सं क्षप्त परिचय , उपोद्घात , प्रकाशक – रामलाल कपूर ट्रस्ट)

वशेष – परमात्मा की असीम कृपा से मैं व्यक्तिगत रूप से एक ऐसे तपोनिष्ठ ऋ ष – भक्त आचार्य को जानता हूँ जिन्होंने तपस्या पूर्वक मह र्ष निर्दे शत पाठ – व ध के अनुसार शक्षा से लेकर वेद पर्यन्त अध्ययन कया है , कन्तु दुर्भाग्य से उस दिव्यात्मा को भी मह र्ष की इच्छानुसार वेद के वद्वान तैयार करने के लए महान् संघर्ष करना पड़ रहा है । न तो उनको उ चत स्थान है और न ही पर्याप्त संसाधन । यदि होते तो वे निश्चिन्त होकर वेद के वद्वानों का निर्माण कर सकते थे। महान् दुर्भाग्य है क आर्य समाज के पास भवन – निर्माण के लए करोड़ों रूपये हैं; अन्यान्य कार्यों के लए संसाधन है कन्तु वेद के वद्वान् के निर्माण के लए कोई योजना नहीं है । अन्यथा कोई कारण नहीं क ऐसे उद्भट् वद्वान् को भटकना पड़े ।

बहुकुण्डी यज्ञ के लाभ – बहुकुण्डी यज्ञ के समर्थन में अनेक तर्क दिये जाते हैं । इस वषय में हम स्वयं कुछ न कहकर श्रद्धेय आचार्य रामनाथ वेदालंकर जी को ही उद्धृत करते हैं –

बहुकुण्डी यज्ञ की निम्न ल खत वशेषताएँ कही जा सकती हैं –

१. एक ही काल में अ धक यजमान हो सकते हैं तथा उन सभी को एक साथ आहुति डालने का अवसर प्राप्त हो सकता है । —

२. सब यजमानों का सब यज्ञ – कुण्डों के लए पुरोहित तथा वेदपाठी एक ही रहते हैं । यदि अलग – अलग स्थानों पर १-१ कुण्ड रखकर १०१ यज्ञ होते, तो पुरोहित तथा वेदपाठी भी अलग – अलग रखने पड़ते ।

३. ब्रह्मा की ओर से सबको उपदेश भी इकट्ठा मल जाता है । अलग – अलग स्थानों पर यज्ञ की जो अलग – अलग व्यवस्था करनी पड़ती उससे भी बच जाते हैं ४. पुरोहितों को एक ही काल में अनेक यजमानों की ओर से द क्षणा मलने से द क्षणा की रा श पुष्कल हो जाती है जिसे वे कसी सत्कार्य में लगा सकते हैं । ——

वे आगे लखते हैं – '' कन्तु हमारे वचार से बहुकुण्डी यज्ञों को प्रोत्साहित न कया जाना ही उ चत है । एक स्थान पर अनेक कुण्डों में यज्ञ करने की अपेक्षा अनेक स्थानों पर एक – एक कुण्ड से यज्ञ कये जाने में अ धक लाभ है । अनेक स्थानों पर अलग – अलग यज्ञ होगा , तो उन सब स्थानों का वायुमण्डल यज्ञीय सुगन्ध से शुद्ध होगा और सब स्थानों से सुगन्ध चारों ओर फैलेगी । उस स्थिति में पुरोहित भी भन्न व्यक्ति हो सकते हैं , जिससे पौरोहित्य कुछ ही वद्वानों में सी मत न रहकर बहुव्यापी हो सकेगा ।''— ''श्रद्धेय आचार्य जी आगे एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात रखते हैं — कहा जाता है क सार्वजनिक यज्ञ में यदि एक ही कुण्ड होगा , तो

गने – चुने लोग ही आहुति डाल सकेंगे , शेष लोग आहुति डालने के पुण्य से वं चत ही रह जायेंगे । कन्तु सबको आहुति डालने का पुण्य तो बहुकुण्डी यज्ञों में भी नहीं मल पाता , यजमानों को ही मलता है । दूसरे , आहुति डालने का पुण्यलाभ करना है , तो घर पर दैनिक अग्निहोत्र से कीजिए । सार्वजनिक यज्ञ में तो सम्मि लत होने का ही पुण्य है ।'' – (यज्ञ मीमांसा भू मका)

बहुकुण्डी यज्ञों से हानि – अब बहुकुण्डी यज्ञ से होने वाले हानियों पर वचार करते हैं ।

१. वेदानुकूल शास्त्रीय सोमयाग , अश्वमेधादि यज्ञों का प्रचलन न होना । फलतः इन शास्त्रीय यज्ञों में निहित सृष्टि – वज्ञान व अन्य वज्ञान का ज्ञान न होना ।

२. मह र्ष दयानंद की इच्छाओं व आज्ञाओं का हनन ।

३. वेद , ब्राह्मण , कल्पादि आर्ष ग्रन्थों के पठन – पाठन में श थलता ।

४. यज्ञों की शास्त्रीय एकरूपता का हनन होकर मनमाने ढ़ंग के यज्ञों का प्रचलन । इससे शास्त्र व संगठन की महती हानि ।

५. यज्ञों में अनेक प्रकार के आडम्बरों का प्रवेश ।

६. शास्त्रीय यज्ञ सत्य वेदार्थ को भी समझने में सहायक हैं । अतः इनके लोप से सही वेदार्थ भी असम्भव है ।

अन्त में वनम्र निवेदन है क प्रस्तुत लेख का एक मात्र उद्देश्य वेदानुकूल शास्त्रीय यज्ञों के प्रचार – प्रसार को प्रेरित करना है । इसमें कसी को कहीं भी कोई शंका हो अथवा कुछ भी शास्त्र – वरूद्ध लगे कृपया सप्रमाण अवश्य ही लखें, मेरा ज्ञानवर्द्धन होगा ।

आचार्य सुनील शास्त्री

E-mail id – achangasumlshashln@gmail.com

चलभाष – ९८३७५९१८८७३

क्या वेदों में व र्णत जर्भरी तुर्फरी का कोई अर्थ नही है ?(चार्वाक मत खंडन)

OCTOBER 8, 2014 LEAVE A COMMENT

मत्रो कई नास्तिक वादी और अम्बेडकर वादी वेदों पर चार्वाक दर्शन के आधार पर आरोप लगाते है क वेदों में जर्भरी तुर्फरी का कोई अर्थ नही है ये युही लखे गये है |कुछ द लत साहित्य कार जो आर्यों को वदेशी साबित करने पर तुले है वो कहते है क ये ईराक आदि देशो के नदियों या कसी शहर के नाम थे जहा से आर्य भारत आये |

इस तरह की काल्पनिक बातें या कहानिया ये लोग गढ़ लेते है |
चार्वाक कहते है :-

"त्रयो वेदस्य कर्तारो भंडधूर्तनिशाचरा:|
जर्फरीतुर्फरीत्यादी पं डतानां वच: स्मृतम्||चार्वाक||"
भंड ,धूर्त ,निशाचर ये लोग वेदों के कर्ता है |इनके नाना प्रकार के बेमतलब शब्दों जर्भरी तुर्फरी से वेद भरा पड़ा है |
यहा चार्वाक और अनेक अम्बेडकर वादी ये भ्रम पैदा कर दिया क वेदों में कई अनर्थक बिना मतलब वाले शब्द है |जिनका कोई अर्थ नही है | तो कुछ इन शब्दों को संस्कृत का न बता कर अन्य भाषा का बताते है |क्यूं क ये लोग लो कक संस्कृत और वैदिक संस्कृत के भेद से परि चत नही है या थे इस लए इस तरह की कल्पनाये या बातें मन में धारण कर लेते है |
वेदों में व र्णत सभी शब्द या धातु अपना अर्थ रखती है ..
इस संधर्भ में निरुक्त में कौत्स के नाम से ऐसा पूर्वपक्ष उठाकर यही बात कहलाई गयी है |
और यास्क उत्तर देते हुए कहते है क वेदों में व र्णत सभी शब्दों के अर्थ है और स्पष्ट अर्थ है |
जै मनी मुनि ने मीमासा में पूर्वपक्ष में इस तरह के प्रश्नों का समाधान करते हुए कहा है क वेदों में सब शब्द अर्थ पूर्ण है |
ये जर्भरि और तुर्फरी शब्द ऋग्वेद के १०/१०६/६ में आये है :-
"सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतु नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका |
उदन्यजेव जेमना म्देरु ता में जराय्वजरं मरायु ||६||"

ये दोनों शब्द दिवचन है और अश्विनो के वशेषण है यास्क मुनि निरुक्त परि शष्ट अध्याय १३ के ६ खंड में इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद के १०/१०६/६ की व्याख्या करते हुए कहते है –"सृण्येवेति द् व वधा सृ णर्भवति भर्ता च हन्ता च तथाश्विनौ चा प भर्तारो जर्भरी भर्तारा वत्यर्थस्तूर्फरीतू हन्तारो| निरुक्त १३/६/४ |
यहा इसे अश्विनो का वशेषण बताते हुए यास्कचार्य जर्भरी को भर्ता से व्यक्त करते है अर्थात पोषण करने वाला अत: जर्भरी का अर्थ हुआ पोषण करने वाला |
तुर्फरी को हन्ता से व्यक्त करते है अर्थात ताड़ने वाला या मारने वाला होता है | अत: तुर्फरी का अर्थ हुआ मारने वाला या सताने वाला |
यहा दोनों शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर दिया है |
अश्विनी का अर्थ वद्युत भी होता है और इस मन्त्र में इसे यास्क ने इसी का वशेषण बताया है | इस मन्त्र में जर्भरी ओर तुर्फरी को पालन करने वाला बताया है जेसा की हम देखते है क वद्युत का कई तरह से उपयोग कर हम अपने जीवन को सरल और आरामदायक बना रहे है ,जैसे मक्सी ,चक्की , फ्रज,वा शंगमशीन ,हीटर आदि में वद्युत के उपयोग द्वारा …
तो दूसरी तरफ यही वद्युत दुर्घटना वश लोगो को करंट दे कर ताड़ती है ,कई बार आकाशी वद्युत गर जाती है तो बहुत हानि करती है ,अत्य धक वोल्टेज के या ३ फेस तारो को कोई छू लेता है तो वो मर जाता है या वधुयुत उसे मारती है ..इस तरह इस मन्त्र में यही रहस्य प्रकट करते हुए वद्युत को जर्भरी पालने वाली और तुर्फरी नाशक बताया गया है |
इन सब प्रमाणों से इस बात का खंडन हो जाता है क वेदों में बिना अर्थ वाले शब्द है या

वदेशी शब्द है |
ओम ……………

क्या वेदों में यज्ञो में गौ आदि पशु मॉस से आहुति या मॉस को अति थ को खलाने का वधान है ??(अम्बेडकर के आक्षेप का उत्तर)..

SEPTEMBER 23, 2014 7 COMMENTS

नमस्ते मत्रो |
अम्बेडकर साहब आर्ष ग्रंथो और वैदिक ग्रंथो पर आक्षेप करते हुए अपनी लखत पुस्तक "THE UNTOUCHABLE WHO WERE THEY WHY BECOME UNTOUCHABLES" में कहते है क प्राचीन काल (वैदिक काल) में गौ ब ल और गौ मॉस खाया जाता था |इस हेतु अम्बेडकर साहब ने वेद (ऋग्वेद) और शतपथ आदि ग्रंथो का प्रमाण दिया है |
हम उनके वेद पर कये आक्षेपों की ही समीक्षा करेंगे |क्यु क शतपत आदि ग्रंथो को हम मनुष्यकृत मानते है जिनमे मलावट संभव है ले कन वेद में नही अत: वेदों पर कये गए आक्षेपों का जवाब देना हमारा कर्तव्य है क्यूं क मनु महाराज ने कहा है :-
" अर्थधर्मोपदेशञ्च वेदशास्त्राS वरो धना |
यस्तर्केणानुसन्धते स धर्म वेदनेतर:||"-मनु
जो ऋ षयों का बताया हुआ धर्म का उपदेश हो और वेदरूपी शास्त्र के वरुद्ध न हो और जिसे तर्क से भी सद्ध कर लया हो वही धर्म है इसके वरुद्ध नही |
मनु महाराज ने स्पष्ट कहा है क यदि अन्य ग्रंथो में वेद वरुद्ध बातें है तो त्याज्य है |
शतपत ,ग्र्ह्सुत्रो में जो गौ वध आदि की बात दी है वो वेद वरुद्ध और वाम म र्गयो द्वारा डाली गयी है ,पहले यज्ञो में पशु ब ल नही होती थी |अब हम यहा बतायेंगे क ये वाममार्ग और मॉस भक्षण का वधान कहा से आया तो पता चलता है यज्ञ सम्बं धत कर्मकांड वेद के यजुर्वेद का वषय है और यजुर्वेद की दो शाखाये है :-
शुक्ल यजुर्वेद
कृष्ण यजुर्वेद
यहा शुक्ल का अर्थ है शुद्ध ,सात्विक जब क कृष्ण का तमोगुणी ,अशुद्ध |
अर्थात जिस यजुर्वेद में सतोगुणी यज्ञ का वधान हो वह शुक्ल है और जिसमे तमोगुणी (मॉस आहुति आदि) का वधान है वो कृष्ण है |
इनमे से शुक्ल यजुर्वेद ही प्राचीन और अपोरुष मानी गयी वेद संहिता है जब क कृष्ण बाद की और मनुष्यकृत है |
इस कृष्ण यजुर्वेद के संधर्भ में महीधर भाष्य भू मका से पता चलता है क याज्ञवल्क्य व्यास जी के शष्य वैश्यायन के शष्य थे |उन्होंने वैशम्पायन से यजुर्वेद पढ़ा |एक दिन कसी कारण वंश याज्ञवल्क्य जी पर वैशम्पायन क्रुद्ध हो गये |और कहा मुझ से जो पढ़ा है उसे छोड़ दो ,याज्ञवल्क्य ने वेद का वमन कर दिया |
तब वैशम्पायन जी ने दुसरे शष्यों से कहा क तुम इसे खा लो , शष्यों ने तुरंत तीतर बन कर उसे खा लया |
उससे कृष्ण यजुर्वेद हुआ |यद्य प ये बात साधारण मनुष्यों की बु ध में असंगत और निर्थक

ठहरती है ले कन बुद् धमान लोग तुरंत परिणाम निकाल लेंगे |इससे पता चलता है क तमो गुणी यज्ञ का वधान याज्ञवल्क्य के समय (महाभारत के बाद) से चला |
और तभी से आर्ष ग्रंथो में मलावट होना शुरू हो गयी थी |शतपत में भी याज्ञवल्क्य का नाम है अत: स्पष्ट है इसमें भी मलावट हो गयी थी |और ताम सक यज्ञो का प्रचलन शुरू होने लगा ...
जब क प्राचीन काल में ऐसा नही था इसके बारे में स्वयं बुद्ध सुतानिपात में कहते है :-
“अन्नदा बलदा नेता बण्णदा सुखदा तथा
एतमत्थवंस ञत्वानास्सु गावो
हनिसुते |
न पादा न वसाणेन नास्सु हिंसन्ति केन च
गानों एकक समाना सोरता कुम्भ दुहना |
ता वसाणे गहेत्वान राजा सत्येन घातयि |”
अर्थ -पूर्व समय में ब्राह्मण लोग गौ को अन्न,बल ,कान्ति और सुख देने वाली मानकर उसकी कभी हिंसा नही करते थे |परन्तु आज घडो दूध देने वाली ,पैर और सींग न मारने वाली सीधी गाय को गौमेध मे मारते है |
इसी तरह सुतनिपात के ३०० में बुद्ध ने ब्राह्मणों के लालची ओर दुष्ट हो जाने का उलेख कया है |
इससे पता चलता है क बुद्ध के समय में भी यह ज्ञात था क प्राचीन काल में यज्ञो में गौ हत्या अथवा गौ मॉस का प्रयोग नही था |इस संधर्भ में एक अन्य प्रमाण हमे कूटदंतुक में मलता है |जिसमे बुद्ध ब्राह्मण कुतदंतुक से कहते है क उस यज्ञ में पशु ब ल के लए नही थे |इस बात को अम्बेडकर ने हसी मजाक बना कर टालमटोल करने की को शस की है ,जब क कूटदंतुक में बुद्ध ने यज्ञ पुरोहित के गुण भी बताये है :- सुजात ,त्रिवेद (वेद ज्ञानी) ,शीलवान और मेधावी |और यज्ञ में घी ,दूध ,दही ,अनाज ,मधु के प्रयोग को बताया है |
अत: स्पष्ट है क बुद्ध यज्ञ वरोधी नही थे बल्कि यज्ञ में हिंसा वरोधी थे ,सुतानिपात ५६९ में बुद्ध का निम्न कथन है :-

अर्थात छंदो मे सा वत्री छंद(गायत्री छंद) मुख्य है ओर यज्ञो मे अग्निहोत्र । अत: निम्न बातो से निष्कर्ष निकलता है क बुध्द वास्तव मे यज्ञ वरोधी नही थे बल्कि यज्ञ मे जीव हत्या करने वाले के वरोधी थे।

अत : स्पष्ट है क प्राचीन काल में यज्ञ हिंसा नही थी इस बात पर मह्रिषी चरक का भी प्रमाण है जो दे खये :-

अत निम्न कथन से भी स्पष्ट है क प्राचीन काल में यज्ञ हिंसा नही थी |
मीमासा दर्शन ने इस बात पर प्रकाश डाला है :-”मांसपाक प्रतिषेधश्च तद्वत |”-मीमासा १२/२/२
यज्ञ में पशु हिंसा मना है ,वैसे मॉस पाक भी मना है |इसी तरह दुसरे स्थान पर आता है १०/३/६५ व् १०/७/१५ में लखा है क ” धेनुवच्चाश्वद क्षणा ” और अ प व दानमात्र स्याह भक्षशब्दान भसम्बन्धात |” गौ आदि की भाति अश्व भी यज्ञ में केवल दान के लए ही है |

क्यूं क इनके साथ भक्ष शब्द नही आया है |अतः स्पष्ट है क पशु वध के लए नही दान आदि के लए थे |
कात्यान्न श्रोतसूत्र मे आया है-
दुष्टस्य ह वषोऽप्सवहरणम् ।।२५ ,११५ ।।
उक्तो व मस्मनि ।।२५,११६ ।।
शष्टभक्षप्रति षध्द दुष्टम।।२५,११७ ।।
अर्थात होमद्रव्य यदि दुष्ट हो तो उसे जल मे फेक देना चाहिए उससे हवन नहीं करना चाहिए , शष्ट पुरुषो द्वारा नि षध मांस आदि अभक्ष्य वस्तुयें दुष्ट कहलाती है ।
उपरोक्त वर्णन के अनुसार यहाँ मॉस की आहुति का निषेध हो रहा है ।
अतः स्पष्ट है क मॉस ब ल वेदों में नही है न ही प्राचीन काल यज्ञ में थी |
चुकी आंबेडकर जी ने शतपत का भी प्रमाण दिया है तो हम कुछ बात शतपत की भी रखते है :-
शतपत में मॉस भोजी को यज्ञ का अ धकार नही दिया है दे खये :-
"न मॉसमश्रीयात् ,यन्मासमश्रीयात्,यन्मिप्रानमुपेथादिति नेत्वेवैषा दीक्षा ।"(श. ६:२)
अर्थात मनुष्य मॉस भक्षण न करे , यदि मॉस भक्षण करता है अथवा व्य भचार करता है तो यज्ञ दीक्षा का अ धकारी नही है ....
यहा स्पष्ट कहा है की मॉस भक्षी को यज्ञ का अ धकार नही है ,अत : यहाँ स्पष्ट हो जाता है की यज्ञ मे मॉस की आहुति नही दी जाती थी ।
शतपत में ही ये लखा है क मॉस भक्षक को यज्ञ का अ धकार नही है इससे स्पष्ट है क बाद में मॉस ,गौ ब ल ,मासाहार शतपत में क्षेपक जोड़ा गया है उन्ही को अम्बेडकर ने आधार बनाया ब्राह्मणवाद के वरोध में ...
शतपत में मॉस शब्द का उलेख है जिसकी आहुति का वधान है ले कन यह लोक प्र शद्ध मॉस नही बल्कि कुछ और है
मासानि वा आ आहुतयः(श ९,२)
अर्थात यज्ञ आहुति मॉस की होनी चाहिए ।
चु क यहाँ मॉस के चक्कर मे भ्रम मे न पडे तो आगे मॉस के अर्थ को स्पष्ट कया है –
" मासीयन्ति ह वै जुह्वतो यजमानस्याग्नयः।
एतह ह वै परममान्नघ यन्मासं,स परमस्येवान्नघ स्याता भवति (शत .११ ,७)"।।
हवन करते हुआ यज्मान की अग्निया मॉस की आहुति की इच्छा रखती है ।
परम अन्न ही मॉस है परम अन्न से आहुति दे ,..
यहा मॉस को परम अन्न कहा है ओर यदि ये जीवो का मॉस होता तो यहाँ अन्न का प्रयोग नही होता क्यूँ की मॉस अन्न नहीं होता है ।परम अन्न के बारे मे अमरकोष के अनुसार "परमान्नं तु पायसम् " अर्थात दूध ओर चावल से तैयार (खीर) को परम अन्न कहा है ।अतः शतपत ब्राह्मण के अनुसार मॉस का अर्थ पायसम है ।लोक प्र सद्ध मॉस नही ।
अतः स्पष्ट है क शतपत में मॉस आदि गूढ अर्थो में प्रयोग कया है तथा इस बात से भी इनकार नही की इनमे वाम्मा र्गयो के क्षेपक है |
अब हम वेदों पर वचार करते है |वेदों में मॉस और यज्ञ में मासाहार जो लोग बताते है उन्हें पहले निम्न मंत्रो पर वचार करना चाहिए ..
इमं मा हिंसीर्द् वपाद पशुम् (यजु १३/४७)
दो खुरो वाले पशुओ की हिंसा मत करो |

इमं मा हिंसीरेकशफ़ पशुम (यजु १३/४८)
एक खुर वाले पशु की हिंसा मत करो |
मा नो हिं सष्ट द् वपदो मा चतुष्यपद:(अर्थव ११/२/१)
हमारे दो ,चार खुरो वाले पशुओ की हिंसा मत करो |
मा सेंधत (ऋग. ७/३२/९)
हिंसा मत करो |
वेद स्पष्ट अंहिसा का उलेख करते है जब क मॉस बिना हिंसा के नही मलता और यज्ञ में भी ब ल आदि हिंसा ही है |
अब यज्ञो में पशु वध या वैदिक यज्ञो में पशु मॉस आहुति के बारे में वचार करेंगे :-
आंबेडकर जी का कहना है क वेदों में बाँझ जो दूध नही दे सकती उनकी ब ल देने और मॉस खाने का नियम है जब क वेद स्वयम उनकी इस बात का खंडन करते है
वेदों में मॉस निषेध :- ऋग्वेद १०/८७/१६ में ही आया है की राजा जो पशु मॉस से पेट भरते है उन्हें कठोर दंड दे ...
पय: पशुनाम (अर्थव १९/३१/१५)
है मनुष्य ! तुझे पशुओ से पैय पदार्थ (पीने योग्य पदार्थ) ही लेने है |
यदि पशु मॉस खाने का वधान होता तो यहा मॉस का भी उलेख होता जब क पैय पदार्थ दूध और रोग वशेष में गौ मूत्र आदि ही लेने का वधान है |
वेदों में यज्ञ में हिंसा और मॉस भक्षण के संधर्भ में आंबेडकर जी निम्न प्रमाण वेदों के देते है :-

यज्ञ के संधर्भ में वेद में लखा है:- उपावसृज त्मन्या समञ्चन् देवाना पाथ ऋतुथा ह व ष।वनस्पति: श मता देवो अग्नि: स्वदन्तु द्रव्य मधुना घृतेन ।।(यजु २९,३५)
पाथ ,ह व ष,मधुना,घृत ये चारो पद चारो प्रकार के द्रव्यों का ही हवं करना उपादेष्ट करते है,अत: यज्ञ मे इन्ही का ग्रहण करना योग्य है ,,
यहा स्पष्ट उलेख है की कन कन वस्तुओ का उपयोग कया जा सकता है यदि मॉस का होता तो यहा मॉस रक्त आदि का भी उलेख होता ..
कात्यान्न श्रोतसूत्र मे आया है-
दुष्टस्य ह वषोऽप्सवहरणम् ।।२५ ,११५ ।।
उक्तो व मस्मनि ।।२५,११६ ।।
शष्टभक्षप्रति षध्द दुष्टम।।२५,११७ ।।
अर्थात होमद्रव्य यदि दुष्ट हो तो उसे जल मे फेक देना चाहिए उससे हवन नहीं करना चाहिए , शष्ट पुरुषो द्वारा नि षध मांस आदि अभक्ष्य वस्तुयें दुष्ट कहलाती है ।
उपरोक्त वर्णन के अनुसार यहाँ मॉस की आहुति का निषेध हो रहा है ।
यज्ञ में पशुओ का उलेख है तो उसका समाधान ऊपर दिया है मीमासा का प्रमाण देकर की यज्ञ में पशु हत्या के लए नही बल्कि दान के लए होते थे ...
यजुर्वेद के एक अध्याय में यज्ञ में कई पशु लाने का उलेख है जिसका उदेश्य उनकी हत्या नही बल्कि यज्ञ में दी गयी ओषधी आदि की आहुति से लाभान्वित करना है क्यूँ की यज्ञ का उदेश्य पर्यावरण और स्रष्टि में उपस्थित प्रा णयों को आरोग्य प्रदान करना पर्यावरण को स्वच्छ रखना है |क्यूं क यज्ञ में दी गयी आहुति अग्नि के द्वारा कई भागो में टूट जाती है और श्वसन द्वारा प्रा णयों के शरीर में जा कर आरोग्य प्रदान करती है

जरा यजुर्वेद का यह मंत्र देखे-

“इमा मे अग्नS इष्टका धेनवः सन्त्वेक च दश च दश च शतं च शतं च सहस्त्रं च सहस्त्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्र्च मध्यं चान्तश्र्च परार्धश्र्चैता मे अग्नS इष्टका धनेवः सन्त्वमुत्रामुष्मिल्लोके”॥17:2॥

अर्थ-है अग्नीदेव!ये इष्टिकाए(हवन मे अ र्पत सूक्ष्म इकाईया)हमारे लए गौ के सदृश(अभीष्ट फलदायक) हौ जाए। ये इष्टकाए एक,एक से दसगु णत होकर दस,दस से दस गु णत हौकर सौ,सौ की दस गु णत होकर हजार,हजार की दस गु णत होकरअयुत(दस हजार),अयुत की दस गु णत होकर नियुत(लाख),नियुत की दस गु णत हो कर प्रयुत(दस लक्ष), प्रयुत की दस गु णत हो कर कोटि(करौड),कोटि की दस गु णत हो कर अर्बुद(दस करौड),अर्बुद की दस गु णत होकर न्युर्बुद इसी प्रकार दस के गुणज मे बढती है।न्युर्बुद का दस गु णत खर्व(दस अरब),खर्व का दस गु णत पद्म(खरब)पद्म का दस गु णत महापद्म(दस खरब)महापद्म का दस गु णत मध्य(शंख पद्म)मध्य का दस गु णत अन्त(दस शंख)ओर अन्त की दस गु णत होकर परार्ध्द(लक्ष लक्ष कोटि)संख्या तक बढ जाए॥

उपरोक्त मन्त्र में स्पष्ट है की यज्ञ से आहुति कई भागो नेनो में बट जाती है तथा कई दूर तक फ़ैल कर कई प्रा णयों को लाभान्वित करती है |

अब अम्बेडकर जी के दिए प्रमाणों पर एक नजर डालते है :-

आंबेडकर जी ऋग्वेद १०/८६/१४ में लखता है :- इंद्र कहता है क वे पकाते है मेरे लए १५ बैल ,मै खाता हु उनका वसा ....!

यहा लगता है अम्बेडकर ने कसी अंग्रेजी भाष्यकार का अनुसरण कया है या फर जान बुझ ऐसा लखा है इसका वास्त वक अर्थ जो निरुक्त ,छंद ,वैदिक व्याकरण द्वारा होना चाहिए इस प्रकार है :-

“परा श्रृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा श्रृणीहि|

परा र्चर्षा मृरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपो अ भ शोशुचानः(ऋग्वेद १०/८३/१४)”

उपरोक्त मन्त्र में कही भी इंद्र ,बैल ,वसा ,खाना आदि शब्द नही है फर अम्बेडकर जी को कहा से नजर आये ..इसका भाष्य – (अग्ने) यह अग्नि (अ भ शोशुचान) तीक्ष्ण होता हुआ (तपसा) ताप से (यातुधानान) पीड़ाकारक जन्तुओ (रोगाणु आदि) (परशृणीहि) मारता है (मृरदेदान) रोग फ़ैलाने वाले अथवा मारक व्यापार करने वाले घातक रोगाणु को (अ चषा) अपने तेज से (परा श्रृणीहि) मारता और (असृतृपः) प्राणों से तृप्त होने वाले क्रमी को मारता अथवा नष्ट करता है |

इसमें अग्नि के ताप से सूक्ष्म रोगानुओ के नष्ट होने का उलेख है |वेदों में सूर्य और उसकी करण को भी अग्नि कहा है तो यह सूर्य करणों द्वारा रोगाणु का नाश होना है ..इस मन्त्र में सूर्य करण या ताप द्वारा च कत्सा और रोगाणु नाश का रहस्य है |

एक अन्य मन्त्र १०/७२/६ का भी अम्बेडकर वेदों में हिंसा के लए उलेख करते है |

” यद्देवा ....रेणुरपायत(ऋग. १०/७२/६)”

(यत) जो (देवा) प्रकाशरूप सूर्य आदि आकाशीय पंड (अदः) दूर दूर तक फैले है (स लले) प्रदान कारण तत्व वा महान आकाश में (सु-स-रब्धा) उत्तम रीती से बने हुए और गतिशील होकर (अतिष्ठित) वद्यमान है |

है जीवो ! (अत्र) इन लोको में ही (नृत्यतां इव वा) नाचते हुए आनंद वनोद करते हुए आप लोगो का (तीव्रः रेणु अति वेग युक्त अंश ,आत्मा स्वतः रेणुवत् अणु परिणामी वा गतिशील है वह (अप आयत) शरीर से पृथक हो कर लोकान्तर में जाता है |

इस मन्त्र में लोको में प्राणी (पृथ्वी आदि अन्य ग्रह में प्राणी) ए लयन आदि का रहस्य है और आत्मा और मृत्यु पश्चात आत्मा की स्थिति का रहस्य है |यहा कही भी मॉस या मॉस भक्षण नही है जेसा की अम्बेडकर जी ने माना ...

एक अन्य उदाहरन अम्बेडकर जी ऋग्वेद १०/९१/१४ का देते है :-अग्नि में घोड़े ,गाय ,भेड़ ,बकरी की आहुति दी जाती थी |

" यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशामेषा अवसृष्टास आहूताः|
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदामर्ति जनये चारुमग्नये (ऋग्वेद १०/९१/१४)"

(यस्मिन) जिस सृष्टी में परमात्मा ने (अश्वासः) अश्व (ऋषभास) सांड (उक्ष्ण) बैल (वशा) गाय (मेषाः) भेड़ ,बकरिया (अवस्रष्टास) उत्पन्न कये और (आहूता) मनुष्यों को प्रदान कर दिए |वाही ईश्वर (अग्नेय) अग्नि के लए (कीलालपो) वायु के लए (वेधसे) आदित्य के लए (सोमपृष्ठाय) अंगरा के लए (हृदा) उनके हृदय में (चारुम) सुन्दर (मतिम) ज्ञान (जनये) प्रकट करता है |

यहा भी मॉस आदि नही बल्कि सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर द्वारा वेद ज्ञान प्रदान करने का उलेख है |

लेकन इस मन्त्र में कोई हट करे की अग्नि बैल ,अश्व ,भेड़ गौ आदि शब्दों से इनकी अग्नि में आहुति है |

तो ऐसे लोगो से मेरा कहना है की क्या ये नाम कसी ओषधी आदि के नही हो सकते है | क्यूँ क वेदों में आहुति में ओषध का उलेख मलता है |जो की महामृत्युंजय मन्त्र में "त्र्यम्बकम यजामहे ....." में देख सकते है इसमें त्रि =तीन अम्ब =ओषधी का उलेख है और यजामहे =यज्ञ में देने का ...अतः ये नाम ओषधयो के है |

इसे समझने के लए कुछ उदाहरण देता हु –

(१) बुद्ध ग्रन्थ में आया है :-

यहा आये सुकर मद्दव से यही लगता हैं क बुद्ध ने सूअर का मॉस खाया इसका यही अर्थ श्रीलंकाई भक्षु सूअर का ताजा मॉस करते है |जबक वास्तव में यहा सूकर मद्दव पाली शब्द है जिसे

हिन्दी करे तो होगा सूकर कन्द ओर संस्कृत मे बराह
कन्द यदि आम भाषा मे देखे तो सकरकन्द चुक ये दो प्रकार
का होता है १ घरेलु मीठा२ जंगली कडवा इस
पर छोटे सूकर जैसे बाल आते है इस लए इसे बराह कन्द
या शकरकन्द कहते है|ये एक कन्द होता है जिसका साग
बनाया जाता है |इसके गुण यह है क यह चेपदार मधुर और गरिष्ठ
होता है तथा अतिसार उत्पादक है जिसके कारण इसे खाने से बुद्ध को अतिसार हो गया था |

एक अन्य उदाहरण भी देखे :-

हठयोग प्रदीप में आया है :-

" गौमांसभक्षयेन्नित्यं पबेदमरवारुणीम् |
कुलीन तमहं मन्ये इतर कुलघातकः||"

अर्थात जो मनुष्य नित्य गौ मॉस खाता है और मदिरा पीता है,वही कुलीन है ,अन्य मनुष्य

कुल घाती है |
यहा गौ मॉस का उलेख लग रहा है ले कन अगले श्लोक में लखा है :-
" गौशब्देनोदिता जिव्हा तत्प्रवेशो हि तालुनि गौमासभक्षण तत्तु महापातकनाशम्"
अर्थात योगी पुरुष जिव्हा को लोटाकर तालू में प्रवेश करता है उसे गौ मॉस भक्षण कहा है |
यहा योग मुद्रा की खेचरी मुद्रा का वर्णन है ..गौ का अर्थ जीव्हा होती है और ये मॉस की बनी है इस्लिते इसे गौ मॉस कहा है और इसे तालू से लगाना इसका भक्षण करना तथा ऐसा माना जाता है की ये मुद्रा सद्ध होने पर एक रस का स्वाद आता है इसी रस को मदिरा पान कहा है |
यदि यहा श्लोक्कार स्वयम अगले श्लोक में अर्थ स्पष्ट नही करता तो यहा मॉस भक्षण ही समझा जाता ...
इसी तरह वेदों में आय गौ ,अश्व ,आदि नाम अन्य वस्तुओ ओष ध आदि के भी हो सकते है ..यज्ञ के आहुति सम्बन्ध में ओष ध और अनाज के ,,जिसके बारे में वेदों में ही लखा है :-
धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत (अर्थव १८/४/३२)
धान ही धेनु है औरतिल ही बछड़े है |
अश्वा: कणा गावस्तण्डूला मशकास्तुषा |
श्याममयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम||(अर्थव ११/३ (१)/७७)
चावल के कण अश्व है ,चावल ही गौ है ,भूसी ही मशक है ,चावल का जो श्याम भाग है वाही मॉस है और लाल अंश रु धर है |
यहा वेदों ने इन शब्दों के अन्य अर्थ प्रकट कर दिए जिससे सद्ध होता है की मॉस पशु हत्या का कोई उलेख वेदों में नही है |
अनेक पशुओ के नाम से मलते जुलते ओषध के नाम है ये नाम गुणवाची संज्ञा के कारण समान है ,श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,मुम्बई से छपे ओष धकोष में निम्न वनस्पतियों के नाम पशु संज्ञक है जिनके कुछ उधाहरण नीचे प्रस्तुत है :-
वृषभ =ऋषभकंद मेष=जीवशाक
श्वान=कुत्ताघास ,ग्रन्थिपर्ण कुकुक्ट = शाल्मलीवृक्ष
मार्जार= चत्ता मयूर= मयुर शखा
बीछु=बिछुबूटी मृग= जटामासी
अश्व= अश्वग्न्दा गौ =गौलोमी
वाराह =वराह कंद रु धर=केसर
इस तरह ये वनस्पति भी सद्ध होती है अत: यहा यज्ञो में प्राणी जन्य मॉस अर्थ लेना गलत है |
अम्बेडकर कहते है क प्राचीन काल में अति थ का स्वागत मॉस खला कर कया जाता था|
ये शायद ही इन्होने नेहरु या ववेकानद जेसो की पुस्तक से पढ़ा होगा ववेकानद की जीवनी द कोम्पिलीत वर्क में कुछ ऐसा ही वर्णन है जिसके बारे में यहा वचार नही कया जाएगा ..जिसे आप आर्यमंत्वय साईट के एक लेख में सप्रमाण देख सकते है |
इस संधर्भ में मै कुछ बातें रखता हु :-
ऋग्वेद १०/८७/१६ में स्पष्ट मॉस भक्षी को कठोर दंड देना लखा है तो अति थ को मॉस खलाना ऐसी बात संभव ही नही वेदानुसार ...
मनुस्मृति में आया है " यक्षरक्ष: पशाचान्न मघ मॉस सुराऽऽसवम (मनु ११/९५)"
मॉस और मध राक्षसो और पशाचो का आहार है |

यहा मॉस को पशाचो का आहार कहा है जब क भारतीय संस्कृति का प्राचीन काल से अति थ के लए निम्न वाक्य प्रयुक्त होता आया है "अति थ देवोभव:" अर्थात अति थ को देव माना है अब भला कोई देवो को पशाचो का आहार खलायेगा ...

"अघतेऽ त्त च भुतानि तस्मादन्न तदुच्यते (तैत॰ २/२/१)"

प्राणी मात्र का जो कुछ आहार है वो अन्न ही है |

जब प्राणी मात्र का आहार अन्न होने की घोषणा है तो मॉस भक्षण का सवाल ही नही उठता |

कुछ अम्बेडकर के अनुयायी या वेद वरोधी लोग अर्थव॰ के ९/६पर्याय ३/४ का प्रमाण देते हुए कहते है की इसमें लखा है की अ थति को मॉस परोसा जाय|

जब क मन्त्र का वास्त वक अर्थ निम्न प्रकार है :-" प्रजा च वा ....पूर्वोष्शातिश्शनाति |"

जो ग्रहस्थ निश्चय करके अपनी प्रजा और पशुओ का नाश करता है जो अति थ से पहले खाता है |

इस मन्त्र में अति थ से छुप कर खाने या पहले खाने वाले की निंदा की है ...उसका बेटे बेटी माँ , पता ,पत्नी आदि प्रजा दुःख भोगते है ..और पशु (पशु को समृ ध और धनवान होने का प्रतीक माना गया है) की हानि अथवा कमी होती है ...अर्थात ऐसे व्यक्ति के सुख वैभव नष्ट हो जाए |यहा अति थ को मॉस खलाने का कोई उलेख नही है |

अतः निम्न प्रमाणों से स्पष्ट है की प्राचीन काल में न यज्ञ में ब ल होती थी न मॉस भक्षण होता था ..न ही वेद यज्ञ में पशु हत्या का उलेख करते है न ही कसी के मॉस भक्षण का .....

यदि कोई कहे की ब्राह्मण मॉस खाते थे तो सम्भवत कई जगह खाते होंगे, और यज्ञ में भी हत्या होती थी ले कन कहे की वेदों में हत्या और मॉस भक्षण है तो ये बिलकुल गलत और प्रमाणों द्वारा गलत सद्ध होता है |और कहे प्राचीन काल यज्ञो में मॉस भक्षण और मॉस आहुति होती थी तो ये भी उपरोक्त प्रमाणों से गलत सद्ध होता है यज्ञ का बिगड़ा स्वरूप और ब्राह्मण ,ग्रहसूत्रों में मॉस के प्रयोग वामम र्गयो द्वारा महाभारत के बाद जोड़ा गया जो की उपरोक्त प्रमाणों में सद्ध क्या गया है |

अतः अम्बेडकर का कथन प्राचीन आर्य (ब्राह्मण आदि) यज्ञ में पशु हत्या और मॉस भक्षण करते थे ,वैदिक काल में अति थ को मॉस खलाया जाता था आदि बिलकुल गलत और गलत भाष्य पढने का परिणाम है |

समभवतय उन्होंने ये ब्राह्मण वरोधी मान सकता अथवा बुद्ध मत को सर्व श्रेष्ट सद्ध करने के कारण लखा हो |

ओम

संध र्भत ग्रन्थ एवम पुस्तके :-(१) वेद सौरभ – जगदीश्वरानन्द जी

(२) वैदिक सम्पति -रघुनंदन शर्मा जी

(३) यज्ञ में पशुवध वेद वरोध – नरेंद्र देव शास्त्री जी

(४) वैदिक पशु यज्ञ ममास -प्रो. वश्वनाथ जी

(५) सत्यार्थ प्रकाश उभरते प्रश्न गरजते उत्तर -अग्निव्रत नैष्ठिक जी

(६) **the untouchable who were they and why become untouchables-**अम्बेडकर जी

(७) महात्माबुद्ध और सूअर का मॉस -अज्ञात

(८) भारत का वृहत इतिहास -आचार्य रामदेव जी

(९) **mahatma budha an arya reformer-**धर्मदेवा जी

(१०) ऋग्वेदभाष्य -आर्यसमाज जाम नगर ,हरिशरणजी ,जयदेव शर्मा जी
(११) स्वामी दर्शनानंद ग्रन्थ संग्रह (क्या शतपत आदि में मलावट नही)-स्वामी दर्शनानद जी

भगवान मनु ओर द लत समाज

JULY 31, 2014 2 COMMENTS

मत्रो ओम |
मै जो लेख लख रहा हु उससे सम्बं धत अनेक लेख आर्य वद्वान अपने ब्लोगों पर डाल चुके है| कई तरह की पुस्तके भी लखी जा सकती है | जिसमे सबसे महत्वपूर्ण योगदान सुरेन्द्र कुमार जी का है| जिन्होंने मह्रिषी मनु के कथन को स्पष्ट करने का ओर मनु स्म्रति को शुद्ध करने का प्रसं सय कार्य कया है| इस सम्बन्ध में आपने जितने भी लेख जैसे मनु और शुद्र,मनु और महिलायें आदि व भन्न blogger द्वारा लखे पढ़े होंगे |वे सब इन्ही की कताबो ओर शोधो से लए गये है |हमारा भी ये लेख इन्ही की कताब से प्रेरित है|
मह्रिषी मनु को कई प्राचीन वद्वान ओर ब्राह्मणकार कहते है की मनु के उपदेश औष ध के सामान है ले कन आज का द लत समाज ही मनु का कट्टरता से वरोध करता है | ओर बुद्ध मत को श्रेष्ट बताते हुए मनु को गा लया देता है ओर उनकी मनुस्म्ती को भी जलाते है | इसके निम्न कारण है :-
(१) मनु द्वारा वर्णव्यवस्था को बताना ..
(२) मनु पर जाति व्यवस्था को बनाने का आरोप
(३) मनु द्वारा स्त्री के शोषण का आरोप .
उपरोक्त आरोपों पर वचार करने से पहले हम बतायेंगे की मनु को हिन्दू वद्वानों ने ही नही बल्कि बुद्ध वद्वानों ने भी माना है | बौद्ध महाक व अश्वघोस जो की कनिष्क के काल में था अपने ग्रन्थ वज्रकोपनिषद में मनु के कथन ही उद्द्त करता है| इसी तरह बुद्ध ने भी धम्म पद में मनु के कथन ज्यो के त्यों लखे है..इनमे बस भाषा का भेद है मनुस्म्ती संस्कृत में है ओर धम्मपद पाली में ..दे खये मनुस्म्रती के श्लोक्स धम्मपद में :

अ भवादन शीलस्य नित्यं वृध्दोपसे वनः|

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु र्वद्यायशोबलम्||मनुस्मृति अध्याय२ श्लोक १२१||
अ भवादन सीलस्य निञ्च वुड्ढा पच भनम्|
खतारी धम्मावड्ृग त्त आनुपवणपीसुलम्||धम्मपद अध्याय ८:१०९||
न तेन वृध्दो भवति,येनास्य प लतं शरः |
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवा स्थ वरं वदुः||मनुस्मृति अध्याय२:१५६||
न तेन चेरो सीहोती चेत्तस्य पा लतं सरो|
परिपक्को वचो तस्यं पम्मिजितीति बुध्दवति||धम्मपद ९:१२०||

iइन निम्न श्लोको को आप देख सकते है ,और धम्मपद के भी निम्न वाक्य देख सकते है जो काफी समानता दर्शाते है ..इससे पता चलता है की बुद्ध ओर अन्य बौद्ध वद्वान मनुस्म्रती से प्रभा वत थे|

मनु द्वारा धर्म के १० लक्षणों में से एक अंहिसा को जैन ओर बुद्धो ने अपने मत का आधार बनाया था ..

अब मनु पर लगाये आरोपों की संछेप में यहाँ ववेचना करते है :-

(१) मनु द्वारा वर्णव्यवस्था चलाना :

मह्रिषी मनु वर्णव्यवस्था के समर्थक थे ले कन वे जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था के नहीं बल्कि कर्म आधरित वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे जो की मनुस्म्ती के निम्न श्लोक्स से पता चलता है :-

शूद्रो ब्राह्मणात् एति,ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्|

क्षत्रियात् जातमेवं तु वद्याद् वैश्यात्तथैव च||

(मनुस्मृति १०:६५)

गुण,कर्म योग्यता के आधार पर ब्राह्मण,शूद्र,बन जाता है| ओर शूद्र ब्राह्मण|

इसी प्रकार क्षत्रिए ओर वैश्यो मे भी वर्ण परिवरितन समझने चाहिअ|

ओर महात्मा बुद्ध भी कर्माधारित वर्ण व्यवस्था को समर्थन करते थे ..वर्ण व्यवस्था का वरोध उन्होंने भी नही कया था|इस बारे में अलग से ब्लॉग पर एक नया लेख आगे लखा जायेगा |

(२) मनु पर जातिवाद लाने का आरोप :-

ये सत्य है की मनु ने जाति शब्द का प्रयोग कया ले कन ये इन लोगो का गलत आरोप है की मनु ने जाति व्यवस्था की नीव डाली ..मनु ने जाति शब्द का अर्थ जन्म के लए कया है न की ठाकुर ,ब्राह्मण ,भंगी आदि जाति के लए ..दे खये मनुस्म्रती से :-

जाति अन्धव धरौ(१:२०१)=जन्म से अंधे बहरे|

जाति स्मरति पौ र्वकीम्(४:१४८)=पूर्व जन्म को स्मरण करता है|

द् वजाति:(१०.४)=द् वज ,क्यु क उसका दूसरा जन्म होता है|

एक जाति:(१०.४) शुद्र क्यु क वद्याधरित दूसरा जन्म नही होता है|

अत स्पष्ट है मनु जातिवाद के जनक नही थे ...

(३) मनु पर नारी वरोधी का आरोप :-

मनुस्मृति में निम्न श्लोक आता है :-

पुत्रेण दुहिता समा(मनु•९.१३०)

पुत्र पुत्री समान है|वह आत्मारूप है,अत: पैतृक संपति की अ धकारणी है|

इससे पता चलता है क मह्रिषी मनु पुत्र ओर पुत्री को समान मानते है |

मनु के कथन को निरुक्त कार यास्क मुनि उद्दत कर कहते है :-

अ वशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मत:|

मथुनानां वसर्गादौ मनु: स्वायम्भुवोऽब्रवीत्(निरूक्त३:१.४)

सृष्टि के आरंभ मे स्वायम्भुव मनु का यह वधान है क दायभाग = पैतृक भाग मे पुत्र पुत्री का समान अ धकार है|

अत स्पष्ट है क मनु पुत्री को पेतर्क सम्पति में पुत्र के सामान अ धकार देने का समर्थन करते थे ..

मनु से भारत ही नही वदेश में भी कई प्रभा वत थे चम्पा दीप (द क्षण वयतनाम) के एक शीला लेख में निम्न मनु स्मरति का श्लोक मला है :-

वत्तं बन्धुर्वय: कर्म वद्या भवति पञ्चमी|
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यत्तरम्||[२/१३६|
इसी तरह वर्मा,कम्बोडया , फलपीन दीप आदि जगह मनु और उनकी स्मृति की प्रतिष्टा देखी जा सकती है|
लेकन भारत में ही एक वर्ग वशेष उनका वरोधी है जिसका कारण है मनुस्म्रती में प्रक्षेप अर्थात कुछ लोभी लोगो द्वारा अपने स्वार्थ वश जोड़े गये श्लोक जिनके आधार पर अपने वर्ग को लाभ पंहुचाया जा सके ओर दुसरे वर्ग का शोषण कर सके ..
मनुस्मर्ती में कैसे और कोन कोनसे प्रक्षेप है इसे जानने के लए निम्न लंक पर जा कर वशुद्ध मनुस्मर्ती डाउनलोड कर पढ़े :
http://www.aryamantavya.in/2014/uncategorized/vishuddh-manu-smriti/
वही इस चीज़ को अपने वोट बैंक के लए कुछ दलत नेता भी बढ़ावा देते है ताक ब्राह्मण वरोध को आधार बना कर अपना वोट पक्का कर सके इसके लए वै आर्ष ग्रंथो को भी निशाना बनाते है |एक दलत साहित्यकार स्वप्निल कुमार जी अपनी एक पुस्तक में लखते है की मनु शोषतों ओर कसानो का नेता था|(भारत के मूल निवाशी और आर्य आक्रमण पेज न ६१) इनके इस कथन पर हसी आती है क कभी मनु को मुल्निवाशी नेता तो कभी वदेशी आर्य ये लोग अपनी सुवधा अनुसार बनाते रहते है |
मनुस्म्रति से सम्बंदित इसी तरह के आरोपों के निराकरण के लए निम्न पुस्तक मनु का वरोध क्यूँ अवश्य पढ़े जो की इसी ब्लॉग के ऊपर होम के पास दिए गये लंक में है …
अंत में यही कहना चाहूँगा की प्रक्षेपो के आधार पर मनु को गाली न देवे इसमें महाराज मनु का कोई दोष नही है ..सबसे अच्छा होगा की मनुस्मर्ती से प्रक्षेप को हटा मूल मनु स्मृति का अनुशरण कया जाये जैसे की सुरेन्द्र कुमार जी की वशुद्ध मनुस्मृति ….
संधर्भत पुस्तके एवम ग्रन्थ :-(१) मनु का वरोध क्यूँ ?- सुरेन्द्र कुमार
(२) वशुद्ध मनुस्मृति -डा सुरेन्द्र कुमार
(३) निरुक्त -यास्क मुनि
(४) वृहत भारत का इतिहास भाग ३-आचार्य रामदेव
(५) बोलो कधर जाओगे -आचार्य अग्निव्रत नेष्ठिक जी

वर्ण व्यवस्था

JULY 30, 2014 LEAVE A COMMENT

वर्ण व्यवस्था क्या है ? कन पर् लागू होती है ? आज के परिपेक्ष्य मैं इस्का क्या लाभ है?

समाज मैं सब व्यक्ति सब कार्य समान कुशल्ता से नहीं कर सक्ते हैं .इस्लिये योग्यता के अनुसार व्यवस्था चलाने के लये भन्न भन्न वर्ण के लोग
वर्ण व्यवस्था केवल ग्रहस्थ पर लागू होती है . ब्रह्मचारि वंप्रस्थ और सन्यास वर्ण से बाहर है.

ग्रहस्थी में एक वर्ण की लड़की को अपने वर्ण में स्वयम्वर ववाह का आदेश् है .

सम्प त ग्रहस्थ के पास रहेगी. अन्य वर्ण ग्रहस्थ पर आ श्रत हैं .

हर वर्ण की एक श्रेणी होती है. उस श्रेणी की व्यवस्था वे लोग स्वयम देख्ते हैं .

राजा उस में हस्तक्षेप नहीं करता .

आज कल सरकार अंग्रेज़ोन क तरह सभी श्रे णयोन का काम सम्भाल रहीहै इस्लिये अव्यवस्था होरही है.

कपड़ा कैसे बुना जाए ;ये फैस्ला IAS [अंग्रेज़ सर्कार का कलक्टर] लेगा तो अव्यवस्था तो होगी ही.

राष्ट्र को बुनकर समाज कप्ड़ा देगा. खद्दी से दे या मल से दे .ये उनका कर्तव्य है . सरकार को उस्से क्या प्रयोजन? guild socialism

कत्ना कप्ड़ा आयात होगा ये भी बुंकर समाज तय करे .

ऐसा ही अन्य वर्णों में सम्झो .

सरकार को वदेश नीति , रक्षा , दंड एवम वत्त वभाग ही देखने चहिये

आ खर संस्कृत व हिन्दी भाषा का वरोध क्यों? : शवदेव आर्य

JULY 30, 2014 3 COMMENTS

वर्तमान में प्रच लत संस्कृत और हिन्दी के ववाद के शब्द निश्चित ही आपके कानों में कहीं से सुनायी दिये होगें। कुछ ही दिन पहले केन्द्र सरकार ने हिन्दी को बढ़ावा देने की बात कही थी, जिसका वपक्ष के लोगों और द क्षणी लोगों ने वरोध कया था। आज आजादी के छः दशकों के बाद भी हमारे देश के काम-काज की भाषा हिन्दी नहीं बन पायी है, क्यों क देश के जो भी नीति-निर्माता रहे उन्होंने हिन्दी के साथ बहुत भेदभाव कया, जिसके कारण हिन्दी आगे नहीं बढ़ पायी है।

आज भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है। सम्पूर्ण वश्व में भी हिन्दी का वर्चस्व है। ले कन उसके पाश्चात् भी भारत के नेताओं ने कभी हिन्दी को बढ़ावा नहीं दिया। हिन्दी राजभाषा है, इसके बाद जब उसका इतना बुरा हाल हो सकता है तो फर और भाषाओं के वकास की चर्चा करना ही व्यर्थ है। हिन्दी सप्ताह सभी सरकारी

कार्यालयों में मनाना होता है। आज कार्यालयों के बाहर हिन्दी सप्ताह में भी सरकारी कर्मचारी हिन्दी में काम करने के लए तैयार नहीं होते हैं। इससे ज्यादा दुर्गति इस भाषा की क्या हो सकती है?

हिन्दी की दुगति का एक और सबसे बड़ा कारण आधुनिक शक्षा नीति है। आज प्रत्येक अमीर व गरीब व्यक्ति हिन्दी माध्यम से अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहता है। उनके मन में अंग्रेजी इतने अन्दर तक बैठ चुकी है क वे समझते है क अंग्रेजी के बिना तो पढ़ना ही व्यर्थ है। इसके कारण आने वाली पीढ़ी अंग्रेजी के प्रति तेजी से बढ़ रही है। यह एक भयंकर समस्या है, क्यों क अंग्रेजी से पला-बढ़ा बच्चा भारतीय संस्कृति और भारतीय परम्पराओं के लुप्त होने का खतरा बढ़ गया है। आज भारत के एक गाॅव कसान का बेटा भी हिन्दी भाषा में लखे अंकों को न तो बोल पाता है और न ही समझ पाता है। इसके पीछे कारण हिन्दी का घटता वर्चस्व और अंग्रेजी का बढ़ता महत्त्व है।

आज भारतीय व्यक्ति हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करता है और अंग्रेजी बोलने में वह गर्व महसूस करता है। इसके पीछे सरकार की नीतियाॅं, शक्षा और पश्चिमी सभ्यता है। आज तक पीछे की सरकारों ने हिन्दी को दबाने का काम कया है। अगर मोदी सरकार हिन्दी को बढ़ाने का काम करती है तो इसमें इतने वरोध की क्या आवश्यकता ? अपने ही हिन्दी भाषी बहुल देश में अगर हिन्दी का वकास नहीं होगा तो फर कहाॅं होगा? अंग्रेजी के उत्थान के लए अनेक वक सत देश लगे हुए है पर क्या भारत की हिन्दी भाषा का वकास कोई और देश करेगा?

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 2011 से सी-सेट का प्रश्न पत्र लगाया गया। इस प्रश्न पत्र के आते ही हिन्दी भाषी प्रान्तों के छात्र, कृषक परिवार के छात्र अर्थात् जो भी कला वर्ग से पढ़ा हुआ छात्र है, वह इस परीक्षा से इस प्रश्नपत्र ने बाहर कर दिया, क्यों क इस प्रश्नपत्र का वषय ही ऐसा बनाया है क इसमें हिन्दी पृष्ठभू म के छात्र आगे जा ही न सकें। यह तथ्य लगातार तीन वर्षों से आयोजित हुई परीक्षा के परिणामों से स्पष्ट है। जहाॅं पहले हिन्दी पृष्ठभू म के छात्र सर्वोच्च अंक प्राप्त करते थे। आज वे प्रारम्भिक सौ छात्रों में भी नहीं आ पा रहे है। इससे सैंकड़ों हिन्दी भाषी छात्र आई.ए.एस., आई.पी.एस. और आई.एफ.एस. बनने से चूक रहे हैं। वर्ष 2011 में प्रारम्भिक परीक्षा में 9324 लोग अंग्रेजी माध्यम से उत्तीर्ण हुए, जब क हिन्दी भाषी छात्रों का वरोध करना बिल्कुल उ चत है। क्यों क वे इस परीक्षा के पहले चरण में ही बाहर हो रहे है। यह सं वधान में उल्लि खत सामाजिक न्याय की भावना के अतिरिक्त मूलभूत अ धकारों अनुच्छेद 14 यानी समानता का अ धकार को राज्य के अधीन कसी पद पर नियोजन था नियुक्ति से सम्बन्धित वषयों अवसर की समानता की गारष्टी का भी उल्लंघन है।

2011 में अलघ स मति की अनुशंसा के आधार पर संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में व्यापक परिवर्तन कये गये थे पर इस स मति ने अंग्रेजी को शा मल करने की कोई बात नहीं कही थी फर भी बिना कसी आधार के अंगे्रजी को शा मल कर दिया। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण अंग्रेजी का है। आजादी के बाद 1979 तक तो अंगे्रजी के माध्यम से ही यह परीक्षा होती थी। अनेक प्रयासों के बाद 1979 के बाद भारतीय भाषाओं के माध्यम से उच्च पदों पर पहुॅंच सकें है। 2011 में क पल सब्बल की कृपा से यह सारी योजना बनी

क कैसे हिन्दी भा षयों के वर्चस्व को कम कया जाये। यह दुर्भाग्यपूर्ण है क ये सारे नीतिनिर्माता नेता एवं उच्चपदस्थ अ धकारी वदेशों में रहकर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ते हैं, और फर उसी वदेशी शक्षानीति को भारत में लागू करते हैं। आज ऐसे लोगों के कारण ही हमारी भारतीय संस्कृति और भारतीय परम्परायें लुप्त हो रही हैं। सबसे बड़ा आन्तरिक खतरा आज हमें इन्हीं लोगों से है। आज अगर हिन्दी भाषी छात्र मोदी सरकार से न्याय की मा◌ॅंग करती है तो गलत क्या है? हिन्दी समर्थक सरकार है तो निश्चित हिन्दी भाषी छात्रों की वजय है और होनी भी चाहिए।

1 अगस्त से 8 अगस्त तक संस्कृत सप्ताह प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस वर्ष मोदी सरकार ने सभी सी.बी.एस.सी. वद्यालयों में पत्र भेजकर संस्कृत सप्ताह मनाने का अनुग्रह कया है। इस पर देश में कही पर भी वरोध नहीं हुआ है, ले कन त मलनाडू में जयल लता और करुणानि ध ने इसे अन्य भारतीय भाषाओं के साथ भेद-भाव की राजनीति बताया है। इन नेताओं से मैं पूछना चाहता हू◌ॅं क जब वगत सरकार अंग्रेजी को हर जगह बसा रही थी, तब करुणानि ध कहा◌ॅं गये थे? सुब्रह्मण्यम स्वामी ने इनको बहुत अच्छा उत्तर दिया क बोलने से पहले अपने नाम बदल लो, क्यों क जयल लता और करुणानि ध शुध्द संस्कृत के नाम है। जिस भाषा का ये नेता समर्थन कर रहे हैं। वह त मल भाषा भी संस्कृत पर ही आ श्रत है अगर त मल भाषा को वे सुर क्षत रखना चाहते है तो उससे पहले संस्कृत की सुरक्षा करनी पडेगी। यह प्रयास निश्चित ही संस्कृत भाषा के लए संजीवनी का काम करेगा, क्यों क गत दिवसों में स्वयं गृहमन्त्री ने सदन में यह बताया क संस्कृत भाषा सब भाषाओं की जननी है। इसके उच्चारण को समस्त वश्व ने वैज्ञानिक माना है। इसका वकास होना चाहिए। सरकार का यह प्रयास नितान्त स्तुत्य है।

प्रय पाठकगण! हिन्दी और संस्कृत भाषा आज तक उपेक्षा का परिणाम यह हो रहा है क लोग हिन्दी भाषी व संस्कृतभाषी को हीन समझ रहे हैं। अंग्रेजी भाषी लोग अपने को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझ रहे हैं। चारों तरफ अंग्रेजी का ऐसा आतंक मच गया है क लोग यह समझने लग गये है क अंग्रेजी के वना तो जीवन व्यर्थ है। यह भावना हमें समाज से हटानी होगी। आज सरकार यदि संस्कृत और हिन्दी के संरक्षण का प्रयास करती है तो हमें इसका स्वागत करना चाहिए। मेरा मानना है क जो भी वास्त वक देशभक्त हैं, जिसके अन्दर देशहित की भावना है, वह व्यक्ति कभी भी हिन्दी और संस्कृत का वरोध करेगा ही नहीं । भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अगर हम जी वत रखना चाहते हैं तो हमें निश्चित ही इन दोनों भाषाओं की रक्षा करनी चाहिए। इन्हीं भाषाओं के बाद अन्य भाषाओं की रक्षा सम्भव है। शुध्द हिन्दी पूर्णतः संस्कृत पर आधारित है। संस्कृत की सुरक्षा में सभी की सुरक्षा है। इसी लए हम सबको अपने अपने प्रयासों से इन भाषाओं की रक्षा करनी चाहिए। हमारा एक अल्प प्रयास भी इन भाषाओं के लए संजीवनी का काम करेगा। आप सबके वचारों की प्रतीक्षा में…….

गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

नास्तिकों के दावों का खण्डन

JULY 12, 2014 LEAVE A COMMENT

– ओउम् –

नमस्ते प्रय पाठकों, नास्तिक मत भी एक व चत्र मत है जो इस सृष्टि के र चयता और पालनहार यानि ईश्वर को स्वीकार नहीं करते और उसे केवल आस्तिकों की कल्पना मात्र बताते हैं। परंतु वे यह भूल जाते हैं क हर चीज के पीछे एक कारण होता है। बिना कर्ता कोई क्रया नहीं हो सकती। यही सृष्टि के लये भी लागू होता है।

ईश्वर ही इस सृष्टि के उत्पन्न होने का कारण है। परंतु यह बात नास्तिक स्वीकार नहीं करते और तरह-तरह के तर्क देते हैं। अपने मत के समर्थन में कतने सार्थक हैं उनके तर्क आइये देखते हैं।

हम यहाँ नास्तिकों के दावों का खण्डन करेंगे। मह र्ष दयानन्द ने अपनी पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" में नास्तिकों के तर्कों का खण्डन पहले ही कर दिया है। हम नास्तिकों द्वारा हाल ही में कये दावों का खण्डन करेंगे।

नास्तिकों के दावे और उनकी समीक्षा:

दावा – नास्तिकों के अनुसार ईश्वर हमारा र चयता नहीं है क्यों क ईश्वर हमें पैदा नहीं करता अ पतु हमारे माता पता के समागम से हम जन्म लेते हैं। इस लये ईश्वर हमारा र चयता नहीं है।

समीक्षा – केवल इतना कह देने से ईश्वर की सत्ता और उसका अस्तित्व अस्वीकार कर देना मूर्खता होगी। माता पता के समागम से बच्चा पैदा होता है क्यों क ईश्वर ने ऐसा ही वधान दिया है। एक माता को यह नहीं पता होता की उसके गर्भ में पल रहा शशु लड़का है या लड़की, न ही उसे यह पता होता है क उस शशु के शरीर में कतनी हड् डयाँ हैं। न ही उन्हें यह पता होता है क बच्चा पूरी तरह स्वस्थ है या नहीं अर्थात बच्चे को कोई आन्तरिक रोग तो नहीं है? यदि माता पता ही सब कुछ जानने वाले होते तो वे बच्चे भी अपनी मर्जी से पैदा करते अर्थात लड़का चाहते तो लड़का और लड़की चाहते तो लड़की। इससे पता चलता है क माता पता का समागम केवल शशु उत्पन्न करता है। शशु कौन होगा और कैसा होगा यह उनको नहीं पता होता। केवल ईश्वर ही यह बात जानता है और मनुष्य नहीं, क्यों क ईश्वर ने उन्हें ऐसा बनाया है।

दावा – कुछ बच्चे बीमार भी पैदा होते हैं और कुछ पैदा होती ही मर भी जाते हैं। कुछ को पैदा होती ही ऐसे रोग भी लग जाते हैं जो जिंदगी भर उनके साथ रहते हैं। यदि ईश्वर है तो उसने इन बच्चों को ऐसा क्यों बनाया अर्थात इन्हें रोग क्यों दिये इनको स्वस्थ पैदा क्यों नहीं कया?

समीक्षा – क्यों क ईश्वर की सत्ता में कर्मफल का वधान है। ये बच्चे भी उसी का परिणाम हैं। और बा क उसके माता पता पर भी निर्भर करता है क उनका आचरण कैसा है। माता पता यदि उच्च आचरण वाले होंगे तो उनकी सन्तान भी स्वस्थ पैदा होगी। यदि माता पता का आचारण नीच होगा तो सन्तान भी नीच और वकारों वाली पैदा होगी। और बा क उस शशु के पूर्वजन्म के कर्मों पर भी निर्भर करता है। ईश्वर कसी के साथ अन्याय नहीं करता। जैसे जिसके कर्म होंगे वैसा ही उसे फल मलेगा, चाहे शशु हो या चाहे व्यस्क। यही कर्मफल का सद्धांत है।

दावा – ईश्वर की बनाई यह सृष्टि परिशुद्ध अर्थात परफेक्ट नहीं है क्यों क जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं वह परफेक्ट नहीं है। इसमें कहीं समुद्र है, कहीं रे गस्तान, कहीं द्वीप, कहीं ज्वालामुखी और कहीं पर्वत। अगर ईश्वर परिशुद्ध होता तो अपनी पृथ्वी को भी वैसा ही

बनाता परंतु ऐसा नहीं है। पृथ्वी परफेक्ट नहीं है और इससे यह पता चलता है क ईश्वर भी परफेक्ट नहीं है।

समीक्षा – च लये आपने माना तो क ईश्वर है। अब वह परिशुद्ध है या नहीं इसका निर्णय भी हो जायेगा। पृथ्वी पर व भन्न जगह व भन्न चीज़े ईश्वर ने दी हैं। तो क्या इससे यह मान लया जाये क पृथ्वी परफेक्ट नहीं है? कदा प नहीं। ईश्वर ने कसी कारण से ही इसको ऐसा रूप दिया है। यदि वह इसको पूर्णतः गोल और चकनी बना देता, तो न तो यहाँ समुद्र होते जिसके कारण वर्षा न होती और वर्षा न होती तो खेती न हो पाती, और अगर खेती न हो पाती तो मनुष्य को भोजन न मलता और वह भूखा मर जाता। यदि पृथ्वी पर ज्वालामुखी न होते तो पृथ्वी के अंदर का लावा धरती को क्षती पहुँचाकर बाहर निकलता जिससे मानव और जीव दोनों की हानि होती। अब इनको पृथ्वी पर बनाने में ईश्वर की परफेक्टनेस न कहें तो और क्या कहें!? जिसने सभी जीव, जन्तु, वनस्पति का ध्यान रखते हुए इस पृथ्वी को रचा। केवल मूर्ख ही इस बात को अब अस्वीकार करेंगे।

दावा – हम केवल ब्रह्म अर्थात चेतना को सत्य मानते हैं और यह जगत केवल मथ्या है। इसका कोई र चयता नहीं है। जो हम देखते हैं अपने आस पास वह केवल हमारी चेतना द्वारा कया गया एक चत्रण है।

समीक्षा – यदि ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत केवल मथ्या तब इस जगत में जीव दुःख, सुख, क्रोध आदि भौतिक भाव क्यों अनुभव करता है? क्या हमारी चेतना केवल सुख का संसार ही नहीं बना सकती थी? यदि यह जगत मथ्या है तो मनुष्य के अतिरिक्त दूसरी जीवात्मा (जानवर, जन्तु) का इस जगत में क्या प्रयोजन है? यह जगत को मथ्या मानना केवल मूर्खता है। ईश्वर ने यह जगत कसी प्रयोजन से रचा है ता क जीवात्मा ईश्वर द्वारा दिये वेदों को जानकर, उनका अनुसरण कर मोक्ष को प्राप्त हो सके। जैसे एक इंजीनियर ही अपने द्वारा बनाई गयी प्रणाली को भली भाँति जानता है, उसी प्रकार केवल ईश्वर ही इस सृष्टि को जानता है।

वेदों में नास्तिकता के वषय में कहा है:

अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम् |स धारयत्पृ थवी पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार || ऋग **2.15.2**

कोई नास्तिकता को स्वीकार कर यदि ऐसे कहें क जो ये लोक परस्पर के आकर्षण से स्थिर हैं इनका कोई धारण करने वा रचनेवाला नहीं हैं उनके प्रति जन ऐसा समाधान देवें क यदि सूर्यादि लोकों के आकर्षण से ही सब लोक स्थिति पाते हैं तो सृष्टि के आगे कुछ नहीं है वहाँ के लोकों के आकर्षण के बिना आकर्षण होना कैसे सम्भव है **?** इससे सर्वव्यापक परमेश्वर की आकर्षण शक्ति से ही सूर्यादि लोक अपने रूप और अपनी क्रयाओं को धारण करते हैं |ईश्वर के इन उक्त कर्मों को देख धन्यवादों से ईश्वर की प्रशंसा सर्वदा करनी चाहिए ||

आगे ईश्वर उपदेश करता है:

असृग्र मन्द्र ते गरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम॥ (ऋग्वेद **1.9.4)**

जिस ईश्वर ने प्रकाश कये हुए वेदों से जाने अपने-अपने स्वभाव, गुण और कर्म प्रकट कये हैं, वैसे ही वे सब लोगों को जानने योग्य हैं, क्यों क ईश्वर के सत्य स्वभाव के साथ अनन्तगुण और कर्म हैं, उनको हम अल्पज्ञ लोग अपने सामर्थ्य से जानने को समर्थ नहीं हो सकते। तथा जैसे हम लोग अपने-अपने स्वभाव, गुण और कर्मों को जानते हैं, वैसे औरों को उनका यथावत जानना कठिन होता है, इसी प्रकार सब वद्वान् मनुष्यों को वेदवाणी के बिना ईश्वर आदि पदार्थों को यथावत् जानना कठिन होता है। इस लए प्रयत्न से वेदों को जानके

उनके द्वारा सब पदार्थों से उपकार लेना तथा उसी ईश्वर को अपना इष्टदेव और पालन करनेहारा मानना चाहिए।

जड़ पदार्थों के वषय में लखा है:

यस्माद्दते न सध्यति यज्ञो वपश्चितश्चन । स धीनां योग मन्वति॥ (ऋग्वेद **1.18.7**)

व्यापक ईश्वर सब में रहनेवाले और व्याप्त जगत् का नित्य सम्बन्ध है वही सब संसार को रचकर तथा धारण करके सब की बुद् ध और कर्मों को अच्छी प्रकार जानकर सब प्रा णयों के लये उनके शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार सुख-दुःखरूप फल देता है। कभी ईश्वर को छोड़ के अपने आप स्वभाव मात्र से सद्ध होनेवाला, अर्थात् जिस का कोई स्वामी न हो ऐसा संसार नहीं हो सकता क्यों क जड़ पदार्थों के अचेतन होने से यथायोग्य नियम के साथ उत्पन्न होने की योग्यता कभी नहीं होती॥

अब पाठक गण स्वंय निर्णय लेंवे और सत्य को स्वीकार और असत्य का परित्याग करें। और सदा उस परम पता परमात्मा का ही गुणगान करें जिसने हमें यह अमूल्य जीवन दिया है।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् |स दाधार पृ थवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय ह वषा वधेम || (यजुर्वेद **13.4**)

हे मनुष्यों! तुमको योग्य है क सब प्र सद्ध सृष्टि के रचने से प्रथम परमेश्वर ही वद्यमान था, जीव गाढ़ा निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत का कारण अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एकरस स्थिर था, जिसने सब जगत् को रचके धारण कया और अन्त्य समय में प्रलय करता है, उसी परमात्मा को उपासना के योग्य मानो ||

अम्बेडकर की वेदों के वषय में भ्रान्ति

JULY 11, 2014 LEAVE A COMMENT

मत्रो अम्बेडकर और उनके अनुयायी वेदों के कुप्रचार में लगे रहते है ,,ये लोग पुर्वग्रस्त हो कर वेदों के वास्त वक स्वरुप को पहचान ने का प्रयास न कर उसके कुप्रचार और आक्षेप लगाते रहते है …

अम्बेडकर जी की पुस्तक riddle in hinduism में वेदों पर लगाये गए आरोप का खंडन पछली इस पोस्ट पर हमारे इस ब्लॉग पर कया गया था..http://nastikwadkhandan.blogspot.in/

अब यहाँ अम्बेडकर की बुद्ध और उनका धम्म नामक पुस्तक में वेदों पर लगाये आक्षेप या अम्बेडकर के वेदों के बारे में फैलाये गये भ्रम का खंडन कया जा रहा है :-

सबसे पहले वेदों के वषय में अम्बेडकर ने कया लखा वो देखे :-

अम्बेडकर जी वेदों को ईश्वरीय नही मानते है बल्कि ऋ ष कृत मानते है उनकी इस बात का जवाब पछली पोस्ट में दिया जा चूका है ..ले कन यहाँ भी थोडा सा दे देते है :-"ऋ षयों मन्त्रद्रष्टारः।ऋ षदर्शनात् स्तोमन् ददर्शेत्यौपन्यवः।तद् यदेना स्तपस्यस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भवभ्यानर्षत् तद्दषीणाम् ऋ षत्व मति वज्ञायते।-निरुक्त २.११.

ऋ ष वेदमंत्रो के अर्थद्रष्टा होते है,ओप्मन्व्य आचार्य ने भी कहा है क वेदों में प्रयुक्त स्तुति इत्यादि वषयक मंत्रो के वास्त वक अर्थ का साक्षात्कार करने वालो को ऋ ष के नाम से

प्रकाश जाता है ,,तपस्या व ध्यान करते हुए जो इनको स्वयंभु नित्य वेद के अर्थ का भान हुआ इस लए ऋ ष कहलाय ...

अत:यहाँ स्पष्ट कहा है ऋ ष मन्त्र कर्ता नही बल्कि अर्थ द्रष्टा थे ...

कुछ नास्तिक वेदों में प्रजापति,भरद्वाज, वश्वा मत्र,आदि नाम दिखा कर इन्हें ऋ ष बताते है और इन्हें मन्त्र कर्ता ,,ले कन वास्तव में ये कसी व्यक्ति वशेष के नाम नही है ,,बल्कि यो गक शब्द है जिनके वास्त वक अर्थ शतपत आदि ब्राह्मण ग्रंथो में उद्द्रत कये है..इन्ही नामो के आदार पर ऋ षयों ने अपने उपा ध स्वरुप नाम रखे ..जैसे भरद्वाज नाम वेदों के भारद्वाज नाम से रखा गया .. फर उनके पुत्र ने भारद्वाज नाम रखा...

शतपत में भारद्वाज ,व शष्ट आदि नामो के अर्थ :-

" प्राणों वै व शष्ट ऋ ष (शतपत ८ १/१/६)"

व शष्ट का अर्थ प्राण है ,,

"मनो वै भारद्वाज ऋ ष" (शतपत ८/१/१/९)

भारद्वाज का अर्थ मन है ,,

"श्रोत्रं वै वश्वा मत्र ऋ ष: "(शतपत ८/१/२/६)

वश्वा मत्र का अर्थ कान है ..

"चक्षुर्वे जमदाग्नि:" (शतपत १३/२/२/४)

जमदाग्नि का अर्थ चक्षु है ..

"प्राणों वै अंगीरा:"(शतपत ६/२/२/८)

अं गरा का अर्थ प्राण है ..

"वाक् वै वश्वा मत्र ऋ ष: " (शतपत ८/१/२/९)

वश्वा मत्र का अर्थ वाणी है ..

अत: दिय गये नाम ऋ षयों के नही है ...

अम्बेडकर लखते है क मन्त्र देवताओ की प्राथना के अतिरिक्त कुछ नही है ।

अम्बेडकर जी को वैदिक दर्शन का शून्य ज्ञान था ,,वेदों में अग्नि सोम आदि नामो द्वारा ईश्वर की उपासना ओर देवताओ के द्वारा वज्ञानं और प्रक्रति के रहस्य उजागर कये है .. अम्बेडकर देवताओ को कोई व्यक्ति समझ बेठे है शायद जब क देवता प्राक्रतिक उर्जाये ओर प्राक्रतिक जड़ वस्तु वशेष है ..

मनु स्म्रति के एक श्लोक से अग्नि,इंद्र आदि नामो से परमात्मा का ग्रहण होता है :-

"प्रशा सतारं सर्वेषामणीयांसमणोर प ।

रुक्भाम स्वपनधीगम्य वद्यात्तं पुरुषम् परम् ।।

एतमग्नि वदन्त्येके मनुमन्ये प्रजापतिम् ।

इन्द्र्मेके परे प्राणमपरे ब्रहम शाश्वतम् ।।(मनु॰ १२/१२२,१२३)

स्वप्रकाश होने से अग्नि , वज्ञानं स्वरूप होने से मनु ,सब का पालन करने से प्रजापति,और परम ऐश्वर्यवान होने से इंद्र ,सब का जीवनमूल होने से प्राण और निरंतर व्यापक होने से परमात्मा का नाम ब्रहमा है ..

अत स्पष्ट है क इंद्र,प्रजापति नामो से ईश्वर की उपासना की है ..

वेदों में वैज्ञानिक रहस्य के बारे में जान्ने के लए निम्न लंक देखे :-

http://www.vaidicscience.com/video.html

अम्बेडकर जी का कहना है क वेदों में दर्शन नही है ,,लगता है क उन्होंने वेदों के अंग्रेजी भाष्य को ही प्रमाण स्वरुप प्रस्तुत कया जब क वेदों में अनेक मंत्रो में जीवन ,ईश्वर ,अंहिसा ,योग,आयुर्वेद , वज्ञान द्वारा हर सत्य वद्याओ का दार्शनिक व्याख्या की है जिसके बारे में

आगे के लेखो में स्पष्ट कया जाएगा ..
इसके अलावा वेदों में राष्ट्र ,गुरु ,अति थ आदि के प्रति सम्मान करने का भी उपदेश है ..
बा क पुत्र ,पुत्री ,पत्नी ,माँ , पता , शक्षक . वद्यारथी आदि के कर्तव्यो का भी उलेख है ...
इससे पता चलता है क अम्बेडकर जी ने वेदों को दुर्भावना और कुंठित मान सकता के तहत देखा था ,,,
अम्बेडकर जी वेदों पर आरोप करते है क इसमें देवताओ को शराब और मॉस भेट का उलेख है ,,इससे लगता है क अम्बेडकर जी maxmuller के भाष्य के कारण सत्य न जान सके और अन्धकार में ही भटकते रहे ..
वेदों में सोम नाम से एक लेख हमने इसी ब्लॉग पर डाल उनकी इस बात का खंडन कया था ..अब मासाहार वाली बात को देखे तो अम्बेडकर जी ने यहाँ कोई संधर्भ नही दिया नही तो उन बातो का खंडन प्रस्तुत कया जाता ..ले कन वेदों में अंहिंसा के उपदेशो का कुछ उलेख यहाँ कया जा रहा है :-
“कृत्यामपसुव “(यजु॰ ३५ /११)”
हिंसा को तू छोड़ दे ..
“मा हिंसीः पुरुष जगत”(यजु॰ १६ /३)”
तू मानव और मानव के अतिरिक्त अन्य की हिंसा न कर ..
मा हिंसीः तन्वा प्रजाः (यजु॰ १२ /३२)
है मनुष्य तू देह से कसी प्राणी की हिंसा न कर ..
अत स्पष्ट है क वेदों में अंहिसा का उपदेश है तो ऐसे में मॉस भेट जो हिंसा बिना प्राप्त नही हो सकती है का सवाल ही नही उठता है ..यदि यज्ञ में हिंसा मानते है तो उस पर अलग से पोस्ट के द्वारा स्पष्ट कर दिया जाएगा ..
अम्बेडकर अपनी इसी पुस्तक में कहते है क वेदों में मानवता का उपदेश नही है इसी कारण बुद्ध ने वेदों को मान्यता नही दी थी ।
ले कन यहाँ भी अम्बेडकर की अज्ञानता ही है वेदों में कई जगह मानवता का उपदेश है ,,दे खये वेदों का ही यही वाक्य है “आर्य बनो ” और मनुर्भव मतलब मनुष्य बनो “..अर्थात वेद मनुष्य को श्रेष्ट बनने का उपदेश देता है ।
“जन वभ्रति बहुधा ववाचसं नाना धर्माणं प्र थवी यथोकसम् ।
सहस्त्रं धारा द्र वणस्य में दुधं ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरंती ।।(अर्थव॰ १२/१/४)”
 वशेष वचन सामर्थ वाले ,अनेक प्रकार के कर्तव्य करने वाले व्यक्तियों को मल जुल कर रहना चाहिए ।तब प्रथ्वी सभी को धन धान से पूरित करती है ।अर्थात मलजुल कर रहने पर ही प्रथ्वी पर धन धान सुख का उ चत दोहन कर सकते है ..जैसे की गाये से दुध का ..
अत स्पष्ट है क वेद मानवता का ही उपदेश देते है ..
अब अम्बेडकर जी के अनुसार बुद्ध ने वेदों को अमान्य माना तो लगता है क अम्बेडकर जी ने ठंग से बौद्ध साहित्य भी नही पढ़े थे ..
इसके बारे में भी आगे पोस्ट की जायेगी ..
दे खये सुतनिपात में बुद्ध ने क्या कहा है :-
“ वद्वा च वेदेही समेच्च धम्मम् ।
न उच्चावचम् गच्छति भूरिपञ्चो ।।(सुतनिपात २९२)”
जो वद्वान वेदों से धर्म का ज्ञान प्राप्त करता है ,वह कभी वच लत नही होता है ।

उपरोक्त सभी प्रमाणों से स्पष्ट है की अम्बेडकर जी वेदों पर अनर्गल और कुंठित ,दुर्भावना ,आक्रो शत मान सकता के कारण आरोप करते थे ..शायद वे ऐसा जानबूझ कर करते थे ..

अम्बेडकर के वेदों पर आक्षेप

JULY 10, 2014 1 COMMENT

भीम राव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक "सनातन धर्म में पहे लयाँ" (Riddles In Hinduism) में वेदों पर अनर्गल आरोप लगाये हैं और अपनी अज्ञानता का परिचय दिया है। अब चुं क भीम राव को न तो वैदिक संस्कृत का ज्ञान था और न ही उन्होनें कभी आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय कया था, इस लये उनके द्वारा लगाये गये अक्षेपों से हम अचं भत नहीं हैं। अम्बेडकर की ब्राह्मण वरोधी वचारधारा उनकी पुस्तक में साफ झलकती है।
इसी वचारधारा का स्मरण करते हुए उन्होनें भारतवर्ष में फैली हर कुरीति का कारण भी ब्राह्मणों को बताया है और वेदों को भी उन्हीं की रचना बताया है। अब इसको अज्ञानता न कहें तो और क्या कहें? अब देखते हैं अम्बेडकर द्वारा लगाये अक्षेप और वे कतने सत्य हैं। अम्बेडकर के अनुसार वेद ईश्वरीय वाणी नहीं हैं अ पतु इंसाने मुख्यतः ब्राह्मणों द्वारा र चत हैं। इसके समर्थन में उन्होनें तथाक थत वदेशी वद्वानों के तर्क अपनी पुस्तक में दिए हैं और वेदों पर भाष्य भी इन्हीं तथाक थत वद्वानों का प्रयोग कया है। मुख्यतः मैक्स मुलर का वेद भाष्य।
उनके इन प्रमाणों में सत्यता का अंश भर भी नहीं है। मैक्स मुलर, जिसका भाष्य अपनी पुस्तक में अम्बेडकर प्रयोग कया है, वही मैक्स मुलर वैदिक संस्कृत का कोई वद्वान नहीं था। उसने वेदों का भाष्य केवल संस्कृत-अंग्रेजी के शब्दकोश की सहायता से कया था। अब चुं क उसने न तो निरुक्त, न ही निघण्टु और न ही अष्टाध्यायी का अध्यन कया था, उसके वेद भाष्य में अनर्गल और अश्लील बातें भरी पड़ी हैं। संस्कृत के शून्य ज्ञान के कारण ही उसके वेद भाष्य जला देने योग्य हैं।
अब बात आती है क वेद आ खर कसने लखे? उत्तर – ईश्वर ने वेदों का ज्ञान चार ऋ षयों के ह्रदय में उतारा। वे चार ऋ ष थे – अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा। वेदों की भाषा शैली अलंकारित है और कसी भी मनुष्य का इस प्रकार की भाषा शैली प्रयोग कर मंत्र उत्पन्न करना कदा प सम्भव नहीं है। इसी कारण वेद ईश्वरीय वाणी हैं।
यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः |ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्य्याय च |स्वाय चारणाय च प्रयो देवानां द क्षणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु|| **(यजुर्वेद 26.2)**
परमात्मा सब मनुष्यों के प्रति इस उपदेश को करता है क यह चारों वेदरूप कल्याणकारिणी वाणी सब मनुष्यों के हित के लये मैनें उपदेश की है**,** इस में कसी को अन धकार नहीं है**,** जैसे मैं पक्षपात को छोड़ के सब मनुष्यों में वर्त्तमान हुआ पयारा हूँ, वैसे आप भी होओ |ऐसे करने से तुम्हारे सब काम सद्ध होगें ||
डॉ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक में दर्शन ग्रंथों से भी प्रमाण दिये हैं जिसमें उन्होनें वेदों में आंतरिक वरोधाभास की बात कही है। अम्बेडकर के अनुसार मह र्ष गौतम कृत न्याय दर्शन के 57 वे सुत्र में वेदों में आंतरिक वरोधाभास और बली का वर्णन कया गया है। इसी प्रकार मह र्ष जै मनी कृत ममांसा दर्शन के पहले अध्याय के सुत्र 28 और 32 में वेदों में जी वत मनुष्य का उल्लेख कया गया है। ऐसा अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक में वर्णन कया है परंतु ये प्रमाण कतने सत्य हैं आइये देखते हैं।

पहले हम न्याय दर्शन के सुत्र को देखते हैं। मह षे गौतम उसमें लखते हैं:
तदप्रामाण्यमनृतव्याघातपुनरुक्तदोषेभ्यः |58|
(पूर्वपक्ष) मथ्यात्व, व्याघात और पुनरुक्तिदोष के कारण वेदरूप शब्द प्रमाण नहीं है।
न कर्मकर्त साधनवैगुण्यात् |59|
(उत्तर) वेदों में पूर्व पक्षी द्वारा क थत अनृत दोष नहीं है क्यों क कर्म, कर्ता तथा साधन में अपूर्णता होने से वहाँ फलादर्शन है।
अभ्युपेत्य कालभेदे दोषवचनात् |60|
स्वीकार करके पुनः व ध वरुद्ध हवन करने वाले को उक्त दोष कहने से व्याघात दोष भी नहीं है।
अनुवादोपपत्तेश्च |61|
सार्थक आवृ त्तरूप अनुवाद होने से वेद में पुनरुक्ति दोष भी नहीं है।
अतः इन प्रमाणों से सद्ध होता है क वेदों में कसी प्रकार का कोई दोष नहीं है और अम्बेडकर के न्याय दर्शन पर अक्षेप पूर्णतः असत्य हैं।
अब ममांसा दर्शन के सुत्र देखते हैं जिन पर अम्बेडकर ने अक्षेप लगाया है:
अ वरुद्धं परम् |28|
शुभ कर्मों के अनुष्ठान से सुख और अशुभ कर्मों के करने से दुःख होता है।
ऊहः |29|
तर्क से यह भी सद्ध होता है क वेदों का पठन पाठन अर्थ सहित होना चाहिये।
अ प वा कर्तृसामान्यात् प्रमाणानुमानं स्यात् |30|
इतरा के पुत्र महिदास आदि के रचे हुए ब्राह्मण ग्रंथ वेदानुकुल होने से प्रमा णक हो सकते हैं।
हेतुदर्शनाच्च |31|
ऋ ष प्रणीत और वेदों की व्याख्या होने के कारण ब्राह्मण ग्रंथ परतः प्रमाण हैं।
अ प वा कारणाग्रहणे प्रयुक्तानि प्रतीयेरन् |32|
यदि ब्राह्मण ग्रंथ स्वतः प्रमाण होते तो वेदरूप कारण के बिना वे बिना वेद स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त प्रतीत होने चाहिये थे, परंतु ऐसा नहीं है।
अतः इन प्रमाणों से सद्ध होता है क वेदों में कहीं भी कसी जी वत मनुष्य का उल्लेख नहीं कया गया है। अतः यह अक्षेप भी अम्बेडकर का असत्य साबित होता है।
प्रय पाठकों, अम्बेडकर ने न तो कभी आर्ष ग्रंथ पढ़े थे और न ही उन्हें वैदिक संस्कृत का कोई भी ज्ञान था। अपनी पुस्तक में केवल उन्होनें कुछ तथाक थत वदेशी वद्वानों के तर्क रखे थे जो क पूर्णतः असत्य हैं। अम्बेडकर ने ऋग्वेद में आये यम यमी संवाद पर भी अनर्गल आरोप लगाये हैं जिनका खण्डन हम यहाँ कर चुके हैं: यम यमी संवाद के वषय में शंका समाधान
अब पाठक गण स्वंय निर्णय लेवें और असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करें और हमेशा याद रखें:
वेदेन रूपे व्य पबत्सुतासुतौ प्रजापतिः| ऋतेन सत्य मन्द्रियं वपानम्
शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मदं पयोऽमृतं मधु || (यजुर्वेद 19.78)

वेदों को जाननेवाले ही धर्माधर्म के जानने तथा धर्म के आचरण और अधर्म के त्याग से सुखी होने को समर्थ होते हैं ‖

क्या बुद्ध तर्कवादी ओर जिज्ञासु थे

JULY 2, 2014 3 COMMENTS

अम्बेडकरवादी दावा :-

बुद्ध तर्क वादी ओर जिज्ञासा को शांत करने वाले व्यक्ति थे….अपने शष्यों को भी तर्क करने ओर जिज्ञासु बनने का उपदेश देते थे …

दावे का भंडाफोड़ :-

एक समय मलयूक्ष्य पुत्त नामक कसी व्यक्ति ने महात्मा गौत्तम बुध्द से प्रश्न कया-
भगवन क्या यह संसार अनादी व अन्नत है? यदि नही तो इसकी उत्प त्त कस प्रकार हुई?
ले कन बुध्द ने उत्तर दिया – है मलयूक्ष्य पुत्त तुम आओ ओर मेरे शष्य बन जाऔ,मै तुमको इस बात की शक्षा दुंगा क संसार नित्य है या नही|"
मलयूक्ष्य पुत्त ने कहा " महाराज आपने ऐसा नही कहा|"(क शष्य बनने पर ही शंका दूर करोगे)
तो बुध्द बोले- तो फर इस प्रश्न को पूछने का मुझसे साहस न करे| -(म झम्म निकाय कुल मलूक्य वाद)
इससे निम्न बात स्पष्ट है क बुध्द का सृष्टि ज्ञान शुन्य था …उनका मकसद केवल अपने अनुयायी बनाना था ..इसके अलावा पशु सुत्त ओर महा सोह सुत्त से पता चलता है क वे अपने शष्यो को भी जिज्ञासा प्रकट करने का उत्साह नही देते थे..
एक ओर बुध्दवादी कहते है क बौध्द मत तर्को को प्राथ मकता देता है ले कन यहा मलुक्य को बुध्द खुद चुप कर रहे है|
अत स्पष्ट है की बुध तर्कवादी ओर जिज्ञासा शांत करने वाले व्यक्ति नही थे ….

साईं भक्ति अर्थात लाश की उपासना !

JULY 2, 2014 5 COMMENTS

जिस दिन ज्योतिर्पीठ के शकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती ने हिन्दुओं द्वारा शीरडी के फ़क़ीर " साईं बाबा " की उपासना के बारे में आप त्त उठाई है .तबसे मी डया और साईं के भक्तों ने स्वरूपानंद के खलाफ एक जिहाद सी छेड़ राखी है.. कुछ लोग साइन भक्ति को निजी और आस्था या श्रद्धा का मामला बता रहे हैं . ले कन अ धकांश हिन्दुओं में साईं बारे में कुछ ऐसे सवाल खड़े हो गए हैं , जिनका प्रामा णक और शास्त्रानुसार उत्तर देना जरुरी हो गया है , कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं , 1 क़्या साइ कोई हिन्दू संत था , जिसके लए उसकी हिन्दू व ध से आरती और पूजा होती है. 2 . क्या साइ के आचरण और शक्षाओं

से हिन्दू समाज सशक्त हो रहा है ? क्या साईं में दैवी शक्तियां थीं ? क्या साईं धूर्त मुस्लिम नहीं था ,जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म मजबूत नीव को खोखला करना था . और साईं भक्त धर्म के बहाने जो अधर्म कर रहे हैं वह वैदिक सनातन हिन्दू धर्म का अपमान नहीं माना जाये ?

हम इस लेख के माध्यम से प्रमाण सहित इन प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं ,ता क हिन्दू अपने सनातन वैदिक धर्म पर आस्था बना रखें और कसी पाखंडी के जाल में फ़सने से बच सकें

1-साईं एक धूर्त कट्टरपंथी मुसलमान

शीरडी के साईं के बारे में पहली प्रामा णक कताब अंगरेजी में "डाक्टर मेरिअन वारेन – Dr. Marianne Warren Ph.D (University of Toronto, Canada "ने लखी थी . जो सन 1947 में प्रका शत हुई थी . और जिसके प्रकाशक का नाम " Sterling Paperbacks; ISBN 81-207-2147-0. " है .और इस कताब का नाम " Unravelling The Enigma – Shirdi Sai Baba" है . जिसका अर्थ है साईं की पेचीदा पहेली का पर्दाफाश "वारेन ने अपनी कताब साईं के ख़ास सेवक अब्दुल द्वारा मराठी म श्रत उर्दू में भाषा (जिसे दक्खिनी उर्दू भी कहते हैं)एक नोट बुक के आधार पर लखी है .ले कन शर्डी के साईं ट्रस्ट ने जानबूझ कर न तो मूल पुस्तक को प्रका शत कआ और न ही भारत की कसी भाषा में अनुवाद करवाया . अब्दुल की हस्त ल खत कताब (Manuscript) में साइ केबारे में सन 1870 से 1889 तक की घटनाओं का ववरण है ,सब साइ क्षद्म रूप से हिन्दू बन कर महाराष्ट्र के अहमद नगर जिले के शरडी गाँव आया था . उस समय शर्डी में सर्फ 10 प्रतिशत मुसलमान थे . चूँ क हिन्दू मुसलमानों कोपसंद नहीं करते थे . इस लए साईं ने अपने रहने के लए एक मस्जिद को चुन लया था . साईं ने हिन्दुओं को धोखा देने के लए उसमस्जिद का नाम द्वारका माई रख दिया .साईं का सेवक अब्दुल साईं के अंतिम समय तक रहा . और उसने अपनी पुस्तक में साईं के बारे में कुछ ऐसी बातें लखी हैं ,जो काफी चौंकाने वाली हैं ,जैसे साईं खुद को मुसलमान बताता था . और अब्दुल के सामने कुरान पढ़ा करता था (पेज 261) . साईं इस्लाम के सूफी पंथ और इस्माइली पंथ से प्रभा वत था (पेज 333) . साईं दूसरे धर्म की कताबों को बेकार बताता था ,और हमेशा अपने पास एक कुरान रखता था (पेज 313) . यही नहीं साइ हिन्दू धर्म का सूफी करण करना चाहता था (पेज 272) . डाक्टर मेरियन वारेन (Dr. Marianne Warren) अब्दुल द्वारा साईं बारे में हस्त ल खत पुस्तक को पूरा पढ़ा था . और इस नतीजे पर पहुंचा क साईं "एक छद्म दार्शनिक, छद्म आदर्शवादी छद्म नीतिज्ञ और धूर्त कट्टरपंथी था .(a pseudo-philosopher, pseudo-moralist and Findhorn fanatic).अर्थात साईं एक सूफी जिहादी था ,जिसका उद्देश्य हिन्दुओं में अपने प्राचीन सनातन धर्म के प्रति अनास्था और अरु च पैदा करना था . ता क जब मुसलमान बहुसंख्यक हो जाएँ तो ऐसे धर्म हिन्दुओं को आसानी से मुसलमान बनाया जा सके जिन्हें अपने धर्म से पूरी आस्था नहीं हो . क्यों क जिस भवनकी नींव कमजोर हो जाती है ,उसे आसानी से गराया जा सकता है .

http://www.kevinrdshepherd.info/shirdi_sai_baba_and_sai_baba_movement.html

मेरियन वारेन की पूरी कताब के लए इस लंक को खो लए

http://geraldjoemoreno.wordpress.com/2009/12/11/marianne-warren-unravelling-the-enigma-shirdi-sai-baba-in-the-light-of-sufism/

http://geraldjoemoreno.files.wordpress.com/2009/12/marianne-warren-critical-kevin-rd-shepherd.gif

2-श्री साईं चरित्र

इसके आलावा साईं बारे में एक पुस्तक उसके भक्त " गो वन्द राव रघुनाथ दामोलकर " ने मराठी में लखी है ,जिसका नाम "साईं सत चरित्र " है . इसमे कुल 51 अध्याय हैं . इस कताब का अनुवाद कई भाषाओं में कया गया है . और 'श्री साईं बाबा संस्थान शरडी " द्वारा इसका प्रकाशन कया गया है . यद्य प इस् कताब में साईं की दैवी शक्तिओं और चमत्कारों की बातों की भरमार है , फरभी लेखक ने साईं केबारे में कुछ ऐसी बातें भी लख दी हैं जो साईं का भंडा फोड़ने के लए पर्याप्त हैं , उदहारण के लए दे खये ,

1 . जवानी में साईं पहलवानी करता था , और मोहिउद्दीन तम्बोली ने साईं को कुश्ती में पछाड़ दिया था . अध्याय 5

2 . साईं हर बात पर अल्लाह मा लक कहा करता था . अध्याय 5

3.साईं हिन्दुओं से कहता था क प्राचीन वैदिक ग्रन्थ ,जैसे न्याय ,मीमांसा आदि अनुपयोगी हो गए हैं , इस लए उन्हें पढ़ना बेकार है . अ -10

4.साईं कहता था क यदि कोई कतना भी दुखी हो और वह जैसे ही मस्जिद में पैर रखेगा दुःख समाप्त हो जायेगा . अ -13

5.साइ तम्बाखू खाता था और बीड़ी पीता था . अ -14

6.बाबा ने एक बीमार और दुर्बल बकरे की कुर्बानी करवाई थी . अ -15

7.बाबा कहता था क मैं अपनी मस्जिद से जो भी कहूँगा वही सत्य और प्रमाण समझो . अ - 18 -19

8.बाबा कहता था क योग औरप्राणायाम कठिन और बेकार हैं . अ 23

9.बाबा को कसी की बुरी नजर लग गयी थी , यानि वह अंध वश्वासी था . अ 28

10.बाबा अपनी मस्जिद से बर्तन मंगा कर उसमे गोश्त पकवाता था , और उस पर फातिहा पढ़ा कर प्रसाद के रूप में लोगों को बंटवा देता था . अ -38

11.बाबा दमे के कारण 72 घंटे तक खांस खांस कर तड़प कर मर गया था . अ -43 -44

अब हमारे भोले भले साईं भक्त हिन्दू बताएं क हम ऐसे व्यक्ति को संत , दैवी पुरष या अवतार कैसे मान सकते हैं ?

https://www.shrisaibabasansthan.org/shri%20saisatcharitra/Hindi%20SaiSatcharit%20PDF/hindi.html

3-साईं की समा ध नहीं कबर है

साईं दमे की बीमारी से पी ड़त था ,और उसी बीमारी से मंगलवार 15 अक्टूबर सन 1918 को मर गया था . उसकी लाश को बुट्टीवाडा में इस्लामी व ध से दफना दिया गया था . और आज के अज्ञानी साईं भक्त हिन्दू साईं की कबर को समा ध कहते हैं , और उसकी पूजा आरती करते हैं . साइ की कबर की तस्वीर के लए यह लंक खो लए ,

http://www.liveindia.com/sai/oro-saibaba.jpg

इस से स्पष्ट हो जाता है क अज्ञानी हिन्दू साईं की समाधी की पूजा करके उसके अंदर की साईं की लाश की पूजा करते हैं ,

4-साईं पूजा हिन्दू धर्म का अपमान

शर्डी के साईं बाबा जो इस समय हजारो मुर्ख हिन्दुओ द्वारा पूजे जा रहे है और ये आज के समय का सबसे बड़ा इस्ला मक षड्यंत्र बन चूका है जिसे कुछ मुस्लिम गायक और इस्ला मक संगठन हिन्दुओ का भगवान् बना कर जमकर प्रचारित कर रहे है साईं जो मूलतः एक मुसलमान है उसका भगवाकरण करके हिन्दुओ को मुर्ख बनाया जा रहा है और हिन्दू अपनी कुंठित बुद् ध और गुलाम मान सकता के कारण इसे पहचानने की जगह उल्टा इसकी तरफ आक र्षत हो रहा है, यही नहीं इस यवनी(मुसलमान) की तुलना सनातनी इश्वरो जैसे राम कृष्ण या शव से करके सनातन धर्म का मखोल उड़ाया जा रहा है, जब क कसी ग्रन्थ या कसी महापुरुष द्वारा साईं जैसा कोई अवतार या महापुरुष होने की कोई भ वष्यवाणी नहीं है, साईं सत्चरित्र के कुछ अध्यायों से भी यह प्रमा णत हो चुका है की साईं एक मुसलमान था और केवल अल्लाह मा लक करता था ऐसे में एक यवनी को सनातनी इश्वर का दर्जा देना न केवल पाखण्ड की पराकाष्ठा है बल्कि सनातन धर्म का घोर अपमान है

5-हिन्दुओं का इस्लामीकरण

अक्सर देखा गया है क कुछ खास मौकों पर शरडी में क़व्वा लओं का आयोजन कया जाता है ,जिसमे मुस्लिम कव्वाल अल्लाह ,रसूल की बड़े और तारीफ़ बखानते है , और हिन्दू भी बड़ी संख्या में सुनने को आते हैं , यह भी एक प्रकार इस्लाम का प्रचार ही है , जिसका

उद्देश्य हिन्दुओं में इस्लाम के प्रति आस्था और हिन्दू धर्म से अरुच पैदा करना है ,
जैसा की इस कव्वाली में कहा जारहा है ,
How this muslim making fool of hindus on the name of shirdi sai
http://www.youtube.com/watch?v=yXk47DjmEQI
6-साईं गायत्री मन्त्र
साईं कैसा था और उसका क्या उद्देश्य था , यह स्पष्ट हो गया , साईं तो मर गया है ,लेकन उसके अंधे चेले साईं भक्ति के नशे में ऐसे चूर होगये क वेद मन्त्र के साथ भी खलवाड़ करने लगे , इन पापयों ने वैदिक गायत्री मन्त्र में हेराफेरी करके "साईं गायत्री मन्त्र " बना डाला। जो की एक दंडनीय अपराध है . यह साईं के चेले अपनी खैर मनाएं क हिन्दुओं में अल कायदा जैसा कोई कट्टर हिन्दू संगठन नहीं है , वरना सभी साईं के चेलों को मत के घाट उतार देते . हमें ख़ुशी है क अदालत में इस अपराध के लए मुक़दमा दर्ज हो चूका है . फर भी पाठकों की जानकारी के लए साईं गायत्री यहाँ दी जा रही है ,
"ॐ शीरडी वासाय वद्महे ,सच्चिदानन्दाय धीमहि तन्नो साईं प्रचोदयात "
"Om Shirdi Vasaaya Vidmahe
Sachchidhaanandaaya Dhimahee
Thanno Sai Prachodayath".
इस साइ गायत्री को 48 बार पाठ करने के लए कहा जाता है ,यह यू ट्यूब में भी मौजूद है , इस लंक से आप इस साईं गायत्री को सुन सकते हैं .
http://www.youtube.com/watch?v=CKQ3h4Bi1t0
7-साईं भक्त हिन्दू जवाब दें
जिन हिन्दुओं को खुद के हिन्दू होने पर गर्व है , और जो भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं ,और भगवद्गीता में उनके दिए गए वचनों को सत्य और प्रमाण मानते हैं . और जो वेद को ईश्वरीय आदेश समझते हैं , वह यहाँ गीता में दिए कृष्ण के वचन और वेद कर मात्र को पढ़ें ,और बताएं ,
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्य स शाश्वतम्॥18:62
भावार्थ : हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा॥18:62
"प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये जयन्ते तामसा जनाः ॥ 17:4
भावार्थ-तामसी गुणों से युक्त मनुष्य भूत-प्रेत आदि को पूजते हैं.17:4
"यः शास्त्र व धमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सद् धमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥ 16:23
भावार्थ : जो मनुष्य कामनाओं के वश में होकर शास्त्रों की व धयों को त्याग कर अपने ही मन से उत्पन्न की गयीं व धयों से कर्म करता रहता है, वह मनुष्य न तो सद् ध को प्राप्त कर पाता है, न सुख को प्राप्त कर पाता है और न परम-गति को ही प्राप्त हो पाता है। 16:23
(देवताओं को पूजने वालों का निरुपण)
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ 7:20
भावार्थ : जिन मनुष्यों का ज्ञान सांसारिक कामनाओं के द्वारा नष्ट हो चुका है, वे लोग अपने-अपने स्वभाव के अनुसार पूर्व जन्मों के अर्जित संस्कारों के कारण प्रकृति के नियमों के वश में होकर अन्य देवी-देवताओं की शरण में जाते हैं। 7:20
"अन्धं तमः प्र वशन्ति ये अ वद्यामुपासते "यजुर्वेद 40 :9
अर्थात -जो लोग अ वद्या यानी पाखण्ड की उपासना करते हैं अज्ञान के अंधे कुएं में पड़ जाते हैं "

बताइये गीता में कहे गए भगवान कृष्ण के यह वचन और वेद का मन्त्र सभी झूठे हैं ?या साईं भगवान कृष्ण से भी बड़ा हो गया ? या साईं की फर्जी चमत्कार की कथाएं वेद मन्त्र से भी अ धक प्रामा णक हो गयीं हैं ? यदि हिन्दू ऐसे ही होते हैं , तो उनको लाश पूजक (dead body worshippers) क्यों न कहा जाये ?

grave worshipkabra pujasai

UNCATEGORIZED, पाखण्ड खं डनी, हिन्दी

कर्मानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था भाग – १ : वपुल प्रकाश आर्य

शास्त्रों में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का समर्थन करने वाले श्लोक अथवा मंत्र,जिनका गलत अर्थ लगा कर पाखण्डी जाति प्रथा का समर्थन करते हैं (भाग १):-

प्रय पाठकगण, इस लेख शृङ्खला को शुरु करने के पीछे लेखक का उद्देश्य है आपके सामने वेदादि सत्य शास्त्रों से ऐसे प्रमाणों को प्रस्तुत करना जो क स्पष्ट रूप से गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का समर्थन करते हैं और साथ ही यह भी दिखाना क कस प्रकार जातिवादी पाखण्डी उनका गलत अर्थ करके अपना मतलब साधते हैं। जहां तक ईशवर प्रदत्त चारों वेदों का सवाल है,उसके मन्त्रों का गलत अर्थ वगत ३००० वर्षों में अनेक लोगों ने अज्ञानवश अथवा स्वार्थ सद्धी के लए कया है और जहां तक ऋ ष मुनियों द्वारा र चत ग्रन्थों जैसे मनुस्मृति इत्यादि का सवाल है वहां पर तो श्लोकों का गलत अर्थ करने के साथ साथ कुछ कुछ नये श्लोक मनमाने तरीके से अपना मतलब साधने के लए मला दिये हैं। ऐसे नये मलाए गये श्लोकों को प्र क्षप्त श्लोक कहा जाता है। इस लेख शृङ्खला में ऐसे श्लोकों का सही अर्थ कया जाएगा जिनके गलत अर्थ से जातिवाद की सद्धी की जाती है तथा प्र क्षप्त श्लोकों को भी युक्तिपूर्वक प्र क्षप्त सद्ध कया जाएगा।

मनुस्मृति में गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की सद्धी करने वाला ऐसा ही एक श्लोक निम्न ल खत है:-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रतां।

क्षत्रियाज्जात्मेवं तु वद्याद्वैश्यात्तथैव च। । (मनु १०:६५)

इस श्लोक का सही अर्थ इस प्रकार है :- शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र हो सकता है,इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य की सन्तानों के वषय में भी समझना चाहिए।

इस श्लोक से स्पष्ट रूप से यह वदित होता है क ब्राह्मण की सन्तान अपने गुण कर्मों के आधार पर शूद्र हो सकती है और शूद्र की सन्तान भी अगर ब्राह्मण बनने के योग्य हो तो ब्राह्मण हो जाएगी। यही नहीं अगर कोई शूद्र स्वयं भी ब्राह्मणत्व के योग्य हों तो वह ब्राह्मण हो जाएगा। उसी तरह अगर कोई ब्राह्मण स्वयं भी शूद्र बन जाने के योग्य कर्म करेगा तो शूद्र हो जाएगा। और अगर ब्राह्मण का शूद्र बनना और शूद्र का ब्राह्मण बनना

सम्भव है तो फ़र क्षत्रिय अथवा वैश्य बनना क्यों असम्भव हो सकता है। ठीक ऐसा ही क्षत्रिय अथवा वैश्य के घर पैदा हुई सन्तानों के बारे में समझा जाना चाहिए।

इस श्लोक से स्पष्ट रूप से गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का समर्थन है। मगर जातिवाद के समर्थक इसका गलत अर्थ निम्न ल खत तरीके से लगाते हैं:-

अगर कसी ब्राह्मण का ब्याह शूद्रा से हो और उससे कोई कन्या उत्पन्न हो और उस कन्या का ब्याह कसी ब्राह्मण पुरुष से हो और फ़र कन्या उत्पन्न हो और उसका ब्याह फ़र एक ब्राह्मण से हो तो इस तरह से सातवीं पीढी में जो सन्तान होगी वह ब्राह्मण होगी। और अगर ब्राह्मण का शूद्रा से कोई पुत्र उत्पन्न हो और उस पुत्र का ब्याह शूद्रा से हो और उनका भी पुत्र उत्पन्न हो और उसका ब्याह भी शुद्रा से कया जाए तो इस तरह से सातवीं पीढी की सन्तान शूद्र होगी। यही वधान क्षत्रिय और वैश्य के साथ भी समझना चाहिए ।

और इस अर्थ की सद्धी के लए उपर दिए गये श्लोक (१०:६५) से पहले एक प्र क्षप्त श्लोक भी मनुस्मृति में मलाया हुआ है जो क निम्न ल खत है:-

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातःश्रेयसा चेत्प्रजायते।

अश्रेयान्श्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् । । (मनु १०:६४)

जिसका अर्थ वे इस प्रकार लगाते हैं:-अगर कसी ब्राह्मण का ब्याह शूद्रा से हो और उससे कोई कन्या उत्पन्न हो और उस कन्या का ब्याह कसी ब्राह्मण पुरुष से हो और फ़र कन्या उत्पन्न हो और उसका ब्याह फ़र एक ब्राह्मण से हो तो इस तरह से सातवीं पीढी में जो सन्तान होगी वह ब्राह्मण होगी।

और इसी के साथ मला कर के अगले श्लोक (शूद्रो ब्राह्मणतामेति १०:६५) का अर्थ लगाते है क शुद्र (ब्राह्मण से शूद्रा में उत्पन्न पुत्री को ब्राह्मण से उपर्युक्त व ध से ब्याहने से सातवीं पीढी में उत्पन्न पुत्र)जैसे ब्राह्मणता को प्राप्त करता है वैसे ब्राह्मण भी शूद्रता को प्राप्त करता है (अगर ब्राह्मण द्वारा शूद्रा में पुत्र हो और उसका ववाह भी शूद्रा से हो तो इस प्रकार सातवीं पीढी की सन्तान शूद्र होगी) । वैसे ही क्षत्रिय से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र छठी पीढी में शूद्रता को प्राप्त करता है और वैश्य से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र पाचवी पीढी में शूद्रता प्राप्त करता है इत्यादि।

यहां गौरतलब है क प्रक्षेपक महोदय ने श्लोकों का अर्थ बिगाडने का काम बहुत ही चतुराई से कया है । मगर हम ध्यानपूर्वक दोनो श्लोकों की समीक्षा करें तो सारी कलै खुल के सामने आ जाती है।

सर्वप्रथम तो हम श्लोक संख्या १०:६५ के शाब्दिक अर्थ को देखें :-शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र हो सकता है,इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य की सन्तानों के वषय में भी समझना चाहिए।

अब हमें सर्वप्रथम ये वचार करना चाहिए क मनु महाराज ने शूद्र अथवा ब्राह्मण कनको कहा है? अगर मनुस्मृति का अध्ययन कया जाय तो हम पाएंगे क प्रथम तो शूद्र या

ब्राह्मण शब्द या तो उस व्यक्ति के लए प्रयुक्त हो सक्ता है जो क स्वयं शूद्र अथवा ब्राह्मण वर्ण का हो । दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अथवा शूद्र द्वारा समान वर्णों की स्त्रियों में उत्पन्न सन्तानो को भी क्रमशः ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अथवा शूद्र जाति से जाना जाता है(मनु १०: ५)। यहां यह ध्यान देने योग्य है क उपर्युक्त जातियों का आशय सर्फ़ उपनयन संस्कार इत्यादि की आयु निर्धारण करने से है ना क जन्म के आधार पे बालक का वर्ण निर्धारण करने से।

मगर हम १०:६५ श्लोक के जातिवादियों द्वारा लगाए गये अर्थ की समीक्षा करें तो हम पाएंगे क "शुद्रो ब्राह्मणतामेति " मे शूद्र का अर्थ उन्होने लगाया है ब्राह्मण पुरुष की शूद्रा स्त्री से उत्पन्न हुइ पुत्री को पुनः ब्राह्मण पुरुष को ब्याहकर और फ़र उनकी पुत्री को पुनः ब्राह्मण पुरुष को ब्याहकर इस प्रकार सातवीं पीढी में जो सन्तान होगी । उसी प्रकार 'ब्राह्मणश्चैति शूद्रतां ' मे ब्राह्मण शब्द का अर्थ उन्होने लगाया है क ब्राह्मण पुरुष द्वारा शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र को शूद्रा से ब्याह कर फ़र उनसे उत्पन्न पुत्र को पुनः शूद्रा से ब्याहकर इस प्रकार जो सातवीं पीढी में सन्तान उत्पन्न हो। अब भला शूद्र और ब्राह्मण शब्द का इतना व चत्र अर्थ ये लोग कस व्याकरण के नियम के अनुसार लगाते हैं ये तो यही लोग जानते होंगे। इसी प्रकार क्षत्रियाज्जातः का अर्थ होता है क जो क्षत्रिय पता के द्वारा उत्पन्न हो । मगर इस श्लोक में जातिवादी इस शब्द का अर्थ लगाते हैं क्षत्रिय द्वारा शुद्रा में उपर्युक्त वधी से उत्पन्न छठी पीढी की सन्तान । अब यहां वचारणीय है क अगर छ्ठी पीढी की सन्तान को 'क्षत्रियाज्जातः'बोलेंगे तो ५वी पीढी की सन्तान को क्षत्रिय मानना पडेगा । अब जब क जातिवादी लोग क्षत्रिय द्वारा शूद्रा में उत्पन्न पहली पीढी की सन्तान(जिसको उग्र बोला जाता है) को भी क्षत्रिय नहीं मानते हैं तो ५ वी पीढी की सन्तान को क्षत्रिय मान लेना क्या सर्फ़ मतलब साधने वाली बात नहीं है?

ये तो थी १०:६५ नं० श्लोक के इनके द्वारा कए गये अर्थ (अनर्थ) की समीक्षा । इससे स्पष्ट हो जाता है क ६४ वे श्लोक से ६५ वे श्लोक का दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है क्यों क ६४ वे श्लोक से प्रासङ् गक तालमेल बैठाने के लए शूद्र,ब्राह्मण,क्षत्रिय इत्यादि शब्द का कस प्रकार व्याकरण वरुद्ध अर्थ लगाना पड रहा है। सर्फ़ इतना ही नहीं, अ पतु अगर ६४ वें श्लोक के अर्थ की भी समीक्षा करें तो हम पाते हैं क "शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः" यह पद तो पुल्लिङ्ग है मगर इसका प्रयोग पुरुष अथवा स्त्री पुरुष दोनो के लए न होकर सर्फ़ स्त्री सन्तान के लए हुआ है। भला ऐसा व चत्र प्रकार का श्लोक परम वद्वान मह ष मनु का कैसे हो सकता है? इससे सद्ध हॊता है क यह श्लोक (१०:६४) अगले (१०:६५) श्लोक का अर्थ बिगाडने के हेतु से कसी धूर्त व्यक्ति द्वारा मलाया गया है। अतः श्लोक संख्या १०:६४ को प्र क्षप्त मानना ही उ चत है।

अब तक की समीक्षा से हम इस निष्कर्ष पे पहुंचे हैं क मनु १०:६५ का जातिवादियों के द्वारा कया गया अर्थ गलत है और उसका सही अर्थ गुण कर्मानुसार वर्ण वयवस्था का ही पोषक है जो क इस प्रकार है :-

क ब्राह्मण की सन्तान अपने गुण कर्मों के आधार पर शूद्र हो सकती है और शूद्र की सन्तान भी अगर ब्राह्मण बनने के योग्य हो तो ब्राह्मण हो जाएगी। यही नहीं अगर कोई शूद्र स्वयं भी ब्राह्मणत्व के योग्य हॊ तो वह ब्राह्मण हो जाएगा। उसी तरह अगर कोई

ब्राह्मण स्वयं भी शूद्र बन जाने के योग्य कर्म करेगा तो शूद्र हो जाएगा। और अगर ब्राह्मण का शूद्र बनना और शूद्र का ब्राह्मण बनना सम्भव है तो फ़र क्षत्रिय अथवा वैश्य बनना क्यों कर असम्भव हो सकता है। ठीक ऐसा ही क्षत्रिय अथवा वैश्य के घर पैदा हुई सन्तानों के बारे में समझा जाना चाहिए ।

प्रय पाठकगण हमें आशा है क यह लेख सत्य और असत्य का ववेक करने में आपके लए सहायताप्रद सद्ध होगा। त्रुटियों के लए हम क्षमाप्रार्थी हैं.

अगले भाग में फ़र इसी तरह एक नये श्लोक,सूत्र अथवा मन्त्र की समीक्षा की जाएगी ।

SAI BABA WAS A MUSLIM, A ORTHODOX MUSLIM, EXPOSED IN SAI SATCHARITRA,

FEBRUARY 14, 2014 1 COMMENT

मत्रो आज हम उन प्रशनो के उत्तर दे रहे है जिनके वषय में बहुत से साईं भक्त इधर उधर भटकते रहते है, उन्हें उत्तर कुछ सूझता नहीं और वे साईं के वषय में काफी भ्र मत भी रहते है,
आज हम लाये है साईं के मुस्लिम होने के कुछ प्रमाण जो की शर्डी साईं संस्थान, शर्डी महाराष्ट्र में स्थित है के द्वारा प्रका शत व् प्रमा णत पुस्तक साईं सत्चरित्र से लए गये है ,

Friends today we are giving some facts which proved that sai baba was a muslim. Devotees of sai are confused and they dont know what was the real character of Sai but today we are giving evidence on the basis of Sai Satcharitra Officially published by Shirdi Sai Sansthaan, Shirdi Maharashtra.

Sources: http://shirdisaiexpose.wordpress.com/2014/01/31/sai-baba-was-a-muslim-a-orthodox-muslim-exposed-in-sai-satcharitra

सबसे पहले अध्याय 4 से प्रमाण :

वे निर्भय होकर सम्भाषण करते, भाँति-भाँति के लोंगो से मलजुलकर रहते, न र्त कयों का अ भनय तथा नृत्य देखते औरगजन-कव्वा लयाँ भी सुनते थे । इतना सब करते हुए भी उनकी समा ध कं चतमात्र भी भंग न होती थी । अल्लाह का नाम सदा उलके ओठों पर था । जब दुनिया जागती तो वे सोते और जब दुनिया सोती तो वे जागते थे । उनका अन्तःकरण प्रशान्त महासागर की तरह शांत था । न उनके आश्रम का कोई निश्चय कर सकता था और न उनकी कार्यप्रणाली का अन्त पा सकता था । कहने के लये तो वे एक स्थान पर निवास करते थे, परंतु वश्व के समस्त व्यवहारों व व्यापारों का उन्हें भली-भाँति ज्ञान था । उनके दरबार का रंग ही निराला था । वे प्रतिदिन अनेक कवदंतियाँ कहते थे, परंतु उनकी अखंड शांति कं चतमात्र भी वच लत न होती थी । वे सदा मसजिद की दीवार के सहारे बैठे रहते थे तथा प्रातः, मध्याह्न और सायंकील लेंडी और चावड़ी की ओर वायु-सोवन करने जाते तो भी सदा आत्मस्थित ही रहते थे ।

He had no love for perishable things, and was always engrossed in self-realization, which was His sole concern. He felt no pleasure in the things of this world or of the world beyond. His Antarang (heart) was as clear as a mirror, and His speech always rained nectar. The rich or poor people were the same to Him. He did not know or care for honour or dishonour. He was

the Lord of all beings. He spoke freely and mixed with all people, saw the actings and dances of Nautchgirls and heard Gajjal songs. Still, He swerved not an inch from Samadhi (mental equilibrium). **The name of Allah was always on His lips.** While the world awoke, He slept; and while the world slept, He was vigilant. His abdomen (Inside) was as calm as the deep sea. His Ashram could not be determined, nor His actions could be definitely determined, and though He sat (lived) in one place, He knew all the transactions of the world. His Darbar was imposing. He told daily hundreds of stories, still He swerved not an inch from His vow of silence. **He always leaned against the wall in the Masjid or walked morning,** noon and evening towards Lendi (Nala) and Chavadi; still He at all times abided in the Self.

sai baba was a muslim proved by sai satcharitra

अब अध्याय 5 से प्रमाण :

बाबा दिनभर अपने भक्तों से घिरे रहते और रात्रि में जीर्ण-शीर्ण मसजिद में शयन करते थे । इस समय बाबा के पास कुल सामग्री – चलम, तम्बाखू, एक टमरेल, एक लम्बी कफनी, सर के चारों और लपेटने का कपड़ा और एक सटका था, जिसे वे सदा अपने पास रखते थे । सर पर सफेद कपडे का एक टुकड़ा वे सदा इस प्रकार बाँधते थे क उसका एक छोर बायें कान पर से पीठ पर गरता हुआ ऐसा प्रतीत होता था, मानो बालों का जूड़ा हो । हफ्तों तक वे इन्हें स्वच्छ नहीं करते थे । पैर में कोई जूता या चप्पल भी नहीं पहिनते थे । केवल एक टाट का टुकड़ा ही अ धकांश दिन में उनके आसन का काम देता था । वे एक कौपीन धारण करते और सर्दी से बचने के लये द क्षण मुख हो धूनी से तपते थे । वे धूनी में लकड़ी के टुकड़े डाला करते थे तथा अपना अहंकार, समस्त इच्छायें और समस्च कु वचारों की उसमें आहुति दिया करते थे । वे अल्लाह मा लक का सदा जिह्वा से उच्चारण कया करते थे । जिस मसजिद में वे पधारे थे, उसमें केवल दो कमरों के बराबर लम्बी जगह थी और यहीं सब भक्त उनके दर्शन करते थे । सन् 1912 के पश्चात् कुछ परिवर्तन हुआ । पुरानी मसजिद का जीर्णोद्धार हो गया और उसमें एक फर्श भी बनाया गया । मसजिद में निवास करने के पूर्व बाबा दीर्घ काल तक त कया में रहे । वे पैरों में घुँघरु बाँधकर प्रेम वह्वल होकर सुन्दर नृत्य व गायन भी करते थे ।

Baba was surrounded by His devotees during day; and **slept at night in an old and dilapidated Masjid.** Baba's paraphernalia at this time consisted of a Chilim, tobacco, a "Tumrel" (tin pot), long flowing Kafni, a piece of cloth round His head, and a Satka (short stick), which He always kept with Him. The piece of white cloth on the head was twisted like matted hair, and flowed down from the left ear on the back. This was not washed for weeks. He wore no shoes, no sandals. A piece of sack-cloth was His seat for most of the day. He wore a coupin (waist-cloth-band) and for warding off cold he always sat in front of a Dhuni (sacred fire) facing south with His left hand resting on the wooden railing. In that Dhuni, He offered as oblation; egoism, desires and all thoughts and **always uttered Allah Malik (God is the sole owner). The Masjid in which He sat was only of two room dimensions,** where all devotees came and saw Him. After 1912 A.D., there was a change. The **old Masjid was repaired** and a pavement was constructed. Before Baba came to **live in this Masjid**, He lived for a long time in a place Takia, where with GHUNGUR (small bells) on His legs, Baba danced beautifully sang with tender love.

अध्याय – 7

ईद के दिन वे मुसलमानों को मसजिद में नमाज पढ़ने के लये आमंत्रित कया करते थे । एक समय मुहर्रम के अवसर पर मुसलमानों ने मसजिद में ताजिये बनाने तथा कुछ दिन

वहाँ रखकर फर जुलूस बनाकर गाँव से निकालने का कार्यक्रम रचा । श्री साईबाबा ने केवल चार दिन ताजियों को वहाँ रखने दिया और बिना कसी राग-देष के पाँचवे दिन वहाँ से हटवा दिया ।

He allowed **Mahomedans to say their prayers (Namaj) in His Masjid.** Once in the Moharum festival, some Mahomedans proposed to contruct a Tajiya or Tabut in the Masjid, keep it there for some days and afterwards take it in procession through the village. Sai Baba allowed the keeping of the Tabut for four days, and on the fifth day removed it out of the Masjid without the least compunction.

अल्लाह मा लक सदैव उनके होठों पर था ।

He always walked, talked and laughed with them and always uttered with His tongue **'Allah Malik' (God is the sole owner).**

हाथ जल जाने के पश्चात एक कुष्ठ-पी डत भक्त भागोजी संदिया उनके हाथ पर सदैव पट्टी बाँधते थे । उनका कार्य था प्रतिदिन जले हुए स्थान पर घी मलना और उसके ऊपर एक पत्ता रखकर पट्टियों से उसे पुनः पूर्ववत् कस कर बाँध देना । घाव शीघ्र भर जाये, इसके लये नानासाहेब चाँदोरकर ने पट्टी छोड़ने तथा डाँ. परमानन्द से जाँच व च कत्सा कराने का बाबा से बारंबार अनुरोध कया । यहाँ तक क डाँ. परमानन्द ने भी अनेक बार प्रर्थना की, परन्तु बाबा ने यह कहते हुए टाल दिया क केवल अल्लाह ही मेरा डाँक्टर है । उन्होंने हाथ की परीक्षा करवाना अस्वीकार कर दिया ।

Mr. Nanasaheb Chandorkar solicited Baba many a time to unfasten the Pattis and get the wound examined and dressed and treated by Dr. Parmanand, with the object that it may be speedily healed. Dr. Parmanand himself made similar requests, **but Baba postponed saying that Allah was His Doctor;** and did not allow His arm to be examined. Dr. Paramanand's medicines were not exposed to their air of Shirdi, as they remained intact, but he had the good fortune of getting a darshana of Baba.

दिए गये प्रमाणों को आप साईं सत्चरित्र से मलान कर सकते है, इसके लए आप शर्डी की प्रमा णत साईट से इसका मलान कर सकते है जिसका लंक नीचे दिया है, मलान करके आप स्वयं सोचे की क्या ऐसे व्यक्ति को पूजन सही है,

यह समा ध नहीं है

आज सुबह से ही एक खबर देख रहा हू दिव्य ज्योति जागरण संस्था के संस्थापक श्री आशुतोष जी महाराज के शरीर को फ्रीजर में रखा है और संस्था के व्यस्थापको द्वारा कहा जा रहा है महाराज समा ध में लन है |जब की डॉक्टरओ द्वारा कहा जा चूका है की उनकी मस्तिष्क में कोई गति व ध नहीं है जिसे अंग्रेजी में Brain Dead कहते है |उनके हृदय में कोई गति नहीं है, उनकी नाडी भी शांत है और चमड़ी ने भी रंग बदलना शरू हो गया है इस कारण डॉक्टरी भाषा में कहा जाय तो उनकी मृत्यु हो चुकी है और डॉक्टरओ ने भी उन्हें मृत घो षत कर दिया है, पर संस्था मानने को तयार नहीं है और बस एक रट लगाये है महाराज समा ध में लन है और वो भी फ्रीज़र के शुन्य के तापमान में क्या यही समा ध है ? या समा ध कसी अन्य अवस्था को कहते है |हम योग दर्शन के आधार पर इस सत्य या असत्य को जानने का प्रयत्न करेंगे |

जो समा ध शब्द का प्रयोग बड़े साधारण स्थर पर करते है उन्हें समा ध को समझने के लए सर्वप्रथम योग शब्द को समझना पडेंगा |योग दर्शन के समा धपाद का दूसरा सूत्र :-

योगश्चितवृतिनिरोधः ||१:२||

परिभाषा :- योग है चत्त की वृतियो का निरोध=रोखना | चत्त की वृतियो को रोखना योग का स्वरुप है |

सांख्य में जिसे बुद् ध तत्व के नाम से कहा गया है, योग ने उसी को चत्त नाम दिया है | योग प्र क्रया के अनुसार-एक व शष्ट कार्य है – अर्थ तत्व का चंतन |योग दर्शन में अर्थ तत्व से तात्पर्य परमात्मा तत्व से है |ईश्वर का निरंतर चंतन इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य है और यह चंतन बुद् ध द्वारा होता है |जब मानव योग व धयों द्वारा समा ध अवस्था को प्राप्त कर लेता है ; तब वह बाह्य वषयो के ज्ञान के लए इन्द्रियों से बंधा नहीं रहता, उस दशा में बाह्य वषयो के ज्ञान के लए इन्द्रियों से बंधा नहीं रहता, उस दशा में बाह्य इन्द्रियों के सहयोग के वना केवल अंत:करण द्वारा बाह्य वषयों के ग्रहण करने में समर्थ रहता है |

समा ध दो प्रकार की होती है १. सम्प्रज्ञात समा ध और २. असम्प्रज्ञात समा ध

सम्प्रज्ञात समा ध उस अवस्था को कहते है जब त्रिगुणात्मक अचेतन प्रकृति और चेतन आत्मा तत्व के भेद का साक्षात्कार हो जाता है |इसी का नाम 'प्रकृति-पुरुष ववेक ख्याति' है |परन्तु सम्प्रज्ञात समा ध की यह दशा वृति रूप होती है | ववेक ख्याति गुणों की एक अवस्था है |रजस,तमस का उद्रेक न होने पर सत्व गुण की धारा प्रवाहित रहती है |योगी इसका भी निरोध कर पूर्ण शुद्ध आत्म स्वरुप में अवस्थित हो जाता है |वह वैराग्य की पराकाष्टा 'धर्ममेध-समा ध' नाम से योग शास्त्र [४/२९] में उद्दत है |अभ्यास और वैराग्य दोनों उपायों के द्वारा चत्त की वृतियो का निरोध पर सम्प्रज्ञात समा ध की अवस्था आती है |

असम्प्रज्ञात समा ध उन यो गयों को प्राप्त होती है जिन्होंने देह और इन्द्रियों में आत्म साक्षात्कार से निरंतर अभ्यास एवं उपासना द्वारा उनका साक्षात्कार कर उनकी नश्वरता जड़ता आदि को साक्षात् जान लया है, और उसके फल स्वरुप उनकी और से नितांत वरक्त हो चुके है |वे लंबेकाल तक देह-इन्द्रिय आदि के संपर्क में न आकर उसी रूप में समा ध जनित फल मोक्ष सुख के समान भोग करते है |

शास्त्रों [मुंडक,२/२/८; गीता,४/१९, तथा ३७] में ज्ञान अग्नि से समस्त कर्मो के भस्म हो जाने का जो उल्लेख उपलब्ध होता है, वह योग की उस अवस्था को समझना चाइये, जब आत्म साक्षात्कार पूर्ण स्थिरता के स्थर पर पहुचता है |अभी तक समस्त संस्कार आत्मा में वद्यमान रहते है |कोई भी संस्कार उभरने पर योगी समा ध भ्रष्ट हो जाता है |

समा ध लाभ के लए दो गुणों की अत्यावश्यक है १. वैराग्य २. योग सम्बन्धी क्रया अनुष्ठान |वैराग्य की स्ति थ होने पर भी यदि योगांगो के अनुष्ठान में श थलता अथवा उपेक्षा की भावना रहती है, तो शीघ्र समा ध लाभ की आशा नहीं रखनी चाइये |

सम्प्रज्ञात समा ध की दशा में योगी आत्मा और चत्त के भेद का साक्षात् कर लेता है |वह इस तथ्य को स्पष्ट रूप में आंतर प्रत्यक्ष में जान लेता है, की प्राप्त वषयों के अनुसार चत्त का परिणाम होता रहता है परन्तु आत्मा अपरिणामी रहता है |

आत्म बोध के अतिरिक्त इस अवस्था में अन्य कसी वषय का कसी भी प्रकार का ज्ञान न होने से योगी इस अवस्था का नाम 'असम्प्रज्ञात समा ध' है |इन दोनों में भेद केवल इतना है, क पहली दशा में संस्कार उदबुद्ध होते है, जब क दूसरी दशा में नि:शेष हो जाते है |

समा ध अवस्था में आत्मा अपने रूप में अवस्तिथ होता है |अनुभव करना चैतन्य का स्वभाव है, वह उससे छुट नहीं सकता |फलत: जब वह केवल शुद्ध चैतन्य स्वरुप आत्मा का अनुभव करता है, तब उसे स्वरुप में अवस्थित कहा जाता है,केवल स्व का अनुभव करना ; अन्य समस्त वषयो से अछुता हो जाना |आत्मा इस अवस्था को प्राप्त कर समा ध शक्ति द्वारा परमात्मा के आनंद स्वरुप में निमग्न हो जाता है |उस आनंद का वह अनुभव करने लगता है |यही आत्मा के मोक्ष अथवा अपवर्ग का स्वरुप है |

यह हमने समा ध का सं क्षप्त में ववरण कया है और समा ध क इस स्वरुप में मस्तिष्क क गति, हृदय गति, नाडी का चलना अन्य सब बातें आवश्यक है |क्यों क यह सब गति व धया शरीर के लए आवश्यक है और वना शरीर के समा ध अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती और शरीर को जी वत रखना है तो इन गति व धयों को होना आवश्यक है |इस लए दिव्य ज्योति जागरण संस्था के संस्थापक श्री आशुतोष जी महाराज के शरीर क इस अवस्था को समा ध अवस्था न कह कर इस अवस्था को मृत्यु कहा जायेंगा |और संस्था के प्रतिनि ध जो इस अवस्था को समा ध कह रहे है वह नितांत मूर्खता या पाखण्ड है | कसी भी शास्त्र में श्री आशुतोष जी महाराज क जो अवस्था है उस अवस्था को समा ध नहीं कहा है |स्व में या परमात्मा के आनंद स्वरुप में स्तिथ रहने के लए शरीर का जी वत अवस्था में होना आवश्यक है |

सहायता ग्रन्थ :- योग दर्शन भाष्य –भाष्यकार पं डत उदयवीर शास्त्री

मांस भक्षण और स्वामी ववेकानंद ऋष्व आर्य

JANUARY 12, 2014 1 COMMENT

मांस भक्षण और स्वामी ववेकानंद

यदी भारत के लोग चाहते हैं की में मांसाहार न करूँ तो उनसे कहो की एक रसोइय्सा भेज दें और पर्त्याप्त धन सामग्री।

स्वामी ववेकानंद

ववेकानंद साहित्य , भाग -4, पृष्ठ -344

इसी भारत में कभी ऐसा भी समय था जब कोई ब्राह्मण बिना गौ मांस खाए ब्राह्मण नहीं रह पाता था। वेद पड़कर देखो क कस तरह जब कोई सन्यासी या राजा या बड़ा आदमी मकान में आता था तब सबसे पुष्ट बैल मारा जाता था

स्वामी ववेकानंद (ववेकानंद साहित्य Vol 5 Pg 70)

अब देश के लोगों को मछली मांस खलाकर उद्यमशील बना डालना होगा जगाना होगा तत्पर बनाना होगा नहीं तो धीरे धीरे देश के सभी लोग पेड़ पत्थरों की तरह जड़ बन जायेंगे। इसी लये कह रहा था की मछली और मांस खूब खाना

स्वामी ववेकानंद

(ववेकानंद साहित्य भाग -6, पृष्ठ 144)

ववेकानंद द्वारा मांस भक्षण

ववेकानंद द्वारा वेदों में मांस भक्षण की मान्यता वैदिक ज्ञान के प्रति उनकी अज्ञानता , पाश्चात्य वद्वानों का उन पर प्रभाव के अतिरिक्त उनकी मांसाहार के प्रति लालायित्ता को प्रद र्शत करती है। ना केवल ववेकानंद मांस भक्षण कया करते थे अ पतु इनके गुरु स्वामी राम कृष्ण परमहंस भी मांस भक्षण कया करते थे। स्वामी राम कृष्ण परम हंस को स्वामी ववेकानंद इश्वर का अवतार घो षत करते थे, ले कन ये कैसी वडम्बना थी की वो तथाक थत इश्वर अपने लए स्वयं मांस का निर्माण करने में असमर्थ था और अपनी मांस खाने की लालसा को निरीह प्रा णयों के जीवन लीला समाप्त करके पूरा कया करता था।वह शष्य घो षत इश्वर जिसे हर वस्तु में काली माँ के दर्शन हुआ करते थे उन निरीह मूक प्रा णयों में काली के दर्शन ना कर सका जिन्हें उन्होंने तथा उनकी आज्ञा अनुसार उनके शष्यों ने रक्त पपासा का ग्रास बना लया । स्वामी ववेकानंद और स्वामी राम कृष्ण परमहंस शायद ये भूल गए की जिस काली को वे कण कण में देखते हैं समस्त संसार को काली में ही व्याप्त मानते हैं वह आपकी काली मां इन प्रा णयों में भी तो वास करती है I क्या इन निरीह प्रा णयों में उस माँ का निवास नहीं है ?क्या ये प्राणी उस के बच्चे नहीं है? क्या कोई माँ अपने बच्चों पर इतनी निर्दयी हो सकती है को की वो उसके उत्तम कृति मनुष्य को दुसरे प्रा णयों को मारने की आज्ञा दे दे? प्राय यह देखा जाता है क उत्तम संतान अपने से छोटे और असहाय का ध्यान रखते हैं उसी प्रकार इश्वर भी इसी नियम का पालन करता है और मनुष्य के लए भोजन पैदा करने से पहले वह पशुओं के लए भोजन की व्यवस्था करता है। मनुष्य को अपने भोजन की व्यवस्था करने के लए परिश्रम करना पड़ता है। अनाज उगाने के लए भूमी का चयन करना पड़ता है फर उसे खेती योग्य बनाना पड़ता है खेत को जोतकर पर्याप्त मात्र में उर्वरक और पाने देकर अनाज उगाया जाता है जबकी पशुओं को भोजन पाने के लए ये सब करने की आवश्यकता नहीं होती है उनके लए इश्वर खुद ही खाने की व्यवस्था करता है यहाँ तक की मनुष्य अपने लए जिस अन्न को उगाता है उसमें भी इश्वर पशुओं का भाग पहले ही निर्धारित कर देता है और पशुओं ने लए खरपतवार स्वयं पैदा हो जाती है उसके

लए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता। जो इश्वर उन प्रा णयों के प्रति इतना दयालु है उसी ईश्वर के स्वघो षत भक्त उन्हीं प्रा णयों को अपनी भूख शांत करने का साधन बनाते रहे और उन्हें इश्वर की ये दया दिखाई नहीं दी

स्वामी ववेकानंद को मांस भक्षण में होने वाली बर्बरता और क्रूरता का पूर्ण ज्ञान था ले कन फर भी वो मांस भक्षण कया करते थे ये उनकी मांस खाने के लए ललक को ही प्रद र्शत करता है जिसके लए वो सारे सद्धांतों एवम संस्कारों को तिलाजंली देने को तत्पर रहा करते थे। प्रा णयों को अपना बंधुगण बताते हुए स्वामी ववेकानंद कहते हैं की मुझे पता है की ये गलत है क अपने स्वार्थ के लए कसी के प्राण लए लए जाएँ ले कन में इसके लए ववश हो जाता हूँ।

I myself may not be a very strict vegetarian, but I understand the ideal. When I eat meat I know it is wrong. Even if I am bound to eat it under certain circumstances, I know it is cruel. I must not drag my ideal down to the actual and apologise for my weak conduct in this way. The ideal is not to eat flesh, not to injure any being, for all animals are my brothers. If you can think ofthem as your brothers, you have made a little headway towards the brotherhood of all souls

– The complete work of swamee vivekanand , Vol – 2- Pg 298

में स्वयं एक कट्टर शाकाहारी न भी होऊं कन्तु में उस आदर्श को समझता हूँ जब में मांस खाता हूँ तब जानता हूँ की यह ठीक नहीं है। परिस्थितिवश उसे खाने को बाध्य होने पर भी में यह जानता हूँ के यह क्रूरता है। आदर्श नीचा करके अपनी दुर्बलता का समर्थन मुझे नहीं करना चाहिए। आदर्श यही है। मांस न खाया जाए। कसी भी प्राणी का अनिष्ट न कया जाए क्यूं क पशुगन भी हमारे भाई हैं।

ववेकानंद साहित्य , भाग -8, पृष्ठ -9

स्वामी ववेकानंद जीव हत्या में होने वाली बर्बरता क्रूरता को स्वीकार भी करते हैं उसे गलत और त्याज्य भी मानते हैं वही दुसरे संदर्भो में मांस भक्षण को मनुष्य मात्र का अ धकार भी मानते हैं। जब उनसे पूछा गया की आप मांस भक्षण क्यूँ करते हैं तो वो उत्तर देते हुए कहते हैं की मेरे गुरुदेव कहा करते की थे संसार में कोई भी वस्तु त्याज्य नहीं है। स्वामी ववेकानंद को सम्बो धत करते हुए स्वामी राम कृष्ण परमहंस कहते हैं की तुम मांस भक्षण त्यागने का प्रयास क्यूँ करते हो संसार की हर वस्तु मनुष्य मात्र के उपभोग के लए बनी हुयी है इस लए कसी भी वस्तु को त्यागना व्यर्थ है। दोनों बातों में अन्त र्वरोध स्वामी ववेकानंद का प्राणी मात्र के प्रति दोहरेपन को ही दर्शाता है।

I am always asked the question: “Shall I give up meat?” My Master said, “Why should you give up anything? It will give you up.” Do not give up anything in nature. Make it so hot for nature that she will give you up.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 519

मुझसे बराबर यह प्रश्न कया जाता है – ” में मांस खान छोड़ दूँ ?” मेरे गुरुदेव ने कहा था – कोई चीज छोड़ने का पर्यंत तुम क्यों करते हो ? वही तुम्हीं को छोड़ देगी। प्रकृती का कोई पदार्थ त्याज्य नहीं है

ववेकानंद साहित्य , भाग -4, पृष्ठ -165

स्वामी ववेकानंद जीव हत्या में होने वाली पीड़ा को अनुभव करते हुए कहते हैं क मनुष्यों और पशुओं को सुख दुःख का आभास सामान रूप से होता है जब क पशु में सुख एवं दुःख को अनुभव करने की प्र वत्ती मानव मात्र से अ धक होती है। स्वामी ववेकानंद जब
जीव हत्या को न्यायसंगत ना
सध्ध कर सके तो उन्होंने उसे माया का नाम दे दिया की जो हम पशुओं को उनको होने वाले कष्ट को नजरअंदाज करके मारते हैं वो माया है। ये तर्क कुछ ऐसा ही अनर्गल है जो जीव और ब्रह्म की एकता को सध्ध न कर पर अद्वैतवादी दिया करते हैं।
जिस प्रकार अद्वैतवादियों अपने तर्क की सद्धी के लए माया की शरण में जाना पड़ता है उसी प्रकार स्वामी ववेकानंद को भी मांसाहार को न्यायसंगत सध्ध करने के लए माया की शरण में जाना पड़ा। यह माया के शरणागत होगा स्वामी ववेकानंद का मांसाहार के प्रति लगाव ही कहा जा सकता है जो उन्हें उन निरीह प्रा णयों मा र्मक चीख पुकार न सुनने के लए ववश कर देता है।

यदि पशु मनुष्य की अपेक्षा इतनी तीव्रता से सुख का अनुभव करते हैं तो यह भी सत्य है की उनके दुःख का अनुभव भी उतना ही तीव्र होता है – मनुष्य की अपक्षा तीव्रतर होता है। अतएव मनुष्य को मरने में जो कष्ट होता हैउसकी अपेक्षा सहस्त्र गुना अ धक कष्ट उन पशुओं को मरने में होता है । फर भी हम उनके कष्ट की कोई चंता ना करते हुए उन्हें मार डालते हैं। यही माया है।

ववेकानंद साहित्य , भाग -2, पृष्ठ -68

मांसाहारी को मांस खाने से अवश्य सुख मलता है , पर जिसका मांस खाया जाता है उसके लए तो भयानक कष्ट ही है ।

ववेकानंद साहित्य , भाग -2, पृष्ठ -135

The eating of meat produces pleasure to a man, but pain to the animal which is eaten. There has never been anything which gives pleasure to all alike.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 2- Pg 177

स्वामी ववेकानंद स्वयं मांस भक्षण कया करते थे जब कुछ लोगों को इस बारे में पता चला तो उन्होंने उनसे इस बारे में पत्र लखकर पूछा तो स्वामी जी अपने वचार इस प्रश्न के उत्तर में 9th sepetember को Paris से ALasinga को लखे पत्र में हुए लखते हैं की यदी भारत के लोग चाहते हैं की मैं मांसाहार न करूँ तो उनसे कहो की एक रसोइय्सा भेज हैं और पर्त्याप्त धन सामग्री।

. If the people in India want me to keep strictly to my Hindu diet, please tell them to send me a cook and money enough to keep him. This silly bossism without a mite of real help makes me laugh.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 95

अगर भारत वासी मुझे नियमपूर्वक हिन्दू भोजन के सेवन पर बल देते हैं तो उनसे एक रसोइया एवं उसको रखने के लए पर्त्याप्त रुपये का प्रबंध करने के लए कह देना। एक पैसे की सहायता करने का तो सामर्थ्य नही कन्तु आगे बढकर उपदेश झाड़ते हैं

ववेकानंद साहित्य , भाग -4, पृष्ठ -344

स्वामी ववेकानंद को मांस भक्षण में पशुओं पर होने वाली निर्दयता का पूर्ण ज्ञान था और वो इसे महसूस भी करते थे ले कन उनका यह ज्ञान केवल कहने भर का था उन्होंने इसे जीवन में कभी नहीं उतरा बल्कि इस प्रपंच को समाज में प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। वो मांसाहार को शक्ती का साधन और आवश्यकता बताते रहे। मांस प्राप्ती में होने वाली असहाय पशु की हत्या के बारे में निर्दयता का उनका यह ज्ञान मील के उस पत्थर की भांती था जो रास्ता तो जानता था ले कन उस पर चला कभी नहीं। स्वामी ववेकानंद स्वयं इस बार में अपने वचार प्रगट करते हैं क:

I myself may not be a very strict vegetarian, but I understand the ideal. When I eat meat I know it is wrong. Even if I am bound to eat it under certain circumstances, I know it is cruel. I must not drag my ideal down to the actual and apologise for my weak conduct in this way. The ideal is not to eat flesh, not to injure any being, for all animals are my brothers. If you can think of them as your brothers, you have made a little headway towards the brotherhood of all souls

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 2- Pg 298

में स्वयं एक कट्टर शाकाहारी न भी होऊं कन्तु में उस आदर्श को समझता हूँ जब में मांस खाता हूँ तब जानता हूँ की यह ठीक नहीं है। परिस्थितिवश उसे खाने को बाध्य होने पर भी में यह जानता हूँ के यह क्रूरता है। आदर्श नीचा करके अपनी दुर्बलता का समर्थन मुझे नहीं करना चाहिए। आदर्श यही है। मांस न खाया जाए। कसी भी प्राणी का अनिष्ट न कया जाए क्यूं क पशुगन भी हमारे भाई हैं।

ववेकानंद साहित्य , भाग -8, पृष्ठ -9

वैदिक धर्म के ऊपर उनके व्याख्यान को उद्धरित करते हुए समाचार पत्र प्रका शत करता है क वैदिक काल में ब्राह्मन मांस खाया करते थे और अति थयों को प्रसन्न करने के लए बछड़े मारे जाते थे।

The Brahmins at one time ate beef and married Sudras. [A] calf was killed to please a guest.

Madura Mail on 28th Jan 1893

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 9- Pg 523

पुनः इस सन्दर्भ में वरोधाभासी वचार स्वामी ववेकानंद ने उद्धृत कये। News Paper Daily Lowa Capital, November 28th, 1893 को प्रका शत करता है की स्वामी ववेकानंद कहते हैं की भारत में गाय को पूजा जाता है और हिन्दू जानवरों के वध का वरोध करते हैं

He said that the Hindus were altogether opposed to the destruction of the life of any animal. He admitted the worship of the sacred cow.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 9- Pg 438

स्वामी ववेकानंद द्वारा पशु ब ल

Sister Christine को बेलुरे मठ हावड़ा से 12th November 1901 को Sister Christine को लखे अपने पत्र में लखते हैं की हमने काली मां की पूजा की और बकरे की बली दी। स्वामी जी जहाँ वैदिक धर्म पर बली का आरोप जड़ते हैं वही खुद वो ही निंदनीय कर्म करने मे संलग्न होते हैं।

We had an image, too, and sacrificed a goat and burned a lot of fireworks.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 9- Pg 169

हालाँ क स्वामी ववेकानंद वाम मार्ग के वरोधी रहे हैं ले कन स्वयं भी उसी मार्ग पर अनुसरण करते हैं . भारत में पशु ब ल का द्योतक वाम मार्ग ही हैं। क्या ईश्वर इस समस्त ब्रह्माण्ड का सृजेता वह सर्वशक्तिमान न्यायकारी परोपकारी परम पता परमेश्वर इतना निर्बल है क स्वयं के भोजनार्थ उसे अपने ही बच्चों को खाने के लए निर्भर रहना पड़ता है। यदी ऐसा है तो उसके सर्वशक्तिमान न्यायकारी परोपकारी आदि गुणों का क्या अर्थ रह जाता है? यह कुल सत मान सकता वाले मनुष्यों का इश्वर के ऊपर दोषारोपण ही है जो वह उस परम दयालु न्यायकारी सर्वशक्तिमान इश्वर को उन मांसाहारी जीवों की श्रेणी में खड़ा करने का षण्यंत्र रचते हैं जो अपने बच्चों को जन्म देखर भूख लगने पर खा जाते हैं। वह इस मांसाहारियों को पशुओ को ही खाने के लए क्यूँ कहता है? वह इनसे इन मांस भ क्षयों के मांस की इच्छा क्यूँ जाहिर नहीं करता ?यह इन मांसाहारियों का स्वयं का स्वार्थ है जिसका ये दोषारोपण ये इश्वर पर कया करते हैं ।

जिस काली को आप इश्वर की संज्ञा देते हो तो क्या वह इश्वर जिसने इस संसार का सृजन कया है जो इस संसार का सृजन स्तित्थी पालन और प्रलय करता है संसार में लोगों को कर्मों का फल देता है क्या वो इश्वर इतना लाचार है की अपने खाने के लए मानव मात्र के भरोसे रहता है। क्या जिन पशुओं की जान लेकर वह मांस व खून उसके लए चढ़ाया वे क्या उसके बालक नहीं हैं क्या वो मूक और असहाय उस परम पता की दया के अ धकारी नहीं हें। इसे इश्वर को अपने खाने के लए इन असहाय जीवों पर आ श्रत माना जाए या इन धर्म के तथाक थक धर्म के ठेकेदारों की रक्त पपासा ।

महर्षी दयानंद सरस्वती तो दूसरों के दुखो और हानि को ना समझने वाले मनुष्य को मनुष्य की संज्ञा से ही वमुख कर देते हैं। महर्षी कहते हैं की दूसरों के सुख दुःख हानि लाभ को समझना मनुष्य धर्म है, मह षे इस में बारे में लखते हुए स्वमंताव्यामंताव्यप्रकाश में हैं लखते हैं की मनुष्य उसी को कहना की मननशील हो कर स्वात्मवत अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं अ पतु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वो महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यूँ ना हो उनकी रक्षा उन्नति और प्रयाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापी उसका नाश अवनति और अ परयाचरण सदा कया करे अर्थात जहाँ तक हो सके वहाँ तक अयाय्कारियों के बल की हानि और न्याय्कारियों के बल की उन्नति सदा कया करे। इस काम में चाहे उसको कतना ही दारुण दुःख प्राप्त हो परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।

स्वमंताव्यामंताव्यप्रकाशः Papagpag पृष्ठ – 728

Mrs Ole Bull को **Alambazar Math Calcutta (Darjelling)** से **26th March 1897** को लखे अपने पत्र में अपनी बीमारी से ग्रस्त होने को बयां करते हुए स्वामी ववेकानंद लखते हैं की केवल मांस खाना ही लम्बी आयु का राज है

Admitting about the diabetes problem he said that Eating only meat and drinking no water seems to be the only way to prolong life

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 9- Pg 93

Sister Christine को **12th December 1901** को **Belur Math Hawrah** से लखे पत्र में अपनी गरते स्वास्थ्य के बारेमें लखते हुए कहते हैं की च कत्सक ने मुझे आरामकी स लाहदी है और मुझे मांस खानेसे मनाकर दिया है अब मुझे मॉस चखने तककी मनाहीहै

The doctors have put me to bed; and I am forbidden to eat meat, to walk or even stand up, to read and write. I am prevented from the taste of meat.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 9- Pg 172

-

R.M.S. Brittannic से अपने पत्र में अपने भोजन के बारे में लखते हुए स्वामी ववेकानंद कहते हैं की कुछ दिनों से में केवल मांस ही मांस खा रहा हूँ मुझे सब्जियां खाने को नहीं मल रही

Writing on continuous eastin meat he wrote from R.M.S. Brittannic to his blessed and beloved that So far the journey has been very beautiful. The purser has been very kind to me and gave me a cabin to myself. The only difficulty is the food — meat, meat, meat. Today they have promised to give me some vegetables.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 8- Pg 358

Marry की **28**th April 1897 को अपने स्वास्थय के बारे में लखते हुए स्वामी ववेकानंद लखते हैं की मेरे बाल भूरे हो गए हें चहरे पर झुर्रियां पड़ने लगी हैं और में अपनी उम्र से **20** वर्ष ज्यादा का दिखने लगा हूँ। मेरा शरीर कमजोर हो रहा है। में मांस खाने के लए ही बना हूँ ना रोटी ना आलू ना राइस ना ही शक्कर

My hair is turning grey in bundles, and my face is getting wrinkled up all over; that losing of flesh has given me twenty years of age more. And now I am losing flesh rapidly, because I am made to live upon meat and meat alone — no bread, no rice, no potatoes, not even a lump of sugar in my coffee!! I

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 391

Pramada Sas Mirtra को Almora से **39**th May 1897 को स्वामी जी लखते हैं की में मलेच्छ हूँ शुद्र हूँ क्यों क में कुछ भी खा लेते हूँ और कसी के साथ भी कुछ भी खा लेता हूँ

I m a Mlechcha, shurdra and so foth I eat anything and everything and with anybody and everybody

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 393

<u>प्रारम्भिककालमेंअन्ननहींहोनेकी सेमांसखाननैतिकथा</u>

मद्रास 1892 -93 में स्वामी ववेकानंद कहते हैं क समय के साथ वचार बतलाते रहते हैं। गाय का मांस खाना एक समय नैतिक था। वातावरण ठंडा था और अन्नों के बारे में जानकारी नहीं थी। मांस सुगमता से मल जाता था उस काल और वातावरण के हिसाब से मॉस खाना आवश्यक था।ले कन मांस खान अब अनैतिक माना जाता है

Every man, in every age, in every country is under peculiar circumstances. If the circumstances change, ideas also must change. Beef-eating was once moral. The climate was cold, and the cereals were not much known. Meat was the chief food available. So in that age and clime, beef was in a manner indispensable. But beef-eating is held to be immoral now.

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 09

स्वामी जी के यह वचार की अन्नों के बारे में पहले जानकारी नहीं थे इससे बात का द्योतक है की उन्होंने वेदाध्यन नहीं कया और वो वेदों के बारे में पाश्चात्य वचारधार के पोषक थे अन्यथा वो यह नहीं कहते। परम पता परमात्मा हमें वेदों में आदेश देते हुए कहता है की तुम अन्न खाओ। वेदों में अन्नों खाने का उपदेश होना हमारी सभ्यता के सभ्य एवं वक सत होने को प्रद र्शत करता है ले कन वेदों के बारे में पाश्चात्य वचारधार के पोषक गुलाम स्वामी ववेकानंद इस तथ्य को ना पहचान सके. वेद ना केवल हमें शाकाहार की आज्ञा देता है अ पतु कृ ष कैसे की जाए इसके बारे में भी वस्तृत जानकारी हमें वेदों में प्राप्त होती है अथर्वेद के तृतीय अध्याय के निम्न ल खत मंत्र हमें कृषी की पध्धिती के बारे में जानकारी देते हुए स्वामी ववेकानंद के इस कथन की क पहले अन्नों के बारे में ज्ञान नहीं था का पुरजोर वरोध करते हैं। आर्यो ने जीवन के प्रधान अंग भोजन की शुध्दी पर वशेष ध्यान दिया है। हमारे ऋ षयों का यह वश्वास रहा है की " आहार शुद्धौ सत्वशुद् धः सत्वशुद्धौ

ध्रुवा स्मृतिः अर्थात आहार की शु ध से सत्व की शुद् ध होती है और सत्व की शुध्दि से स्मरण शक्ति निश्छल होती है परन्तु अशुध्द आहार से सत्व और स्मृति भी अशुध्द हो जाती है

व्रीहिमत्तम यवमत्तम्थो मापमथो तिलम।

ऐश वो भागो निहितो रत्नधेयाय दांतों मा हि सश्ठं पतरे मातरे च।।

बालक को अन्नप्राशन कराने का उपदेश – हे बालक के प्रथम उत्पन्न दांतों तुम भात खाओ जौ खाओ और माप उडद की दाल और तिल खाओ

अथर्वेद षष्ठम काण्डम अध्याय 140 मंत्र 2 पृष्ठ – 306 SC (ii)

अजस्त्र मन्दुमरुषम भुरंद्युमाग्निमीदे पुर्व चत्तम नमो भ ।

स पर्व म रितुशः कल्प्मानो गाम मा हि सीरदिति वराजिम।।

यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 43 पृष्ठ 606 SC S SC (i)

अहिंसक और अ वनाषी ऐश्वर्यवान जल के सामान शीतल और शुध्ध रोष रहित सब के पोषक पूर्ण ज्ञानवान शानवान परमेश्वर या राजा को में नमस्कारों द्वारा में स्तुति करता हूँ अन्नों द्वारा पूर्व ही संग्रह करने वाले धनाड्य पुरुष को में प्राप्त करूँ। वह तू पालनकारी सामर्थ्यों से सुर्य जिस प्रकार अपने ऋतु से सबको चलाता है उसी प्रकार राज अपने राज सभा के सदस्यों से सामर्थ्यवान होता है। वह तू व वध पदार्थों गुणों से प्रका शत गौ और पृथ्वी को मत वनष्ट कर

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा व तन्वते पृथक।

धीरा देवेपुम सुम्नयौ।। अथर्वेद 3/17/1 पृष्ठ 348

वद्वान पुरुषों में सुखों के प्राप्त करने वाले आत्मा रूप क्षेत्र में वद्वान् दूरदर्शी लोग रुप हेलॉन को युक्त करते हें और धीर बुध्धिमान पुरुष योग के अंगों रूप जुओं को पृथक पृथक प्राण रूप के कन्धों पर रखते हें उसी प्रकार हे पुरुषो तुम भी करो।

युनक्त सीरा व युगा तनोत कते वपतेह वीजम ।

वराजः श्रुष्टिः साभार सभरा असन्नो नेदीय इति सनय कक्वमान यवन।।

अथर्वेद 3/17/2 पृष्ठ 350

कृषी कर्म का उपदेश करते हैं हलों को जोत लो। बैल के जोड़ों को हल के जुओं में लगाओ और हल चलाओ और बीज उत्प त के स्थान क्षेत्र के योग्य हो जाने पर उसमें बीज जो बोओ।

और   जब अन्न की बालें अन्न से पूर्ण हो जाएँ तब उसके कुछ काल बाद ही अन्न दरांती काटने के ह थयार हसुओं से काटकर प्राप्त करो।

लाङ्गल पवीरवत सुशीम सोम सत्सरू ।

उदिद वपतु गाम व प्रस्थावद रथवाहनम पीवरी च प्रफवर्यम।V।

अथर्वेद 3/17/3 पृष्ठ 350

कृषी से कतने कतने पदार्थ उत्पन्न होते हैं इसका उपदेश करते हैं सीता या फली से युक्त हल उत्तम सुख का उत्पादक और सोम बीज रूप अन्न के स्थापन करने के लए को हल चलाया जाता है वह अर्थात कृषी ही गौओं को भेड़ों को और दूर देश में प्रस्थान करने में समर्थ रथों और बैलों और घोड़ों को और हृष्ट पुष्ट शरीर वाली स्तियों को भी उन्नत कया करता है

शुनं सुफाला व तुदन्तु भू म शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान।

शुनाशीरा ह वषा तोशमाना सु पप्पला औषधी कर्त मस्मै।।

अर्थर्वेद 3/17/5

उत्तम तीक्ष फा लयें हल के नीचे लगी लोहे की तीक्ष ह लयें खूब तेजी से सुख पूर्वक भू म को खोदें और कसान लोग सुखपूर्वक अपने हल के वाहने वाले बैलों के पीछे पीछे चलें। हे सुन और शीर! वायु और सूर्य तुम दोनों प्रथ्वीस्थ जल से पृथ्वी को ही सं चत करते हुए इस आत्मा के लए या इस संसार के लए या हमारे लए उत्तम फलों से संपन्न अन्न आदि औष धयों को उत्पन्न करो।

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं क्रपतु लाङ्गलम।

शुनं वरत्रा : वध्यन्ताम शुनम मुश्तामुदी अङ्गय ।।

अर्थर्वेद 3/17/6

वाहन बैल और घोड़े सुख पूर्वक हल को खींचे हांकने वाले कसान लोग सुख पूर्वक हल चलाए और हल भी सुख पूर्वक उत्तम रूप से खेद को खोदे। रस्सियाँ भी सुख पूर्वक बांधी जाएँ और खूब उत्तम चाबुक को ऊपर उठा उठा कर चलाओ।

घ्रितेन सीता मधुना समक्ता वश्व दैवै रनुमता मरुद् भः ।

सा नः सीते पयसाभ्या व व्र त्स्वोज्स्वती घ्रितवत पन्वमाना ।।

हल में लगी फली घृत और मधु से चुपड़ी गयी और वद्वान् वैश्वगन और सभी वद्वतजनों से उपयोगी रूप से स्वीकृत है। हे सीते वह तू पुष्टिकारक अन्न देनेहारी और घी दूध आदि पदार्थों से सब को तृप्त करती हुयी पुष्टिकारक अन्न और जल के सहित हमारे पास वद्यमान रह।

ऊर्जम वहन्तरि म्रत घृतं पयः कीलाल परिस्त्रुतम।

स्वधा स्थ तर्पयत में प्रतन।।

यजुर्वेद 2/34

आप उत्तम अन्न रस रोगहारी जीवनप्रद तेजोदायक घृत पुष्टिकारक दुग्ध अन्न और सब प्रकार से स्त्र वत रस से युक्त पके फल एवं औष ध वधी से तैयार कये उत्तम रसायन आदि इन सब को धारण करते हुए मेरे पाकल वृध्ध जानो को तृप्त करो। आप अब स्वयं अपने और अपने वृध्ध पालक सत्कार योग्य पुरुषों को भी अपने बल पर धारण पोषण करने में समर्थ हो।.

वैदिककलामेंमांसभक्षण

Rakhal को **1895** में लखतेहुएस्वामी ववेकानंद लखतेहैंकीवैदिककलामेंअश्वमेधसबसे घृ णत कर्म था। सभी ब्राह्मण ने ऐसा लखा है और माना भी है ये गलत कैसे हो सकता है

And in the Vedic Ashvamedha sacrifice worse things would be done…. All the Brâhmanas mention them, and all the commentators admit them to be true. How can you deny them?

-The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 318

The old gods were found to be incongruous — these boisterous, fighting, drinking, beef-eating gods of the ancients — whose delight was in the smell of burning flesh and libations ofstrong liquor. Sometimes Indra drank so much that he fell upon the ground and talked unintelligibly. These gods could no longer be tolerated.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 2- Pg 109

प्राचीन देवताओं में चंचल लड़ाकू शराबी गौ मांसहारी देवताओं में जिनको जले हुए मांस की गंध और तीव्र सुरा की आहुती ही से परम आनंद मलता था – कुछ असंगति देखने लगे। कभी कभी इंद्र इतना मद्य पान कर लेता था की वह बेहोश होकर गर् पड़ता था और अंड बंड बकने लगता था

ववेकानंद साहित्य , भाग -2, पृष्ठ -68

अश्वमेध के बारे में ऐसी मान्यता रखना स्वामी जी के ऊपर सायन महीधर Max Muller के वेदभाष्य का प्रभाव और वेदों के बारे में उनकी अज्ञानता को ही प्रद र्शत करता है।

स्वामी दयानंद ने अश्वमेध का अर्थ करते हुए लखते हें की राष्ट्रं वा अश्वमेध: – राष्ट्र पालेन क्षत्रियानाम अश्वामेधाख्यो यज्ञो भवति। नाश्चम हटवा तदंगानाम होम्करनम चेति ।

और जो न्याय से राज्य का पालन करना है वही क्षत्रियों का अश्वमेघ है।अश्व को मार के उसके का होम करना यह अश्वमेघ नहीं है

ऋग्वेदादिभाष्यभू मका पृष्ठ 180

यदि स्वामी ववेकानंद अश्वमेघ यज्ञ का अर्थ पशु हत्या लेते हैं तो क्या पत्र यज्ञ में माता पता की हत्या कर उनके मांस से हवन करना सध्ध करेंगे और अतिथी यज्ञ में क्या अति थयों की हत्या करके उसके रक्त और मांस से हवन करने का उपदेश अपने भक्तों को प्रदान करेंगे। यदि यह हो जाये तो संसार में मानवता का क्या होगा। यह तो पतन की पराकाष्ठ होगी। यज्ञ से तो परोपकार की सध्धी होती है। यदी यज्ञ का यह अर्थ ले लया जाये तो यह तो यज्ञ के शाब्दिक अर्थ के साथ भी अत्याचार ही होगा। परोपकार का यह धर्म वेदों ने ही समस्त संसार को पढाया है उसके उस उपदेश का क्या अर्थ रह जाएगा।

महर्षी दयानंद लखते हें की जो सायन आचार्य और महीधर आदि अल्प्बुध्धि लोगों के झूठे व्याख्यानों को देख के आजकल के आर्यावर्त और युरोप्देश के निवासी लोग जो वेदों के ऊपर अपनी अपनी देश भाषाऔं में व्याख्यान करते हैं वे ठीक ठीक नहीं हैं और उन अनर्थयुक्त व्याख्यानों के मानने से मानुषों को अत्यंत दुःख होता है। इससे बुध्धिमानो को प्रमाण करना योग्य नहीं है।

ऋग्वेदादिभाष्य भू मका पृष्ठ -58

पं डत गुरुदुत्त अर्थ का अनर्थ करने वालों के वालों के प्रति यह रोष ही था जिसकी वजह से वो लखते हैं की यूरो पयन वद्वानों में पां डत्य की न्यूनता वैदिक भाषा और तत्वज्ञान से उनकी पूर्ण अनि भज्ञता ही हमारे देश में भी इतने कुसंस्कार और पक्षपात का कारनहै

मुनिवर गुरुदुत्त वद्यार्थी – पृष्ठ 142

मांसाहार शक्ती का साधन और भारत की गुलामी का कारण

स्वामी ववेकानंद की यह अवधारणा थी की मांसाहार शक्ति प्रदान करने का साधन है और मांसाहार मानव जीवन का आवश्यक अंग है। स्वामी ववेकानंद के अनुसार जीवन में मांसाहार की अनुपस्र्थिति शारीरिक एवं मान सक दुर्बलता को जन्म देती है एवं मनुष्य एवं समाज को शारीरिक बौध्धिक उन्नति के रास्ते से पृथक कर देती है ।

स्वामी ववेकानंद के मांसाहार के इतने प्रबल समर्थक थे की उन्होंने भारतवर्ष की गुलामी का कारण भारतवा सयों का मांसाहारी न होना घो षत कर दिया। स्वामी ववेकानंद कहते हैं की यदि भारतवासी मांसाहारी होते तो अंग्रेज कभी भारतवर्ष पर राज्य न कर पाते। स्वामी ववेकानंद यहीं नहीं रुके अ पतु जापान के वकास के पीछे भी जापान वा सयों का मांसाहारी होना घो षत कर दिया। स्वामी ववेकानंद का वचार था की जो लोग कहते हैं की मांसाहार स्वाश्थ्य के लए ठीक नहीं है वो बकवास करते हैं। स्वामी ववेकानंद के अनुसार मांसाहार न केवल शारीरिक शक्ती प्रदान करने का स्त्रोत है अ पतु बौद् धक शक्ती का भी हेतु है, भारत ने यदि पूर्वकाल में उन्नति की थी तो वह की भारत में ऋषी मुनि मांसाहार पर आ श्रत थे परन्तु स्वामी जी की यह दलील एक निरर्थक तर्क ही साबित होता है क्यों क भारत वर्ष में ना तो कभी मांसाहार लोगों में प्रच लत रहा, नहीं वैदिक शाश्त्रों में ऐसा करने का कोई वधान मलता है अ पतु पशु रक्षा एवं संवर्धन हेतु अनेकों उपदेश वेद मन्त्रों और शाश्त्रों ने दिए हैं। भारतवर्ष में तो आहार शुध्धी पर वशेष ध्यान दिया है जैसा आहार होगा वैसी ही बुध्धी होगी और मांसाहार इत्यादि को तो पूर्णतया त्याज्य एवं निंदनीय कर्म कहा गया है। योगीराम श्री कृष्ण भी गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए फल आहार की ही शक्षा देते हैं :

व वक्तसेवी लाध्वाशी यात्वाकक्यायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपा श्रतः।। .

गीता 18/52

ब्रह्म की प्राप्ती में योगीराज श्री कृष्ण एकांत सेवी हल का आहार करने का उपदेश देते हैं श्री कृष्ण बल का साधन सात्विक आहार ही बताते हैं।

आयुः सत्व बलारोग्यसुखप्रीति ववर्धना।

रस्याः स्निग्धाः स्थिर हृघ्या आहाराः सात्विक प्रयाः।।

गीता 17/8

आयु सत्व बल आरोग्य सुख तथा रसास्वादन की शक्ति बदने वाले रसयुक्त चकने स्थिरता प्रदान करने वालेह्रदय शक्ति वर्धक आहार सात्विक लोगों के प्रय हैं ।

-

स्वामी ववेवाकंद शक्ती का राज मांस खाने को बताते हुए कहते हैं की यदि भारत में क्षत्रिय शक्ती होती तो की अंग्रेज भारत पर राज कर सकते थे? भारत को यदि क्षत्रिय शक्ती का वकास करना है तो उन्हें मांस खाना चाहिए

“Do you think that a handful of Englishmen could rule India if we had a militant spirit? I teach meat-eating throughout the length and breadth of India in the hope that we can build a militant spirit!”

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 318

हिन्दुओं और चीन देश के निवा सयों को देखो वो कतने कमजोर हैं वो मांस नहीं खाते और कसी तरह थोड़ा खा के सब्जियों और चावल पर जी वत रहते हैं। उनकी दयनीय हालत देखो। जापान वासी भी उसी दयनीय हालत में थे ले कन वो अब बदल गए हैं उनहोंने मांस खान प्रारंभ कर दिया है भारतीय सेना में देखो कतने सैनिक शाकाहारी हैं। उनमें से श्रेष्ट गोरखा और सख शाकाहारी नहीं हैं। कुछ कहते हैं की मांसाहार स्वस्थ्य के लए हानिकारक है। कुछ कहते हैं की या बकवास है। सबसे ज्यादा शाकाहारी पेट की समस्या से ग्रस्त रहते हैं हो सकता है की शाकाहारी भोजन पेट को ठीक रखता हो ले कन इसका अर्थ यह नहीं है की आप पुरे संसार पर इसको थोपें ।

"Look at the Hindus and the Chinamen, how poor they are. They do not take meat, but live somehow on the scanty diet of rice and all sorts of vegetables. Look at their miserable condition. And the Japanese were also in the same plight, but since they commenced taking meat, they turned over a new leaf. In the Indian regiments there are about a lac and a half of native sepoys; see how many of them are vegetarians. The best parts of them, such as the Sikhs and the Goorkhas, are never vegetarians".

One party says, "Indigestion is due to animal food". The other says, "That is all stuff and nonsense. It is mostly the vegetarians who suffer from stomach complaints." Again, "It may be the vegetable food acts as an effective purgative to the system. But is that any reason that you should induce the whole world to take it?"

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 484

कोई कुछ भी कहे ले कन वास्त वकता यह है की जिस देश में मांसाहार कया जाता है वो बहादुर शक्तिशाली और दयालु होते हैं। जिन देशों में मांसाहार कया जाता है वो कहते हैं की जिन दिनों में भारत वर्ष में यज्ञ होता था और पशुओं की बली दी जाती थे उस समय भारत वर्ष में महान धा र्मक बुध्दिमान पुरुष उत्पन्न हुए। ले कन जब से भारत में ये शाकाहारी बाबाओं का आंदोलन चला है जब से एक भी व्यकी उनकी बीच में ऐसा व्यक्ती उनकी बीच में पैदा नहीं हुआ

Whatever one or the other may say, the real fact, however, is that the nations who take the animal food are always, as a rule, notably brave, heroic and thoughtful. The nations who take animal food also assert that in those days when the smoke from Yajnas used to rise in the Indian sky and the Hindus usedto take the meat of animals sacrificed, then only great religious geniuses and intellectual giants were born among them; but since the drifting of the Hindus into the Bâbâji's vegetarianism, not one great, original man arose midst them. Taking this view into account, the meat-eaters in our country are afraid to give up their habitual diet.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 484

मांस खाना बर्बरता है और शाकाहारी भोजन शुध्द उसे कौन झुठला सकता है। जो केवल आद्यात्मिक जीवन जीना चाहता है उसके लए यह आवश्यक भी है। ले कन व्यक्ती जिसे अपनी जीवन की नौका को कठिनतम श्रम से जीवन मृत्यु के संघर्ष एवं इस संसार के संघर्ष से निकालनी है उसे मांस खान चाहिए जब तक संसार में कमाजोर पर शक्तिशाली की वजय की भावना रहेगी तब तक पशुओं का मांस खान आवश्यक है अन्यथा कमजोर शक्तिशा लयों के पैरों तले कुचले जाते रहेंगे। यह सही नहीं है क कसी के शरीर पर शाकाहार से होने

वाले लाभों का वर्नन कया जाये आवश्यकता इस बात की है दो देशों का तुलानात्मन अध्ययन करके नतीजा निकाला जाए।

To eat meat is surely barbarous and vegetable food is certainly purer — who can deny that? For him surely is a strict vegetarian diet whose one end is to lead solely a spiritual life. But he who has to steer the boat of his life with strenuous labour through the constant life-and-death struggles and the competition of this world must of necessity take meat. So long as there will be in human societsuch a thing as the triumph of the strong over the weak, animal food is required; otherwise, the weak will naturally be crushed under the feet of the strong. It will not do to quote solitary instances of the good effect of vegetable food on some particular person or persons: compare one nation with another and then draw conclusions.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 485

सभ्यता के वकास पर बोलते हुए स्वामी ववेकानंद कहते हैं की देवता अन्न और शब्जियों पर जीते थे सभ्य थे और गाँव कस्बों और बागों में रहते थे और बुने हुए कपडे पहनते थे। असुर पहाड़ों पर पठारों पर रे गस्तान में और समुद्र के कनारे जंगली जानवरों पर फलों पर और देवताओं से जो उनकी गायों और भेड़ों के बदले मला उस पर जी वत रहे और पशुओं की खाल को ही पहनते थे।
देवता कमजोर थे और कठिन परिश्रम नहीं कर सकते थे असुर उनकी अपेक्षा कहीं अ धक शक्तिशाली थे

The Devas lived on grains and vegetables, were civilised, dwelt in villages, towns, and gardens, and wore woven clothing. The Asuras (The terms “Devas” and “Asuras” are used here in the sense in which they occur in the Gitâ (XVI), i.e. races in which the Daivi (divine) or the Âsuri (non-divine) traits preponderate.) dwelt in the hills and mountains, deserts or on the sea-shores, lived on wild animals, and the roots and fruits of the forests, and on what cereals they could get from the Devas in exchange for these or for their cows and sheep, and wore the hides of wild animals. The Devas were weak in body and could not endure hardships; the Asuras, on the other hand, were hardy with frequent fasting and were quite capable os suffering all sorts of hardships.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 523

स्वामी ववेकानंद के एक शष्य ने उनसे पूछा की ” क्या मांस मछली खाना ठीक है ”
स्वामी जी ने उत्तर दिया की – खूब खाओ भाई अगर इसमें कुछ गलत भी है तो वह मेरा है, भारत की जनता की तरफ देखो उनके चहरे पर कतनी दयनीयता है बड़े बड़े पेट शक्ती वहीन हाथ पैर और ह्रदय में साहस और कुछ कर जाने की इच्छा। डरे हुए कायर

Disciple: Is it proper or necessary to take fish and meat?

Swamiji: Ay, take them, my boy! And if there be any harm in doing so, I will take care of that. Look at the masses of our country! What a look of sadness on their faces and want of courage and enthusiasm in their hearts, with large stomachs and no strength in their hands and feet — a set of cowards frightened at every trifle!

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 401

शष्य : क्या मछली और मांस शक्ती प्रदान करते हैं? बौध्ध और वैष्णव क्यूँ कहते हैं की अहिंसा ही परम धर्म है

स्वामी ववेकानंद: बौध्ध और वैष्णव अगल अलग नहीं हैं बौद्ध समाज का अहिंसा का सध्धांत बहुत अच्छा है ले कन इसे बिना लोगों की सामर्थ्य और आवश्यकता को समझे थोपना ठीक नहीं है। बौध्धों ने भारत को बर्बाद कर दिया है।

Disciple: Does the taking of fish and meat give strength? Why do Buddhism and Vaishnavism preach " — Non-killing is the highest virtue"?

Swamiji: Buddhism and Vaishnavism are not two different things. During the decline of Buddhism in India, Hinduism took from her a few cardinal tenets of conduct and made them her own, and these have now come to be known as Vaishnavism. The Buddhist tenet, "Non-killing is supreme virtue", is very good, but in trying to enforce it upon all by legislation without paying any heed to the capacities of the people at large, Buddhism has brought ruin upon India. I have come across many a "religious heron"!* in India, who fed ants with sugar, and at the same time would not hesitate to bring ruin on his own brother for the sake of "filthy lucre"!

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 401

पूर्वी बंगाल के निवासी मछली और कछुए खाते हैं वे बंगाल के इस भाग के निवा सयों से ज्यादा स्वस्थ हैं

Just see — the people of East Bengal eat much fish, meat, and turtle, and they are much healthier than those of this part of Bengal.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 402

स्वामी ववेकानंद मांसाहार के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं की जितना खान है उतना खाओ और कसी निंदा की चंता न करो। आज देश में शाकाहारी बाबाओं की बाड़ आ गयी है

Swamiji: Yes, take as much of that as you can, without fearing criticism. Thecountry has been flooded with dyspeptic Bâbâjis living on vegetables only.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 402

आज राजस तत्व की अत्य धक आवश्यकता है। जिन लोगों को आप सात्विक तत्व का समझते हो उनमें से 90 प्रतिशत से अ धक गहन तामस में डूबे हुए हैं। पर्याप्त होगा यदी उनमें से 1/16 भी सात्विक हों। हमें अभी अत्य धक राजस शक्ती की आवश्यकता है इस देश

को राजस शक्ती से परिपूर्ण करना है। इस देश के लोगों को खाने और कपड़ों की आवश्यकता है उन्हें और कारगर बनाना है अन्यथा और पेड़ों और निर्जीव पत्थरों की भांती हो जायेंगे। इस लए में कहता हूँ मेरे बच्चों जितना हो सके मछली और मांस का सेवन करो

Swamiji: That is what I want you to have. Rajas is badly needed just now! More than ninety per cent of those whom you now take to be men with the Sattva, quality are only steeped in the deepest Tamas. Enough, if you find one-sixteenth of them to be really Sâttvika! What we want now is an immense awakening of Râjasika energy, for the whole country is wrapped in the shroud of Tamas. The people of this land must be fed and clothed — must be awakened — must be made more fully active. Otherwise they will become inert, as inert as trees and stones. So, I say, eat large quantities of fish and meat, my boy!

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 5- Pg 402

भक्ती योग पर भाषण देते हुए स्वामी जी कहते हैं जो मांस खाता है वह खुद ही पशुओं को मारे। मांस खान उनको लए आवश्यक है कठिन परिश्रम करते हैं और जिन्हें भक्त नहीं बनाना है।

That It would be better if every amn who eats meat killed the animal himself Eating meast is only allowable for the people who do very hard work and who are not going to be bhakts

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 4- Pg 4-5

प्राम्भ में मेरे गुरु शाकाहारी थे ले कन यदी मांस काली माँ को चड़ाया जाए तो वह उसे मस्तक से लगा लया करते थे। कसी की हत्या करना निःसंदेह ही पाप कर्म है ले कन ले कन रसायनशाश्त्र की खोज ने यह साबित कया है की शाकाहार मानव शरीर के लए उपयुक्त नहीं है इस लए मॉस खाने के अलावा कोई नहीं है। यदी मनुष्य को सं क्रय रहना है तो मांस खान ही एक साधन है। यह सत्य है की सम्राट अशोक ने अनोंको जानवरों का जीवन तलवार की धार से बचाया था ले कन हजारों सालों की गुलामी उससे कही अ धक बुरी है। कुछ बकरियों की जान लेना या फर अपनी पत्नी बेटियों की रक्षा करने में असमर्थ रहना अपने पुत्र के हाथों से खाने को लुटते हुए बचाना में असमर्थ रहना इसमें से कोनसा अ धक पाप कर्म है। जो कठिन परिश्रम नहीं करते हैं लए शाकाहार पर जीना ठीक है ले कन जो परिश्रम करके अपनी जी वका चलाते हैं उनके लए मासाहार आवश्यक है। सभी के ऊपर शाकाहार को थोपना ठीक नहीं है और ये ही देश के गुलाम होने का कारण है। जापान इसका उदाहरण है की भोजन क्या कर सकता है

About vegetarian diet I have to say this — first, my Master was a vegetarian; but if he was given meat offered to the Goddess, he used to hold it up to his head. The taking of life is undoubtedly sinful; but so long as vegetable food is not made suitable to the human system through progress in chemistry, there is no other alternative but meat-eating. So long as man shall have to live a Râjasika (active) life under circumstances like the present, there is no other way except through meat-eating. It is true that the Emperor Asoka saved the lives of millions of animals by the threat of the sword; but is not the slavery of a thousand years more dreadful than that? Taking the life of a few goats as against the inability to protect the honour of one’s own wife and daughter, and to save the morsels for one’s children from robbing hands — which of these is more sinful? Rather let those belonging to the upper ten, who do

not earn their livelihood by manual labour, not take meat; but the forcing of vegetarianism upon those who have to earn their bread by labouring day and night is one of the causes of the loss of our national freedom. Japan is an example of what good and nourishing food can do.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 4- Pg 487

-

<u>मांसशक्तीकासाधननहींअ पतुरोगयुक्तजीवनकाआवाहन</u>

मांस खाना शक्ती का साधन अ पतु बीमारियों को दावत देने के सामान है। 12 March,2012 को The New York Times, प्रका शत करता है क मांस खाने से कैंसर और ह्रदय संबंधी रोगों का खतरा अ धक बड़ जाता है। जितना आप मांस खाते हैं उतना ही रोग ग्रस्त होने का खतरा बढता जाता है।

1980 से 2006 तक 121342 लोगों पर कये गए प्रयोग के आधार पर Archeivesof Internal Medicines में प्रका शत रिपोर्ट कहती है की इस समूह में 23926 मौते हुईं जिनमें से 5910 कैंसर की वजह से और 9464 ह्रदय रोग की वजह से थीं।

रिपोर्ट आगे कहती है की जो लोग ज्यादा मांस काहते हैं वो शारीरिक रूप से कम क्रयाशील होते हैं और उनमें धुम्रपान की लत ज्यादा पायी जाती है। प्रतिदिन मांस खान इस खतरे को और बड़ा देता है

मांस है ही सड़ी हुयी वस्तु। जब तक वो जी वत शरीर के अन्दर है तब तक को ठीक है जैसे ही उसे मारकर रखा जाए कुछ समय पश्चात् उसमें से दुर्गन्ध आने लगती है। कोई व्यक्ती दो दिन पुरानी लाश के पास बैध भी नहीं सकता। यही वो कारण है की जिस के कारण कोई मांसाहारी जी वत पशु को मारकर ही मांस खाता है भी स्वयं मरे हुए जीव का मांस नहीं खाता क्यूं क उसमें प्राण निकलने के साथ ही दुर्गन्ध होने लगती है और यही रोगों का कारण है।

<u>स्वामी ववेकानंद स्वयं को 31 तरह की बीमारियां</u>

स्वामी ववेकानंद स्वयं 31 तरह की बीमारियों से ग्र सत थे। The Indian Express 6 Jan,2012 को प्रका शत करता है क स्वामी ववेकानंद को 31 तरह की बीमारियां थीं। पत्र की वो Insomnia ,Liver ,Kidney ,Malaria ,Migraine, Diabetes और Heart जैसी बीमारियों से ग्र सत थे।बंगाली लेखक ने ववेकानंद को बीमारियों के मंदिर की संज्ञा दे डाली है।

डॉक्टर जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक "स्वास्थय के शत्रु अंडे व मांस" में पाश्चात्य वद्वानों की इस बारे में निम्न ल खत टिप्प ड़यां दी हैं:

Appendicites is practically unknown among vegetarians – Dr. Lucas Champoniere

शाकाहारियों में अपेंडीसाईतीज का रोग नहीं होता है

Cancer are caused by diseased meat- Dr. Lefenwill

केंसर का रोग दू षत मांस खाने के कारण होता है

There is more suicide in England where most meast is eaten and beer is drunk and less in scotland where less meat is taken…. suicides is believed to be increasing in England and so is the meat eaten per head of population – Uric Acid – Dr. Heg

अर्थात इंग्लेंड में मांस और शराब का अ धक प्रयोग होत्ता है अतः इंग्लेंड में आत्महत्या अ धक होती है। स्काटलैंड में कम है इस लए कम। इंग्लैंड में मास अ धक खाया जाता है परिणामस्वरूप आत्महत्या बड़ रही है।

Mil bread butter vegetables and scotch broth (mixed barley and other vegetables) are the very best of all foods for children and they should be given in abundance …. Flesh eating chldre are often nervous thin. Dr. T.S> Clouston

दूध रोटी मख्खन तरकारी और द लया बच्चों के लय सब भोजनों में सर्वश्रेष्ठ है और पर्याप्त मात्रा में देने चाहिए। मांस खानेवाले बच्चे धैर्यहीन और दुर्बल होते हैं

As a medical man I desire to add my tesimoney both from the result of my personal experience and from observation through many years of hospital and private practice I ascertain that flesh eating is unnecessary un antural and unwholesome Dr. Jaanwood M. P.

अर्थात एक डॉक्टर के रूप में अपने वैयक्तिक तथा सार्वजनिक अनुभव जो क अस्पताल तथा निजी व्यवसाय में हुए हैं के आधार पर में बल पूर्वक घोषणा करता हु नकी मांस भोजन अनावश्यक अस्वाभा वक तथा स्वस्थ्य के लए हानिकारक है

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती लखते हैं क मांस खाने से शक्ति और वीरता आती है यह वचार भ्रमपूर्ण एवं मूर्खतापूर्ण है। शक्ति शाक और फलों में है मांस में नहीं मांस का खाना तो नाना प्रकार की बीमारियाँ लाता है। मांस अस्वाभा वक भोजन है इसके भक्षण से भगन्दर क्षय और अंत ड़यों में कीड़े पढ़ना आदि अनेक व्या धयां उत्पनन हो जाती हैं। मांस भक्षण से प्राय कब्ज की बीमारी हो जाती है। कब्ज से अन्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं। मांस भक्षण की जिव्हया मैली रहती है मुखमंडल का रंग फीका रहता है। आँखों के इर्द गर्द झल्लियाँ पद जाती हैं। साँस और पसीने में बदबू उत्पन्न हो जाती है। स्वभाव में चंचलता और चड चडापन आता है। डॉक्टर टर्नर जो बने के स्वस्थाध्यक्ष थे ने एक बार लखा था की क्षय रोग पशुओं में बहुत फैला हुआ है। प क्षयों में इस रोग की मात्रा और भी अ धक है वशेषकर मु र्गयों और हंसों में। वन्य पशु भी इस रोग से बहुत पी ड़त होते हैं। सूअर का सारा शरीर इस रोग के कीटाणुओं से भरा रहता है। ये पशु तो केवल सफाई कर्मचारी का काम दे सकते हैं। कदा चत ही कसी सूअर का मॉस स्वास्थ्यदायक हो, क्यो क इसका स्वाभाव ही गन्दगी खाना है। जो जानवर ऐसी घृ णत वास्तु खाता है उसका मांस कदा प नहीं खाना चाहिए

इसी सन्दर्भ में अग्नीव्रत नैष्ठिक लखते हैं की कुछ दिन पूर्व मैड काऊ नामक बीमारी उरोप में फ़ैली जिससे गोभक्षक पापी मरे। यह बीमारी उन गायों का मांस खाने से फ़ैली थी जिन्हें यह रोग था। गायों में यह रोग उन्हें मांस उत्पादनार्थ मोटा करने के लए मांस खलाने से फैला और गाय मरने लगी। जब उनसे यह रोग मनुष्यों में फ़ैलने लगा तो नर पशाचों ने निर्दोष गायों को जी वत जला दिया। जब शाकाहारी पशुओं को अप्राकृतिक आहार मांस खलाने से यह समस्या उत्पन्न हई तब क्या शाकाहारी मनुष्य को अप्रकृत आहार मान खलाने से रोग नहें फैलेंगे? वर्ष 1997 में हांगकांग में मुर्गी के मांस व अण्डों को खाने से बर्ड फ्लू नामक बीमारी फ़ैली थी जिसमें 12 लाख मु र्गयों को जला कर मार डाला था तब से यह बीमारी आम हो गयी है और प्राय दो चार साल बाद फैलती ही रहती है

वदेशीराज्यफैलने काकारण

स्वामी दयानंद सरस्वती लखते हैं की वदे शयों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण – आपस की फूट मतभेद ब्रम्हचर्य का सेवन न करना वद्या न पड़नी ना पडानी बाल्यावस्था में अस्व्यम्वर ववाह वषयासक्ति मथ्याभाशानादी कुलक्षण वेद वद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा वदेशी आकर पञ्च बन बैठता है। क्या तुम महाभारत की बाते जो पाच सहस्त्र वर्ष के पहले हुयीथी उनको भूल गए? देखो! महाभारत युध्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते पीते थे। आपस की फुट से कौरव पांडव और यादवों का सत्यानंश हो गया सो तो हो गया परुन्तु अब भी वही रोग पीछे लगा है न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छुटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुखसागर में डूबा मरेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे स्वदेश वनाशक नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक बी चल कर दुःख बडा रहे हैं परमेश्वर कृपा करे की यह महाराज रोग हम आर्यों में नष्ट हो जाए

सत्यार्थ प्रकाश : दशम सम्मुलास

श्राध्धमेंपशुबलीऔरमनुपरपशुहत्याकादोषारोपण

एक स्थान पर शाश्त्र कहते हैं की यज्ञ मे क यज्ञ में पशुओं को मारो दुसरे पर ये कहते हैं की कसी की जान मत लो। हिन्दू सोचते हैं की यज्ञ के अलावा कसी की भी जान लेना पाप है ले कन यज्ञ में बली देकर कोई बिना पाप का भागी बने मांस का स्वाद ले सकता है। वास्तवमेंकुछगृहस्थके लए कुछ नियमहैंजहाँउसेकुछअवसरोंपरपशुओंकोमारनाआवश्यकहैजैसेकीश्राध्धइत्यादि। यदि वह इस अवसरों पर बली नहीं देता है तो पाप का माना जाता हैमनुकहतेहैंकीजिनकोश्राध्धनिमंत्रणदियागयाहैऔरदुसरेआयोजनोंमेंजहाँपशुओंकामानपरोसाजाताहैयदिवोवहमांसनहींखातेहैंतोअगलेजन्ममेंपशुओंकीश्रेणीमेंजन्मलेतेहैं।

In one place the Shastra dictates, “Kill animals in Yajnas”, and again, in another place it says, “Never take away life”. The Hindus hold that it is a sin to kill animals except in sacrifices, but one can with impunity enjoy the pleasure of eating meat after the animal is sacrificed in a Yajna. Indeed, there are certain rules prescribed for the householder in which he is required to kill animals on occasions, such as

Shraddha and so on; and if he omits to kill animals at those times, he is condemned as a sinner. Manu says that if those that are invited to Shraddha and certain other ceremonies do not partake of the animal food offered there, they take birth in an animal body in their next.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 6- Pg 481

स्वामी ववेकानंद गृहस्थों के लए कुछ नियम बताते हुए कहते हैं क उनके लए कुछ नियम के पालन हेतु जीव हत्या करना एवं मांस खान अनिवार्य है ले कन यहाँ ना तो वे उन नियमों का जिक्र करते हैं की वे कौनसे ऐसे नियम हैं जो जीव हत्या और मांसाहार को ग्राहस्थ्य के लए आवश्यक बताते हैं ना ही कसी धर्म शाश्त्र का ही उद्धरण देते हैं। एक श्राध्द का नाम उन्होंने अवश्य दिया है की गृहस्थ को इसमें जीव हत्या करना बली देना आवश्यक था।

स्वामी दयानंद सरस्वती श्राद्ध शब्द की बड़ी ही अच्छी व्याख्या करते हुए लखते हैं क जो वद्वान् देव ऋषी और पतरों की श्रध्दा पूर्वक सेवा करना है उसी को श्राद्ध जानना चाहिए। (रिग्वेदादि भाष्य भू मका पृष्ट 197) यहाँ कहीं भी जीव हत्या का वधान नहीं है।

मनु के बारे में यह दोषारोपण करना क मनु कहते हैं की जिनको श्राध्ध में निमंत्रण दिया गया है और दुसरे आयोजनों में जहाँ पशुओं का मांस परोसा जाता है यदि वो वह मांस नहीं खाते हैं तो अगले जनम में पशुओं के रूप में जन्म लेते हैं वो ही कह सकता है जिसने कभी मनु को पडा ही नहीं या फर वो प्र क्षप्त श्लोकों में भेद ना कर सका। मानवमात्र के लए कानून के र चयता मह र्ष मनु ने मासाहार के सम्बन्ध में एक नहीं आठ प्रकार के पाप एवं दोशारो पयो का वर्णन कया है –

अनुमन्ता वश सता निहन्ता क्रय वक्रयी ।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घटका। । मनुस्मृति **5/51**

अर्थात मांसाहार की अनुमति देने वाला खरीदने व बेचने वाला मांस काटने वाला पशु मारने वाला पकाने परोसने वा खाने वाला ये आठ घोर पापी हैं। ऐसा प्रतीत होता है की स्वामी ववेकानंद ने मह र्ष मनु के ये श्लोक पड़े नहीं थे। जो मांसाहार के बारे में इतनी वस्तृत व्याख्या करने वाले महर्षी मनु पर मांसाहार का आरोप लगना महर्षी की छ व पर कुठाराघात का एक असफल प्रयास ही है।

मह र्ष मनु ने मांस को वर्जित कया है –

वर्जयेन्मधु मासं। मनु 6/14

ना कृत्वा प्रा णनां हिंसा मान्स्मुत्पध्यते क्व चत ।

न च प्रानिवध: स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसम ववर्जयेत। । मनु 5/48

प्रा णयों की हिंसा कये बिना कभी मांस प्राप्त नहीं होता और जीवों की हत्या करना सुखदायक नहीं है इस कारण मांस नहीं खाना चाहिए

यो बंधन वध्क्लेशान प्रा णनाम न चकीर्षति ।

स सर्वस्य हित्प्रेप्शुः सुख मत्यंत मंश्रुते । । मनु 5/46

जो व्यक्ति प्रा णयों को बंधन में डालने वध करने उनको पीड़ा पहुंचाने की इच्छा नहीं करता वह सब प्रा णयों का हितैषी बहुत अ धक सुख को प्राप्त करता है

समुत्प त्त च मांसस्य वध्बन्धौ च देहिनात।

प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्व मांसस्य भक्षणात । मनु 4/49

मांस की उत्प त्त जैसे होती है असको प्रा णयों की हत्या और बंधन के कष्टों को देखकर सब प्रकार के मांस भक्षण से दूर रहे

यो हिन्सकानि भूतानि हिन्सत्यात्म्सुखेच्या ।

स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वा चत्मेधते । । मनु 5/45

जो मनुष्य अपने सुख के लए अहिंसक प्रा णयों की हत्या करता है वह न इस जीवन में सुख पाता है न जीवांतर में

<u>शाश्त्रोंमेंमांसभक्षणकानिषेध</u>

सुरां मत्सयान्मधु मांसमान्सव क्रसरौदनम ।

धुर्तः प्रवर्तितं ह्ये तन्नैतद वेदेषुकल्पितम। । शांतिपर्व 264/9

सुरा मछली मद्य आसव आअदि खाना धूर्तों ने प्रच लत कया ही वेद में इन पदार्तों के खाने पीने का वधान नहीं है

अ धम्सा परमो धर्मः सर्व्प्रन्भ्रितम वर।   आदि पर्व 11/13

 कसी भी प्राणी को न मारना ही परम धर्म है

प्रानिनाम्वधस्तात सर्वज्यायान्मतो मम ।

अनृतम वा वादेद्वाचं न तू हिस्यात्काथ्प्राप्त। । कर्ण पर्व 69/23

में प्रा णयों का न मरना ही सबसे उत्तम मानता हूँ। झूठ चाहे बोल दे पर कसी की हिंसा ना करे।

जी वतुम यह स्वयं चेच्छेत कथं सॊन्यम प्रघात्येतु ।

यद्यदात्मनि चेच्छेत तत्परस्या प चन्तयेत। । शांती पर्व 259/22

जो स्वयं जीने की इच्छा करता है वह दूसरों को कैसे मारता है ? प्राणी जैसा अपने लए चाहता है वैसा दूसरों के लए भी वह चाहे। कोई मनुष्य यह नहीं कहता की कोई हिंसक पशु

वा मनुष्य मुझे मेरे बल बच्चों इष्ट मत्रों व सगे सम्बन्धियों को कसी प्रकार का कष्ट दे वा हानि पहुंचाए अथवा प्राण ले वा इनका मांस खाए। एक कसाई जो प्रतिदिन सैकड़ों वा सहस्त्रों प्रा णयों के गले पर छुरी चलता है आप उसको एक बहुत छोटी और बारीक सी सूरी चुभोएँ तो वह इसे कभी सहन नहीं करता। फर अन्य प्रा णयों की गर्दन काटने का अ धकार उसे कहाँ से मल गया। प्रा णयों का हिंसक कसाई महा पापी होता है ।

घातकः खडकी वा प तथा य्श्चानुमंयते ।

यावन्ति तस्य रोमानी तावडू वर्षानी मज्जति। । अनुशाशन पर्व

मारने वाला खाने वाला सम्मति देने वाला ये सब उतने दुःख में दुबे रहते हैं जितने के मरने वाले पशु के रोम होते हैं। अर्थात मांसाहारी धातकी आदि लोग बहतु जन्मों तक भयंकर दुखों को भोगते रहते हैं।

धर्मशीलो नरो वद्वानीहको नहेकॉ प वा ।

आत्मभूतः सदालोके चरेद भुतान्यहिसया। । शांति पर्व 264/8

धा र्मक स्वभाव वालापुरुष इस लोक को चाहता हो व न चाहता हो सबको सामान समझकर कसी की हिंसा न करता हुआ संसार यात्रा करे कसी को ना सताए

<u>बुध्धकी वचारधाराऔरस्वामी ववेकानंद</u>

जिस बुध्ध को स्वामी ववेकानंद इश्वर का अवतार बताते हैं उनके मांस भक्षण के वरुध्ध कये कार्य को व्यक्त करते हुए Francisco on march 18th 1900 में " वश्व को बुध्द का सन्देश" पर बोलते हुए कहते हैं की बुध्द ने केवल कहा ही नहीं बल्कि वो वश्व के लए अपनी जान देने तक तैयार थे। बुध्ध ने कहा की यदी पशुओं को मारना अच्छा है तो मनुष्य को मारना उससे बेहतर है।

बुध्ध को आत्मा का अस्तित्व मान्य नहीं था ले कन फर भी उन्होंने बौध्ध भक्षुओं को उपदेश देते हुए परोपकार धर्म को ही अपनाने को ही बल दिया। बुध्ध कहते हैं क जैसा में वैसे ही ये जैसे ये वैसा ही में इस प्रकार अपनी उपमा समझ कर न तो कसी को मारे और न मरवाए।

यथा अहम् तथा एते यथा एते तथा अहम् ।

अत्तानाम उपमं कत्वा न हनेय्यम न घातये ।।

बुध्ध आगे उपदेश देते हैं क जो अपने सुख के लए जो दुसरे प्रा णयों की हिंसा करता है उसे मरने पर सुख नहीं मलता

सुख्कामानी भूतानि यो दन्देन वहिंसती ।

अफसोस है की जिस बुध्ध के जीव रक्षा के सन्देश को वो जन जन तक पहुचाने का काम कर रहे थे और जिनकी कथनी और करनी को एक जैसा होने का उन्हें ज्ञान था उसी बुध्ध को इश्वर का अवतार बताने वाले स्वामी ववेकानंद अपनी कथनी और करनी में एकरसता नहीं ला सके और पता नही कतने बेजबान पशुओं को अपनी मांस भक्षण की लालासाका ग्रास बना बैठे।

This was what Buddha taught. And he did not merely talk; he was ready to give up his own life for the world. He said, “If sacrificing an animal is good, sacrificing a man is better”,

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 8- Pg 98

<u>योगेश्वरश्रीकृष्णऔर ववेकानंद</u>

स्वामी ववेकानंद से 1898 में बैलुर मैथ निर्वाण के समय एक शष्य ने प्रश्न कया की मछली तथा मॉस क्या उ चत तथा आवश्यक है। स्वामी जी देते हैं क – खूब खाओ भाई जो पाप होगा वह मेरा। देश के की और एक बार ध्यान से देखो तो मुंह पर मलीनता की छाया छाती में न साहस न उल्लास पेट बड़ा हाथ पैरों में शक्ती नहीं – डरपोक और कायर (ववेकानंद के में – पृष्ठ – 179)

कर्म के सध्धांत के बारे में वही व्यक्ती ऐसा कह सकता है जिसने श्री कृष्ण को ना पड़ा हो ले कन श्री कृष्ण को ईश्वर का अवतार
बताने वाले एवं गीता पर उपदेश देने वाले स्वामी ववेकानंद ऐसी बात कहे तो आश्चर्य होना स्वाभा वक ही है। योगेश्वर श्री कृष्ण गीता के पांचवे अध्याय के पंद्रहवे श्लोक में कहते हैं क:

नादुत्ते कस्य चत्पापं न चैव सुकृतं वभुः ।

अग्यानेंवृतम ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।।

वह परमात्मा न तो कसी के पापों को अपने ऊपर लेता है न कसी के पुण्य को छीनता है फर भी लोग परमात्मा हमारे पापों के बदले अवतार लेकर कष्ट भोगेगा अथवा हमारे अमुक मंत्रोच्चार से अमुक पुण्यात्मा के पुण्य नष्ट होकर वह भी नष्ट हो जाएगा इस प्रकार के मथ्या वश्वास में पड़े रहतेहैं . हमारे सब पाप पुण्य का फल हमको ही भोगना है। परन्तु यह ज्ञान अज्ञान से थका हुआ है इस लए प्राणी मोह जाल में फंस जाते हैं (श्रीमद्भागवद्गीता – पृष्ठ 126)

एक व्यक्ती के कर्म दुसरे व्यक्ती के सुख दुःख का कारण कैसे बन सकते हैं। व्यक्ती को स्वयं के कये हुए पाप कर्मों का फल स्वयं ही भोगना पड़ता है। यदी कसी के कये हुए का फल दुसरे को मलने लगे तो ईश्वरीय नियमों में नित्यता का क्या अर्थ रह जाएगा। महाभारत के शांती पर्व में भी यही कहा है की –

यथा धेनु सहश्त्रेशु वत्सो वन्दते मातरम ।

तथा पूर्व कृतं कर्म कर्तारमनु गच्छति । । 5/15

अर्थात जैसे बछड़ा हजारों गायों के बीच में अपनी माँ को ढूंड लेता है वैसे ही कया हुआ कर्म अपने करने वाले को जा पकड़ता है।

वेद भी इसी तत्थ्य की पुश्टी करते हुए कहते हैं क "स्वयं य्जस्व स्वयं जुशस्व महिमा ते नान्येन सनशे यजुर्वेद 23/15" मनुष्य स्वयं ही कर्म करे और स्वयं ही फल भोगे

योगेश्वर श्री कृष्ण समस्त प्रा णयों में सम दृष्टी रखने का एवं सभी के सुख दुःख को अपना सुख दुःख समझकर समद्रिष्टी रखने का उपदेश देते हुए कहते हैं क

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति यो अर्जुन ।

सुखं वास यदि वा दुखम स योगी परमो मतः ।

हे अर्जुन जो अपने आपको उपमान रखकर अर्थात जैसा दुःख मुझे होता है ऐसा ही होता है यह समझकर समभाव से सबकी सेवा करता है उसे परम योगी माना जाता है। शंकर ने अपने गीता भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए लखा है की जो मनुष्य यह समझ जाता है की जैसे मुझे अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख का अनुभव होता है वैसे ही दूसरों को भी अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख होता है वह कभी कसी के प्रतिकूल आचरण नहीं करता है।

जयदयाल इसी का भाष्य करते हुए तत्वा ववेचनी में लखते हैं की सर्वत्र आत्मदर्शी हो जाने के कारण समस्त वराट वश्व उसका स्वरुप बन जाता है। जगत में उसके लए दूसरा कुछ रहता ही नहीं। इस लए जैसे मनुष्य अपने आपको कभी कसी प्रकार ज़रा भी दुःख पहुंचाना नहीं चाहता तथा स्वाभा वक ही निरंतर सुख पाने के लए ही अथक चेष्टा करता रहता है ऐसा करके न वह कभी अपने पर अपनेको कृपा करने वाला मानकर बदले में कृतज्ञता चाहता है न कोई अहसान करता है और न अपने को कर्त्तव्य परायण समझकर अ भमान ही करता है वह अपने सुख की चेष्टा इसी लये करता है की उससे वैसा कये बिना रहा ही नहीं जाता यह उसका सहज स्वभाव होता है ठीक वैसे ही वह योगी समस्त वश्व को कभी कसी प्रकार कं चत भी दुःख न पहुंचाकर सदा उसके लए सहज स्वभाव ही चेष्टा करता है।

योगेश्वर श्री कृष्ण समस्त में सम भाव रखने और सबके साथ शाश्त्रानुकुल व्यवहार करने का देते हुए कहते हैं की सर्व्भुतास्थिस्थतम यो मां भज्त्यॆक्त्वमस्थित:. सर्वथा वर्त्मानोअपी स योगी मयि वर्तते। (गीता 6/31) प्राणी मात्र को सुख दुःख का अनुभव एक सा होता है इस एकता को समझकर जो मुझे प्राणी मात्र की सेवा समझकर मेरा ही अनुकरण करता है वह ही सच्चा योगी है।

इश्वर भक्त के लक्षण बताते हुए योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं की " वद्या वनय सम्पन्ने ब्रहामने ग व हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पं डता: समद र्शनः (गीता 5/18) प्रभु को सर्वत्र

वद्यमान जानने वालाल मनुस्य्स वद्या वनय से युक्त ब्राह्मण गौ हाथी कुत्ते और चंडाल आदि में सम रूप से अवस्थित प्रभु का प्रत्यक्ष अनुभव करता है और इन सबको सामान दृष्टी से देखता अर्थात व्यवहार करता है। जब मनुष्य हर व्यक्ती के अन्दर प्रभु का प्रतिरूप देखता है तो उसका उन प्रा णयों के प्रति द्वेष की भावना जाती रहती है और वह समस्त प्रा णयों में श्रेष्ठ ब्राह्मण से लेकर न्रि क्रष्ठ चंडाल में तथा पशुओं में श्रेष्ठ गाय से लेकर पशुओं में निकृष्ट कुत्ते तक को समभाव से देखता है।

काश गीता पर उपदेश देने वाले स्वामी ववेकानंद ने योगेश्वर श्री कृष्ण के उपदेशों को अपने जीवन में उतारा होता।

स्वामी ववेकान्द का यह कथन की मॉस मचली खूब खाओ और पाप की चंता मत करो चार्वाक दर्शन से ही मेल रखता है जहाँ ऋण लेकर भी सुख पूर्वक रहने की कल्पना की गयी है ।

यावाज्जीवेत सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पबेत।

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

जब तक जीयें सुख पूर्वक जीयें। ऋण लेकर भी घी पी अर्थात सुख सु वधाओं का आअनन्द उठाये। इस शरीर के भस्म हो जाने पर कस का क्या लेना और कसी का क्या देना ना लेने वाला फर कभी यहाँ आएगा और न देने वाला।

स्वामी ववेकानंदके वरोधाभासी वचार

स्वामी ववेकानंद अपने वचारों पर स्थिर नहीं रहा करते थे जहाँ वो कहीं मांस भक्षण को माया और न्यायसंगत शरिरित शक्ती के लए आवश्यक घो षत करते हैं वहीं पर वो उसे गलत भी बोलते हैं और अहिंसा का समर्थन करते हैं। स्वामी ववेकानंद जहाँ पर वेदों की पशु हिंसा को बढ़ावा देने के लए अनर्थंक निन्दा करते हैं वही पर न केवल स्वयं मांस भक्षण करते हैं बल्कि अपने भक्तों को मांस खाने के लए प्रेरित करते हुए कहते हैं की मांस खाना तो शक्ती प्राप्त करने के लए आवश्यक है। जो मेहनत करते हैं उनके लल्ये मांस भक्षण को अनिवार्य बताते हैं स्वामी ववेकानंद अपने वचारों में इतने परिवर्तन करते थे. स्वामी ववेकानंद के भाषणों में परस्पर वरोधी वचारों की भरमार है। सत्यार्थ भास्कर में स्वामी वद्यानंद सरस्वती इस बारे में “Teachings of Swamee Vivekanand” के सम्पादक की भू मका उद्धरित की है

“ Vivekanand was the last person in the world to worry about formal consistency. He almost always spoke extempore, fired by the circumstances of the moment, addressing himself to the condition of a particular group of hearers reacting to the intent of a certain question. That was his nature and he was supremely indifferent if his words today seemed to contradict those of yesterday.

स्वामी अपनी पुस्तक राज योग के बारे में लखते हैं के राज योग के आठ भागों में से एक है अहिंसा। योगी को चाहिए की वह तन- मन- वचन से कसी के वरुध्ध हिंसाचार न करें। भोजन के मानव शरीर पर होने वाले प्रभाव के बारे में लखते हैं की मानव शरीर पर प्रभाव देखा जा सकता है आप च ड़या घर में जाके यह भली भांति समझ में आ जायेगा हाथी बड़ा भारी प्राणी है परन्तु उसकी प्रकृति बड़ी शांत है और यदि तुम संह या बाघ के पंजड़े की और जाओ तो देखोगे की वो बड़े चंचल है इससे समझ में आ जाता है की आहार का तारतम्य कतना भयानक परिवर्तन कर देता है हमारे शरीर के अन्दर जितनी शक्ती कार्यशील है वो आहार से पैदा हुयी है।

योग को अहिंसा का आवश्यक तत्व बत्ताने वाले ववेकानंद इसकी वकालत तो करते हैं ले कन न वो इसे अपने जीवन में उतारते हैं आना दूसरों को इसे अपनाने पर जोर देते हैं अ पतु इसके वरुध्ध उपदेश देते हुए कहते हें की यदी संसार में जीना है तो मांस खान चाहिए। स्वामी वद्यानंद सरस्वती के शब्दों में यदि कहें तो स्वामी ववेकानंद उस मील के पत्थर की भांती थे जो रास्ता तो जानता है ले कन उस पर चला कभी नहीं

राजयोग के बारे में स्वामी ववेकानंद लखते हैं की यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान और समा ध ये राजयोग के व भन्न अंग या सोपान हैं।यमका अर्थ है अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य औरअपरिग्रह । इस यम से चत्त शुध्धि होती है। शरीर मन और वचन के द्वारा कभी कसी प्राणी की हिंसा न करना या उन्हें क्लेश न देना – यह अहिंसा कह्ताला है/ अहिंसा से बढकर और धर्म नहीं। मनुष्य के लए जीव के प्रति यह अहिंसा भाव रखने से अ धक और कोई उच्चतर सुख नहीं है

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 101

जो योगी होने की इच्छा करते हैं और कठोर अभ्यास करते हें, उन्हें पहली अवस्था में आहार के सम्बंध में कुछ वशेष सावधानी रखनी होगी । जो शीघ्र उन्नति करने की इच्छा करते हैं , वे यदि कुछ केवल दूध और अन्न आदि निरा मष भोजन पर रह सके तो उन्हें साधना में बड़े सहायता मलेगी।

“प्रत्याहार और धारणा” ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 88

सभी नीति संहिताओं में एक ही भाव भन्न भन्न रूप प्रका शत हो हुआ है और वह है – दूसरों का उपकार करना। मनुष्यों के , प्रति सारे प्रा णयों के प्रति दया ही मानव जाती के समस्त सत्कर्मों का पथ प्रदर्शक प्रेरक है

मनुष्य का यथार्थ स्वरुप

ववेकानंद साहित्य भाग -2, पृष्ठ 15

सर्वशाशत्रपुरानेशु व्यासस्य वचनद्वयम।

परोपकरास्तु पुण्याय पापाय परपीडनम।।

सब शाश्त्रों और पुराणों में व्यास के ये दो वचन हैं – परोपकार से पुण्य होता है और परपीड़ा से पाप

वविेकानंद साहित्य भाग -2, पृष्ठ 337

अहिंसा का सदा पालन करो

अमेरिका में स्वामी जी द्वारा लखाया हुआ नारद भक्ति सूत्र का मुक्त अनुवाद

वविेकानंद साहित्य भाग -3, पृष्ठ 292

मन की शक्ती के में स्वामी वविेकानंद कहते हैं की “जो नैतिक है वह संभवतः कसी प्राणी या व्यक्ति की हिंसा नहीं करेगा। जो मुक्त होना चाहे उसे अहिंसक बनाना पड़ेगा। जिसमें अहिंसा का भाव है उससे बढकर शक्तिशाली कोई नहीं है। उसकी उपस्थिति में न तो कोई लड़ सकता है और न झगडा कर सकता है हाँ वह जहाँ कहीं होगा वहीं उसकी उपस्थिति मात्र से शांति और प्रेम उद्भूत होगा दूसरी कसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। उसकी उपस्थिति में न तो कोई क्रुद्ध होगा न लडेगा। उसके सामने पशु – हिंसक पशु तक भी शांत रहेंगे

वविेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 182

To every man, this is taught: Thou art one with this Universal Being, and, as such, every soul that exists is your soul; and every body that exists is your body; and in hurting anyone, you hurt yourself, in loving anyone, you love yourself. As soon as a current of hatred is thrown outside, whomsoever else it hurts, it also hurts yourself; and if love comes out from you, it is bound to come back to you.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 389-90

हर मनुष्य को यह शक्षा दी जाती है की तुम उस वश्वात्मा से एक हो अतः हर जीवात्मा तुम्हारी ही आत्मा है हर शरीर तुम्हारा ही शरीर है इस लए दूसरों को चोट पहुँचाना अपने ही को ही चोट पहुंचाना है और दूसरों को प्रेम करना अपने आप से प्रेम करना है

वविेकानंद साहित्य भाग -9, पृष्ठ 119

Upanishads condemn all rituals, especially those that involve the killing of animals. They declare those all nonsense

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 452

उपनिषदों द्वारा सभी अनुष्ठानों की निंदा वशेषकर उनकी जिनमें पशुओं का वध कया जाता है। वे उन सबसे अनर्गल घो षत करते हैं।

वविेकानंद साहित्य भाग -7, पृष्ठ 288

Sâttvika people are very thoughtful, quiet, and patient. They take food in small quantities, and never anything bad.

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 519

सात्विक प्रकृती वाले अत्यंत वचारशील स्तर एवम शांत प्रकृति के होते हैं। वह मताहारी होते हैं और कभी भी दू षत आहार ग्रहण नहीं करते हैं।

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 165

There is, however, only one idea of duty which has been universally accepted by all mankind, of all ages and sects and countries, and that has been summed up in a Sanskrit aphorism thus: "Do not injure any being; not injuring any being is virtue, injuring any being is sin."

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 64

सभी युगों में समस्त सम्प्रदायों और देशों के मनी षयों द्वारा मान्य यदि कर्त्तव्य का कोई एक सार्वभौ मक भाव रहा है तो वह है – परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम अर्थात परोपकार ही पुण्य है और दूसरों को दुःख पहुंचाना ही पाप है

ववेकानंद साहित्य भाग -3, पृष्ठ 39

Certain regulations as to food are necessary; we must use that food which brings us the purest mind. If you go into a enagerie, you will find this demonstrated at once. You see the elephants, huge animals, but calm and gentle; and if you go towards the cages of the lions and tigers, you find them restless, showing how much difference has been made by food. All the forcesthat are working in this body have been produced out of food

The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 136

भोजन के सम्बन्ध में कुछ नियम आवश्यक हैं जिससे मन खूब प वत्र रहे ऐसा भोजन करना चाहिए तुम यदि कसी अजायबघर में जाओ तो भोजन के साथ जीव का क्या समबन्ध है यह भली भांति समझ में आ जायेगा हाथी बड़ा भारी प्राणी है परन्तु उसकी प्रकृति बड़ी शांत है और यदि तुम संह या बाघ के पंजड़े की और जाओ तो देखोगे की वो बड़े चंचल है इससे समझ में आ जाता है की आहार का तारतम्य कतना भयानक परिवर्तन कर देता है हमारे शरीर के अन्दर जितनी शक्ती कार्यशील है वो आहार से पैदा हुयी है

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 46

Râja-Yoga is divided into eight steps. The first is Yama — non-killing, truthfulness, non-stealing, continence, and non-receiving of any gifts.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 137

राज योग आठ अंगों में वभक्त है पहला है यम अर्थात अहिंसा सत्य असते (चोरी का अभाव) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 48

A Yogi must not think of injuring anyone, by thought, word, or deed. Mercy shall not be for men alone, but shall go beyond, and embrace the whole world.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 137

योगी को चाहिए की वह तन- मन- वचन से कसी के वरुध्ध हिंसाचार न करें। दया मनुष्य – जाति में ही आबध्ध ना रहे वरन उसके परे भी वह जायेगी और सारे संसार का आ लंगन कर लेगी

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 48

Non-killing being established, in his presence all enmities cease (in others).

If a man gets the ideal of non-injuring others, before him even animals which are by their nature ferocious will become peaceful. The tiger and the lamb will play together before that Yogi. When you have come to that state, then alone you will understand that you have become firmly established in non-injuring.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 262

अहिन्सप्रतिष्ठायाम तसन्निधौ वैरत्यागः

भीतर अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर उसके निकट सब प्राणी अपना स्वाभा वक वैर – भाव त्याग देते हैं

यदि कोई व्यक्ति अहिंसा की चरम अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तो उसके सामने जो सब प्राणी स्वभावतः ही हिंसक हैं वे भी शांतभाव धारण कर लेते हैं उस योगी के सामने शेर और मेमना एक साथ खेलेंगे। इस अवस्था की प्राप्ति होने पर ही समझनाक क तुम्हारा अहिंसाव्रत द्रिड प्रतिष्ठित हो गया है

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 178

Though all religions have taught ethical precepts, such as, “Do not kill, do not injure; love your neighbour as yourself,” etc., yet none of these has given the reason. Why should I not injure my neighbor?

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 384

-

Therefore in injuring his neighbour, the individual actually injures himself. This is the basic metaphysical truth underlying all ethical codes.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 1- Pg 385

The Shrutis say, When the food is pure, the Sattva element gets purified, and the memory becomes unwavering”, and Ramanuja quotes this from the Chhândogya Upanishad.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 64

श्रुति कहती है ”आहार शुद्ध होने से चत्त शुध्ध हो जाता है और चत्त शुध्ध होने से भगवान् का निरन्तर स्मरण होता है”

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 38

The materials which we receive through our food into our body-structure go a great way to determine our mental constitution; therefore the food we eat has to be particularly taken care of.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 65

हम भोजन के द्वारा अपने शरीर में जिन उपादानो को लेते हैं वो हमारे मान सक गंध पर वशेष प्रभाव डालते हैं। इसे हमें खाद्य पर वशेष सावधान रहना चाहिए।

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 38

According to him, “That which is gathered in is Ahara. The knowledge of the sensations, such as sound etc., is gathered in for the enjoyment of the enjoyer (self); the purification of the knowledge which gathers in the perception of the senses is the purifying of the food (Ahara). The word ‘purification-of-food’ means the acquiring of the knowledge of sensations untouched by the defects of attachment, aversion, and

delusion; such is the meaning. Therefore such knowledge or Ahara being purified, the Sattva material of the possessor it — the internal organ — will become purified, and the Sattva being purified, an unbroken memory of the Infinite One, who has been known in His real nature from scriptures, will result.”

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 65

रामानुज के मतानुसार ”जो कुछ आह्रित हो वही आहार है। शब्दादि वषयों का ज्ञान अर्थात के के लए भीतर आह्रित होता है। इस वश्यान्भुतिरूप ज्ञान की शुध्धी को आहार शुध्दि कहते हैं। इस लए आहार शुध्धि का अर्थ है – राग द्वेष और मोह से रहित होकर वषय का ज्ञान प्राप्त करना। अतएव यह ज्ञान या आहार शुध्ध हो जाने से उस व्यक्ति का सत्व पदार्थ अर्थान अंतःकरण शुद्ध हो जाता है और सत्व शुध्धि हो जाने से आनंदत पुरुष के यथार्थ स्वरुप का ज्ञान और अ वछिन्न स्मृति प्राप्त हो जाती है

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 38

In the list of qualities conducive to purity, as given by Ramanuja, there are enumerated, Satya, truthfulness; Ârjava, sincerity; Dayâ, doing good to others without any gain to one’s self; Ahimsâ, not injuring others by thought, word, or deed; Anabhidhyâ, not coveting others’ goods, not thinking vain thoughts, and not brooding over injuries received from another.

The one idea that deserves special notice is Ahimsa, non-injury to others. This duty of non-injury is, so to speak, obligatory on us in relation to all beings. As with some, it does not simply mean the non-injuring of human beings and mercilessness towards the lower animals; nor, as with some others, does it mean the protecting of cats and dogs and feeding of ants with sugar — with liberty to injure brother-man in every horrible way!

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 67

–

रामानुज ने आतंरिक शौच (शुध्धि) के लए निम्न ल खत गुणों को उपास्वस्वरूप बतलाया है। 1. सत्य 2. सरलता 3. दया अर्थान निःस्वार्थ परोपकार 4. दान 5. अहिंसा अर्थात मन वचन और कर्म से कसी की हिंसा न करना 6. अन्भिध्या अर्थान परद्रव्य लोभ न करना वृथा चंतन और दुसरे द्वारा कया गए अनिष्ट के आचरण के निरंतर चंतन का त्याग। इन गुणों में से अहिंसा वशेष ध्यान देने योग्य है। सब प्रा णयों के प्रति अहिंसा का भाव हमारे लए परमावश्यक है। इसका अर्थ यह नहीं की हम केवल मनुष्यों के प्रति दया का भाव रखे और छोटे जानवर को निर्दयता से मारते रहें और न यही – जैसा कुछ लोग समझते हैं की हम कुत्ते और बिल्लियों की तो रक्षा करते रहे चीटियों को शक्कर खलाते रहें पर इधर जैसा बने वैसा अपने मानव बनचुओन का गला काटने के लए बिना कसी झझक के तैयार रहें।

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 40

The cow does not eat meat, nor does the sheep. Are they great Yogis, great non-injurers (Ahimsakas)? Any fool may abstain from eating this or that; surely that gives him no more distinction than to herbivorous animals.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 68

गाय मांस नहीं खाती और न भेद ही तो या वे बहुत बड़े योगी हो गए अहिंसक हो गए। ऐसा गैर कोई भी कोई वशेष चीज खान छोड़ दे सकता है पर उससे वह घासाहारी पशुओं की अपेक्षा कोई वशेषता नहीं प्राप्त करता।

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 41

The renunciation necessary for the attainment of Bhakti is not obtained by killing anything, but just comes in as naturally as in the presence of an increasingly stronger light, the less intense ones become dimmer and dimmer until they vanish away completely. (check instance of sacrifice of goat in Kali temple by swami vivekanand – Ref- Vivekanand on himself)

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 72

भक्ति के लए जिस वैराग्य की आवश्यकता होती है
उसको प्राप्त करने के लए कसी का नाश करने की आवश्यकता नहीं होती। वह वैराग्य
तो स्वभावतः ही आ जाता है।

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 47

The earlier Buddhists in their rage against the killing of animals had denounced the sacrifices of the Vedas; and these sacrifices used to be held in every house.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 3- Pg 264

पहले बौध्ध प्राणी हिंसा की निंदा करते हुए वैदिक यज्ञों के घोर वरोधी हो गए थे

ववेकानंद साहित्य भाग -5, पृष्ठ 158

According to Ramanuja, there are three things in food we must avoid. First, there is Jâti, the nature, or species of the food that must be considered. All exciting food should be avoided, as meat, for instance; this should not be taken because it is by its very nature impure. We can get it only by taking the life ofanother. We get pleasure for a moment, and another creature has to give up its life to give us that pleasure. Not only so, but we demoralise other human beings. It would be rather better if every man who eats meat killed the animal himself; but, instead of doing so, society gets a class of persons to do that business for them, for doing which, it hates them. In England no butcher can serve on a jury, the idea being that he is cruel by nature. Who makes him cruel? Society. If we did not eat beef and mutton, there would be no butchers. Eating meat is only allowable for people who do very hard work, and who are not going to be Bhaktas; but if you are going to be Bhaktas, you should avoid meat. Also, all exciting foods, such as onions, garlic, and all evil-smelling food, as “sauerkraut”. Any food that has been standing for days, till its condition is changed, any food whose natural juices have been almost dried ups any food that is malodorous, should be avoided.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 4- Pg 4-5

रामानुजम के अनुसार हमें आहार के तीन दोषों से बचना चाहिए। तो जाति दोष अर्थात आहार के स्वाभा वक गुण या कस्म की और ध्यान देना चाहिए। सभी का वस्तुओं का उदाहरणार्थ मांस आदि का परित्याग करना चाहिए क्यो क ये स्वभावतः ही अप्र वत्र वस्तुएं हैं . दुसरे का प्राण लेकर ही हमें मांस की प्राप्ति होती है। हम तो क्षणमात्र के स्वाद सुख पते हैं पर उधर दुसरे जीवधारी को हमें यह क्ष णक स्वाद सुख देने के लए सदा के लए अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। इतना ही नहीं हम दुसरे मनुष्यों का भी नैतिक अधोपतन करते हैं। अच्छा तो यह होता की प्रत्येक मांसाहारी स्वयं ही प्राणी वध करता।

मांसाहार का अ धकार उन्ही को है जो बहुत कठिन परिश्रम करते हैं और जिन्हें भक्त नहीं बनाना है। पर यदि तुम भक्त होना चाहते हो तो हमको मांस का त्याग करना चाहिए

ववेकानंद साहित्य भाग -9, पृष्ठ 4-5

According to Shankarach. When pure food is taken, the mind is able to take in objects and think about them without attachment, jealousy or delusion; then the mind becomes pure, and then there is constant memory of God in that mind.

It is quite natural for one to say that Shankara’s meaning is the best, but I wish to add that one should not neglect Ramanuja’s interpretation either.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 4- Pg 7

शंकराचार्य के मतानुसार जब आहार शुध्ध होता है तभी मन अनासक्त और इर्ष्या मोह से रहित होकर पदार्थों को ग्रहण करने और उन पर वचार करने में समर्थ हो सकता है। तब मन शुध्ध हो जाता है और ऐसे मन में ही इश्वर की सतत स्मृति जाग्रत रहती है

यह सोचना स्वाभा वक है की शंकराचार्य का अर्थ ही सब अर्थों ंईएण श्रेष्ठ है परन्तु फर भी यहाँ पर में एक बात और कह देना चाहता हूँ की हमें रामानुज के अर्थ की भी अवहेलना नहीं करना चाहिए

ववेकानंद साहित्य भाग -9, पृष्ठ 7

Although it partially succeeded in putting down the animal sacrifices of the Vedas, it filled the land with temples, images, symbols, and bones of saints.

– The complete work of Swamee Vivekanand, Vol – 4- Page -307

शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवों की शरीर संरचना में अंतर

स्वामी ओमानंद जी शाकाहारी और मांसाहारी जीवों के शरीर की रचना में अंतर बताते हुए लखते हैं क वस्तुतः मांस मनुष्य का भोजन है ही नहीं
मनुष्य की शरीर की रचना भी मांसाहार प्रा णयों की शरीर की संरचना से
पूर्णतया भन्न है। मांसाहारी जीव प्राय रात को जागते और दिन में आराम करते हैं जबकी शाकाहारी दिन में जागते हैं और रात में आराम करते हैं। मांसाहारी अपना भोजन बिना चबाये निगल जाते यहीं ले कन शाकाहारी अपना भोजन चबा चबा के खाते हैं। मांसाहारी दूसरों को मारकर खाते हैं जब क शाकाहारी दयाभाव से आवृत होते हैं।मांसाहारियों को अ धक परिश्रम के समय थकावट शीघ्र होती है और अ धक थक जाते हैं जैसे शेर चीता भे ड़या आदि मांसाहारी एक बार पेट भरकर खा लेते हैं और फर एक सप्ताह व इससे भी अदिक समय तक कुछ भी नहीं खाते सोये पड़े रहते हैं। जब क मनुष्य अनेक बार खाता है घास और शक सब्जी खाने वाले प्राणी दिनभर चरते चुगते और जुगाली करते रहते हैं। मांसाहारी जीवों के चलने से आहट नहीं होती जब क शाकाहारी के चलने से आहट होती है। मांसाहारी प्रा णयों को रात के अँधेरे में दिखाई देता है अन्न और घास खाने वालों को रात के अँधेरे में दिखाई नहीं देता। मांसाहारी जीवों की अंत ड़यों की लम्बाई अपने शरीर की लम्बाई से केवल तीन गुनी होती है जबकी फलाहारी जीवों की अंत ड़यों की लम्बाई अपने शरीर की लम्बाई अपने शरीर की लम्बाई से बारहगुनी तथा घास फूस खाने वाले प्रा णयों की अंत ड़यां उनके शरीर से तीन गुनी तक होती हैं। मांसाहारी प्रा णयों के बच्चो की आँखें जन्म के समय बंद होती हैं जैसे शेर चीते कुत्ते बिल्ले आदि के बच्चो की। अन्न तथा शाकाहारी प्रा णयों के बच्चों की आखें जन्म के समय खुली रहती हैं जैसे मनुष्य गाय भेद बकरी आअदि के बच्चों की। मांसाहारी जीव अ धक भूख लगाने पर अपने बछ्कों को भी खा जाते हैं जैसे स र्पणी जो बहुत अन्डे देती है अपने बच्चों को अन्डों से निकलते ही खा जाती है। जो बच्चे अन्डों से निकलकर इधर उधर छिप जाते हैं उनके सापों का वंश चलता है। सब्जी खाने वाले प्राणी चाहे मनुष्य हो अथवा पशु पक्षी भूख से तड़प कर भले ही मर जावें कन्तु अपने बच्चों की और कभी भी बुरी दृष्टी से देखते भी नहीं। बिल्ली बिलाव से छिपकर बच्चे देती हैं और इन्हें छिपाकर रखती है यदि बिलाव को बिल्ली के नर बच्चे मल जाएँ तो उन्हें मार डालता है। मादा बच्चों को छोड़ देता है। शाकाहारी प्रा णयों में न माता बच्चों को मारता है न बच्चे माता पता को मार कर खाते हैं

इससे निष्कर्ष यही निकलता है की मनुष्य की शरीर की रचना तथा उपर्युक्त गुण कर्म स्वभावानुसार मनुष्य का स्वाभा वक भोजन मांस कदा प नहीं हो सकता क्योंकी मनुष्य के

शरीर की रचना भी उन प्रा णयों से मलती है जो अन्न फल शाक आदि खाते हैं जैसे बन्दर गोरिल्ला आदि कन्तु मांसाहारी श्रे चीते भे ड़या आदि से नहीं मलती

मनुष्य की शरीर रचना का अध्ययन करने से ज्ञात होता है की मनुष्य मांस भक्षक प्राणी नहीं है परन्तु ववेकानंद ने न जाने क्यूँ इस तथ्य को ना समझा और स्वयं मांस भक्षण करते रहे और करने का उपदेश भी देते रहे, मांस भक्षण से ना तो शारीरिक उन्नती होती है ना ही आत्मिक वस्तुतः यह तो पतन का कारण है इसकी वजह से शरीर को ना जाने कतने असाध्य रोग घेर लेते हैं। पशु तो भक्षण योग्य पदार्थ ही खाता है परुन्तु मनुष्य को सर्व भक्षी बन गया है। महान कवी मैथली शरण गुप्त ने ठीक ही कहा है –

केवल पतंग वहंगामों में जलचरों में नाव ही

भोजनार्थ चतुष्पदों में चारपाई बच रही

आज का मानव आकाश में उडनेवाले तीर बटेर कबूतर आदि सभी प्रा णयों का भक्षण कर जाता है बस उड़ने वाली वस्तुओं में केवल पतंग बची है और जल में रहने वाले मेडक और मछली में मनुष्य सभी को चाट कर जाता है जलचरों में केवल नाव बची है। चौपायों में गाय बकरी भैंस सभी को मनुष्य अपना ग्रास बना लेता है यहाँ केवल चारपाई बची हुयी है

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती लखते हैं की पं डत गुरुदत्त वद्यार्थी को रात दिन अत्य धक कर्य्स करने से क्षय रोग हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें मांस का स्वान करने की सम्मति दी। पं डत जी ने पूछा – मांस का सेवन कर में अच्छा हो गया तो क्या फर कभी नहीं मरूँगा? क्या में अमर हो जाऊँगा? क्या आप यह गारंटी दे सकते हैं? डॉक्टरों ने कहा की यह तो वश्वास तो नहीं दिलाया जा सकता। पं डत जी ने कहा अच्छा अमरता की बात छोड़ो क्या आप यह गारंटी दे सकते हैं की मुझे पुनः कभी क्षय रोग नहीं होगा? डॉक्टरों ने कहा की हम यह गारंटी भी नहीं दे सकेंगे पं डत जी ने कहा अच्छा तो यह गारंटी तो निश्चित रूप से दे रहे होंगे के मांस खाने से मेरा क्षय रोग दूर हो जाएगा। डॉक्टरों ने कहाँ पं डत जी यह गारंटी भी नहीं दे जा सकती। तब पं डत जी ने कहा की वैदिक धर्म में मांस खाना सबसे बड़ा पाप है। में मांस खाकर सबसे बड़ा पाप करूँ और मुझे अमरता की अथवा पुनः क्षय न होने की या पूर्ण स्वस्थ हो जाने की गारंटी भी नहीं मलती तो में यह पाप करने के लए तैयार नहीं हूँ।अह है वैदिक धर्म का आदर्श

ऐसा ही अदाहरण बनार्ड शा के जीवन में मलता है उन्हें भी च कत्सकों ने उन्हें भी मांस सेवन की सम्मति दी थी तब उन्होंने उत्तर देते हुए कहा था की मेरी स्तिथी गंभीर है। मुझे कहा जाता है की गौ मांस खाओ तुम जी वत रहोगे। इस राक्षसपन की अपेक्षा की अपेक्षा मृत्यु अ धक उत्तम है मेने अपनी वसीयत लख दी है। मेरी मृत्यु पर मेरी अर्थी के साथ वलाप करती गा ड़यों की आवश्यकता नहीं है। मेरे साथ बैल भेड़ें मुर्गे और जी वत मछ लयों का चलता फरता घर होगा। इन सभी पशु और प क्षयों के गले में सफ़ेद दुपट्टे होंगे उस मनुष्य के सम्मान में जिसने अपने साथी प्रा णयों को खाने की अपेक्षा मरना उत्तम समझा। हजरत नुह की नुअक को छोड़कर यह दृश्य अ धक उत्तम और महत्वपूर्ण होगा

"My situation is soleman one. Life is offered to me on condition of eating beef steaks. But death is btter than cannibalism. My will contains directions for my funeral which will be

followed not by mourning coaches, but by oxen sheep flocks of poultry and a small travelling aquarium of live fish all wearing white scars in hounour of the man who perished rather than eat his fellow creatures. It will be with the exception of Noah's ark, the most remarkeable thing of the kind seen.

स्वामी ववेकान्दं ने शायद यह ना सोचा होगा की उन प्रा णयों में भी हमारी तरह ही आत्मा का वास है, उन्हें भी हमारी तरह सुख दुःख का अहसास होता है। जब हम थोड़े से दर्द से इतने चीख पड़ते हैं तो फर उन जीवों पर क्या गुजराती होगी जिनकी गर्दन को क्रूरता पूर्वक रक्त पपासा शांत करने के लए काट दिया जाता है और वह बिचारा मांसाहारियों की उदार पूर्ती के लए तड़प तड़प कर प्राण त्यागने पर मजबूर हो जाता है। मनुष्य उन प्रा णयों की उस न तडपन को देख सकता है ना ही उन चीखों को सुनने की उसके अन्दर शक्ती होती है यही कारण है की वह यह कार्य करने के लए एक मध्यस्थ कसाई को चुनता है। यदी हर मांसाहारी स्वयं मारकर मांस प्राप्त करने लगे काफी लोग तो मांस खान ही छोड़ देंगे क्यूं क हर मांसाहारी उस वीभत्सता का साक्षी नहीं बन सकता। इस संसार के समस्त प्राणी चाहे वो पक्षी हों या जलचर या थलचर सभी अपने भक्ष्याभक्ष सामग्री को भली भांती पहचानते हैं। जो शाकाहारी जानवर हैं वह मांस की तरफ देखते भी नहीं हैं और जो मांसाहारी हैं वह घास फूंस से कोई मोहि नहीं रखते केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो सर्व भक्षी बना हुआ है और पशुओं को मार मार कर अपने पेट को कब्रिस्तान की संज्ञा दे दी है। राष्ट्रीय कवी मैथली शरण गुप्त ने बड़ा सुन्दर लखा है –

वीरात्वा हिंसा में रहा जो मूल उनके लक्ष्य का

कुछ भी वचार उनें नहीं है आज भक्ष्याभक्ष का

अर्थात जो अपने शत्रुओं का वध युध्ध में करके अपनी वीरता दिखाते थे आज वे भक्ष्याभक्ष का कुछ वचार न करके निर्दोष प्रा णयों को मारकर अभक्ष्य भोजन करने के लए ही अपनी वीरता का प्रदर्शन करनेमें श्रेष्ठताc का पर्दर्शन करते हैं

दयानंदकी वचारधारा

स्वामी दयानंद का ह्रदय प्राणी मात्र पर दया से आप्ला वत था। उन्होंने उन पर प्राण आघात करने वाले मानुषों को जीवन भर माफ़ कया। जानते हुए अपने प्राण घातक को, जिसने उनकी जीवन लीला ही समाप्त कर दी, ऋषी द्वारा
जीवन दान देकर भाग जाने के लए कहना दया की एक पराकाष्ठा ही कही जा सकती है .
यही महापुरुषों का लक्षण है की वे समाज से लेने की अपेक्षा देते बहुत अ धक हैं न उन्हें यश की चता होती है ना मान सम्मान व राजपाट
की उनके जीवन का एक ही ध्येय होता है प्राणी मात्र कल्याण   सच ही कहा है
की परोपकाराय इदं शरीरं और महर्षी ने इस कथन को चरितार्थ कर दिया। संतों के के बारे में लखते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लखते हैं की उनके ह्रदय की तुलना से करना ठीक नहीं है संतों का ह्रदय तो मक्खन से भी अ धक कोमल होता है मक्खन तो खुद को ताप लगने पर पघलता है जब क संतो का ह्रदय तो दूसरों के दुखों को देख कर ही द्र वत हो है जाता है।

संत ह्रदय नवनीत समाना कहहीं कवन पर मरम ना जाना

निज परिताप द्रवहिं नवनीता परदुख द्रवहिं जे संत पुनीता

ऋषी ने समाज में फल फूल रही इस वषम कुरीति को समझा और मनुष्य को प्रा णयों की रक्षार्थ उपदेश भी दिया स्वामी जी ने वेदों में प्रा णयों का संरक्षण की इश्वर की आज्ञा और इस हेतु वेद एवं मनु द्वारा प्रतिपादित धर्म अधर्म से भी अवगत कर प्राणीयों के जीवन रक्षार्थ दुरलभ प्रयास कये। दयानंद सरस्वती ने इस हेतु गौर्कारुनानि ध दुर्लभ ग्रन्थ भी हमें प्रदान कया तथा सत्यार्थ प्रकाश में भी इस हेतु ज्ञान दिया

स्वामी दयानंद के मांस भक्षण पर वचार

1 स्वामी दयानंद सरस्वती का ह्रदय दया करुणा से अत्यनत आप्ला वत था। स्वामी दयानंद सरस्वती पशुओं से मनुष्य को प्राप्त होने वाले उपकार को दयां में रखते हुए कहते हें की "भला जिन के दूध आदि खाने पीने में आते हैं वे माता पता के सामान माननीय क्यों न होने चाहिए?" ऋषी के ह्रदय में पशुओं के प्रति सम्मान धा र्मक भावना का न केवल शब्दों बल्कि व्यवहार और सामजिक जीवन में एकरसता का दर्शन है।

2. स्वामी दयानंद सरस्वती जीव हत्या को महापाप की संज्ञा देते हें की जब एक आदमी की हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप में गनाते हो तो गौ आदि पशुओं को मार के बहुतों की हनी करना महा पाप क्यों नहीं।

वेद उपनिषदों आदि आर्य साहित्य में प्रतिष्टित इस सामान व्यवहार और परोपकार धर्म की व्याख्या करते हुए व्यासमुनी भी कहते हैं :

न तत्परस्य संदध्यात प्रतिकुलम यदात्मनः

एष संक्षेपतो धर्मः कामादान्य: प्रवर्तते . महाभारत अनु। 113/6

मनुष्य ऐसा व्यवहार के करे को स्वयं अपने को प्रतिकूल और दुखद जान पड़े यही सब धर्म और नीतियों का सार है

ऋषी लखते हें क मांसाहारी में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं कतु वे स्वार्थ वश होकर दुसरे की करके अपना प्रयोजन सध्ध करने में ही सदा रहते हैं

3. जिस जिस व्यवहार से दूसरों की हाने हो वह वह अधर्म और जिस जिस व्यवहार से उपकार हो वह वह धर्म कहता है तो लाखों के सुख लाभ पशुओं का नाश करना अधर्म और उनकी रक्षा से लाखों को सुख पहुंचाना धर्म क्यों नहीं मानते?

स्वामी जी की दूरद र्शता दे खये क मांस भक्षण से होने वाले दुष्परिणाम से सावधान करते हुए लखते हें की हे मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं

काश हमने स्वामी जी की बात को समझकर व्यवहार में उतारा होता तो आज निठारी जैसे मानव मांस भक्षण के दुर्दिन ना देखने पड़ते

पशुओं के गले छुरों से काटकर जो मनुष्य अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं क्या संसार में उनसे भी अ धक कोई कोई वश्वासघाती अनुपकारी दुःख देने वाले और पापी जन होंगे ?

ऋषी जीव रक्षा के लए यजुर्वेद में उल्ले खत परमात्मा की आज्ञा उद्धरित करते हैं की – (अघन्या यज्मानान्स्य पशुं पाहि) हे पुरुष तू इसं पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात सब के सुख देने वाली जानो के संबंधी पशुओं की रक्षा कर जिस से तेरी भी रक्षा प्यूरी होवे और इसी लए ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते हैं और अब भी समझते हैं।

पशुओं के वध को घोर अन्याय घो षत करते हुए ऋषी लखते हैं क सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ने इस श्रृष्टि में जो जो पदार्थ बनाए हैं वे निष्प्रयोजन नहीं कन्तु एक एक वस्तु अनेक अनेक प्रयोजन के लए रची है इस लए उस से वे ही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है

ऋषी कहते हैं की भैरव आदि के नि मत्त से भी मॉस खाना मारना व मरवाना महापाप कर्म है। इस लए दयालु परमेश्वर ने वेदों मं मांस खाने वे पशु आदि के मारने की वधी नहीं लखी। इसीसे समझ लीजिये की

इश्वर का अ भप्राय उनके मारने में नहीं कतु करने में है। ऋषी मनु का प्रमाण देते हैं

अनुमन्ता वश सता निहन्ता क्रय वक्रयी

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति द्याताका . मनु 5/51

अर्थ – अनुमन्ता = मारने की आज्ञा देने, मान के काटने ,
पशु आदि के मारने उन को मारने के लए लेनें और बेचने
मांस के पकाने परसने और खाने वाले आठ आठ मनुष्य घटक हिंसक अर्थात ये सब पाप कारी हैं

ऋषी केवल हिंसा का वरोध ही नहीं प्रद र्शत करते अ पतु पशु रक्षा के लए उपदे शत करते हुए लखते हैं की हे धा र्मक सज्जनों आप इस पशुओं की रक्षा तन मन और धन से क्यों नहीं करते? हाय बड़े शोक की बात है जब हिंसक लोग बकरे आदि
पशु और मोर आदि प क्षयों को मारने के लए ले जाते हैं तब वे अनाथ तुम हम को देख के राजा और प्रजा पर बड़े शोक प्रका शत करते हैं अकी देखो हम को बिना अपराध बुरे हाल से मारते हैं और हम रक्षा करने तथा
मारने वालों को भी दूध आदि अमृत पदार्थ देने के लए उपस्थित रहना चाहते हैं और मारे जाना नहीं चाहते।देखो हम लोगों का सर्वस्व परोपकार के लए हाई और हम इसी लये पुकारते हैं की हम को आप लोग बचावें। हम तुम्हारी भाषा नहीं जानते नहीं तो क्या हम में से कसी

को कोई मारता तो हम भी आप लोगों के सदृश्य अपने मारने वालों को न्याय व्यवस्था से फांसी पर न चढ़ावा देते

महर्षी सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में लखते हैं क जो लोग मांस भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादी धातु भी दुर्गंधादी से दू षत होते हैं। अनेक प्रकार के मद्य गंजा भांग अफीम आदि जो जो बुद् ध का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े बिगड़े दुर्गंधादी से दू षत अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य मांसाहारी म्लेच्छ की जिनका शरीर मद्य मांस के परमाणुओं ही से पूरित है उनके हाथ का ना खाएं। जिसमे उपकारक प्रा णयों की हिंसा अर्थात जैसे एक गाय के शरीर से दूध घी बैल गाय उत्पन्न होने से एक पीडी में कुछ कम चार लाख मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारें न मारने दें

ऋषी आगे लखते हैं की जो उपकारी हैं वे इनके बचाने में अत्यंत पुरुषार्थ करें जैसा की आर्य लोग श्रृष्टि के आरम्भ से आज तक वेदोक्त रीति से प्रशंसनीय कर्म करते आये हैं। वैसे ही सब भुलोग्स्थ सज्जन मानुषों को करना उ चत है

" वषादप्या मृतान्ग्रह्य्म" सत्पुरुसों का यही सध्धांत है की से भी वश से भी अमृत लेना। सुनो बन्धुवार्गो तुम्हारा तन मन धन गाय आदि की रक्षारूप परोपकार में न लगे तो कस काम का है? देखो परमात्मा का स्वभाव की जिसने सब वश्व और सब पदार्थ परोपकार के लए ही रचे रक्खे हैं वैसे तुम भी अपना तन मन धन परोपकार ही के अर्पण करो

स्वामी ववेकानंद की वचारधारा को उन लोगों की तरह प्रतीत होती है जो "बिस्मिल्ला हिर रह्मानिर्रहीम (खुदा बड़ा रहमदिल है) कहते हुए मूक प्रा णयों के गले पर छुरी चलने में संकोच नहीं करते। कालाइल ने इसे बड़े सुन्दर शब्दों में कहा था की "मनुष्य के जीवन का लक्ष्य कर्म है वचार नहीं, चाहे वह कतना ही श्रेष्ट क्यूँ न हो कतना ही उत्तम वश्वास हो जब तक वह व्यवहार में नहीं आता तब तक क काम का नहीं।

सध्धान्तों का उतना महत्व नहीं होता जितना व्यवहार होता है।जिस प्रकार पेड का अच्छा बुरा होना उसके फलों पर निर्भर करता है। उसी प्रकार मनुष्य अपने व्यवहार से जाना जाता है। इस सन्दर्भ में उर्दू के एक कवी ने बड़ी ही सुन्दर बात कही है –

खुदा के बन्दों को देख कर खुदा से मुन कर हुयी है दुनिया

की ऐसे बन्दे हैं जिस खुदा के वो कोई अच्छा खुदा नहीं

प्राचीन काल में यज्ञ में पशु ब ल वचारधारा को पो षत करते स्वामी ववेकानंद और सत्य-ऋष्व आर्य

JANUARY 12, 2014 LEAVE A COMMENT

प्राचीन काल में यज्ञ में पशु ब ल वचारधारा को पो षत करते स्वामी ववेकानंद और सत्य ऋष्व आर्य

स्वामी ववेकानंद ने ववेकानंद ने यज्ञ का अर्थ ब लदान से (Sacrifice) से लया है . यज्ञ का अर्थ ब लदान कैसे हो गया और वो भी पशु हत्या का ये कहीं स्वामी जी ने स्पस्ट नहीं कया।यज्ञ शब्द यज धातु से निकला है जिसका अर्थ देवपूजा संगतिकरण और दान है। स्वामी ववेकानंद द्वारा यज्ञ का अर्थ ब लदान स्वामी ववेकानंद ने मैक्स मूलर से ही लया है और ये वाम मार्ग से प्रभा वत भी हो सकता है क्यूं क कहीं कहीं स्वामी ववेकानंद के सन्दर्भ में कहीं कहीं पशु ब ल के सन्दर्भ भी मलते हैं।

There was a time in this very India when, without eating beef, no Brahmin could remain a Brahmin; you read in the Vedas how, when a Sannyasin, a king, or a great man came into a house, the best bullock was killed

Swami Vivekanand

इसी भारत में कभी ऐसा भी समय था जब कोई ब्राह्मण बिना गौ मांस खाए ब्राह्मण नहीं रह पाता था। वेद पड़कर देखो क कस तरह जब कोई सन्यासी या राजा या बड़ा आदमी मकान में आता था तब सबसे पुष्ट बैल मारा जाता था

– CW , Vol – 3- Pg 174 (check for Hindi – Vol 5 Pg 70)

स्फुट वचार (1892-93 ईस्वी में मद्रास में संग्रहित)

Indra the thunderer, striking the serpent who has withheld the rains from mankind. Then he lets fly his thunderbolt, the serpent is killed, and rain comes down in showers. The people are pleased, and they worship Indra with oblations. They make a sacrificial pyre, kill some animals, roast their flesh upon spits, and offer that meat to Indra.

– CW , Vol – 1- Pg 344 (check for Hindi – Vol 1Pg 240)

वज्र धारी इन्द्र मनुष्य लोक में वर्षा को रोकने वाली सर्प पर वज्र का आघात करते दीखते हैं। वे अपने वज्र को फेकते हें,सर्प मर जाता है और वर्षा की छड़ी लग जाती है। लोगों में प्रसन्नता छा जाती है और वे यज्ञ की पूजा करते हैं वो यज्ञ वेदी बनाते है, पशु की बली देकर उसके पके मांस का नैवेद्य इस्द्र को अर्पन करते हैं।

ववेकानंद साहित्य भाग -1, पृष्ठ 288

Hindi Page – 68 vol -2

वैदिक अश्वमेध यज्ञ अनुष्ठान की ओर ध्यान दो – तदनंतरम महिशीम अश्वसन्निधौ पातयेत – आदि वाक्य देखने को मलेंगे। होता, ब्रह्मा उद्गाता इत्यादी नशे में चूर होकर कतना घृ णत आचरण करते थे। अच्छा हुआ की जानकी के वें गमन के बाद राम ने अकेले ही अश्वमेध यज्ञ कया , इससे चत्त को बड़ी शांती मली।

1895 में स्वामी ब्रह्मानंद को लखा पत्र

ववेकानंद साहित्य भाग -4, पृष्ठ 305

शाश्त्र वादियों में महा गोलमाल है। शाश्त्र में एक पर कहा है क हत्या करो . हिन्दुओं का सध्धांत है की यज्ञ स्थल को छोड़कर कसी स्थान पर जीव हत्या करना पाप है। यज्ञ करके आनंदपूर्वक मांस भोजन कया जा सकता है।

ववेकानंद साहित्य भाग -10, पृष्ठ 74

At a still later period the meaning of the hymns showed that many of them could not be of divine origin, because they inculcated upon mankind performance of various unholy acts, such as torturing animals, and we can also find many ridiculous stories in the Vedas.

– CW , Vol – 5- Pg 95 (check for Hindi – Vol 4 – 247)

वैदिक मन्त्रों के अर्थों से यह पता चला के वे दैवी रचना हो ही नहीं सकते क्यो क वे मनुष्य को पशुओं को कष्ट देंते के सामान अनेक अप वत्र काम करने को कहते हैं। इसके अतिरिक्त हम वेदों में बहुत सी हास्यास्पद कथाएं पाते हैं।

We must also remember that in every little village-god and every little superstition custom is that which we are accustomed to call our religious faith. But local customs are infinite and contradictory. Which are we to obey, and which not to obey? The Brâhmin of Southern India, for instance, would shrink in horror at the sight of another Brahmin eating meat; a Brahmin in the North thinks it a most glorious and holy thing to do — he kills goats by the hundred in sacrifice.CW , Vol – 3- Pg 172 – 173 (check for Hindi – Vol 5 Pg 69)

हमें ये भी स्मरण रखना चाहिए की हम प्राय जिन्हें हम अपना धर्म वश्वास कहते हैं वे हमारे छोटे छोटे ग्राम देवताओं पर आधारित या ऐसे ही कुसंकारों से पूर्ण लोकाचार मात्र हें। ऐसे लोकाचार असंक्य हैं और एक दुसरे के वरोधी हैं। इनमें से हम कसे माने और कसे न माने? उदहारण के लए यदि द क्षण का ब्राह्मण कसी और ब्राह्मण को मांस काटे हुए देखे तो भय से आतं कत हो जाता है परन्तु उत्तर भारत के ब्राह्मण इसे अत्यंत प वत्र और गौरवशाली कृत्या समझते हैं पूजा के नि मत्त वो सैकड़ों बकरों की बली चड़ा देते हैं।

Upanishads condemn all rituals, especially those that involve the killing of animals. They declare those all nonsense

– CW , Vol – 1- Pg 452 (check for Hindi – Vol 7 Pg 288)

उपनिषदों द्वारा सभी अनुष्ठानों की निंदा वशेषकर उनकी जिनमें पशुओं का वध कया जाता है। वे उन सबसे अनर्गल घो षत करते हैं।

प्राचीन देवताओं में चंचल लड़ाकू शराबी गौ मांसहारी देवताओं में जिनको जले हुए मांस की गंध और तीव्र सुरा की आहुती ही से परम आनंद मलता था – कुछ असंगति देखने लगे। कभी कभी इंद्र इतना मद्य पान कर लेता था की वह बेहोश होकर गर् पड़ता था और अंड बंड बकने लगता था

The old gods were found to be incongruous — these boisterous, fighting, drinking, beef-eating gods of the ancients — whose delight was in the smell of burning flesh and libations of strong liquor. Sometimes Indra drank so much that he fell upon the ground and talked unintelligibly. These gods could no longer be tolerated.

स्वामी दयानंद यज्ञ का अर्थ करते हुए लखते हैं की यज्ञ उसको कहते हैं क जिसमें वद्वानों का सत्कार यथायोग्य शल्प अर्थात रसायन जो की पदार्थ वद्या उससे उपयोग और वद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्र आदि जिन से वायु वृष्टि जल औष ध की प वत्रता जीवों को उस को उत्तम समझता हूँ

स्वमंत्व्यामंतव्यप्रकाशः पृष्ट 733

वेदों में हिंसा ना होने का प्रत्यक्ष प्रणाम तो रामायण में देखने को मलता है। यज्ञ में का तो यज्ञ को नष्ट करने के लए होता था और राक्षस ऋ षयों को प्रता ड़त करने के लए यह कार्य कया करते थे। यही वह कारण था जिसकी वजह से वश्वा मत्र को राजा दशरथ के पास राम और लक्ष्मण को मांगने के लए जाना पड़ा

महाभारत काल में भी यदि दृष्टी डालें तो भी यज्ञ में मांस का प्रयोग दिखाई नहीं देता है। बल्कि परोपकार धर्म के लक्षण ही जगह जगह दिखाई देते हैं। युदिष्ठिर को धर्म के लक्षण बताते हुए व्यासदेव कहते हैं क मनुष्य जिसे अपने प्रतिकूल समझे वैसा आचरण कसी के प्रति न करे।

श्रुयातम धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम

आत्मनः प्रतिकुलानी परेशां न समाचरेत

सर्वत्र प्रतिष्ठित इस इस तत्व की व्याख्या करते हुए व्यास जी कहते हैं की " मनुष्य ऐसा व्यवहार औरों के साथ न करे जो स्वयं अपने को प्रतिकूल या दुखद जान पड़े। यही सब धर्म और नीतियों का सार है।

न तत्परस्य सन्द्ध्यात प्रतिकुलम यदात्मनह

अश संक्षेपतो धर्मः कामदन्यः प्रवर्तते। . महाभारत अनुशाशन पर्व

जब परोपकार को ही धर्म माना गया है तो फर कसी के प्राण लेना कैसे धर्म हो सकता है और यज्ञ तो धर्म का ही अ भन्न अङ्ग है उसे तो फर ऐसे घृ णत कर्म से जोड़कर देखा ही नहीं जा सकता। जब तात्का लक हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करने का देते हैं जो हमें खुद अपने लए प्रय हो तो फर कसी की जान लेने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती

मानवमात्र के लए कानून के र चयता मह र्ष मनु ने मासाहार के सम्बन्ध में एक नहीं आठ प्रकार के पाप एवं दोशारो पयो का वर्णन कया है –

अनुमन्ता वश सता निहन्ता क्रय वक्रयी

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घटका मनुस्मृति **5/51**

अर्थात मांसाहार की अनुमति देने वाला खरीदने व बेचने वाला मांस काटने वाला पशु मारने वाला पकाने परोसने वा खाने वाला ये आठ घोर पापी हैं। ऐसा प्रतीत होता है की स्वामी ववेकानंद ने मह र्ष मनु के ये श्लोक पड़े नहीं थे। जो मांसाहार के बारे में इतनी वस्तृत व्याख्या करने वाले महर्षी मनु पर मांसाहार का आरोप लगना महर्षी की छ व पर कुठाराघात का एक असफल प्रयास ही है।

मह र्ष मनु ने मांस को वर्जित कया है –

वर्जयेन्मधु मासं। मनु 6/14

ना कृत्वा प्रा णनां हिंसा मान्स्मुत्पध्यते क्व चत

न च प्रानिवध: स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसम ववर्जयेत मनु 5/48

प्रा णयों की हिंसा कये बिना कभी मांस प्राप्त नहीं होता और जीवों की हत्या करना सुखदायक नहीं है इस कारण मांस नहीं खाना चाहिए

यो बंधन वध्क्लेशान प्रा णनाम न चकीर्षति

स सर्वस्य हित्प्रेप्शु: सुख मत्यंत मंश्रुते मनु 5/46

जो व्यक्ति प्रा णयों को बंधन में डालने वध करने उनको पीड़ा पहुंचाने की इच्छा नहीं करता वह सब प्रा णयों का हितैषी बहुत अ धक सुख को प्राप्त करता है

समुत्प त्त च मांसस्य वध्बन्धौ च देहिनात

प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्व मांसस्य भक्षणात मनु 4/49

मांस की उत्प त्त जैसे होती है असको प्रा णयों की हत्या और बंधन के कष्टों को देखकर सब प्रकार के मांस भक्षण से दूर रहे

यो हिन्सकानि भूतानि हिन्सत्यात्म्सुखेच्या

स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वा चत्मेधते मनु 5/45

जो मनुष्य अपने सुख के लए अहिंसक प्रा णयों की हत्या करता है वह न इस जीवन में सुख पाता है न जीवांतर में

वैदिक शरीर वज्ञान आयुर्वैदिक से कम पूर्ण न था . अवयवों के व वध भागों के बहुत से नाम थे, क्यों क उन्हें यज्ञ के पशुओं को काटना पड़ता था .

यजुर्वेद को कर्मकांड का वेद माना जाता है उसके प्रथम मंत्र में ही पशुओं अहिंसा की कामना है – यजमानस्य पशुन पाहि (यजुर्वेद 1/1) अर्थात यज्ञ करने वाले के पशुओं की रक्षा कीजिये।

मांसाहारियों को यज्ञ करने का अ धकार नहीं

यज्ञ में मांस की बली तो दूर की बात है वेद तो मांसाहारी को यज्ञ करने के अ धकार से भी वं चत कर देते हैं। यज्ञ करने का अ धकार केवल शाकाहारी जीवों के लए ही है।

ऊर्जाद: उत य ज्ञयास: पांचजना : मम होत्रम जुषध्वम। ऋग्वेद 10/53/4

अर्थात केवल अन्नाहारी (मांसाहारी नहीं) और यज्ञीय प्रवृती के व्यक्ती यज्ञ का संपादन करें

वेदों में स्पष्ट उल्लेख हिया की मांस जलाने वाली अग्नि यज्ञों में प्रयुक्त न होने पावे। मांस जलाने वाली अग्नि बहुत करके चताग्नि ही होती है . जब वेदों में चता की अग्नि तक को यज्ञों में लाने का निषेध है तब मनुष्य मांस अथवा पशु मांस से यज्ञ करने की आज्ञा कैसे हो सकती है:-

क्रव्यादमग्निम पर हिनो म दुरम यमराग्यो गच्छतु रिप्रवाह

इहैवाय मतरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन। ऋग्वेद 10/16/9

यो अग्नि: क्रव्यात प्र ववेश नो गृह ममं पश्यन्नितरम जातवेदसम

तम हरामी पत्रय्ग्याय दूरं स धर्म मन्धाम परमे सधस्थे। अथर्ववेद 12/2/7

अर्थात में मास खाने वाली अग्नि को दूर करता हूँ। वह पाप धोने वाली है, इस लए वह यमराज के घर जावे। यहाँ दुसरी ही अग्नि को सबकी जानी हुयी और डवॉन के लए हावी धोने वाली है उसे रखता हूँ। जो मांस भक्षक अग्नि तुम लोगों के घरों मएन प्रवेश करती है उसको पतृ यज्ञ के लए दूर करता हूँ। तुम्हारे घरों में दूसरी ही अग्नी को देखना चाहता हूँ वही उत्तम स्थानों में धर्म को प्राप्त हो (वैदिक संप त्त पृष्ठ 517)

वेदों में कहीं पर बहे पशुओं को मारने की आज्ञा नहीं है अ पतु पशुओं के संरक्षण का ही उपदेश मलता है

यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री

महर्षी दयानंद सरस्वती वेद मंत्र (स मधाग्नि दुवस्यत घ्रितैबोर्धयथाति थम आस्मिन हव्या जुहोतन। यजुर्वेद 3 अध्याय मंडल 1) का प्रमाण देते हुए   लखते हैं की हे मनुष्यों तुम लोग वायु औषधी और वर्षा जल की शुद्धी से सबके उपकार के अर्थ घ्रितादि शुध्द वस्तुओं और स मधा अर्थात आम्र व ढाक आदि काष्ठों से अति थरूप अग्नि को नित्य प्रकाशमान करो। फर उस अग्नि में होम करने के योग्य पुष्ट मधुर सुगन्धित अर्थात दुग्ध घृत शर्करा गुड केशर कस्तुरी आदि और रोगनाशक जो सोमलता आदि सब प्रकार से शुद्ध द्रव्य हैं उनका अच्छी प्रकार नित्य अग्निहोत्र करके सबका उपकार करो (रिग्वेदादिभाष्य भू मका पृष्ठ – 193)

सुस्मिध्द्हाय शो चसे घृतं तीव्रं जुहोतन अग्नये जातवेदसे

खूब अच्छी प्रकार प्रदीप्त प्रकाशमान ज्वालामय अन्यों के दोष निवारण में समर्थ पत्येक पदार्थ में व्यापक प्रज्ञावान ऐस्वर्यवान अग्नि परमेश्वर वद्वान् एवं राजा में अतितीव्र दोष निवारक (घृतं) आज्य जल और उपायन एवं बल दायक या जयप्रद पदार्थ सब प्रकार से प्रदान करो – यजुर्वेद 3/2

तंत्वा स मदि भरं गनो ग्रतें वर्धयाम स

ब्रिहच्चोया य वष्ठ्य

हे अग्ने अं गरह व्यापक ज्ञानवान प्रकाशक तुझे उस परम प्र सध्ध परम उच्च परमेश्वर को उत्तम प्रदीप्त प्रका शत होने के साधन योग आदि द्वारा और आत्मा के प्रकाशक तेज और ताप द्वारा बढ़ाते हैं। हे युवतम सदा सर्वशक्तिमान संसार के समस्त पदार्थों के संयोग वभाग करने में अनुपम बतलावे महान होकर खूब प्रका शत हो। अग्नि पक्ष में – हे प्रकाशक अग्ने तुझे स मधा और घृत से बढ़ावें और तू पदार्थों के वभाजक बल से खूब प्रका शत हो

यजुर्वेद 3/3

ॐ सुस मद्धाय अग्नि दुवस्त्य घ्रितैबोर्ध्द्याथाति थम आस्मिन हवय जुहोतनः यजुर्वेद 3/1

प्रतीप्त करने के साधन काष्ठ से जिस प्रकार अग्नि को तृप्त कया जाता है उसी प्रकार अच्छी प्रकार तेजस्वी बनाने के साधन से अग्नि आत्मा गुरु परमेश्वर की उपासना करो और सर्वव्यापक अति थ के समान पूजनीय उसको अग्नि को जिस प्रकार क्षरणशील पुष्टिकारक घृत आदि पदार्थों से जगाया जाता है उसी प्रकार उद्वॆपन करने वाले तेज प्रद साधनों के अनुष्ठानो से उसको जगाओ और कर्मों को और कर्मफलों को आहुति के रूप में निरंतर त्याग करो

भौतिक अग्नि में – हे पुरुषो काष्ठ से उसकी सेवा करो घृत आहुतियों से उसको चेतन करो और उस्मिएन चरु पुरौडाश आदि आहुतिरूप में दो। इसी प्रकार यन्त्र कला आदि में भी अग्नी के उद्द्वीपक पदार्थों से अग्नि को जलाकर जालों द्वारा उसकी शक्ती को और भी चैतन्य करके उसे यंत्रादी में आधान करे

यज्ञ में पशु रक्षा का उपदेश

यदि नो गां हन्सि यद्यश्वम यदि पुरुषम

तं त्वा सीसेन वध्यामो यथा नो सो अवीरहा

अथर्वेद प्रथमं काण्डम अध्याय 16 मंत्र 4 पृष्ठ – 109 SC (i)

यदि हे राक्षस शत्रु पुरुष तू हमारी गौ को मारे और यदि अश्व को मारे और यदि पुरुष आदमी को मारे उस हत्यारे को सीसे की गोली से ही वेध डालें जिससे तू हमारे वीर पुरुषों को न मर सकें

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अ धदेवने

यथा पुंसो वृपंयत स्त्रियाम नि हन्यते मनः

एवा ते अघन्ये मनो ध वत्से न हन्यताम

अथर्वेद षष्ठम काण्डम अध्याय 70 मंत्र 1 पृष्ठ – 169 SC (ii)

वेद मंत्र गौ को अघन्ये अर्थात कभी ना मरने योग्य की संज्ञा देता है

व्रीहिमत्तम यवमत्तम्थो मापमथो तिलम

ऐश वो भागो निहितो रत्नधेयाय दांतों मा हि सश्ठं पतरे मातरे च

बालक को अन्नप्राशन कराने का उपदेश – हे बालक के प्रथम उत्पन्न दांतों तुम भात खाओ जौ खाओ और माप उड़द की दाल और तिल खाओ

अथर्वेद षष्ठम काण्डम अध्याय 140 मंत्र 2 पृष्ठ – 306 SC (ii)

स्वस्ति मात्र उत पत्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य:

वश्व सुभूत सु वदत्रं नो अस्तु ज्योगेव द्रिशेम सूर्यम

हमारी माता को सुख हो और पता को सुख हो गौओं और जगत के हितकारी पुरुषों सम जीवों के लये सुख और शांती प्राप्त हो। समस्त संसार सब मलकर हमारे लए सुखयुक्त उत्तम पदर्थों से सम्पन्न उत्तम ज्ञानों से सम्पक्ष हों और हम चर काल तक अपनी चक्षुओं से सूर्य और ज्ञान के प्रकाशक परमेश्वर का दर्शन करें

अथर्वेद प्रथमं काण्डम अध्याय 31 मंत्र 4 पृष्ठ – 149 SC (i)

यस्तु सर्वा ण भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो ना व च कत्सति

जो वद्वान जन सब प्रा णयों को अपने आत्मा में और अपने आत्मा को सब प्रा णयों में देखता है वह कसी से घृणा व कसी की निंदा नहीं करता है। – check for the mantra no in yajurveda

इन्द्रो वश्वस्य राजति शन्नो अस्तु द् वपदे शं चतुष्पदे

ऐश्वर्यवान परमेश्वर समस्त संसार के बीच प्रकाशमान है इसी प्रकार राजा समस्त राष्ट्र में तेजस्वी होकर वराजे। वह हमारे दौपाये मनुष्य भृत्य आदि और चौपाये पशुओं के लए भी सुखदाई और कल्याणकारी हो

यजुर्वेद अद्याय 36 श्लोक 8

इते अहम् मा मत्रस्य मा चक्षुषा सर्वानी भूतानि समीक्षन्ताम मत्रस्याहम चक्षुपा सर्वा ण भूतानि समीक्षे। मत्रस्य चक्षुपा समीक्षामहे।

हे समस्त दुखों और अज्ञानों के वदारक परमेश्वर मुझे द्दद कर मुझको समस्त प्राणी गण मत्र की आँख से देखें और में भी समस्त प्रा णयों को मत्र की आँख से देखूं। हम सब एक दुसरे को मत्र की आँख से एक दुसरे को भली प्रकार देखा करें

अथर्वेद अध्याय 36 मंत्र 18 पृष्ठ – 701 SC (ii)

अजस्त्र मन्दुमरुषम भुरंद्युमाग्निमीदे पुर्व चत्तम नमो भ

स पर्व म रितुशः कल्प्मानो गाम मा हि सीरदिति वराजिम

यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 43 पृष्ठ 606 SC S SC (i)

अहिंसक और अ वनाषी ऐश्वर्यवान जल के सामान शीतल और शुध्ध रोष रहित सब के पोषक पूर्ण ज्ञानवान शानवान परमेश्वर या राजा को में नमस्कारों द्वारा में स्तुति करता हूँ अन्नों द्वारा पूर्व ही संग्रह करने वाले धनाड्य पुरुष को में प्राप्त करूँ। वह तू पालनकारी सामर्थ्यों से सुर्य जिस प्रकार अपने ऋतु से सबको चलाता है उसी प्रकार राज अपने राज सभा के सदस्यों से सामर्थ्यवान होता है। वह तू व वध पदार्थों गुणों से प्रका शत गौ और पृथ्वी को मत वनष्ट कर

इमं मा हिंसीद् वर्पाद पशुं सहस्त्राक्षओ मेधाय चीयमान

मयम पशुम मेधमग्ने जुशस्व तेन चन्वानस्तंवो निषीद

मयुम ते शु ग्रच्चतु यम द् वश्मतम ते शु ग्रच्चतु

यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 47 पृष्ठ 608

हे राजन हे पुरुष सुख प्राप्त करने के लए निरंतर बढता हुआइस दोपाये पुरुष और उसके सहयोगी चौपाये पशु को भी मत नाश कर मत मार। हे ज्ञानवान नेतः तू प वत्र अन्न उत्पन्न करने वाले जंगली पशु को भी प्रेम कर उसकी वृध्धी चाह और उससे भी अपनी सम्पत्ती को बढ़ाता हुआ अपने शरीर के बीच में हृष्ट रह .तेरा संताप्कारी क्रोध वा तेरी पीड़ा भी हिंसक जंगली पशु को प्राप्त हो और जिससे हम प्रेम नहीं करते उसको तेरी संताप्कारी क्रोध और पीड़ा प्राप्त हो

इमं माहिन्सीरेकशफ़म पशम कनिक्रदम वाजिनम वाजिनेशु

गौरमारन्यमनु ते दिशाशी तेन चन्वान्स्तान्यो निषीद

यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 48 पृष्ठ 609

हे पुरुष इस हर्ष से ध्वनि करने या हिनहिनाने वाले या सब प्रकार के कष्ट सहने में समर्थ एक खुर के वेगवान वा संग्रामपयोगी पशुओं के बीच सबसे अ धक वेगवान अश्व गधे खच्चर आदि पशु को मत को मत मार जंगल के गौर नामक बारह संघे को लक्ष्य करके में तुम्हें ये उपदेश करता हूँ की उसकी वृध्धी से भी तू अपनी वृध्धी करता हुआ अपने शरीर की रक्षा कर

यः पौरुश्पयेन क्र वपा समंगते यो अश्वेन पशुना यातुधानाः

यो अघन्याया भारती क्षीर्मगने तेषाम शीर्शानी हरसापी वृश्च

ऋग्वेद मण्डल 10 अध्याय 87 मंत्र 16 पृष्ठ 348 SC Vol -7

जो अन्य को पीड़ा देने वाला होकर अर्थात अन्य को पीड़ा देकर अपने को मनुष्य उपयोगी अन्न आदि साधनों से सजाता हिया और जो अन्य को पीड़ा देकर स्वयं घोड़े के समान वेग से जाने वाले पशु से अपने को चमकाता है जो दुसरे को पीड़ा देकर गौ का दुःख लेता है हे ज्ञान और तेज के प्रकाशक तू ऐसे ऐसे दुष्टों के सरों को तेज शंस्त्रों से काट डाल

एततवै वश्व रूपं गोरुपम

यह ही वश्व रूप परमात्मा का वराट रूप है वह ही सर्वरूप गौ का रूप है जिसका इस प्रकार वर्नन कया जाता है

नवम कांड सूक्त 9 मंत्र 26 SC (ii)

<u>यज्ञ में पशु हत्या का दंड वधान</u>

यम ते चकुः क्रक्वाकावजे वा या कुरीरिणी

अव्याम ते कृत्यं या – अथर्वेद 5/31/2

जिस घटक प्रयोग को वे नीच पुरुष तीतर बकरे और चील पर और जिस करतूत को वे भेद पर करते हैं उस करतूत से फर उनको दण्डित करूँ।

याम ते चकरेकशफ़े पशुनमुभयादति

गर्दभे क्रतायाम याम – अथर्वेद 5/31/3

जिस हिंसा कार्य को वे एक खुर वाले पशु पर या गधे की जाती के पशु पर जिस हिंसा को दोनों जबाडों में दांत वाले गाय व भेंस आदि पशुओं पर करते हैं वही हत्या का दंड उन्हें में पुनः दूँ

उपाव्सृज त्मन्या समंजन देवानां पाथ रितुथा हवी ष

वनस्पतिः श मता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घ्रितेन – अथर्वेद 5/12/10 SC -(1) page 609

हे होतः आत्मन तू प्रति ऋतू के अनुसार देवों इन्द्रियों के नि मत्त अन्न भोग्य वषय और ज्ञानों को स्वयं प्रगट करता हुआ उनको प्रदान कर। वन इन्द्रियों का स्वामी जितेन्द्रिय शाम दामादी से युक्त वद्वान् योदी और ज्ञानी पुरुष ये तीनों तेजोमय प्रदीप्त ज्योति और मधुर आनंद रस के साथ ज्ञान का आस्वाद ग्रहण करें। यज्ञ पक्ष में – होता ऋतुओं के अनुसार सामग्री चारू आदि हवी तैयार करे और उसको अग्नि में वनस्पति में जीवो में भे वतरित करे

उपर्युक्त ववेचन जो प्रद र्शत करता है क यज्ञ एक सामाजिक कल्याण की वषय वस्तु है न क कसी जीव के प्राण हरण के लए प्रयोग में लाया जाने वाला साधन। प्राचीन ऐतिहा सक तथ्य चाहे वो रामायण काल के हों या महाभारत के समय के इस वचार धारा को ही पो षत करते हैं क यज्ञ जीवों के कल्याण के लए ही कये जाते रहे हैं न क जीवों की हत्या के लए. यदि कुछ व्यक्ति वशेष या सम्प्रदाय यज्ञ में इस दुष्कर्म को करने लगें तो उसके दोषी वह व्यक्ति या संप्रदाय वशेष हैं न क इसके लए यज्ञ जैसी कल्याणकारी कार्य को ही दोषी घो षत करके उसे तिलांज ल दे दी जाये। स्वामी ववेकानंद जी का यह कथन क प्राचीन काल में यज्ञों में मांस का प्रयोग होता है निराधार ही है।

जन्म जात वर्ण व्यवस्था को पो षत करते श्री कृष्ण के छ्दम शष्य – ऋश्व आर्य

JANUARY 12, 2014 LEAVE A COMMENT

जन्म जात वर्ण व्यवस्था को पो षत करते श्री कृष्ण के छ्दम शष्य – ऋश्व आर्य

आजकल वैश्वीकरण हो रहा है पारम्परिक शक्षा के तरीके बदल चुके हैं और अभी वर्तमान में प्र चलत तरीकों में भी तीव्रता से परिवर्तन देखने को मल रहा है। वैश्वीकरण ने और पारम्परिक सामूहिक पारिवारिक वास की परंपरा भी समाप्त कर दी है। आजकल एकल परिवार की प्रथा चल रही है। व्यक्ति अपनी जी वका की तलाश में वदेशों तक जाने में नहीं हिच कचाता। ऐसे समय में जब शै क्षक उन्नति हो रही है जीवन जीने के तरीके बदल चुके हैं जाति प्रथा नामक दानव को समाप्त करने के लए इतने अ भयान चलाये गए और चलाये जा रहे हैं फर भी कुछ लोगों को इस बुराई को अपनाये रखना और उसके समर्थन में social media पर वर्तमान समय में व्यर्थ का प्रलाप करना उनकी संकु चत मान सकता को प्रद र्शत करता है.

गलत बात का लगातार समर्थन करना ऐतिहा सक प्रमाणों को झुठलाना, वेदों के आदेश को न मानना इनको हठधर्मी ही सद्ध करता है। सभी जीव मात्र का पता पालनहार परम पता परमेश्वर है। परम पता परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को समान अ धकार प्रदान करता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को सामान अ धकार दिया है। समानता और सद्भाव से व्यवहार करने का आदेश दिया है।

श्री कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानने वाले ये प्रपंची श्री कृष्ण के गीता ज्ञान के श्लोकों जिनमे सभी जीवों से समभाव का सन्देश दिया है जीवन में उतारने से कतराते हैं। जाती वाद के नाम पर दुष्प्रचार करने वालो आप श्री कृष्ण के परम भक्त होने का दम्भ भरते हो ! अरे राह से भटके हुए भाइयों जरा कृष्ण के गीता ज्ञान को पड़ तो लेते क श्री कृष्ण ने ईश्वर भक्त के क्या लक्षण बताये हैं। क्या आप जैसे व्यक्ति जो मानंव मात्र को जन्म जात जाती प्रथा के आधार पर बांटकर अनेक प्रकार के अत्याचार करते हो , कहीं से भी श्री कृष्ण के शष्य होने के अ धकारी हो ?

इश्वर भक्त के लक्ष्ण बताते हुए योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं की " वद्या वनय सम्पन्ने ब्रहामने ग व हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पं डताः समद र्शनः (गीता 5/18) प्रभु को सर्वत्र वद्यमान जानने वालाल मनुस्य्स वद्या वनय से युक्त ब्राह्मण गौ हाथी कुत्ते और चंडाल आदि में सम रूप से अवस्थित प्रभु का प्रत्यक्ष अनुभव करता है और इन सबको सामान दृष्टी से देखता अर्थात व्यवहार करता है। जब मनुष्य हर व्यक्ती के अन्दर प्रभु का प्रतिरूप देखता है तो उसका उन प्रा णयों के प्रति द्वेष की भावना जाती रहती है और वह समस्त प्रा णयों में श्रेष्ठ ब्राह्मण से लेकर नि क्रष्ठ चंडाल में तथा पशुओं में श्रेष्ठ गाय से लेकर पशुओं में निकृष्ट कुत्ते तक को समभाव से देखता है।

योगेश्वर श्री कृष्ण समस्त प्रा णयों में सम दृष्टी रखने का एवं सभी के सुख दुःख को अपना सुख दुःख समझकर समद्रिष्टी रखने का उपदेश देते हुए कहते हैं क

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति यो अर्जुन ।
सुखं वास यदि वा दुखम स योगी परमो मतः ।

हे अर्जुन जो अपने आपको उपमान रखकर अर्थात जैसा दुःख मुझे होता है ऐसा ही होता है यह समझकर समभाव से सबकी सेवा करता है उसे परम योगी माना जाता है। शंकर ने अपने गीता भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए लखा है की जो मनुष्य यह समझ जाता है की जैसे मुझे अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख का अनुभव होता है वैसे ही दूसरों को भी अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख होता है वह कभी कसी के प्रतिकूल

आचरण नहीं करता है।

जयदयाल इसी का भाष्य करते हुए तत्वा ववेचनी में लखते हैं की सर्वत्र आत्मदर्शी हो जाने के कारण समस्त वराट वश्व उसका स्वरुप बन जाता है। जगत में उसके लए दूसरा कुछ रहता ही नहीं। इस लए जैसे मनुष्य अपने आपको कभी कसी प्रकार ज़रा भी दुःख पहुंचाना नहीं चाहता तथा स्वाभा वक ही निरंतर सुख पाने के लए ही अथक चेष्टा करता रहता है ऐसा करके न वह कभी अपने पर अपनेको कृपा करने वाला मानकर बदले में कृतज्ञता चाहता है न कोई अहसान करता है और न अपने को कर्त्तव्य परायण समझकर अ भमान ही करता है वह अपने सुख की चेष्टा इसी लये करता है की उससे वैसा कये बिना रहा ही नहीं जाता यह उसका सहज स्वभाव होता है ठीक वैसे ही वह योगी समस्त वश्व को कभी कसी प्रकार कं चत भी दुःख न पहुंचाकर सदा उसके लए सहज स्वभाव ही चेष्टा करता है।

काश इस मूढ़ प्रा णयों ने श्री कृष्ण के छदम शष्य होने के दम्भ न भरकर ईश्वर प्राप्ति भक्ति में सार्थक प्रयत्न कया होता तो ब्रह्म की निकटता में मन की यह मलीनता दूर हो गयी होती और श्री कृष्ण की तरह ये भी समस्त जीवों में ईश्वर का वास अनुभव कर सकते और सम भावना का व्यवहार करने में समर्थ होते।

मूर्तिपूजा-अवैदिक

DECEMBER 26, 2013 LEAVE A COMMENT

ओउम्

<u>प्राक्कथन</u>

यद्य प प्रस्तुत पुस्तक छोटी है परन्तु लेखक ने इस वषय वस्तु से सम्बं धत अनुच्छेदों के संकलन में संभवतः सभी यूरोपीय आ धकारिक सूत्रों से वचार- वमर्श कया है और आशा है क ध्यान आकर्षण करने वाले ये सभी अनुच्छेद पाठकगणों के वश्वास प्राप्त करेंगे।

प्र सद्धआर्य समाज वद्वानों द्वारा पुनरावलोकन

(१) इस छोटी पुस्तिका में स्वामी मंगलानंद पूरी ने यूरोपीय और भारतीय संस्कृत वद्वानों और कुछ इतिहासकारों के भी वचारों का संकलन करके यह सद्ध कया है क मूर्तिपूजा वेद सम्मत नहीं है। जिन लोगों की ऐसी धारणा है क मूर्तिपूजा वेद सम्मत है उनके लए ये पुस्तिका वशेष लाभकारी है। वैदिक वचारधारा से अन भज्ञ जनसामान्य में ये पुस्तिका निशुल्क वतरित की जानी चाहिए।

घासीदास, एम.ए. एल.एल.बी.

अ धष्ठातागुरुकुल ब्रिन्दाबन एवं अध्यक्ष आर्य प्रतिनि ध सभा उ.प्र.(मेरठ)

(२) स्वामी मंगलानंद पूरी द्वारा मूर्तिपूजा-अवैदिक पुस्तिका: लेखक ने शब्दों के पक्के और वश्व के प्र सद्ध यूरोपीय और ए शयाई सूत्रों के अच्छे-खासे लेखोंका संकलन करके यह स्था पत कया है क वेदों में मूर्तिपूजा का कोई समर्थन नहीं है और सफलतापूर्वक यह सद्ध कया है क मूर्तिपूजा का मूल इसाई मत में है ।

यह पुस्तिका निर्देशात्मक और रु चपूर्ण है साथ ही दिए गए उद्धरण प्रेरणादायक और लाभकारी हैं। कम मूल्य में पुस्तिका उपलब्ध करा कर लेखक ने निश्चय ही असाधारण काम कया है।

बाबूश्याम सुन्दरलाल बी.ए. एल.एल.बी.

अ धवक्ता, अध्यक्ष आर्य समाज मैनपुरी

(३) लेखक धन्यवाद के अ धकारी हैं जिन्होंने इतनी अच्छी पुस्तिका बनाई जो सभाओं और समाजों द्वारा महा वद्यालयऔर वद्यालय के उच्च कक्षाओं के छात्रों को वतरित की जानी चाहिए। शुल्क यद्य प कम है पर महत्व की दृष्टी से यह पुस्तिका अनमोल है और महा वद्यालय के नवजवान छात्रों की अध्यात्मिक उन्नति के लए वशेष रूप से लाभदायक है जिससे उन्हें परमात्मा के निराकार स्वरुप की उपासना की शक्षा मलेगी ।

श्रीमान राव (मास्टर) आत्मा राम जी अमृतसरी

आर्य समाज के श्रेष्ठ नेताओ में से एक

ओउम्

मूर्तिपूजा-अवैदिक

यूरोपीय व्याख्यानों में

आज के समय में एक हिन्दू सामान्यतःमूर्तिपूजक होता है परन्तु आर्य समाज के संस्थापक मह र्ष दयानंद सरस्वती ने पूरे वश्व को बताया क ना तो पुरातन कालीन हिन्दू (आर्य) मूर्तिपूजक थे ना ही वेदादि सत्यशास्त्रों और आर्ष ग्रंथों में मूर्तिपूजा का लेशमात्र भी संकेत हैं।

स्वामी जी की सत्यता इसी से प्रमा णत होती है क अन्य पक्षपात रहित वेद वद्वान भी इसी निर्णय पर पहुंचे और मूर्तिपूजाका पुरजोर वरोध कया।अतः हम यहाँ यूरोपीय एवं अन्य संस्कृत वद्वानों को उद्धृत कर रहें हैं। हम पाठक को अपने ववेक के सहारे निर्णय पर पहुचने की स्वच्छंदता प्रदान करते हुए अनुरोध करेंगे क यहाँ संक लत सभी मतों को यथो चत महत्व प्रदान करते हुए इनका लाभ एवं मार्गदर्शन लें ।

प्रथम अध्याय

यूरोपीय जन मूर्ति पूजा वषय पर

(१) सरमोंलर व लयम्स (sir Monler Williams) लखतें हैं :- "मनु स्मृति* के संकलन काल में मूर्तिपूजा के अस्तित्व के वषय में घोर संशय है"(इं डयन वजडम पृष्ट २२६)

(२) जे.आई. वीलर(J.I. Wheeler) कहतें हैं :- "ऐसा प्रतीत होत्ता है जैसे कोई मंदिर नहीं थे और वे(आर्य या पुरातन कालीन हिन्दू)खुले वातावरण में या हर मकान के एक वशेष गृह में हवन कया करते थे" (वीलर्स हिस्ट्री ऑफ़ इं डया इंट्रोडक्शन पृष्ट ११)

(३) प्रोफेसर डब्लू.डी. ब्राउन कहतें हैं :- " वचारवान छात्रों के लए कई प्रबल प्रमाण यह सद्ध करतें हैं क पूर्व में हिन्दू मूर्तिपूजक ना थे और ना ही अ श क्षत, निर्दयी और असभ्य थे"

(४) श्रीमान मल कहतें हैं :- "मूर्तिपूजापूर्ण रूप से आगे वक सत हुई है। श्रेष्ठ निराकार मान्यताओं से समक्रमण ना स्था पत कर पाने वाली बुद् ध की यह उपज है। पतन अपनी व्याख्या स्वयं करता है। कपट ढोंग आदि मतान्धता और एकेश्वरवाद के पतन के प्रमुख कारण हुए। यह ढोंग स्वतंत्र देवीदेवताओं की व वधता नहीं थी वरन वशेष आयोजनों के मुख्य देव और आहावन था।" (मल्स ब्रिटिश इं डया पृष्ट ११७ मई१९१८को वैदिक पत्रिका में प्रका शत)

(५) मक्स्मुलर लखते हैं :- "कभी कभी यह भी कहा जाता है की वैदिक धर्म का लोप हो चुका है क्यूं क तांत्रिकों एवं पुरा णकों द्वारा प्रतिपादित ब्राह्म णक धर्म शव, ब्रह्मा और वष्णु के व भन्न रूपों के डरावने मूर्तियों की पूजा करते हैं"|(ओरिजिन एंड ग्रोथ ऑफ़ रिलीजन्स पृष्ट १५४)

(६) मक्स्मुलर आगे लखते हैं :- "यदि हम व सष्ठ या वश्वा मत्र या अन्य कसी आर्य क व से पूछ पाते क क्या वे सूर्य, जो आग का गोला है,वह हाथ पैर ह्रदय स्नायु आदि युक्त देहधारी है? तो निसंदेह वे हमारे प्रश्न पर ठहाके लगाते हुए कहते की हमने उनकी भाषाएँ जान कर भी उनके मंतव्यों को नहीं जाना।"(ओरिजिन एंड ग्रोथ ऑफ़ रिलीजन्स पृष्ट २७५)

(दूसरा अध्याय जो मक्स्मुलर के वचारों पर था वह अनुवादक को प्रयास करने पर भी प्राप्त नहीं हुआ अतः अनुवादक ने उनके कुछ प्राप्त अंशों को प्रथम अध्याय में ही जोड़ दिया है।)

द् वतीय अध्याय

मूर्तिपूजा पर आर. स. दत्त

प्र सद्ध भारतीय वद्वान रोमेशचन्द्रदत्त जो कसी भी रूप से आर्य समाजी भी नहीं हैं लखते हैं:

(१)ऋग्वेद में मूर्ति का कोई संकेत ही नहीं हैं, ना ही कसी पूजागृह और ना ही मंदिरों में।

(स वलाइज़ेशन ऑफ़ अन्सिएंट इं डया कतब१ पृष्ट ६६)

(२)और रेखाग णत के व्यावहारिक ज्ञान की शक्षा का महत्व उस समय ख़तम हो गया जब पुरा णक काल में चत्र आदि जड़ पूजा प्रच लत हुई और भक्तों के घर से स मधाग्नि शांत हो गयी और लोगों ने वेदी बनाने की वद्या भुला दी।

(स वलाइज़ेशन ऑफ़ अन्सिएंट इं डया कताब १ पृष्ट २६९ २७४)

(३) आगे वह लखतें हैं :

"... और कोई मूर्तिपूजा का ज्ञान ना था"

(क)बौद्ध मत में मूर्तिपूजा इसाई कालके सदियों बाद आई इस लए मूर्तिपूजा बौद्धों द्वारा शुरू हुई ऐसी शंका करना असंभव तो नहीं हैं।

(ख)ऐसा अनुमान है मनु स्मृति के संकलन काल में बौद्धों द्वारा पूजा का प्रचालन बढ़नेपर पुर्वग्रहियों द्वारा वरोध हुआ।

(ग)मूर्तियों की पूजा का वधान हिन्दुवों में बौद्ध आन्दोलन तक ना था और बौद्ध मत के प्रचार के साथ यह वक सत हुई।

(घ)मनु ...क्रोधपूर्वक मूर्तिपूजकों को शराब और मांस बेचने वालो की श्रेणी में रखते हैं।

(स वलाइज़ेशन ऑफ़ अन्सिएँट इं डया कतब२ पृष्ट १८९-१९५)

(४)पुरातन काल में अग्न्याधानकी एक छोटी स व ध सभी गृहस्तों के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग था, जब हर कसी द्वारा अपने हवनकुंड में ही ईश्वारुपसना की जाती थी और मंदिरों-मूर्तियों से सभी अन भज्ञ थे।

(हिज स वलाइज़ेशन कताब १ पृष्ट१८४)

(५)तीर्थों के वषय में आर. स.दत्त लखते हैं :

"तीर्थभ्रमण, जो पुरातन काल में नगण्य या अनजाने थे, का मूर्खतापूर्ण तरीके से आयोजन होने लगा। नये-नये भगवान, नयी-नयी मूर्तियाँ- चत्र एवं मंदिरों भारत की भू म एवं भोले-भालेश्रद्धालुओंके ह्रदय में जन्म लया।"

(स वलाइज़ेशन कताब २ पृष्ट१९५)

(६)आगे श्री दत्त लखते हैं :

"६२० ईस्वी में चीनीयात्री होव्न सॉग के आगमन काल में जगन्नाथपुरी के वशाल मंदिर का लेश भीना था।"

(स वलाइज़ेशन कताब २ पृष्ट १५१)

तृतीय अध्याय

मूर्तिपूजा पर एल्फिन्स्तों

(१) श्री एम.एल्फिन्स्तों लखतें हैं :

“दृश्यपदार्थ और चत्रों की पूजा का कोई वधान नहीं दिखाई पड़ता”

(एल्फिन्स्तों हिस्ट्री ऑफ़ इंडया पृष्ट ४०)

(२)आगे श्री एल्फिन्स्तों लखते हैं :

“.... औरसाथ ही, उन्होंने ना तो मंदिर ही खड़े कये ना ही सच्चेईश्वर के प्रतिक की पूजा करते थे”

(एल्फिन्स्तों हिस्ट्री ऑफ़ इंडया पृष्ट ९३-९४)

(३)आगे जोड़ते हुए लखतें हैं :

“श्रीमान कॉलेब्रोक स्वयं को पांच प्रकार के पवत्र कर्मों(पञ्चमहायज्ञ) तक ही समत रखतें हैं जो मनु के काल से चली आ रही हैं परन्तु वर्तमान समय में एक वशेष प्रकार की पूजा का वधान है जो पहले भारतीय समाज में ना था, परन्तु अब ये वधान एक प्रधान कर्म हो चला हैं।

ये वधान हैं मूर्तियों की पूजा का, जिनके सामने अनेक प्रकार के नमन और स्तुतियों का रोज़ का वधान हैं।”

(एल्फिन्स्तों हिस्ट्री ऑफ़ इंडया पृष्ट ११०)

चतुर्थ अध्याय

मूर्तिपूजा पर वल्सन

(१)प्रोफेसर एस.एस. वल्सन लखतें हैं :

वेदों में मंदिरों का कहीं संकेत नहीं है ना ही कसी सामूहिक भवन का वर्णन ही मलता हैं, साफ़ है क पूजा पूर्णतः घरेलु थीं”

(वल्सन्स ऋग्वेद इंट्रोडक्शन कताब १ पृष्ट XV)

(२)पुनः लखतें हैं :

"अब तक हमारी जितनी जानकारी हैं, शव,महादेव,काली,दुर्गा,राम और कृष्ण के नाम वेदों में नहीं मलते, एक रूद्र नाम आता है जिसे बाद में शव ही मान लया गया।"

(आइबीडपृष्टxxvi)

(३)आगे लखते हैं :

" औरआज जिस रूप में भारतवर्ष में पूजा होती हैं, अर्थात लंग की पूजा, उसका नाम मात्र भी संकेत , कम से कम पछली १० शताब्दियों में नहीं मलता। ना ही कोई संकेत ब्रह्मा, वष्णु और महेश, त्रिमूर्ति का ही प्राप्त होता है।" आइबीड XXVII

(४)आगे श्रीमान लखतें हैं :

"और फर भी मनु ना कसी अवतार,ना राम और ना ही कृष्ण कोइं गतकरतेंहैं। अतः यही माननीय हैं क वे रामायण और महाभारत काल के बाद वक सत हुई पूजा पद्दति के पूर्व कालीन हैं।"

(५)श्री मल्स एच.एच. वल्सन के वचारों को इस प्रकार उद्धृत करते हैं:

"…. परन्तु वे(ब्राह्मण) पगान पादरियों की तरह या यहूदियों की तरह कभी भी सार्वजानिक पूजा का आयोजन, व्यक्ति वशेष के लए पूजन, मंदिरों में पूजन यामूर्तियों का पूजन नहीं करते थे।

जोब्राह्मणमूर्तियों की पूजा करता उसेपतित और धा र्मकआयोजनों में ना बुलाया जाता"

(मनुII१५२,१८०)-(मल्सहिस्ट्री ऑफ़ ब्रिटिश इं डया कतब२पृष्ट १९२)

(७) श्रीएच.एच. वल्सन पुनः बताते हैं-

"परन्तु पूजनीय महापुरुषों की पूजा उससमाज का हिस्सा नहीं हैं और ना ही देवताओंका अवतरण जैसा की अन्य ग्रंथों में निर्दे शत हैं जो अबतक मैंने देखीं हैं यद्य प कुछ भाष्यकारों द्वारा इसपर संकेत कया गया है।"

"यह भी सत्य है क वैदिक पूजा के अ धकतर भाग निजी हैं, जिनमे स्तुति आदि अनुष्ठान,एक अदृश्य व्यापक अप्रमा णक सत्ता को संबो धत करते हुए,स्वयं की उन्नति लए संपन्न कये जाते हैं, कसी मंदिर में नहीं।"

"एकशब्द में, वैदिक मत मूर्तिपूजक नहीं हैं।"

(एच.एच. वल्सन वष्णुपुराण प्रकथन पृष्ट १११)

(८) पुनः लखतें हैं-

“कर्ता और क्रया में भेद मूर्तिपूजा से ही वक सत हुई है।प्रतिमा ने मुख्य प्रति की जगह लेली, और ना ही वेदों में परिपूर्ण हो रहे रहस्यवाद और वाक्यरचना[**] की कोई व्यवस्था की गयी।“

(मल्स हिस्ट्री ऑफ़ ब्रिटिश इं डया कतब१ पृष्ट ३९२)

(९)इसके अलावा वे लखतें हैं :

“.... परन्तु पद्धति नयी है, जगन्नाथ स्वयं नवीन है और वैष्णवों के पुराणों में इनका कोई स्थान नहीं। यह असम्भाव्य है क वर्तमान स्थल का महिमामंडन अ धक से अ धक एक शताब्दी से पूर्व हुआ हो।“

(मल्स हिस्ट्री ऑफ़ इं डया पृष्ट४१६)

पंचम अध्याय

मोहम्मदन वद्वानों के वचार मूर्तिपूजा वषय पर

अब हम मध्यकालीन भारत के दो सर्वा धक पढ़े- लखेमुसलमान सज्जनों के वचारों की ओर नज़र डालेंगे जो यह कहतेंहैं कहिंदुत्व का मुर्तिपूजन से कोई नाता नहीं हैं।

(१) मौलाना अबुल फज़ल, अकबर के दरबार के प्रधानमंत्री लखतें हैं :

“वे(हिन्दू) सभीएकेश्वरवाद में वश्वास रखतें हैं औरयद्य प वे मूर्तियों को वशेष सम्मान से रखतें हैं फर भी वे कसी प्रकार मूर्तिपूजक नहीं हैं जैसा की अज्ञानी जन समझतें हैं।“

(आर्यीने अकबरी,एफ़ गोड वनभाष्य कताब६ पृष्ट २९४)

(२)मौलाना अलबेरुनी, अरबी और संस्कृत के वद्वान जो महमूद ग़ज़नी के साथ भारत आये थे लखते हैं:

“... परन्तु हम ये घोषणा करते हैं क मूर्तियाँ केवलअनपढ़लोगों द्वारा स्था पत की जातीं हैं।

स्वच्छंद वचारों के मार्ग पर चलने वाले यादर्शन शास्त्र पढने वाले जो सत्य का सार प्राप्त करना चाहतें हैं वे इश्वारुपसना को छोड़ अन्य सभी वचारों से मुक्त हैंऔर प्रतिक रूप में स्था पत की गयी चत्र आदि वस्तुवों की पूजा की कल्पना भी नहीं करते।“

(अल्बेरुनिस इं डया डॉ. ई. स.सोचोऊ भाष्य कतब१ अध्याय XI पृष्ट ११२-११३)

(२) अतः मौलाना अलबेरुनी आगे जोड़ते हैं :

“इन सभी मूढ़ प्रलापों को दर्शाने का हमारा उद्देश्य पाठक को मूर्ति का ववरण देना है, अगर कोई कहीं मूर्ति देख ले औरउसकी व्याख्या करे तो जैसा हमने पहले कहा क मूर्तियाँ

नासमझ अनपढ़निम्न दर्जे के लोगों द्वारा स्था पत की गयींऔर हिन्दुवों ने कभी इश्वर के मूर्तियों की स्थापना नहीं की।"

(ईबिड पृष्ट ११२)

षष्ट अध्याय

मूर्तिपूजा का मूलइसाई मत

हमारेमुसलमानऔरइसाई भाइयों की धारणा है क मूर्तिपूजा का मूल हिन्दू मान्यताओं में हैं, निश्चित रूप से वे गलत हैं। पहले दर्शाये गए वचार अपनी व्याख्या खुद ही करतें हैं। स्वामी राम तीर्थ, जो यूरोप वासी तो नहीं थे परन्तु कई यूरोपीय और अमरी कयों के मार्गदर्शी हुए, पूछते हैं :

"…. भारत में मूर्तिपूजा कौन लाया?आज ये इसाई आपसे कहेंगे क आप मूर्तिपूजक हो परन्तुभारतकी क वताओं, व्यक्रण, ग णत, शल्पकला, गायन और अन्य वृहद् वैदिक साहित्य में लेश मात्र भी मूर्तिपूजा के संकेत नहीं मलते। यह मूर्तिपूजा आई कहाँ से? भारतीय धर्म के कसी भी रूप का ये हिस्सा नहीं है। मूर्तिपूजा भारत में ईसाईयों द्वारा आई। इतिहास का यह पृष्ट अब तक लोगों के नेत्रों से दूर रहा हैं परन्तु मेरा अनुसन्धान अबछपकरतैयार होगा।

"मैंने आतंरिक एवं बहारी दोनों साक्ष्यों द्वारा ये सद्ध कया है क ईसा के चौंथी और पाँचवी शताब्दीबाद भी कुछ रोमन कैथो लकइसाई भारत में बसते हैं। द क्षण भारत में वे संत थॉमस इसाई कहे जाते हैं। इन्होने ही मूर्तिपूजा की शुरुवात की। फर आतंरिक साक्ष्य से, मैंने सद्ध कया है क मूर्तिपूजा के प्रबल समर्थक रामानुजकेनिर्देशकों में से एक ये संत थॉमस इसाई थे। जैसाहमें ज्ञात है, इन्होने पहले जिस मूर्ति को शीश नवाया वह पूर्वमुखी नहीं हैं।

"मेरे सौभाग्यावानो, यह दर्शाता है कमूर्तिपूजा का मूल उस मत में है जिसे आप इसाई मत कहतें हैं। ये मशनरी जोआज मूर्तिपूजा का खंडन करते हैं, एक ओर मुर्तिपूजा को नि क्रस्ट मानते हैं और दूसरी ओर मूर्तियों का व्यापार कर पैसे कमातें हैं। इस तरह तुम (मशनरी) लोगोंका धर्मान्तरण करना चाहते हो। क्या यह मूर्तियाँ जिन्हें तुम बनाकर बेचते हो वो तुम्हारे गोसपेल से ज्यादा शक्तिशाली हैं? अब ये तुम ही निर्णय करो।"

(इन वुड्स ऑफ़ गॉड-रे लज़ेशन कताब ३ पृष्ट ३११-३१२)

इतने संस्कृत और यूरोपीय वद्वानों के साक्ष्य प्रस्तुत करने के बाद लखने को कुछ और अ धक नहीं रह गया है। अब पाठक स्वयं ये निर्णय करे क वेदों में मूर्तिपूजा की खोज कहाँ तक सफल होगी।

छोटे शब्दों में :

(क) …..ओल्ड टेस्टामेंट का इश्वर आदम और हव्वा से बातें करता है औरअब्राहम की रसोई से खाना खाता है औरमोसेस से वार्ता करने बादलों से प्रकट हो जाता है।

(ख) …ईसाईयों का इश्वर कुवांरी कन्याओं को गर्भवतीबना सकता है और इस तरह वश्वमें अपने "मात्र पुत्र" का जन्मदाता है।

(ग) ….. कुरान का अल्लाह आदम, नोआह और अब्राहम के समक्ष प्रकट होने को हमेशा तैयार बैठा रहता है।

(घ) …… परन्तु वैदिक इश्वर एक ऐसा है जो देहधारी नहीं है और कसी सीमा से बा धत नहीं है और निश्चित रूप से सभी देश, काल और वस्तु में वसता है।

हे सनातनी हिन्दू सज्जनों, आपने ऊपर दिए गए साक्ष्यों को पढ़ा और जाना क सर्फ दयानंद ही नहीं हैं जो मूर्तिपूजा त्यागने को कहतें हैं वरन वे सभी, जिन्होंने वेदों और अन्य प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन कया है, यही मानते हैं। अतः आप सभी सत्य को स्वीकार करें, जैसा की आप जानते हैं:

"सत्यमेवजयते"

इति

लव इन रिलेशन शप

DECEMBER 20, 2013 LEAVE A COMMENT

लव इन रिलेशन शप

लेखक – इंद्रजीत 'देव'

मार्च २०१० में भारतीय उच्चतम न्यायलय ने एक महत्व पूर्ण निर्णय दिया है । बिना ववाह कये भी कोई भी युवक व युवती अथवा पुरुष व स्त्री इकट्ठे रह सकते हैं । यदि कृष्ण व राधा बिना परस्पर ववाह कये एकत्र रह सकते थे तो आज के युवक युवती / पुरुष स्त्री ऐसा क्यूँ नहीं कर सकते ? . "यह निर्णय महत्वपूर्ण ही नहीं , भयंकर हानिकारक भी है । इसका परिणाम यह निकलेगा क आपकी गली में कोई पुरुष व स्त्री बिना ववाह कये आकर रहने लगेंगे, तो आप व आपकी गली में रहने वाले अन्य लोगों को उनका वहाँ रहना अत्यंत बुरा, समाज व परिवार को दू षत करने वाला प्रतीत होगा, परन्तु आप उनका कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे । यदि आप कुछ पड़ौ सयों को साथ लेकर उनके पास जाकर गली छोड़कर चले जाने को कहेंगे, तो वे उपरोक्त निर्णय दिखाएंगे । व आप असफल होकर घर वापस लौट आयेंगे । यदी आपके द्वारा पु लस में उनकी शकायत की जायेगी तो पु लस स्वयं आकर समाज, धर्म व कानून के वरुद्ध ऐसा कार्य करने के अपराध में उनसे पूछताछ करेगी, तो उसे भी वे उच्चतम न्यायालय का पूर्वोक्त निर्णय दिखाएंगे तथा पु लस भी उनके वरुद्ध केस बनाये बिना वापस लौटने के सवाय अन्य कुछ नहीं कर पायेगी ।

में भी यह घटना पूर्वोक्त रूप में कुछ स्थानों पर कुछ लोगों को सुनायी है तो लगभग सभी श्रोताओं ने यही कहा है क न्यायालय को भ्रष्ट करने व परिवारों की एकता को भंग करने के द्वार खोल दिए हैं, परन्तु मेरे वचार में न्यायालय का इस निर्णय में कोई दोष नहीं है क्यूं क न्यायपा लका का काम निर्णय देना है तथा वह निर्णय देती है | वधायिका द्वारा बनाये हुए अ धनियमों के आधार पर । वधायिका द्वारा बनाये गए अ धनियमों में लखे एक एक शब्द के गहन , पूर्ण व सत्य अर्थों पर वचार करके ही न्यायादिश निर्णय दे सकते हैं ।

उनके निजी वचार कुछ भी क्यूँ न हो, वे अ धनियम के बंधन में अक्षरसः बंधे होते हैं |इस सम्बन्ध में मैं प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ । इंग्लैण्ड में एक समय में ऐसा कानून बनाया गया था | क लण्डन की सडकों पर कोई घोडा-गाड़ी नहीं लायी जायेगी और यदी कोई ऐसा करेगा तो उसे दण्डित कया जायेगा । कुछ दिनों तक इस अ धनियम का पालन होता रहा परन्तु एक दिन लोगों ने देखा क एक गाड़ी लंदन में चल रही थी । चालक को वहाँ की पु लस ने न्यायायलय में प्रस्तुत कया, परन्तु न्यायाधीश उसे कुछ भी दंड न दे पाये, क्यूं क चालक ने यह सद्ध कर दिया क वह जो गाड़ी लेकर लन्दन में घूम रहा था, वह घोडा-गाड़ी थी ही नहीं। अ पतु घोड़ी-गाड़ी थी |इसी प्रकार एक दूसरे घटना भी लखता हूँ तब एक न्यायालय में चल रहे मुकदमे में फांसी पर लटका देने का दण्ड एक अपराधी को न्यायाधीश ने लखा- "He should be hanged" | उस अपराधी को उसके वकील ने कहा क तुम चंतामत करो | मैं तुम्हे मरने नहीं दूंगा । कुछ लोगों का वचार है क वह वकील जवाहर लाल नेहरु के पता मोती लाल नेहरु थे । वस्तुतः वही वकील थे या कोई अन्य मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है अस्तु । जब अपराधी को फांसी का फंदा डालकर लटकाया गया तो, अपराधी को तुरंत छुड़वा लया क्यूं क न्यायाधीश ने अपने आदेश में यह नहीं लखा क इसको तब तक लटकाये ही रखना है जब तक इसके प्राण न निकल जाएँ । पास खड़े उच्च अ धकारी व कर्मचारियों को उस वकील ने फांसी पर लटकाने से पूर्व ही उक्त आदेश का अर्थ समझा व मनवा लया था क इसमें तो इतना ही लखा है क इस अपराधी को लटकाया जाये । इसमें यह कहाँ लखा है क इसको मरने तक लटकाये रखना है । अ धवक्ता ने अपराधी को छुड़ा लया, बचा लया । यह उसके द्वारा शब्दार्थ की गहराई तक जाने का परिणाम था । कुछ लोग कहते हैं क इस घटना के पश्चात् ही तत्कालीन शासन ने ऐसी व्यवस्था की न्यायाधीष ऐसे अपरा धयों के मामले में निर्णय देते हुए लखने लगे "He should be hanged till death" अर्थात इसे तब तक लटकाये रखा जाये तब तक इसकी मृत्यु न हो जाये ।

सन २०१० में पूर्वोक्त मामले में न्यायाधीशों का कोई दोष नहीं है । इस कथन को पाठकों में से वे पाठक मेरी बात अच्छी पाठक समझेंगे जिनको न्यायालयों की न्याय व ध का ज्ञान है । दोष वस्तुतः उनका है जिन्होंने पुराणों में कृष्ण जी व राधा के सम्बन्धों को अश्लील चत्रित कया था । इसके अतिरिक्त उनका भी दोष है, जिन्होंने इनके सम्बन्धों को अश्लील रूप में प्रस्तुत करने वालों के हाथ न कटवाए, न पुराण जलवाये । पुराणों की हिन्दू समाज में मान्यता व प्रतिष्ठा है । न्यायालय ने सामाजिक व धा मेक दृष्टि से पापी व दोषी युवक व उस युवती के वकील ने वे प्रसंग प्रस्तुत कये जिनसे कृष्ण जी व राधा के शारीरिक सम्बन्ध स्था पत करने का वर्णन है । ("ब्रह्मवैवर्त पुराण , श्री कृष्ण जन्म खंड अध्याय ४६ व १५) इसमें न्यायाधीशों का द्वेष क्या है ?

सरकार की और से प्रस्तुत हुए अ धवक्ता में पूर्वोक्त प्रमाणों को झुठला नहीं सके । पूरा हिन्दू समाज पुराणों को सत्य व ऐतिहा सक ग्रन्थ मनाता है |आर्य समाज बहुत ही पहले ही पुराणों को झुठला चुका है व " मह र्ष दयानंद सरस्वती ने श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध् में स्पष्ट लखा है " देखो श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण कर्म स्वाभाव व चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश्य है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी कया हो ऐसा नहीं लखा।" (सत्यार्थ प्रकाश एकादशसमुल्लास)

महाखेद की बात है क इस अनिष्टकारी निर्णय के आने के बाद तीन वर्षों में भी पुरे देश में कोई हलचल नहीं हुयी । जगद्गुरु बने बैठे शंकराचार्यों में से एक ने भी इस निर्णय व इसमें राधा व कृष्ण जी के चरित्र को गलत रूप में न्यायालय द्वारा प्रमाण मानने से भ वष्य में क्या दुष्परिणाम होंगे इसकी कोई कल्पना व इसे रोकने हेतु कोई कार्यक्रम व इच्छा नहीं है | इसके अतिरिक्त कोई संत, कोई महंत, कोई ठगंत कोई बापू कोई गुरु कोई बाबा कोई सन्यासी कोई मौलवी कसी धा र्मक सामाजिक व राजनैतिक संस्था का कोई पदा धकारी आज तक इस वषय में कुछ नहीं बोला । इससे सद्ध है क उनकी दृष्टी में यह निर्णय एक युवक व एक युवती तक ही सी मत रहेगा । मेरे वचार में यह एक दूरगामी अनिष्टकारी निर्णय है तथा इसके वरोध में केवल हिंदुओं को ही नहीं सखो मुसलमानो जैनियों व बौद्धों वनवा सयों नास्तिकों व कम्युनिष्टों को भी एकत्र होकर आवाज उठानी चाहिए थी व सभी राजनैतिक, सामाजिक , धा र्मक व सांप्रदायिक मतभेद भुलाकर इस वषय पर एकजुट होना चाहिए था । खेद है हमारे देश में राजनैतिक सुख व भोग हेतु परस्पर वरोधी या भन्न भन्न वचारों वाली २५ -२६ पार्टियाँ एकत्रित होकर क थत न्यूनतम कार्यक्रम बना लेती हैं | परन्तु सामाजिक धा र्मक संस्थाएं राजनैतिक दल व समाज हित को लेकर एक मुद्दे पर भी एकत्रित नहीं होते । मुझे इस वषय में यह निवेदन करना है :

बागवानों ने अगर अगर अपनी र वश नहीं बदली,

तो पत्ता पत्ता इस चमन का बागी हो जायेगा |

१६ दिसम्बर को बलात्कार की दिल्ली में हुयी घटना के बाद में देश में प्रजा ने जो चेतना व वरोध भाव प्रगट कया उससे सरकार हिल गयी । इससे सध्द है क राजनेता केवल जनता के दवाब के आगे ही झुकते हैं । पूर्वोक्त वषय में निष्क्रिय समाज व राष्ट्र की चन्ता कौन करेगा । आज हर कोई परेशान है |रही सही कमी प्रस्तुत निर्णय के बाद होगी । न धर्म गुरुओं को न समाज शास्त्रियों को न धा र्मक संस्थाओं को परेशान हो रहे इस समाज व राष्ट्र की कोई चता है |अब ऐसा कानून कोई है ही नहीं जिसके अधीन ऐसे चलने वाले स्त्री पुरुष को अपराधी मानकर दण्ड दिया जा सके |तो न्यायालय उन्हें दण्ड दे ही क्यूँ सकता है ? उच्चतम नयायालय का निर्णय आने के बाद कसी राजनैतिक दल की नींद नहीं खुली व इस निर्णय के पश्चात live in relationship के नाम पर बिना ववाह कये रहने वालों की संख्या बड़ने लगी है अब उनको उच्चतम न्यायालय का निर्णय वशेष उत्साह प्रदान कर रहा है |व उनका मनोबल बड़ रहा है इस स्तिथी में एक स्पष्ट कानून बनाने की स्पष्ट आवश्यकता है | जिसके अधीन ऐसे सम्बंधों को अवैध व कठोर दंडनीय माना जाये । राधा और कृष्ण जी का क थत प्रश्न इसमें बाधा नहीं बनता ।

सामजिक धा र्मक राजनैतिक संस्थाओं समाज शास्त्रियों जागो तथा इस सरकार पर तुरंत दवाब डालो क वह वांछनीय कानून बनाये। सुख सु वधा व धन ऐश्वर्य में डूबे राजनैतिक नेताओं निद्रा से जागो तथा देश के परम्परागत वैवाहिक आदर्श की रक्षार्थ तुरुन्त वांछनीय कानून बनाओ अन्यथा आने वाला इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा ।

दे रही हों आं धयाँ जब द्वार पर दस्तक तुम्हारे,

तुम नहीं जगे तो ये सारा जमाना क्या कहेगा ?

बहारों को खड़ा नीलाम देखा पतझड़ कर रहा है

तुम नहीं उठे तो ये आ शयाना क्या कहेगा ?

शम्बूक वध का सत्य

DECEMBER 20, 2013 2 COMMENTS

शम्बूक वध का सत्य

लेखक – स्वामी वद्यानंद सरस्वती

एक दिन एक ब्राह्मण का इकलौता लड़का मर गया । उस ब्राह्मण के लड़के के शव को लाकर राजद्वार पर डाल दिया और वलाप करने लगा । उसका आरोप था क अकाल मृत्यु का कारण राजा का कोई दुष्कृत्य है । ऋषी मुनियों की परिषद् ने इस पर वचार करके निर्णय कया क राज्य में कहीं कोई अन धकारी तप कर रहा है क्यों क :-

राजा के दोष से जब प्रजा का व धवत पालन नहीं होता तभी प्रजावर्ग को वप त्तयों का सामना करना पड़ता है । राजा के दुराचारी होने पर ही प्रजा में अकाल मृत्यु होती है । रामचन्द्र जी ने इस वषय पर वचार करने के लए मंत्रियों को बुलवाया । उनके अतिरिक्त व सष्ठ नामदेव मार्कण्डेय गौतम नारद और उनके तीनों भाइयों को भी बुलाया । ७३/१

तब नारद ने कहा :

राजन ! द्वापर में शुद्र का तप में प्रवृत्त होना महान अधर्म है (फर त्रेता में तो उसके तप में प्रवृत्त होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता) निश्चय ही आपके राज्य की सीमा पर कोई खोटी बुध्दी वाला शुद्र तपस्या कर रहा है। उसी के कारन बालक की मृत्यु हुयी है। अतः आप अपने राज्य में खोज करिये और जहाँ कोई दुष्ट कर्म होता दिखाई दे वहाँ उसे रोकने का यत्न कीजिये । ७४/८ -२८,२९ , ३२

यह सुनते ही रामचन्द्र पुष्पक वमान पर सवार होकर (वह तो अयोध्या लौटते ही उसके असली स्वामी कुबेर को लौटा दिया था – युद्ध -१२७/६२) शम्बूक की खोज में निकल पड़े (७५/५) और द क्षण दिशा में शैवल पर्वत के उत्तर भाग में एक सरोवर पर तपस्या करते हुए

एक तपस्वी मल गया देखकर राजा श्री रघुनाथ जी उग्र तप करते हुए उस तपस्वी के पास जाकर बोले – "उत्तम तप का पालन करने वाले तापस ! तुम धन्य हो । तपस्या में बड़े चढ़े सुदृढ़ पराक्रमी परुष तुम कस जाती में उत्पन्न हुए हो ? में दशरथ कुमार राम तुम्हारा परिचय जानने के लए ये बातें पूछ रहा हूँ । तुम्हें कस वस्तु के पाने की इच्छा है ? तपस्या द्वारा संतुष्ट हुए इष्टदेव से तुम कौनसा वर पाना चाहते हो – स्वर्ग या कोई दूसरी वस्तु ? कौनसा ऐसा पदार्थ है जिसे पाने के लए तुम ऐसी कठोर तपस्या कर रहे हो जो दूसरों के लए दुर्लभ है। ७५-१४-१८

तापस ! जिस वस्तु के लए तुम तपस्या में लगे हो उसे में सुनना चाहता हूँ । इसके सवा यह भी बताओ क तुम ब्राह्मण हो या अजेय क्षत्रिय ? तीसरे वर्ण के वैश्य हो या शुद्र हो ?

क्लेशरहित कर्म करने वाले भगवान् राम का यह वचन सुनकर नीचे मस्तक करके लटका हुआ तपस्वी बोला – हे श्रीराम ! में झूठ नहीं बोलूंगा देव लोक को पाने की इच्छा से ही तपस्या में लगा हूँ ! मुझे शुद्र ही जानिए मेरा नाम शम्बूक है ७६,१-२

वह इस प्रकार कह ही रहा था क रामचंद्र जी ने तलवार निकली और उसका सर काटकर फेंक दिया ७६/४ |

शाश्त्रीय व्यवस्था है – न ही सत्यातपरो धर्म : नानृतातपातकम् परम " एतदनुसार मौत के साये में भी असत्य भाषण न करने वाला शम्बूक धा र्मक पुरुष था। सत्य वाक् होने के महत्व को दर्शाने वाली एक कथा छान्दोग्य उपनिषद में इस प्रकार लखी है – सत्यकाम जाबाल जब गौतम गोत्री हारिद्र मुनिके पास शक्षार्थी होकर पहुंचा तो मुनि ने उसका गोत्र पूछा । उसने कहा क में नहीं जनता मेरा गोत्र क्या है मेने अपनी माता से पूछा था । उन्होंने उत्तर दिया था क युवावस्था में अनेक व्यक्तियों की सेवा करती रही । उसी समय तेरा जन्म हुआ इस लए में नहीं जानती क तेरा गोत्र क्या है । मेरा नाम सतीकाम है। इस पर मुनि ने कहा – जो ब्राह्मण न हो वह ऐसी सत्य बात नहीं कह सकता। वह शुद्र और इस कारण मृत्युदंड का अपराधी कैसे हो सकता था ?

शम्बूक में आचरण सम्बन्धी कोई दोष नहीं बताया गया इस लए वह द् वज ही था। काठक संहिता में लखा है – ब्राह्मण के वषय में यह क्यों पूछते हो क उसके माता पता कौन हैं यदि उसमें ज्ञान और तदनुसार आचरण है तो वे ही उसके बाप दादा हैं। करण ने सूतपुत्र होने के कारन स्वयंवर में अयोग्य ठहराए जाने पर कहा था क जन्म देना तो ईश्वराधीन है परन्तु पुरुषार्थ के द्वारा कुछ बन जाना मनुष्य के अपने वश में है।

आयस्तम्ब सूत्र में कहा है –

धर्माचरण से न्रिकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है जिसके वह योग्य हो। इसी प्रकार अधर्माचरण से पूर्व अर्थात उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे नीचे वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गना जाता है। मनुस्मृति में कहा है –

जो शूद्रकुल में उप्तन्न होक ब्राह्मण के गुण कर्म स्वभाववाला हो वह ब्राह्मण बन जाता है। इसी प्रकार ब्राह्मण कुलोत्पन्न होकर भी जिसके गुण कर्म स्वभाव शुद्र के सदृश्य हों वह शुद्र हो जाता है मनु १०/६५

चारों वेदों का वद्वान कन्तु चरित्रहीन ब्राह्मण शुद्र से निकृष्ट होता है , अग्निहोत्र करने वाला जितेन्द्रिय ही ब्राह्मण कहलाता है । महाभारत – अनुगीता पर्व ९१/३७)

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शुद्र सभी तपस्या के द्वारा स्वर्ग प्राप्त करते हैं ब्राह्मण और शुद्र का लक्षण करते हुए वन पर्व में कहा है – सत्य दान क्षमा शील अनुशंसता तप और दया जिसमे हों ब्राह्मण होता है और जिसमें ये न हों शुद्र कहलाता है। १८०/२१-२६

इन प्रमाणो से स्पष्ट है क वर्ण व्यवस्था का आधार गुण कर्म स्वाभाव है जन्म नहीं और तपस्या करने का अ धकार सबको प्राप्त है।

गीता में कहते हैं – ज्ञानी जन वद्या और वनय से भरपूर ब्राह्मण गौ हाथी कुत्ते और चंडाल सबको समान भाव से देखते अर्थात सबके प्रति एक जैसा व्यवहार करते हैं । गीता ५/१८

मह र्ष वाल्मी क को रामचन्द्र जी का परिचय देते हुए नारद जी ने बताया – राम श्रेष्ठ सबके साथ सामान व्यवहार करने वाले और सदा प्रय दृष्टिवाले थे । तब वह तपस्या जैसे शुभकार्य में प्रवृत्त शम्बूक की शुद्र कुल में जन्म लेने के कारन हत्या कैसे कर सकते थे ? (बाल कांड १/१६) इतना ही नहीं श्री कृष्ण ने कहा ९/१२- ,मेरी शरण में आकर स्त्रियाँ वैश्य शुद्र अन्यतः अन्त्यज आदि पापयोनि तक सभी परम गति अर्थात मोक्ष को प्राप्त करत हें ।

इस श्लोक पर टिप्पणी करते हुये लोकमान्य तिलक स्वर चत गीता रहस्य में लखत हैं "पाप योनि " शब्द से वह जाती वव क्षत जिसे आजकल जरायस पेशा कहते हैं । इसका अर्थ यह है क इस जाती के लोग भी भगवद भक्ति से सध्दि प्राप्त करते हैं ।

पौरा णक लोग शबरी को निम्न जाती की स्त्री मानते हैं । तुलसी दास जी ने तो अपनी रामायण में यहाँ तक लख दिया – श्वपच शबर खल यवन जड़ पामरकोल करात ". उसी शबरी के प्रसंग में वाल्मी क जी ने लखा है – वह शबरी सद्ध जनों से सम्मानित तपस्विनी थी | अरण्य ७४/१०

तब राम तपस्या करने के कारण शम्बूक को पापी तथा इस कारण प्राणदण्ड का अपराधी कैसे मान सकते थे ?

राम पर यह मथ्या आरोप मह र्ष वाल्मी क ने नहीं उत्तरकाण्ड की रचना करके वाल्मी क रामायण में उसका प्रक्षेप करने वाले ने लगाया है ।

शायद मर्यादा पुरुषोत्तम के तथोक्त कुकृत्य से भ्र मत होकर ही आदि शंकराचार्य ने शूद्रों के लए वेद के अध्यन श्रवणादि का निषेध करते हुए वेद मन्त्रों को श्रवण करने वाले शूद्रों के कानो में सीसा भरने पाठ करने वालों की जिव्हा काट डालने और स्मरण करने वालों के शरीर के टुकड़े कर देने का वधान कया । कालांतर में शंकर का अनुकरण करने वाले

रामानुचार्य निम्बाकाचार्य आदि ने इस व्यवस्था का अनुमोदन कया । इन्ही से प्रेरणा पाकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में आदेश दिया –

पुजिये वप्र शीलगुणहीना, शुद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना। अरण्य ४०/१

ढोर गंवार शुद्र पशु नारी , ये सब ताडन के अ धकारी। लंका ६१/३

परन्तु यह इन आचार्यों की निकृष्ट अवैदिक वचारधारा का परिचायक है । आर्ष साहित्य में कहीं भी इस प्रकार का उल्लेख नहीं मलता । परन्तु इन अज्ञानियों के इन दुष्कृत्यों का ही यह परिणाम है क करोड़ों आर्य स्वधर्म का परित्याग करके वध र्मयों की गोद में चले गए । स्वयं शंकर की जन्मभू म कालड़ी में ही नहीं सम्पूर्ण केरल में बड़ी संख्या में हिन्दू लोग ईसाई और मुसलमान हो गये और अ खल भारतीय स्थर पर देश के वभाजन का कारन बन गए और यदि शम्बूक का तपस्या करना पापकर्म था तो उसका फल = दण्ड उसी को मलना चाहिए था । परन्तु यहाँ अपराध तो कया शम्बूक ने और उसके फल स्वरुप मृत्यु दण्ड मला ब्राह्मण पुत्र को और इकलौते बेटे की मृत्यु से उत्पन्न शोक में ग्रस्त हुआ उसका पता। वर्तमान में इस घटना के कारण राम पर शूद्रों पर अत्याचार करने और सीता वनवास के कारण स्त्री जाति पर ही नहीं, निर्दोषों के प्रति अन्याय करने के लांछन लगाये जा रहे हैं । कौन रहना चाहेगा ऐसे रामराज्य में ?

शबरी

DECEMBER 19, 2013 LEAVE A COMMENT

शबरी

लेखक- स्वामी वद्यानंद सरस्वती

लोकोक्ति है क शबरी नामक भीलनी ने राम को अपने जूठे बेर खलाये थे । इस वषय में अनेक क वयों ने बड़ी सरस और भावपूर्ण क वतायें भी लख डालीं । परन्तु वाल्मी क रामायण में न कोई भीलनी है और न बेर फर बेरों के झूठे होने का तो प्रसंग ही नहीं उठता ।

सीता की खोज करते हुए जिस शबरी से रामचन्द्र जी की भेंट हुयी थी वह शबर जाति की न होकर शबरी नामक श्रमणी थी ७३/२६ । उसे 'धर्म संस्थिता' कहा गया है ७४/७ । राम ने भी उसे सद्धा सद्ध और तपोधन कहते हुए सम्मानित कया था ७४/१० । सनातन धर्मी नेता स्वामी करपात्री के अनुसार शबरी का शबर जाती का होना और झूठे फल देना आदि प्रमा णक न होकर प्रेम स्तुत्यर्थ है – मया तू सं चतम्वन्यम (७४/१७) मैने आपके लए व वध वन्य फल सं चत कये हैं । यही वस्तु स्ति थ है । रामयण में इस प्रसंग में लखा है – हे नर केसरी ! पम्पासर के तट पर पैदा होने वाले ये फल मेने आपके लए सं चत कर रक्खे हैं । अरण्य ७४/१७

पदम् पुराण में "स्वयमासाद्य" का अर्थ सभी ने यह कया है क वह जिस पेड़ के फल तोड़ती थी उस पर के दो एक को चख कर देखती थीं क वे ठीक हैं या नहीं । इस प्रकार खट्टे मीठे का परीक्षण करके वह मीठों को अपनी टोकरी में डालती जाती थी और खट्टो को छोड़ती जाती थी । हमें बचपन में अनेक बार आम के बागों में जाकर इसी प्रकार परीक्षण कर करके आम खाने का अवसर मला है । इस और ऐसे ही कसी अन्य अवतरण का यह अर्थ करना क शबरी प्रत्येक फल को चख चख कर राम को खलाती थी सर्वथा असंगत है ।

मनुस्मृति में स्पष्ट लखा है "नोच्छिष्टंकस्य चददद्यात" २/५६ । मनुस्मृति के टीकाकारो में सर्वा धक प्रमा णक कुल्लूक भट्ट ने इस पर अपनी टिप्प्णी में लखा है – अनैन सामान्य निषेधेन ——————-. जब शास्त्र शुद्र को भी जूठा देने का निषेध करता है तो राम और लक्ष्मण जैसे प्रतिष्ठित अति थयों को झूठाः खलाने की कल्पना कैसे की जा सकती है ? जैसे कसी को अपना झूठा खलाने का निषेध है वैसे ही कसी का झूठाः खाना भी नि षद्ध है ।

 व ध निषेध या धर्माधर्म के वषय में राम मनु स्मृति को ही प्रमाण मानते थे । बा ल वध के प्रसंग में जब बाली की आप त्तयों का राम से अन्यथा उत्तर न बन पड़ा तो मनु की शरण ली और कहा -सदाचार के प्रसंग में मनु ने दो श्लोक लखे हैं । धर्मात्मा लोग उनके अनुसार आचरण करते हैं | मैंने वही कया है | १८/३०-३१

इस लए यदि शबरी ऐसी भूल कर बैठती तो निश्चय ही राम खाने से इंकार कर देते । अतः शबरी से सम्बं धत यह कवदंती प्रमाण एवं तर्क वरूध्द होने से मथ्या है ।

अहल्योद्धार

DECEMBER 19, 2013 LEAVE A COMMENT

अहल्योद्धार

लेखक – स्वामी वद्यानंद सरस्वती

धुरिधरत निज सीस पैकहु रहीम केहि काज |

जेहिरज मुनि पत्नी तरी तेहिढूँढत गजराज ||

कहते हैं क हाथी चलते चलते अपनी सूंड से मट्टी उठाकर अपने शरीर पर डालता रहता है । वह ऐसा क्यों करता है ? रहीम के वचार में वह उस मट्टी को खोज रहा है जिसका स्पर्श पाकर मुनि पत्नी का उद्धार हो गया था । इस दोहे में जिस घटना का संकेत है उसके अनुसार गौतम मुनि की पत्नी अहल्या अपने पति के शाप से पत्थर हो गयी थी और रामचंद्र जी के चरणों की घु ल का स्पर्श पाकर पुनः मानवी रूप में आ गयी थी ।

पौरा णक कथा के अनुसार – एक समय ब्रह्मा जी ने अपनी इच्छा से एक अत्यंत रूपवती कन्या की सृष्टी की और उसका ववाह गौतम ऋषी से कर दिया । एक बार इंद्र गौतम मुनि का रूप धारण करके उनकी स्त्री अहल्या के पास गया और उससे सम्भोग करने लगा । उसी समय गौतम वहाँ आ गए इस पर अहल्या ने उस छदमवेषधारी इंद्रा को कुटिया में छिपा दिया । तब वह द्वार खोलने गई । मुनि ने द्वार खोलने में देरी का कारन पूछा तो अहल्या ने वास्त वकता को छिपा कर बात बना दी । परन्तु ऋषी ने अपने तपोबल से सब कुछ जानकर अहल्या को पत्थर बन जाने का शाप दे दिया और यह भी कह दिया क त्रेता में जब भगवान् राम अवतार लेंगे तो उनके चरणों की धू ल से तेरा उद्धार होगा ।

मनुष्य से पत्थर और लाखों वर्ष बाद पत्थर से मनुष्य बन जाने की गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रचारित इस कथा का आदि कवी की रचना में कोई उल्लेख नहीं है । वाल्मी क र चत रामायण में अहल्या के प्रसंग में बालकाण्डसर्ग ४८ में इस प्रकार लखा है ।

इंद्र ने गौतम का वेश धारण कर और वैसा ही स्वर बनाकर अहल्या से कहा – अर्थी " रति की कामना करने वाले " ऋतू काल की प्रतीक्षा नहीं करते। इस लए में तुम्हारा समागम चाहता हूँ । दुष्ट बुद्धी अहल्या ने मुनि वेशधारी इंद्र को पहचान कर भी कुतूहलवश उससे समागम कया । तत्पश्चात अहल्या ने संतुष्ट मन से इंद्र से कहा – हे इंद्र में संतुष्ट हूँ अब तुम यहाँ से शीघ्र चले जाओ । इस पर इंद्र हंसते हुए बोला – में भी संतुष्ट हूँ । यह कह कर कुटिया से बहार निकल गया । गौतम मुनि ने इंद्र को कुटिया से निकलते हुए देख लया और अहल्या को श्राप देते हुए कहा ‘ तू यहाँ सहस्त्रों वर्ष तक निवास करेगी आहार रहित केवल वायु का भक्षण करने वाली भस्म में सोने वाली संतप्त और सबसे अदृश्य रहकर इस आश्रम में वास करेगी । इससे यह प्रतीत होता है यद्य प इंद्र ने गौतम का रूप धारण करके छल कया अहल्या के साथ समागम उसने उसके (अहल्या के) स्वेच्छापूर्वक समर्पण के बाद ही कया । अर्थात अहल्या ने यह कुकृत्य जानबूझकर कया । हो सकता है क बाद में अहल्या को अपने इस कुकृत्य पर पश्चाताप हुआ हो और लज्जा के कारन समाज से दूर रह कर अपना जीवन व्यतीत करने लगी हो – न कसी से बोल चाल न ढंग से खाना पीना इत्यादि । यही उसका पत्थर हो जाना कहा गया हो ।

उधर इंद्र ने अपने कुकृत्य को “सुरकर्म” बताया है (४९/२) |परन्तु वहीं श्लोक ६ से स्पष्ट होता है क इंद्र ने यह कृत्य बिना सोचे समझे काम के वशीभूत होकर कया था । जहाँ इन श्लोकों में इंद्र के अहल्या की इच्छा से समागम करने की बात कही गई है । वहाँ निम्न श्लोक में उसे बलात्कारी बताया गया है ।-

पहले वचार न करके मोह से मुनि पत्नी से बलात्कार करके मुनि के शाप से उसी स्थान पर वृषण हीन कया गया । इंद्र अब देवों पर क्रोध कर रहा है । ४९/६-७

पुनः सर्ग ५१ में गौतम के पुत्र शानंद का वक्तव्य भी दृष्टव्य है । उसने अपनी माता को ‘यशस्विनी (श्लोक ५-६) बताया है । स्पष्ट है क अहल्या ने इंद्र के साथ समागम अपनी इच्छा से नहीं कया था । इंद्र के छल से ही वह चाल चली थी । आगे कहा है राम और लक्ष्मण ने उसके पैर छुए (४९/१९) यही नहीं अहल्या ने भी दोनों को अति थ रूप में स्वीकार कया और उनका स्वागत कया यदि अहल्या का चरित्र संदिग्ध होता तो क्या यह सब कुछ होता ?

इस समस्त वर्णन में अहल्या के शीला रूप होने और राम की चरण रज के स्पर्श से पुनः मानवी रूप में आने का कहीं संकेत तक नहीं है। रामायण का प्र सद्ध टीकाकार गो वंदराज भी इस बात को नहीं मनाता । उन्होंने स्पष्ट लखा है वाल्मी क को अहल्या का पाषाण रूप होना अ भमत नहीं है ।

अहल्या सम्बन्धी उस कथा को वश्वा मत्र से सुनकर जब राम लक्ष्मण ने गौतम मुनि के आश्रम में प्रवेश कया तो उन्होंने अहल्या को जिस रूप में देखा उसका वर्णन वाल्मी क ने इस प्रकार कया है – तप से दीप्तमान रूप वाली बादलों से मुक्त पूर्ण चन्द्रमा की प्रभा के समान तथा प्रदीप्त अग्नि शखा और सूर्य के तेज के समान – क्या यह शला रूप अहल्या का वर्णन हो सकता है ? इतना ही नहीं शाप का अंत हुआ जानकर वह राम के दर्शनाथ आई। शलाभूत अहल्या के गमनार्थक "आई " क्रया पद का प्रयोग कैसे हो सकता था ? वस्तुतस्तु अहल्या अपने पति गौतम मुनि की भांति तपोनिष्ठ देवी थी |

ब्राह्मण ग्रंथों में इंद्र को 'अहल्यायैजार' कहा है । इसके रहस्य को न समझने के कारण लोगों ने मनमाने ढंग से कथा गढ़कर अहल्या पर चरित्र दोष लगाया है । इस रहस्य को तंत्र वार्तिक के शष्टाचार प्रकरण में शंका को पूर्ववर्ती भट्टाचार्य ने इस प्रकार स्पष्ट कया है – इंद्र का अर्थ है परम ऐश्वर्यवान वह कौन अहि ? सूर्य । अहल्या दो शब्दों से मलकर बना है – अह और ल्या। अह का अर्थ अहि दिन और ल्या का अर्थ है छिपने वाली। इस प्रकार दिन में छिपाने वाली या न रहने वाली को अहल्या कहते हैं । वह कौन है ? "रात्रि " जार का अर्थ है जीर्ण करने वाला । रात्रि को जीर्ण क्षीण करने वाला होने से सूर्य ही रात्रि अर्थात अहल्या का जार कहलाता है । इस प्रकार यह परस्त्री से व्य भचार करने वाले कसी पुरुष वशेष (इंद्र) का कोई प्रसंग नहीं है ।

लव कुश के जन्म की यथार्थ कहानी….

DECEMBER 17, 2013 LEAVE A COMMENT

लव कुश के जन्म की यथार्थ कहानी….

लेखक – स्वामी वद्यानंद जी सरस्वती

राम द्वारा अयोध्या यज्ञ में मह र्ष वाल्मी क आये उन्होंने अपने दो हष्ट पुष्ट शष्यों से कहा – तुम दोनों भाई सब ओर घूम फर कर बड़े आनंदपूर्वक सम्पूर्ण रामायण का गान करो। यदि श्री रघुनाथ पूछें – बच्चो ! तुम दोनों कसके पुत्र हो तो महाराज से कह देना क हम दोनों भाई मह र्ष वाल्मी क के शष्य हैं । ९३ /५

उन दोनों को देख सुन कर लोग परस्पर कहने लगे – इन दोनों कुमारों की आकृति बिल्कुल रामचंद्र जी से मलती है ये बिम्ब से प्रगट हुए प्रतिबिम्ब के सामान प्रतीत होते हैं । ९४/१४

यदि इनके सर पर जटाएं न होतीं और ये वल्कल वस्त्र न पहने होते तो हमें रामचन्द्र जी में और गायन करने वाले इन कुमारों में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। ९४/१४

बीस सर्गों तक गायन सुनाने के बाद श्री राम ने अपने छोटे भाई भरत से दोनों भाइयों को १८ -१८ हजार मुद्राएं पुरस्कार रूप में देने को कह दिया। यह भी कह दिया क और जो कुछ वे चाहें वह भी दे देना । पर दिए जाने पर भी दोनों भाइयों ने लेना स्वीकार नहीं कया । वे बोले – इस धन की क्या आवश्यकता है ? हम वनवासी हैं । जंगली फूल से निर्वाह करते हैं सोना चांदी लेकर क्या करेंगे । उनके ऐसा कहने पर श्रोताओं के मन में बड़ा कुतूहल हुआ । रामचंद्र जी सहित सभी श्रोता आश्चर्य च कत रह गए । रचयिता का नाम पूछे जाने पर उन्होंने बताया क हमारे गुरु वाल्मी क जी ने सब रचना की है । उन्होंने आपके चरित्र को महाकाव्य रूप दिया है इसमें आपके जीवन की सब बातें आ गयी हैं ९४/१८ – २८

उस कथा से रामचंद्र जी को मालूम हुआ क कुश और लव दोनों सीता के पुत्र हैं । का लदास के दुष्यंत के मन में शकुंतला के पुत्र नन्हे भरत को देखते ही जिन भावों का उद्रेक हुआ था , क्या राम के मन में लव और कुश को देख – सुनकर कुछ वैसी ही प्रति क्रया नहीं होनी चाहिए थी ? आदि क व ऐसे मा र्मक प्रसंग को अछूता कैसे छोड़ देते । निश्चय ही यह समूचा प्रसंग सर्वथा कल्पित एवं प्र क्षप्त है । यह जानकारी सभा के बीच बैठे हुए रामचन्द्र जी ने तो शुद्ध आचार वचार वाले दूतों को बुलाकर इतना ही कहा – तुम लोग भगवन वाल्मी क के पास जाकर कहो क यदि सीता का चरित्र शुध्द है और उनमें कोई पाप नहीं है तो वह महामुनि से अनुमति ले यहाँ जन समुदाय के सामने अपनी प वत्रता प्रमा णत करें।

इस प्रकरण के अनुसार रामचन्द्र जी को यज्ञ में आये कुमारों के रामायण पाठ से ही लव कुश के उनके अपने पुत्र होने का पता चला था । परन्तु इसी उत्तर काण्ड के सर्ग ६५-६६ के अनुसार शत्रुघ्न को लव कुश के जन्म लेने का बहुत पहले पता था |सीता के प्रसव काल में शत्रुघ्न वाल्मी क के आश्रय में उपस्थित थे । जिस रात को शत्रुघ्न ने मह र्ष की पर्णशाला में प्रवेश कया था। उसी रात सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया था । आधी रात के समय कुछ मुनि कुमारों ने वाल्मी क जी के पास आकर बताया – "भगवन ! रामचन्द्र जी की पत्नी ने दो पुत्रों को जन्म दिया है । " उन कुमारों की बात सुनकर मह र्ष उस स्थान पर गए। सीता जी के वे दोनों पुत्र बाल चन्द्रमा के सामान सुन्दर तथा देवकुमारों के सामान तेजस्वी थे।

आधी रात को शत्रुघ्न को सीता के दो पुत्रों के होने का संवाद मला। तब वे सीता की पर्णशाला में गए और बोले – माता जी यह बड़े सौभाग्य की बात है " महात्मा शत्रुघ्न उस समय इतने प्रसन्न थे क उनकी वह वर्षाकालीन सावन की रात बात की बात में बीत गई । सवेरा होने पर महापराक्रमी शत्रुघ्न हाथ जोड़ मुनि की आज्ञा लेकर पश्चिम दिशा की और चल दिए |66/12-14

यह कैसे हो सकता है क शत्रुघ्न ने वर्षों तक रामचंद्र जी को ही नहीं । सारे परिवार को सीता के पुत्रों के होने का शुभ समाचार न दिया हो । मह र्ष वाल्मी क का आश्रय भी अयोद्ध्या से कौन दूर था – उनका अयोध्या में आना जाना भी लगा रहता था । इस लए यज्ञ के अवसर पर लव कुश के सार्वजानिक रूप से रामायण के गाये जाने के समय तक राम को अपने पुत्रों के पैदा होने का पता न चला हो, यह कैसे हो सकता है ? इससे उत्तरकाण्ड के प्र क्षप्त होने के साथ साथ यह भी स्पष्ट हो जाता है क वह कसी एक व्यक्ति की रचना भी नहीं है अन्यथा उसमें पूर्वापर वरोध न होता ।

प्र क्षप्त उत्तरकाण्ड के अंतर्गत होने से लव कुश का राम की संतान होना भी संदिग्ध है । नारद द्वारा प्रस्तुत कथावस्तु के अनुसार ही वाल्मी क कृत रामायण में उसका कोई उल्लेख नहीं है ।

मदर टेरेसा संत या धोखा

DECEMBER 1, 2013 2 COMMENTS

मदर टेरेसा संत या धोखा

एग्नेस गोंक्झा बोज़ा झयू अर्थात मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे, मेसेडोनिया में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ क "उन्हें ईश्वर बुला रहा है"। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आईं और फ़र यहीं की होकर रह गईं। उनके बारे में इस प्रकार की सारी बातें लगभग सभी लोग जानते हैं, ले कन कुछ ऐसे तथ्य, आँकड़े और लेख हैं जिनसे इस शख्सियत पर सन्देह के बादल गहरे होते जाते हैं। उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मशनरीज ऑफ़ चैरिटी की मदद से "धर्म परिवर्तन" का आरोप तो लगता ही रहा है, ले कन बात कुछ और भी है, जो उन्हें "दया की मूर्ति", "मानवता की से वका", "बेसहारा और गरीबों की मसीहा"… आदि वाली "लार्जर दैन लाईफ़" छ व पर ग्रहण लगाती हैं, और मजे की बात यह है क इनमें से अ धकतर आरोप (या कहें क खुलासे) पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही कये हैं, ना क कसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है (क्यों क हिन्दू संगठन जो भी बोलते या लखते हैं उसे तत्काल सांप्रदायिक ठहरा दिये जाने का "रिवाज" है)। बहरहाल, आईये देखें क क्यों इस प्रकार के "संत" या "चमत्कार" आदि की बातें बेमानी होती हैं (अब ये पढ़ते वक्त यदि आपको हिन्दुओं के बड़े-बड़े और नामी- गरामी बाबाओं, संतों और प्रवचनकारों की याद आ जाये तो कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी) –

यह बात तो सभी जानते हैं क धर्म कोई सा भी हो, धा र्मक गुरु/गुरुआनियाँ/बाबा/सन्त आदि कोई भी हो बगैर "चन्दे" के वे अपना कामकाज(?) नहीं फ़ैला सकते हैं। उनकी मशनरियाँ, उनके आश्रम, बड़े-बड़े पांडाल, भव्य मन्दिर, मस्जिद और चर्च आदि इसी वशालकाय चन्दे की रकम से बनते हैं। जाहिर है क जहाँ से अकूत पैसा आता है वह कोई प वत्र या धर्मात्मा व्यक्ति नहीं होता, ठीक इसी प्रकार जिस जगह ये अकूत पैसा जाता है, वहाँ भी ऐसे ही लोग बसते हैं। आम आदमी को बरगलाने के लये पाप-पुण्य, अच्छाई-बुराई, धर्म आदि की घुट्टी लगातार पलाई जाती है, क्यों क जिस अंतरात्मा के बल पर व्यक्ति का सारा व्यवहार चलता है, उसे दर कनार कर दिया जाता है। पैसा (यानी चन्दा) कहीं से भी आये, कसी भी प्रकार के व्यक्ति से आये, उसका काम-धंधा कुछ भी हो, इससे लेने वाले "महान"(?) लोगों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता। उन्हें इस बात की चंता कभी नहीं होती क उनके तथाक थत प्रवचन सुनकर क्या आज तक कसी भी भ्रष्टाचारी या अनैतिक व्यक्ति ने अपना गुनाह कबूल कया है? क्या कसी पापी ने आज तक यह कहा है क "मेरी यह कमाई मेरे तमाम काले कारनामों की है, और मैं यह सारा पैसा त्यागकर आज से सन्यास लेता हूँ और मुझे मेरे पापों की सजा के तौर पर कड़े परिश्रम वाली जेल में रख दिया जाये.."। वह कभी ऐसा कहेगा भी नहीं, क्यों क

इन्हीं संतों और महात्माओं ने उसे कह रखा है क जब तुम अपनी कमाई का कुछ प्रतिशत "नेक" कामों के लये दान कर दोगे तो तुम्हारे पापों का खाता हल्का हो जायेगा। यानी, बेटा..तू आराम से कालाबाजारी कर, चैन से गरीबों का शोषण कर, जम कर भ्रष्टाचार कर, ले कन उसमें से कुछ हिस्सा हमारे आश्रम को दान कर… है ना मजेदार धर्म…

बहरहाल बात हो रही थी मदर टेरेसा की, मदर टेरेसा की मृत्यु के समय सुसान शील्ड्स को न्यूयॉर्क बैंक में पचास म लयन डालर की रकम जमा मली, सुसान शील्ड्स वही हैं जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ सहायक के रूप में नौ साल तक काम कया, सुसान ही चैरिटी में आये हुए दान और चेकों का हिसाब- कताब रखती थीं। जो लाखों रुपया गरीबों और दीन-हीनों की सेवा में लगाया जाना था, वह न्यूयॉर्क के बैंक में यूँ ही फ़ालतू पड़ा था? मदर टेरेसा को समूचे वश्व से, कई ज्ञात और अज्ञात स्रोतों से बड़ी-बड़ी धनरा शयाँ दान के तौर पर मलती थीं।

अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक रॉबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भ वष्यनि ध फ़ण्ड्स में 450 म लयन पाउंड का घोटाला कया, ने मदर टेरेसा को 1.25 म लयन डालर का चन्दा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल के भूतकाल को जानती थीं। हैती के तानाशाह जीन क्लाऊड डुवा लये ने मदर टेरेसा को सम्मानित करने बुलाया। मदर टेरेसा कोलकाता से हैती सम्मान लेने गईं, और जिस व्यक्ति ने हैती का भ वष्य बिगाड़ कर रख दिया, गरीबों पर जमकर अत्याचार कये और देश को लूटा, टेरेसा ने उसकी "गरीबों को प्यार करने वाला" कहकर तारीफ़ों के पुल बाँधे।

मदर टेरेसा को चार्ल्स कीटिंग से 1.25 म लयन डालर का चन्दा मला, ये कीटिंग महाशय वही हैं जिन्होंने "कीटिंग से वंग्स एन्ड लोन्स" नामक कम्पनी 1980 में बनाई थी और आम जनता और मध्यमवर्ग को लाखों डालर का चूना लगाने के बाद उसे जेल हुई थी। अदालत में सुनवाई के दौरान मदर टेरेसा ने जज से कीटिंग को "माफ़"(?) करने की अपील की थी, उस वक्त जज ने उनसे कहा क जो पैसा कीटिंग ने गबन कया है क्या वे उसे जनता को लौटा सकती हैं? ता क निम्न-मध्यमवर्ग के हजारों लोगों को कुछ राहत मल सके, ले कन तब वे चुप्पी साध गईं।

ब्रिटेन की प्र सद्ध मे डकल पत्रिका Lancet के सम्पादक डॉ.रॉबिन फ़ॉक्स ने 1991 में एक बार मदर के कलकत्ता स्थित चैरिटी अस्पतालों का दौरा कया था। उन्होंने पाया क बच्चों के लये साधारण "अनल्जे सक दवाईयाँ" तक वहाँ उपलब्ध नहीं थीं और न ही "स्टर्लाइज्ड सरिंज" का उपयोग हो रहा था। जब इस बारे में मदर से पूछा गया तो उन्होंने कहा क "ये बच्चे सर्फ़ मेरी प्रार्थना से ही ठीक हो जायेंगे…"(?)

बांग्लादेश युद्ध के दौरान लगभग साढ़े चार लाख महिलायें बेघरबार हुईं और भागकर कोलकाता आईं, उनमें से अ धकतर के साथ बलात्कार हुआ था। मदर टेरेसा ने उन महिलाओं के गर्भपात का वरोध कया था, और कहा था क "गर्भपात कैथो लक परम्पराओं के खलाफ़ है और इन औरतों की प्रेग्नेन्सी एक "प वत्र आशीर्वाद" है…"। उन्होंने हमेशा गर्भपात और गर्भनिरोधकों का वरोध कया। जब उनसे सवाल कया जाता था क "क्या ज्यादा बच्चे पैदा होना और गरीबी में कोई सम्बन्ध नहीं है?" तब उनका उत्तर हमेशा गोलमोल ही होता था क "ईश्वर सभी के लये कुछ न कुछ देता है, जब वह पशु-प क्षयों को भोजन उपलब्ध करवाता है तो आने वाले बच्चे का खयाल भी वह रखेगा इस लये गर्भपात और गर्भनिरोधक एक अपराध

है" (क्या अजीब थ्योरी है...बच्चे पैदा करते जाओं उन्हें "ईश्वर" पाल लेगा... शायद इसी थ्योरी का पालन करते हुए ज्यादा बच्चों का बाप कहता है क "ये तो भगवान की देन हैं..", ले कन वह मूर्ख नहीं जानता क यह "भगवान की देन" धरती पर बोझ है और सकुड़ते संसाधनों में हक मारने वाला एक और मुँह...)

मदर टेरेसा ने इन्दिरा गाँधी की आपातकाल लगाने के लये तारीफ़ की थी और कहा क "आपातकाल लगाने से लोग खुश हो गये हैं और बेरोजगारी की समस्या हल हो गई है"। गाँधी परिवार ने उन्हें "भारत रत्न" का सम्मान देकर उनका "ऋण" उतारा। भोपाल गैस त्रासदी भारत की सबसे बड़ी औद्यो गक दुर्घटना है, जिसमें सरकारी तौर पर 4000 से अ धक लोग मारे गये और लाखों लोग अन्य बीमारियों से प्रभा वत हुए। उस वक्त मदर टेरेसा ताबड़तोड़ कलकत्ता से भोपाल आईं, कस लये? क्या प्रभा वतों की मदद करने? जी नहीं, बल्कि यह अनुरोध करने क यूनियन कार्बाईड के मैनेजमेंट को माफ़ कर दिया जाना चाहिये। और अन्ततः वही हुआ भी, वारेन एंडरसन ने अपनी बाकी की जिन्दगी अमेरिका में आराम से बिताई, भारत सरकार हमेशा की तरह कसी को सजा दिलवा पाना तो दूर, ठीक से मुकदमा तक नहीं कायम कर पाई। प्रश्न उठता है क आ खर मदर टेरेसा थीं क्या?

एक और जर्मन पत्रकार वाल्टर व्युलेन्वेबर ने अपनी पत्रिका "स्टर्न" में लखा है क अकेले जर्मनी से लगभग तीन म लयन डालर का चन्दा मदर की मशनरी को जाता है, और जिस देश में टैक्स चोरी के आरोप में स्टेफ़ी ग्राफ़ के पता तक को जेल हो जाती है, वहाँ से आये हुए पैसे का आज तक कोई ऑ डट नहीं हुआ क पैसा कहाँ से आता है, कहाँ जाता है, कैसे खर्च कया जाता है... आदि।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रस्टोफ़र हिचेन्स ने 1994 में एक डॉक्यूमेंट्री बनाई थी, जिसमें मदर टेरेसा के सभी क्रयाकलापों पर वस्तार से रोशनी डाली गई थी, बाद में यह फ़ल्म ब्रिटेन के चैनल-फ़ोर पर प्रद र्शत हुई और इसने काफ़ी लोक प्रयता अर्जित की। बाद में अपने कोलकाता प्रवास के अनुभव पर उन्होंने एक कताब भी लखी "हैल्स एन्जेल" (नर्क की परी)। इसमें उन्होंने कहा है क "कैथो लक समुदाय वश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है, जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं, चैरिटी चलाना, मशनरियाँ चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनके मुख्य काम हैं..." जाहिर है क मदर टेरेसा को टेम्पलटन सम्मान, नोबल सम्मान, मानद अमेरिकी नागरिकता जैसे कई सम्मान मले।

संतत्व गढ़ना –

मदर टेरेसा जब कभी बीमार हुईं, उन्हें बेहतरीन से बेहतरीन कार्पोरेट अस्पताल में भरती कया गया, उन्हें हमेशा महंगा से महंगा इलाज उपलब्ध करवाया गया, हालां क ये अच्छी बात है, इसका स्वागत कया जाना चाहिये, ले कन साथ ही यह नहीं भूलना चाहिये क यही उपचार यदि वे अनाथ और गरीब बच्चों (जिनके नाम पर उन्हें लाखों डालर का चन्दा मलता रहा) को भी दिलवातीं तो कोई बात होती, ले कन ऐसा कभी नहीं हुआ...एक बार कैंसर से कराहते एक मरीज से उन्होंने कहा क "तुम्हारा दर्द ठीक वैसा ही है जैसा ईसा मसीह को सूली पर हुआ था, शायद महान मसीह तुम्हें चूम रहे हैं",,, तब मरीज ने कहा क "प्रार्थना कीजिये क जल्दी से ईसा मुझे चूमना बन्द करें..."। टेरेसा की मृत्यु के पश्चात पोप जॉन पॉल को उन्हें "सन्त" घो षत करने की बेहद जल्दबाजी हो गई थी, संत घो षत करने के लये जो पाँच वर्ष

का समय (चमत्कार और प वत्र असर के लये) दरकार होता है, पोप ने उसमें भी ढील दे दी, ऐसा क्यों हुआ पता नहीं।

मोनिका बेसरा की कहानी –
पश्चिम बंगाल की एक क्रिश्चियन आदिवासी महिला जिसका नाम मोनिका बेसरा है, उसे टीबी और पेट में ट्यूमर हो गया था। बेलूरघाट के सरकारी अस्पताल के डॉ. रंजन मुस्ताफ़ उसका इलाज कर रहे थे। उनके इलाज से मोनिका को काफ़ी फ़ायदा हो रहा था और एक बीमारी लगभग ठीक हो गई थी। मोनिका के पति म. सीको ने इस बात को स्वीकार कया था। वे बेहद गरीब हैं और उनके पाँच बच्चे थे, कैथो लक ननों ने उनसे सम्पर्क कया, बच्चों की उत्तम शक्षा-दीक्षा का आश्वासन दिया, उस परिवार को थोड़ी सी जमीन भी दी और ताबड़तोड़ मोनिका का "ब्रेनवॉश" कया गया, जिससे मदर टेरेसा के "चमत्कार" की कहानी दुनिया को बताई जा सके और उन्हें संत घो षत करने में आसानी हो। अचानक एक दिन मोनिका बेसरा ने अपने लॉकेट में मदर टेरेसा की तस्वीर देखी और उसका ट्यूमर पूरी तरह से ठीक हो गया। जब एक चैरिटी संस्था ने उस अस्पताल का दौरा कर हकीकत जानना चाही, तो पाया गया क मोनिका बेसरा से सम्बन्धित सारा रिकॉर्ड गायब हो चुका है ("टाईम" पत्रिका ने इस बात का उल्लेख कया है)।

"संत" घो षत करने की प्र क्रया में पहली पायदान होती है जो कहलाती है "बी थ फ़केशन", जो क 19 अक्टूबर 2003 को हो चुका। "संत" घो षत करने की यह परम्परा कैथो लकों में बहुत पुरानी है, ले कन आ खर इसी के द्वारा तो वे लोगों का धर्म में वश्वास(?) बरकरार रखते हैं और सबसे बड़ी बात है क वेटिकन को इतने बड़े खटराग के लये सतत "धन" की उगाही भी तो जारी रखना होता है….

(मदर टेरेसा की जो "छ व" है, उसे धू मल करने का मेरा कोई इरादा नहीं है, इसी लये इसमें सन्दर्भ सर्फ़ वही लये गये हैं जो पश्चिमी लेखकों ने लखे हैं, क्यों क भारतीय लेखकों की आलोचना का उल्लेख करने भर से "सांप्रदायिक" घो षत कये जाने का "फ़ैशन" है… इस लेख का उद्देश्य कसी की भावनाओं को चोट पहुँचाना नहीं है, जो कुछ पहले बोला, लखा जा चुका है उसे ही संक लत कया गया है, मदर टेरेसा द्वारा कया गया सेवाकार्य अपनी जगह है, ले कन सच यही है क कोई भी धर्म हो इस प्रकार की "हरकतें" होती रही हैं, होती रहेंगी, जब तक क आम जनता अपने कर्मों पर वश्वास करने की बजाय बाबाओं, संतों, माताओं, दे वयों आदि के चक्करों में पड़ी रहेगी, इसी लये यह दूसरा पक्ष प्रस्तुत कया गया है)

मांसाहारी साईं

NOVEMBER 26, 2013 LEAVE A COMMENT

आज अवतारवादी वचारधारा में वश्वास रखने वाले हिन्दू भाइयों के मध्य एक नए भगवान् प्र सद् ध की चरम सीमा को छु रहेहैं। इनके ध्यान से, इनमें श्रध्दा रखने पर तत्का लक लाभ प्राप्त होने की हसरत इनके भक्त जनता तक पहुंचा रहे हैं . बड़े बड़े उद्योग पति, राजनैतिज्ञ, नाटक मंच की हस्तियों को इनके दरबार में सर झुकाते हुए देखा जा सकता है। आने वाली

चढावे कातो हिसाब ही क्या? तात्का लक लाभ होने की हसरत और लुभावने ख्वाब लोगों की भीड़ को इन की तरफ खींच रही है। आलम येहै की पौरा णक हिन्दुओं के मंदिरों में रखी मूर्तियों की जगह इस नए भगवान् ने ले ली है। इस नवीन उत्पन्न हुए भगवान् के बारे में पूर्ण जानकारी भी उपलब्ध नहीं है की ये कौन थे और कहाँ से अवतरित हो गए? शरडी में पहुँचाने से पूर्व ये कहाँ थे शरडी कहाँ से पहुंचे ये प्रश्न आज भी उलझे हुए हैं। हाव भाव, वेशभूषा, आचरण , नाम आदि से मुस्लिम प्रतीत होने पर पर भी इनके भक्त इस तथ्य को मानने से परहेज करते हैं। इसका एक कारण तो ये ही प्रतीत होता है की यदी ये कारण मान लया जाये तो हिन्दुओं ,की भावना आहात हो जायेगी और फर इनके यहाँ आएगा कौन ? क्यूँकी इनको मानने वालों वाले हिन्दू ही हैं बड़ी ही कष्टदायक बात है की इनकी तुलना आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगी राज श्री कृष्ण से की जा रही है। मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण करुणा और ज्ञान के अथाह भण्डार थे। अपना पूरा जीवन इन्होने जीव मात्र के कल्याण के लएसम र्पत कर दिया।कहाँ मर्यादा पुरषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण और कहाँ ये चलम पीने और मांस खाने वाला मुसलमान। और ज्ञान के नाम पर मात्र शुन्य

इनके अनुयायियों के गीता के प्र क्षप्त श्लोक " यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः अभुत्थानम धर्मस्य तदात्मानम सृजाम्यहम- जब जब धर्म की हानी और अधर्म की वृद्धी होती है तब तब में धर्म की स्थापना के लए जन्म लेता हूँ" का सहारा इनका अवतार वाद को सद्ध करने के लए प्रयोग कया है |
धर्म की रक्षा के लए इन्हें अवतरित माना जाता है। आइये वचार करते हैं की धर्म क्या है। युद् धष्टिर को धर्म के लक्षण बताते हुए व्यासदेव कहते हैं क मनुष्य जिसे अपने प्रतिकूल समझे वैसा आचरण कसी के प्रति न करे।

श्रुयातम धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम
आत्मनः प्रतिकुलानी परेशां न समाचरेत
सर्वत्र प्रतिष्ठित इस इस तत्व की व्याख्या करते हुए व्यास जी कहते हैं की " मनुष्य ऐसा व्यवहार औरों के साथ न करे जो स्वयं अपने को प्रतिकूल या दुखद जान पड़े। यही सब धर्म और नीतियों का सार है। परोपकार ही धर्म है।

न तत्परस्य सन्द्ध्यात प्रतिकुलम यदात्मनह
अश संक्षेपतो धर्मः कामदन्यः प्रवर्तते। महाभारत अनुशाशन पर्व
जब परोपकार को ही धर्म माना गया है तो फर कसी के प्राण लेना कैसे धर्म हो सकता है। और इन साईं तो मांसाहार करते थे और कसी के प्राण लए बिना मांस की प्राप्ती नहीं होती फर ये कैसे कस प्रकार धर्म की स्थापना की बात करते हैं।

साईं पूर्णतया करुणा के भाव से वहीन ही थे। वह मूक ब धर असहाय प्रा णयों को अपनी रक्त पपासा का ग्रास बनाते रहे।इसके अनेक उद्धरण हमें साईं संसथान द्वारा प्रका शत साईं सत्चरित्र में देखने को मल जाते हैं जहाँ ये तथाक थत ईश्वर मांसभक्षण करते और बली देते हुए बड़ी आसानी से देखे जा सकते हैं :
“कभी वे मीठे चावल बनाते और कभी मांस म श्रत चावल पकाते थे”
साईं सत्चरित्र अध्याय – ३८ पृष्ट – १४०

“फकीरों के साथ वो आ मष और मछली का सेवन भी कर लेते थे। कुत्ते भी उनके पात्र में मुंह दाल कर स्वतंत्रतापूर्वक खाते थे “
साईं सत्चरित्र अध्याय – ७ पृष्ट – २६
“मस्जिद में एक बकरा बली के लए लाया गया। वह अत्यंत दुर्बल और मरने वाला था। ने बाबा ने उनसे चाकू लाकर बकरा काटने को कहा।“
साईं सत्चरित्र अध्याय – २३ पृष्ट – ८४
बाबा ने काकासाहेब से कहा क -” मैं स्वयं ही बली चडाने का कार्य करूँगा “
साईं सत्चरित्र अध्याय – २३ पृष्ट – ८४

महर्षी दयानंद सरस्वती तो दूसरों के दुखो और हानि को ना समझने वाले मनुष्य को मनुष्य की संज्ञा से ही वमुख कर देते हैं।महर्षी कहते हैं की दूसरों के सुख दुःख हानि लाभ को समझना मनुष्य धर्म है, मह र्ष इस में बारे में स्वमंताव्यामंताव्यप्रकाश में हैं लखते हैं की “मनुष्य उसी को कहना की मननशील हो कर स्वात्मवत अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे।अन्यायकारी से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे”। इतना ही नहीं अ पतु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वो महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यूँ ना हो उनकी रक्षा उन्नति और प्रयाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथमहाबलवान और गुणवान भी हो तथापी उसका नाश अवनति और अ परयाचरण सदा कया करे अर्थात जहाँ तक हो सके वहाँ तक अत्याचारियो के बल की हानि और न्याय्कारियों के बल की उन्नति सदा कया करे। इस काम में चाहे उसको कतना ही दारुणदुःख प्राप्त हो परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।

स्वमंताव्यामंताव्यप्रकाशः पृष्ठ – ७२८

महर्षी लखते हैं क पशुओं के गले छुरों से काटकर जो मनुष्य अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हें क्या संसार मेंउनसे भी अ धक कोई कोई वश्वासघाती अनुपकारी दुःख देने वाले और पापी जन होंगे ?
ऋषी जीव रक्षा के लए यजुर्वेद में उल्ले खत परमात्मा की आज्ञा उद्धरित करते हैं की – (अघन्या यज्मानान्स्य पशुं पाहि) हे पुरुषतू इसं पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात सब के सुख देने वाली जानो के संबंधी पशुओं की रक्षा कर जिस से तेरी भीरक्षा होवे और इसी लए ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते हैं और अब भीसमझते हैं।
मनु भी मांसाहार को पाप घो षत करते हुए आठ प्रकार के लोगों को मांसाहार के प्रति पाक के भागी घो षत करते हैं
अनुमन्ता वश सता निहन्ता क्रय वक्रयी
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति द्याताका . मनु ५/५१
अर्थ – अनुमन्ता = मारने की आज्ञा देने, मान के काटने , पशु आदि के मारने उन को मारने के लए लेनें और बेचने मांस के पकाने परोसने और खाने वाले आठ आठ मनुष्य घटक हिंसक अर्थात ये सब पापकारी हैं
फर भी इन के अनुयायी इनको ईश्वर का अवतार घो षत करने का भरकर प्रयास करने में लगे हुए हैं। जहाँ हमारे धर्म ग्रन्थ मांसाहार आदि कार्य करने वाली को पापी घो षत करते हैं, अनेकों स्थानों पर प्राणी मात्र की रक्षा करने की आज्ञा देते हैं वही ये तथाक थत ईश्वर इस

सभी वेदोक्त सध्धान्तों के वरुध्ध मांसाहार जैसा पाप का आचरण करते हैं।ये तथाक थत ईश्वर अपने लए स्वयं मांस का निर्माण करने में असमर्थ था और अपनी मांस खाने की लालसा को निरीह प्रा णयों के जीवन लीला समाप्तकरके पूरा कया करता था।यह शष्य घो षत ईश्वर जो हमेशा "अल्लाह मा लक " का जाप करता था उन निरीह मूक प्रा णयों में दया भाव को न देख सका जिन्हें इन्होने तथा उनकी आज्ञा अनुसार इनके शष्यों ने रक्त पपासा का ग्रास बना लया । क्या ये प्राणी उस के बच्चे नहीं थे ? ईश्वर को पता की संज्ञा दी जाती है क्या कोई पता अपने बच्चों पर इतनी निर्दयी हो सकता है को की वो उसके उत्तम कृति मनुष्य को दुसरे प्रा णयों को मारने की आज्ञा दे दे ? प्राय यह देखा जाता है क उत्तम संतान अपने से छोटे और असहाय का ध्यान रखते हैं उसी प्रकार ईश्वर भी इसी नियम का पालनकरता है और मनुष्य के लए भोजन पैदा करने से पहले वह पशुओं के लए भोजन की व्यवस्था करता है।मनुष्य को अपने भोजन की व्यवस्था करने के लए परिश्रम करना पड़ता है।अनाज उगाने के लए भूमी का चयन करना पड़ता है फर उसे खेती योग्य बनाना पड़ता है |खेत को जोतकर पर्याप्त मात्र में उर्वरक और पाने देकर अनाज उगाया जाता है जबकी पशुओं को भोजन पाने के लए ये सब करने की आवश्यकता नहीं होती है उनके लए ईश्वर खुद ही खाने की व्यवस्था करता है यहाँ तक की मनुष्यअपने लए जिस अन्न को उगाता है उसमें भी ईश्वर पशुओं का भाग पहले ही निर्धारितकर देता है और पशुओं ने लए खरपतवार स्वयं पैदा हो जाती है उसके लए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता।जो ईश्वर उन प्रा णयों के प्रति इतना दयालु है उसी ईश्वर का यह शष्य घो षत ईश्वर उन्हीं प्रा णयों को अपनी भूख शांत करने का साधन बनाता रहा।

हमें यह सोचने की आवश्यकता है क कस तरह हम वैदिक सद्धांतों से पदच्युत हो रहे हैं।वेदोक्त पाप का आचरण करनेवाले व्यक्ती को ईश्वर होने की घोषणा कर देना, ईश्वर की भक्ती त्याग कर व्यक्ती वशेष की भक्ती करना अपने महापुरुषों की तुलना एक चलम पीन वाले , मांस खाने वाले व्यक्ती से करना क्या हमें शोभा देता है?
हम ऋषी की संताने कस कारणवश अपने वैदिक ज्ञान को तज कर क्यूँ एक वधर्मी को अपना ईश्वर मानने पर ववश हो गयीहैं ? क्या शीघ्र लाभ की आशा के प्रलोभन ऊपर इस कदर हावी हो गयी हैं की हमारी वचार करने की शक्ती उसके आगे दुर्बल होगयी है ?

साईं – वैदिक धर्म के लए अ भशाप

NOVEMBER 26, 2013 2 COMMENTS

आज हमारे देश में तथाक थत भगवानो का एक दौर चल निकला है. इन्हीं भगवानों में से एक हैं शर्डी के साईं बाबा. आज भारतवर्ष के हर नगर में इनके अनेकों मंदिर हैं . अनेकों संस्थाएं इनके नाम से चल रही हैं एवं देश वदेश में इनको मानने वालों की तथा इनके लए दान देने वालों की संख्या में निरंतर वृध्धि हो रही है. महाराष्ट्र के अहमदनगर में स्थित शर्डी साईं बाबा शीरीं के अनुसार वर्ष २०११ में केवल इस ट्रस्ट को ही ३६ कलो ग्राम सोना,

४४० कलोग्राम चांदी एवं ४०१ Cr रूपया दान में मला. समस्त साईं मंदिरों में दिए गए दान का तो अनुमान भी लगाना भी संभव नहीं है.
आज साईं को इश्वर का अवतार माना जा रहा है . हमारे महपुरुषों श्री राम कृष्ण का ही रूप इन्हिने बतलाया जा रहा है और उनके इस्थान पर इनकी पूजा की जा रही है. मन में प्रशन उठता है की आ खर ये बाबा हैं कौन, कहाँ से ये आये थे और कस तरह ये लोगों का भला करते हैं. साईं एक पारसी शब्द है जिसका अर्थ है मुस्लिम फकीर. साईं एक टूटी हुयी मस्जिद में रहा करते थे और सर पर कफनी बंधा करते थे. सदा " अल्लाह मा लक" एवं " सबका मा लक एक" पुकारा करते थे ये दोनों ही शब्द मुस्लिम धर्म से संभं धत हैं.साईं का जीवन चरित्र उनके एक भक्त हेमापंदित ने लखा है. वो लखते हैं की बाबा एक दिन गेहूं पीस रहे थे. ये बात सुनकर गाँव के लोग एकत्रित हो गए और चार औरतों ने उनके हाथ से चक्की ले ली और खुद गेहूं पसना प्रारंभ कर दिया. पहले तो बाबा क्रो धत हुए फर मुस्कुराने लगे. जब गेंहूँ पीस गए त्तो उन स्त्रियों ने सोचा की गेहूं का बाबा क्या करेंगे और उन्होंने उस पसे हुए गेंहू को आपस में बाँट लया. ये देखकर बाबा अत्यंत क्रो धत हो उठे और अप्सब्द कहने लगे -" स्त्रियों क्या तुम पागल हो गयी हो? तुम कसके बाप का मॉल हड़पकर ले जा रही हो? " फर उन्होंने कहा की आटे को ले जा कर गाँव की सीमा पर दाल दो. उन दिनों गाँव मएँ हैजे का प्रकोप था और इस आटे को गाँव की सीमा पर डालते ही गाँव में हैजा ख़तम हो गया. (अध्याय १ साईं सत्चरित्र)
१. मान्यवर सोचने की बात है की ये कैसे भगवन हैं जो स्त्रियों को गा लयाँ दिया करते हैं हमारी संस्कृति में तो स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और कहागया है की यात्रा नार्यस्तु पुजनते रमन्ते तत्र देवता . आटा गाँव के चरों और डालने से कैसे हैजा दूर हो सकता है? फर इन भगवान् ने केवल शर्डी में ही फैली हुयी बीमारइ के बारे में ही क्यूँ सोचा ? क्या ये केवल शर्डी के ही भगवन थे?
२. साईं सत्चरित्र के लेखक ने इन्हें क्रशन का अवतार बताया गया है और कहा गया है की पा पयों का नाश करने के लए उत्पन्न हुए थे परन्तु इन्हीं के समय में प्रथम वश्व युध्ध हुआ था और केवल यूरोप के ही ८० लाख सैनिक इस युध्द में मरे गए थे और जर्मनी के ७.५ लाख लोग भूख की वजह से मर गए थे. तब ये भगवन कहाँ थे. (अध्याय 4 साईं सत्चरित्र)
३. १९१८ में साईं बाबा की मृत्यु हो गयी. अत्यंत आश्चर्य की बात है की जो इश्वर अजन्मा है अ वनाशी है वो भी मर गया. भारतवर्ष में जिस समय अंग्रेज कहर धा रहे थे. निर्दोषों को मारा जा रहा था अनेकों प्रकार की यातनाएं दी जा रहीं थी अन गनत बुराइयाँ समाज में व्याप्त थी उस समय तथाक थत भगवन बिना कुछ कये ही अपने लोक को वापस चले गए. हो सकता है की बाबा की नजरों में भारत के स्वतंत्रता सेनानी अपराधी थे और ब्रिटिश समाज सुधारक !
४. साईं बाबा चलम भी पीते थे. एक बार बाबा ने अपने चमटे को जमीं में घुसाया और उसमें से अंगारा बहार निकल आया और फर जमीं में जोरो से प्रहार कया तो पानी निकल आया और बाबा ने अंगारे से चलम जलाई और पानी से कपडा गला कया और चलम पर लपेट लया. (अध्याय 5 साईं सत्चरित्र) बाबा नशा करके क्या सन्देश देना चाहते थे और जमीं में चमटे से अंगारे निकलने का क्या प्रयोजन था क्या वो जादूगरी दिखाना कहते थे? इस प्रकार के कसी कार्य से मानव जीवन का उद्धार तो नहीं हो सकता हाँ ये पतन के साधन अवश्य हें .

५ शर्डी में एक पहलवान था उससे बाबा का मतभेद हो गया और दोनों में कुश्ती हुयी और बाबा हार गए(अध्याय 5 साईं सत्चरित्र) . वो भगवान् का रूप होते हुए भी अपनी ही कृति मनुष्य के हाथों पराजित हो गए?

६. बाबा को प्रकाश से बड़ा अनुराग था और वो तेल के दीपक जलाते थे और इस्सके लए तेल की भक्षा लेने के लए जाते थे एक बार लोगों ने देने से मना कर दिया तो बाबा ने पानी से ही दीपक जला दिए.(अध्याय 5 साईं सत्चरित्र) आज तेल के लए युध्ध हो रहे हैं. तेल एक ऐसा पदार्थ है जो आने वाले समय में समाप्त हो जायेगा इस्सके भंडार सी मत हैं और आवश्यकता ज्यादा. यदि बाबा के पास ऐसी शक्ति थी जो पानी को तेल में बदल देती थी तो उन्होंने इसको कसी को बताया क्यूँ नहीं?

७. गाँव में केवल दो कुएं थे जिनमें से एक प्राय सुख जाया करता था और दुसरे का पानी खरा था. बाबा ने फूल डाल कर खारे जल को मीठा बना दिया. ले कन कुएं का जल कतने लोगों के लए पर्याप्त हो सकता था इस लए जल बहार से मंगवाया गया.(अध्याय 6 साईं सत्चरित्र) वर्ल्ड हेअथ ओर्गानैजासन के अनुसार वश्व की ४० प्रतिशत से अ धक लोगों को शुध्ध पानी पने को नहीं मल पाता. यदि भगवन पीने के पानी की समस्या कोई समाप्त करना चाहते थे तो पुरे संसार की समस्या को समाप्त करते ले कन वो तो शर्डी के लोगों की समस्या समाप्त नहीं कर सके उन्हें भी पानी बहार से मांगना पड़ा. और फर खरे पानी को फूल डालकर कैसे मीठा बनाया जा सकता है?

८. फकीरों के साथ वो मांस और मच्छली का सेवन करते थे. कुत्ते भी उनके भोजन पत्र में मुंह डालकर स्वतंत्रता पूर्वक खाते थे.(अध्याय 7 साईं सत्चरित्र) अपने स्वार्थ वश कसी प्राणी को मारकर खाना कसी इश्वर का तो काम नहीं हो सकता और कुत्तों के साथ खाना खाना कसी सभ्य मनुष्य की पहचान भी नहीं है.

अमुक चमत्कारों को बताकर जिस तरह उन्हें भगवान् की पदवी दी गयी है इस तरह के चमत्कार तो सड़कों पर जादूगर दिखाते हैं . काश इन तथाक थत भगवान् ने इस तरह की जादूगरी दिखने की अपेक्षा कुछ सामाजिक उत्तथान और वश्व की उन्नति एवं समाज में पनप रहीं समस्याओं जैसे बाल ववाह सती प्रथा भुखमरी आतंकवाद भास्ताचार अआदी के लए कुछ कार्य कया होता!

यह संसार अंध वश्वास और तुच्छ ख्यादी एवं सफलता के पीछे भागने वालों से भरा पड़ा हुआ है. दयानंद सरस्वती, महाराणा प्रताप शवाजी सुभाष चन्द्र बोस सरदार भगत संह राम प्रसाद बिस्मिल सरीखे लोग जिन्होंने इस देश के लए अपने प्राणों को न्योच्चावर कर दीये लोग उन्हिएँ भूलते जा रहे हैं और साईं बाबा जिसने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में न कोई योगदान दिया न ही सामाजिक सुधार में कोई भू मका रही उनको समाज के कुछ लोगों ने भगवान् का दर्जा दे दिया है. तथा उन्हें यो गराज श्री कृष्ण और मायादापुरुशोत्तम श्री राम के अवतार के रूप में दिखाकर न केवल इन महापुरुषों का अपमान कया जा रहा अ पतु नयी पीडी और समाज को अवनति के मार्ग की और ले जाने का एक प्रयास कया जा रहा है. आवश्यकता इस बात की है की है की समाज के पतन को रोका जाये और जन जाग्रति लाकर वैदिक महापुरुषों को अपमानित करने की जो को शशेन की जा रही हिएँ उनपर अंकुश लगाया जाये.

मुहूर्तवादियों से कुछ प्रश्न: ARYA GREAT

NOVEMBER 26, 2013 LEAVE A COMMENT

मुहूर्तवादियों से कुछ प्रश्न

१. मुहूर्त क्या है और उसका क्या अर्थ है ?

२. मुहूर्त का प्रारम्भ कब से हुआ और क्यों ? उसका प्राचीनतम ग्रन्थ कौन सा है ?

३. मुहूर्त शुभाशुभ कस रूप में है , उपप त्त वा प्रमाणपूर्वक बताइये ?

४. क्या मुहूर्तों के शुभाशुभ होने में चार वेद, ६ शाश्त्र, और दस उपनिषदों में कहीं कोई प्रमाण है ? हो तो बताइये।

५. ऐसा कोई मुहूर्त का ग्रन्थ है जिसकी आद्योपान्त प्रत्येक बात की सद् ध करके बतला सकें अर्थात जिसकी सोपपतिक व्याख्या हो ?

६. वना कसी कार्य के शुभमुहूर्त लाभ और अशुभ मुहूर्त हानि पहुंचा सकता है अथवा नहीं ? कस प्रकार ?

७ यदि मुहूर्त अच्छे होते हैं तो स्वयं फ लतज्ञा अच्छे मुहूर्त में मालामाल क्यूँ नहीं होते ? बेचारे भोले लोगों को मुहूर्त के नाम से बहकाकर क्यूँ लुटते और अच्छे मुहूर्त में कर्म करके सफल क्यूँ नहीं होते ? अशुभ मुहूर्त में करके घाटा क्यूँ उठाते ?

८ फ लत को मानने वाले मरणासन्न स्ति थ में अच्छे से अच्छे मुहूर्त में स्वयं प्राणांत करके उच्च व परमगति को क्यों नहीं प्राप्त होते ?

९. मुहूर्त शुभाशुभ हैं अथवा शुभाशुभ के सूचक हैं ? यदी शुभशभ हें तो वे व्यापक होने से शुभ में सब का शुभ और अशुभ में अशुभ होना चाहिए ?

यदि सूचक मात्र हैं तो मुहूर्त हो अथवा न हो तो भी शुभाशुभ होकर रहेगा।

१०. शुभ मुहूर्त में एक के घर में ववाह हो रहा है तो उसके पड़ोसी के घर में उसी मुहूर्त में चोरी क्यूँ होती है ?

११. मुहूर्त बड़ा है अथवा सत्कर्म बड़ा ? सप्रमाण बतलाइये क वा आपे क्षप हैं अथवा इन दोनों का समवाय सम्बन्ध है.

१२ शुभकर्म अपने में निरपेक्ष अथवा सापेक्ष ?

१३ यदि कोई सदा शुभ कर्म ही करता जाय और मुहूर्त को देखे ही नहीं तो उसको सुख मलेगा वा दुःख ? यदि सुख मलता है तो मुहूर्त की कोई आवश्यकता नहीं है. यदि दुःख मलता है तो मुहूर्त जब मनुष्य का बनाया नहीं तो दुःख क्यूँ मला।

१४ कर्म सद्धांत सत्य है अथवा मुहूर्तवाद सत्य है ? क्यों क एक वषय में परस्पर वरुद्ध दोनों सत्य नहीं हो सकती

१५ अशुभमुहूर्त में कया हुआ शुभ कार्य सफल होता है वा नहीं ? और क्यों

१६ शुभमुहूर्त में कया हुआ अशुभकार्य सफल होता है व नहीं ? और क्यों ?

१७ भोजन करने के लए भूख को देखना चाहिए व मुहूर्त को ?

१८ सर्प ने काट खाया हो तब औष ध के लए मुहूर्त देखे अथवा मुहूर्त को ठुकराकर औष ध का प्रबंध करें ? क्यों ? दुर्मुहुर्त में ली हुयी औष ध क्या हानिकारक नहीं होगी ?यदी मारक नहीं होगी , हानि नहीं पहुंचेगी तो दुर्मुहुर्त में कये अन्य कार्यों में क्या हानि होगी

१९ यात्रा पर जाना है. जब यान है तब शुभ मुहूर्त नहीं, जब शुभ मुहूर्त है तब यान नहीं है. यान को छोड़ें वा मुहूर्त को

२० क्या आत्म वश्वासी को मुहूर्त देखना चाहिए ? मुहूर्त को देखने वाला क्या आत्म वश्वासी हो सकता है ?सप्रमाण बताइये

२१. परमात्मा ने अशुभ मुहूर्त बनाये ही क्यों? परमात्मा ने ही यह बतलाया क कुआँ मुहूर्त शुभ और कौन अशुभ अथवा यह आप का ही अनुसंधान है ? सप्रमाण बताइये।

२२ कर्म सद्धांत का तथा मुहूर्त का सामंजस्य क्या है ? जब दोनों में वरोध हो तो कसको छोड़ और कसको अपनावें ? मुहूर्त को देखें वास कर्म को और कसी प्रकार ?

२३ कसी दार्शनिक वा वचारक ने इसको माना हो अथवा प्राचीनकाल में कहीं यह व्यवहार में रहा हो तो घटना पूर्वक बतलाइये?

२४ मुहूर्तों की चंता में रहने वाला क्या कभी क्या तत्ववेत्ता और पुरुषार्थी बनेगा

२५ मुहूर्तों के पीछे चलने से जो हानी होती है उसका कौन उत्तरदायी है ?

तिथी को शुभ अशुभ मानने वालों से कुछ प्रश्न : ARYA GREAT

NOVEMBER 26, 2013 LEAVE A COMMENT

तिथी को शुभ अशुभ मानने वालों से कुछ प्रश्न :

१. तिथी को शुभ अशुभ मानने का कारण क्या है ?
२. ति थ के शुभ अशुभ होने और सफलता असफलता के कारण होने में वेदादि सत्य शाश्त्रों के प्रमाण दीजिये ?
३. तिथी का तथा कर्म सद्धांत का कैसा सम्बन्ध है ? स वस्तार बताइये।

४ शुभ ति थयों में कये हुए कार्य असफल क्यूँ हो जाते हैं ?
५. यदि कसी ने देश पर आक्रमण कया हो तब शुभ ति थ का क्या अर्थ होगा ? यदी रहेगा अथवा कोई दूसरा बनेगा ?
६. औष ध सेवन में शुभाशुभ तिथी की प्रतीक्षा करें तो ति थ से पूर्व रोगी महाप्रयाण ही करेगा।.
७. शुभकर्मों में तिथी की क्या आवश्यकता है ?
८ अशुभ कार्य शुभ ति थ में करने चाहिए अथवा अशुभ तिथी में ?
९ शुभति थ में एक के घर ववाह आदि सुखकारी कर्म होते हैं तो दूसरे के घर में चोरी मृत्यु आदि दुःख दायक कर्म क्यूँ होते हैं ?
१०. परमात्मा शुभ ति थ में ही मनुष्यों के जन्म मरण क्यों नहीं करता।
११. वृक्षो का उगना, पुष्पित फ लत होना वर्षा का आना आदि शुभति थयों में ही क्यों नहीं होता ? अशुभ ति थयों बनाई ही क्यों ?
१२परमात्मा कौन कौन से कार्य शुभ तिथी में और कौन कौन से अशुभ ति थ में करता है ?
१३.यदि मनुष्य पुरुषार्थी आस्तिक होगा तो तिथी को क्यों देखेगा ?
१४. जिसको अपनी बुद्धी और पुरुषार्थ पर वश्वास है तो वह तिथी को क्यों देखेगा ?
१५ यदी ति थ को देखता तो वह परिश्रम क्या करेगा और परिश्रम करेगा तो तिथी देखने की क्या आवश्यकता है ?
१६ ऋषी दार्शनिकों ने ति थ आदि को कहीं महत्व दिया हो ऐसा देखने में नहीं आता। यदी है तो दिखाएँ ?
१७ ति थ के शुभ अशुभ तत्व के अन्ध वश्वास होने पर वह जो कुछ करता है संशयालु होकर करता है. कोई शुभ कार्य नहीं कर पाता छोड़ने पड़ते हैं। जब कहीं हानी होती है तो झट से तिथी के मड़ देता है। मनुष्य के मान सक रोग की च कत्सा ही क्या है

कुण्डली को सत्य मानने वालों से कुछ प्रश्न : ARYA GREAT

NOVEMBER 26, 2013 LEAVE A COMMENT

कुण्डली को सत्य मानने वालों से कुछ प्रश्न

१. कुण्डली से जीवन के सम्बन्ध में ज्ञान कैसे होगा यह युक्ति से सद्ध कीजिये ?
२. कुंडली का वधान अथवा संकेत कसी वेदशास्त्र में हो तो प्रमाण दीजिये ?
३. कुंडली का कर्म सद्धांत से क्या सम्बन्ध है सप्रमाण बताइये ?
४ जन्म कुंडली से जीवन का ज्ञान होता है अथवा चन्द्र कुंडली से और क्यों ? यदि दोनों में परस्पर वरोध हो तो कसको मानें और कसको नहीं ?
५. कुंडली के अनुसार मनुष्य की १२० वर्ष ही होती है। प्रत्यक्ष में देखा जाता है क एक सौ बीस वर्ष से अ धक आयु वाले होते हैं। क्या प्रत्यक्ष भी मत्थ्या है ?
६. पति पत्नी की संतान रेखाएं एक समान क्यों नहीं होती ? क्यो क दोनों की वही संतान है ? क्या इससे जन्मकुण्डली मत्थ्या सद्ध नहीं होती ?
७. अशुद्ध कुण्डली से वास्त वक जीवन का ज्ञान क्यों हुआ ?

८. अशुद्ध कुण्डली से वास्त वक जीवन का ज्ञान क्यों हुआ ?
९. मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है अथवा परतंत्र ? यदी स्वतंत्र है तो कुंडली को देखने की क्या आवश्यकता है ? यदि परतंत्र है तो भी देखने की आवश्यकता ही नहीं

हनुमान आदि बन्दर नहीं थे ? – स्वामी वद्यानन्द सरस्वती

NOVEMBER 24, 2013 LEAVE A COMMENT

वानर – वने भवं वानम , राति (रा आदाने) गृह्णाति ददाति वा. वानं वन सम्बन्धिनम फलादिकम् गृह्णाति ददाति वा – जो वन उत्पन्न होने वाले फलादि खाता है वह वानर कहलाता है. वर्तमान में जंगलों व पहाड़ों में रहने और वहाँ पैदा होने वाले पदार्थों पर निर्वाह करने वाले " गरिजन" कहाते हैं. इसी प्रकार वनवासी और वानप्रस्थ वानर वर्ग में गने जा सकते हैं. वानर शब्द से कसी योनि वशेष जाति प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

जिसके द्वारा जाति एवं जाति के चन्हों को प्रगट कया जाता है वह आकृति है. प्रा णदेह के अवयवों की नियत रचना जाति का चन्ह होती है. सुग्रीव बाली आदि के जो चत्र देखने में आते हैं उनमें उनके पूंछ लगी दिखाई है परन्तु उनकी स्त्रियों के पूंछ नहीं होती। नर मादा में इस प्रकार का भेद अन्य कसी वर्ग में देखने में नहीं आता. इस लए पूंछ के कारण हनुमान आदि को बन्दर नहीं माना जा सकता।

हनुमान से रामचन्द्र जी की पहली बार भेंट ऋष्यमूक पर्वत पर हुयी थी. दोनों में परस्पर बातचीत के बाद रामचंद्र जी लक्ष्मण से बोले

नानृग्वेद वनीतस्य नायजुर्वेदधारण:

नासामवेद वदुषः शक्यमेव प्रभा षतुम

नूनं व्याकरणम् कृतसमनेन बहुधा श्रुतम

बहु व्यवाहरतानेंन न कं चद पशब्दितम

संस्कार क्रम सम्पन्नामद्रु ताम वलम्बिताम्।

उच्चारयति कल्याणी वाचं हृदयहारिणीम्।

क-३/२८।, २९ , ३२

ऋग्वेद के अध्ययन से अन भज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं है तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं कया है वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अभ्यास कया है क्यों क इतने समय तक बोलने में इन्होने कसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं कया है संस्कार संपन्न शास्त्रीय पद् धति से उच्चारण की हुयी इनकी कल्याणी वाणी हृदय को ह र्षत कर रही है.

वस्तुतः हनुमान अनेक भाषा वद थे. वह अवसर के अनुकूल भाषा का व्यवहार करते थे, इसका संकेत हमें सुन्दर काण्ड में मलता है. लंका पहुँच कर हनुमान ने सीता को अशोक वाटिका में राक्ष सयों के बीचबैठे देखा .वृक्षों की शाखाओं के बीच छुपकर बैठे हनुमान सोचने लगेः-

यदि वाचं प्रदास्या म द् वजातिरिव संकृताम्

रावणं मन्यमाना माम सीता भीता भ वष्यति

सेमयालोक्य मे रूपम जानकी भा षतं तथा

रक्षो मस्त्रा सता पूर्वं भूयस्त्रासं ग मष्यति

ततो जातपरित्रासा शब्दम कुर्यान्मनिस्विनी

जानाना माम वशालाक्षी रावणं काम रू पणम् सुन्दर ३०/१८ , २०

यदि द् वजाति (ब्राह्मण – क्षत्रिय – वैश्य)के सामान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जायेगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुयी यह सीता और भयभीत जो जायेगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर वशालाक्षी सीता कोलाहल आरम्भ कर देगी इस लए –

अहम् त्वतितनुश्चैव वानरश्च वशेषतः

वाचं चोदहरिष्या म मानुषी मह संस्कृताम् – १७

मैं सामान्य नागरिक के सामान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूँगा

इससे प्रतीत होता है क लंका की सामान्य भाषा संस्कृत थी जब क जन साधारण संस्कृत से भन्न कन्तु तत्सम अथवा तद्भव शब्दों का व्यवहार करते थे. कुछ टीकाकारों के अनुसार हनुमान ने अयोध्या के आस पास की भाषा से काम लया था

बाली पुत्र अंगद के वषय में वाल्मी क ने लखा है क

हनुमान बा लपुत्र अंगद को अष्टांग बुद् ध से संपन्न चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे। कष्किन्धा -५४/२

अष्टांग बुद् ध

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा

उपापोहार्थ वज्ञानं तत्वज्ञानम च धीगुणा :

सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, उहापोह कर,ना अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, वज्ञानं व तत्वज्ञान – बुद् ध के ये अंग हैं

चतुर्बल – साम दाम भेद दण्ड शत्रु को वश में करने के लए नीति शाश्त्र में चार उपाय बताये गए हैं उन्ही को यहाँ चार प्रकार का बल कहा है. कन्ही कन्ही के मत से बाहुबल मनोबल उपाय बल और बन्धुबल – ये चार बल हैं

चतुर्दश गुण –

१ देश काल का ज्ञान २ दृडता ३ कष्ट सहिष्णुता ४ सर्व वज्ञानता ५ दक्षता ६ उत्साह ७ मंत्रगुप्ति ८ एकवाक्यता ९ शूरता १० भक्ति ज्ञान ११ कृतज्ञता १२ शरणागतवत्सला १३ अधर्म के प्रति क्रोध १४ गम्भीरता।

और बाली की पत्नी एवं अंगद की माता तारा को वाल्मी क ने ' मंत्र वत' बताया है (क १६/१२) मरते समय बाली ने तारा की योग्यता का बखान करते हुए सुग्रीव को परामर्श दिया.

सुषेण दुहिता चेयमर्थ् सूक्षम वनश्चये

औतपातीके च व वधे सर्वतः परिनिष्ठता

यादेश साध्विति ब्रूयात कार्यं तनमुक्त संशयम्

न ही तारामतम कं चदन्यथा परिवर्तते। क २३/१३ -१४

सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म वषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चन्हों को समझने में सर्वथा निपुण है. जिस बताये उसे निःसंग होकर करना। तारा की कसी भी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता

बाली क अंत्येष्टि के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी – मेरे ज्येष्ठ बंधू आर्य का संस्कार राजकीय नियम के अनुसार शास्त्रानुकूल कया जाए. क – २५/३०

तदनन्तर सुग्रीव के राजतिलक के समय सोलह सुन्दर कन्यायें अक्षत अंगराज गोरोचन मधु घृत आदि लेकर आई और वेदी पर प्रज्व लत अग्नि में (२६/१०) मंत्रोच्चार पूर्वक ह वष्म के द्वारा मंत्र वद वद्वानों ने हवन कया।

इस सारे वर्णन और ववरण को बुद् धपूर्वक पढने के बाद कौन मान सकता है क हनुमान और तारा आदि मनुष्य न होकर पेड़ों पर उछल कूद मचने वाले बन्दर बंदरिया थे |